बाइबिल की महान सच्चाइयाँ

(नयी हिन्दी बाइबिल से संकलित पाठ)

GREAT BIBLE TRUTHS

[Selections from The New Hindi Bible]
With Bible Lessons

1979
20,000 Copies
20,000 Copies
20,000 Copies

पहले इसको पढ़िए

विश्व में अनेक श्रेष्ठ पुस्तकें हैं, लेकिन बाइबिल उनमें सबसे अधिक लोकप्रिय है। वास्तव में बाइबिल एक पुस्तक मात्र नहीं है। वह अनेक पुस्तकों का संग्रह है। बाइबिल में छोटी-बड़ी छियासठ अलग-अलग पुस्तकें हैं। ये सब पुस्तकें दो खण्डों में विभाजित हैं। पहला खण्ड 'पुराना नियम' और दूसरा खण्ड 'नया नियम'। पुराने नियम में मानव-जाति के लिए परमेश्वर के महान् कार्यों का विवरण मिलता है। यह विस्तृत वर्णन मनुष्य की सृष्टि-रचना से आरम्भ होता है और मसीह के आगमन तक चलता रहता है। ईस्वी पूर्व की इस दीर्घ अवधि में परमेश्वर उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह को भेजने के पहले मनुष्य-जाति को तैयार कर रहा था।

नए नियम का वर्णन प्राय दो हजार वर्ष पहले लिखा गया। उसमें यीशु का जीवन-चरित्र मिलता है। हम यीशु के जन्म और बचपन, उनकी जीवनचर्या, शिक्षाओं और मृत्यु तथा मृत्यु से पुनरुत्थान के विषय में पढ़ते हैं। नया नियम हमें यह भी बताता है कि मसीही कलीसिया कैसे स्थापित हुई। नया नियम के अन्त में अनेक पत्र हैं, जिनमें मसीही धर्माचरण की मुख्य शिक्षा-दीक्षा है।

बाइबिल के इस संक्षिप्त संस्करण में सम्पूर्ण बाइबिल-ग्रन्थ से ऐसे पाठ चुने गए हैं जो पाठक के सामने बाइबिल की पूर्ण कथावस्तु का सुस्पष्ट और सजीव सार-तत्व प्रस्तुत करते हैं। संकलित पाठ्य सामग्री को तीन भागों में बांटा गया है। प्रथम भाग में पुराना नियम से पाठ लिए गए हैं। इन पाठों को पढ़ने से हमें पता चलता है कि आरम्भ में परमेश्वर ने मानव की सृष्टि की परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया, लेकिन मनुष्य ने पाप किया और वह पतित हो गया। यह पाप मनुष्य के लिए विनाशकारी विष के समान था। यह पाप रूपी विष परमेश्वर की सुन्दर सृष्टि में देखते-देखते फैल गया और संसार में इस पाप के कारण दुःख और मृत्यु का प्रवेश हो गया। पुराने नियम में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर पाप को सहन नहीं करता, क्योंकि वह परम पवित्र, सर्वथा निष्पाप है। परमेश्वर पापी को दण्ड देता है, परन्तु वह प्रेममय परमेश्वर भी है। मानव-सृष्टि के आरम्भिक इतिहास के समय परमेश्वर ने एक उद्धारकर्त्ता को भेजने की प्रतिज्ञा भी की। हम पुराने नियम में पढ़ते हैं कि परमेश्वर इस्राएल नामक एक राष्ट्र का निर्माण करता है। वह स्वयं इस राष्ट्र का मार्ग-दर्शन करता है, निरन्तर उसकी रक्षा करता है, और अन्त में परमेश्वर अपने निर्धारित, नियत समय में इस्राएली कौम में राजा दाऊद के राजवंश से समस्त संसार का उद्धार करने के लिए, यीशु मसीह को प्रकट करता है।

संक्षिप्त बाइबिल के द्वितीय भाग में नए नियम के पाठ हैं। उनमें यीशु के जन्म से लेकर मृत्यु और पुनरुत्थान तक यीशु मसीह की जीवनी और उनके उपदेशों का वृतान्त है। उसमें स्वयं परमेश्वर-पुत्र, संसार के उद्धारकर्त्ता यीशु की शिक्षा-उपदेश है। यह वृतान्त नए नियम की प्रथम चार पुस्तकों में लिखा गया है। इन्हें 'गॉस्पल' अथवा 'शुभ-सन्देश' कहते हैं, अर्थात् मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना के अनुसार शुभ-सन्देश। द्वितीय भाग के कुछ अंश 'प्रेरितों के कार्य' नामक ग्रन्थ से चुने गए हैं। इस ग्रन्थ में प्रभु यीशु के स्वर्गारोहण के बाद मसीही कलीसिया की स्थापना के सम्बन्ध में इतिहास लिखा गया है। द्वितीय भाग में संकलित पाठों में हम पढ़ते हैं कि कलीसिया की स्थापना सर्वप्रथम यरूशलेम नगर में हुई। तब शीघ्र उसका विस्तार होने लगा यीशु के शिष्य पलिश्तीन देश से पृथ्वी के कोने-कोने तक पहुंच गए।

संक्षिप्त बाइबिल के तृतीय भाग के पाठ पत्र के रूप में हैं। ये पत्र कलीसिया के प्रेरितों अथवा धर्मगुरुओं की ओर से भिन्न-भिन्न देशों में स्थापित नवजात मसीही कलीसियाओं

के नाम लिखे गए थे। इन पत्रों में मसीही धर्म की आधारभूत शिक्षाएं संकलित हैं। इनको पढ़ने से हमें मालूम होता है कि प्रभु यीशु के अनुयायी का जीवन पवित्र होता है और उसे किस प्रकार यह पवित्र जीवन बिताना चाहिए।

जो व्यक्ति इस संक्षिप्त बाईबिल के अध्ययन से अधिक लाभ उठाना चाहता है उसे पहले विलियम प्रोजेक्ट द्वारा संचालित बाईबिल-पाठ्यक्रम के बारह पाठों का अध्ययन करना चाहिए। जो व्यक्ति पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करता है, उसको इनाम-स्वरूप यह संक्षिप्त बाईबिल दी जाती है। इस तरह वह मसीही धर्म का निजी तौर पर अध्ययन कर सकता है। स्थान-स्थान पर विलियम प्रोजेक्ट के पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण छात्रों के सामूहिक बाईबिल-पाठ के छोटे-छोटे दल भी बनेंगे। आपके पड़ोस अथवा मित्र-मण्डली में इस तरह का बाईबिल-पाठ-सम्मेलन हो तो उसमें सम्मिलित होने के लिए हम आपको हार्दिक निमन्त्रण देते हैं। यह सम्मेलन आपको मसीही धर्म के बारे में तरह-तरह के प्रश्न पूछने का शुभ अवसर प्रदान करेगा। आपको प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर अवश्य मिलेगा।

परमेश्वर प्रचुर मात्रा में आपको आशीष दे कि आप उसके पवित्र वचन को निरन्तर पढ़ते जाएं और नित्य अध्ययन द्वारा पूर्ण फल प्राप्त करें।

(इस पुस्तक को समाप्त करने के पश्चात् यदि आप सम्पूर्ण बाइबिल की एक प्रति चाहें, तो भारत की बाइबिल सोसाइटी की स्थानीय शाखा से अथवा इण्डियन बाइबिल लीग से आप उसे प्राप्त कर सकते हैं।)

एक बात और हमने प्रत्येक अध्याय के प्रश्नों में पुस्तक के अध्याय और पदों की संख्या दी है। ये आपको प्रस्तुत पुस्तक में नहीं किन्तु सम्पूर्ण बाइबिल में सहज रूप से मिलेंगे। इसलिए अच्छा हो कि आप प्रस्तुत पुस्तक का अध्ययन करते समय सम्पूर्ण बाइबिल को अपने पास रखें।

विषय सूची

बाइबिल की महान सच्चाइयाँ

पहला भाग
पुराना नियम से संकलित बाइबिल पाठ १–९६

दूसरा भाग
नया नियम से संकलित बाइबिल पाठ
चारो शुभ-संदेश और प्रेरितों के कार्य ९७–२३५

तीसरा भाग
प्रेरित पौलुस द्वारा लिखित कुछ पत्र
तथा यूहन्ना का प्रकाशन ग्रंथ २३७–३४०

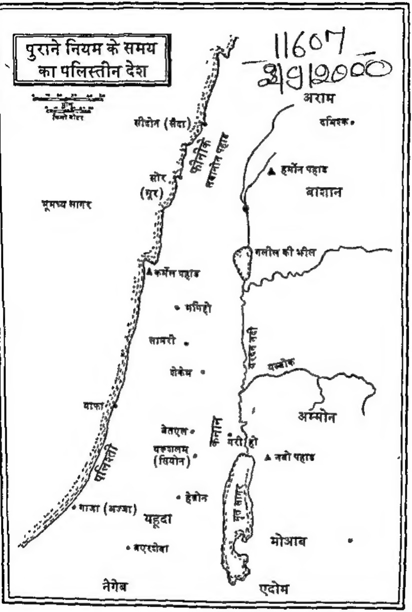

11607
31/9/2000

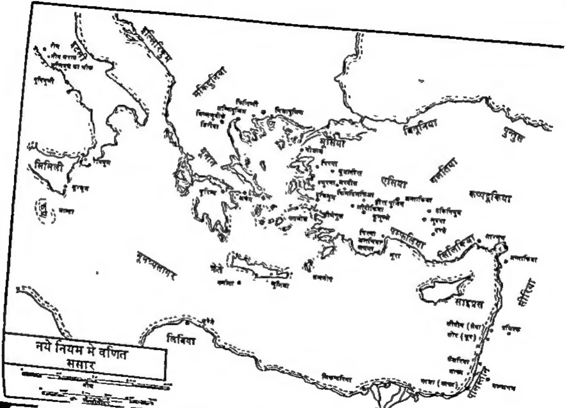
नये नियम मे वर्णित
ससार
इल्लुरिकुम
मकिदुनिया
सिसिली
यूनान
मूसिया
एशिया
गलातिया
कप्पदूकिया
बितूनिया
पुन्तुस
किलिकिया
साइप्रस
सीरिया
लिबिया
मिस्र
भूमध्यसागर

यीशु ने कहा, "मार्ग, सत्य, और जीवन मैं हूं। मेरे बिना कोई पिता के पास नहीं आता।" —यूहन्ना १४ : ६

यीशु ने कहा, 'हे सब थके और बोझ से दबे लोगो, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। —मत्ती ११

१. सृष्टि रचना का विवरण

(उत्पत्ति १–२ : ४)

यह बाइबिल का प्रथम अध्याय है। इस अध्याय से हमें मालूम होता है कि परमेश्वर ने छ दिन में इस समस्त सृष्टि को रचा। परमेश्वर इतना सर्वशक्तिमान है कि उसके आदेश-मात्र से सृष्टि का निर्माण हो गया। दूसरी बात ध्यान देने योग्य यह है कि प्रत्येक वस्तु, जिसकी रचना परमेश्वर ने की, सुन्दर और अच्छी थी।

परमेश्वर ने आरम्भ में आकाश और पृथ्वी को रचा।* पृथ्वी आकार-रहित और सुनसान थी। महासागर के ऊपर अन्धकार था। जल की सतह पर परमेश्वर का आत्मा** मंडराता था।

परमेश्वर ने कहा, 'प्रकाश हो', और प्रकाश हो गया। परमेश्वर ने देखा कि प्रकाश अच्छा है। परमेश्वर ने प्रकाश को अन्धकार से अलग किया। परमेश्वर ने प्रकाश को 'दिन' तथा अन्धकार को 'रात' नाम दिया। सन्ध्या हुई, फिर सबेरा हुआ। इस प्रकार पहला दिन बीत गया।

परमेश्वर ने कहा, 'जल के मध्य मेहराब+ हो, और जल को जल से अलग करे।' परमेश्वर ने मेहराब बनाया, तथा मेहराब के ऊपर के जल को उसके नीचे के जल से अलग किया। ऐसा ही हुआ। परमेश्वर ने मेहराब को 'आकाश' नाम दिया। सन्ध्या हुई, फिर सबेरा हुआ। इस प्रकार दूसरा दिन बीत गया।

परमेश्वर ने कहा, 'आकाश के नीचे का जल एक स्थान में एकत्र हो, और सूखी भूमि दिखाई दे।' ऐसा ही हुआ। परमेश्वर ने सूखी भूमि को 'पृथ्वी', तथा एकत्रित जल को 'समुद्र' नाम दिया। परमेश्वर ने देखा कि वे अच्छे हैं। तब परमेश्वर ने भूमि को आज्ञा दी कि वह वनस्पति, बीजधारी पौधे और फलदायक वृक्ष, जिनके फलों में बीज हो, उनकी जाति के अनुसार उगाए। ऐसा ही हुआ। भूमि ने वनस्पति, जाति-जाति के बीजधारी पौधे, फलदायक वृक्ष, जिनके फलों में बीज थे, उनकी जाति के अनुसार उगाए। परमेश्वर ने देखा कि वे अच्छे हैं। सन्ध्या हुई, फिर सबेरा हुआ। इस प्रकार तीसरा दिन बीत गया।

परमेश्वर ने कहा, 'दिन को रात से अलग करने के लिए आकाश के मेहराब में ज्योति-पिण्ड हों। वे ऋतु, दिन और वर्ष के चिह्न बनें। पृथ्वी पर प्रकाश करने के लिए आकाश के मेहराब में ज्योति-पिण्ड हों।' ऐसा ही हुआ। परमेश्वर ने दो विशाल ज्योति-पिण्ड बनाए अधिक शक्तिवान ज्योति-पिण्ड को दिन का शासक, और कम शक्तिवान् ज्योति-पिण्ड को रात का शासक बनाया। उसने तारे भी बनाए। परमेश्वर ने उन्हें आकाश के मेहराब में स्थित किया कि वे पृथ्वी को प्रकाशित करें, दिन और रात पर शासन करें और प्रकाश को अन्धकार से अलग करें। परमेश्वर ने देखा कि वे अच्छे हैं। सन्ध्या हुई, फिर सबेरा हुआ। इस प्रकार चौथा दिन बीत गया।

*पहले पद का अनुवाद यह भी हो सकता है, 'जब परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाना आरम्भ किया तब . . .।'

**अथवा, 'प्रचण्ड पवन'

+अथवा, 'गुम्बद', 'गुम्बज'। प्राचीन विश्वास के अनुसार मेहराब अपने ऊपर के जल को नीचे गिरने से रोकता था।

परमेश्वर ने कहा, 'समुद्र जीवित जलचरों के झुण्ड के झुण्ड उत्पन्न करे तथा पक्षी पृथ्वी पर आकाश के मेहराब मे उड़े।' अत परमेश्वर ने बड़े-बड़े जल-जन्तुओं और रेंगनेवाले जलचरों को, जो तैरते है और जिनसे समुद्र भर गए है, उनकी जाति के अनुसार उत्पन्न किया। उसने सब पक्षियों को भी उनकी जाति के अनुसार उत्पन्न किया। परमेश्वर ने देखा कि वे अच्छे है। परमेश्वर ने उन्हे यह आशीष दी, 'फूलो-फलो, और समुद्रों को भर दो। पक्षी पृथ्वी मे असंख्य हो जाए।' सन्ध्या हुई, फिर सवेरा हुआ। इस प्रकार पांचवां दिन बीत गया।

परमेश्वर ने कहा, 'पृथ्वी जीव-जन्तुओं को उनकी जाति के अनुसार उत्पन्न करे, अर्थात् प्रत्येक की जाति के अनुसार पालतू पशु, रेंगनेवाले जन्तु और धरती के वन-पशु।' ऐसा ही हुआ। परमेश्वर ने धरती के वन-पशुओं, पालतू पशुओं और भूमि पर रेंगनेवाले जन्तुओं को उनकी जाति के अनुसार बनाया। परमेश्वर ने देखा कि वे अच्छे है।

परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को अपने स्वरूप मे, अपने सदृश बनाए, और समुद्र के जलचरों, आकाश के पक्षियों, पालतू पशुओं, भूमि पर रेंगनेवाले जन्तुओं और समस्त पृथ्वी पर मनुष्य का अधिकार हो।' अत परमेश्वर ने अपने स्वरूप मे मनुष्य को रचा। परमेश्वर के स्वरूप मे उसने उन्हे नर और नारी बनाया। परमेश्वर ने उन्हे यह आशीष दी, 'फूलो-फलो और पृथ्वी को भर दो, और उसे अपने अधिकार मे कर लो। समुद्र के जलचरों, आकाश के पक्षियों और भूमि के समस्त गतिवान जीव-जन्तुओं पर तुम्हारा अधिकार हो।' परमेश्वर ने कहा, 'देखो, मैंने धरती के प्रत्येक बीजधारी पौधे और फलदायक वृक्ष, जिनके फलों मे बीज है, तुम्हे प्रदान किए है। वे तुम्हारा आहार है। धरती के पशुओं, आकाश के पक्षियों, भूमि पर रेंगनेवाले जन्तुओं, प्रत्येक प्राणी को जिसमे जीवन का श्वास है, मैंने हरित पौधे, आहार के लिए दिए है।' ऐसा ही हुआ। परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को देखा, और देखो वह बहुत अच्छी थी। सन्ध्या हुई, फिर सवेरा हुआ। इस प्रकार छठवां दिन बीत गया।

यों आकाश और पृथ्वी एव जो कुछ उनमे है, इन सबकी रचना पूर्ण हुई। जो कार्य परमेश्वर ने किया था, उसको उसने सातवे दिन समाप्त किया। उसने उस समस्त कार्य से जिसे उसने पूरा किया था, सातवे दिन विश्राम किया। अत परमेश्वर ने सातवे दिन को आशीष दी, और उसे पवित्र किया, क्योंकि परमेश्वर ने उस दिन सृष्टि के समस्त कार्यों से विश्राम किया था।

आकाश और पृथ्वी की रचना का यही विवरण है।

१ सृष्टि-रचना के वर्णन के अनुसार परमेश्वर कैसा है? आपने उसके विषय मे क्या सीखा?
२. मनुष्य पशु से किस बात में भिन्न है?
३. मनुष्य किस बात मे परमेश्वर के समान है? परमेश्वर ने उसे कौन-सा काम करने को दिया है?

२. मनुष्य की उत्पत्ति

(उत्पत्ति २ :४–२५)

इस बाइबिल-पाठ मे अदन की वाटिका अथवा उद्यान का वर्णन है। परमेश्वर ने मनुष्य की रचना के पश्चात् उसको इसी बाग मे रखा था। ध्यान दीजिये : प्रत्येक वस्तु कितनी सुन्दर और अच्छी है। परमेश्वर ने मनुष्य को एक आज्ञा दी है। इस आज्ञा का पालन मनुष्य को करना ही होगा। इसी पाठ

मे परमेश्वर हमें बताता है कि उसने 'स्त्री' की सृष्टि किस प्रकार की।

प्रभु* परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया। पर तब धरती पर कोई पौधा न था। वनस्पति भूमि मे अंकुरित न हुई थी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने पृथ्वी पर वर्षा न की थी, और भूमि की जोताई करने के लिए मनुष्य न था।

कुहरा** धरती मे ऊपर उठा, और उसने भूमि सींच दी। तब प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य + को भूमि की मिट्टी++ से गढ़ा तथा उसके नथुनों मे जीवन का श्वास फूंका। मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया।

अदन का उद्यान

प्रभु परमेश्वर ने पूर्व दिशा मे अदन मे एक उद्यान लगाया, और वहां मनुष्य को, जिसे उसने गढ़ा था, नियुक्त किया। प्रभु परमेश्वर ने समस्त वृक्षों को, जो देखने में सुन्दर, और आहार के लिए उत्तम हैं, भूमि से उगाए। उसने उद्यान के मध्य मे जीवन का वृक्ष तथा भले-बुरे के ज्ञान का वृक्ष उगाया।

एक सरिता उद्यान को सींचने के लिए अदन से निकली और वहां विभाजित होकर चार नदियों मे परिवर्तित हो गई। पहली नदी का नाम पीशोन है। यह वही नदी है जो हवीला देश के चारों ओर बहती है, जहां सोना पाया जाता है। उस देश का सोना उत्तम होता है। वहां मोती और सुलेमानी पत्थर भी पाए जाते हैं। दूसरी नदी का नाम गीहोन है। यह वही नदी है जो कूश देश के चारो ओर बहती है। तीसरी नदी का नाम दजला है, जो असीरिया देश की पूर्व दिशा मे बहती है। चौथी नदी का नाम फरात है।

प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को लेकर अदन के उद्यान मे नियुक्त किया कि वह उसमे खेती करे और उसकी रखवाली करे। प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, 'तुम उद्यान के सब पेड़ों के फल निस्संकोच खा सकते हो, पर भले-बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल न खाना, क्योंकि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे, तुम मर जाओगे।'

प्रभु परमेश्वर ने कहा, 'मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं। मैं उसके उपयुक्त एक सहायक बनाऊंगा।' अतः प्रभु परमेश्वर ने मिट्टी से पृथ्वी के समस्त पशु और आकाश के सब पक्षी गढ़े। वह उन्हें मनुष्य के पास लाया कि देखे, मनुष्य उनका क्या नाम रखता है। प्रत्येक जीव-जन्तु का वही नाम होगा, जो मनुष्य उसे देगा।' मनुष्य ने सब पालतू पशुओं, आकाश के पक्षियों और वन-पशुओं के नाम रखे; किन्तु मनुष्य के लिए उसके उपयुक्त सहायक नहीं मिला। अतः प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को गहरी नींद मे सुला दिया। जब वह सो रहा था तब उसकी पसलियों में से एक पसली निकाली और उस रिक्त स्थान को मांस से भर दिया। प्रभु परमेश्वर ने उस पसली से, जिसको उसने मनुष्य मे से निकाला था, स्त्री को बनाया और उसे मनुष्य के पास लाया। मनुष्य ने कहा,

'अन्ततः यह मेरी ही अस्थियों की अस्थि, मेरी ही देह की देह है, यह "नारी" कहलाएगी, क्योंकि यह नर से निकाली गई है।' इसलिए पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी स्त्री के साथ रहेगा, और वे एक देह होंगे।

मनुष्य और उसकी स्त्री नग्न थे, पर वे लज्जित न थे।

१. अदन के उद्यान का वर्णन करो।
२. परमेश्वर ने मनुष्य को कौन-सा काम करने का आदेश दिया था?
३. परमेश्वर ने मनुष्य को कौन-सी आज्ञा दी थी?
४ परमेश्वर ने किस प्रकार 'स्त्री' की रचना की?

*मूल, 'यहवह' **शब्दशः 'बाढ़', 'जल-प्रवाह' अथवा, 'धुन्ध'। + मूल मे, 'आदम'
++ मूल मे, 'आदामाह'

३. मनुष्य का पतन

(उत्पत्ति ३ : १–२४)

जो पाठ आप पढ़ेंगे, वह मानव-जाति के इतिहास की सबसे दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। समस्त बुरी शक्तियों का नायक सरदार या अधिपति है—शैतान। वह साप का रूप धारण करके स्त्री (हव्वा) के पास आता है, और वह उसे परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए उकसाता है। परमेश्वर की आज्ञा न मानना ही पाप है।

हव्वा शैतान की लुभावनेवाली बातों मे आ जाती है। वह पेड़ का फल तोड़ती है, उसको खाती है, और उसका कुछ भाग अपने पति आदम को देती है। आदम भी परमेश्वर के प्रति पाप करता है, और निषिद्ध फल को खा लेता है।

आदम और हव्वा को उनके पाप का फल तुरन्त मिलता है। दोनों की सुख-शान्ति छिन जाती है। वे अदन की वाटिका से निकाल दिए जाते है। उनके शरीर मे पाप रूपी विष फैल गया था; अत. वे पवित्र परमेश्वर के सत्सग से निकाल दिए गए। पवित्र परमेश्वर के सत्सग या सहभागिता से वंचित होना 'आत्मिक (आध्यात्मिक) मृत्यु' कहलाता है। पाप का परिणाम है—मृत्यु। इसी पाप के कारण मानव-जाति मे, सृष्टि मे मृत्यु का प्रवेश हुआ, और मनुष्य मरने लगा। किन्तु परमेश्वर प्रेममय है। उसने मनुष्य जाति को आत्मिक मृत्यु से बचाने के लिए एक उद्धारकर्ता को भेजने का वचन दिया (देखो उत्पत्ति ३ : १५)।

उन सब जीव-जन्तुओ मे जिन्हे प्रभु परमेश्वर ने रचा था, सबसे अधिक धूर्त साप था। उसने स्त्री से पूछा, 'क्या सचमुच परमेश्वर ने कहा है कि तुम उद्यान के किसी भी पेड़ का फल न खाना ?' स्त्री ने साप को उत्तर दिया, 'हम उद्यान के पेड़ो का फल खा सकते है। परन्तु परमेश्वर ने कहा है, "उद्यान के मध्य मे लगे पेड़ का फल न खाना, उसे स्पर्श भी नही करना, अन्यथा तुम मर जाओगे।"' साप ने स्त्री से कहा, 'तुम नही मरोगे। परमेश्वर जानता है कि जब तुम उसे खाओगे तब तुम्हारी आखे खुल जाएगी। तुम भले और बुरे को जानकर परमेश्वर के समान बन जाओगे।' स्त्री ने देखा कि आहार के लिए वृक्ष उत्तम है। वह आखो को लुभाता है, और बुद्धिमान बनने के लिए वाछनीय है। अत. उसने उसका फल तोड़ा, और उसको खाया। उसने अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया। तब उनकी आखे खुल गई, और उन्हे ज्ञात हुआ कि वे नग्न थे। अत. उन्होने अन्जीर के पत्तों को सी कर लगोट बनाए।

उन्होंने सन्ध्या के समय उद्यान मे प्रभु परमेश्वर की पग-ध्वनि सुनी। मनुष्य और उसकी पत्नी ने प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति मे स्वय को उद्यान के वृक्षों मे छिपा लिया। परन्तु प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को पुकारा, 'तू कहा है ?' उसने उत्तर दिया, 'मैंने उद्यान मे तेरी पग-ध्वनि सुनी। मै डर गया, क्योंकि मैं नग्न था। इसलिए मैंने स्वय को छिपा लिया है।' प्रभु परमेश्वर ने पूछा, 'किसने तुझसे कहा कि तू नग्न है ? क्या तूने उस पेड़ का फल खाया है, जिसे न खाने के लिए मैंने तुझे आज्ञा दी थी ?' मनुष्य ने उत्तर दिया, 'जो स्त्री तूने मेरे साथ रहने के लिए दी है, उसने उस पेड़ का फल मुझे दिया, और मैंने उसे खा लिया।' प्रभु परमेश्वर ने स्त्री से पूछा, 'यह तूने क्या किया ?' स्त्री ने उत्तर दिया, 'साप ने मुझे बहका दिया और मैंने फल खा लिया।' प्रभु परमेश्वर ने साप से कहा, 'तूने यह कार्य किया, इसलिए

(समस्त पालतू पशुओं तथा सब वन-पशुओं में शापित है। तू पेट के बल चलेगा। तू आजीवन धूल चाटता रहेगा।

'मैं तेरे और स्त्री के बीच, तेरे वंश और स्त्री के वंश के मध्य शत्रुता उत्पन्न करूंगा। वह तेरा सिर कुचलेगा, और तू उसकी एड़ी डसेगा।'

प्रभु परमेश्वर ने स्त्री से कहा, 'मैं तेरी प्रसव-पीड़ा को असहनीय बनाऊंगा। तू पीड़ा से ही बच्चों को जन्म देगी। तेरी इच्छाएं पति के लिए होंगी। वह तुझपर शासन करेगा।'

प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य से कहा, 'तूने अपनी पत्नी की बात सुनी, और उस पेड़ का फल खाया जिसके विषय में मैंने आज्ञा दी थी कि "उसका फल न खाना"। अतएव तेरे कारण भूमि शापित हुई। उसकी फसल खाने के लिए तुझे जीवनभर कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। वह तेरे लिए कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी। तू खेत की उपज खाएगा। तू तब तक अपने पसीने की रोटी खाएगा, जब तक उस मिट्टी में न मिल जाए जिससे तू बनाया गया था। तू तो मिट्टी है, और मिट्टी में ही मिल जाएगा।'

मनुष्य ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा* रखा, क्योंकि वह समस्त जीवनधारी प्राणियों की माता बनी। प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य और उसकी पत्नी को चमड़े के वस्त्र बनाकर पहिनाए।

प्रभु परमेश्वर ने कहा, 'देखो, मनुष्य भले और बुरे को जानकर हममें से एक के समान बन गया है। अब कहीं ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल तोड़ ले, और उसे खाकर अमर हो जाए।' अत प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को अदन के उद्यान से भेज दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे, जिसमें से उसे बनाया गया था। उसने मनुष्य को निकाल दिया। उसने जीवन के वृक्ष की ओर जानेवाले मार्ग की रखवाली करने के लिए अदन के उद्यान की पूर्व दिशा में करूबों** तथा चारों ओर घूमनेवाली ज्वालामय तलवार को नियुक्त किया।

१ शैतान ने किस प्रकार हव्वा को फुसलाया-बहकाया और उससे परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करवाया?
२ परमेश्वर ने आदम और हव्वा के पाप के कारण उनसे क्या किया, उनसे कैसा व्यवहार किया?
३ परमेश्वर ने उत्पत्ति ३ १५ में मानव-जाति के उद्धार के लिए कौन-सा वचन दिया?

४. हाबिल और काइन का आख्यान
(उत्पत्ति ४ १–१६)

परमेश्वर की आज्ञा न मानने के कारण आदम और हव्वा अदन की वाटिका से निकाल दिए गए। वे स्वर्गिक सुख से वंचित हो गए। अब उनके लिए जीवन-जीना कठिन हो गया।

आदम और हव्वा के दो पुत्र थे: काइन (कैन) और हाबिल। जैसा कि हम पढ़ चुके हैं कि पाप विष के समान आदम और हव्वा के शरीर में फैल चुका था। अब यह पाप पिता और मां से पुत्रों में आ गया। प्रस्तुत पाठ में हम पढ़ेंगे कि यह पाप कितने भयंकर रूप में प्रकट होता है। दूसरी ओर हमें यह भी मालूम होगा कि परमेश्वर पाप के लिए दण्ड देता है, किन्तु वह क्षमा भी करता है। परमेश्वर के अद्भुत प्रेम की यह विशेषता है।

*इब्रानी शब्द का अर्थ सम्भवत: 'जीवनदायिनी' है।
**विशिष्ट प्रकार के स्वर्गदूत, जिनके पंख होते हैं, अथवा 'पंखधारी प्राणी'

आदम ने अपनी पत्नी हव्वा के साथ सहवास किया। वह गर्भवती हुई और काइन को जन्म दिया। हव्वा ने कहा, 'प्रभु की कृपा से मुझे बालक* प्राप्त हुआ।' हव्वा ने काइन के भाई हाबिल को जन्म दिया।

प्रथम हत्या

हाबिल भेड़ों का चरवाहा था, और काइन खेती करनेवाला किसान था। कुछ समय आने पर खेत की उपज प्रभु को भेंट चढ़ाई। हाबिल ने अपने पशुओं के पहिलौठे और उनका चर्बीयुक्त मांस चढ़ाया। प्रभु ने हाबिल तथा उसकी भेंट पर कृपा-दृष्टि की पर काइन और उसकी भेंट को अस्वीकार कर दिया। इसलिए काइन बहुत नाराज हुआ उसका मुंह उतर गया। प्रभु ने काइन से पूछा, 'तू क्यों नाराज है? क्यों तेरा मुंह उतरा हुआ है? यदि तू भलाई करे तो क्या मैं तुझे ग्रहण न करूंगा? किन्तु यदि तू भलाई न करे तो देख, तेरे द्वार पर पाप खड़ा** है। वह तेरी कामना कर रहा है। तू उसको अपने वश कर।'

काइन ने अपने भाई हाबिल से कहा, 'आ, हम खेत को चलें।' जब वे खेत में थे काइन अपने भाई हाबिल के विरुद्ध उठा। उसने हाबिल की हत्या कर दी।

प्रभु ने काइन से पूछा, 'तेरा भाई हाबिल कहां है?' उसने उत्तर दिया, 'मैं नहीं जानता क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं?' प्रभु ने कहा, 'यह तूने क्या किया? तेरे भाई का रक्त भूमि से मुझे पुकार रहा है। अब तू भूमि की ओर से शापित है, जिसने तेरे भाई का रक्त तेरे हाथ से स्वीकार करने के लिए अपना मुंह खोला है। जब तू भूमि पर खेती करेगा तब वह अपनी सामर्थ्य भर तुझे उपज न देगी। तू पृथ्वी पर यहां-वहां भटकता फिरेगा। तू प्रवासी रहेगा।' काइन ने प्रभु से कहा, 'मेरा दण्ड असहनीय है। देख, तूने आज मुझे खेती किसानी से हटा दिया। मैं तेरे मुख से छिपा रहूंगा। मैं पृथ्वी पर यहां-वहां भटकूंगा। मैं प्रवासी बनूंगा। सब कोई मुझे अकेला पाकर मेरी हत्या करेंगे।' प्रभु ने काइन से कहा, 'ऐसा नहीं होगा। जो कोई तेरी हत्या करेगा, उससे सात गुना प्रतिशोध लिया जाएगा।' प्रभु ने काइन पर एक चिह्न अंकित किया कि उसे पानेवाले उसकी हत्या न करें। तब काइन प्रभु के सम्मुख से चला गया। वह अदन की पूर्व दिशा में नोद नामक प्रदेश में रहने लगा।

१ काइन ने हाबिल की हत्या क्यों की?
२ परमेश्वर ने किस प्रकार काइन को दण्ड दिया?
३ जब काइन ने शिकायत की कि परमेश्वर का दण्ड उसके लिए असहनीय है तब परमेश्वर ने किस प्रकार उसका समाधान किया?

५. जल-प्रलय

(उत्पत्ति ६ : ११–२२; ७ : १–२४)

उत्पत्ति ग्रंथ के अगले अध्यायों के बीच लम्बे समय का अन्तराल है। वर्ष गुजरते जाते हैं, मनुष्यों के परिवार पृथ्वी पर बसने, फूलने-फलने लगते हैं। लेकिन ध्यान दीजिए—जैसे-जैसे मनुष्यों की आबादी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे उनके पाप भी दिन-दूने रात चौगुने बढ़ते जाते हैं। मनुष्य की दशा बद से बदतर होती जाती है। जैसा कि आप जानते हैं, परमेश्वर पवित्र और निष्पाप है, वह कैसे पृथ्वी पर मनुष्य की इस महापाप-अवस्था की अनदेखा कर सकता

* [illegible]

था? अतः परमेश्वर ने मानव-जाति को दण्ड देने का निश्चय किया। उसने दृढ़ निश्चय किया कि वह पृथ्वी की सतह से मनुष्य जाति का नामोनिशान मिटा देगा।

किन्तु आप जानते है कि परमेश्वर अत्यन्त प्रेममय है। उसने वचन दिया है कि वह मनुष्य जाति का उद्धार करने के लिए एक उद्धारकर्त्ता भेजेगा। परमेश्वर अपना वचन भंग नहीं करता। अब यदि वह समस्त मनुष्य जाति को नष्ट कर दे तो उसका वचन भंग हो जाएगा। अतः उसने एक भले और धार्मिक मनुष्य को चुना। उसका नाम नूह था। वह परमेश्वर का भक्त था। परमेश्वर ने नूह को तथा उसके परिवार को जल-प्रलय से बचाने का निश्चय किया, ताकि वह नूह के परिवार से अपने उद्धारकर्त्ता का उद्भव कर सके।

परमेश्वर की दृष्टि में पृथ्वी भ्रष्ट हो गई थी। वह हिंसा से भर गई थी। परमेश्वर ने पृथ्वी को देखा कि वह भ्रष्ट हो गई है, क्योंकि समस्त प्राणियों ने पृथ्वी पर अपना आचरण भ्रष्ट कर लिया था।

परमेश्वर ने नूह से कहा, 'मैंने समस्त प्राणियों का अन्त करने का निश्चय किया है। उनके कारण पृथ्वी हिंसा से भर गई है। मैं पृथ्वी सहित उनको नष्ट करूंगा। तू गोपेर वृक्ष* की लकड़ी का एक जलयान बना। तू उसमें कमरे बनाना। उसके बाहर-भीतर राल भी पोत देना। इस रीति से तू जलयान बनाना: जलयान की लम्बाई डेढ़ सौ मीटर,** चौड़ाई पचीस मीटर और ऊंचाई पन्द्रह मीटर रखना। जलयान में एक झरोखा बनाना और उसके आधा मीटर ऊपर छत बनाना। जलयान में एक ओर द्वार रखना। तू जलयान को तीन खण्डों में बनाना: निचला खण्ड, बिचला खण्ड और उपरला खण्ड। मैं उन सब प्राणियों को, जिनमें जीवन का श्वास है, आकाश के नीचे से नष्ट करने के लिए पृथ्वी पर जल-प्रलय करूंगा। पृथ्वी के सब प्राणी मर जाएंगे। परन्तु मैं तेरे साथ अपनी वाचा+ स्थापित करूंगा। तू अपनी पत्नी, अपने पुत्रों, और बहुओं सहित जलयान में प्रवेश करना। प्रत्येक जाति के जीवित प्राणियों में से दो-दो, नर और मादा, अपने साथ जलयान में ले जाना जिससे वे तेरे साथ जीवित रहें। प्रत्येक जाति के पक्षी, पशु, रेंगनेवाले जन्तु में से दो-दो तेरे पास आएंगे कि तू उनको जीवित रखे। हरएक प्रकार का भोज्य-पदार्थ, जो खाया जाता है, एकत्र कर लेना। वह तेरे और उनके भोजन के लिए होगा।' नूह ने ऐसा ही किया। उसने परमेश्वर की आज्ञानुसार सब कुछ किया।

प्रभु ने नूह से कहा, 'तू अपने परिवार सहित जलयान में आ। मैंने इस समय के लोगों में केवल तुझे ही अपनी दृष्टि में धार्मिक पाया है। तू सब शुद्ध पशुओं में से नर और मादा के सात जोड़े, और अशुद्ध पशुओं में से नर-मादा का एक-एक जोड़ा लेना। आकाश के पक्षियों में से नर और मादा के सात जोड़े लेना जिससे समस्त पृथ्वी पर उनकी जाति जीवित रहे। मैं सात दिन के पश्चात् चालीस दिन और चालीस रात तक पृथ्वी पर वर्षा करूंगा, और उन सब प्राणियों को भूमि की सतह से मिटा दूंगा, जिन्हें मैंने बनाया था।' नूह ने परमेश्वर की आज्ञानुसार सब कुछ किया।

जब पृथ्वी पर जल-प्रलय हुआ तब नूह की आयु छः सौ वर्ष की थी। नूह जल-प्रलय से बचने के लिए अपनी पत्नी, पुत्रों और बहुओं के साथ जलयान में गया। शुद्ध और अशुद्ध पशुओं के, पक्षियों के, भूमि पर रेंगनेवाले समस्त जन्तुओं के दो-दो, अर्थात् नर और मादा, नूह के साथ जलयान में गए, जैसे परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी थी। सात दिन के पश्चात्

*सम्भवत, 'सरू' अथवा 'सरो' नामक वृक्ष

**मूल में 'तीन सौ हाथ'। पुरानी माप हाथ प्रायः पैंतालीस सेन्टीमीटर के बराबर है।

+अथवा, 'व्यवस्थान', 'विधान', 'प्रतिज्ञा', 'संधि', 'समझौता'

पृथ्वी पर प्रलय का जल बरसने लगा। जिस वर्ष नूह छ सौ वर्ष का हुआ, उसके दूसरे महीने के सत्रहवे दिन महासागर के झरने फूट पड़े, आकाश के झरोखे खुल गए। चालीस दि और चालीस रात तक पृथ्वी पर वर्षा होती रही। उसी दिन नूह ने अपनी पत्नी तथा सेम हाम और याफ़त नामक पुत्रो, एव तीनो बहुओ के साथ जलयान मे प्रवेश किया। उन साथ प्रत्येक जाति के वन-पशु, पालतू पशु, भूमि पर रेंगनेवाले जन्तु और जाति-जाति पक्षी भी गए। समस्त प्राणियो मे से दो-दो प्राणी, जिनमे जीवन का श्वास था, नूह के सा जलयान मे गए। समस्त प्राणियो के नर और मादा जलयान मे गए, जैसे प्रभु परमेश्वर आज्ञा दी थी। प्रभु ने नूह को जलयान के भीतर बन्द कर दिया।

पृथ्वी पर चालीस दिन तक प्रलय होता रहा। जल बढ़ता गया। उससे जलयान ऊप उठने लगा। वह भूमि की सतह से ऊचा उठ गया। जल प्रबल होने लगा। वह बढ़ने-बढ़ पृथ्वी पर फैल गया, और जलयान जल की सतह पर तैरने लगा। जल बढ़कर इतना प्रब हुआ कि आकाश के नीचे के समस्त ऊचे-ऊचे पहाड़ भी उसमे डूब गए। जल की प्रबलता पहाड़ भी उसमे प्राय सात मीटर तक डूब गए। पक्षी, पालतू पशु, वन-पशु, भूमि पर रेंगनेवाले जीव-जन्तु और मनुष्य-जाति, अर्थात् पृथ्वी का प्रत्येक प्राणी, मर गया। शुष्क भूमि प्रत्येक प्राणी, जिसके नथुनो मे जीवन का श्वास था, मर गया। प्रभु ने भूमि पर रहनेवाले प्रत्येक जीवित प्राणी को, मनुष्य और पशु को, रेंगनेवाले जन्तुओ को, आकाश के पक्षियो मिटा डाला। वे पृथ्वी से मिटा डाले गए। केवल नूह और उसके साथ जलयान मे रहनेवा बच गए।

जल पृथ्वी पर एक सौ पचास दिन तक प्रबल रहा।

१　मनुष्य पाप मे कितना डूब चुका था ?

२　परमेश्वर ने नूह को अपने जलयान मे क्या-क्या ले जाने का आदे दिया ?

३　परमेश्वर ने जल-प्रलय के माध्यम से किस सीमा तक पृथ्वी क विनाश किया ?

६. नूह को परमेश्वर का वचन

(उत्पत्ति ८ १–२२; ९ १–१७)

परमेश्वर ने नूह और उसके समस्त परिवार की रक्षा की। चालीस दिन और रात तक वर्षा होती रही। समस्त पृथ्वी जल मे डूब गई। एक सौ पचास दिन के पश्चात् जल-प्रलय का पानी घटने लगा। जलयान एक पहाड़ से लगकर ठहर गया। जब सूखी भूमि दिखाई देने लगी तब नूह, उसका परिवार तथा सब जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, जो नूह के साथ जलयान मे थे, जलयान से बाहर निकले। परमेश्वर ने नूह को वचन दिया कि वह आगे कभी पृथ्वी को जल-प्रलय से नष्ट नही करेगा। उसने आकाश मे इन्द्र-धनुष की स्थापना कर अपने वचन पर मुहर लगा दी।

परमेश्वर ने नूह एव समस्त वन-पशुओ और पालतू पशुओ की, जो जलयान मे उसके साथ थे, सुध ली। उसने पृथ्वी पर हवा बहायी और जल घटने लगा। महासागर के झरने आकाश के झरोखे बन्द हो गए। आकाश से वर्षा भी रुक गई, और जल भूमि पर धीरे-

धीरे घटने लगा। एक सौ पचासवें दिन जल घट गया और जलयान सातवें महीने के सत्रहवें दिन* अरारट नामक पर्वत पर टिक गया। जल दसवें महीने तक घटता चला गया। दसवें महीने के पहले दिन पहाड़ों के शिखर दिखाई दिए।

नूह ने चालीस दिन के पश्चात् जलयान का झरोखा खोला, जिसे उसने बनाया था, और एक कौआ उड़ा दिया। जब तक भूमि का जल सूख न गया, तब तक कौआ यहां-वहां उड़ता रहा। तत्पश्चात् नूह ने यह देखने के लिए कि भूमि की सतह का जल घटा कि नहीं, अपने पास से एक कबूतरी को भी उड़ाया। पर कबूतरी को अपने पैर टेकने का आधार भी न मिला; क्योंकि जल समस्त पृथ्वी की सतह पर फैला था। अत: वह नूह के पास जलयान में लौट गई। नूह ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लिया, और उसे अपने साथ जलयान में ले गया। वह सात दिन तक और ठहरा रहा। तत्पश्चात् उसने जलयान से पुन: कबूतरी को उड़ा दिया। सन्ध्या के समय कबूतरी उसके पास लौट आई। उसकी चोंच में ताजा तोड़ी हुई जैतून की पत्ती थी। अत: नूह को मालूम हो गया कि पृथ्वी की सतह का जल घट गया है। पर उसने सात दिन तक और प्रतीक्षा की। तत्पश्चात् नूह ने कबूतरी को उड़ाया, किन्तु वह उसके पास फिर लौटकर न आई।

जिस वर्ष नूह छः सौ एक वर्ष का हुआ, उसके पहले महीने के पहले दिन पृथ्वी का जल सूख गया। नूह ने जलयान की छत खोलकर देखा कि भूमि की सतह सूख गई है। दूसरे महीने के सत्ताईसवें दिन भूमि पूर्णत: सूख गई। तब परमेश्वर ने नूह से कहा, 'तू अपनी पत्नी, अपने पुत्रों और बहुओं को साथ लेकर जलयान से बाहर निकल। तेरे साथ जो जीवित प्राणी, अर्थात् पशु-पक्षी, भूमि पर रेंगनेवाले जन्तु हैं, उन्हें भी तू जलयान से बाहर निकाल ले जिससे वे अत्यन्त फलवन्त हों, और पृथ्वी में भर जाएं।' नूह अपनी पत्नी, पुत्रों और बहुओं के साथ जलयान से बाहर निकला। सब वन-पशु, रेंगनेवाले जन्तु, पक्षी तथा भूमि के समस्त गतिवान जीव अपनी जाति के अनुसार जलयान से बाहर निकल आए।

नूह ने प्रभु के लिए एक वेदी बनाई और उस पर शुद्ध पशुओं और शुद्ध पक्षियों की अग्नि-बलि चढ़ाई। जब प्रभु को अग्नि-बलि की सुखद सुगन्ध मिली तब उसने अपने हृदय में कहा, 'अब मैं मनुष्य के कारण भूमि को कभी शाप न दूंगा। बचपन से ही मनुष्य के मन के विचार बुराई के लिए होते हैं। जैसा मैंने अभी किया है वैसा जीवित प्राणियों का पुन: विनाश न करूंगा। अब से जब तक पृथ्वी स्थिर रहेगी तब तक बोआई और कटाई का समय, ठण्ड और गर्मी, ग्रीष्म तथा शीत, दिन और रात का होना समाप्त न होगा।'

परमेश्वर का नूह के साथ वाचा स्थापित करना

परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को यह आशीष दी, 'फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ। पृथ्वी के समस्त वन-पशु, आकाश के पक्षी, भूमि पर रेंगनेवाले जन्तु और समुद्र के जलचर तुमसे डरेंगे। तुम्हारा अधिकार** उनपर होगा। मैं उनको तुम्हारे हाथ में सौंपता हूं। *सब गतिवान जीव-जन्तु तुम्हारा आहार होंगे। जैसे मैंने तुमको हरे पौधे दिए थे वैसे अब* सब कुछ देता हूं। पर तुम मांस को उसके प्राण अर्थात् रक्त के साथ न खाना, क्योंकि मैं निश्चय ही तुम्हारे रक्त का बदला लूंगा। मैं प्रत्येक पशु से, प्रत्येक मनुष्य से उसका प्रतिशोध लूंगा। मैं प्रत्येक मनुष्य से उसके भाई के रक्त का बदला लूंगा। जो कोई मनुष्य का रक्त बहाएगा, उसका भी रक्त मनुष्य द्वारा बहाया जाएगा, क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया है। तुम फूलो-फलो, पृथ्वी पर सन्तान उत्पन्न करो, और असंख्य हो जाओ।'

परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों से कहा, 'मैं तुम्हारे और तुम्हारे पश्चात् होनेवाली तुम्हारी सन्तान के साथ एवं तुम्हारे साथ के प्रत्येक जीवित प्राणी अर्थात् पक्षी, पालतू पशु, पृथ्वी के समस्त वन-पशु और जलयान से बाहर निकलनेवाले सब जीव-जन्तुओं के साथ वाचा[+] स्थापित करता हूं। मैं तुम्हारे साथ यह वाचा स्थापित करता हूं कि फिर कभी जल-

*अथवा, 'सत्रहवीं तारीख को' **शब्दश: 'भय' +अथवा, 'व्यवस्थान', 'विधान', 'सन्धि'

प्रलय न होगा।' परमेश्वर ने पुन कहा, 'मैं तुम्हारे तथा तुम्हारे जीवित प्राणियो के साथ युग-युगान्त की पीढ़ी के लिए एक वाचा स्थापित करता हू। उसका यह चिह्न है. मैं बादलों में अपना धनुष नियुक्त करता हू। वह मेरे और पृथ्वी के मध्य की गई वाचा का चिह्न होगा। जब मैं पृथ्वी के ऊपर बादल लाऊंगा और उनके मध्य धनुष दिखाई देगा तब तुम्हारे एव समस्त जीवित प्राणियो के साथ की गई अपनी वाचा को स्मरण करूगा, और जल का प्रलय कदापि न होगा कि समस्त प्राणी नष्ट हो जाएं। जब बादलो में धनुष दिखाई देगा तब उसे देखकर मैं उस शाश्वत् वाचा का स्मरण करूगा, जो मुझ-परमेश्वर और पृथ्वी के समस्त जीवित प्राणियो के मध्य स्थापित की गई है।' तत्पश्चात् परमेश्वर ने नूह से कहा, 'जो वाचा मैंने अपने और पृथ्वी के समस्त प्राणियों के मध्य स्थापित की है, उसका यही चिह्न है।'

१ नूह ने जलयान से बाहर निकलने का उचित समय किस प्रकार जाना?
२ नूह ने जलयान मे बाहर आते ही सबसे पहले कौन-सा काम किया?
३. परमेश्वर ने नूह को कौन-सा वचन दिया, और अपने वचन के प्रमाण-स्वरूप आकाश मे कौन-सा चिह्न दिखाया?

६. अब्राहम को परमेश्वर का आवाहन

(उत्पत्ति १२ : १–८; १५ : १–२१)

सृष्टि-रचना तथा जल-प्रलय को हुए हजारों साल बीत गए। मनुष्य जाति पुन पृथ्वी के देश-देश मे बस गई। लोग फूलने-फलने लगे। लेकिन उनका पापमय स्वभाव उनसे नही छूटा। मनुष्य जाति के अधिकाश लोग पापी थे। सच्चे परमेश्वर की आराधना-वन्दना करनेवाले लोग थोडे थे। उन्होंने मूर्तियो की पूजा-पाठ कर स्वय को पापी नही बनाया था।

परमेश्वर के ऐसे ही भक्तो में एक बहुत धनवान मनुष्य था। उसका नाम अब्राम था। (किन्तु परमेश्वर ने आगे चलकर उसका नाम अब्राहम कर दिया) परमेश्वर ने अब्राहम को आवाहन दिया कि वह अपनी मातृभूमि, स्वदेश छोडकर एक नये देश मे जाए, और वहा एक नये पवित्र राष्ट्र की नीव डाले। परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, कि इस नये राष्ट्र के माध्यम से विश्व के सब राष्ट्र परमेश्वर की आशीष पाएंगे। क्योंकि इसी नये, पवित्र राष्ट्र मे ससार के उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह का जन्म होगा।

अब्राहम का परमेश्वर पर अनुपम विश्वास था। वह यह भी नही जानते थे कि वह देश कहा है, जहा जाने का आदेश परमेश्वर ने उनको दिया है; फिर भी वह अपना डेरा-डण्डा उठाकर अनजान देश की ओर चल पडे। उन्होंने स्वदेश त्याग दिया। उनके साथ उनका विशाल परिवार, नाते-रिश्तेदार, भेड-बकरिया, गाय-बैल, आदि थे। अब्राहम नही जानते थे कि वह कहा जा रहे है, तो भी परमेश्वर पर उनका अटूट विश्वास था कि परमेश्वर उनका मार्ग-दर्शन करेगा।

प्रभु ने अब्राहम से कहा, 'तू अपने स्वदेश, जन्म-स्थान और नाते-रिश्तेदारो को छोडकर
उस देश को जा, जो मै तुझे दिखाऊगा। मै तुझसे एक बडा राष्ट्र उद्भव करूगा। मै तुझे
और तेरे नाम को महान बनाऊगा ताकि तू मानव-जाति के लिए आशीष का

अब्राहम ने हारान देश से प्रस्थान किया तब वह पचहत्तर वर्ष के थे। वह अपनी पत्नी साराः, भतीजे लूत, और अपनी अर्जित सम्पत्ति एवं हारान देश मे बनाए दास-दासियो को लेकर कनान देश की ओर चले। उन्होंने कनान देश मे प्रवेश किया। वे चलते-चलते शकेम नामक स्थान पर पहुंचे जहां 'मोरे का पवित्र बांज वृक्ष' है। उस समय कनानी जाति उस देश मे रहती थी। प्रभु ने अब्राहम को दर्शन देकर कहा, 'मैं यह देश तेरे वंश को दूंगा।' अतः अब्राहम ने प्रभु के लिए, जिसने उन्हें दर्शन दिया था, वहां एक वेदी बनाई। तत्पश्चात् वह वहां से हटकर बेत-एल नगर की पूर्व दिशा में स्थित एक पहाड़ी पर पहुंचे। वहां उन्होंने अपना तम्बू गाड़ा। पहाड़ के पश्चिम में बेत-एल और पूर्व मे ऐ नगर थे। वहां अब्राहम ने प्रभु के लिए एक वेदी बनाई, और प्रभु के नाम से आराधना की।

परमेश्वर का अब्राहम के साथ वाचा स्थापित करना

इन घटनाओ के पश्चात् अब्राहम ने एक दर्शन देखा। उन्हें प्रभु का यह सन्देश मिला 'अब्राहम, मत डर, मैं तेरी ढाल हूं। तुझे बड़ा पुरस्कार प्राप्त होगा।' किन्तु अब्राहम ने कहा, 'हे स्वामी, हे प्रभु, तू मुझे क्या देगा? मैं तो पुत्रहीन हूं। मेरे घर का उत्तराधिकारी दमिश्क नगर का एलीएजर होगा।' अब्राहम ने आगे कहा, 'देख, तूने मुझे कोई सन्तान नहीं दी। इसलिए मेरे घर मे उत्पन्न गुलाम ही मेरा उत्तराधिकारी बनेगा।' इस पर प्रभु का सन्देश उन्हें मिला, 'यह गुलाम तेरा उत्तराधिकारी नहीं होगा, वरन् स्वयं तेरा पुत्र ही, तेरा उत्तराधिकारी बनेगा।' प्रभु अब्राहम को घर के बाहर ले गया। उसने कहा, 'आकाश की ओर देख। यदि तू तारों को गिन सकता है तो गिन।' तब वह अब्राहम से बोला, 'तेरा वंश ऐसा ही असंख्य होगा।'

अब्राहम ने प्रभु पर विश्वास किया, और प्रभु ने अब्राहम के इस विश्वास को उनकी धार्मिकता माना।

उसने अब्राहम से कहा, 'मैं वही प्रभु हूं, जिसने यह देश तेरे अधिकार मे देने के लिए तुझे कसदी जाति के ऊर नगर से निकाला है।' अब्राहम ने पूछा, 'हे स्वामी, हे प्रभु, मुझे कैसे ज्ञात होगा कि मैं ही इस देश पर अधिकार करूंगा?' उसने अब्राहम को उत्तर दिया, 'मेरे पास तीन-तीन वर्ष की एक बछिया, एक बकरी, एक मेढ़ा और एक पिण्डुक तथा एक कबूतर का बच्चा ला।' अब्राहम ये सब उसके पास ले आए। तत्पश्चात् अब्राहम ने उनके दो-दो टुकड़े किए, और उन्हें आमने-सामने रखा। किन्तु उन्होंने पक्षियों के दो टुकड़े नहीं किए। जब शिकारी पक्षी उन टुकड़ों* पर झपटे तब अब्राहम ने उन्हें उड़ा दिया।

जब सूर्य अस्त हो रहा था तब अब्राहम को गहरी नींद आ गई। सहसा उन पर घोर अन्धकार और आतंक छा गया। प्रभु ने अब्राहम से कहा, 'निश्चयपूर्वक जान ले कि तेरे वंशज पराए देश मे प्रवास करेंगे। वे वहां गुलाम बनकर रहेंगे। उन्हें चार सौ वर्ष तक दुःख सहना होगा। किन्तु जो देश उन्हें गुलाम बनाएगा, उसे मैं दण्ड दूंगा। इसके पश्चात् वे अपार सम्पत्ति के साथ वहां से निकल आएंगे। तू शान्तिपूर्वक अपने मृत पूर्वजों के पास जाएगा। तू पर्याप्त वृद्धावस्था में गाड़ा जाएगा। तेरे वंशज चौथी पीढ़ी में यहां लौट आएंगे, क्योंकि एमोरी जाति के अधर्म का घड़ा अभी पूरा नहीं भरा है।'

सूर्य अस्त होने के पश्चात् जब घोर अन्धकार छा गया तब एक अंगीठी जिससे से धुआं निकल रहा था, और एक जलती मशाल उन टुकड़ों के मध्य से होकर गई। प्रभु ने उसी दिन अब्राहम के साथ वाचा बांधी। उसने कहा, 'मैं तेरे वंश को यह देश, अर्थात् मिस्र देश की नदी से महानदी फरात तक की भूमि देता हूं, जहां केनी, कनिज्जी, कदमोनी, हित्ती, परिज्जी,

*शब्दश: 'लोथ'

रपाई, एमोरी, कनानी, गिर्गाशी और यबूसी जातियां रहती हैं।'

१ अब्राहम को परमेश्वर के इस वचन पर सहसा विश्वास क्यों नहीं हुआ कि परमेश्वर उनसे एक महान राष्ट्र का उद्भव करेगा? (देखो, उत्पत्ति १५ . २)

२ उत्पत्ति १५ . ६ मे अब्राहम का किस प्रकार वर्णन हुआ है?

✓८. सदोम और अमोरा नगर-राज्यों का विनाश

(उत्पत्ति १८ : १६–३३, १९ : १–२९)

हम जानते है कि परमेश्वर अत्यन्त प्रेममय है। वह परम पवित्र है। वह पाप से घृणा करता है।

परमेश्वर अपने भक्त अब्राहम पर कृपालु था । अब्राहम भी परमेश्वर से प्रेम करते थे, और उसपर उनका अटूट विश्वास था।

जब अब्राहम परमेश्वर के आदेश के अनुसार अनजान देश की ओर चले तब उनके साथ उनका भतीजा लूत भी था। लूत सदोम और अमोरा नगर-राज्यों मे बस गया। इन नगरो के निवासी बहुत अधार्मिक, दुर्जन और पापी थे। उनके पाप का घडा भर चुका था, और उनके दुष्कर्म इतने अधिक हो गए थे कि परमेश्वर ने उन नगरों को पूर्णत नष्ट करने का निश्चय किया। परमेश्वर ने अपने प्रियजन अब्राहम को अपने निश्चय के विषय में बताया। अब्राहम ने परमेश्वर से निवेदन किया कि वह उन नगरो को नष्ट न करे। परमेश्वर ने मनुष्य के रूप में अपने दो दूत भेजे थे। ये दूत अब्राहम को नगर-विनाश की सूचना देने तथा लूत को चेतावनी देने उसके नगर—सदोम में आए।

जो तीन पुरुष अब्राहम के यहा आए, वे उठे। उन्होंने सदोम नगर की ओर दृष्टि की। अब्राहम उन्हें विदा करने के लिए उनके साथ गए। प्रभु ने सोचा, 'मैं जो कार्य करने जा रहा हू, क्या उसे अब्राहम से गुप्त रखू, जबकि वह एक महान और शक्तिशाली राष्ट्र बनेगा? पृथ्वी के समस्त राष्ट्र उसके द्वारा मुझसे आशीष पाएगे। मैंने उसे चुना है कि वह अपने पुत्रों और परिवार को, जो उसके पश्चात् रहेंगे, शिक्षा दे कि वे धार्मिकता और न्याय के कार्य करें और मुझ-प्रभु के मार्ग पर चलते रहें। तब मैं उस वचन को पूर्ण करूगा जो मैंने अब्राहम को दिया था।' प्रभु ने कहा, 'सदोम और अमोरा नगरो के विरुद्ध लोगो की दुहाई बढ गई है। उनके पाप बहुत गम्भीर हो गए है। मैं उतरकर देखूंगा कि उस दुहाई के अनुसार कार्य हुआ है अथवा नहीं जो मुझ तक पहुंची है। यदि नहीं, तो मैं उसे जान लूगा।'

अब्राहम का सदोम नगर के लिए निवेदन करना

दो पुरुष वहा से मुडकर सदोम नगर की ओर चले गए। किन्तु अब्राहम प्रभु के सम्मुख खड़े रहे। अब्राहम ने आकर कहा, 'प्रभु, क्या तू निश्चय ही दुराचारियो के साथ धार्मिको को नष्ट करेगा? मान ले, वहा नगर मे पचास धार्मिक हों। तो क्या तू उस स्थान को नष्ट करेगा, और उन पचास धार्मिको के कारण उसे नही छोडेगा, जो उसमें है? तू ऐसा कार्य करने से सदा दूर रहे कि दुराचारियो के साथ धार्मिक भी मारे जाए। धार्मिकों की दशा दुराचारियो के सदृश हो, यह कार्य तुझसे कभी न हो। क्या पृथ्वी का न्यायाधीश उचित न्याय न करेगा?' प्रभु ने कहा, 'यदि मुझे सदोम नगर मे पचास धार्मिक मिलेगे तो उनके कारण मैं समस्त को छोड दूगा।' अब्राहम ने उत्तर दिया, 'मैं तो मिट्टी और राख मात्र हू फिर भी अपने

स्वामी से बातें करने का साहस कर रहा हूं। मान ले, यदि पचास धार्मिकों में से पांच कम हों, तो क्या तू पांच के कम हो जाने के कारण समस्त नगर को नष्ट कर देगा?' उसने कहा, 'यदि मुझे वहां पैंतालीस धार्मिक मिलेंगे तो मैं उसको नष्ट नहीं करूंगा।' अब्राहम ने कहा, 'मान ले, वहां चालीस मिलें?' प्रभु ने उत्तर दिया, 'मैं चालीस के लिए उसे नष्ट नहीं करूंगा।' अब्राहम ने पुन: कहा, 'यदि स्वामी क्रोध न करे तो मैं कहूंगा: मान ले, वहां तीस ही मिलें?' उसने उत्तर दिया, 'यदि मुझे वहां तीस मिलेंगे, तो मैं उसे नष्ट नहीं करूंगा।' अब्राहम ने कहा, 'देख, मैंने स्वामी से बातें करने का साहस किया है। मान ले, वहां बीस धार्मिक मिलें?' उसने उत्तर दिया, 'मैं बीस के लिए भी उसे नष्ट नहीं करूंगा।' तब अब्राहम ने कहा, 'यदि स्वामी क्रोध न करे तो मैं एक बार और कहूंगा: मान ले, वहां दस धार्मिक मिलें?' उसने उत्तर दिया, 'मैं दस के लिए भी उसे नष्ट नहीं करूंगा।'

जब प्रभु अब्राहम से बातें कर चुका तब वह चला गया। अब्राहम अपने निवास-स्थान को लौट गए।

सदोम और अमोरा नगर-राज्यों का विनाश

वे दो दूत सन्ध्या के समय सदोम नगर पहुंचे। लूत सदोम नगर के प्रवेश-द्वार पर बैठा था। जब लूत ने उन्हें देखा तब वह उनके स्वागत के लिए उठा। उसने भूमि की ओर सिर झुकाकर उनका अभिवादन किया, और कहा, 'मेरे स्वामियो, मैं आपसे विनती करता हूं। आप अपने सेवक के घर पधारिए और अपने पैर धोइए। आप यहीं रात व्यतीत कीजिए। आप प्रात:काल उठकर अपने मार्ग पर चले जाना।' किन्तु उन्होंने उत्तर दिया, 'नहीं, हम चौक में ही रात बिताएंगे।' जब लूत ने बहुत अनुनय-विनय की तब वे उसके साथ चले और उसके घर में आए। लूत ने उनके लिए विशेष भोजन तैयार किया। उसने अखमीरी रोटी बनाई, और उन्होंने खाई।

उनके शयन करने के पूर्व नगर के लोगों ने, अर्थात् सदोम के पुरुषों ने, युवकों से लेकर वृद्धों तक नगर के चारों ओर के सब पुरुषों ने, लूत के घर को घेर लिया। उन्होंने लूत को पुकारा और उससे पूछा, 'वे पुरुष कहां हैं जो आज रात तेरे पास आए हैं? उन्हें बाहर निकाल। हम उनके साथ भोग करेंगे।' लूत द्वार से निकलकर उनके पास आया। उसने अपने पीछे दरवाजा बन्द कर उनसे कहा, 'मैं आप लोगों के हाथ जोड़ता हूं। भाइयो, ऐसा दुराचार मत करना। देखिए, मेरी दो कुंआरी कन्याएं हैं। मैं उन्हें आपके पास बाहर लाता हूं। जो आपकी दृष्टि में भला लगे, वैसा ही उनके साथ कीजिए। केवल इन पुरुषों के साथ कुछ न कीजिए, क्योंकि ये मेरी छत-तले आए हैं।' उन्होंने कहा, 'हट जा।' फिर वे बोले, 'तू यहां प्रवास करने आया था, और अब न्याय करके न्यायाधीश बनना चाहता है। हम उनसे अधिक तेरे साथ बुरा व्यवहार करेंगे।' उन्होंने लूत को कुचल दिया, और दरवाजा तोड़ने के लिए समीप आए। परन्तु उन दूतों ने हाथ बढ़ाकर लूत को अपने पास भीतर खींच लिया, और दरवाजा बन्द कर दिया। तत्पश्चात् उन्होंने बड़े-छोटे सब पुरुषों को जो घर के द्वार पर थे, अन्धा बना दिया। अत: वे द्वार को टटोलते-टटोलते थक गए।

दूतों ने लूत से पूछा, 'यहां तुम्हारे और कौन-कौन हैं? दामाद, पुत्र-पुत्रियां तथा नगर में जो कोई भी तुम्हारा आत्मीय है, उन सबको इस स्थान से बाहर ले जाओ। हम इस स्थान को नष्ट करने वाले हैं। इसके विरुद्ध लोगों की बड़ी दुहाई प्रभु के सम्मुख पहुंची है। प्रभु ने हमें इसका विनाश करने को भेजा है।' लूत घर से निकलकर अपने भावी दामादों के पास गया, जो उसकी पुत्रियों से विवाह करनेवाले थे। उसने उनसे कहा, 'उठो, और इस स्थान से निकल चलो; क्योंकि प्रभु इस नगर को नष्ट करनेवाला है।' परन्तु उसके दामादों ने समझा कि वह उनसे मजाक कर रहा है।

जब पौ फटने लगी तब दूतों ने लूत से आग्रह किया कि वह शीघ्रता करे। उन्होंने कहा, 'उठो, अपनी पत्नी और दोनों पुत्रियों को जो यहां हैं, लेकर चले जाओ। ... भी इस

नगर के कुकर्म-दण्ड मे भस्म हो जाओगे।' किन्तु वह विलम्ब करता रहा। अतः दूत उसे तथा उसकी पत्नी एवं उसकी दोनो पुत्रियो का हाथ पकड़कर उन्हे नगर से बाहर ले गए, क्योंकि प्रभु लूत के प्रति दयालु था। दूतों ने उन्हे नगर के बाहर लाकर उनसे कहा, 'अपने प्राण बचाकर भाग जाओ। पीछे मुड़कर न देखना, और न घाटी मे कहीं रुकना। पहाड़ की ओर भागो। अन्यथा तुम भी भस्म हो जाओगे।' लूत ने उनसे कहा, 'नहीं, नहीं, मेरे स्वामियो! आपके सेवक पर आपकी कृपादृष्टि हुई है। आपने प्राण बचाकर मुझ पर अपार करुणा की है। पर मैं पहाड़ की ओर नहीं भाग सकता। ऐसा न हो कि वहां मेरे साथ कोई दुर्घटना हो जाए और मैं मर जाऊं। देखिए, उधर एक नगर है। वह मेरे लिए निकट है। वह कस्बा है। मुझे वहां भाग जाने दीजिए। तब मेरे प्राण बच जाएंगे। क्या वह छोटा नगर नहीं है?' दूत ने लूत से कहा, 'मैंने इस नगर के विषय मे तुम्हारी विनती स्वीकार की। जिस नगर के विषय मे तुमने कहा है, उसे मैं नष्ट नहीं करूंगा। अविलम्ब वहां भाग जाओ। जब तक तुम वहां नहीं पहुंच जाओगे, मैं कुछ नहीं कर सकता।' इसलिए उस नगर का नाम सोअर* पड़ा। जब लूत सोअर नगर मे प्रविष्ट हुआ, तब पृथ्वी पर सूर्य निकल आया था।

प्रभु ने आकाश से सदोम और अमोरा नगरो पर गन्धक तथा आग की वर्षा की। उसने उन नगरो और सम्पूर्ण घाटी को, समस्त नगर निवासियो को, तथा भूमि पर उगनेवाले पेड़-पौधों को उलट-पुलट दिया। लूत की पत्नी उसके पीछे थी। उसने मुड़कर पीछे देखा, और वह नमक का स्तम्भ बन गई।

अब्राहम बड़े सबेरे उठकर उस स्थान पर गए, जहां वह प्रभु के सम्मुख खड़े थे। उन्होंने सदोम, अमोरा और घाटी के समस्त प्रदेश पर दृष्टि की और देखा कि धधकती भट्ठी के सदृश धुआं भूमि से निकलकर ऊपर जा रहा है।

ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर ने घाटी के नगरो को नष्ट किया तब उसे अब्राहम का स्मरण हुआ। जब उसने उन नगरो को उलट-पुलट दिया, जहां लूत रहता था, तब विनाश के मध्य से लूत को निकालकर अन्यत्र भेज दिया।

१ अब्राहम ने नगरो को बचाने के लिए परमेश्वर से किस प्रकार निवेदन किया? क्या परमेश्वर प्रत्येक बार अब्राहम का निवेदन सुनने को तैयार था? फिर भी नगरो का विनाश क्यों अनिवार्य था?
२ लूत की पत्नी का क्या हाल हुआ?
३ परमेश्वर ने किस प्रकार सदोम और अमोरा के निवासियो को उनके पाप का दण्ड दिया?

९. इसहाक का जन्म

(उत्पत्ति २१ १–७, २४ : १–२१)

अब्राहम के विश्वास की कसौटी क्या हो सकती है? परमेश्वर ने अब्राहम के विश्वास को परखा।

परमेश्वर ने अब्राहम को वचन दिया था कि वह एक महान जाति-कौम, अथवा राष्ट्र के कुल-पिता बनेंगे उनसे एक महान राष्ट्र का उद्भव होगा। किन्तु यह कैसे सम्भव था? अब्राहम और उनकी पत्नी सारय (सारा) वृद्ध हो चुकी थी। अब्राहम एक सौ वर्ष के थे, और सारय नब्बे वर्ष की, और उनकी कोई सन्तान न थी।

*छोटी बस्ती

तब परमेश्वर ने उनको एक पुत्र दिया। वृद्धावस्था में अब्राहम से सारा ने एक पुत्र को जन्म दिया। यह परमेश्वर का आश्चर्यपूर्ण कार्य था, क्योंकि परमेश्वर ने मानव-जाति को उसके पाप से बचाने के लिए एक उद्धारकर्त्ता को भेजने की प्रतिज्ञा की थी। उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार उद्धारकर्त्ता यीशु का जन्म होगा, और यीशु का जन्म परमेश्वर का आश्चर्यपूर्ण कार्य होगा, किसी मनुष्य का कार्य नहीं।

अब्राहम के पुत्र का नाम था—इसहाक।

प्रभु परमेश्वर ने सारा की सुध ली, जैसा उसने कहा था। उसने सारा से वैसा ही किया, जैसा उसने वचन दिया था। सारा गर्भवती हुई। उसने अपनी वृद्धावस्था में उसी निर्धारित समय पर, जिसके विषय में परमेश्वर ने कहा था, अब्राहम से पुत्र को जन्म दिया। जो पुत्र अब्राहम को उत्पन्न हुआ और जिसे सारा ने जन्म दिया, उसका नाम उन्होंने इसहाक रखा। जब इसहाक आठ दिन का हुआ तब अब्राहम ने उसका खतना किया, जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने दी थी। अपने पुत्र इसहाक के जन्म के समय अब्राहम सौ वर्ष के थे। सारा बोली, 'परमेश्वर ने मुझे हंसाया है।* इसलिए सब सुननेवाले भी मेरे साथ हंसेंगे! अब्राहम से कौन कह सकता था कि सारा बच्चों को कभी दूध पिलाएगी। फिर भी मैंने अब्राहम की वृद्धावस्था में पुत्र को जन्म दिया।'

इसहाक के लिए वधू-प्राप्ति का विवरण

अब्राहम वृद्ध थे। उनकी आयु पक चुकी थी। प्रभु ने उन्हें सब प्रकार की आशीष दी थी। एक दिन अब्राहम ने अपने घर के सबसे बूढ़े और अपनी सम्पत्ति का प्रबन्ध करनेवाले सेवक से कहा, 'अपना हाथ मेरी जांघ के नीचे रखो। मैं तुम्हें स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु परमेश्वर की शपथ देता हूं कि तुम मेरे पुत्र के लिए कनानी जाति की कन्याओं में से, जिनके देश में मैं निवास करता हूं, वधू नहीं लाओगे, वरन् तुम मेरी जन्म-भूमि में मेरे कुटुम्बियों के पास जाकर मेरे पुत्र इसहाक के लिए वधू लाओगे।' सेवक ने उनसे कहा, 'कदाचित् वह कन्या मेरे साथ इस देश में आना न चाहे। तब क्या मैं आपके पुत्र को उस देश में, जहां से आप आए हैं, ले जा सकता हूं?' अब्राहम ने उससे कहा, 'सावधान, तुम मेरे पुत्र को वहां कदापि वापस न ले जाना। स्वर्ग का प्रभु परमेश्वर, जो मुझे पितृगृह और मेरी जन्मभूमि से निकालकर लाया है, उसने मुझसे कहा था, उसने मुझसे यह शपथ खाई थी, "मैं यह देश तेरे वंश को दूंगा।" वही प्रभु परमेश्वर अपने दूत को तुम्हारे मार्ग-दर्शन के लिए भेजेगा कि तुम मेरे पुत्र के लिए वहां से वधू लाओ। यदि कन्या तुम्हारे साथ आना न चाहे तो तुम मेरी इस शपथ से मुक्त हो जाओगे। पर तुम मेरे पुत्र को वहां कदापि वापस न ले जाना।' सेवक ने अपने स्वामी अब्राहम की जांघ के नीचे अपना हाथ रखा, और इस आदेश के अनुसार शपथ खाई।

सेवक अपने स्वामी अब्राहम के ऊंटों में से दस ऊंट और सर्वोत्तम भेंट लेकर उनके भाई नाहोर के नगर में चला गया जो मसोपोटामिया देश में था। उसने नगर के द्वार पर पहुंचकर एक कुएं के पास अपने ऊंटों को बैठाया। सन्ध्या का समय था। ऐसे समय स्त्रियां कुएं से पानी भरने निकलती थीं। सेवक ने कहा, हे प्रभु, मेरे स्वामी अब्राहम के परमेश्वर! मुझे आज सफलता प्रदान कर। मैं विनती करता हूं। मेरे स्वामी अब्राहम पर करुणा कर। देख, मैं झरने पर खड़ा हूं, और नगर निवासियों की पुत्रियां जल भरने को बाहर निकल रही हैं। अब ऐसा हो कि जिस कन्या से मैं कहूं, "कृपया अपना घड़ा नीचे करो कि मैं पानी पीऊं", और वह उत्तर दे, "आप पानी पीजिए। मैं आपके ऊंटों को भी पानी पिलाऊंगी", तो वह वही कन्या हो जिसे तूने अपने सेवक इसहाक के लिए चुनी है। इससे मैं जान लूंगा कि तूने

*अथवा, 'परमेश्वर ने मेरे लिए हंसी का साधन प्रस्तुत किया है।'

मेरे स्वामी पर करुणा की है।'

उसने बोलना समाप्त नही किया था कि रिबका अपने कन्धे [illegible] आई। वह अब्राहम के भाई नाहोर और उसकी पत्नी मिल्का के पुत्र बतूएल की पुत्री थी। वह कन्या देखने मे बहुत सुन्दर थी। वह कुआरी थी। अभी उसका विवाह नहीं हुआ था। वह झरने पर गई। उसने घड़ा भरा और ऊपर आई। सेवक उससे भेंट करने को दौड़ा और उससे बोला, 'कृपया, मुझे अपने घड़े से थोड़ा पानी पिलाओ।' उसने कहा, 'महाशय अवश्य पीजिए।' उसने अविलम्ब अपना घड़ा अपने हाथ पर उतारकर उसे पानी पिलाया। जब वह उसे पानी पिला चुकी तब बोली, 'जब तक आपके ऊंट पानी न पी लें, मैं उनके लिए पानी भरूगी।' उसने शीघ्रता से घड़े का जल नाद मे उण्डेलकर [illegible] खीचने को कुए पर दौड़कर गई। उसने सब ऊंटों के लिए कुए से पानी खींचा। सेवक टकटकी लगाकर उसे देखता रहा। वह यह बात जानने को चुप था कि क्या प्रभु ने उसकी यात्रा सफल की है अथवा नही।

१ हम इसहाक के जन्म को एक आश्चर्यपूर्ण घटना क्यो कहते है?
२ परमेश्वर ने किस प्रकार अब्राहम की प्रार्थना सुनी और इसहाक को पत्नी प्राप्त हुई?

१०. याकूब का इसहाक से आशीर्वाद प्राप्त करना

(उत्पत्ति २७ : १–४५)

परमेश्वर नवजात राष्ट्र को पाल-पोस कर बड़ा कर रहा था। उसने इसहाक को दो पुत्र दिए याकूब और एसाव। जिस प्रकार याकूब परमेश्वर की आशीष प्राप्त करता है, वह अपने-आप मे अनूठी कहानी है। याकूब झूठा, किन्तु चतुर था। वह धोखे से अपने बड़े भाई का पैतृक-अधिकार हथिया लेता है। निस्सन्देह परमेश्वर इस छल-कपट को पसन्द नही करता, किन्तु वह इतना महान है कि वह मनुष्य की दुर्बलता और बुराइयो को अपने महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए क्षमा कर देता है। वह बुरे मनुष्य को भी अपने महान कार्य का माध्यम बनाता है। आज की कहानी मे इसी सच्चाई का उद्घाटन हुआ है।

जब इसहाक वृद्ध हो गए, और उनकी आंखे इतनी धुधली पड़ गई कि वह देख नहीं सकते थे, तब उन्होंने ज्येष्ठ पुत्र एसाव को बुलाया और उससे कहा, 'मेरे पुत्र एसाव!' एसाव ने उन्हे उत्तर दिया, 'क्या बात है, पिताजी?' इसहाक बोले, 'देख, मै बूढ़ा हो गया हू। मै अपनी मृत्यु का दिन नही जानता। अब तू अपने धनुष-बाण आदि शस्त्र ले और जंगल को जा। वहा से तू मेरे लिए शिकार मार कर ला। उसके बाद तू मेरी रुचि के अनुसार मेरे लिए स्वादिष्ट भोजन पकाना और उसको मेरे पास लाना। मै उसको खाऊगा और मरने के पूर्व तुझे आशीर्वाद दूगा।'

जब इसहाक अपने पुत्र एसाव से बाते कर रहे थे तब रिबका भी सुन रही थी। एसाव शिकार लाने के लिए जंगल चला गया। रिबका अपने पुत्र याकूब से बोली, 'मैने तेरे पिता को यह बात सुनी है। उन्होने तेरे भाई एसाव से कहा है, "मेरे लिए शिकार मार कर ला। मेरे लिए स्वादिष्ट भोजन पका। मै उसको खाऊगा और मरने के पूर्व प्रभु के सम्मुख तुझे आशीर्वाद दूंगा।" अब, मेरे पुत्र, मेरी बात सुन। जैसा मै तुमसे कहती हू, वैसा ही कर। तू भेड़शाला

* 'किसी पुरुष ने उसे जाना न था'।

ा और वहां से बकरी के दो अच्छे बच्चे मुझे लाकर दे। मैं उनसे तेरे पिता के लिए उनकी चि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन पकाऊंगी। उसके बाद तू उसको अपने पिता के पास ले ाना कि वह उसको खाकर अपनी मृत्यु से पहले तुझे आशीर्वाद दे।' याकूब ने अपनी मां रिबका से कहा, 'परन्तु मेरा भाई एसाव रोएंदार है, और मैं रोएंहीन हूं। कदाचित पिताजी मुझे स्पर्श करें। तब मैं उनकी दृष्टि में उनके अन्धेपन का मजाक उड़ानेवाला ठहरूंगा, और अपने ऊपर उनका आशीर्वाद नहीं, वरन् अभिशाप लाऊंगा।' उसकी मां उससे बोली, मेरे पुत्र, तेरा अभिशाप मुझपर पड़े। तू केवल मेरी बात सुन। तू जा और बकरी के बच्चे मुझे लाकर दे।' अतः वह गया और बकरी के दो बच्चे लेकर अपनी मां के पास आया। उसकी मां ने उसके पिता की रुचि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन पकाया। रिबका ने अपने ज्येष्ठ पुत्र एसाव के विशेष वस्त्र लिए, जो रिबका के पास घर में थे, और उन्हें अपने कनिष्ठ पुत्र को पहिना दिए। उसने बकरी के बच्चों की खाल उसके हाथों तथा गले के चिकने भाग पर लपेट दी। तत्पश्चात् उसने रोटी और स्वादिष्ट भोजन जिसको उसने स्वयं पकाया था, अपने पुत्र याकूब के हाथ में सौंप दिया।

याकूब अपने पिता के पास आया। उसने कहा, 'पिताजी!' इसहाक ने पूछा, 'क्या बात है? पुत्र, तुम कौन हो?' याकूब ने अपने पिता को उत्तर दिया, 'मैं आपका बड़ा पुत्र एसाव हूं। जैसा आपने मुझसे कहा था वैसा ही मैंने किया है। कृपया उठिए और चलकर मेरे शिकार का मांस खाइए जिससे आप अपनी आत्मा से मुझे आशीर्वाद दे सकें।' इसहाक ने अपने पुत्र से कहा, 'मेरे पुत्र, यह क्या! तुझे इतने शीघ्र शिकार मिल गया?' याकूब बोला, 'आपके प्रभु परमेश्वर ने उसे मेरे सामने कर दिया था।' इसहाक याकूब से बोले, 'पुत्र, पास आ कि मैं तुझे स्पर्श करके मालूम कर सकूं कि तू निश्चय ही मेरा पुत्र एसाव है, अथवा नहीं।' याकूब अपने पिता इसहाक के निकट आया। इसहाक ने उसको स्पर्श किया, और यह कहा, 'तेरी आवाज़ तो याकूब की आवाज़ जैसी लगती है, पर तेरे हाथ एसाव के हाथ जैसे ही हैं।' इस प्रकार इसहाक उसे नहीं पहचान सके, क्योंकि उसके हाथ उसके भाई के समान रोएंदार थे। इसहाक ने उसे आशीर्वाद दिया। पर उन्होंने पूछा, 'क्या तू निश्चय ही मेरा पुत्र एसाव है?' याकूब बोला, 'हां, मैं हूं।' इसहाक ने कहा, 'तो मुझे भोजन परोस। मैं अपने पुत्र के शिकार को खाऊंगा जिससे मैं अपनी आत्मा से तुझे आशीर्वाद दूं।' उसने भोजन परोसा। इसहाक ने भोजन किया। वह उनके लिए अंगूर का रस भी लाया, और उन्होंने उसे पिया। तत्पश्चात् उसके पिता इसहाक ने उससे कहा, 'पुत्र, पास आ और मुझे चुम्बन दे।' उसने पास जाकर इसहाक को चूमा। इसहाक ने उसके वस्त्र की सुगन्ध सूंघकर उसको यह आशीर्वाद दिया

'देखो, मेरे पुत्र की सुगन्ध!
यह उस खेत की सुगन्ध के सदृश है
जिसे प्रभु ने आशीष दी है।
परमेश्वर तुझे आकाश से ओस
एवं भूमि की सर्वोत्तम उपज,
अधिकाधिक अनाज और अंगूर की फसल प्रदान करे।
अनेक राज्य तेरी सेवा करें,
विभिन्न जातियां तुझे दण्डवत् करें।
तू अपने भाइयों का स्वामी बने।
तेरी मां के पुत्र तुझे दण्डवत् करें।
तुझे शाप देने वाले स्वयं शापित हों,
पर आशीष देनेवाले आशीष प्राप्त करें।'

इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद देना समाप्त किया, और जैसे ही याकूब अपने पिता

इसहाक के पास से बाहर गया उसका भाई एसाव शिकार से लौटा। उसने भी स्वादिष्ट भोजन पकाया। तत्पश्चात् वह उसे अपने पिता के पास लाया। उसने कहा, 'पिताजी, उठिए और अपने पुत्र के शिकार का मांस खाइए, जिससे आपकी आत्मा मुझे आशीर्वाद दे।' उसके पिता इसहाक ने उससे पूछा, 'तुम कौन हो?' वह बोला, 'मैं आपका बड़ा पुत्र एसाव हूं।' इसहाक थरथर कांपने लगे। उन्होंने पूछा, 'तब वह कौन था जो मेरे पास शिकार लाया था? मैंने तेरे आने से पहले उसका परोसा हुआ भोजन खाया, और उसे आशीर्वाद दिया। अब वह आशीषमय हो चुका है।' जब एसाव ने अपने पिता इसहाक की ये बातें सुनीं तब उसने अत्यन्त ऊंची और दु:खपूर्ण आवाज में अपने पिता से कहा, 'पिताजी, मुझे भी आशीर्वाद दीजिए।' वह बोले, 'तेरा भाई धूर्तता से आया और तेरा आशीर्वाद लेकर चला गया।' एसाव ने कहा, 'उसका नाम याकूब ठीक ही रखा गया था। उसने दो बार मुझे अड़गा मारा पहले तो मेरा ज्येष्ठ पुत्र होने का अधिकार ले लिया, और अब मेरा आशीर्वाद भी छीन लिया।' एसाव ने पूछा, 'क्या आपने मेरे लिए कोई आशीर्वाद बचाकर नहीं रखा?' इसहाक ने एसाव को उत्तर दिया, 'मैंने उसे तेरा स्वामी बनाया है। मैंने उसके सब भाई उसके सेवक बनने के लिए प्रदान कर दिए। मैंने अनाज और अंगूर से उसको सम्पन्न बना दिया। अब हे पुत्र, मैं तेरे लिए क्या कर सकता हूं?' एसाव अपने पिता से बोला, 'आपके पास एक आशीर्वाद तो होगा? पिताजी, उसी आशीर्वाद से मुझे आशीषमय कीजिए।' एसाव फूट-फूटकर रोने लगा। तब उसके पिता इसहाक ने उसे उत्तर दिया,

'उपजाऊ भूमि से दूर,
ऊंचे आकाश की ओस से दूर
तेरा निवास-स्थान होगा।
तू तलवार के बल पर जीवित रहेगा।
तू अपने भाई की गुलामी करेगा।
पर जब तू अशान्त हो जाएगा*
तब अपनी गरदन से उसके गुलामी के जुए को तोड़ फेंकेगा।'

उस आशीर्वाद के कारण जिसे उसके पिता ने याकूब को दिया था, एसाव याकूब से घृणा करने लगा। एसाव ने अपने मन में कहा, 'पिता के मृत्यु-शोक दिवस निकट हैं।** उसके बाद मैं अपने भाई की हत्या करूंगा।' जब रिबका को उसके ज्येष्ठ पुत्र की ये बातें बताई गईं तब उसने सेवक भेजकर अपने कनिष्ठ पुत्र याकूब को बुलाया। रिबका ने उससे कहा, 'देख, तेरा भाई एसाव तुझे मार डालने के लिए अपने हृदय को धैर्य बंधा रहा है। अब मेरे पुत्र, मेरी बात सुन। तू मेरे भाई, अपने मामा लाबान के पास हारान नगर भाग जा। कुछ दिन, जब तक मेरे भाई का क्रोध शान्त न हो जाए, तू अपने मामा के साथ रहना। जब तेरे भाई का क्रोध शान्त हो जाएगा, और जो तूने उसके साथ किया है, उसे वह भूल जाएगा तब मैं सेवक भेजकर तुझे वहां से बुला लूंगी। मैं एक ही दिन तुम दोनों पुत्रों को क्यों खो दूं?'

१ याकूब ने अपने भाई को कैसे धोखा दिया?
२. याकूब को कौन-सा वचन प्राप्त हुआ?

११. यूसुफ का आख्यान

(उत्पत्ति ३७ : १–३६)

परमेश्वर बुराई से घृणा करता है और पाप करनेवालों को दण्ड देता है।

* अस्पष्ट
** ‚ 'मेरे पिता की मृत्यु निकट है।'

आज की कहानी मे हम पढ़ेंगे कि परमेश्वर विश्व, आकाश और पृथ्वी की समस्त बुरी शक्तियों मे ऊपर है, उनसे महान है। वह सर्वशक्तिमान है।

याकूब के बारह पुत्र थे। उनमे से एक का नाम यूसुफ था। यूसुफ से उसके भाई चिढ़ते थे। एक दिन उन्होंने यूसुफ को व्यापारियों के हाथ मे बेच दिया, और यूसुफ गुलाम बनकर मिस्र देश चला गया।

यह यूसुफ के भाइयों का दुष्कर्म-पाप था। किन्तु परमेश्वर ने इसी पाप को पुण्य मे बदल दिया! उसने इसी पाप के माध्यम से मनुष्य की भलाई की।

यह यूसुफ के आख्यान का पहला खण्ड है।

याकूब कनान देश मे रहते थे, जहा उनके पिता ने प्रवास किया था। यह याकूब के परिवार का वृत्तान्त है

यूसुफ सत्रह वर्ष का था। वह अपने भाइयों के साथ भेड़-बकरी चराता था। वह किशोर था। वह अपने पिता की अन्य स्त्रियो, बिल्हा और जिल्पा के पुत्रो के साथ रहता था। वह अपने उन भाइयो की बुरी बातो की खबर अपने पिता के पास लाया करता था। याकूब* अपने सब पुत्रों की अपेक्षा यूसुफ से अधिक प्रेम करते थे, क्योंकि वह उनकी वृद्धावस्था का पुत्र था। उन्होंने उसके लिए बाहोंवाला एक अगरखा सिलवाया था। जब यूसुफ के भाइयो ने देखा कि उनके पिता सब भाइयो की अपेक्षा यूसुफ से अधिक प्रेम करते है तब वे उससे घृणा करने लगे। वे उससे शान्ति से बाते भी नहीं करते थे।

एक बार यूसुफ ने स्वप्न देखा। जब उसने अपने भाइयो को स्वप्न बताया तब वे उससे और अधिक घृणा करने लगे। यूसुफ ने उनसे यह कहा, 'मैने जो स्वप्न देखा है, उसे तुम सुनो। हम सब खेत मे पूले बाध रहे है। अचानक मेरा पूला उठकर सीधा खड़ा हो गया। तुम्हारे पूलो ने मेरे पूले को चारो ओर से घेर लिया। वे झुककर उसका अभिवादन करने लगे।' भाइयो ने यूसुफ से कहा, 'क्या तू हम पर शासन करेगा? क्या तू निश्चय ही हम पर राज्य करेगा?' अतएव वे यूसुफ के स्वप्न और उसकी बातो के कारण उससे अत्यधिक घृणा करने लगे।

यूसुफ ने एक और स्वप्न देखा। उसने अपने भाइयो को स्वप्न बताया। यूसुफ ने कहा, 'देखो, मैने आज एक और स्वप्न देखा है कि सूर्य, चन्द्रमा और ग्यारह तारे झुककर मेरा अभिवादन कर रहे है।' जब उसने अपने पिता और भाइयो को यह स्वप्न बताया तब उसके पिता ने उसे डाटा और उससे कहा, 'जो स्वप्न तूने देखा है, उसका क्या अर्थ है? क्या सचमुच मै और तेरी मा तथा तेरे भाई तेरे सम्मुख खड़े होगे और भूमि की ओर झुक कर तेरा अभिवादन करेंगे?' यूसुफ के भाई उससे ईर्ष्या करते थे। परन्तु उसके पिता ने ये बाते स्मरण रखी।

यूसुफ का गुलाम बनकर मिस्र देश जाना

एक समय यूसुफ के भाई अपने पिता की भेड़-बकरी चराने के लिए शकेम नगर को गए। याकूब ने यूसुफ से कहा, 'तेरे भाई शकेम नगर के मैदान मे भेड़-बकरी चरा रहे है। आ, मै तुझे उनके पास भेजूगा।' यूसुफ ने अपने पिता से कहा, 'मै तैयार हू।' वह यूसुफ से बोले, 'जाकर देख कि तेरे भाई एव भेड़-बकरी सकुशल है अथवा नही। उनका समाचार मेरे पास लाना।' याकूब ने उसे हेब्रोन की घाटी से भेज दिया। यूसुफ शकेम नगर मे आया। एक मनुष्य ने उसे मैदान मे भटकते हुए पाया। उस मनुष्य ने यूसुफ से पूछा, 'तुम क्या ढूढ़ रहे हो?' यूसुफ ने उत्तर दिया, 'मै अपने भाइयो को ढूढ रहा हू। कृपया मुझे बताइए कि वे भेड़-बकरी कहा चरा रहे है।' मनुष्य ने कहा, 'वे यहा से चले गए है। मैने उनको कहते सुना था, "आओ, हम दोतान् नगर को चले।"' अत: यूसुफ अपने भाइयो के पीछे चला गया

*मूल में, 'इस्राएल'

और उसने उन्हें दोतान नगर में पाया।

भाइयों ने उसे दूर से देखा। उसके निकट आने के पूर्व ही उन्होंने उसकी हत्या करने का षड्यन्त्र रचा। उन्होंने एक-दूसरे से कहा, 'देखो, वह आ रहा है स्वप्न-द्रष्टा। अब आओ, हम उसे मारकर किसी गड्ढे में फेंक दें। हम घर जाकर कह [illegible] खा लिया। तब हम देखेंगे कि उसके स्वप्न भविष्य में कैसे पूरे होते हैं।' [illegible] सुना तब उसने यूसुफ को उनके हाथ से मुक्त करने के अभिप्राय से कहा, 'उसके प्राण मत लो।' रूबेन ने उनसे आगे कहा, 'रक्त मत बहाओ, वरन् [illegible] उसपर हाथ मत उठाना।' वह उनके हाथ से यूसुफ को मुक्त कर पिता के पास [illegible] चाहता था। जब यूसुफ अपने भाइयों के पास पहुंचा उन्होंने उसके वस्त्र, [illegible] अंगरखा, जिसे वह पहिने हुए था, उतार लिए। तत्पश्चात् उन्होंने उसे पकड़कर [illegible] फेंक दिया। गड्ढा सूखा था। उसमें पानी न था।

वे रोटी खाने बैठे। जब उन्होंने अपनी आंखें ऊपर उठाईं तब उन्हें [illegible] एक कारवां दिखाई दिया जो गिलआद की ओर से आ रहा था। वे अपने ऊंटों पर [illegible] बलसान और गन्धरस लादे हुए मिस्र देश जा रहे थे। यहूदा ने अपने भाइयों से कहा, 'यदि हम अपने भाई की हत्या करें, और उसका रक्त छिपाएं, तो हमें क्या लाभ होगा? [illegible] हम उसे यिश्माएलियों के हाथ बेच दें, और अपना हाथ उसपर न उठाएं, [illegible] भाई है, हमारी देह है।' उसके भाइयों ने उसकी बात सुनी।

तब मिद्यानी व्यापारी वहां से निकले। भाइयों ने गड्ढे से यूसुफ को खींचकर बाहर निकाला और उसे चांदी के बीस सिक्कों में यिश्माएलियों के हाथ बेच दिया। वे [illegible] मिस्र देश ले गए।

जब रूबेन गड्ढे की ओर लौटा और देखा कि यूसुफ गड्ढे में नहीं है तब उसने अपने वस्त्र फाड़े। रूबेन अपने भाइयों के पास लौटा। वह उनसे बोला, 'लड़का गड्ढे में नहीं है। अब मैं कहां जाऊं?' उन्होंने यूसुफ का अंगरखा लिया और एक बकरा मारकर उसके [illegible] डुबाया। तत्पश्चात् उन्होंने बाहोंवाले उस अंगरखे को अपने पिता के पास भेजा और कहा, 'हमने इसे पाया है। देखिए, क्या यह आपके पुत्र का है अथवा नहीं?' पिता ने अंगरखे को पहचान लिया। वह बोले, 'यह तो मेरे पुत्र का अंगरखा है। जंगली पशु ने उसे खा लिया। निस्सन्देह यूसुफ चिथड़े-चिथड़े कर दिया गया।' याकूब ने अपने वस्त्र फाड़े। उन्होंने [illegible] पर टाट का वस्त्र लपेटा, और बहुत दिन तक अपने पुत्र के लिए शोक मनाया। उनके पुत्र-पुत्रियों ने उन्हें सान्त्वना देने का प्रयत्न किया। किन्तु उन्होंने सान्त्वना स्वीकार नहीं की। वह कहते रहे, 'नहीं, मैं अपने पुत्र के पास शोक करता हुआ अधोलोक जाऊंगा।' [illegible] यूसुफ के पिता ने उसके लिए विलाप किया।

उधर मिद्यानी व्यापारियों ने यूसुफ को मिस्र देश के राजा फरओ* के पोटीपर नामक एक पदाधिकारी को बेच दिया। पोटीपर अंगरक्षकों का नायक** था।

१ यूसुफ ने कौन-सा स्वप्न देखा, और स्वप्न सुनकर उसके भाई क्यों नाराज हुए?
२ उन्होंने यूसुफ के साथ क्या किया?
३ उन्होंने अपने पिता याकूब से क्या झूठ बोला?

१२. परमेश्वर का भक्त—यूसुफ

(उत्पत्ति ३६ १–२३)

अब यूसुफ गुलाम था। वह स्वदेश से बहुत दूर एक अनजाने देश में था। व्यापारियो ने उसको एक उच्चाधिकारी के हाथ मे बेच दिया था। यूसुफ सरकारी अफसर के घर मे नौकर-चाकरी के समान काम करता था। वह उम्र मे किशोर था। पर वह परमेश्वर का भक्त था, और पाप से सदा दूर रहता था। उसने एक अच्छे, धार्मिक नवजवान के समान आचरण किया, और व्यभिचार नही किया। यद्यपि उसको जेल मे डाला गया तो भी उसने परमेश्वर पर अटूट विश्वास रखा। उसने जेल मे भी अपने जीवन को परमेश्वर के हाथ मे सौप दिया। उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था—परमेश्वर की आज्ञा हर हालत मे मानना।

यूसुफ मिस्र देश मे लाया गया। राजा फरओ के पदाधिकारी पोटीपर ने यिश्माएलियो के हाथ से उसे खरीदा, जो यूसुफ को वहा लाए थे। पोटीपर राजा का उच्चाधिकारी और राजमहल के अंगरक्षकों का नायक था। प्रभु यूसुफ के साथ था। अत वह सफल व्यक्ति बना। वह अपने मिस्र-निवासी स्वामी के घर मे रहता था। यूसुफ के स्वामी ने देखा कि प्रभु उसके साथ है। जो कुछ वह करता है, उसे उसके हाथ से प्रभु सफल बनाता है। अत यूसुफ ने पोटीपर की कृपादृष्टि प्राप्त की, और वह उसका निजी सेवक बन गया। पोटीपर ने उसे अपने घर का निरीक्षक नियुक्त किया और उसके हाथ मे अपना सब कुछ सौप दिया। जिस समय से पोटीपर ने उसे अपने घर का निरीक्षक बनाया और उसके हाथ मे अपना सब कुछ सौपा, उस समय से प्रभु ने यूसुफ के कारण उस मिस्र-निवासी के घर को आशीष दी। उसके घर और खेत की प्रत्येक वस्तु पर प्रभु की आशीष होने लगी।

पोटीपर ने पना सब कुछ यूसुफ के हाथ मे छोड दिया। वह भोजन करने के अतिरिक्त घर के सम्बन्ध मे और कुछ नही जानता था।

यूसुफ शरीर मे सुडौल और देखने मे सुन्दर था। कुछ समय के पश्चात् यूसुफ के स्वामी की पत्नी ने उसपर कुदृष्टि डाली। उसने कहा, 'मेरे साथ सो।' यूसुफ ने अस्वीकार करते हुए अपने स्वामी की पत्नी से कहा, 'देखिए, मेरे स्वामी घर के सम्बन्ध मे कुछ भी नही जानते है। जो कुछ उनके पास है, उन्होने उसे मेरे ही हाथ मे सौप दिया है। वह इस घर मे मुझसे अधिक बडे नहीं है। उन्होने मुझे कोई भी वस्तु देना अस्वीकार नही किया, केवल आपको, क्योंकि आप उनकी पत्नी है। तब मै परमेश्वर के विरुद्ध ऐसा बडा कुकर्म, यह पाप कैसे कर सकता हू ?'

यद्यपि वह दिन-प्रतिदिन यूसुफ से बोलती रही कि वह उसके साथ सोए, उसके साथ रहे, तथापि यूसुफ ने उसकी बात नहीं सुनी। एक दिन यूसुफ काम करने के लिए घर मे आया। उस समय वहा घर का कोई भी मनुष्य नही था। पोटीपर की पत्नी ने यूसुफ का वस्त्र पकड लिया और उससे बोली, 'मेरे साथ सो।' किन्तु यूसुफ अपना वस्त्र उसके हाथ मे छोडकर भागा और घर से बाहर निकल गया। जब पोटीपर की पत्नी ने देखा कि यूसुफ अपना वस्त्र उसके हाथ मे छोडकर घर से बाहर निकल गया है, तब उसने अपने घर के मनुष्यो को बुलाया और उनसे कहा, 'इब्रानी सेवक को देखो। उसे मेरा स्वामी हमारा अपमान करने के लिए लाया है। वह इब्रानी मुझसे बलात्कार करने के लिए मेरे पास आया था।

मे पुकारने लगी। जब उसने सुना कि मैं ऊंचे स्वर में चिल्लाकर पुकार रही। तब वह अपना वस्त्र मेरे हाथ में छोड़कर भागा और घर के बाहर निकल गया।' जब तक उसका स्वामी अपने घर मे नहीं आया, उसने यूसुफ का वस्त्र अपने पास पड़ा रहने दिया। उसने अपने स्वामी से भी यही कहा, 'जिस इब्रानी सेवक को आप हमारे मध्य मे लाए है, वह मेरा अपमान करने के लिए मेरे पास आया। परन्तु जैसे ही मैंने ऊंची आवाज मे पुकारा, वह अपना वस्त्र मेरे पास छोड़कर भागा और घर के बाहर निकल गया।'

जब यूसुफ के स्वामी ने अपनी पत्नी के ये शब्द सुने, 'आपके सेवक ने मुझसे ऐसा व्यवहार किया,' तब उसका क्रोध भड़क उठा। यूसुफ के स्वामी ने उसे पकड़कर कारागार में डाल दिया। इस स्थान मे राजा के बन्दी कैद थे। यूसुफ भी कारागार मे था। प्रभु उसके साथ था। उसने यूसुफ पर करुणा की और उसे कारागार के मुख्याधिकारी की कृपादृष्टि प्रदान की। अत कारागार के मुख्याधिकारी ने कारागार के सब बन्दियों को यूसुफ के हाथ मे सौंप दिया। जो कुछ भी कारागार में होता था, उसका कर्ता यूसुफ था। कारागार का मुख्याधिकारी यूसुफ के हाथ मे सौंपी गई किसी भी वस्तु को देखता तक न था; क्योंकि प्रभु यूसुफ के साथ था। जो कुछ भी यूसुफ करता था, प्रभु उसे सफल बनाता था।

१ क्या आरम्भ के दिनो मे मिस्र देश मे यूसुफ को सफलता मिली?
२ यूसुफ पर किस प्रकार झूठा आरोप लगाया गया?
३ कारागार मे यूसुफ के साथ किस प्रकार व्यवहार किया गया?

१३. कारागार से छूटना

(उत्पत्ति ४१ १-५७)

जब यूसुफ कारागार मे था तब राजा के दो मुख्य कर्मचारी बन्दी होकर वहा आए। उनमे से एक राजा का मुख्य रसोइया था, और दूसरा साकी (जो राजा को मदिरा-पान कराता था)।

एक दिन राजा के इन दोनों कर्मचारियों ने एक-एक सपना देखा, और परमेश्वर की सहायता से यूसुफ ने उनके सपनो के अर्थ बताए। यूसुफ ने रसोइये का अर्थ बताते हुए कहा कि राजा उसको फासी पर लटका देगा, और साकी से कहा कि वह राजा की सेवा फिर करने लगेगा। ऐसा ही हुआ, किन्तु साकी यूसुफ को भूल गया। ऐसे ही दो साल गुजर गए। तब यह घटना घटी।

पूरे दो वर्ष के पश्चात् फरओ ने स्वप्न देखा कि वह नील नदी के किनारे खड़ा है। सहसा सात मोटी और देखने मे सुन्दर गाये नदी से बाहर निकली। वे नरकुल की घास चरने लगी। उनके पीछे सात दुबली और देखने मे कुरूप गाये नील नदी से बाहर निकलीं। वे नदी के तट पर अन्य गायो की एक ओर खड़ी हो गईं। तब दुबली और कुरूप गायों ने उन सात मोटी और सुन्दर गायो को खा लिया। तत्पश्चात् फरओ जाग गया।

वह फिर सो गया। उसने दूसरी बार स्वप्न देखा कि एक ही डण्ठल मे सात मोटी और अच्छी बाले फूट रही है। उनके पीछे सात पतली और पूर्वी वायु से झुलसी हुई बाले फूटीं। तब पतली बालो ने मोटी और भरी बालो को खा लिया। तत्पश्चात् फरओ जाग गया। यह स्वप्न था। सबेरे उसकी आत्मा को क्लेश हुआ। उसने दूत भेजकर अपने सब तान्त्रिकों

नका अर्थ न बता सका।

तब मुख्य साकी ने फरओ से कहा, 'आज मुझे अपने अपराधों की स्मृति हुई। जब आप* अपने सेवकों से क्रोधित हुए थे और मुझे तथा मुख्य रसोइए को अंगरक्षकों के नायक के घर में हिरासत में रखा था, तब हमने एक ही रात में एक-एक स्वप्न देखा था। प्रत्येक स्वप्न का अपना एक विशेष अर्थ था। वहां हमारे साथ एक इब्रानी युवक था। वह अंगरक्षकों के नायक का सेवक था। हमने उसे अपने-अपने स्वप्न सुनाए और उसने हमें उनके अर्थ बताए। प्रत्येक व्यक्ति को उसके स्वप्न का अर्थ बताया। जैसा उसने हमें अर्थ बताया था वैसा ही हुआ। मुझे अपना पूर्व पद प्राप्त हुआ और मुख्य रसोइए को वृक्ष पर लटकाया गया।

फरओ ने दूत भेजकर यूसुफ को बुलाया। वे अविलम्ब उसे कारागार से बाहर लाए। यूसुफ ने बाल बनाए और वस्त्र बदले। तत्पश्चात् वह फरओ के सम्मुख आया। फरओ ने यूसुफ से कहा, 'मैंने एक स्वप्न देखा है। किन्तु उसका अर्थ बतानेवाला कोई नहीं है। मैंने तुम्हारे विषय में सुना है कि तुम स्वप्न सुनकर उसका अर्थ बता सकते हो।' यूसुफ ने फरओ को उत्तर दिया, 'नहीं, मैं नहीं जानता। परन्तु परमेश्वर फरओ को कल्याणमय उत्तर देगा।' फरओ यूसुफ से बोला, 'देखो, मैं स्वप्न में नील नदी के किनारे खड़ा था। सहसा सात मोटी और सुन्दर गायें नील नदी से बाहर निकलीं। वे नरकुल की घास चरने लगीं। उनके पीछे सात दुबली, देखने में बहुत कुरूप और कृश गायें निकलीं। मैंने ऐसे कुरूप पशु मिस्र देश में कभी नहीं देखे थे। दुबली और देखने में कुरूप गायों ने पहली सात मोटी गायों को खा लिया। परन्तु जब वे उन्हें खा चुकीं तब किसी को ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि उन्होंने उनको खाया है, क्योंकि जैसी कृश वे पहले थीं, वैसी अभी भी थीं। तब मैं जाग गया। फिर मैंने अपने स्वप्न में एक ही डण्ठल में सात मोटी और अच्छी बालें फूटती हुई देखीं। उनके पीछे सात मुरझाई, पतली, और पूर्वी वायु से झुलसी बालें फूटीं। तब पतली बालों ने सात अच्छी बालों को खा लिया। मैंने अपना यह स्वप्न तान्त्रिकों को सुनाया। पर मुझपर इसका अर्थ प्रकट करनेवाला यहां कोई नहीं है।'

यूसुफ ने फरओ से कहा, 'आपके दोनों स्वप्न एक ही हैं। जो कार्य परमेश्वर करनेवाला है, उसे उसने आप पर प्रकट किया है। सात अच्छी गायें सात वर्ष हैं। सात बालें भी सात वर्ष हैं। इस प्रकार स्वप्न एक ही है। उनके पीछे नदी से निकलनेवाली सात दुर्बल और देखने में कुरूप गायें सात वर्ष हैं। सात खाली और पूर्वी वायु से झुलसी बालें अकाल के सात वर्ष हैं। जो बात मैंने आपसे कही, वह यही है। जो कार्य परमेश्वर करनेवाला है, उसको उसने आपको दिखाया है। देखिए, ऐसे सात वर्ष आएंगे जब समस्त देश में अत्यधिक अन्न उत्पन्न होगा। किन्तु उसके पश्चात् अकाल के सात वर्षों का आगमन होगा। फलतः मिस्र देश में सुकाल के दिनों की उपज भुला दी जाएगी। अकाल देश को खा जाएगा। सुकाल के उपरान्त आनेवाले अकाल के कारण समस्त देश में सुकाल की उपज अज्ञात हो जाएगी; क्योंकि वह बहुत भयंकर अकाल होगा। आपको एक ही स्वप्न दो बार इसलिए दिखाई दिया कि परमेश्वर द्वारा यह बात निश्चित की जा चुकी है, और वह उसे शीघ्र ही कार्यरूप में परिणत करेगा। अब आप किसी समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति को देखें और उसे मिस्र देश का प्रधान मन्त्री नियुक्त करें। आप तत्काल देश में निरीक्षक भी नियुक्त करें। वे मिस्र देश के सुकाल के वर्षों में उपज का पांचवा भाग लें। निरीक्षक आगामी सुकाल के सात वर्षों में सब प्रकार की भोजन-सामग्री एकत्र करें। वे आपके अधीन नगरों में भोजन के लिए अन्न के भण्डार-गृह खोलें, और अन्न की रक्षा करें। यह भोजन-सामग्री देश के निमित्त अकाल के उन सात वर्षों के लिए सुरक्षित रहेगी जो मिस्र देश पर आएंगे जिससे मिस्र देश अकाल से नष्ट न हो जाए।'

*मूल में फरओ।

१४. यूसुफ अकाल से अपने परिवार की रक्षा करता है

(उत्पत्ति ४५ : १—२८)

जैसा यूसुफ ने स्वप्न का अर्थ बताया था वैसा ही हुआ। समस्त विश्व मे भयंकर अकाल पडा। अकाल मे यूसुफ का पिता और भाई भी नही बचे। उन्होने सुना कि मिस्र देश में अनाज है। अत यूसुफ के दस भाई अनाज खरीदने के लिए मिस्र देश गए। घर पर छोटा भाई बिन्यामिन और पिता याकूब रह गए। यूसुफ के दस भाई मिस्र देश में आए। वे अनाज बेचनेवाले अधिकारी से मिले। वे उच्चाधिकारी को पहचान न सके। वह उनका भाई यूसुफ था, जिसको उन्होने व्यापारियो के हाथ मे बेच दिया था। वे परमेश्वर के काम करने के ढग को समझ न सके! परमेश्वर ने कितने अद्भुत ढग से कार्य किया था! जो व्यक्ति गुलामी में बेचा गया, वह मिस्रदेश का प्रधानमत्री बन गया।

यूसुफ के दसों भाइयों ने अनाज खरीदा। यूसुफ ने उनसे कहा कि जब वे दूसरी बार अनाज खरीदने आए तब वे अपने साथ सब से छोटे भाई बिन्यामिन को भी लाएं। दूसरी बार वे आए, और अपने साथ बिन्यामिन को भी लाए। तब यूसुफ ने अपना भेद प्रकट किया कि वह उनका भाई यूसुफ है। उसने कहा, 'तुमने बुराई की, किन्तु परमेश्वर ने बुराई को अच्छाई मे बदल दिया, और उसके माध्यम से मनुष्यों को, स्वय उनको भूख से बचाया।'

इस प्रकार परमेश्वर ने इस कौम को, जाति को नष्ट होने से बचाया, क्योंकि उसने वचन दिया था कि वह इसी कौम मे मानव-जाति के उद्धारकर्त्ता यीशु को उत्पन्न करेगा।

यूसुफ अपने पास खडे लोगों के सम्मुख स्वय को रोक न सका। वह चिल्लाया, 'मेरे पास से सब लोगो को बाहर करो।' जब यूसुफ ने स्वय को अपने भाइयो पर प्रकट किया तब उसके साथ कोई न था। वह उच्च स्वर मे रो पडा। मिस्र-निवासियो ने उसके रोने की आवाज सुनी। फरओ के राजमहल मे भी इसका समाचार पहुचा। यूसुफ ने अपने भाइयो से कहा, 'मैं यूसुफ हू। क्या अब तक मेरे पिता जीवित है?' उसके भाई उसे उत्तर न दे सके, क्योंकि वे उसके सामने घबरा गए थे।

यूसुफ ने अपने भाइयो से कहा, 'कृपया मेरे निकट आओ।' वे निकट आए। उसने कहा, 'मै तुम्हारा भाई यूसुफ हू, जिसे तुमने मिस्र देश जानेवाले व्यापारियो को बेच दिया था। अब दुखित न हो। अपने आप पर क्रोध भी न करो कि तुमने मुझे बेचा था। पर परमेश्वर ने प्राण बचाने के लिए तुमसे पहले मुझे यहा भेजा है। पिछले दो वर्ष से इस देश मे अकाल पड रहा है। अभी पाच वर्ष और शेष है। उस अवधि मे न हल चलेगा और न फसल काटी जाएगी। परमेश्वर ने तुमसे पहले मुझे भेजा कि तुम्हारे वश की पृथ्वी पर रक्षा की जाए, तुम्हारी अनेक सन्तान के प्राण बचाए जाए। इसलिए तुमने नही, वरन् परमेश्वर ने मुझे यहा भेजा है। उसी ने मुझे फरओ का प्रधान मन्त्री,* उसके महल का स्वामी और समस्त मिस्र देश का शासक नियुक्त किया है। शीघ्रता करो, और मेरे पिता के पास आकर उनसे कहो, "आपका पुत्र

यूसुफ यह कहता है परमेश्वर ने समस्त मिस्र देश का स्वामी मुझे नियुक्त किया है। रुकिए वरन् मेरे पास आ जाइए। आप गोशेन प्रदेश मे निवास करेंगे। आप, आपके पुत्र-पौत्रादि आपकी भेड़-बकरी, गाय-बैल, एव आपके पास जो कुछ है, मेरे निकट ही रहेंगे। लिए भोजन-सामग्री की व्यवस्था करूंगा, क्योकि अभी अकाल के पाच वर्ष शेष हैं। कि आप, आपका परिवार एव आपके साथ के लोगो को अभाव हो।" तुम्हारी आखे, मेरे भाई बिन्यामिन की आखे देख रही है कि तुमसे वार्तालाप करनेवाला मै यूसुफ हू। तुम मेरे पिता से मिस्र देश मे मेरे समस्त प्रताप का, और जो कुछ तुमने देखा है, उन सबका उल्लेख करना। अब शीघ्रता करो और मेरे पिता को यहा ले आओ।' तब यूसुफ अपने भाई बिन्यामिन के गले लगकर रोने लगा। वह भी उसके गले लगकर रोया। उसने अपने सब भाइयो का चुम्बन किया और उनके गले लगकर रोया। तत्पश्चात् यूसुफ के भाइयो ने उससे बातचीत की।

जब फरओ के राजमहल मे यह समाचार पहुचा कि यूसुफ के भाई आए है तब वह और उसके कर्मचारी आनन्दित हुए। फरओ ने यूसुफ से कहा, 'तुम अपने भाइयो से कहो कि वे यह कार्य करे वे अपने पशुओ पर अन्न लादकर कनान देश को लौटे। वहा से वे अपने पिता और अपने समस्त परिवार को लेकर तुम्हारे पास आए। मै उनको मिस्र देश की सर्वोत्तम वस्तुए दूगा। वे मिस्र देश के राजसी व्यजन खाएगे। उनसे कहो कि वे छोटे-छोटे बच्चो और स्त्रियो के लिए मिस्र देश मे गाड़िया ले जाए और अपने पिता को लेकर आए। वे अपने सामान की चिन्ता न करे, क्योकि समस्त मिस्र देश की सर्वोत्तम वस्तुए उनकी ही है।'

याकूब के पुत्रो ने ऐसा ही किया। यूसुफ ने उन्हें फरओ के आदेशानुसार गाड़िया दीं, मार्ग के लिए भोजन-सामग्री दी। यूसुफ ने प्रत्येक भाई को एक-एक जोड़ा राजसी वस्त्र दिए, पर बिन्यामिन को चादी के तीन सौ सिक्के के साथ पाच जोड़े राजसी वस्त्र दिए। उसने अपने पिता को ये वस्तुए भेजी दस गधो पर लदी मिस्र देश की सर्वोत्तम वस्तुए, दस गदहियों पर लदा अन्न तथा रोटिया, और पिता के यात्रा-मार्ग के लिए भोजन-सामग्री। तत्पश्चात् उसने अपने भाइयो को भेज दिया। जब वे प्रस्थान करने लगे, यूसुफ ने उनसे कहा, 'मार्ग में लड़ाई-झगड़ा मत करना।'

वे मिस्र देश से चले गए। वे अपने पिता याकूब के पास कनान देश मे आए। उन्होंने अपने पिता को बताया, 'यूसुफ अभी तक जीवित है। वह समस्त मिस्र देश का शासक है।' याकूब का हृदय सुन्न पड़ गया, क्योकि उन्होंने उनकी बातो पर विश्वास नहीं किया। परन्तु जब यूसुफ के भाइयों ने वे सब बातें, जो यूसुफ ने उनसे कही थीं, अपने पिता याकूब को बताईं, जब उन्होंने स्वय उन गाड़ियो को देखा जिन्हें यूसुफ ने उनको लाने के लिए भेजा था तब उनकी आत्मा सजीव हुई। याकूब ने कहा, 'बस इतना ही पर्याप्त है कि मेरा पुत्र यूसुफ अब तक जीवित है। मै जाऊगा। मै अपनी मृत्यु के पूर्व उसे देखूगा।'

१. यूसुफ ने मिस्रदेश मे अपने आने का क्या अर्थ लगाया ? (पढ़ो, उत्पत्ति ४५ : ५–७)
२ जब याकूब ने सुना कि यूसुफ जीवित है, तब उसने क्या किया ? उसने क्या कहा ?

१५. मिस्र देश में इस्राएली-समाज की दुर्दशा

(निर्गमन १: ८–२२, २: १–२५)

यूसुफ के माता-पिता, भाई-बन्धु, नाते-रिश्तेदार अकाल से बचने के लिए स्वदेश छोड़कर मिस्रदेश में बस गए। वे वहीं रहने लगे। और यों सैकड़ों वर्ष गुजर गए। यूसुफ और उसके भाइयों का वंश बढ़ते-बढ़ते एक शक्तिशाली कौम, जाति बन गया।

लेकिन परमेश्वर यह कभी नहीं चाहता था कि वे मिस्रदेश में सदा रहें। उसकी इच्छा थी कि वे उस देश में रहें, जहाँ बसने के लिए उसने अपने भक्त अब्राहम को बुलाया था।

जैसे-जैसे उनकी संख्या बढ़ती जाती थी, मिस्रदेश के राजा उनपर अत्याचार करने लगे। उन्होंने उनको गुलाम बना लिया। उनका जीना दूभर हो गया। वे कष्ट में जीवन बिताने लगे। उन्होंने परमेश्वर की दुहाई दी, और उसने उनकी प्रार्थना को सुना। उसने उनको दासत्व के बन्धन से छुड़ाने का निश्चय किया। उसने एक मनुष्य को चुना। उसका नाम मूसा था। आप इस पाठ में मूसा के जन्म की कहानी पढ़ेंगे।

मिस्र देश में एक नया राजा हुआ, जो यूसुफ को नहीं जानता था। उसने अपनी प्रजा से कहा, 'देखो, इस्राएली कितने बढ़ गए हैं। वे हमसे अधिक बलवान हो गए हैं। आओ, हम उनसे चतुराई से व्यवहार करें। ऐसा न हो कि वे बढ़ते जाएं और जब हमपर युद्ध आ पड़े तब वे हमारे बैरियों से जा मिलें, हमारे विरुद्ध लड़ें और देश से भाग जाएं।' अतः उन्होंने इस्राएलियों पर बेगार करानेवाले मुखिए नियुक्त किए कि वे उनपर भारी बोझ डालकर उन्हें पीड़ित करें। इस प्रकार इस्राएली लोगों ने फरओ के लिए पितोम और रामसेस नामक भण्डारगृह के नगरों का निर्माण किया। किन्तु जितना अधिक उन्हें पीड़ित किया गया, उतना अधिक वे बढ़ते और फैलते गए। मिस्र के निवासी इस्राएली समाज से और घृणा करने लगे। वे इस्राएली लोगों से कठोरता से बेगार करवाने लगे। उन्होंने ईंट-गारा और खेती सम्बन्धी सब कामों में इस्राएली लोगों से कठोर बेगार करवाकर उनका जीवन दुःखमय बना डाला। वे अपने प्रत्येक कार्य में उनसे कठोरता से बेगार करवाते थे।

मिस्र देश के राजा ने इब्रानी दाइयों को, जिनमें एक का नाम शिप्रा और दूसरी का नाम पूआ था, आदेश दिया, 'जब तुम इब्रानी स्त्रियों का प्रसव करवाने जाओ और उन्हें प्रसव-शिला पर देखो तब यदि लड़का हो तो उसे मार डालना, किन्तु यदि लड़की हो तो उसे जीवित रहने देना।' परन्तु दाइयां परमेश्वर से डरती थीं। अतः उन्होंने मिस्र देश के राजा के आदेशानुसार नहीं किया। उन्होंने लड़कों को जीवित रहने दिया। मिस्र देश के राजा ने दाइयों को बुलाकर उनसे पूछा, 'तुमने यह कार्य क्यों किया; क्यों लड़कों को जीवित रहने दिया?' दाइयों ने फरओ को उत्तर दिया, 'इब्रानी स्त्रियां, मिस्र देश की स्त्रियों के समान नहीं हैं। वे फुरतीली होती हैं और दाइयों के पहुंचने के पूर्व ही बच्चों को जन्म दे देती हैं।' परमेश्वर ने दाइयों के साथ सद्‌व्यवहार किया। इस्राएली और बढ़कर अत्यन्त बलवान हो गए। दाइयां परमेश्वर से डरती थीं। इसलिए परमेश्वर ने उन्हें परिवार प्रदान किए। फरओ ने अपनी समस्त प्रजा को आदेश दिया, इब्रानियों से उत्पन्न सब लड़कों को नील नदी

मे फेंक देना, किन्तु लड़कियों को जीवित रहने देना।

मूसा का जन्म

लेवी वंशीय एक पुरुष ने लेवी कुल की कन्या से विवाह किया। उसकी पत्नी गर्भवती हुई। उसने एक पुत्र को जन्म दिया। जब उसने देखा कि बालक सुन्दर है तब तीन महीने तक उसे छिपाकर रखा। पर जब बालक को और न छिपा सकी तब उसके लिए सरकण्डों की एक टोकरी ली। उसने टोकरी पर डामर और राल का लेप लगाया, और उसके भीतर बच्चे को रख दिया। तत्पश्चात् उसने टोकरी नील नदी के किनारे कासों के मध्य में रख दी। बालक की बहिन दूर खड़ी रही कि देखे, उसके साथ क्या होता है।

फरओ की पुत्री नील नदी में स्नान करने आई। उसकी सहेलियां नदी के तट पर टहल रही थीं। फरओ की पुत्री ने कासों के मध्य टोकरी देखी। उसने टोकरी लाने के लिए अपनी दासी को भेजा। जब उसने उसको खोला तो एक बालक को देखा। वह रो रहा था। उसे बालक पर दया आई। उसने कहा, 'यह इब्रानियों का बच्चा है!' बालक की बहिन ने फरओ की पुत्री से कहा, 'क्या मैं जाकर आपके लिए इब्रानी धायों में से किसी स्त्री को बुलाऊं कि वह आपके हेतु बच्चे को दूध पिलाए?' फरओ की पुत्री ने उससे कहा, 'जा!' लड़की गई और बालक की मां को बुलाकर ले आई। फरओ की पुत्री ने उससे कहा, 'इस बच्चे को ले जाओ। मेरे हेतु इसको दूध पिलाओ। मैं तुम्हें मजदूरी दूंगी।' अत वह बालक को दूध पिलाने लगी। जब बालक बड़ा हुआ, तब मां उसे लेकर फरओ की पुत्री के पास आई। वह फरओ की पुत्री का पुत्र कहलाया। उसने कहा, 'मैंने इसे जल से निकाला है,' इसलिए उसने बालक का नाम मूसा रखा।

मूसा का मिद्यान प्रदेश भागना

जब मूसा जवान हुए तब एक दिन यह घटना घटी। वह अपने जाति-भाइयों के पास गए। उन्होंने अपने जाति-भाइयों को कठोर बेगार करते देखा। उन्होंने यह भी देखा कि एक मिस्र-निवासी उनके जाति-भाई की हत्या कर रहा है। मूसा ने इधर-उधर दृष्टि डाली। जब कोई मनुष्य दिखाई नहीं दिया तब उन्होंने मिस्र-निवासी की हत्या कर दी और उसका शव रेत में छिपा दिया।

जब मूसा दूसरे दिन बाहर गए, उन्होंने दो इब्रानियों को परस्पर लड़ते हुए देखा। मूसा ने दोषी व्यक्ति से कहा, 'तुम अपने ही भाई को क्यों मार रहे हो?' वह बोला, 'किसने आपको हमारे ऊपर मुखिया और न्यायाधीश नियुक्त किया है? जैसे आपने मिस्र-निवासी की हत्या की, क्या वैसे ही मुझे भी मार डालना चाहते हैं?' मूसा डर गए। उन्होंने सोचा, 'लोगों पर घटना का भेद खुल गया है।' जब फरओ ने यह बात सुनी तब मूसा का वध करने के लिए उनको खोजा किन्तु वह फरओ के सम्मुख से भाग गए। वह मिद्यान प्रदेश में रहने लगे।

मूसा एक कुएं पर बैठे थे। मिद्यान प्रदेश के पुरोहित की सात पुत्रियां थीं। वे कुएं से पानी खींचने आईं। उन्होंने अपने पिता की भेड़-बकरियों को पानी पिलाने के लिए नांदों में पानी भरा। किन्तु चरवाहे आकर उन्हें हटाने लगे। तब मूसा उठे। उन्होंने पुरोहित की पुत्रियों की सहायता की और उनके रेवड़ को पानी पिलाया। वे अपने पिता रूएल के पास आईं। उसने पूछा, 'आज तुम लोग इतने शीघ्र कैसे आ गईं?' वे बोलीं, 'एक मिस्र-निवासी पुरुष ने चरवाहों के हाथ से हमें मुक्त किया। उसने हमारे लिए पानी भी खींचा, और रेवड़ को पानी पिलाया।' उसने अपनी पुत्रियों से पूछा, 'वह कहां है? तुम उस पुरुष को क्यों छोड़ आईं? उसे बुलाओ कि वह हमारे साथ भोजन करे।' मूसा [illegible] के साथ रहने को सहमत

हो गए। उसने मूसा के साथ अपनी पुत्री सिप्पोरा का विवाह कर दिया। वह गर्भवती हुई। उसने एक पुत्र को जन्म दिया। मूसा ने कहा, 'मै विदेश मे प्रवासी हू।' इसलिए उन्होंने उसका नाम गेर्शोम* रखा।

अनेक दिन के पश्चात् मिस्र देश के राजा की मृत्यु हो गई। इस्राएली बेगार के कारण कराहते थे। अत वे सहायता के लिए चिल्लाने लगे। बेगार से उत्पन्न उनकी दुहाई परमेश्वर तक पहुची। परमेश्वर ने उनका कराहना सुना। उसे अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ स्थापित अपनी वाचा का स्मरण हुआ। परमेश्वर ने इस्राएली समाज को देखा। उसने उनकी दुर्दशा पर ध्यान दिया।

१ मिस्र का राजा इब्रानी (यहूदी, अथवा इस्राएली) लोगों से क्यो डर गया था ?
२ परमेश्वर ने मूसा की किस प्रकार रक्षा की, और उन्हे इब्रानी लोगों का नेता बनने के लिए तैयार किया, ताकि वह उन्हे मिस्रदेश की गुलामी से मुक्त करे ?
३ मूसा ने कौन-सी भूल की, और उसका परिणाम क्या हुआ ?

१६. मूसा को परमेश्वर का आवाहन

(निर्गमन ३ : १–४ १७)

जब मूसा मिस्रदेश से भागे, उस समय उनकी उम्र चालीस वर्ष की थी। वह भागकर निर्जन प्रदेश में रहने लगे। वह चालीस वर्ष तक निर्जन प्रदेश मे रहे। इस तरह हम देखते है कि जब परमेश्वर ने उनको अपनी सेवा मे नियुक्त किया उस समय वह बूढे थे अस्सी वर्ष के। इससे यह प्रमाणित होता है कि स्वय परमेश्वर मनुष्य जाति का उद्धार करने की पहल करता है। यह उद्धार कार्य मनुष्य के वश की बात नही है। और वह किसी भी अवस्था मे मनुष्य को चुनता है।

परमेश्वर ने उद्धार-कार्य करने के लिए मूसा को आश्चर्यपूर्ण ढग से सामर्थ्य प्रदान की।

एक दिन मूसा अपने ससुर यित्रो की, जो मिद्यान प्रदेश का पुरोहित था, भेड़-बकरियां चरा रहे थे। वह उन्हे निर्जन प्रदेश की पश्चिम दिशा मे ले गए। वह परमेश्वर के पर्वत होरेब के पास आए। प्रभु के दूत ने उन्हे झाड़ी के मध्य अग्नि-शिखा मे दर्शन दिया। मूसा ने देखा कि अग्नि से झाड़ी जल तो रही है पर वह भस्म नही हो रही है। मूसा ने कहा, 'मै उधर जाकर इस महान दृश्य को देखूगा कि झाड़ी क्यो नही भस्म हो रही है।' जब प्रभु परमेश्वर ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने के लिए आ रहे है तब उसने झाड़ी के मध्य से मूसा को पुकारा, 'मूसा! मूसा!' वह बोले, 'क्या आज्ञा [illegible], प्रभु ?' प्रभु ने कहा, 'निकट मत आ! अपने पैर से जूते उतार, क्योकि जिस स्थान पर तू खड़ा है, वह पवित्र भूमि है।' प्रभु ने फिर कहा, 'मै तेरे पिता का परमेश्वर, अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हू।' मूसा ने अपना मुह ढक लिया क्योकि वह परमेश्वर पर दृष्टि करने मे डरते थे।

बेगार करानेवालो के कारण उत्पन्न उनकी दुहाई सुनी है। मै उनके दुख को जानता हू। मै मिस्र-निवासियो के हाथ से उन्हे मुक्त करने के लिए, उन्हे एक [illegible] शहद और दूध की नदियो वाले देश मे, कनानी, हित्ती, अमोरी, परिज्जी, [illegible] जातियो के देश मे ले जाने के लिए उतर आया हू। देख, इस्राएलियो की दुहाई [illegible] पहुची है। जो अत्याचार मिस्र के निवासी उनपर कर रहे है, उस अत्याचार को [illegible] है। अब तू जा, मै तुझे फरओ के पास भेजता हू कि तू मेरे लोग, इस्राएलियो को, [illegible] बाहर निकाल लाए।' मूसा ने परमेश्वर से कहा, 'मै कौन होता हू, [illegible] इस्राएलियो को मिस्र देश से बाहर निकालकर लाऊ?' प्रभु ने कहा, 'मै तेरे साथ [illegible] मैने तुझे भेजा है, इस बात का यह चिह्न है [illegible] लाएगा तब इस पर्वत पर मेरी, अपने परमेश्वर की, सेवा करेगा।'

तब मूसा ने परमेश्वर से पूछा, 'यदि मै इस्राएली लोगो के पास [illegible] मुझे तुम्हारे पूर्वजो के परमेश्वर ने तुम्हारे पास भेजा है, और वे मुझसे पूछे कि [illegible] क्या है, तो मै उन्हे क्या उत्तर दूगा?' परमेश्वर ने मूसा से कहा, 'मै हू, जो मै हू।'* फिर कहा, 'इस्राएली समाज से यह कहना "मै-हू ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।"' [illegible] ने मूसा से यह भी कहा, 'उनसे यह कहना, "तुम्हारे पूर्वजो के परमेश्वर, अब्राहम के [illegible] इसहाक के परमेश्वर और याकूब के परमेश्वर, प्रभु** ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।" [illegible] के लिए यही मेरा नाम है। इसी नाम से मुझे पीढ़ी से पीढ़ी स्मरण किया जाएगा। जा, इस्राएल के धर्मवृद्धो को एकत्र कर उनसे कहना, "तुम्हारे पूर्वजो के परमेश्वर, [illegible] परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर और याकूब के परमेश्वर, प्रभु ने मुझे दर्शन दिया है। [illegible] कहा है, 'मैने निश्चय तुम्हारी सुध ली है। जो मिस्र देश मे तुम्हारे साथ किया जा रहा [illegible] उस पर ध्यान दिया है। मै वचन देता हू कि तुम्हे मिस्र देश की पीड़ित दशा से नि[illegible] कनानी, हित्ती, अमोरी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी जातियो के देश मे, दूध और [illegible] की नदियो के देश मे, ले जाऊगा।' " वे तेरी बात सुनेगे। तब तू और इस्राएल के [illegible] मिस्र देश के राजा के पास जाना। तुम उससे कहना, "इब्रानियो का परमेश्वर, प्रभु [illegible] मिला है। अब कृपया हमे तीन दिन के मार्ग की दूरी पर निर्जन प्रदेश मे जाने दीजिए कि [illegible] अपने प्रभु परमेश्वर के लिए बलि चढ़ाए।" मै जानता हू कि जब तक मिस्र देश का [illegible] मेरे भुजबल से विवश नही होगा, तब तक तुम्हे नही जाने देगा। मै अपना हाथ बढ़ाऊगा [illegible] मिस्र देश मे सब आश्चर्यपूर्ण कार्य कर उसको नष्ट करूगा। तत्पश्चात् वह तुम्हे जाने [illegible] मै अपने इन लोगो को मिस्र-निवासियो की कृपा-दृष्टि प्रदान करूगा। अत जब तुम प्रस्थान करोगे तब खाली हाथ नही जाओगे। प्रत्येक स्त्री अपनी पड़ोसिन और [illegible] स्त्री से सोने-चादी के आभूषण एव वस्त्र माग लेगी। तुम उन्हे अपने पुत्र-पुत्रियो को पहिनाना। इस प्रकार तुम मिस्र-निवासियो को लूट लेना।'

मूसा ने उत्तर दिया, 'पर देख, वे मुझपर विश्वास नही करेगे, वे मेरी बात नही सुनेगे क्योकि वे कहेगे, "प्रभु ने तुझे दर्शन नहीं दिया।"' प्रभु ने मूसा से पूछा, "तेरे हाथ मे [illegible] क्या है?' उन्होने उत्तर दिया, 'लाठी।' प्रभु ने कहा, 'इसे भूमि पर फेक दे।' मूसा ने [illegible] भूमि पर फेका तो वह सर्प बन गई। मूसा उसके सम्मुख से हट गए। प्रभु ने मूसा से कहा, 'अपना हाथ बढ़ा और उसकी पूछ से उसे पकड़, (उन्होने अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ा और वह उनके हाथ मे पुन लाठी बन गई।) इस प्रकार उन्हे विश्वास होगा कि [illegible] पूर्वजो के परमेश्वर, अब्राहम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर और याकूब के परमेश्वर प्रभु ने तुझे दर्शन दिया है।' तत्पश्चात् प्रभु ने उनसे पुन कहा, 'अपना हाथ वस्त्र के भीतर छाती पर रख।' मूसा ने वस्त्र के भीतर छाती पर अपना हाथ रखा। जब उन्होने उसे बा[illegible]

*इस पदांश के अनेक अर्थ है, जैसे 'मै जो हू, सो हू', 'मै जो हूगा सो हूगा', 'मै वही हू, जो हू।'
**मूल मे 'य ह व ह' जिसका अर्थ 'प्रभु' किया गया है। क्रिया पद 'हयाह' का अर्थ 'होना' है

निकाला तब उनका हाथ बर्फ के समान कोढ़ जैसा सफेद हो गया। परमेश्वर ने कहा, 'अब अपना हाथ फिर से वस्त्र के भीतर छाती पर रख।' अतः मूसा ने पुनः अपना हाथ वस्त्र के भीतर छाती पर रखा। जब उन्होंने उसे छाती से बाहर निकाला तब वह उनके शेष शरीर के सदृश जैसा का तैसा हो गया। परमेश्वर ने कहा, 'यदि वे तुझपर विश्वास न करें, अथवा प्रथम चिह्न पर ध्यान न दें तो वे दूसरे चिह्न पर ध्यान देंगे। यदि वे इन दोनों चिह्नों पर भी विश्वास न करें, और तेरी बात को न सुनें तो तू नील नदी का जल लेना और उसे सूखी भूमि पर उण्डेलना। जो जल तू नील नदी में लेगा, वह सूखी भूमि पर रक्त बन जाएगा।'

मूसा ने प्रभु से कहा, 'हे मेरे स्वामी, मैं कुशल वक्ता नहीं हूं। मैं न पहले कभी था, और न जब से तू अपने सेवक से वार्तालाप करने लगा है, मैं हूं।' प्रभु ने उनसे पुनः कहा, 'किसने मनुष्य का मुंह बनाया? कौन उसे गूंगा, बहरा, दृष्टिवाला अथवा अन्धा बनाता है? क्या मैं प्रभु ही उसे ऐसा नहीं बनाता? अब जा, मैं तेरी वाणी पर निवास करूंगा। जो मैं तुझे सिखाऊंगा, वह तू बोलेगा।' पर मूसा ने कहा, 'हे मेरे स्वामी, कृपया तू किसी अन्य व्यक्ति को भेज। तब प्रभु का कोप मूसा के प्रति भड़का। प्रभु ने कहा, 'क्या लेवी के वंश का हारून तेरा भाई नहीं है? मैं जानता हूं कि वह अच्छे से बोल सकता है। देख, वह तुझसे भेंट करने को आ रहा है। जब वह तुझे देखेगा तब अपने हृदय में आनन्दित होगा। तू उससे बात करना। तू अपने शब्द उसके मुंह में डालना। मैं तेरी और उसकी वाणी पर निवास करूंगा। जो कार्य तुम्हें करना है, वह मैं तुम्हें सिखाऊंगा। हारून तेरी ओर से मेरे लोगों से बात करेगा। वह तेरा प्रवक्ता होगा, और तू उसके लिए परमेश्वर के सदृश। तू अपने साथ यह लाठी ले जाना। तू इसके द्वारा आश्चर्यपूर्ण कार्य करके चिह्न दिखाना।'

१ निर्जन प्रदेश में मूसा ने क्या देखा? जलती हुई झाड़ी में हम परमेश्वर के विषय में क्या सीखते हैं?

२. परमेश्वर के आवाहन के उत्तर में मूसा कौन-सी आपत्ति उठाते हैं, और परमेश्वर उसका किस प्रकार समाधान करता है? (३ : १३–१५)

३ मूसा की दूसरी-तीसरी आपत्तियां बताइए। परमेश्वर उन आपत्तियों का किस प्रकार समाधान करता है?

१७. मिस्र देश पर महामारियों का प्रकोप

(निर्गमन १२ : १–५१)

मूसा और हारून मिस्र देश के राजा फरओ (फिरौन) के पास गए, और उससे निवेदन किया कि वह इस्राएली कौम के लोगों को उनके देश—कनान जाने दे। किन्तु फरओ ने उनके निवेदन पर ध्यान नहीं दिया, और वह इस्राएलियों पर और अधिक अत्याचार करने लगा। तब परमेश्वर ने मिस्र देश में अनेक आश्चर्यपूर्ण कर्म किए। महामारी आने के पूर्व मूसा फरओ को चेतावनी देते थे, किन्तु फरओ अपना मन और कठोर कर लेता था, और इस्राएलियों को गुलामी से नहीं मुक्त करता था। वह उन्हें मिस्र देश से नहीं जाने देता था। जब महामारी आती तब फरओ कहता था कि वह इस्राएलियों को जाने देगा। लेकिन जब महामारी समाप्त हो जाती तब वह अपनी बात से मुकर जाता था।

परमेश्वर ने ये

से परमेश्वर ने मिस्रदेश के सब नदियों-नहरों के जल को रक्त में बदल दिया। दूसरी महामारी मेढकों की थी। सारे देश में मेढक ही मेढक भर गए। फिर उसने कुटकियाँ, डांस भेजे। इस महामारी के बाद पशु-रोग भेजा, और मिस्रदेश के सब पशु मर गए। परमेश्वर की सामर्थ्य से मिस्रदेश के निवासियों को फोड़े फफोले निकल आए। फिर भी फरओ का हृदय कठोर बना रहा। परमेश्वर ने उसके देश पर ओले की वर्षा की, उपरान्त टिड्डियों के दल भेजे, जिन्होंने मिस्रदेश की तमाम फसल चट कर दी। तीन दिन तक सारे देश में अन्धकार छाया रहा। फिर भी फरओ का हृदय नहीं बदला।

तब परमेश्वर ने दसवीं महामारी भेजी। इस महामारी से बचने के लिए परमेश्वर ने इस्राएलियों को धर्मविधि दी, जिसको पूरा करने से वे बच जाएंगे।

फसह का पर्व

प्रभु ने मूसा और हारून से मिस्र देश में कहा, 'यह महीना तुम्हारे लिए सब प्रथम माना जाएगा। तुम इस महीने को वर्ष के महीनों में प्रथम मानना। समाज* से यह कहो कि इस महीने के दसवें दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार के अनुसार घर पीछे एक मेमना लेगा। यदि कोई परिवार मेमने का मांस खाने के लिए छोटा हो तो वह और उसका निकटतम पड़ोसी अपने-अपने परिवार की सदस्य-संख्या के अनुसार लेगा। तुम प्रत्येक व्यक्ति के खाने की सामर्थ्य के अनुसार मेमने के मांस का हिसाब करना। तुम्हारा मेमना निष्कलंक, नर और एक वर्ष का होना चाहिए। तुम उसे भेड़ों अथवा बकरियों के झुण्ड से लेना। तुम उसे इस महीने के चौदहवें दिन तक जीवित रखना। उस दिन संध्या के समय इस्राएली समाज की समस्त धर्मसभा अपने-अपने मेमने का वध करेगी। तत्पश्चात् वे उसका कुछ रक्त लेंगे और जिन घरों में वे उसे खाएंगे, उनके द्वार के दोनों बाजुओं और चौखट के सिरे पर उसे लगा देंगे। वे उसी रात अग्नि में भूनकर मेमने का मांस खाएंगे। वे मांस को बेखमीरी रोटी और कड़वे साग-पात के साथ खाएंगे। मेमने के मांस को कच्चा अथवा जल में उबालकर मत खाना, वरन् उसको सिर, पैर और अंतड़ियों सहित अग्नि में भूनकर खाना। तुम उसका अवशेष सबेरे तक न छोड़ना। यदि कुछ मांस सबेरे तक रह जाएगा तो उसे अग्नि में जला देना। तुम उसे ऐसी स्थिति में खाओगे : अपनी कमर कसे, पैरों में जूते पहिने और हाथ में लाठी लिए हुए। तुम मांस को शीघ्रता से खाना। यह प्रभु का फसह** है। मैं इस रात में मिस्र देश में विचरण करूंगा, और समस्त देश के मनुष्यों और पशुओं के पहिलौठों को मारूंगा। मैं मिस्र देश के सब देवताओं को दण्ड दूंगा। मैं प्रभु हूं। जिन घरों में तुम हो उन पर लगाया हुआ रक्त तुम्हारे लिए एक चिह्न होगा। जब मैं उस रक्त को देखूंगा तब आगे बढ़ जाऊंगा। जब मैं मिस्र देश को मारूंगा तब तुम्हें नष्ट करने को तुम पर महामारी का आक्रमण न होगा।

'यह दिन तुम्हारे लिए एक स्मारक दिवस होगा। तुम इसे प्रभु के लिए यात्रा-पर्व के रूप में मनाना। तुम इसे पीढ़ी से पीढ़ी स्थायी सविधि मानना। तुम सात दिन तक बेखमीरी रोटी खाना। तुम पहले ही दिन अपने-अपने घरों से खमीर दूर कर देना, क्योंकि जो व्यक्ति पहले दिन से सातवें दिन तक, इस अवधि में खमीरी वस्तु खाएगा, वह इस्राएली समाज में से नष्ट किया जाएगा। तुम पहले दिन और सातवें दिन पवित्र सभा बुलाना। इन दोनों दिनों में कोई भी काम न किया जाए, केवल वे वस्तुएं जिन्हें सब मनुष्य खाते हैं, तुम पका सकते हो। तुम बेखमीरी रोटी के पर्व का पालन करना। इस दिन मैंने तुमको दल-बल सहित मिस्र

* 'मण्डली' **अर्थात् 'आगे बढ़ जाना'

से बाहर निकाला है। इसलिए तुम पीढ़ी से पीढ़ी इस दिन का स्थायी सविधि के रूप पालन करना। तुम प्रथम महीने के चौदहवें दिन की सन्ध्या से इक्कीसवें दिन की सन्ध्या अखमीरी रोटी खाना। सात दिन तक तुम्हारे घरों में खमीरी वस्तु नहीं पायी जाएगी, कि खमीर को खानेवाले सब व्यक्ति, चाहे वे विदेशी हों अथवा देशी, इस्राएली समाज से नष्ट किए जाएंगे। तुम कोई भी खमीरी वस्तु न खाना। तुम अपने निवास स्थानों में मीरी रोटी ही खाना।'

मूसा ने इस्राएलियों के सब धर्मवृद्धों को बुलाया और उनसे कहा, 'तुम अपने-अपने रिवार के अनुसार मेमना चुनो और पसह का मेमना बलि करो। तुम जूफा का एक गुच्छा और उसे चिलमची में भरे हुए रक्त में डुबाओ। तत्पश्चात् चिलमची के रक्त को द्वार चौखट के सिरे और दोनों बाजुओं पर लगाओ। कोई भी व्यक्ति सवेरा होने तक अपने घर द्वार से बाहर नहीं निकलेगा, क्योंकि प्रभु मिस्र-निवासियों का वध करने के लिए वहां से एगा। जब वह द्वार की चौखट के सिरे और दोनों बाजुओं पर रक्त देखेगा तब द्वार से गे बढ़ जाएगा। वह विनाशक दूत को तुम्हारा वध करने के लिए घर के भीतर नहीं आने गा। तुम और तुम्हारे वंशज सविधि के रूप में इस धर्मविधि का सदा पालन करते रहें। ब तुम उस देश में पहुंचो, जिसे प्रभु अपने वचन के अनुसार तुम्हें प्रदान करेगा तब भी तुम सी धर्मविधि का पालन करना। जब तुम्हारी सन्तान तुमसे पूछे, "इस धर्मविधि का क्या र्थ ?" तब तुम कहना, "यह प्रभु के पसह की बलि है, क्योंकि वह मिस्र देश में इस्राएलियों घरों को छोड़कर आगे बढ़ गया था, यद्यपि उसने मिस्र निवासियों का वध किया था।"' स्राएलियों ने सिर झुकाकर वन्दना की। उन्होंने जाकर ऐसा ही किया। जो आज्ञा प्रभु ने सा और हारून को दी, उसी के अनुसार इस्राएलियों ने किया।

न्तिम विपत्ति : पहिलौठों का वध

प्रभु ने मध्य रात्रि में सिंहासन पर विराजमान फरओ के ज्येष्ठ पुत्र से लेकर कारागार में पड़े वन्दी के ज्येष्ठ पुत्र और पशुओं के पहिलौठे बच्चे तक मिस्र देश में सब पहिलौठों को मार डाला। फरओ, उसके कर्मचारी और सब मिस्र-निवासी रात में उठे। सारे देश में हाहाकार मचा था। एक भी घर ऐसा न था जहां किसी की मृत्यु न हुई थी। फरओ ने रात को ही मूसा तथा हारून को बुलाया और उनसे कहा, 'उठो, तुम और इस्राएली, मेरी प्रजा के मध्य से निकल जाओ। जाओ, जैसा तुमने कहा था, अपने प्रभु की सेवा करो। जैसा तुमने कहा था, अपनी भेड़-बकरियां, गाय-बैल भी ले जाओ। तुम मुझे आशीर्वाद भी देना।'

मिस्र-निवासी भी इस्राएलियों पर दबाव डालने लगे, जिससे उन्हें देश से अविलम्ब बाहर किया जा सके। मिस्र-निवासी कहते थे, 'हम सब मर मिटे!' इस्राएलियों ने अपने गूंधे हुए आटे को, खमीर मिलाने के पूर्व, गूंधने के पात्रों सहित चादरों में बांधकर अपने कन्धों पर डाल लिया। जैसा मूसा ने उनसे कहा था, उन्होंने वैसा ही किया। उन्होंने मिस्र-निवासियों से सोने-चांदी के आभूषण और वस्त्र मांग लिए। प्रभु ने इस्राएलियों को मिस्र-निवासियों की कृपा-दृष्टि प्रदान की। अतः उन्होंने जो मांगा था, वह मिस्र-निवासियों ने उन्हें दिया। इस प्रकार उन्होंने मिस्र-निवासियों को लूट लिया।

मिस्र देश से निर्गमन

इस्राएलियों ने रामसेस नगर से सुक्कोत नगर की ओर प्रस्थान किया। स्त्रियों और बच्चों को छोड़कर पैदल चलनेवाले पुरुष प्रायः छः लाख थे। उनके साथ अनेक गैर-इस्राएली लोग भी गए। भेड़-बकरी, गाय-बैल का भी बड़ा समूह उनके साथ था। जो गूंधा हुआ आटा वे मिस्र देश से लाए थे, उन्होंने उससे अखमीरी रोटी बनाई, क्योंकि अभी तक आटे में

कुछ समय के लिए वहां ठहर सके थे और न अपनी यात्रा के लिए भोजन-…

इस्राएलियों का मिस्र-प्रवासकाल समाप्त हुआ, उन्होंने मिस्र देश में चार सौ… वर्ष तक निवास किया था। चार सौ तीस वर्ष के ठीक … मिस्र देश से निकल गए। प्रभु की यह ऐसी रात है जिसमें उसने … निकालने के लिए जागरण किया था। इसलिए यह रात प्रभु के लिए … के द्वारा पीढ़ी से पीढ़ी तक जागरण-रात्रि के रूप में मनाई जाएगी।

फसह के पर्व की अन्य धर्मविधि

प्रभु ने मूसा और हारून से कहा, 'यह फसह के पर्व की धर्मविधि है : कोई … फसह-बलि को नहीं खाएगा, किन्तु रुपया देकर खरीदा हुआ गुलाम, जिसका … कर चुके हो, उसको खा सकता है। अस्थायी प्रवासी और मजदूर उसको नहीं खा सकते … मेमने का मांस केवल एक ही घर के भीतर खाया जाएगा। तुम मांस का कुछ भी बाहर न ले जाना। तुम बलि-पशु की एक भी हड्डी न तोड़ना। … पर्व को मनाएगा। यदि कोई प्रवासी तुम्हारे साथ निवास करता है और वह प्रभु के फसह का पर्व मनाना चाहे तो उसके परिवार के सब पुरुषों का खतना किया जाए। … धर्मविधि में भाग लेकर पर्व को मना सकेगा। वह उस देश का ही निवासी समझा जाएगा … पर कोई भी खतनारहित मनुष्य फसह-बलि को नहीं खा सकता। देशी और प्रवासी दोनों के लिए जो तुम्हारे मध्य निवास करता है, एक ही व्यवस्था है।'

इस्राएलियों ने ऐसा ही किया। जैसी आज्ञा प्रभु ने मूसा और हारून को दी थी, उसी के अनुसार इस्राएलियों ने किया। प्रभु ने ठीक उसी दिन इस्राएलियों को दल-बल सहित मिस्र देश से बाहर निकाल लिया।

१ दसवीं महामारी से बचने के लिए इस्राएलियों ने कौन-सी धर्मविधि पूरी की?

२ प्रभु का पर्व, अथवा फसह का पर्व का क्या अर्थ है? (फसह के पर्व में बलि किए जानेवाले मेमना का विशेष अर्थ था। यह चिह्न या प्रतीक था—परमेश्वर का मेमना, अर्थात् स्वयं परमेश्वर का पुत्र। परमेश्वर ने दसवीं महामारी के समय प्रतिष्ठित धर्मविधि के द्वारा मनुष्यों को यह सिखाया कि उसका पुत्र मानव-जाति के पाप के दण्ड का प्रायश्चित करने के लिए बलि होगा।)

३. अन्तिम महामारी का वर्णन करो।

१८. मेघ स्तम्भ : अग्नि स्तम्भ

(निर्गमन १३ . १७–२२, १४ १–३१)

इस्राएली कौम के लोग जल्दी-जल्दी मिस्रदेश की सीमा से बाहर निकले। परमेश्वर दिन और रात में निरन्तर उनका मार्ग-दर्शन करता रहा। वह दिन में मेघ-स्तम्भ के द्वारा और रात में अग्नि-स्तम्भ के द्वारा उनकी अगुवायी (नेतृत्व) करता रहा। वे चलते-चलते लाल सागर पर पहुंचे।

इसी बीच राजा फरओ ने अपना विचार बदल दिया, और वह उनका पीछा करता हुआ लाल सागर पर पहुंचा। आज का बाइबिल-पाठ परमेश्वर की … अद्भुत उदाहरण है। परमेश्वर अपने लिए … राजा फरओ के

अन्तिम प्रहार से बचाता है। वह लाल सागर के जल को दो भागों में विभक्त कर देता है, और उसके मध्य में एक सूखा मार्ग निकल आता है।

आज की ऐतिहासिक घटना का एक विशेष अर्थ है प्रस्तुत घटना में परमेश्वर ने हमें दिखाया कि वह अपने वचन को पूरा करेगा। वह मानव-जाति के उद्धारकर्त्ता को भेजेगा, जो मनुष्यों को पाप से बचने का मार्ग बताएगा। उसका नाम है—यीशु।

फरओ ने इस्राएलियों को जाने दिया। परमेश्वर उन्हें पलिश्ती देश के मार्ग से नहीं ले गया, यद्यपि वह निकट था। परमेश्वर ने कहा, 'ऐसा न हो कि जब वे युद्ध देखें तब पछताकर मिस्र देश लौट जाएं।' इसलिए परमेश्वर उनको घुमा-फिराकर निर्जन प्रदेश के मार्ग से लाल सागर की ओर ले गया। इस्राएली मिस्र देश से अस्त्र-शस्त्र से सज्जित होकर निकले थे। मूसा ने अपने साथ यूसुफ की अस्थियां लीं, क्योंकि यूसुफ ने इस्राएलियों से यह शपथ ली थी, 'जब परमेश्वर तुम्हारी सुध लें तब अपने साथ मेरी अस्थियों को यहां से अवश्य ले जाना।' वे सुक्कोत नगर से आगे बढ़े और निर्जन प्रदेश के छोर पर स्थित एताम नगर में पड़ाव डाला। प्रभु दिन में उन्हें मार्ग दिखाने के लिए मेघ-स्तम्भ और रात में उन्हें प्रकाश देने के लिए अग्नि-स्तम्भ में होकर उनके आगे-आगे चलता था, जिससे वे रात-दिन यात्रा कर सकें। दिन में मेघ-स्तम्भ और रात में अग्नि-स्तम्भ उनके सम्मुख से नहीं हटता था।

इस्राएलियों का लाल सागर पार करना

प्रभु मूसा से बोला, 'तू इस्राएलियों को बता कि वे पीछे लौटकर मिगदोल नगर और समुद्र के मध्य स्थित पीहाहीरोत नगर के सम्मुख बाल-सफोन के सामने पड़ाव डालें। तुम समुद्र के किनारे पड़ाव डालना। फरओ इस्राएलियों के विषय में कहेगा, "वे अनजान देश में भटककर घबड़ा गए हैं। निर्जन प्रदेश ने उन्हें बन्दी बना लिया है।" मैं फरओ के हृदय को हठीला बना दूंगा और वह इस्राएलियों का पीछा करेगा। तब मैं फरओ तथा उसकी समस्त सेना को पराजित कर अपनी महिमा करूंगा जिससे मिस्र-निवासी जान लें कि मैं प्रभु हूं।' इस्राएलियों ने ऐसा ही किया।

जब मिस्र देश के राजा को बताया गया कि इस्राएली भाग गए तब उनके प्रति फरओ और उसके कर्मचारियों का मन बदल गया। वे कहने लगे, 'यह हमने क्या किया, कि इस्राएलियों को दासत्व से मुक्त कर जाने दिया?' अत: फरओ ने अपना रथ जुतवाया और अपने साथ सैनिक* लिए। उसने छ: सौ चुने हुए रथ, तथा मिस्र देश के सब दूसरे रथ, जिनपर उच्चाधिकारी सवार थे, लिए। प्रभु ने मिस्र देश के राजा फरओ का हृदय हठीला बना दिया। अत: उसने इस्राएलियों का पीछा किया जो साहस के साथ बढ़ते जा रहे थे। समस्त मिस्र-निवासियों ने, फरओ के सब घोड़ों, रथों, घुड़सवारों और उसकी सम्पूर्ण सेना ने उनका पीछा किया, और बाल-सफोन के सम्मुख पीहाहीरोत के पास जहां इस्राएली समुद्र तट पर पड़ाव डाले हुए थे, जा पहुंचे।

जब फरओ निकट आया, इस्राएलियों ने अपनी आंखें ऊपर उठाकर देखा कि सारा मिस्र देश उनका पीछा कर रहा है। वे बहुत डर गए। उन्होंने प्रभु की दुहाई दी। इस्राएलियों ने मूसा से कहा, 'क्या मिस्र देश में कबरों का अभाव था जो आप हमें निर्जन प्रदेश में मरने के लिए ले आए? आपने हमें मिस्र देश से निकालकर हमारे साथ यह क्या किया? क्या हमने आपसे मिस्र देश में यह नहीं कहा था, "हमारे पास से जाइए, हमें मिस्र-निवासियों की गुलामी करने दीजिए?" हमारे लिए यह अच्छा होता कि हम निर्जन प्रदेश में मरने की अपेक्षा मिस्र-निवासियों की गुलामी करते।' मूसा ने इस्राएलियों से कहा, 'मत डरो! निश्चिन्त खड़े रहो, और प्रभु का

जिन मिस्र-निवासियो को आज तुम देख रहे हो, उन्हे फिर कभी नहीं देखोगे।
लिए युद्ध करेगा। तुम केवल शान्त रहो।' प्रभु ने मूसा से कहा, 'तूने मेरी दुहाई क्यो दी
इस्राएलियो को आगे बढ़ने का आदेश दे। अपनी लाठी उठा। अपना हाथ समुद्र
फैला और उसे दो भागो मे विभाजित कर जिससे इस्राएली समुद्र के मध्य
जा सके। मै मिस्र-निवासियो का हृदय हठीला कर दूगा जिससे वे इस्राएलियो
करते हुए समुद्र के मध्य जाए। तब मै फरओ, उसकी
को पराजित कर अपनी महिमा करूगा। जब मै फरओ, उसके रथो और घुड़सवारो पर
विजय** प्राप्त करूगा तब मिस्र-निवासियो को ज्ञात होगा कि मै प्रभु हू।'

तत्पश्चात् इस्राएलियो के सम्मुख आगे-आगे चलनेवाला परमेश्वर का दूत हटकर उनके पीछे चला गया। मेघ-स्तम्भ भी उनके सम्मुख मे हटकर उनके पीछे खड़ा हो गया। यो वह इस्राएलियो और मिस्र की सेना के मध्य म आ गया। वहा मेघ और अन्धकार था। वे रात मे एक दूसरे के निकट नही आ सके। इस प्रकार रात व्यतीत हुई।

मूसा ने समुद्र की ओर अपना हाथ फैलाया। प्रभु ने रात भर पूर्वी वायु बहाकर समुद्र को पीछे धकेल दिया। प्रभु ने समुद्र को सूखी भूमि बना दिया। समुद्र का जल दो भागो मे विभाजित हो गया। इस्राएली समुद्र के मध्य सूखी भूमि पर चलकर गए। जल उनकी दाहिनी ओर तथा बायी ओर दीवार बनकर खड़ा था। मिस्र-निवासियो ने उनका पीछा किया। फरओ के रथ, घोड़े और घुड़सवार उनके पीछे-पीछे समुद्र के मध्य मे गए। रात्रि के अन्तिम पहर मे प्रभु ने अग्नि-स्तम्भ और मेघ-स्तम्भ मे से मिस्र की सेना पर दृष्टिपात किया। प्रभु ने मिस्र की सेना को भयाकुल बना दिया। उसने उनके रथो के पहिए थमा दिए जिससे उनका चलना कठिन हो गया। मिस्र-निवासी कहने लगे, 'आओ, इस्राएलियो के पास से भाग जाए, क्योकि प्रभु उनकी ओर से हमसे युद्ध कर रहा है।'

प्रभु ने मूसा मे कहा, 'अपना हाथ समुद्र की ओर फैला जिससे जल मिस्र-निवासियो पर, उनके रथो और घुड़सवारो पर लौट आए।' अत मूसा ने समुद्र की ओर अपना हाथ फैलाया। सबेरा होते-होते समुद्र अपने पहले के स्थान पर पुन आ गया। जब मिस्र-निवासी उसमे भाग रहे थे तब प्रभु ने उन्हे समुद्र मे बहा दिया। जल अपने स्थान को लौटा और रथ, घुड़सवार तथा फरओ की समस्त सेना को, जिसने समुद्र के मध्य मे इस्राएलियो का पीछा किया था, डुबा दिया। उनमे से एक भी न बचा। पर इस्राएली समुद्र के मध्य सूखी भूमि पर चलकर पार हो गए। जल उनकी दाहिनी ओर तथा बायी ओर दीवार बनकर खड़ा था।

उस दिन प्रभु ने मिस्र-निवासियो के हाथ से इस्राएलियो की रक्षा की। इस्राएलियो ने मिस्र-निवासियों को समुद्र तट पर मृतक देखा। जब इस्राएलियो ने मिस्र-निवासियो के विरुद्ध किए गए प्रभु के भुजबल के महान कार्य को देखा तब वे प्रभु से डरने लगे। उन्होने प्रभु और उसके सेवक मूसा पर विश्वास किया।

१ जब इस्राएलियो ने मिस्र की सेना को देखा तब क्या वे भयभीत हुए ? क्यो ?
२ परमेश्वर ने किस प्रकार लाल सागर के जल को विभाजित किया ?
३ जब मिस्री सैनिकों ने लाल सागर पार करने की कोशिश की तब क्या हुआ ?

१६. परमेश्वर निर्जन प्रदेश मे इस्राएलियों की देखभाल करता है

(निर्गमन १६ : १–२०)

ध्यान दीजिए - परमेश्वर इस्राएली कौम की निरन्तर चौकसी करता है।

क्यों ? क्योंकि सृष्टि के आरम्भ में ही उसने वचन दिया था कि वह मनुष्य जाति को उसके पाप से बचाने के लिए एक उद्धारकर्त्ता भेजेगा। और यह उद्धारकर्त्ता इस्राएली कौम में जन्म लेगा। इसलिए इस्राएलियों को बचाना आवश्यक था।

किन्तु परमेश्वर जितना इस्राएलियों से प्रेम करता था, उतना इस्राएली परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते थे : उनका विश्वास, भक्ति पतिव्रता नारी के समान निष्कपट नहीं थी। जैसा एक बालक अपने पिता पर भरोसा करता है, वैसा वे परमेश्वर पर नहीं रखते थे।

मिस्र देश की कठोर गुलामी से मुक्त होने के बाद वे परमेश्वर के प्रति कुड़कुड़ाने, बुडबुडाने, शिकायत करने लगे; क्योंकि उन्हें निर्जन प्रदेश में उतना भोजन नहीं मिलता था, जितना वे मिस्र देश में पाते थे।

हम बाइबिल में बार-बार पढ़ते हैं कि इस्राएली अपने प्रभु परमेश्वर के प्रति पाप करते हैं, फिर भी परमेश्वर उनके प्रति दयालु बना रहता है। वह उनके पापों को क्षमा करता रहता है।

आज की कहानी परमेश्वर के प्रेम-चिन्ता का सुन्दर उदाहरण है। परमेश्वर उन लोगों की देखभाल करता है, उनकी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, जो उसकी भक्ति करते, उसपर अटूट विश्वास रखते हैं।

समस्त इस्राएली समाज ने एलीम निकुंज से प्रस्थान किया। वे मिस्र देश से गमन करने के दूसरे महीने के पन्द्रहवें दिन सीन नामक निर्जन प्रदेश में प्रविष्ट हुए। यह निर्जन प्रदेश एलीम और सीनय पर्वत के मध्य में है। सब इस्राएली लोग निर्जन प्रदेश में मूसा और हारून के विरुद्ध बक-बक करने लगे। इस्राएलियों ने उनसे कहा, "जब हम मिस्र देश में मांस की हेगची के निकट बैठकर भरपेट भोजन करते थे तब अच्छा होता कि हम प्रभु के हाथ से मार दिए गए होते, क्योंकि आप लोग इस निर्जन प्रदेश में समस्त जनसमुदाय को भूख से मार डालने के लिए मिस्र देश से निकालकर लाए हैं।'

प्रभु ने मूसा से कहा, "देख, मैं तुम्हारे लिए स्वर्ग से भोजन की वर्षा करूंगा। ये लोग प्रत्येक दिन बाहर निकलकर दैनिक भोजन एकत्र करेंगे। इससे मैं उनको परखूंगा कि वे मेरी व्यवस्था के अनुसार चलेंगे अथवा नहीं। वे छठवें दिन जितनी भोजन सामग्री भीतर लाकर तैयार करेंगे, वह उससे दुगुनी होगी जिसे वे प्रतिदिन एकत्र करते हैं।" अतः मूसा और हारून ने सब इस्राएलियों से कहा, 'सन्ध्या समय तुम्हें ज्ञात हो जाएगा कि प्रभु ने ही तुम्हें मिस्र देश से बाहर निकाला है। प्रातःकाल तुम उसकी महिमा देखोगे, क्योंकि प्रभु ने अपने विरुद्ध तुम्हारा बक-बकाना सुना है। हम क्या हैं कि तुम हमारे विरुद्ध बक-बक करते हो?' मूसा ने पुनः कहा, 'यह तब होगा जब प्रभु सन्ध्या समय तुम्हें खाने के लिए मांस और प्रातःकाल भर पेट रोटी देगा, क्योंकि जो बक-बक तुमने प्रभु के विरुद्ध की थी, उसने उसे सुना है। हम क्या हैं? तुम्हारा बक-बकाना हमारे विरुद्ध नहीं, वरन् प्रभु के विरुद्ध है।'

तत्पश्चात् मूसा ने हारून से कहा, 'तुम समस्त इस्राएली समाज से यह कहो, "प्रभु के सम्मुख, उसके निकट आओ, क्योंकि उसने तुम्हारा बक-बकाना सुना है।"' जब हारून सब इस्राएली लोगों से बोला तब वे निर्जन प्रदेश की ओर उन्मुख हुए और देखो, प्रभु की महिमा मेघ में दिखाई दी। प्रभु मूसा से बोला, 'मैंने इस्राएलियों का ... उनसे यह कह, "तुम गोधूलि के समय मांस खाओगे और प्रातःकाल रोटी ... तब तुम्हें ज्ञात होगा कि मैं प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर हूं।"'

सन्ध्या समय बटेरें उड़कर आईं। उन्होंने पड़ाव को ढक लिया। सबेरे पड़ाव के चारों ओर ओस गिरी। जब ओस सूख गई तब सूखी भूमि की सतह पर छोटे-छोटे छिलके से के समान छोटे कण, दिखाई दिए। जब इस्राएलियों ने उसे देखा तब वे एक दूसरे से कहने लगे, 'यह क्या है?'* क्योंकि वे नहीं जानते थे कि वह क्या है। मूसा ने उनसे कहा 'यह रोटी है जो प्रभु ने तुम्हें खाने के लिए दी है। जो आज्ञा प्रभु ने दी, वह यह है "प्रत्येक व्यक्ति अपनी खुराक के अनुसार उसे एकत्र करेगा। प्रत्येक व्यक्ति अपने तम्बू में रहनेवाले मनुष्यों की गिनती के अनुसार व्यक्ति पीछे एक-एक ओमेर** लेगा।"' इस्राएलियों ने ऐसा ही किया। किसी ने अधिक, किसी ने कम एकत्र किया। किन्तु जब उन्होंने ओमेर नाप से ... तब अधिक एकत्र करनेवाले के पास अतिरिक्त न निकला, और न कम एकत्र क... के पास आवश्यकता से कम। प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी खुराक के अनुसार एकत्र किया था। मूसा ने उनसे कहा, 'कोई भी व्यक्ति प्रातःकाल तक उसे बचाकर नहीं रखेगा।' कि... उन्होंने मूसा की बात नहीं सुनी। कुछ लोगों ने उसे सबेरे तक बचाकर रखा। पर ... कीड़े पड़ गए और वह दुर्गन्धमय हो गया। मूसा उनपर क्रोधित हुए। ... सबेरे अपनी खुराक के अनुसार उसे एकत्र करता था। किन्तु जब सूर्य तपने लगता ... पिघल जाता था।

उन्होंने छठवें दिन भोजन दुगुनी मात्रा में, अर्थात् प्रति व्यक्ति पीछे दो ओमेर एकत्र किया। जब इस्राएली समाज के सब अगुओं ने आकर मूसा को यह बताया तब मूसा ने उनसे कहा, 'यह वही बात है जो प्रभु ने कही थी। कल परम विश्राम का दिन, प्रभु का पवित्र विश्राम दिवस है। आज तुम्हें जितना पकाना है, उतना पकाओ, जितना उबालना है, उतना उबालो। जो कुछ शेष रहे, उसे सबेरे तक सुरक्षित रखो।' उन्होंने मूसा की आज्ञानुसार भोजन को सबेरे तक अलग रखा। वह न तो दुर्गन्धमय हुआ और न उसमें कीड़े पड़े। मूसा ने कहा, 'तुम इसे आज खाओ। आज प्रभु का विश्राम दिवस है। इसलिए यह आज तुम्हें मैदान में नहीं मिलेगा। तुम छः दिन तक इसे एकत्र करना। सातवां दिन विश्राम दिवस है। उस दिन यह तुम्हें नहीं मिलेगा।' कुछ व्यक्ति सातवें दिन उसे एकत्र करने के लिए बाहर गए किन्तु उन्हें कुछ नहीं मिला। प्रभु ने मूसा से कहा, 'तुम कब तक मेरी आज्ञाओं और नियमों का पालन नहीं करोगे? देखो मैंने तुम्हें विश्राम दिवस प्रदान किया है। इसलिए मैं तुम्हें छठवें दिन दो दिन के लिए भोजन प्रदान करता हूं। अतः प्रत्येक व्यक्ति अपने स्थान पर रहे। सातवें दिन कोई भी व्यक्ति अपने निवासस्थान से बाहर न जाए।' इस प्रकार इस्राएलियों ने सातवें दिन विश्राम किया।

१ परमेश्वर ने किस प्रकार इस्राएली लोगों के भोजन की व्यवस्था की?
२ परमेश्वर ने क्यों सातवें दिन 'मन' एकत्र करने के लिए मना किया था? क्या वह आज भी हमसे यह चाहता है कि हम सप्ताह का कम से कम एक दिन उसको दें?

२०. परमेश्वर के धर्म-नियम (व्यवस्था)

(व्यवस्था-विवरण ५ : १–२१)

इस्राएली अपने देश—कनान की ओर बढ़ रहे थे। उन दिनों वे निर्जन प्रदेश में थे। तब परमेश्वर ने उनको दस आज्ञाएं दीं। ये आज्ञाएं ही मनुष्य के सफल आचरण का आधार है। इनका पालन करने से मनुष्य सुखी बनता है।

*... में 'मन हू' **एक विशेष प्रकार का माप, प्राय एक किलो

ये आज्ञाए केवल इस्राएलियो के लिए नही थी, वरन समस्त मानवजाति के लिए थी।

परमेश्वर अपने उद्धार के बदले मे हमसे यह चाहता है कि हम उसकी दस आज्ञाओ के अनुरूप जीवन बिताए।

मूसा ने समस्त इस्राएली समाज को बुलाया, और उनसे यह कहा 'ओ इस्राएल! जो सविधि और न्याय-सिद्धान्त आज मै तुम्हारे कान मे डाल रहा हू, उनको सुनो। तुम उन्हे सीखना, और उनको व्यवहार मे लाने के लिए सदा तत्पर रहना। हमारे प्रभु परमेश्वर ने होरेब पर्वत पर हमारे साथ एक वाचा स्थापित की थी। प्रभु ने यह वाचा हमारे पूर्वजो के साथ नही, वरन् हमारे साथ, हम सबके साथ जो यहा है और आज तक जीवित है, स्थापित की थी। प्रभु ने पहाड पर तुमसे आमने-सामने अग्नि के मध्य से वार्तालाप किया था। उस समय मै प्रभु का वचन तुम पर घोषित करने के लिए तुम्हारे और प्रभु के मध्य खडा था क्योकि तुम अग्नि के कारण डर गए थे, और पहाड पर नही चढे थे। तब उसने कहा था

'मै प्रभु, तेरा परमेश्वर हू, जिसने तुझे मिस्र देश मे, दासत्व के घर मे बाहर निकाला है।

'तू मेरे अतिरिक्त किसी और को परमेश्वर नही मानना।

'तू अपने लिए किसी की मूर्ति या किसी प्राणी की आकृति न बनाना, जो ऊपर आकाश मे, अथवा नीचे धरती पर या धरती के नीचे जल मे है, झुककर उसकी वन्दना न करना, और न सेवा करना, क्योकि मै, तुम्हारा प्रभु परमेश्वर, ईर्ष्यालु हू। जो मुझ से घृणा करते है, उनके अधर्म का प्रतिशोध उनकी तीसरी-चौथी पीढी की सन्तान से लेता हू, परन्तु मुझसे प्रेम करनेवाले और मेरी आज्ञा का पालन करनेवाले हजारो व्यक्तियो पर मै करुणा करता हू।

'तू अपने प्रभु परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना, क्योकि जो व्यक्ति प्रभु का नाम व्यर्थ लेगा, उसे वह निर्दोष घोषित नही करेगा।

'विश्राम दिवस को मानना, और उसको पवित्र रखना, जैसी तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे आज्ञा दी है। तू छ दिन तक परिश्रम करना, अपने सब कार्य करना, किन्तु सातवा दिन तेरे प्रभु परमेश्वर का विश्राम दिवस है। अतएव तू, तेरे पुत्र-पुत्री, सेवक-सेविका, तेरे बैल, तेरे गधे, तेरे पशु, तेरे नगर मे निवास करनेवाले प्रवासी व्यक्ति उस दिन कोई कार्य नही करेगे, जिससे तेरा सेवक और सेविका तेरे समान विश्राम कर सके। तू स्मरण रखना कि मिस्र देश मे तू सेवक था, और तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे वहा से अपने भुजबल और उद्धार के हेतु फैले हुए हाथो से बाहर निकाला था। इस कारण तेरे प्रभु परमेश्वर ने विश्राम दिवस का पालन करने की आज्ञा दी है।

'अपने माता-पिता का आदर कर, जैसी तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे आज्ञा दी है, जिससे तेरी आयु दीर्घ हो सके, और उस देश मे तेरा भला हो जिसे तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे प्रदान कर रहा है।

''तू हत्या न करना।

'तू व्यभिचार न करना।

'तू चोरी न करना।

'तू अपने पडौसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।

'तू अपने पडोसी की पत्नी का लोभ न करना। तू अपने पडोसी के घर, उसके खेत, सेवक-सेविका, बैल-गधे तथा उसकी किसी भी वस्तु का लालच न करना।'

१. ध्यान दीजिए परमेश्वर की दस आज्ञाए दो भागो मे विभक्त है। पहली चार आज्ञाओ का सम्बन्ध किस से है, और अन्तिम छ का किससे?

२ पहली आज्ञा कौन-सी है? (व्यवस्था ५ ७) हमारे जीवन में इस आज्ञा का महत्व बताइए।

२१. कनान देश की सीमा पर

(यहोशू १ १–९, ३, ४. १–१४)

परमेश्वर इस्राएली कौम को कनान देश की सीमा पर ले आया। देश को देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी। परन्तु इस्राएली कौम परमेश्वर पर पूरा विश्वास नही करती थी। उसके विश्वास में निष्कपटता ... भक्ति नही थी। अत परमेश्वर ने उन्हे दण्ड दिया, और वे चालीस वर्ष तक निर्जन प्रदेश मे भटकते रहे। परमेश्वर ने उस बार उन्हे कनान देश में प्रवेश नही कराया।

जिस पाठ को आज आप पढेंगे, उसमे यह बताया गया है कि परमेश्वर दूसरी बार इस्राएलियो को कनान देश के प्रवेश-द्वार पर लाता है। मूसा की मृत्यु हो जाती है, और उनके स्थान पर एक नया नेता यहोशू नियुक्त होता है।

प्रभु के सेवक मूसा की मृत्यु के पश्चात् प्रभु ने नून के पुत्र और मूसा के धर्म-सेवक यहोशू से कहा, 'मेरे सेवक मूसा की मृत्यु हो गई। इसलिए उठ, और सब लोगों के साथ इस यरदन नदी को पारकर उस देश मे जा जो मै उनको, इस्राएली समाज को, दे रहा हूं। ... मैंने कहा था, उसके अनुसार जिस-जिस स्थान पर तुम्हारे पैर पडेंगे, वह मै तुम्हे दूगा। यह तुम्हारी राज्य-सीमा होगी दक्षिण मे मरुस्थल से उत्तर मे लबानोन की पहाडियो तक, पूर्व मे महानदी फरात और हित्ती जाति के समस्त देश से पश्चिम मे भूमध्यसागर तक। जब तक तू जीवित है तब तक कोई भी व्यक्ति तेरा सामना नहीं कर सकेगा। जैसे मै मूसा के साथ था वैसे तेरे साथ भी रहूगा। मै तुझे निस्सहाय नही छोडूगा, मै तुझे नहीं त्यागूगा। शक्तिमान और साहसी बन, क्योकि तू ही इस देश पर, जिसको प्रदान करने की शपथ मैने इनके पूर्वजो से खाई थी, इन लोगों का अधिकार कराएगा। परन्तु तू शक्तिमान और साहसी बन, और जिस व्यवस्था का आदेश मेरे सेवक मूसा ने तुझे दिया है, उसका पालन कर, उसके अनुसार कार्य कर। उस व्यवस्था से न दाहिनी ओर मुडना, और न बायीं ओर, जिससे तू जहा-जहा जाएगा, वहा-वहा सफल होगा। इस व्यवस्था के शब्द तेरे मुख से कभी अलग न हो वरन् तू रात-दिन उसका पाठ करना, जिससे तू उसमे लिखी हुई सब बातो का पालन कर सके, उनके अनुसार कार्य कर सके। तब तू अपने मार्ग पर उन्नति करेगा, तू सफल होगा। क्या मैने तुझे यह आज्ञा नही दी है "शक्तिमान और साहसी बन! भयभीत मत हो! निराश मत हो!"? क्योंकि जहा-जहा तू जाएगा, वहा-वहा मै, तेरा प्रभु परमेश्वर, तेरे साथ रहूगा।'

इस्राएलियों का यरदन नदी पार करना

यहोशू सवेरे उठा। उसने इस्राएली लोगों के साथ शित्तीम के पडाव से प्रस्थान किया। वे यरदन नदी के तट पर पहुचे। उन्होंने उस पार जाने के पूर्व वहा पर पडाव डाला। शासकों ने तीन दिन के पश्चात् समस्त पडाव मे दौरा किया। उन्होने लोगो को यह आदेश दिया 'जब तुम अपने प्रभु परमेश्वर की वाचा-मंजूषा को लेवीय पुरोहितो के द्वारा ले जाते हुए देखो, तब अपने-अपने स्थान से प्रस्थान कर उसका अनुगमन करना। तब तुम्हें ज्ञात होगा कि किस ओर जाना है, क्योंकि तुम इस ओर पहले कभी नही आए थे। परन्तु तुम बाच

मन्जूषा के निकट मत जाना, वरन् उससे एक किलोमीटर पीछे रहना।' यहोशू ने लोगों से कहा, 'तुम अपने आपको शुद्ध करो, क्योंकि प्रभु कल तुम्हारे मध्य आश्चर्यपूर्ण कार्य करेगा।' उसने पुरोहितों से यह कहा, 'वाचा की मन्जूषा उठाकर लोगों के आगे-आगे चलो।' पुरोहित वाचा की मन्जूषा उठाकर इस्राएली लोगों के आगे-आगे चलने लगे।

प्रभु ने यहोशू से कहा, 'जो कार्य आज मैं करूंगा, उसके कारण तू समस्त इस्राएली लोगों के समक्ष, एक महान पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित होगा, और उन्हें ज्ञान हो जाएगा कि मैं जैसा मूसा के साथ था वैसा ही तेरे साथ रहूंगा। तू वाचा-मन्जूषा वहन करनेवाले पुरोहितों को यह आदेश दे, "जब तुम यरदन नदी के तट पर पहुंचोगे तब नदी में खड़े हो जाना।"' यहोशू ने इस्राएली लोगों से कहा, 'पास आओ, और अपने प्रभु परमेश्वर के वचन सुनो।' उसने आगे कहा, 'तुम्हें आज ज्ञान होगा कि तुम्हारे मध्य जीवित परमेश्वर है, और वह तुम्हारे सामने से कनानी, हित्ती, हिव्वी, परिज्जी, गिर्गाशी, एमोरी, और यबूसी जातियों को निश्चय ही खदेड़ देगा। देखो, समस्त पृथ्वी के प्रभु की वाचा-मन्जूषा तुम्हारे सम्मुख यरदन नदी पार कर रही है। अब तुम इस्राएल के प्रत्येक कुल में से एक पुरुष के हिसाब से बारह पुरुष लो। देखो, जब समस्त पृथ्वी के प्रभु की वाचा-मन्जूषा वहन करनेवाले पुरोहित यरदन नदी के जल में पैर डालेंगे, तब यरदन नदी का जलप्रवाह रुक जाएगा, ऊपर से आनेवाला जल एक ढेर के रूप में खड़ा हो जाएगा।'

फसल का समय था। नदी जलमग्न थी। लोगों ने नदी पार करने के लिए अपने तम्बुओं से प्रस्थान किया। वाचा की मन्जूषा वहन करनेवाले पुरोहित लोगों के आगे थे। जब पुरोहित यरदन नदी के तट पर पहुंचे और उन्होंने पैर जल में डाले तब ऊपर का जल-प्रवाह रुक गया, और वह बहुत दूर सारतान नगर के निकट आदम नगर पर, एक ढेर के रूप में खड़ा हो गया। नीचे की ओर, अराबाह सागर, अर्थात् मृत सागर, की ओर बहनेवाला जल पूर्णत: सूख गया और इस्राएली लोगों ने यरीहो नगर के निकट नदी पार की। जब तक इस्राएली सूखी भूमि पर उस पार चलते गए, और समस्त इस्राएली राष्ट्र ने यरदन नदी पार नहीं कर ली तब तक प्रभु की वाचा-मन्जूषा वहन करनेवाले पुरोहित यरदन नदी के मध्य सूखी भूमि पर स्थिर खड़े रहे।

बारह स्मारक-स्तम्भ

जब इस्राएली राष्ट्र के सब लोग यरदन नदी को पारकर चुके तब प्रभु ने यहोशू से यह कहा, 'तू प्रति कुल में एक पुरुष के हिसाब से सब कुलों में से बारह पुरुष चुन, और उन्हें यह आदेश दे "तुम यहां यरदन नदी के मध्य उस स्थान से जहां पुरोहितों ने पैर रखे थे, बारह पत्थर लो। उन्हें अपने कन्धों पर उठाकर ले जाओ, और जहां आज रात तुम पड़ाव डालोगे, वहां उस पड़ाव के स्थान पर उनको रख देना।"' तब यहोशू ने इस्राएली समाज में से उन बारह पुरुषों को बुलाया, जिन्हें उसने प्रति कुल एक पुरुष के हिसाब से नियुक्त किया था। यहोशू ने उनसे कहा, 'तुम अपने प्रभु परमेश्वर की मन्जूषा के सम्मुख यरदन नदी के मध्य जाओ। इस्राएल के बारह कुलों की संख्या के अनुरूप प्रत्येक पुरुष एक-एक पत्थर अपने कन्धे पर रखकर ले जाएगा। ये तुम्हारे मध्य स्मारक-चिह्न माने जाएंगे। जब भविष्य में तुम्हारे बच्चे तुमसे यह पूछेंगे, "इन पत्थरों का क्या अर्थ है?" तब तुम उनसे कहना, 'प्रभु की वाचा-मन्जूषा के सम्मुख यरदन नदी का जलप्रवाह रुक गया था। जब प्रभु की वाचा-मन्जूषा ने यरदन नदी पार की, तब उसका जल सूख गया था।" अत: ये पत्थर इस्राएली समाज के लिए सदा-सर्वदा स्मारक-चिह्न माने जाएंगे।'

इस्राएली पुरुषों ने यहोशू के आदेश के अनुसार कार्य किया। उन्होंने इस्राएली कुलों की संख्या के अनुरूप यरदन नदी के मध्य से बारह पत्थर उठाए, जैसा प्रभु यहोशू से बोला था। वे उनको अपने कन्धों पर रखकर उस स्थान पर ले गए, जहां उन्होंने पड़ाव डाला था।

उन्होंने वहां उनको रख दिया। यहोशू ने यरदन नदी के मध्य उस स्थान पर जहां प्रभु की मन्जूषा वहन करनेवाले पुरोहितों ने पैर रखे थे, बारह पत्थर प्रतिष्ठित किए (वे आज भी वहां है)। जिन कार्यों को करने की आज्ञा प्रभु ने यहोशू के द्वारा इस्राएली लोगों को दी थी, जब तक वे सम्पन्न नहीं हो गए तब तक मन्जूषा को वहन करनेवाले पुरोहित यरदन नदी के मध्य खड़े रहे। ऐसा ही आदेश मूसा ने यहोशू को दिया था।

लोगों ने जल्दी-जल्दी नदी पार की। जब सब लोग नदी पार कर चुके तब प्रभु की वाचा-मन्जूषा वहन करनेवाले पुरोहित उस पार गए और फिर लोगों के आगे हो गए। जैसा मूसा ने रूबेन तथा गाद वंशियों और मनश्शे के आधे गोत्र से कहा था, उसके अनुसार वे हथियार बांधे शेष इस्राएलियों के आगे उस पार गए। वे अस्त्र-शस्त्र से सज्जित चालीस हजार सैनिक थे। वे युद्ध करने के लिए प्रभु के सम्मुख यरीहो के मैदान की ओर गए। उस दिन जो कार्य प्रभु ने किया उसके कारण यहोशू इस्राएली लोगों के समक्ष एक महान पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। जैसा इस्राएली मूसा के प्रति श्रद्धामय भय रखते थे वैसे वे यहोशू के प्रति जीवन भर श्रद्धामय भय रखते रहे।

१ परमेश्वर ने नये नेता यहोशू को क्या सलाह दी ?
(देखो, यहोशू १ : ७, ८)
क्या परमेश्वर हमारे सत्कर्म अथवा दुष्कर्म के प्रति उदासीन रहता है? चाहे हम उसकी आज्ञाओं के अनुसार जीवन बिताएं अथवा न बिताएं। क्या वह इसपर ध्यान देता है ?
२ यहोशू १ : ८ पद के अनुसार हमें किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए ?
३ परमेश्वर ने किस प्रकार इस्राएलियों को कनान देश में प्रवेश कराया, जिसकी प्रतिज्ञा उसने की थी ?

२२. कनान देश पर विजय

(यहोशू ६ : १–२१)

कनान देश में रहनेवाले अत्यन्त पापी थे। वे तरह-तरह के दुष्कर्म करते थे। हम बाइबिल में पढ़ते हैं कि परमेश्वर पाप से घृणा करता है। अतः वह दुष्कर्म करने वाले को दण्ड देता है।

परमेश्वर ने इस्राएलियों के माध्यम से कनान देश के निवासियों को दण्ड दिया। उसने न केवल यरदन नदी का पानी विभाजित किया, उन्हें यरदन नदी पार कराई वरन् अद्भुत ढंग से अनेक महानगर इस्राएलियों के हाथ में सौंप दिए।

इस्राएलियों के कारण यरीहो नगर में मोर्चाबन्दी कर ली गई। प्रवेश-द्वार बन्द कर दिए गए। कोई व्यक्ति नगर के भीतर न आ सकता था, और न नगर के बाहर जा सकता था। प्रभु ने यहोशू से कहा, 'देख, मैं यरीहो नगर, उसके राजा और उसके योद्धाओं को तेरे हाथ में दे रहा हूं। तू और तेरे सैनिक दिन में एक बार पूरे नगर की परिक्रमा करेंगे। तू छः दिन तक ऐसा ही करना। सात पुरोहित मेढ़ों के सींग से बने सात नरसिंघे लेकर वाचा-मन्जूषा के आगे-आगे जाएंगे। पर तुम सातवें दिन सात बार नगर की परिक्रमा करोगे, और पुरोहित

नरसिंघे फूंकेंगे। वे अन्त में जोर से नरसिंघा फूंकेंगे। ज्योंही तुम नरसिंघे की आवाज सुनोगे त्योंही सब लोग जोर से युद्ध का नारा लगाएंगे। तब यरीहो नगर का परकोटा धस जाएगा और हरएक अपनी आगो की सीध में चढ़ जाएगा।'

यहोशू बेन-नून ने पुरोहितों को बुलाया, और उनसे यह कहा, 'वाचा-मञ्जूषा उठाओ। तुम में से सात पुरोहित मेढ़े के सींग के सात नरसिंघे उठाकर वाचा-मञ्जूषा के आगे-आगे जाएंगे।' उसने इस्राएली लोगों से कहा, 'आगे बढ़ो। नगर की परिक्रमा करो। अग्रगामी सैन्यदल प्रभु की मञ्जूषा के सम्मुख रहेंगे।"

यहोशू के आदेश के अनुसार सात पुरोहित, जो प्रभु के सम्मुख मेढ़े के सींग के सात नरसिंघे उठाए हुए थे, आगे बढ़े। उन्होंने नरसिंघे फूंके। प्रभु की वाचा-मञ्जूषा उनके पीछे चल रही थी। नरसिंघा फूकनेवाले पुरोहितों के आगे अग्रगामी सैन्यदल था। चन्दावल सैन्यदल मञ्जूषा के पीछे चल रहा था। लोग आगे बढ़े, पुरोहितों ने नरसिंघे फूंके।

यहोशू ने लोगों को यह आदेश दिया, 'युद्ध का नारा मत लगाना। तुम्हारी आवाज भी सुनाई नहीं देनी चाहिए। तुम्हारे मुंह से शब्द भी नहीं निकलना चाहिए। जिस दिन मैं तुम्हें युद्ध का नारा लगाने को कहूंगा, उस दिन ही तुम युद्ध का नारा लगाना।' इस प्रकार यहोशू ने प्रभु की मञ्जूषा को एक बार नगर की परिक्रमा कराई। तब वे पड़ाव में लौट आए, और वहां रात व्यतीत की।

यहोशू सबेरे उठा। पुरोहितों ने प्रभु की मञ्जूषा उठाई। प्रभु की मञ्जूषा के आगे-आगे मेढ़े के सींग के सात नरसिंघे वहन करनेवाले सात पुरोहित नरसिंघे फूकते हुए चले। अग्रगामी सैन्यदल उनके आगे चल रहा था। चन्दावल सैन्यदल प्रभु की मञ्जूषा के पीछे चल रहा था। नरसिंघे निरन्तर बज रहे थे। वे दूसरे दिन फिर एक बार नगर की परिक्रमा कर पड़ाव में लौट आए। ऐसा उन्होंने छः दिन तक किया।

वे सातवें दिन पौ फटने के पूर्व उठे। उन्होंने पूर्व ढंग से नगर की परिक्रमा की, पर उस दिन उन्होंने सात बार नगर की परिक्रमा की। जब पुरोहितों ने सातवीं बार की परिक्रमा के समय नरसिंघे फूंके तब यहोशू ने लोगों से कहा, 'युद्ध का नारा लगाओ, क्योंकि प्रभु ने तुम्हें यह नगर दे दिया है! नगर और उसकी प्रत्येक वस्तु प्रभु को बलि के रूप में अर्पित करके पूर्णतः नष्ट कर दी जाएगी, केवल वेश्या राहब और उसके घर के भीतर रहनेवाले जीवित छोड़ दिए जाएंगे, क्योंकि उसने हमारे द्वारा भेजे गए दूतों को छिपाकर रखा था। तुम उन सब निषिद्ध वस्तुओं से दूर रहना, जो प्रभु के लिए पूर्णतः नष्ट की जाएंगी। ऐसा न हो कि तुम अर्पण का संकल्प करने के पश्चात् अर्पित वस्तु ले लो, और इस्राएली पड़ाव को सर्वनाश का कारण बना दो, और उस पर संकट लाओ। सोना-चांदी, कांस्य और लोहे के सब पात्र प्रभु के लिए पवित्र मानकर अलग किए जाएंगे और उन्हें प्रभु के कोषागार में रखा जाएगा।'

लोगों ने युद्ध का नारा लगाया। नरसिंघे फूंके गए। जब लोगों ने नरसिंघे की आवाज सुनी तब जोर से युद्ध का नारा लगाया। परकोटा धस गया। हरएक व्यक्ति अपनी आगो की सीध में चढ़ गया। उन्होंने नगर पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् उन्होंने तलवार से यरीहो नगर के सब पुरुष-स्त्री, बाल-वृद्ध, बैल, भेड़ और गधों को पूर्णतः नष्ट कर दिया।

१. यरीहो नगर के विषय में परमेश्वर ने इस्राएलियों को क्या आदेश दिया?
२. परमेश्वर ने किस प्रकार यरीहो नगर को इस्राएलियों के अधिकार में सौंपा?

२३. इस्राएलियों का पाप में पड़ना

(शासक २ . ११–२३)

आज के वर्णन मे तथा आगे के विवरणों मे भी हम पढ़ते हैं कि इस्राएली कौम पाप के गड्ढे मे गिर जाती है; क्योकि वे परमेश्वर पर पतिव्रता स्त्री के समान अटूट निष्ठा नही रखते थे। परमेश्वर ने उनके लिए अनेक [illegible] कर्म किए, उन पर आशीषो की वर्षा की तो भी इस्राएली [illegible] गई। परमेश्वर ने इस्राएलियो को आदेश दिया था कि वे अन्य देवी-देवताओं की पूजा-आराधना न करें, केवल सच्चे परमेश्वर की वन्दना—स्तुति करें। उसने इस्राएलियो से यह भी कहा था कि वे जादू-टोना करनेवालो से दूर रहें। किन्तु उन्होने परमेश्वर की यह आज्ञा भी अनसुनी कर दी। अतः परमेश्वर ने उनको दण्ड दिया। जब-जब वे परमेश्वर की आज्ञा का उल्लघन करते थे तब-तब परमेश्वर उनको दण्ड देता था।

परमेश्वर ने कनान देश मे बसनेवाली सब जातियो को नही निकाला। [illegible] जातिया वहा रह गईं जिनके माध्यम से वह इस्राएलियों को उनके पाप के लिए दण्ड देता था।

जो कार्य प्रभु की दृष्टि मे बुरा था वह इस्राएली लोगो ने किया। वे बअल देवताओं की सेवा करने लगे। उन्होंने अपने पूर्वजो के प्रभु परमेश्वर को त्याग दिया, जिसने उन्हें मिस्र देश से बाहर निकाला था, वे अपने चारो ओर की जातियो के देवताओ का अनुसरण करने लगे। उन्होने उन देवताओ को झुककर वन्दना की। इस प्रकार उन्होने प्रभु को चिढ़ाया। उन्होंने प्रभु को त्यागकर बअल देवता तथा अशोराह देवी की सेवा की। अतः इस्राएलियों के प्रति प्रभु का क्रोध भड़क उठा। प्रभु ने उन्हे लुटेरो के हाथ सौंप दिया, जिन्होंने इस्राएलियों को लूटा। उसने उन्हे उनके चारो ओर के शत्रुओ के हाथ बेच दिया, जिसके कारण वे अपने शत्रुओ का सामना नही कर सके। जब-जब वे युद्ध के लिए बाहर निकलते थे तब-तब प्रभु का हाथ उनका अनिष्ट करने के लिए उठ जाता था, जैसा प्रभु ने कहा था, जैसी उसने उनसे शपथ खाई थी। वे बड़े सकट मे पड गए।

तब प्रभु ने इस्राएलियो के लिए शासक* नियुक्त किए, जिन्होंने उन्हे लुटेरो के हाथ से मुक्त किया। किन्तु इस्राएलियो ने शासको की बात भी नही सुनी। उन्होंने अन्य जातियो के देवताओ का अनुसरण कर वेश्या के सदृश विश्वासघात किया। उन्होंने उन देवताओं को झुककर वन्दना की। जिस मार्ग पर उनके पूर्वज चले थे, उससे वे अविलम्ब भटक गए। जैसा उनके पूर्वजो ने प्रभु की आज्ञाओ का पालन किया था वैसा उन्होने नही किया। जब प्रभु इस्राएलियो के लिए शासक नियुक्त करता था तब प्रभु उस शासक के साथ रहता था। वह प्रभु शासक के जीवन-भर इस्राएलियो को उनके शत्रुओ के हाथ से मुक्त रखता था। जब वे अत्याचारी के अत्याचार तथा शत्रुओ के दबाव के कारण, कराहते थे तब प्रभु दया से द्रवित हो जाता था। किन्तु उस शासक की मृत्यु के बाद इस्राएली प्रभु से विमुख हो जाते थे। वे अपने पूर्वजो की अपेक्षा अधिक बुरा व्यवहार करते थे। वे अन्य जातियो के देवताओं का अनुसरण करते थे। उनकी सेवा करते थे। वे झुककर उनकी वन्दना करते थे। उन्होंने अपनी बुरी प्रथाओ का, पूर्वजो के हठधर्म के मार्ग का, त्याग नहीं किया। अतः प्रभु का क्रोध

*इस्राएली राष्ट्र मे राजा की प्रथा आरम्भ होने के पूर्व परमेश्वर के द्वारा चुने हुए वीर, साहसी, बुद्धिमान और परमेश्वर-भक्त लोग राज्य करते थे, इन्हे इब्रानी में 'शोफेट', अर्थात् 'प्रशासक', 'शासक' अथवा 'न्यायी' [illegible]।

इस्राएलियो के प्रति भड़क उठा। उसने कहा, 'जिस वाचा का पालन करने के लिए मैंने इस राष्ट्र के पूर्वजो को आदेश दिया था, मेरी उस वाचा को इन्होंने भंग किया है। इन्होंने मेरी वाणी नही सुनी। इसलिए जिन जातियो को यहोशू अपनी मृत्यु के समय छोड़ गया था, उनमे से एक जाति को भी मै इनके लिए नही निकालूगा, जिससे मै उन जातियो के द्वारा इस्राएलियो को कसौटी पर कस सकू कि वे अपने पूर्वजो के समान मेरे मार्ग पर चलने को तत्पर होंगे अथवा नही।' अत प्रभु ने उन जातियो को तुरन्त नही निकाला, जिन्हे उसने छोड़ दिया था और यहोशू के हाथ मे नही सौंपा था।

१ इस्राएली कौम ने परमेश्वर के प्रति कौन-सा पाप किया ? वह पाप क्या था ?
२ परमेश्वर ने इस पाप का फल इस्राएलियो को क्या दिया ?
३ शासको (न्यायियो) के माध्यम से परमेश्वर भटकती हुई इस्राएली जाति को अपने पास किस प्रकार लाया ?

२४. नबी शमूएल का वृत्तान्त

(१ शमूएल १ १–२८, २; ३ १–१८)

परमेश्वर ने इस्राएली कौम को अनेक अच्छे पुरोहित (धर्म-सेवक) दिए थे। उनमे से एक का नाम शमूएल था। शमूएल का जीवन-चरित्र अत्यन्त प्रेरणादायक है। आज हम उनके जन्म और परमेश्वर के आवाहन के विषय मे पढेगे। एली नामक पुरोहित अपने बच्चो के प्रति जागरूक नही था। उसने उन्हें मनमाना आचरण करने की छूट दे रखी थी। उसके पुत्र दुष्कर्म करने लगे। अत परमेश्वर ने एली के परिवार से पुरोहित का पद छीन लिया, और शमूएल को दे दिया।

एप्रइम पहाड़ी प्रदेश के सूफ क्षेत्र मे रामाह नगर था। इस नगर मे एक मनुष्य रहता था। उसका नाम एलकानाह था। उसके पिता का नाम यरोहाम, और दादा का नाम एलीहू था। उसका परदादा तोहू था, जो एप्रइम प्रदेश के निवासी सूफ का पुत्र था। एलकानाह की दो पत्नियां थीं उनमे से पहली का नाम हन्नाह, और दूसरी का नाम पनिन्नाह था। पनिन्नाह को सन्तान उत्पन्न हुई। पर हन्नाह को कोई सन्तान उत्पन्न नही हुई।

एलकानाह स्वर्गिक सेनाओ के प्रभु की वन्दना करने तथा उसको बलि चढ़ाने के लिए अपने नगर से शिलोह को प्रतिवर्ष जाता था। शिलोह मे एली के दो पुत्र, होफ्नी और पीनहास, प्रभु के पुरोहित थे। जब एलकानाह बलि चढ़ाता तब वह अपनी पत्नी पनिन्नाह और उसके पुत्र-पुत्रियो को बलि-पशु के मास के अनेक टुकड़े देता था। यद्यपि वह हन्नाह से प्रेम करता था तो भी वह उसे बलि-पशु के मास का केवल एक टुकड़ा देता था, क्योकि प्रभु ने हन्नाह को सन्तान नहीं दी थी। हन्नाह की सौत उसे खूब चिढ़ाती, ताना मारती थी कि प्रभु ने उसे सन्तान नही दी। वह प्रतिवर्ष ऐसा ही करती थी। जब-जब वे प्रभु के गृह को जाते तब-तब पनिन्नाह हन्नाह को चिढ़ाती थी। हन्नाह रोती, और भोजन नहीं करती थी। तब उसका पति एलकानाह उससे पूछता, 'हन्नाह, तुम क्यो रो रही हो ? तुमने भोजन क्यो नही किया ? क्यो तुम्हारा हृदय दु खी है ? क्या मै तुम्हारे लिए दस पुत्रो से अधिक मूल्यवान नहीं हू ?'

जब वे शिलोह में खा-पी चुके तब हन्नाह उठी, और वह प्रभु के सम्मुख खड़ी हो गई। पुरोहित एली प्रभु के मन्दिर की चौखट के बाजू मे, अपने आसन पर बैठा था। दु ख के कारण

हन्नाह का प्राण कटु हो गया था। उसने प्रभु से प्रार्थना की। तत्पश्चात् वह फूट-फूट कर रोने लगी। उसने प्रभु से यह मन्नत मानी। उसने कहा, 'हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु! यदि तू अपनी सेविका की पीड़ा पर निश्चय ही दृष्टि करेगा, मेरी सुध लेगा, और मुझे, अपनी सेविका को एक पुत्र प्रदान करेगा तो मैं उसे जीवन भर के लिए प्रभु की सेवा में अर्पित कर दूंगी। उसके सिर पर उस्तुरा कभी नहीं फेरा जाएगा।'

जब हन्नाह प्रभु के सम्मुख पर्याप्त समय तक प्रार्थना कर रही थी तब एली उसके ओठों को ध्यान से देख रहा था। हन्नाह हृदय में बात कर रही थी। केवल उसके ओठ हिल रहे थे, पर उसकी आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। अत: एली ने समझा कि वह शराबी है। एली ने उससे कहा, 'तुम कब तक नशे में रहोगी? अंगूर के रस को अपने पास से दूर करो।' हन्नाह ने उत्तर दिया, 'नहीं, मेरे स्वामी, मैं ऐसी स्त्री हूं, जिसके दिन कठिनाई से बीत रहे हैं। न मैंने अंगूर का रस पीया है, और न शराब। मैं प्रभु के सम्मुख अपना हृदय उंडेल रही थी। कृपया मुझे, अपनी सेविका को बदमाश स्त्री मत समझिए। मैं अपनी चिन्ता और चिढ़ की अधिकता के कारण अब तक बात करती रही।' एली ने कहा, 'शान्ति से जाओ। जो वस्तु तुमने इस्राएल के परमेश्वर से मांगी है, वह तुम्हें प्रदान करे।' हन्नाह ने कहा, 'आपकी सेविका पर, आपकी कृपा-दृष्टि बनी रहे!' यह कहकर वह अपने मार्ग पर चली गई। वह भोजन-कक्ष में आई। उसने अपने पति के साथ भोजन किया। इसके बाद उसने फिर कभी मुंह नहीं लटकाया।

वे सबेरे सोकर उठे। उन्होंने प्रभु के सम्मुख झुककर वन्दना की। तत्पश्चात् वे रामाह नगर को, अपने घर लौट गए।

एलकानाह ने अपनी पत्नी हन्नाह से सहवास किया। प्रभु ने हन्नाह की सुधि ली। वह गर्भवती हुई, और यथा-समय उसने एक पुत्र को जन्म दिया। उसने अपने पुत्र का नाम 'शमूएल'* रखा। वह कहती थी, 'क्योंकि मैंने इसको प्रभु से मांगा था।'

एलकानाह अपने परिवार के साथ प्रभु को वार्षिक बलि चढ़ाने तथा अपनी मन्नत पूरी करने के लिए शिलोह गया। परन्तु हन्नाह नहीं गई। उसने अपने पति से कहा, 'जब बच्चा दूध पीना छोड़ देगा तब मैं उसको लाऊंगी कि वह प्रभु के मुख के दर्शन कर सके, और वहां सदा के लिए रह जाए।' उसके पति एलकानाह ने उससे कहा, 'जो कार्य तुम्हारी दृष्टि में उचित प्रतीत हो, वही करो। जब तक तुम बच्चे का दूध नहीं छुड़ा दोगी तब तक यहीं ठहरना। प्रभु तुम्हारे वचन को पूर्ण करे।'** अत: हन्नाह घर पर ठहर गई। जब तक बालक ने दूध पीना नहीं छोड़ा तब तक वह उसको दूध पिलाती रही।

जब हन्नाह ने बालक का दूध छुड़ाया तब वह उसको लेकर शिलोह गई। वह अपने साथ तीन वर्षीय एक बछड़ा, दस किलो आटा और एक कुप्पा अंगूर का रस ले गई। वह बालक को शिलोह में प्रभु के गृह में लाई। बालक उसके साथ था। तत्पश्चात् पशु वध करनेवालों ने बछड़े का वध किया। हन्नाह एली के पास आई। उसने कहा, 'ओ मेरे स्वामी, आपके जीवन की सौगन्ध! मेरे स्वामी, मैं वही स्त्री हूं, जिसने यहां, आपके पास खड़ी होकर प्रभु से प्रार्थना की थी। मैंने इस बालक के सम्बन्ध में प्रार्थना की थी। जो वस्तु मैंने प्रभु से मांगी थी, वह उसने मुझे प्रदान की। इसलिए मैं इसे प्रभु को अर्पित करती हूं कि जब तक यह जीवित रहेगा, तब तक प्रभु को समर्पित रहेगा।' हन्नाह बालक को प्रभु के सम्मुख छोड़कर चली गई।

शमूएल को प्रभु का दर्शन

बालक शमूएल एली की उपस्थिति में प्रभु की सेवा करता था। उन दिनों में प्रभु का वचन दुर्लभ था। प्रभु का दर्शन कम ही मिलता था। एली की आंखें धुंधली पड़ने लगी थीं।

*ध्वनि साम्य के आधार पर इब्रानी 'शअल' (मांगना) अथवा 'शाऊल' (मांगा हुआ) और 'मेएल' (ईश्वर से), यद्यपि शब्द की व्युत्पत्ति की दृष्टि से हन्नाह का कथन शुद्ध नहीं है।

**अपने वचन को

व वह स्पष्ट देख नहीं सकता था।

एक दिन वह अपने स्थान में सो रहा था। परमेश्वर का दीपक अभी बुझा नहीं था। शमूएल प्रभु के मन्दिर में, जहां परमेश्वर की मंजूषा थी, सो रहा था। तब प्रभु ने शमूएल को पुकारा, 'शमूएल! शमूएल!' उसने उत्तर दिया, 'आज्ञा दीजिए, मैं प्रस्तुत हूं।' वह दौड़कर एली के पास गया। उसने एली से पूछा, 'आपने मुझे बुलाया? आज्ञा दीजिए, मैं प्रस्तुत हूं।' एली ने शमूएल से कहा, 'मैंने तुझे नहीं बुलाया। जा! फिर सो जा!' अतः शमूएल जाकर सो गया। प्रभु ने पुनः पुकारा, 'शमूएल!' शमूएल उठा। वह एली के पास गया। उसने पूछा, 'आपने मुझे बुलाया? आज्ञा दीजिए, मैं प्रस्तुत हूं।' पर एली ने कहा, 'पुत्र, मैंने तुझे नहीं बुलाया। जा! फिर सो जा!' शमूएल को प्रभु का अनुभव अब तक नहीं हुआ था। प्रभु का वचन अब तक उस पर प्रकट नहीं किया गया था। प्रभु ने तीसरी बार शमूएल को पुनः पुकारा। शमूएल उठा। वह एली के पास गया। उसने पूछा, 'आपने मुझे बुलाया? आज्ञा दीजिए, मैं प्रस्तुत हूं।' अब एली की समझ में आया कि प्रभु इस लड़के को बुला रहा है। अतः एली ने शमूएल से कहा, 'जा! फिर सो जा! यदि वह तुझे फिर बुलाएगा तो तू यह कहना "प्रभु, बोल, तेरा सेवक, मैं सुन रहा हूं।"' अतः शमूएल चला गया। वह अपने स्थान में सो गया।

तब प्रभु आया। वह उसके समीप खड़ा हो गया। उसने पहले के समान शमूएल को पुकारा, 'शमूएल! शमूएल!' शमूएल ने उत्तर दिया, 'बोल, तेरा सेवक, मैं सुन रहा हूं।' प्रभु ने शमूएल से कहा, 'मैं इस्राएल में ऐसा कार्य करनेवाला हूं, जिसको सुनकर श्रोताओं के दोनों कान झनझना जाएंगे। उस दिन मैं उन सब बातों को आरम्भ से अन्त तक पूर्ण करूंगा, जो मैंने एली के परिवार के विषय में कही हैं। तू उसे यह बात बताएगा कि मैं उसके परिवार को स्थाई रूप से दण्डित कर रहा हूं, क्योंकि वह अपने पुत्रों के अधर्म को जानता था कि वे परमेश्वर की निन्दा कर रहे हैं, फिर भी उसने उन्हें नहीं रोका! इसलिए मैं एली के परिवार के सम्बन्ध में यह शपथ खाता हूं कि एली के परिवार के अधर्म का प्रायश्चित न बलि और न भेंटों के चढ़ाने से कभी हो सकेगा।'

शमूएल सबेरे तक लेटा रहा। तत्पश्चात् उसने प्रभु-गृह के द्वार खोले। शमूएल एली को दर्शन के विषय में बताने से डर रहा था। एली ने शमूएल को बुलाया। उसने शमूएल से कहा, 'मेरे पुत्र, शमूएल!' शमूएल ने उत्तर दिया, 'आज्ञा दीजिए, मैं प्रस्तुत हूं।' एली ने पूछा, 'उसने तुझ से क्या बात कही? वह मुझ से मत छिपा। जो बातें उसने तुझ से कही हैं, यदि तू उनमें से एक बात भी मुझ से छिपाएगा तो प्रभु तेरे साथ कठोर से कठोर व्यवहार करे!' अतः शमूएल ने सब बातें उसको बता दीं, और उससे कुछ नहीं छिपाया। एली ने कहा, 'वह प्रभु था! जो उसकी दृष्टि में उचित है, वही वह करे!'

१ आज की कहानी में भले और बुरे के प्रति परमेश्वर का कौन-सा दृष्टिकोण हम पाते हैं?

२. अध्याय ३ . १ में हम पढ़ते हैं कि उन दिनों में परमेश्वर का सन्देश (वचन) दुर्लभ था। परमेश्वर उन दिनों में इस्राएलियों को अपना सन्देश क्यों नहीं देता था?

२५. आदर्श राजा दाऊद

(१ शमूएल १६ . १–२३)

नबी शमूएल ने इस्राएली राष्ट्र के प्रथम राजा शाऊल को चुना था, और

उसको गद्दी पर बैठाया था। राजा शाऊल अपने रा[illegible] मे धार्मिक राजा था। किन्तु शीघ्र ही वह परमेश्वर से विमुख हो गया, दुष्कर्म करने लगा। अत परमेश्वर की इच्छा से एक [illegible] उसका नाम था—दाऊद। राजा दाऊद पुराने नियम [illegible] का सर्वोत्तम राजा माना जाता है। इसी राजा के राजवश से [illegible] वचन के अनुसार राजाओ के राजा यीशु को प्रकट किया ।

प्रभु ने शमूएल से कहा, 'जब मैंने शाऊल को इस्राएलियो के राजा के रूप मे [illegible] कर दिया है तब तू कब तक उस के लिए शोक करता रहेगा ? कुप्पी मे तेल भर और [illegible] मैं तुझे बेतलहम नगर के रहनेवाले यिशय के पास भेजूगा। मैने उसके पुत्रो मे [illegible] अपने लिए राजा नियुक्त किया है।' शमूएल ने उत्तर दिया, 'मै कैसे जा सकता हू ? [illegible] शाऊल यह सुनेगा तो वह मुझे मार डालेगा।' परन्तु प्रभु ने कहा, 'तू अपने साथ एक [illegible] कलोर लेना और यह कहना "मै प्रभु को इसकी बलि चढाने के लिए आया हू।" तू [illegible] के लिए यिशय को निमन्त्रण देना। तब जो कार्य तुझे करना होगा, वह मै तुझे बताऊ[illegible] जिस व्यक्ति का नाम मै तुझे बताऊगा तू उसको मेरे लिए अभिषिक्त करना।' [illegible] प्रभु के वचन के अनुसार कार्य किया। वह बेतलहम नगर मे आया। नगर के धर्मवृद्ध [illegible] से कापने लगे। वे शमूएल से भेट करने को आए। उन्होने पूछा, 'क्या आप मित्रभाव [illegible] आए है ?' शमूएल ने उत्तर दिया, 'हा, मित्रभाव से। मै प्रभु के लिए बलि [illegible] से आया हू। तुम अपने-आप को शुद्ध करो, और बलि चढाने के लिए मेरे साथ चलो।' [illegible] शमूएल ने यिशय और उसके पुत्रो को शुद्ध किया और उन्हे बलि के लिए निमन्त्रित कि[illegible]

वे आए। शमूएल ने यिशय के पुत्र एलीआब को देखा। शमूएल ने हृदय मे [illegible] 'निस्सन्देह ! प्रभु के सम्मुख उसका अभिषिक्त राजा खडा है।' परन्तु प्रभु ने शमूएल [illegible] कहा, 'तू उसके बाहरी रूप-रग और ऊचे कद पर ध्यान मत दे। मैने उसे अस्वीकार किया [illegible] जिस दृष्टि से मनुष्य देखता है, उस दृष्टि से मै नही देखता। मनुष्य व्यक्ति के बाहरी रूप र[illegible] को देखता है, पर मै उसके हृदय को देखता हू।' तत्पश्चात् यिशय ने अबीनादब को बुलाया [illegible] उसने उसे शमूएल के सामने भेजा। शमूएल ने कहा, 'प्रभु ने इसे भी नही चुना है।' यिशय ने [illegible] शम्माह को भेजा। शमूएल ने कहा, 'प्रभु ने इसे भी नही चुना है।' इस प्रकार यिशय ने अपने [illegible] सात पुत्र शमूएल के सामने भेजे। परन्तु शमूएल ने यिशय से कहा, 'प्रभु ने इन्हे नहीं चु[illegible] है।' तब शमूएल ने यिशय से पूछा, 'क्या तुम्हारे सब पुत्र यहा है ?' यिशय ने उत्तर दिया, 'सब से छोटा पुत्र अभी शेष है। पर, देखिए, वह भेड-बकरियो की देख-भाल कर रहा है।' शमूएल ने यिशय से कहा, 'किसी को भेजकर उसको ले आओ। जब तक वह नही आए[illegible] तब तक हम भोजन के लिए नही बैठेगे।' अत यिशय ने किसी को भेजा और उसे भीतर ले आया। उसमे किशोरावस्था की ललाई झलकती थी। उसकी आकर्षक आखे थी। [illegible] देखने मे सुन्दर था। प्रभु ने शमूएल से कहा, 'उठ, इसे अभिषिक्त कर। यह वही है।' त[illegible] शमूएल ने कुप्पी का तेल लिया, और उसने भाइयो के मध्य मे उसका अभिषेक किया। प्रभु का आत्मा वेगपूर्वक दाऊद पर उतरा, और उस दिन से उसमे निवास करने लगा। शमूएल उठा। वह रामाह नगर को चला गया।

सितार-वादक दाऊद

प्रभु का आत्मा शाऊल को छोडकर चला गया। तब प्रभु की ओर से एक बुरी आत्मा उसमे समा गई। शाऊल के सेवको ने उससे कहा, 'देखिए, परमेश्वर की ओर से एक बुरी आत्मा आप मे समाई हुई है। अब, स्वामी, अपने सेवको को आदेश दीजिए। हम, जो आप[illegible]

[illegible] 'बैल'

...वा मे उपस्थित है, एक ऐसे मनुष्य को ढूढेगे, जो सितार बजाना जानता है। जब परमेश्वर ...ी ओर से बुरी आत्मा आप पर उतरेगी तब वह अपने हाथ से सितार बजाएगा, और आप ...वस्थ हो जाएगे।' शाऊल ने अपने सेवको को यह आदेश दिया, 'मेरे लिए एक अच्छे सितार-...ादक का प्रबन्ध करो, और उसे मेरे पास लाओ।' एक युवक ने उसे उत्तर दिया, 'मैने ...ैतलहम नगर के रहनेवाले यिशय के एक पुत्र को देखा है। वह सितार बजाना जानता है। ...ह साहसी है। वह योद्धा है। वह बात करने मे चतुर है। उसका रूप-रग सुन्दर है। इसके अतिरिक्त प्रभु उसके साथ है।' अत शाऊल ने यिशय के पास दूत भेजे और यह कहा, 'तुम अपने पुत्र दाऊद को जो भेड़-बकरियो के साथ रहता है, मेरे पास भेजो।' यिशय ने पाच ...ोटिया, अगूर के रस से भरी एक मशक तथा बकरी का एक बच्चा लिया, और उनको अपने पुत्र दाऊद के हाथ से शाऊल के पास भेज दिया। दाऊद शाऊल के पास आया। वह उसकी सेवा करने लगा। शाऊल उससे बहुत प्रेम करता था। दाऊद उसका शस्त्रवाहक* बन गया। शाऊल ने यिशय को दूत के हाथ यह सन्देश भेजा, 'दाऊद को मेरी सेवा करने दो। उसने मेरी कृपा-दृष्टि प्राप्त की है।' जब परमेश्वर की ओर से बुरी आत्मा शाऊल पर उतरती थी, तब दाऊद सितार लेता और उसको अपने हाथ से बजाता था। यो शाऊल को आराम मिलता, और वह स्वस्थ हो जाता था। बुरी आत्मा उसको छोड़कर चली जाती थी।

१ दाऊद कैसा दिखाई देता था?

२ परमेश्वर ने दाऊद को कौन-सा विशेष वरदान दिया था? (देखो १ शमूएल १६ १३) इस वरदान का क्या अर्थ है? क्या हम भी परमेश्वर से यह वरदान पा सकते है? कैसे?

२६. दाऊद और गोलियत

(१ शमूएल १७ १–५१)

राजा बनने के पहले दाऊद को एक अवसर मिला था जब वह इस्राएली समाज को दिखा सकता था कि वह बहुत बहादुर, साहसी और बुद्धिमान है। उस समय वह किशोर था। उसकी उम्र बहुत कम थी।

इस्राएलियो के दुश्मनों मे पलिश्ती जाति का एक महावीर, योद्धा था। उसका नाम गोलयत था। उसको देखते ही इस्राएलियो का साहस खत्म हो गया। किन्तु किशोर दाऊद ने आगे बढकर गोलियत का सामना किया; क्योकि परमेश्वर उसके साथ था। परमेश्वर पर उसको अटूट विश्वास था।

पलिश्तियो ने युद्ध के लिए अपने सैन्य-दल एकत्र किए। वे सोकोह नगर मे, जो यहूदा प्रदेश मे है, एकत्र हुए। उन्होंने एफस-दम्मीम क्षेत्र, सोकोह और अजेकाह नगर के मध्य पड़ाव डाला। अत शाऊल और इस्राएल देश के समस्त पुरुष एकत्र हुए। उन्होंने एलाह घाटी मे पड़ाव डाला। उन्होने पलिश्तियो का सामना करने के लिए युद्ध की व्यूह-रचना कर ली। पलिश्ती सैनिक पहाड की एक ओर खड़े थे, और इस्राएली सैनिक पहाड की दूसरी ओर। उनके मध्य एक घाटी थी।

तब पलिश्ती पड़ाव से आक्रमण करनेवाला एक योद्धा निकला। उसका नाम गोलयत था। वह गत नगर का रहनेवाला था। उसकी ऊचाई प्राय तीन मीटर** थी। उसके सिर पर कास्य का शिरस्त्राण था। वह शरीर पर कास्य का कवच पहिने हुए था। कवच का भार

*अर्थात् हथियार उठाकर ले जानेवाला

**अर्थात् 'छ हाथ एक बीता' अथवा 'साढे नौ फुट'

गलावन किलो था। उसके पैरों में भी कांस्य का कवच था। उसके कन्धों पे नेजा बंधा था। उसके भाले का डण्डा करघे के डण्डे के समान था। भार प्राय साल किलो था। गोलयत का ढालवाहक उसके आगे इस्राएली सैनिकों की पंक्तियों के सम्मुख खड़ा हुआ। उसने उन्हें पुकारा, व्यूह रचना क्यों की? क्या मैं पलिश्ती सैनिक नहीं हूँ? तुम अपने में से एक पुरुष को चुनो। वह पहाड़ से उतरकर मेरे पास आए। लड़ सकेगा, और मुझे मार देगा तो हम-पलिश्ती तुम्हारे गुलाम हो जाएंगे। पालु उसे पराजित करूंगा और उसको मार डालूंगा तो तुम हमारे गुलाम होगे, गुलामी करोगे।' पलिश्ती योद्धा ने आगे कहा, 'मैं आज इस्राएली सैनिकों तुम मुझे अपना एक पुरुष दो। मैं और वह द्वन्द्व-युद्ध करेंगे।' जब शाऊल और इस्राएल के पुरुषों ने पलिश्ती योद्धा की ये बातें सुनीं तब वे हिम्मत हार गए। वे बहुत डर गए।

दाऊद यिशय का पुत्र था। यिशय यहूदा प्रदेश के बेतलहम नगर का रहनेवाला वह एप्राह जिले का निवासी था यिशय के आठ पुत्र थे। वृद्ध हो गया था। उसके तीन बड़े पुत्र शाऊल के साथ युद्ध में गए थे। उसके इन तीन के नाम, जो युद्ध में गए थे ये हैं ज्येष्ठ पुत्र एलीआब, उसके बाद का अबीनादब, पुत्र शम्माह। दाऊद सबसे छोटा पुत्र था। उसके तीन बड़े भाई शाऊल के पीछे गए। दाऊद बेतलहम नगर में अपने पिता की भेड़-बकरियों की देखभाल करने के लिए शाऊल के पास से लौटकर आता था। पलिश्ती योद्धा चालीस दिन तक, सबेरे और को, इस्राएली सेना के समीप आता और खड़ा हो जाता था।

एक दिन यिशय ने अपने पुत्र दाऊद से कहा, 'अपने भाइयों के लिए यह दस किलो भुना हुआ अनाज और ये दस रोटियां ले, और तुरन्त उनके पड़ाव में जा। उनके कमान-अधिकारी के लिए पनीर की ये दस टिकियां भी ले जा। अपने भाइयों से उनका कुशल-क्षेम पूछना, और उनकी कुशलता का प्रमाण-चिह्न लाना। वे शाऊल और समस्त इस्राएलियों के साथ एलाह घाटी में पलिश्तियों से युद्ध कर रहे हैं।'

अत दाऊद सबेरे उठा। उसने भेड़-बकरियां रखवाले के पास छोड़ीं। उसने सामान उठाया और चला गया, जैसा उसके पिता यिशय ने आदेश दिया था। वह पड़ाव में आया। सेना युद्ध-भूमि की ओर जा रही थी। सैनिक युद्ध के नारे लगा रहे थे।

इस्राएली और पलिश्ती सेनाएं युद्ध के लिए एक-दूसरे के सामने पंक्तिबद्ध खड़ी हो गईं। दाऊद अपनी वस्तुएं सामान के रखवाले के हाथ में छोड़कर युद्ध-भूमि की ओर दौड़ा। वह वहां पहुंचा। उसने अपने भाइयों से उनका कुशल-क्षेम पूछा। जब वह उनसे बात कर रहा तब तब गत नगर का रहनेवाला पलिश्ती योद्धा, जिसका नाम गोलयत था, पलिश्ती सेना के पड़ाव से निकलकर आया। वह पहले के समान बोलने लगा। दाऊद ने यह सुना।

जब इस्राएली सैनिकों ने पलिश्ती योद्धा को देखा तब वे सब उसके सामने से भाग गए। वे बहुत डर गए। इस्राएली सैनिकों ने कहा, 'क्या तुमने इस पुरुष को देखा है, जो आ रहा है? निस्सन्देह यह इस्राएलियों को चुनौती देने आया है। जो व्यक्ति द्वन्द्व-युद्ध में इसे मार डालेगा, उसको राजा धन-सम्पत्ति से माला-माल कर देगा। राजा उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह करेगा, और उसके पिता के परिवार को कर से मुक्त कर देगा।' दाऊद ने अपने पास खड़े सैनिकों से पूछा, 'जो व्यक्ति इस पलिश्ती योद्धा को मार डालेगा, और इस्राएली जाति के सम्मुख से अपमान-चिह्न को दूर करेगा, उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाएगा? यह खतना-रहित पलिश्ती कौन है, जो जीवन्त परमेश्वर के सैनिकों को चुनौती दे रहा है?' सैनिकों ने उसे वही उत्तर दिया, 'जो व्यक्ति द्वन्द्व-युद्ध में इसे मार डालेगा, उसके साथ यह व्यवहार किया जाएगा।'

जब दाऊद सैनिकों से बात कर रहा था तब उसके बड़े भाई एलीआब ने उसको सुन

दिया। उसका क्रोध दाऊद के प्रति भड़क उठा। उसने कहा, 'तू यहां क्यों आया है? चन्द भेड़-बकरियों को निर्जन इलाके में किसके पास छोड़ा है? मैं तेरी ढिठाई को, तेरे दुष्ट हृदय को जानता हूं। तू युद्ध देखने के लिए आया है।' दाऊद ने कहा, 'अब मैंने क्या किया? क्या मैं बात भी न करूं?' दाऊद उसके पास से मुड़कर दूसरे सैनिक के सम्मुख खड़ा हुआ। दाऊद ने उससे वही प्रश्न पूछा। उसने तथा अन्य सैनिकों ने दाऊद को पहले-जैसा उत्तर दिया।

परन्तु सैनिकों ने दाऊद की बातों पर ध्यान दिया, और उनको ज्यों का त्यों शाऊल के सम्मुख दुहरा दिया। शाऊल ने दूत भेजकर दाऊद को बुलाया। दाऊद ने शाऊल से कहा, 'मेरे स्वामी का हृदय पलिश्ती योद्धा के कारण निराश न हो। मैं, आपका सेवक, उस पलिश्ती योद्धा से द्वन्द्व-युद्ध करने जाऊंगा।' शाऊल ने दाऊद से कहा, 'तुम युद्ध-भूमि जाकर पलिश्ती योद्धा से युद्ध नहीं कर सकते। तुम अभी लड़के हो। परन्तु वह बचपन से ही अनुभवी सैनिक है।' दाऊद ने शाऊल से कहा, 'मैं आपका सेवक, अपने पिता की भेड़-बकरियों की देखभाल करता था। जब सिंह अथवा भालू आता और रेवड़ में से मेमना उठा ले जाता तब मैं उसके पीछे-पीछे जाता, उसका वध करता, और उसके मुंह से मेमने को छुड़ाता था। यदि वह मुझ पर हमला करता तो मैं उसके जबड़े के बालों को पकड़ता और उस पर प्रहार करता था। इस प्रकार मैं उसको मार डालता था। मैंने, आपके सेवक ने, सिंह और भालू दोनों को मारा है। खतना-रहित पलिश्ती भी उनके समान मारा जाएगा, क्योंकि इसने जीवन्त परमेश्वर के सैनिकों को चुनौती दी है।' दाऊद ने आगे कहा, 'जिस प्रभु ने मुझे सिंह के पन्जे से, भालू के पन्जे से बचाया था, वह मुझे इस पलिश्ती योद्धा के हाथ से भी बचाएगा।' शाऊल ने दाऊद से कहा, 'जाओ! प्रभु तुम्हारे साथ हो!' तब शाऊल ने उसे अपना बख्तर पहिनाया। उसने दाऊद के सिर पर कांस्य का शिरस्त्राण रखा। उसके शरीर पर कवच पहिनाया। उसने दाऊद के बख्तर के नीचे अपनी तलवार बांधी। तब दाऊद ने चलने का प्रयत्न किया। परन्तु वह चल न सका, क्योंकि उसे इन शस्त्रों का अभ्यास न था। उसने शाऊल से कहा, 'मैं इन शस्त्रों को पहिनकर चल नहीं सकता। मुझे इनका अभ्यास नहीं है।' अतः दाऊद ने उनको उतार दिया।

दाऊद ने अपनी लाठी अपने हाथ में ली। उसने नदी के तट से पांच चिकने पत्थर चुने, और उनको चरवाहे की थैली में, अपने झोले में रख लिया। उसके हाथ में उसका गोफन था। वह पलिश्ती योद्धा के समीप पहुंचा।

पलिश्ती योद्धा दाऊद की ओर गया। वह उसके पास पहुंचा। पलिश्ती योद्धा का शस्त्र-वाहक उसके आगे-आगे था। उसने दृष्टि ऊपर की, और दाऊद को देखा। उसने दाऊद को हेय समझा, क्योंकि दाऊद अभी लड़का ही था। उसके, दाऊद के मुख से किशोरावस्था की ललाई झलकती थी। दाऊद देखने में सुन्दर था। पलिश्ती योद्धा ने दाऊद से कहा, 'क्या मैं कुत्ता हूं जो तू डण्डा लेकर मेरे पास आया है?' तब वह अपने देवताओं के नाम से दाऊद को शाप देने लगा। उसने दाऊद से कहा, 'आ, मेरे पास आ! मैं तेरा मांस आकाश के पक्षियों और जंगल के पशुओं को खाने के लिए दूंगा।' दाऊद ने पलिश्ती योद्धा को उत्तर दिया, 'तू तलवार, भाला और नेजा के साथ मुझसे लड़ने आया है। पर मैं स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु, इस्राएली सैनिकों के परमेश्वर के नाम से जिसको तूने चुनौती दी है, तुझसे लड़ने आया हूं। आज प्रभु तुझे मेरे हाथ में सौंप देगा। मैं तुझ पर प्रहार करूंगा। तेरे सिर को धड़ से अलग करूंगा। आज मैं तेरी लोथ और पलिश्ती पड़ाव के सैनिकों की लोथ आकाश के पक्षियों को और धरती के वन-पशुओं को खाने के लिए दूंगा। तब समस्त पृथ्वी को ज्ञात होगा कि इस्राएली राष्ट्र का अपना परमेश्वर है। इस धर्मसभा को ज्ञात होगा कि प्रभु केवल तलवार और भाले से विजय नहीं प्रदान करता। प्रभु युद्ध का भी प्रभु है। वह [illegible] हाथ में सौंप देगा।'

पलिश्ती योद्धा द्वन्द्व-युद्ध के लिए तैयार हुआ। वह दाऊद का सामना करने
उसकी ओर गया। वह समीप आया। दाऊद ने सैनिक-पंक्ति छोड़ी। ४९
मुकाबला करने के लिए उसकी ओर दौड़ा। उसने थैली में अपना हाथ डाला।
पत्थर निकाला। उसको गोफन में रखा, और पलिश्ती योद्धा की ओर फेंका।
माथे में धस गया। वह मुंह के बल भूमि पर गिर गया।

यों दाऊद ने गोफन और पत्थर से पलिश्ती योद्धा पर विजय प्राप्त की।
किया और उसको मार डाला। दाऊद के हाथ में तलवार नहीं थी।
ओर दौड़ा। वह उसके पास खड़ा हुआ। उसने उसकी तलवार को पकड़ा। उसको म्यान
बाहर निकाला, और उससे पलिश्ती योद्धा का सिर काट दिया। यों उसे मार डाला।
जब पलिश्ती सैनिकों ने देखा कि उनका योद्धा मार डाला गया, तब वे भाग गए।

१ इस्राएली सैनिकों ने गोलयत से लड़ने से क्यों इन्कार कर दिया?
२. क्या दाऊद ने गोलयत के वध का श्रेय स्वयं लिया?
कहाँ से प्राप्त हुई? (देखो १ शमूएल १७ : ४५, ४६)

२७. इस्राएल देश का राजा दाऊद

(२ शमूएल ५ : १–५, १ इतिहास १७ : १–२७)

पिछले पृष्ठों में हमने पढ़ा है कि नबी शमूएल ने इस्राएल देश का राजा बनने के लिए दाऊद का अभिषेक किया था। यह कार्य उन्होंने परमेश्वर के आदेश से किया था। किन्तु उस समय इस्राएल देश पर राजा शाऊल राज्य कर रहा था, जो परमेश्वर की कृपा दृष्टि से वंचित हो गया था। अतः को मार डालने का प्रयत्न करने लगा। उसने दाऊद को सताया, उसको पकड़ने की कोशिश की। पर उसको सफलता हाथ न लगी; क्योंकि परमेश्वर दाऊद की रक्षा कर रहा था। कई बार दाऊद को अवसर मिला कि वह चाहे तो राजा शाऊल की हत्या कर दे। किन्तु उसने ऐसा न किया। क्योंकि दाऊद जानता था कि राजा शाऊल कितना ही दुष्कर्मी क्यों न हो, फिर भी वह इस्राएल देश का राजा है, और राजा की हत्या करना परमेश्वर की दृष्टि में अनुचित कार्य है। अतः दाऊद दुःख-तकलीफ सहता रहा, और धीरज रखे रहा कि स्वयं परमेश्वर राजा शाऊल को इस्राएल देश के सिंहासन से उतारेगा, और उसके स्थान पर उसको प्रतिष्ठित करेगा।

प्रस्तुत बाइबिल पाठ में दो कहानियां संग्रहीत हैं। पहली में दाऊद का इस्राएल देश का राजा बनने का विवरण है; और दूसरी कहानी में परमेश्वर के वचन का उल्लेख है कि वह राजा दाऊद के राजवंश में से संसार के उद्धारकर्ता को उत्पन्न करेगा।

तब इस्राएल के सब कुल के लोग हेब्रोन नगर में दाऊद के पास आए। उन्होंने कहा,
'सुनिए, हम आपकी ही हड्डी और मांस हैं। पहले भी, जब शाऊल हमारे राजा थे, आप ही
इस्राएली सेना को युद्ध में ले जाने और वापस लाने में उसका नेतृत्व करते। प्रभु ने आपसे
कहा है, "तू मेरे निज लोग, इस्राएलियों का मेषपाल होगा। तू ही इस्राएली राष्ट्र का शासक
होगा।"' अतः इस्राएली कुलों के सब धर्मवृद्ध हेब्रोन नगर में राजा दाऊद के पास आए।
दाऊद ने उनके साथ हेब्रोन नगर में प्रभु के सम्मुख सन्धि की। उन्होंने दाऊद को

राएल प्रदेश का भी राजा बनाने के लिए उसका अभिषेक किया। जब दाऊद ने राज्य
ना आरम्भ किया तब वह तीस वर्ष का था। उसने चालीस वर्ष तक राज्य किया। उसने
ोन नगर में यहूदा प्रदेश पर साढ़े सात वर्ष तक राज्य किया। उसने यरूशलम नगर में
मस्त इस्राएल प्रदेश तथा यहूदा प्रदेश पर तैंतीस वर्ष तक राज्य किया।

ऊद के साथ परमेश्वर की वाचा

दाऊद अपने महल में रहने लगा। उसने एक दिन नबी नातान से यह कहा, 'देखिए
मो देवदार के महल में रहता हूं, परन्तु प्रभु की वाचा-मञ्जूषा तम्बू में परदों के मध्य पड़ी
!' तब नातान ने दाऊद से कहा, 'जो कुछ आपके हृदय में है, उसको कर डालिए, क्योंकि
रमेश्वर आपके साथ है।'

उसी रात को प्रभु का यह वचन नातान को सुनाई दिया: 'जा, और मेरे सेवक दाऊद
यह कह, "प्रभु यों कहता है, क्या तू मेरे निवास के लिए भवन बनाएगा? जिस दिन से
ने इस्राएली समाज को मिस्र देश से बाहर निकाला, उस दिन से आज तक मैं भवन में नहीं
हा। मैं एक तम्बू से दूसरे तम्बू में, एक निवास-स्थान से दूसरे निवास-स्थान में, यात्रा करता
हा। जहां-जहां मैंने इस्राएली समाज के साथ यात्रा की, क्या मैंने इस्राएलियों के शासकों से,
जिन्हें मैंने ही अपने निज लोग इस्राएलियों की देखभाल के लिए नियुक्त किया था, कभी यह
हा था, 'तुमने मेरे लिए देवदार का भवन क्यों नहीं बनवाया?'" अतः अब तू मेरे सेवक
दाऊद से यों कहना, "स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है: मैंने तुझे चरागाह से निकाला।
तुझे भेड़-बकरियों के पीछे जाने से रोका कि तुझे अपने निज लोग इस्राएलियों का शासक
बनाऊं। जहां-जहां तू गया, मैं तेरे साथ रहा। मैंने तेरे शत्रुओं को नष्ट किया। अब मैं तेरे
नाम को पृथ्वी के महान नामों के सदृश महान करूंगा। मैं अपने निज लोग इस्राएलियों के
लिए एक स्थान निर्धारित करूंगा। मैं उन्हें वहां बसाऊंगा जिससे वे अपने स्थान में निवास
करेंगे और उन्हें फिर नहीं सताया जाएगा। कुटिल व्यक्ति फिर उन्हें पीड़ित नहीं करेंगे,
जैसे वे पहले करते थे, जब मैंने अपने निज लोग इस्राएलियों के लिए शासक नियुक्त किए थे।
मैं तेरे सब शत्रुओं से तुझे शान्ति प्रदान करूंगा। इसके अतिरिक्त मैं प्रभु, तुझ पर यह बात
प्रकट करता हूं: मैं तुझे स्वयं 'भवन' बनाऊंगा। जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी और तू
अपने पूर्वजों के संग सो जाएगा, तब मैं तेरे पश्चात् तेरे एक वंशज को, तेरे एक पुत्र को उत्तरा-
धिकारी नियुक्त करूंगा, और उसके राज्य को सुदृढ़ बनाऊंगा। वह मेरे लिए भवन बनाएगा।
मैं उसके राजसिंहासन को सदा सर्वदा के लिए सुदृढ़ कर दूंगा। मैं उसका पिता होऊंगा और
वह मेरा पुत्र होगा। जैसे मैंने तेरे पूर्ववर्ती राजा शाऊल के प्रति करुणा करना छोड़ दिया था,
वैसे मैं उसके प्रति नहीं करूंगा। मैं उसको अपने भवन में, अपने राज्य में सुदृढ़ करूंगा और
उसका राज्य सदा-सर्वदा स्थिर रहेगा।"'

नातान ने ये सब बातें तथा यह दर्शन दाऊद को बताया।

तब दाऊद तम्बू के भीतर गया। वह प्रभु के सम्मुख बैठ गया। उसने यह प्रार्थना की,
हे प्रभु परमेश्वर, मैं और मेरे वंश का महत्व क्या है कि तूने मुझे इतना ऊंचा उठाया है।
फिर भी यह तेरी दृष्टि में कितनी छोटी बात है। हे प्रभु परमेश्वर, तूने अपने सेवक के वंश को
सुदूर भविष्य के लिए भी वचन दिया। इस प्रकार तूने मुझे मेरी भावी पीढ़ियों के दर्शन
कराए। दाऊद तुझसे और क्या कह सकता है? तूने अपने सेवक को सम्मान दिया है।
तू अपने सेवक को जानता है। हे प्रभु, अपने वचन के कारण और अपने हृदय के अनुरूप,
तूने अपने सेवक को यह सब बताया और यह महाकार्य किया। हे प्रभु, तेरे समान और कोई
ईश्वर नहीं है। तेरे अतिरिक्त और कोई परमेश्वर नहीं है। यह हमने स्वयं अपने कानों से
सुना है। तेरे निज लोग, इस्राएली राष्ट्र के समान, पृथ्वी पर और कौन राष्ट्र है? हे परमेश्वर,

उनके हितार्थ महान और आतंकपूर्ण कार्य किए थे। तूने अपने निज लोगों के सम्मुख जिन्हें तूने अपने लिए मिस्र देश से मुक्त किया था, अनेक राष्ट्रों को भगाया था। तूने लोग इस्राएलियों को स्थापित किया कि वे युगानुयुग तेरे ही निज लोग बने रहें। हे प्रभु तू उनका परमेश्वर बन गया। अब हे प्रभु जो तूने अपने सेवक और उसके वंश के लिए कहा है, उसको पूरा कर। अपने वचन के अनुसार कार्य कर। प्रभु, अपने नाम को महान कर, कि लोग उसका सदा सर्वदा गुणगान करें। तब लोग यह कहेंगे, "स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु ही इस्राएलियों का परमेश्वर है।" तब तेरे सेवक दाऊद का वंश तेरे सम्मुख बना रहे। हे मेरे परमेश्वर तूने अपने सेवक के कानों में यह बात प्रकट की है: "मैं तुझे वंश बनाऊंगा।" अतः तेरे सेवक को साहस प्राप्त हुआ और उसने तुझसे यह प्रार्थना की। हे प्रभु तू ही परमेश्वर है, तूने अपने सेवक के साथ यह भलाई करने की प्रतिज्ञा की। इसलिए अब तू प्रसन्न हो और अपने सेवक के परिवार को आशीष दे, जिससे वह तेरे सम्मुख सदा बने रहें। हे प्रभु, जिस पर तू आशीष करता है, वह सदा आशीषमय रहता है।'

१ दाऊद ने परमेश्वर से किस बात के लिए निवेदन किया?
२ परमेश्वर ने राजा दाऊद को कौन-सा वचन दिया?

२८. नबी एलीयाह का आख्यान

(१ राजा १७ : १, १८ : १–४६)

राजा दाऊद की मृत्यु के बाद उसका पुत्र सुलेमान इस्राएल देश के सिंहासन पर बैठा। राजा सुलेमान अपनी बुद्धि और धन-वैभव के लिए सारे संसार में प्रसिद्ध है। उसने परमेश्वर के लिए यरूशलम मे एक भव्य मन्दिर तथा अपने लिए एक विशाल महल बनाया था।

राजा सुलेमान की मृत्यु के बाद इस्राएल देश दो भागों मे बट गया। जैसा कि आप अबतक समझ चुके है कि इस्राएल देश मे इस्राएलियों के बारह कुल थे। बिन्यामिन और यहूदा के कुलवाले मिलकर अन्य दस कुलों से अलग हो गए। ये दस कुलवालो का राज्य देखते-देखते छिन्न-भिन्न हो गया। ये दस कुल परमेश्वर से विमुख हो गए, और पाप करने लगे। परमेश्वर ने उनको चेतावनी देने के लिए नबी भेजे कि यदि वे अपना आचरण नही सुधारेंगे तो परमेश्वर उनको उनके देश से निष्कासित कर देगा, और वे गुलाम बनकर स्वदेश से निकाल दिए जाएंगे, धरती के सतह से उनका नाम मिट जाएगा। किन्तु उन्होंने नबियों का सन्देश नहीं सुना।

ऐसे ही एक महान नबी एलियाह थे। उनको परमेश्वर ने दस कुलों को चेतावनी देने के लिए भेजा था। प्रस्तुत कहानी मे हम पढ़ते है कि नबी एलियाह अधार्मिक राजा आहाब और बअलदेवता के पुरोहितों का सामना करते हैं।

गिलआद प्रदेश मे तिश्बे नामक एक नगर था। इस नगर के रहनेवाले एलियाह ने राजा आहाब से कहा, 'जिस इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर के सम्मुख मैं सेवारत रहता हूं, उस जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! जब तक मैं नहीं कहूंगा तब तक इन वर्षों में न ओस गिरेगी और न वर्षा होगी।'

एलियाह की वापसी

अनेक दिन बीत गए। अकाल के तीसरे वर्ष परमेश्वर ने ... बात कहाई किः

, और आहाब के सम्मुख स्वयं को प्रकट कर। मैं भूमि पर वर्षा करूंगा।' अतएव एलियाह हाब के सम्मुख स्वयं को प्रकट करने के लिए गए। उस समय सामरी नगर मे भयकर काल था। एलियाह ने ओबद्याह को बुलाया। ओबद्याह राजमहल का गृह-प्रबन्धक था। प्रभु का बड़ा भक्त था। एक बार रानी ईजेबेल प्रभु के नबियो का वध कर रही थी। ओबद्याह सौ नबियो को लेकर चला गया। उसने गुफाओ मे बारी-बारी से पचास-पचास बियो को छिपाकर रखा। वहां उसने नबियो के लिए भोजन और जल की व्यवस्था की।

आहाब ने ओबद्याह से कहा, 'आओ, हम दोनो देश के समस्त जल-स्रोतो और घाटियो जाए। कदाचित हमे वहा चारा-पानी मिले, और हम घोड़ो तथा खच्चरो को मरने मे चा सके। यो हम कुछ पशुओ को नही खोएंगे।' उन्होने देश का भ्रमण करने के लिए उसको भागो मे बाटा। आहाब स्वयं एक मार्ग पर गया, और ओबद्याह दूसरे मार्ग पर गया।

जब ओबद्याह मार्ग पर था तब अचानक एलियाह की उससे भेट हुई। ओबद्याह ने लियाह को पहचान लिया। वह मुंह के बल गिरा और उनका अभिवादन किया। ओबद्याह पूछा, 'क्या आप मेरे स्वामी एलियाह है?' एलियाह ने उसे उत्तर दिया, 'हां, मै हूं। अब म जाओ, और अपने महाराज से यह कहो, "एलियाह आ गए।"' परन्तु ओबद्याह ने कहा, स्वामी, मैने क्या अपराध किया है कि आप मुझे, अपने सेवक को, महाराज आहाब के हाथ मे ौपना चाहते है? मेरा वध क्यो करवाना चाहते है? आपके जीवन्त प्रभु परमेश्वर की सौगन्ध! मैं यह सच कह रहा हूं। पृथ्वी का कोई राष्ट्र, कोई राज्य नही बचा, जहां आपको महाराज ने नही ढूढा। जब उन राष्ट्रो अथवा राज्यो ने यह कहा, "एलियाह यहा नही है!" तब महाराज ने उन्हे शपथ खिलाई और उनके मुख से यह कहलवाया कि उन्होने सचमुच आपको नही देखा है। अब आप मुझसे कह रहे है कि मैं जाऊं और अपने महाराज से यह कहूं [illegible]

[illegible] जीवित छोड़ देगा? आपका यह सेवक बचपन से ही प्रभु का भक्त है। स्वामी, क्या किसी ने आपको यह बात नही बताई? जब रानी ईजेबेल प्रभु के नबियो की हत्या कर रही थी तब मैने प्रभु के सौ नबियो को बचाया था। मैने उन्हे गुफाओ मे बारी-बारी से पचास-पचास की संख्या मे छिपाकर रखा था। मैने उनके लिए भोजन और जल की व्यवस्था की थी। अब आप मुझसे यह कह रहे है, 'जाओ, और अपने महाराज से यह कहो, 'एलियाह आ गए।'" वह मुझे मार ही डालेगे।' तब एलियाह ने कहा, 'जिस स्वर्गिक सेनाओ के प्रभु के सम्मुख मैं सेवारत रहता हूं, उस जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! मैं आज ही आहाब के सम्मुख प्रकट हूंगा।' अत ओबद्याह चला गया। वह आहाब से मिला। उसने एलियाह के विषय में उसको बताया। आहाब एलियाह से भेंट करने के लिए गया।

जब आहाब ने एलियाह को देखा तब वह एलियाह से बोला, 'ओ इस्राएल प्रदेश के संकट उत्पन्न करनेवाले एलियाह, तुम ही हो न?' एलियाह ने उत्तर दिया, 'हां मैं हूं। पर इस्राएल प्रदेश का संकट उत्पन्न करनेवाला मैं नही हूं। वरन् तुमने और तुम्हारे पितृ-कुल ने संकट उत्पन्न किया है, क्योकि तुमने प्रभु की आज्ञाओ को त्याग दिया, और बअल देवता का अनुसरण किया। अब तुम समस्त इस्राएल प्रदेश की जनता को एकत्र करो, और उनको मेरे पास कर्मेल पहाड़ पर भेजो। तुम रानी ईजेबेल के साथ राजसी भोजन करनेवाले अशेराह देवी के चार सौ और बअल देवता के साढ़े चार सौ नबियो को भी भेजना।'

कर्मेल पहाड़ की घटना

आहाब ने समस्त इस्राएली प्रदेश के लोगो को कर्मेल पहाड़ पर भेजा। उसने नबियो को भी कर्मेल पहाड़ पर एकत्र किया। एलियाह लोगो के समीप आए। एलियाह ने उनसे कहा,

'तुम कब तक दो नावों पर पैर रखे रहोगे? यदि प्रभु ही ईश्वर है, तो
यदि बअल देवता ईश्वर है तो उसका अनुसरण करो।' लोगों ने
दिया। एलियाह ने लोगों से फिर कहा, 'मैं, केवल मैं, प्रभु का नबी, जीवित बचा हूं।
देवता के साढ़े चार सौ नबी हैं। मुझे और इन नबियों को दो बैल दो। वे स्वयं एक बैल
चुनें। वे उसके टुकड़े-टुकड़े करें, और उन टुकड़ों को लकड़ी के ऊपर रखें।
नहीं सुलगाएंगे। मैं भी दूसरे बैल के साथ ऐसा ही करूंगा, और उसे
ऊपर रखूंगा। मैं भी लकड़ी में आग नहीं सुलगाऊंगा। तत्पश्चात् वे
दुहाई दें। मैं भी प्रभु के नाम की दुहाई दूंगा। जो ईश्वर अग्नि के माध्यम से उत्तर दे,
सच्चा ईश्वर है।' सब लोगों ने उत्तर दिया, 'यह उत्तम बात है।'
के नबियों से कहा, 'तुम एक बैल को स्वयं चुन लो। तुम पहले बलि तैयार करो,
बहुत हो। तुम अपने ईश्वर के नाम की दुहाई दो। पर लकड़ी में आग मत सुलगाना।'
में बअल देवता के नबियों को बैल दिया। नबियों ने उसको पकड़ा और उसकी बलि
की। वे सबेरे से दोपहर तक बअल देवता के नाम की दुहाई देते रहे। वे यह कह रहे थे,
बअल देवता, हमें उत्तर दे!' पर आवाज नहीं हुई। किसी ने उत्तर नहीं दिया। जो
उन्होंने बनाई थी, उसके चारों ओर वे नाचने-कूदते रहे। एलियाह ने दोपहर को उन
हंसी उड़ाई और यह कहा, 'और जोर से पुकारो। वह तो ईश्वर है, मनन-चिन्तन का
होगा, अथवा नित्य-क्रिया में लगा होगा। सम्भवतः वह यात्रा पर गया है।
सो रहा है, उसको जगाना चाहिए।' अतः वे जोर-जोर से पुकारने लगे। वे अपनी प्रथा
अनुसार अपना शरीर तलवार और बर्छों से गोदने लगे। उनके शरीर से रक्त बहने लगा।
दोपहर बीत गया। वे सन्ध्या समय तक, भेंट-बलि के अर्पण के समय तक प्रलाप करते रहे।
तब भी आवाज नहीं हुई। किसी ने उत्तर नहीं दिया। किसी ने उन पर ध्यान नहीं दिया।

एलियाह ने सब लोगों से कहा, 'मेरे समीप आओ।' सब लोग उनके समीप आए। जो
प्रभु की वेदी तोड़ दी गई थी, उसको एलियाह ने पुनः निर्मित किया। एलियाह ने याकूब के
बारह कुलों की संख्या के अनुसार बारह पत्थर लिए। उसी याकूब को प्रभु का यह वचन
सुनाई दिया था, 'अब से तेरा नाम इस्राएल होगा।' एलियाह ने इन पत्थरों से प्रभु के नाम
एक वेदी निर्मित की। उन्होंने वेदी के चारों ओर एक गड्ढा खोदा जो आधा मीटर गहरा
था।* तब एलियाह ने लकड़ियों को तरतीब से रख दिया। उन्होंने बैल की बलि की। उसके
टुकड़े-टुकड़े किए, और उनको लकड़ियों पर रखा। एलियाह ने कहा, 'चार घड़ों को पानी
से भरो, और उसको अग्नि-बलि तथा लकड़ियों पर उण्डेल दो।' लोगों ने ऐसा ही किया।
एलियाह ने फिर कहा, 'ऐसा ही दूसरी बार करो।' उन्होंने दूसरी बार भी किया। एलियाह
ने फिर कहा, 'ऐसा ही तीसरी बार करो।' उन्होंने तीसरी बार भी किया। पानी वेदी के
चारों ओर बहने लगा। गड्ढा भी पानी से भर गया।

सन्ध्या समय, भेंट-बलि के अर्पण के समय, नबी एलियाह वेदी के समीप आए। उन्होंने
कहा, 'हे अब्राहम, इसहाक और याकूब के प्रभु परमेश्वर, आज यह सच्चाई सब लोगों को
ज्ञात हो जाए कि इस्राएली राष्ट्र का परमेश्वर केवल तू है, और मैं तेरा सेवक हूं। ये लोग
जान लें कि जो कुछ मैंने किया है, वह सब तेरे आदेश से किया है। हे प्रभु, मुझे उत्तर दे जिससे
इन लोगों को मालूम हो जाए कि प्रभु, केवल तू परमेश्वर है, और तू ही उनके हृदय को बदल रहा
है।' तब प्रभु की अग्नि बरस पड़ी। उसने अग्नि-बलि को लकड़ियों को, पत्थरों और धूल को
भस्म कर दिया। उसने गड्ढे के पानी को सुखा दिया। जब लोगों ने यह देखा तब उन्होंने
मुंह के बल गिरकर प्रभु की वन्दना की। वे पुकारने लगे, 'निस्सन्देह, प्रभु ही ईश्वर है!
प्रभु ही ईश्वर है!' एलियाह ने लोगों से कहा, 'बअल देवता के नबियों को पकड़ो। उनके
नबी को भी भागने न देना।' लोगों ने नबियों को पकड़ लिया। एलियाह उनको कीशोन

*[illegible]

ों पर ले गए, और वहां उनका वध कर दिया।

एलियाह ने आहाब से कहा, 'अब आप जाइए, अपना उपवास तोड़िए, और भोजन कीजिए। मुझे मूसलाधार वर्षा होने का गर्जन-स्वर सुनाई दे रहा है।' अत आहाब भोजन के लिए चला गया। एलियाह कर्मेल पहाड़ के शिखर पर चढ़े। वह भूमि की ओर झुके और उन्होंने दोनों घुटनों के मध्य अपना मुख स्थित किया। फिर उन्होंने अपने सेवक से कहा, 'अब तू जा, और समुद्र की ओर देख।' सेवक गया। उसने समुद्र की ओर देखा। वह लौटा। उसने कहा 'वहां कुछ भी नहीं है।' एलियाह ने कहा, 'तू सात बार जा।' जब वह सातवीं बार लौटा तब उसने एलियाह को बताया, 'आदमी की मुट्ठी के समान गोल बादल का एक टुकड़ा समुद्र से ऊपर उठ रहा है।' एलियाह ने कहा, 'तू जा और आहाब से यह कह "आप रथ को तैयार कर तुरन्त नीचे उतरिए। अन्यथा मूसलाधार वर्षा आपको मार्ग में रोक लेगी।" कुछ क्षण पश्चात् सघन मेघ और तूफान से आकाश में अन्धकार छा गया। तब भीषण वर्षा हुई। आहाब रथ पर सवार हो यिस्राएल घाटी को चला गया।

प्रभु का बल एलियाह में था। एलियाह ने अपनी कमर कसी, और वह आहाब के आगे-आगे दौड़ते हुए यिस्राएल घाटी पर पहुंचे।

१ नबी एलियाह इस्राएलियों पर परमेश्वर का कौन-सा शाप घोषित करते है ?

२ १ राजा १८ २१ पढ़िए और बताइए कि नबी एलियाह ने इस्राएलियों को कौन-सा चुनाव करने को कहा ? हमारे लिए इस कथन का क्या महत्व है ?

२६. इस्राएलियों के पतन का कारण

(२ राजा १७ ७–२३)

परमेश्वर की अनेक चेतावनियों के बावजूद दस कुलों के राज्यवाले इलाके के इस्राएली परमेश्वर के प्रति पाप करते रहे। अत परमेश्वर ने इस राज्य को नष्ट कर दिया और वहां के निवासियों को उनके स्वदेश से निष्कासित कर दिया।

प्रस्तुत पाठ में हम पढ़ेंगे कि परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया।

इस्राएल प्रदेश के पतन का कारण यह है इस्राएलियों ने अपने प्रभु परमेश्वर के प्रति पाप किया था, जिसने उन्हें मिस्र देश के राजा फरओ के पन्जे से निकाला था। इस्राएली अन्य देवताओं का भय मानने लगे थे। जिन जातियों को प्रभु ने उनकी भूमि पर से इस्राएलियों के लिए निकाल दिया था, उन्हीं जातियों की विधियों पर इस्राएली चलते थे। इस्राएल प्रदेश के राजाओं ने तथा प्रजा ने अपने प्रभु परमेश्वर के प्रति चुपचाप ऐसे कार्य किए, जो सर्वथा अनुचित थे। उन्होंने प्रत्येक नगर में, मीनारवाले नगरों से लेकर किलेबन्द नगरों तक, अपने लिए पहाड़ी शिखरों पर वेदियों का निर्माण किया था। उन्होंने हरएक ऊंची पहाड़ी पर तथा प्रत्येक हरे-भरे वृक्ष के नीचे अपने लिए पूजा-स्तम्भ और अशेराह देवी की मूर्ति प्रतिष्ठित की थी। वहां वे उन जातियों के समान जिन्हें प्रभु ने उनके सम्मुख से खदेड़ दिया था, पहाड़ी शिखर की वेदियों पर सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाया करते थे। उन्होंने दुष्कर्म किए, और प्रभु के क्रोध को भड़काया। प्रभु ने उनको यह आदेश दिया था 'तुम मूर्ति की पूजा मत करना।' परन्तु उन्होंने मूर्ति की पूजा की।

प्रभु इस्राएल और यहूदा प्रदेशों को नबियों और द्रष्टाओं के द्वारा चेतावनी देता। प्रभु ने उनसे कहा, 'अपने कुमार्गों को छोड़ दो, और मेरी आज्ञाओं और संविधियों का पालन करो। जो व्यवस्था मैंने तुम्हारे पूर्वजों को प्रदान की थी, जो व्यवस्था मैंने अपने सेवक नबियों के हाथ से तुम्हें भेजी थी, उसके अनुसार कार्य करो।' परन्तु उन्होंने नहीं सुना। जैसे उनके पूर्वज ज़िद्दी थे, जिन्होंने अपने प्रभु परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया था, वैसे ही वे भी थे। उन्होंने प्रभु की संविधियों को, उसके पूर्वजों के साथ स्थापित प्रभु की वाचा को और उसकी चेतावनी की उपेक्षा की। उन्होंने झूठी मूर्तियों का अनुसरण किया, और स्वयं झूठे बन गए। उन्होंने अपने चारों ओर की जातियों के दुष्कर्मों का अनुकरण किया। इस विषय में प्रभु ने इस्राएलियों को आदेश दिया था कि उनके समान कार्य मत करना। उन्होंने अपने प्रभु परमेश्वर की सब आज्ञाओं को त्याग दिया, और अपने लिए बछड़े की दो मूर्तियाँ ढालीं। उन्होंने अशेराह देवी की मूर्ति प्रतिष्ठित की। वे आकाश की प्राकृतिक शक्तियों की वन्दना और बअल देवता की पूजा करने लगे। वे अपने पुत्र अथवा पुत्री को अग्नि में बलि के रूप में चढ़ाने थे। वे शकुन विचारते और जादू-टोना करते थे। उन्होंने प्रभु की दृष्टि में दुष्कर्म करने के लिए अपने को बेच दिया था, और यों प्रभु के क्रोध को भड़काया था। अतः प्रभु इस्राएलियों से बहुत नाराज हुआ, और उसने उनको अपनी आंखों के सामने से हटा दिया। केवल यहूदा कुल के वंशज छोड़ रहे।

परन्तु यहूदा राज्य ने भी अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं किया। जिन प्रथाओं का पालन इस्राएल राज्य करता था, उनको यहूदा राज्य ने भी अपना लिया और वह उन पर चलता था। अतः प्रभु ने समस्त इस्राएली जाति को छोड़ दिया। उसने उसको पीड़ित किया। उसने इस्राएली जाति को लुटेरों के हाथ में सौंप दिया। और अन्त में उसको अपने सम्मुख से निकाल दिया।

जब प्रभु ने इस्राएल राज्य को दाऊद राजवंश से अलग किया था तब इस्राएल प्रदेश के निवासियों ने यारोबआम बेन-नबाट को अपना राजा बनाया था। यारोबआम ने इस्राएलियों को प्रभु के मार्ग से भटका दिया, और उनसे महापाप कराया। जिस पाप-मार्ग पर यारोबआम चला, उसपर इस्राएल प्रदेश के निवासी भी चले। वे पाप-मार्ग से विमुख नहीं हुए। अन्त में प्रभु ने इस्राएलियों को अपने सम्मुख से निकाल दिया, जैसा उसने अपने सेवक नबियों के मुख से कहा था। इस्राएली लोग स्वदेश से निकाल दिए गए, और असीरिया देश में आज तक निर्वासित हैं।

१ परमेश्वर ने इस्राएलियों पर अपना महान प्रेम और करुणा किस प्रकार प्रकट की थी? (देखो, २ राजा १७ . ७, १३)
२ इस्राएलियों ने कौन-कौन से पाप किए? वर्तमान काल में ऐसे कौन-से पाप हैं जिनकी तुलना इस्राएलियों के पापों से की जा सकती है?
३ अन्त में परमेश्वर ने दस कुलों के साथ क्या किया? (देखो २ राजा १७ २३)

३०. नबी यशायाह का आख्यान

(यशायाह १ . १–२३)

इस्राएल देश का दक्षिणी भाग यहूदा प्रदेश कहलाता था। यहां दो कुल के लोग रहते थे - यहूदा और बिन्यामिन। ये भी परमेश्वर के प्रति पाप करते थे। अतः परमेश्वर ने एक नबी को उन्हें चेतावनी देने के लिए भेजा। इस नबी

देश के निवासियो को जो सन्देश दिया उसकी सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा यह है
रमेश्वर पवित्र है, इसलिए वह पाप से घृणा करता है। किन्तु वह उन लोगों से
म करता है, जो पाप की ओर से पीठ फेर कर परमेश्वर की ओर लौटते है,
ौर अपने जीवन मे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते है।

यशायाह बेन-आमोस्प का दर्शन यह यहूदा प्रदेश तथा यरूशलम नगर के सम्बन्ध
ी था। ये दर्शन यशायाह ने यहूदा प्रदेश के राजाओं—उज्जियाह, योताम, आहाज और
हिजकिय ाह—के राज्य-काल मे देखे थे।

ापी राष्ट्र
ो आकाश, सुन!
ो पृथ्वी, ध्यान दे!
यांकि प्रभु ने यह कहा है
मैने बाल-बच्चों का पालन पोषण किया,
उनको बड़ा किया,
र उन्होने ही मेरे विरुद्ध विद्रोह किया।
बैल अपने मालिक को जानता है,
गधा अपने स्वामी की नाद को पहचानता है,
पर इस्राएल मुझे नही जानता,
मेरे लोगो मे समझ नही।'

ओ पापी राष्ट्र!
ओ अधर्म के बोझ से दबे लोगो!
ओ कुकर्मियो की सन्तान!
ओ भ्रष्टाचारी पुत्रो!
तुमने प्रभु को त्याग दिया,
तुमने इस्राएल के पवित्र परमेश्वर को
तुच्छ समझा।
तुम उससे विमुख होकर अलग हो गए।

अब तुम्हारे किस अंग पर प्रहार किया जा
सकता है?
तुम्हारा कोई अंग मार से बचा नहीं,
फिर भी तुम बार-बार विद्रोह करते हो।
तुम्हारा सारा सिर घायल है,
तुम्हारा सम्पूर्ण हृदय रोगी है।
सिर से पैर तक,
तुममे स्वास्थ्य का चिह्न नही रहा,
केवल घाव, चोट और सड़े हुए जख्म!
उनका न मवाद पोछा गया,
न उनपर पट्टी बाधी गई,
और न तेल लगाकर उन्हे ठण्डा ही किया
गया।
तुम्हारा देश उजड़ गया,
तुम्हारे नगर आग मे भस्म हो गए।
तुम्हारी आखो के सामने विदेशी तुम्हारे
देश को लूटते है।
जैसे सदोम उलट-पुलट गया था,
वैसे ही तुम्हारा देश उजाड़ हो गया।
सियोन की पुत्री—
यरूशलम नगरी,
अगूर-उद्यान की झोपड़ी के समान,
ककड़ी के खेत के मचान की तरह,
सेना से घिरे हुए नगर के सदृश बची हुई है।
यदि स्वर्गिक सेनाओ के प्रभु ने हममे से कुछ
लोगो को बचाया न होता तो सदोम
नगर की तरह, अमोरा नगर के समान
हम भी नष्ट हो जाते।

पश्चात्ताप का आवाहन
ओ सदोम नगर के समान दुष्ट शासको,
प्रभु की यह वाणी सुनो!
ओ अमोरा नगर की तरह कुकर्मी लोगो,
परमेश्वर की व्यवस्था पर ध्यान दो!
प्रभु यह कहता है,
'मेरे लिए तुम्हारी ये प्रचुर पशु-बलि किस
काम की?
मै मेढ़ो की अग्नि-बलि से,
पालतू पशुओं की चर्बी से अघा गया हू।
मै भेड़ो, मेमनो और बकरो के रक्त से
प्रसन्न नही होता।

'जब तुम यात्रा-पर्वों के लिए मेरे सम्मुख
आते हो—
तुमसे बलि-पशु लाने के लिए किसने कहा
था?
तुम इनके साथ मेरे आगन मे प्रवेश नही
कर सकोगे।
तुम अपनी निस्सार भेंटे मेरे पास मत
लाओ;
उनकी सुगन्ध से मुझे घृणा हो गई है।
तुम्हारा नवचन्द्र पर्व मनाना, विश्राम-
दिवस मनाना,

धर्मसम्मेलन के लिए एकत्र होना,
और धर्ममहासभा के साथ-साथ अधर्म भी
    करते जाना
यह मैं नहीं सह सकता।
तुम्हारे नवचन्द्र-पर्व तथा निर्धारित यात्रा-
    पर्वों से
मैं घृणा करता हूं।
ये मुझ पर बोझ बन गए हैं,
मैं उनको सहते-सहते ऊब गया हूं।
जब तुम प्रार्थना करते समय मेरी ओर हाथ
    फैलाओगे
तब मैं तुम्हारी ओर से अपनी आंखें फेर
    लूंगा।
चाहे तुम एक के बाद एक, कितनी ही
    प्रार्थनाएं क्यों न करो,
मैं उन्हें नहीं सुनूंगा,
क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से सने हैं।
अपने को धोओ,
अपने को शुद्ध करो,
मेरी आंखों के सामने से अपने कुकर्मों को
    दूर करो,
बुराई करना छोड़ दो,
पर भलाई करना सीखो।
न्याय के लिए प्रयत्न करो
अत्याचारी को सुधारो,
अनाथ को न्याय दिलाओ,
और विधवाओं का पक्ष लो।'

प्रभु यह कहता है,
'अब आओ, हम परस्पर समझौता करें।
चाहे तुम्हारे पाप लाल रंग के हों
वे हिम के समान सफेद हो जाएंगे।
चाहे वे अर्गवानी रंग के हों,
वे ऊन के समान श्वेत हो जाएंगे।
यदि तुम इच्छुक हो,
और आज्ञापालन के लिए तत्पर हो,
तो तुम भूमि का सर्वोत्तम फल खाओगे
परन्तु यदि तुम मुझ-प्रभु की आज्ञा
    उल्लंघन करोगे
और मुझसे विद्रोह करोगे,
तो तुम तलवार से मौत के घाट,
    जाओगे।'
प्रभु ने अपने मुख से यह कहा है।

यरूशलेम नगर का पतन

जो नगरी सती-साध्वी थी,
वह कैसे वेश्या बन गई!
वह न्याय-प्रिय थी,
उसमें धर्म का निवास था।
पर अब? वहां हत्यारे बसे हुए हैं।
ओ यरूशलेम, तेरी चांदी कूड़ा बन गई'
तेरा अंगूर-रस पानी हो गया!
तेरे शासक कानून के विरोधी हैं,
वे चोरों के साथी हैं।
वे-सब रिश्वत के लोभी हैं।
वे उपहारों के पीछे दौड़ते हैं।
वे अनाथों का न्याय नहीं करते,
और न विधवाओं का मुकदमा उन तक
    पहुंच ही पाता है।

१. नबी यशायाह ने पापी लोगों का किस प्रकार चित्रण किया है? (देखो १ : २–४)
२. यशायाह १ : ११–१७ पढ़िये, और बताइए कि इस्राएलियों ने कौन-कौन से धार्मिक कर्म-काण्ड किए थे जिनसे परमेश्वर घृणा करता था?
३. यशायाह १ : १७ के अनुसार परमेश्वर हमसे क्या चाहता है?
४. यशायाह १ : १८–२० में परमेश्वर ने हमें कौन-सा वचन दिया है?
५. यशायाह १ : २१–२३ में नबी यशायाह ने सामाजिक अन्याय कुकर्मों का उल्लेख किया है। वे कौन से हैं?

३१. उद्धारकर्त्ता के जन्म की भविष्यवाणी

(यशायाह ९ १–७, ११ १–९)

बाइबिल मे संकलित नबी यशायाह के ग्रन्थ मे जगह-जगह यह भविष्यवाणी पढ़ने को मिलती है कि संसार के सब लोगो को उनके पाप से मुक्त करने के लिए ईश्वर-पुत्र यीशु का, उद्धारकर्त्ता मसीह यीशु का जन्म होगा। इन्ही भविष्य-वाणियो मे नबूवतो मे यीशु का चरित्र-चित्रण भी हुआ है कि वह कैसे-कैसे कार्य करेंगे।

प्रस्तुत पाठ मे हम नबी यशायाह के महान ग्रंथ मे दो नबूवते (भविष्य-वाणियां) उद्धृत कर रहे है।

जो जनता व्यथा सह रही थी
अब वह उस निराशा से मुक्त हो जाएगी।
प्रथम आक्रमणकारी ने
जबूलून और नप्ताली क्षेत्र की जनता पर
कम अत्याचार किया,
पर दूसरा आक्रमणकारी सागर के पथ से
यरदन नदी के उसपार के गलील प्रदेश पर
जहां अन्य कौमो के लोग बस गए है
भयानक आक्रमण करेगा।*
जो लोग अन्धकार मे भटक रहे थे,
उन्होने बड़ी ज्योति देखी,
जो लोग सघन अन्धकार के क्षेत्र मे रहते थे,
उन पर ज्योति उदित हुई।
प्रभु, तूने इस्राएली राष्ट्र की समृद्धि की,
तूने उसके आनन्द मे वृद्धि की,
जैसे वे लूट का माल
परस्पर बांटते समय उल्लसित होते है,
जैसे वे फसल-कटाई के पर्व पर हर्षित
होते है
वैसे ही वे आज तेरे सम्मुख आनन्द मना
रहे है।
तूने इस्राएली राष्ट्र की गुलामी के जूए को,
उसके कन्धे की कावर को,
अत्याचारी की लाठी को तोड़ दिया,
जैसे मिद्यानी सेना के युद्ध-दिवस पर तूने
किया था।

पदाति सैनिको के जूते
जो धम-धम करते हुए चलते है,
और उनके रक्त-रंजित वस्त्र आग के कौर
बन गए।

देखो, हमारे लिए एक बालक का जन्म
हुआ है
हमे एक पुत्र दिया गया है।
राज्य-सत्ता उसके कन्धो पर है।
उसका यह नाम रखा जाएगा
"अद्भुत परामर्श-दाता",
"शक्तिमान ईश्वर",
'शाश्वत पिता",
"शान्ति का शासक"**
उसकी राज्य-सत्ता बढ़ती जाएगी,
उसके कल्याणकारी कार्यों का अन्त न
होगा।
वह दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा,
और उसके राज्य को संभालेगा।
वह अब से लेकर सदा के लिए
न्याय के कार्यों से उसको सुदृढ़ करेगा,
अपने धार्मिक आचरण से उसे संभालेगा।
स्वर्गिक सेनाओ के प्रभु का धर्मोत्साह यह
कार्य पूर्ण करेगा।

यिशय वंश के राजा का सद्धर्म राज्य

यिशय वंश के तने से एक शाखा निकलेगी,

*इस पद का यह अनुवाद भी हो सकता है 'प्राचीन काल मे उसने जबूलून और नप्ताली की जनता को अपमानित किया था, पर अन्तिम दिनो मे वह सागर की ओर यरदन नदी के उस पार के गलील प्रदेश को, जहां अन्य कौमो के लोग बस गए है, महिमा प्रदान करेगा।'

**अथवा, 'कल्याणकारी शासक'

उसकी जड़ से एक टहनी फूटेगी, और
फलवन्त होगी।
प्रभु की आत्मा,
बुद्धि और समझ की आत्मा
परामर्श और सामर्थ्य की आत्मा,
ज्ञान और प्रभु के भय की आत्मा
उस पर ठहरी रहेगी।
प्रभु का भय ही उसका आनन्द होगा।
वह केवल मुंह देखकर न्याय नहीं करेगा,
वह केवल कान से सुनकर निर्णय नहीं
देगा
वरन् वह गरीबों का न्याय धार्मिकता से
करेगा
वह पृथ्वी के दीन-दुखियों का निर्णय
निष्पक्षता से करेगा।
वह अपने शब्द-रूपी दण्ड से अत्याचारियों
पर प्रहार करेगा,
वह मुंह की फूंक से दुष्टों का नाश करेगा।
धर्म ही उसकी शक्ति,
सच्चाई ही उसकी सामर्थ्य होगी।
उसके शासन में
भेड़िया भेड़ के बच्चे के साथ रहेगा
चीता बकरी के बच्चे के संग बैठेगा
बछड़ा, सिंह [illegible] बच्चा और पालतू
पशु साथ-साथ चरेंगे,
और छोटा लड़का उनकी अगुआई करेगा
गाय और रीछनी एक साथ चरेंगी,
उनके बच्चे भी एक ही स्थान पर बैठेंगे
सिंह बैल के समान घास खाएगा
दूध-पीता शिशु करैत सांप के बिल पर
खेलेगा,
दूध छुड़ाया हुआ लड़का नाग के बिल में
अपना हाथ डालेगा।
मेरे समस्त पवित्र पर्वत पर
वे न किसी को दुःख देंगे,
न किसी का अनिष्ट करेंगे,
क्योंकि मुझ-प्रभु के ज्ञान से पृथ्वी परिपूर्ण
हो जाएगी,
जैसे जल से समुद्र भरा रहता है।

१ यशायाह ९ ६–७ में संसार के उद्धारकर्त्ता यीशु का किस प्रकार वर्णन हुआ है? (ध्यान दीजिए, यह भविष्यवाणी यीशु के जन्म के सात सौ वर्ष पूर्व लिखी गई थी।)
२ किस वंश में संसार के उद्धारकर्त्ता का जन्म होगा? (यशायाह ११ १)
३ यशायाह ११ २–५ में यीशु का किस प्रकार वर्णन हुआ है?
४ यीशु पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य स्थापित करने के लिए जन्म लेंगे। परमेश्वर का राज्य अर्थात् एक ऐसा समाज जिसमें पाप नहीं रोग नहीं, मृत्यु नहीं होगी। नबी यशायाह ने अपने ग्रन्थ ११ ६–९ में इस राज्य का किस प्रकार वर्णन किया है?
५ नबी यशायाह ने अपने ग्रन्थ के ११ ९ में एक महत्वपूर्ण नबूवत (भविष्यवाणी) की है। वह क्या है?

३२. परमेश्वर का स्वभाव

(यशायाह ४० १–३१)

नबी यशायाह कवि भी थे। उन्होंने अपना सन्देश कविता में भी दिया है। वह अपनी कविता में परमेश्वर के स्वरूप का चित्रण करते हैं। अध्याय ४० अवश्य ० । इस अध्याय से हमें मालूम होता है कि परमेश्वर मनुष्यों से कितना प्रेम है। वह हमें दु:ख-संकट में सान्त्वना देता है। वह अत्यन्त प्रतापी और

महान, ऐश्वर्यपूर्ण है। मनुष्य अपने हाथों से पत्थर और लकड़ी की मूर्तियां बनाते है, वे परमेश्वर नहीं होतीं। उनकी पूजा-उपासना करना पाप है।

तुम्हारा परमेश्वर यह कहता है
'मेरे निज लोग, इस्राएल को शान्ति दो
    शान्ति!
यरूशलम के हृदय में बात करो,
उसको बताओ कि
उसके निष्कासन के दिन पूरे हो गए,
उसके अधर्म का मूल्य चुका दिया गया
उसे प्रभु-प्रभु के हाथ से
अपने पापों का दुगुना दण्ड प्राप्त हो चुका है।
सुनो, कोई पुकार रहा है
निर्जन प्रदेश में प्रभु का मार्ग सुधारो।
हमारे परमेश्वर के लिए मरुस्थल में राज-
    पथ सीधा करो।
हर-एक घाटी को भर दो
प्रत्येक पहाड़ और पहाड़ी को गिरा दो,
ऊंची-नीची जमीन को समतल कर दो,
ऊबड़-खाबड़ मैदान को सपाट बना दो।
तब प्रभु की महिमा प्रकट होगी
और समस्त मनुष्य-जाति उसको एक-साथ
    देखेगी।
प्रभु ने अपने मुख से यह कहा है।
बोलनेवाला यह आदेश देता है, 'प्रचार कर।'
मैंने उत्तर दिया, 'मैं क्या प्रचार करूं?'
समस्त प्राणी घास की तरह अनित्य है,
उनकी शोभा बाग के फूल के समान क्षणिक
    है।
जब प्रभु का श्वास घास पर पड़ता है
तब वह सूख जाती है,
फूल मुरझा जाते है।
निस्सन्देह ये लोग घास ही है!
घास सूख जाती है, फूल मुरझाते है,
पर हमारे परमेश्वर का वचन नित्य है,
वह कभी टलता नहीं।
ओ सियोन को शुभ-सन्देश सुनानेवाली,
ऊंचे पर्वत पर चढ़कर सन्देश सुना!
ओ यरूशलम को शुभ-सन्देश सुनानेवाली,
बलपूर्वक उच्च स्वर में सुना!
मत डर, ऊंची आवाज में सुना।
यहूदा प्रदेश के नगरों में यह प्रचार कर,
'देखो! तुम्हारा परमेश्वर!'
देखो, प्रभु-स्वामी सामर्थ्य के साथ आ रहा है,
वह अपने भुजबल से शासन करता है।
देखो, उसका पुरस्कार उसके साथ है,
उसके आगे-आगे उसका प्रतिफल है!
वह मेषपाल* के सदृश अपने रेवड़ को
    चराएगा,
वह अपनी बाहों में मेमनों को उठाएगा,
वह उन्हें अपनी गोद में उठाकर ले जाएगा,
वह दूध पिलानेवाली भेड़ों को धीरे-धीरे
    ले जाएगा।

इस्राएली राष्ट्र का परमश्रेष्ठ परमेश्वर
अपनी अंजुली से
किसने महासागर को नापा है?
किसने बित्ते से आकाश को नापा है?
किसने पृथ्वी की मिट्टी को माप में भरा है?
किसने तराजू से पहाड़ों को तौला है?
किसने पहाड़ियों को पलड़ों में रखा है?
प्रभु के आत्मा को किसने निर्देशित किया है?
उसका परामर्शदाता कौन है, जो उसको
    सिखाता है?
उसने किससे ज्ञान के लिए सम्मति मांगी है?
किसने उसे न्याय का मार्ग सिखाया है?
किसने उसे ज्ञान सिखाया है?
किसने उसे बुद्धि का मार्ग बताया है?
देखो, राष्ट्र तो ऐसे है, जैसे बाल्टी में एक
    बूंद,
वे तराजू के पलड़ों में लगे रजकण के समान
    है।
देखो, वह द्वीपों को धूल के सदृश उठा
    लेता है।
लबानोन का विशाल वन भी उसके ईंधन के
    लिए अपर्याप्त है,
वन के समस्त पशु भी उसकी अग्नि-बलि
    के लिए पर्याप्त नहीं है।
उसके सम्मुख पृथ्वी के समस्त राष्ट्र नगण्य
    है,
उनका अस्तित्व शून्य से भी कम है,

*अथवा 'चरवाहा'

वे कुछ भी नहीं है।
तब परमेश्वर, तुम मेरी तुलना किससे
करोगे?
तुम मेरी उपमा किससे दोगे?
क्या मूर्ति से जिसको कारीगर ढालता है,
सुनार सोने से मढ़ता है,
और जिसके लिए वह चाँदी की जंजीरें
ढालता है।
जो आराधक सोने-चाँदी की मूर्ति चढ़ाने में
असमर्थ है,
वह घुन न लगनेवाले वृक्ष को चुनता है,
वह कुशल कारीगर को ढूँढ़ता है,
और उससे लकड़ी पर मूर्ति खुदवाता है,
जो हिलती-डुलती नहीं है।
क्या तुम नहीं जानते?
क्या तुमने नहीं सुना?
क्या तुम्हें प्राचीन काल में नहीं बताया
गया?
जबसे पृथ्वी की नींव डाली गई,
सृष्टि के आरम्भ से ही
तुम्हें यह समझाया जाता रहा है कि
वह प्रभु ही है
जो पृथ्वी के चक्र के ऊपर विराजमान है।
और हम, पृथ्वी के निवासी मात्र टिड्डियाँ है।
जो आकाश को वितान के समान तानता है,
उसको तम्बू के समान फैलाता है
ताकि मनुष्य उसके नीचे रह सके,
जो सामन्तों के अस्तित्व मिटा देता है,
जो पृथ्वी के शासकों को नगण्य बना देता है,
वह प्रभु ही है।
अभी-अभी वे रोपे गए थे,
अभी-अभी वे बोए गए थे,
अभी-अभी उनकी ठूँठ ने जड़ पकड़ी थी कि
प्रभु ने उन पर पवन बहाया,
और वे सूख गए।
तूफान उन्हें भूसे की तरह उड़ा ले गया।

पवित्र परमेश्वर पूछता है,
'तुम किससे मेरी तुलना करोगे?
मैं किसके समान हूँ?'
आकाश की ओर आँखें उठाओ, और देखो
उन तारों को किसने रचा है?
मुझ-प्रभु ने!
मैं सेना के सदृश उनको गणना करता हूँ
और प्रत्येक तारे को उसके नाम से पुकारता
हूँ।
मेरी शक्ति असीमित है।
मेरा बल अपार है;
अतः प्रत्येक तारा मुझे उत्तर देता है।
ओ याकूब, तू यह क्यों कहता है,
ओ इस्राएल, तू क्यों बोलता है
कि तेरा आचरण प्रभु से छिपा है?
तेरा परमेश्वर तेरे अधिकार पर ध्यान नहीं
देता है?
क्या तुम नहीं जानते?
क्या तुमने नहीं सुना?
प्रभु शाश्वत् परमेश्वर है,
वह समस्त पृथ्वी का सृष्टिकर्ता है।
वह न निर्बल है, और न थकता है।
उसकी समझ अगम है।
वह शक्तिहीन मनुष्य को शक्ति प्रदान
करता है,
वह बलहीन मनुष्य का बल बढ़ाता है।
युवक भी निर्बल हो जाते हैं,
वे थक जाते हैं,
तरुण भी थककर चूर हो जाते हैं
परन्तु प्रभु की प्रतीक्षा करनेवाले
नया बल प्राप्त करते जाएँगे,
वे बाज पक्षी* के पंखों की तरह
नव शक्ति प्राप्त कर ऊँचे उड़ेंगे,
वे दौड़ेंगे, पर थकेंगे नहीं,
वे चलते रहेंगे, किन्तु निर्बल नहीं होंगे।

१ यशायाह ४० १–२ के अनुसार परमेश्वर के विषय में हम क्या सीखते हैं?
२. यशायाह ४० ६–८ में मनुष्य और परमेश्वर की वाणी (वचन, शब्द) का अन्तर बताया गया है। वह क्या है?
३ यशायाह ४० ११ में परमेश्वर का कौन-सा चित्र अंकित है?

*'गरुड़'

४ यशायाह ४० १२—१७ पढ़िए, और फिर बताइए कि हम उपरोक्त वर्णन में परमेश्वर के विषय मे क्या सीखते है।
५ यशायाह ४० १८—२६ मे किस प्रकार के पाप का उल्लेख है? क्या लकडी या पत्थर, अथवा सोना-चादी की मूर्ति-प्रतिमा से परमेश्वर की तुलना या उपमा हो सकती है?
६ यशायाह ४० २८—३१ मे परमेश्वर के गुण, स्वभाव और उसके बारे मे क्या लिखा है? वह हमारे लिए क्या करता है?

३३. यीशु के दुःख-भोग की भविष्यवाणी

(यशायाह ५३ १—१२)

हमने सक्षिप्त बाइबिल के आरम्भिक पृष्ठो में पढा है कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को आज्ञा दी थी कि वे निषिद्ध वृक्ष का फल न खाए, और अगर वे आज्ञा का उल्लघन करेगे तो वे मर जाएगे। पाप का दण्ड है परमेश्वर के सत्सग से सदा-सर्वदा के लिए वचित हो जाना, परमेश्वर की सहभागिता से अलग हो जाना। इसे शाश्वत मृत्यु भी कहते है।

हममे जबतक पाप का विष फैला हुआ है, तबतक हम परमेश्वर का सत्सग नही पा सकते, क्योकि परमेश्वर पवित्र है, और वह पाप से घृणा करता है।

प्रश्न उठता है—हम पाप के विष से कैसे मुक्त हो सकते है? इसका उत्तर बाइबिल देती है यदि कोई हमारे बदले पाप का दण्ड भोग ले और हमे नई प्रकृति—नया स्वभाव प्रदान करे तो हम शाश्वत मृत्यु से बच जाते है और परमेश्वर के सत्सग या उसकी सहभागिता को पुन प्राप्त कर लेते है।

परमेश्वर-पुत्र यीशु इसी कार्य को करने के लिए ससार मे आए थे। यीशु ने हमारे बदले सलीब पर पाप का दण्ड भोगा। यदि हम यीशु पर विश्वास करे, उनको अपना मुक्तिदाता स्वीकार करे तो परमेश्वर पाप के दण्ड को क्षमा करता, और हमे पुन अपने सत्सग मे ले लेता है।

नबी यशायाह ने प्रस्तुत अध्याय मे स्पष्ट बताया है कि परमेश्वर ने समस्त मानव-जाति का पाप-भार यीशु पर डाल दिया था, और उद्धारकर्ता यीशु ने मनुष्य जाति के कल्याण के लिए स्वय दु ख भोगा।

जो हमने सुना, उसपर कौन विश्वास
 करेगा?
किसपर प्रभु का भुजबल प्रकट हुआ?
वह एक नन्हे पौधे जैसा उसके सम्मुख उगा,
वह जड के सदृश शुष्क भूमि से फूटा।
उसमे न रूप था और न आकर्षण
कि हम उसे देखते;
उसमे सुन्दरता भी न थी,
कि हम उसकी कामना करते।
लोगो ने उससे घृणा की,
उन्होने उसको त्याग दिया।
वह दु खी मनुष्य था,
केवल पीडा से उसकी पहचान थी।
उसको देखते ही लोग अपना मुख फेर लेते थे।
लोगो ने उससे घृणा की,
और हमने उसका मूल्य नही आना।

निस्सन्देह उसने हमारे रोगों को सहा,
और हमारे दुःखों को भोगा।
फिर भी हमने समझा कि परमेश्वर ने उसे
घायल किया है,
उसे दुःखी और पीड़ित किया है।
किन्तु वह हमारे अपराधों के कारण घायल
हुआ,
वह हमारे दुष्कर्मों के कारण आहत हुआ।
उसने अपने शरीर पर ताड़ना स्वरूप
मार सही,
और उसकी मार से हमारा कल्याण हुआ।
उसने कोड़े खाए, जिससे हम स्वस्थ हुए।
हम सब भटकी हुई भेड़ों के सदृश थे,
प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने मार्ग पर चल
रहा था।
परन्तु प्रभु ने हमारे सब दुष्कर्मों का बोझ
उसपर लाद दिया।

वह सताया गया,
उसे पीड़ित किया गया,
तो भी उसके मुह से 'आह' न निकली।
जैसे मेमना वध के लिए ले जाते समय चुप
रहता है,
जैसे भेड़ ऊन कतरते समय शान्त रहती है,
वैसे ही वह मौन था।
अत्याचार और दण्ड-आज्ञा के पश्चात्
वे उसे वध के लिए ले गए।
उसकी पीढ़ी के किस व्यक्ति ने इस बात पर
ध्यान दिया
कि वह जीव-लोक से उठा लिया गया,
मेरे निज लोगों के अपराधों के लिए वह
मारा गया ?
उन्होंने दुर्जनों के मध्य उसकी कब्र बनाई
वह मृत्यु के बाद
एक धनवान की कब्र में गाड़ा गया,
यद्यपि उसने कोई हिंसा नहीं की थी,
और न अपने मुह से किसी को धोखा
दिया था।
यह प्रभु की इच्छा थी कि वह मार सहे
प्रभु ने उसे दुःख से पीड़ित किया।
जब वह पाप-बलि के लिए अपना प्राण
अर्पित करता है,
तब वह अपने वंश को देखेगा,
वह दीर्घायु प्राप्त करेगा।
उसके हाथ से प्रभु की इच्छा सफल होगी।
जो पीड़ा उसने अपने प्राण में सही है,
उसका फल देखकर वह सन्तुष्ट होगा।
मेरा धार्मिक सेवक
अपने ज्ञान के द्वारा अनेक लोगों को धार्मिक
बनाएगा,
वह उनके दुष्कर्मों का फल स्वयं भोगेगा।
अतः मैं महान व्यक्तियों के साथ उसका
भाग बाटूंगा,
और वह बलवानों के साथ 'लूट' बांटेगा।
उसने मृत्यु की वेदी पर अपना प्राण अर्पित
कर दिया,
और वह अपराधियों के साथ गिना गया।
फिर भी उसने अनेक लोगों के पाप का बोझ
उठाया,
और अपराधियों के लिए प्रार्थना की।

१ यशायाह ५३ ३ मे यीशु का किस प्रकार वर्णन हुआ है ?
२ यशायाह ५३ ५ के अनुसार यीशु ने हमारे लिए क्या किया ?
३ धार्मिक यीशु यशायाह ५३ ११ के अनुसार क्या करेंगे ?

३४. नबी यशायाह का मनुष्य-जाति को निमन्त्रण : आओ, उद्धारकर्ता को स्वीकार करो
(यशायाह ५५ १–१३)

अध्याय मे नबी यशायाह परमेश्वर के असीम, और प्रेम का वर्णन करते है। हमे परमेश्वर के पास कुछ भी चीज लाने की नही है। हम बिना मूल्य चुकाए परमेश्वर से आत्मिक भोजन प्राप्त

कर सकते है। परमेश्वर हमारी सब आवश्यकताओं को पूर्णतः पूरा करेगा। जो मनुष्य पाप का मार्ग छोड़कर परमेश्वर की ओर मुड़ता है, उसपर परमेश्वर अपार दया और प्रेम की वर्षा करता है।

सब प्यासे लोगों, जल के पास आओ।
जिसके पास पैसा नहीं है, वह भी आए।
सब आओ, खरीदो, और खाओ।
बिना पैसे के, बिना दाम के अंगूर-रस और
दूध खरीदो।
जो भोजन नहीं है, उसपर पैसा क्यों खर्च
करते हो?
जिससे सन्तोष नहीं मिलता, उसके लिए
परिश्रम क्यों करते हो?
ध्यान से मेरी बात सुनो!
तब तुम्हें खाने को उत्तम वस्तु प्राप्त होगी,
और तुम स्वादिष्ट व्यंजन खाकर तृप्त
होगे।
मेरी ओर कान दो, और मेरे पास आओ।
मेरी बात सुनो, ताकि तुम्हारा प्राण जीवित
रहे।
तब मैं दाऊद के प्रति अपनी अटूट करुणा
के कारण
तुम्हारे साथ शाश्वत वाचा स्थापित करूंगा।
देखो, मैंने दाऊद को
राष्ट्रों के लिए गवाह नियुक्त किया है,
वह कौमों का नेता और आदेश देनेवाला
नायक है।

'तू उन राष्ट्रों को बुलाएगा, जिनको तू
नहीं जानता है,
और जो राष्ट्र तुझको नहीं जानते हैं,
वे तेरे पास दौड़कर आएंगे।
तेरे प्रभु परमेश्वर के कारण,
इस्राएली राष्ट्र के पवित्र परमेश्वर के कारण
वे तेरे पास आएंगे,
क्योंकि उसने तेरा गौरव बढ़ाया है।

'जब तक प्रभु मिल सकता है, उसको
ढूंढ लो।
जब तक वह समीप है, उसको पुकार लो।
दुर्जन मनुष्य अपने मार्ग को छोड़ दे,
और अधार्मिक व्यक्ति अपने बुरे विचारों
को।
वह प्रभु की ओर लौटे, जिससे प्रभु उस पर
दया करे।
वह हमारे परमेश्वर के पास आए,
क्योंकि प्रभु उसे पूर्णतः क्षमा करेगा।
प्रभु यह कहता है
मेरे विचार तुम्हारे विचारों के समान
नहीं है,
और न तुम्हारे मार्ग मेरे मार्गों के सदृश है।
पृथ्वी से जितना दूर आकाश है,
उतने ही दूर मेरे मार्ग से तुम्हारे मार्ग है,
उतने ही तुम्हारे विचार मेरे विचारों से
दूर है।

'आकाश से हिम गिरता है,
और वर्षा की बूंदें टपकती है,
वे लौटकर आकाश को नहीं जाती,
वरन् पृथ्वी पर भूमि को सींचती है।
वे अन्न को उपजाती है,
और बोनेवाले को बीज
और खानेवाले को भोजन प्राप्त होता है।
ऐसे ही जो शब्द मेरे मुख से निकलता है
वह मेरे पास खाली नहीं लौटेगा,
वरन् जिस उद्देश्य से मैंने उसको उच्चारा
था,
वह उसको पूरा करेगा;
जिसके लिए मैंने उसको भेजा था, वह उसको
सफल करेगा।

'तुम इस देश से आनन्दपूर्वक निकलोगे,
और कुशलपूर्वक तुम्हारा नेतृत्व किया
जाएगा।
मार्ग में आनेवाली पहाड़ियां और पहाड़
तुम्हारे सम्मुख आनन्द के गीत गाएंगे;
मैदान के पेड़ हर्ष से तालियां बजाएंगे।
तब जिन स्थानों पर झटकटैया के वृक्ष
होते हैं,
वहां सनोवर उगेंगे,
बिच्छू झाड़ियों के स्थान पर मेंहदी उग
आएगी।
यह आश्चर्यपूर्ण घटना प्रभु का स्मारक चिह्न
होगी,
यह शाश्वत चिह्न होगा जो कभी न मिटेगा।'

१ अध्याय ५५ १–७ के अनुसार परमेश्वर हमें किस प्रकार का निमन्त्रण देता है? उसका क्या अर्थ है?
२ हमें कौन-सा कार्य करने की आज्ञा परमेश्वर देता है? जो व्यक्ति इस आज्ञा का पालन करते हैं, उन्हें क्या देने का वचन परमेश्वर देता है? (पढ़िए ५५ ६–९)
३ जब किसी मनुष्य को पता चलता है कि यीशु मसीह ने उसको उसके पापों से मुक्त कर दिया है तब उसे किस प्रकार का आनन्द होता है? उस आनन्द का वर्णन नबी यशायाह ने अपने ग्रन्थ ५५ : १२–१३ में किस प्रकार किया है?

३५. नई इस्राएली कौम
(यशायाह ६० : १–२२)

परमेश्वर ने अब्राहम को वचन दिया था कि वह अब्राहम से एक राष्ट्र उत्पन्न करेगा, और इसी राष्ट्र के माध्यम से विश्व के सब राष्ट्रों को आशीष देगा। इस वचन का यह अर्थ है परमेश्वर अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह के माध्यम से विश्व की हर कौम, जाति, रंग के लोगों के पापों को क्षमा करेगा और इन बचाए हुए लोगों को वह अपनी मनोनीत, चुनी हुई प्रजा कहेगा।

परमेश्वर आज भी विश्व के सब देशों में यही कार्य कर रहा है। वह अपनी कलीसिया का निर्माण कर रहा है। वह हर मनुष्य को अपने राज्य में सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रण दे रहा है। परमेश्वर के राज्य, समाज के ये नागरिक प्रेम, शान्ति और आनन्द का जीवन बिताते हैं। यह सच है कि इस नए राज्य के नागरिकों पर अब भी पाप का कुछ प्रभाव बाकी है। यह शेष प्रभाव यीशु के पुनरागमन पर पूर्णतः दूर हो जाएगा, और यह नव समाज सिद्ध और महिमामय बन जाएगा।

इसी आनेवाली स्वर्गिक दशा का वर्णन नबी यशायाह ने प्रस्तुत अध्याय ६० में किया है।

उठ, प्रकाशवती हो,
क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया!
प्रभु की महिमा तुझ पर उदित हुई!
देख, पृथ्वी पर अन्धकार छाया हुआ है,
कौमों में घोर अन्धेरा व्याप्त है,
किन्तु प्रभु तुझ पर उदित होगा,
उसकी महिमा तुझमें दिखाई देगी!
राष्ट्र तेरे प्रकाश के समीप आएंगे,
और राजा तेरे उत्कर्ष के प्रकाश की ओर।
आंखें उठा, और चारों ओर देख
एकत्र होकर तेरे पास आ रहे हैं।
दूर देशों से आ रहे हैं,
तेरी पुत्रियां गोद में लाई जा रही हैं।
यह देखकर तू प्रसन्नता से प्रफुल्लित हो उठेगी,
तेरा हृदय हर्षित और गद्‌गद हो उठेगा
क्योंकि समुद्र का अपार धन, राष्ट्रों की धन-सम्पत्ति
तेरे पास आएगी।
मिद्यान और एपा देशों की ऊंटनियों के,
ऊंटों के कारवां तुझे ढक लेंगे।
ये सब शबा देश से आएंगे।
वे अपने साथ सोना और लोबान लाएंगे
और प्रभु के प्रशंसात्मक कार्यों का गुण-

सन्देश सुनाएंगे।
केदार कबीले की भेड़-बकरियां तेरे समीप
एकत्र होंगी,
नबायोत कबीले के मेढ़े तेरे पास आएंगे।
वे मेरी वेदी पर चढ़ाए जाएंगे,
और मैं उन्हें ग्रहण करूंगा।
मैं अपने सुन्दर भवन को और सुन्दर
बनाऊंगा।
मेघों के सदृश उड़ते हुए,
दरबों की ओर जाते हुए
कबूतरों की तरह ये कौन हैं,
जो चले आ रहे हैं?
समुद्र-तट के द्वीप मेरी प्रतीक्षा करेंगे,
सर्वप्रथम तर्शीश के जलयान
दूर देश से सोना और चांदी के साथ
तेरे पुत्रों को लाएंगे।
प्रभु ने तुझे और सुन्दर बनाया है,
अत: वे तेरे प्रभु परमेश्वर के नाम के लिए,
इस्राएली राष्ट्र के पवित्र परमेश्वर के लिए
उन्हें लाएंगे।
विदेशी कारीगर तेरी शहरपनाह बनाएंगे,
उनके राजा तेरी सेवा करेंगे।
यद्यपि मैंने अपने क्रोध में तुझे दु:ख दिया था
तथापि अब तुझसे प्रसन्न हो मैंने तुझ पर
दया की है।
तेरे प्रवेश-द्वार निरन्तर खुले रहेंगे,
वे दिन-रात कभी बन्द न होंगे,
ताकि लोग अपने-अपने राष्ट्र का धन
तेरे पास ला सकें,
उनके राजा उनकी अगुआई करेंगे।
जो राष्ट्र और जो राज्य तेरी सेवा नहीं
करेगा,
वह नष्ट हो जाएगा।
ऐसे राष्ट्र पूर्णत: नष्ट हो जाएंगे।
लबानोन प्रदेश का वैभव तेरे पास आएगा:
मेरे पवित्र स्थान की साज-सज्जा के लिए
सनोवर, देवदार और चीड़ वृक्षों की इमारती
लकड़ी
तेरे पास आएगी।
मैं उस स्थान को जहां मैं चरण रखता हूं,
महिमा प्रदान करूंगा।
जिन्होंने तुझपर अत्याचार किया था,
उनकी सन्तान सिर झुकाए हुए तेरे पास
आएगी,
जो तुझसे घृणा करते थे,
वे तेरे चरणों पर गिरकर तुझे साष्टांग
प्रणाम करेंगे।
वे तुझे इस नाम से पुकारेंगे
'प्रभु की नगरी : सियोन,
इस्राएली राष्ट्र के पवित्र परमेश्वर का
नगर।'
तू त्याग दी गई थी,
लोग तुझसे घृणा करते थे,
और तुझमें से होकर नहीं जाते थे।
पर मैं तुझे सदा के लिए सभ्यता प्रदान
करूंगा,
युग-युगान्त के लिए तुझे आनन्दमयी कर
दूंगा।
तू राष्ट्रों का दूध पीएगी,
तू राजाओं का स्तन चूसेगी,
और तुझे अनुभव होगा
कि मैं प्रभु तेरा उद्धारकर्ता हूं,
मैं तेरा मुक्तिदाता हूं।
मैं याकूब वंश का सर्वशक्तिमान परमेश्वर
हूं।
मैं आराधकों को प्रेरित करूंगा,
और वे कांस्य के बदले सोना,
लोहा के बदले चांदी,
लकड़ी के बदले कांस्य,
पत्थर के बदले लोहा लाएंगे।
मैं शान्ति को तेरा निरीक्षक
और धार्मिकता को तेरा पदाधिकारी बना
दूंगा।
तेरे देश में हिंसा की घटना फिर कभी नहीं
सुनी जाएगी,
और न तेरी सीमाओं के भीतर विध्वंस
और विनाश होगा।
तू अपने शहरपनाह का नाम 'उद्धार'
और प्रवेश-द्वार का नाम 'स्तुति' रखेगी।
दिन में तुझे आकाश के लिए सूर्य की
आवश्यकता न होगी:
और न रात में चन्द्रमा की चांदनी की।
किन्तु प्रभु तेरा शाश्वत प्रकाश होगा
तेरा परमेश्वर ही तेरा तेज होगा।
तेरा यह सूर्य कभी अस्त न होगा,
और न चन्द्रमा की

क्योंकि प्रभु तेरा शाश्वत् प्रकाश होगा,
और तेरे शोक के दिन समाप्त हो जाएंगे।
तेरे सब निवासी धार्मिक होंगे
वे सदा के लिए इस देश पर अधिकार
  करेंगे;
जिससे मेरी महिमा हो।
वे लोग मेरे पौधे की शाखाएं हैं
इन्हें मैंने अपने हाथ से रचा है।
उनमें से छोटे से छोटे व्यक्ति से कुल बनेगा
सबसे दुर्बल मनुष्य से शक्तिशाली राष्ट्र
  उद्भव होगा,
मैं प्रभु हूं,
ठीक समय पर, मैं इसे अविलम्ब पूर्ण
  करूंगा।

१ अध्याय ६० में नबी यशायाह ने पृथ्वी का किस प्रकार वर्णन किया है? क्या यह वर्णन हमारे देश पर लागू होता है?
२ अध्याय ६१ : ४–७ में नबी यशायाह कौन-सी नबूवत (भविष्यवाणी) कर रहे हैं?
३ बाइबिल हमें सिखाती है कि हम पृथ्वी पर केवल एक बार जन्म लेते हैं। मृत्यु के बाद या तो हमें परमेश्वर का सत्संग-सहभागिता प्राप्त होती है अथवा शाश्वत मृत्यु। यीशु मसीह को उद्धारकर्ता स्वीकार करने पर परमेश्वर का सत्संग प्राप्त होता है। इस सत्संग का जीवन नबी यशायाह ने ६० : १९–२२ में किस प्रकार वर्णन किया है?

३६. सत्तर वर्षों के लिए निष्कासन

(२ इतिहास ३६ : १–२३)

परमेश्वर ने अपने नबी यशायाह के माध्यम से यहूदा प्रदेश के निवासियों को अनेक चेतावनियां दीं, उन्हें बार-बार अपने असीम अपार प्रेम का सन्देश सुनाया, किन्तु उन्होंने नबी यशायाह की नबूवत पर ध्यान नहीं दिया। वे अपने पापमय मार्ग पर चलते रहे। वे दुष्कर्म करते रहे, और परमेश्वर से दूर होते गए। यहूदा और बिन्यामिन कुल भी अत्यन्त दुष्कर्मी हो गए थे। उन्हें भी स्वदेश से निष्कासित होना होगा। लेकिन परमेश्वर उन्हें पूर्णतः नष्ट नहीं कर सकता। अन्यथा वह अपने वचन को कैसे पूर्ण करेगा। उसने वचन दिया है कि संसार के उद्धारकर्ता का जन्म दाऊद के राजवंश में होगा। अतः यहूदा और बिन्यामिन कुल के लोग सत्तर वर्ष के लिए स्वदेश से निष्कासित हुए, और उस अवधि की समाप्ति पर वे स्वदेश लौट आए।

सिदकियाह का राज्य

जब सिदकियाह राजा बना तब वह इक्कीस वर्ष का था। उसने ग्यारह वर्ष तक राजधानी यरूशलम में राज्य किया। उसने अपने प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में दुष्कर्म किए। प्रभु ने नबी यिर्मयाह के माध्यम से उसको सन्देश दिया था। किन्तु उसने स्वयं को विनम्र नहीं किया। राजा नबूकदनेस्सर ने उसको परमेश्वर की शपथ दी थी कि वह उससे विद्रोह नहीं करेगा।
उसने परमेश्वर की शपथ की उपेक्षा की और राजा नबूकदनेस्सर से विद्रोह किया।
राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर के प्रति अपने हृदय को कठोर बना लिया था। हठ में
ऐंठ गई थी, और वह प्रभु से विमुख हो गया था। यहां तक कि प्रमुख पुरोहित

और जनता के प्रतिष्ठित लोग भी विभिन्न जातियों की घृणित प्रथाओं को मानने लगे थे, और यों प्रभु के प्रति बहुत विश्वासघात करते थे। प्रभु परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति से यरूशलम में अपने भवन को पवित्र किया था, किन्तु उन्होंने उसको अपवित्र कर दिया।

फिर भी उनके पूर्वजों का प्रभु परमेश्वर अपने निज लोगों तथा अपने निवास-स्थान पर दयापूर्ण दृष्टि करता रहा। इसलिए वह उनको समझाने के लिए निरन्तर अपने सन्देश-वाहक भेजता रहा। किन्तु वे परमेश्वर के सन्देश-वाहकों का मजाक उड़ाते रहे। उन्होंने परमेश्वर के सन्देश को तुच्छ समझा, उसके नबियों की हंसी की। तब अन्त में प्रभु की क्रोधाग्नि उसके निज लोगों पर भड़क उठी, और उसको बुझाने की किसी में सामर्थ्य न थी, कोई इलाज न रह गया।

यरूशलम का विनाश

अत: प्रभु ने अपने निज लोगों के विरुद्ध कसदी कौम के राजा को बुलाया, जिसने उनके युवकों को पवित्र स्थान में तलवार से मौत के घाट उतार दिया। राजा ने किसी पर दया नहीं की, न बच्चों पर न कन्याओं पर, न प्रौढ़ों पर न बूढ़ों पर। प्रभु ने उन सबको कसदी कौम के राजा के हाथ में सौंप दिया। वह परमेश्वर के भवन के सब छोटे-बड़े पात्र, प्रभु-भवन का सम्पूर्ण कोष, यहूदा प्रदेश के राजा और उसके उच्चाधिकारियों का खजाना लूटकर बेबीलोन ले गया। उसके सैनिकों ने परमेश्वर के भवन में आग लगा दी। उन्होंने यरूशलम की शहरपनाह तोड़ दी। उन्होंने यरूशलम नगर के सब महलों को आग में भस्म कर दिया और उसके बहुमूल्य पात्रों को नष्ट कर दिया। जो तलवार की धार से बच गए थे, वह उनको बन्दी बनाकर बेबीलोन में गया। जब तक फारस राज्य की स्थापना न हुई वे कसदी कौम के राजाओं के गुलाम बने रहे। यह सब इसलिए हुआ क्योंकि प्रभु ने अपने नबी यिर्मयाह के माध्यम से ऐसा ही कहा था, और इस्राएल देश को विश्राम मिला। सत्तर वर्ष तक देश उजाड़ रहा, और उसने विश्राम मनाया।

यहूदियों की वापसी

फारस देश के सम्राट कुस्रू के राज्यकाल का प्रथम वर्ष था। उस वर्ष प्रभु ने नबी यिर्मयाह के मुख से कहे गए अपने वचन को पूरा करने के लिए सम्राट कुस्रू के हृदय को उत्प्रेरित किया कि वह अपने समस्त साम्राज्य में यह घोषणा करे, और उसको लिपिबद्ध कर ले: 'फारस देश के सम्राट कुस्रू का यह आदेश है: स्वर्ग के परमेश्वर, प्रभु ने पृथ्वी के समस्त देश मुझे प्रदान किए और मुझे यह आज्ञा दी कि मैं यहूदा प्रदेश के यरूशलम नगर में उसके लिए एक भवन बनाऊं। उसके निज लोगों में से जो कोई भी तुम्हारे मध्य में निवास कर रहे हैं, उनके साथ प्रभु परमेश्वर हो, वे यरूशलम नगर को जाएं।'

१. यहूदा प्रदेश के अन्तिम राजा सिदकियाह ने कौन-सा दुष्कर्म किया?
२. कसदी सेना ने यरूशलम के पवित्र मन्दिर के साथ क्या किया, जिसको राजा सुलेमान ने परमेश्वर की महिमा के लिए बनवाया था?

३७. यहूदियों की निष्कासन से वापसी

(एज्रा १:१–७, ३)

सत्तर वर्ष बीत गए। परमेश्वर की इच्छा अनुसार यहूदा और बिन्यामिन कुल के लोग स्वदेश लौटे, जो परमेश्वर ने उनको दिया था। वे निष्कासन से लौट कर यरूशलम का मन्दिर पुन: बनाने लगे। इसी स्थान पर पुराने नियम का इतिहास समाप्त होता है।

परमेश्वर ने अपने एक भक्त अब्राहम को चुना। उसने उससे एक कौम का उद्भव किया। इस कौम के लोगों को मिस्र देश की गुलामी से निकाला, और उन्हें एक नया देश प्रदान किया। वह उनके साथ उनके पापों, दुष्कर्मों के बावजूद उनके साथ प्रेममय, पिता जैसा, व्यवहार करता रहा।

जैसा कि हमने पुराना नियम के इतिहास में पढ़ा, इस्राएली लोग परमेश्वर पर अटूट विश्वास नहीं करते थे। परन्तु परमेश्वर अपने वचन के प्रति सच्चा था। उसने कहा था कि वह इस्राएली कौम में संसार के उद्धारकर्ता को उत्पन्न करेगा, और जो व्यक्ति उस उद्धारकर्ता पर विश्वास करेगा और उसको अपना मुक्तिदाता मानेगा, परमेश्वर उसके पाप क्षमा करेगा, और अपने सन्तान में उसको पुन ग्रहण करेगा।

अत निष्कासित लोगों में से मुट्ठी-भर स्त्री-पुरुष स्वदेश लौटे, और यहूदी राष्ट्र के रूप में पुन स्थापित हुए। इन्हीं बचे हुए इस्राएली—अब यहूदी—लोगों में प्राय चार सौ वर्ष बाद एक गरीब परिवार में, जो राजा दाऊद का राज-वंश था, संसार के उद्धारकर्ता, परमेश्वर-पुत्र यीशु मसीह का जन्म होना है।

सम्राट कुस्रू की घोषणा

फारस देश के सम्राट कुस्रू के राज्य-काल का प्रथम वर्ष था। उस वर्ष प्रभु ने नबी यिर्मयाह के मुख से कहे गए अपने वचन को पूरा करने के लिए सम्राट कुस्रू के हृदय को उत्प्रेरित किया कि वह अपने समस्त साम्राज्य में यह घोषणा करे, और उसको लिपिबद्ध कर ले

फारस देश के सम्राट कुस्रू का यह आदेश है स्वर्ग के परमेश्वर, प्रभु ने पृथ्वी के समस्त देश मुझे प्रदान किए और मुझे यह आज्ञा दी कि मैं यहूदा प्रदेश के यरूशलम नगर में उसके लिए एक भवन बनाऊं। उसके निज लोगों में से जो कोई भी तुम्हारे मध्य में निवास कर रहे हैं, उनके साथ परमेश्वर हो। वे यहूदा प्रदेश के यरूशलम नगर में जाएं, और इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर के भवन का पुनर्निर्माण करें—वही परमेश्वर है, और वह यरूशलम में निवास करता है। इस्राएली कौम के बचे हुए लोग, अपने-अपने निवास-स्थान के लोगों का सहयोग प्राप्त करेंगे। उस स्थान के निवासी चांदी, सोना, माल-असबाब और पशुओं से उनकी सहायता करेंगे। इनके अतिरिक्त वे स्वेच्छा से परमेश्वर के भवन के लिए, जो यरूशलम में है, भेंट चढ़ाएंगे।

यहूदा और बिन्यामिन पितृ-कुलों के अगुवे, पुरोहित और उप-पुरोहित तथा वे सब लोग यहूदा प्रदेश जाने के लिए तैयार हुए जिनके हृदय में प्रभु परमेश्वर ने यरूशलम नगर में स्थित अपने भवन के पुनर्निर्माण के लिए उत्प्रेरित किया। उनके पड़ोसियों ने चांदी के पात्रों, सोना, माल-असबाब, पशु और कीमती वस्तुओं से उनकी सहायता की। इनके अतिरिक्त उन्होंने स्वेच्छा से भेंट भी चढ़ाई। सम्राट कुस्रू ने उन पवित्र पात्रों को निकाला, जिनको राजा नबूकदनेस्सर यरूशलम के प्रभु-भवन से लूटकर ले गया और अपने देवताओं के मन्दिर में रख दिया था।

परमेश्वर की आराधना की पुन. प्रतिष्ठा

कुलपति इस्राएल के वंशज अपने-अपने नगर में बस चुके थे। जब सातवां महीना आया तब सब इस्राएली संगठित होकर यरूशलम में एकत्र हुए। उस समय येशू बेन-योसादाक सहयोगी पुरोहितों तथा जरुब्बाबेल बेन-शालतीएल अपने भाई-बन्धुओं के साथ हुए। उन्होंने परमेश्वर के जन मूसा की व्यवस्था के अनुसार वेदी पर अग्नि-बलि के लिए इस्राएली राष्ट्र के परमेश्वर की वेदी बनाई। उन्होंने वेदी को उसी स्थान पर

तैयार किया जहां वह पहले थी।

वे इस देश में निवास करनेवाले आमगी लोगों से डरते थे। वे प्रात और सन्ध्या समय वेदी पर प्रभु को अग्नि-बलि चढ़ाने लगे। उन्होंने व्यवस्था के अनुसार मण्डपों का पर्व मनाया, और नित्य, प्रतिदिन के लिए निर्धारित अग्नि-बलि चढ़ाई। इसके पश्चात् वे निरन्तर अग्नि-बलि, नवचन्द्र-पर्व की बलि, निर्धारित प्रभु-पर्वों पर चढ़ाई जानेवाली बलि, और प्रभु को स्वेच्छा से चढ़ाई जानेवाली बलि अर्पित करने लगे। उन्होंने सातवें महीने के प्रथम दिन से प्रभु को बलि चढ़ाना आरम्भ किया, पर प्रभु के मन्दिर की नींव अब तक नहीं डाली गई थी। अत उन्होंने शिल्पकारों और बढ़इयों को रुपया दिया। उन्होंने सीदोन तथा सोर देश के निवासियों को खाने-पीने की सामग्री और तेल दिया ताकि वे देवदार की लकड़ी को लबानोन देश से समुद्र तट तक, याफा नगर तक पहुंचा दें, जैसा फारस के सम्राट कुस्रू ने उन्हें अधिकार प्रदान किया था।

यरूशलम में परमेश्वर के भवन में वापस लौटने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने में जरूब्बाबेल बेन-शालतिएल तथा यहोशू बेन-योसादाक ने अपने सहयोगी पुरोहितों, उप-पुरोहितों, और उन सब इस्राएलियों के साथ जो निष्कासन से यरूशलम वापस आए थे, भवन के पुनर्निर्माण का कार्य आरम्भ किया।

उन्होंने बीस वर्ष से अधिक आयु के उप-पुरोहितों को प्रभु-भवन के निरीक्षण-कार्य का दायित्व सौंपा। येशुअ, उसके पुत्र और भाई-बन्धु तथा कदमीएल और उसके पुत्र, जो यहूदा कुल के वंशज थे, वे सब परमेश्वर के भवन में कार्य करनेवाले मजदूरों के काम का निरीक्षण करते थे। उनके साथ हेनादाद के वंशज और उप-पुरोहित भी थे, जो उनके भाई-बन्धु और सन्तान थे।

जब कारीगरों ने प्रभु के मन्दिर की नींव डाली तब पुरोहित अपने राजकीय वस्त्र पहिनकर तथा हाथ में तुरहियां लेकर आए। उनके साथ आसाप के वंशज, उप-पुरोहित झांझ लेकर आए। तब उन्होंने इस्राएल देश के राजा दाऊद के निर्देशन के अनुसार प्रभु की स्तुति की। उन्होंने उत्तर-प्रत्युत्तर की पद्धति पर प्रभु को धन्यवाद देते हुए उसकी स्तुति में यह गीत गाया

'प्रभु भला है,
वह इस्राएल पर सदा करुणा करता है।'

इन शब्दों में उन्होंने प्रभु की स्तुति की। उसी समय प्रभु के भवन की नींव डाली गई। सब उपस्थित लोगों ने उच्च स्वर में जय-जयकार किया। यद्यपि जब प्रभु के भवन की नींव डाली गई तब अनेक लोगों ने हर्ष से जय-जयकार किया था, तथापि उस समय अनेक पुरोहित, उप-पुरोहित, पितृकुलों के मुखिए, और वृद्ध लोग, जिन्होंने पुराना भवन देखा था, शोक से रो पड़े। जय-जयकार और रोने का स्वर दोनों मिल गए। लोग अन्तर न जान सके कि यह रोने का स्वर है, अथवा जय-जयकार का, क्योंकि लोग अत्यन्त उच्च स्वर में चिल्ला रहे थे, उनकी आवाज बहुत दूर तक सुनाई दे रही थी।

१ एज्रा १ २–४ में फारस के राजा साइरस (कुस्रू) की कौन-सी राजाज्ञा का वर्णन हुआ है ?
२ यरूशलम के मन्दिर के पुनर्निर्माण का वर्णन करो (एज्रा ३)।

भजन संहिता

जन-साधारण, स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़कियाँ बाइबिल की जिस पुस्तक को सबसे अधिक पसन्द करते है, उसका नाम है—भजन संहिता, कविताओं—गीतों का संग्रह। यहूदी भक्तों ने परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को इन कविताओं मे उण्डेला है। इस प्रेम के अतिरिक्त ऐतिहासिक, राष्ट्रीय और निजी कठिनाइयों का भी उल्लेख हुआ है। कवि कहते है कि जब-जब वे अथवा उनका राष्ट्र संकट मे पड़ा, उन्होंने परमेश्वर को पुकारा, और परमेश्वर ने उनकी मदद की। अनेक कविताएं हमारे व्यक्तिगत जीवन के लिए लिखी गई है कि हमें परमेश्वर के सम्मुख किस प्रकार का जीवन बिताना चाहिए। आइए, हम स्वयं ये कविताएं पढ़े, और परमेश्वर की आशीष प्राप्त करे।

३८. धार्मिक मनुष्य: अधार्मिक मनुष्य

(भजन १)

सज्जन और दुर्जन, परमेश्वर की भक्ति करनेवाले और पापमय आचरण करनेवाले दो प्रकार के मनुष्यों का प्रस्तुत भजन मे प्रभावशाली वर्णन हुआ है।

धन्य है वह मनुष्य
जो दुर्जनों की सम्मति पर नही चलता,
जो पापियों के मार्ग पर खड़ा नही होता,
और जो उपहास-प्रिय झुण्ड मे नही बैठता,
पर उसका सुख प्रभु की व्यवस्था मे है,
और वह दिन-रात उसका पाठ करता है।
वह उस वृक्ष के समान है
जो नहर के तट पर रोपा गया,
जो अपनी ऋतु मे फलता है,
और जिसके पत्ते मुरझाते नही।
जो कुछ धार्मिक मनुष्य करता है, वह सफल
होता है।
पर अधार्मिक मनुष्य ऐसे नहीं होते।
वे भूसे के समान है, जिसे पवन उड़ाता है।
अतः न अधार्मिक मनुष्य अदालत में,
और न पापी मनुष्य धार्मिकों की मण्डली
मे खड़े हो सकेंगे।
प्रभु धार्मिकों का आचरण जानता है।
परन्तु अधार्मिक अपने आचरण के कारण
नष्ट हो जाएंगे।

१ परमेश्वर-भक्त धार्मिक मनुष्य की तुलना किससे की गई है?
२ दुर्जन की उपमा किससे दी गई है?

३९. परमेश्वर की महिमा: मानव का सम्मान

(भजन ८)

प्रस्तुत गीत मे एक ओर परमेश्वर की महानता का वर्णन है तो दूसरी ओर मनुष्य के आदर—सम्मान की चर्चा है। ध्यान दीजिए, परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप मे रचा है।

हे प्रभु, हमारे स्वामी!
तेरा नाम समस्त पृथ्वी पर कितना महान
है।
महिमा का स्तुतिगान स्वर्ग पर होता है
और बच्चों के मुख से तेरी स्तुति
होती है।
अपने वैरियों के कारण,
अपने शत्रु और प्रतिशोधी का अन्त करने
के लिए
तूने एक गढ़ बनाया है।

जब मै देखता तेरे आकाश को, जो तेरा हस्त-शिल्प है,
चन्द्रमा एव नक्षत्रो को जिन्हे तूने स्थापित किया है,
तब मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे।
इन्सान क्या है कि तू उसकी सुधि ले ?
तोभी तूने उसे ईश्वर से कुछ घटकर बनाया,
और उसे महिमा और सम्मान का मुकुट पहनाया।
तूने उसे अपने हस्त-शिल्प पर अधिकार दिया,
तूने सब कुछ उसके पावों-तले कर दिया।
भेड-बकरी, गाय-बैल,
और वन-पशु भी,
आकाश के पक्षी, सागर की मछलिया,
और वह सब कुछ जो समुद्र के मार्गो मे विचरण करता है।

हे प्रभु, हमारे स्वामी,
तेरा नाम समस्त पृथ्वी पर कितना महान है !

१ प्रस्तुत भजन मे परमेश्वर का कैसा चित्र अकित किया गया है ?
२ प्रस्तुत भजन के आधार पर मनुष्य का चित्र अकित करो।

४०. परमेश्वर के कार्य और उसकी व्यवस्था

(भजन १९)

परमेश्वर-भक्त कवि प्रस्तुत भजन मे उन कार्यों का उल्लेख करता है, जो परमेश्वर ने प्रकृति मे, सृष्टि मे किए है। दूसरी ओर बाइबिल में सकलित परमेश्वर के वचनो, शब्दो, उपदेशो, आज्ञाओ की विशेषता और उनके महत्व को बताया है।

आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है,
आकाश का मेहराब उसके हस्त कार्य को प्रकट करता है।
दिन से दिन निरन्तर वार्तालाप करता है,
और रात, रात को ज्ञान प्रदान करती है।
न तो वाणी है, और न शब्द ही है,
उनका स्वर सुना नही गया।
फिर भी उनकी आवाज समस्त पृथ्वी पर फैल जाती है,
और पृथ्वी के सीमान्त तक उनके शब्द।
परमेश्वर ने आकाश के मध्य सूर्य के लिए
एक शिविर स्थापित किया है।
वह ऐसे उदित होता है, जैसे दूल्हा मण्डप से बाहर आता है।
वह वीर धावक के समान
अपनी दौड दौडने मे आनन्दित होता है।
आकाश का एक सीमान्त उसका उदयाचल है,
और उसके परिभ्रमण का क्षेत्र दूसरे सीमान्त
उसके ताप से कुछ नही छूटता।

प्रभु की व्यवस्था सिद्ध है, आत्मा को सजीवन देनेवाली,
प्रभु की साक्षी विश्वसनीय है, बुद्धिहीन को बुद्धि देनेवाली,
प्रभु के आदेश न्याय-सगत है, हृदय को हर्षानेवाले,
प्रभु की आज्ञा निर्मल है, आखो को आलोकित करनेवाली,
प्रभु का भय पवित्र है, सदा स्थिर रहनेवाला
प्रभु के न्याय-सिद्धान्त सत्य है, वे सर्वथा धर्ममय है।
वे सोने से अधिक चाहने योग्य है,
वस्तुत शुद्ध सोने से भी अधिक,
वे मधुकोष से टपकती मधु की बूदो से अधिक मधुर है।

इनके द्वारा तेरा सेवक सावधान भी किया जाता है,

अपनी भूलो का ज्ञान किसे हो सकता है?
तू, प्रभु मुझे गुप्त दोषो से मुक्त कर।
अपने सेवक को धृष्ट पाप करने से रोक,
उसे मुझ पर प्रभुत्व मत करने दे।
तब मै निरपराध होऊगा,
और बडे अपराधो से मुक्त हो जाऊगा।
हे प्रभु, मेरी चट्टान और मेरे उद्धारक!
मेरे मुह के शब्द और हृदय का ध्यान
तू स्वीकार करे।

१ सृष्टि-प्रकृति परमेश्वर के विषय मे हमे क्या सिखाती है?
२ परमेश्वर की व्यवस्था (धर्म-नियमो) का वर्णन करो।

४१. व्यथित व्यक्ति की पुकार

(भजन २२)

प्रस्तुत भजन परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है, और कवि भविष्यवाणी करता है कि ससार का उद्धारकर्ता यीशु सलीब पर हमारे लिए दु ख भोगेगा।

हे परमेश्वर! हे मेरे परमेश्वर! तूने
मुझे क्यो छोड दिया?
तू मेरी सहायता क्यो नही करता?
तू मेरा कराहना क्यो नही सुनता?
हे परमेश्वर, मै दिन मे पुकारता हू, पर तू
उत्तर नही देता,
रात मे भी मुझे शान्ति नही मिलती।

फिर भी तू पवित्र है,
इस्राएल की आराधना मे विद्यमान है।
तुझ पर हमारे पूर्वजो ने भरोसा किया था,
उन्होने भरोसा किया, और तूने उनको
मुक्त किया था।
तुझको ही उन्होने पुकारा था, और वे बच
गए थे।
तुझ पर ही उन्होंने भरोसा किया, और वे
हताश नही हुए।

परन्तु मै मनुष्य नही, कीडा हू,
मनुष्यो द्वारा उपेक्षित, लोगो द्वारा
तिरस्कृत।
मुझे देखनेवाले मेरा उपहास करते है,
वे ओंठ बिचकाते है, सिर हिलाकर यह
कहते है,
"यह प्रभु पर निर्भर रहा, वही इसे मुक्त
करे।
वही इसको छुडाए, क्योकि प्रभु मे यह
हर्षित होता है।"
[illegible] था, जिसने मुझे गर्भ से निकाला,
मुझे मेरी मा की गोद मे सुरक्षित
रखा।
मै जन्म से ही तुझको सौपा गया था,
माता के गर्भ से ही तू मेरा परमेश्वर रहा है।
मुझसे दूर न रह,
क्योकि सकट निकट है,
और मेरा कोई सहायक नही है।
अनेक साडो ने मुझे घेर लिया है।
बाशान के हिंस्र साडो ने मेरे चारो ओर
घेरा डाला है।
वे भूखे, गरजते सिंह जैसे
मेरी ओर मुह फाड रहे है।
मै जल के सदृश उण्डेला गया हू,
मेरी अस्थिया जोड से उखड गई है,
मेरा हृदय मोम-सा बन गया है,
वह मेरी छाती के भीतर पिघल गया है।
मेरा प्राण ठीकरे के समान सूख गया।
और मेरी जीभ तालू से चिपक गई,
तू मुझे मृत्यु की धूल मे मिलाता है।
कुत्तो ने मुझे घेर लिया है,
कुकर्मियो की भीड ने चारो ओर घेरा डाला
है।
उन्होंने मेरे हाथ-पैर बेध डाले है।
मै अपनी एक-एक हड्डी गिन सकता हू।
वे घूरते हुए मुझ पर दृष्टि डालते है।
उन्होंने मेरे कपडे आपस मे बाट लिए
और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली।

परन्तु प्रभु तू दूर न रह।
मेरे शक्तिशाली प्रभु, अविलम्ब मेरी

सहायता कर।
तलवार से मेरे प्राणों की,
कुत्ते के पन्जे से मेरे जीवन की रक्षा कर।
मुझे सिंह के मुह से,
मेरे पीड़ित प्राण को, साड के सींग से बचा।

मैं अपने बन्धुओं में तेरा नाम घोषित करूगा।
मैं मण्डली के मध्य तेरी स्तुति करूगा
प्रभु के भक्तो, उसकी स्तुति करो!
याकूब के वंशजो, उसकी स्तुति करो!
इस्राएल के वंशजो, उसकी भक्ति करो!
क्योंकि प्रभु ने पीड़ित व्यक्ति की पीड़ा का
तिरस्कार नही किया,
और न उसे घृणित ही समझा,
उसने पीड़ित से अपना मुख नही छिपाया,
किन्तु जब पीड़ित व्यक्ति ने प्रभु की दुहाई
दी
तब उसने उसको सुना।
महासभा में मेरे स्तुतिगान का स्रोत तू ही है,
मैं तेरे भक्तों के समक्ष अपने व्रत पूर्ण करूगा।
पीड़ित व्यक्ति भोजन कर तृप्त होंगे,
प्रभु को खोजनेवाले प्रभु की स्तुति करेंगे।
तुम्हारा हृदय सदा धड़कता रहे!

समस्त पृथ्वी की कौमें
प्रभु का नाम स्मरण करेंगी,
और प्रभु की ओर उन्मुख होंगी,
राष्ट्रों के परिवार उसके सम्मुख आराधना
करेंगे।
क्योंकि राज्य प्रभु का है,
और वह राष्ट्रों पर शासन करता है।
निश्चय धरती के समस्त अहंकारी
प्रभु के सम्मुख झुकेंगे,
वह, जो स्वयं को जीवित नही रख सकता,
और वे, जो मिट्टी में मिल जाते हैं, घुटने
टेकेंगे।
भावी सन्तान प्रभु की सेवा करेगी,
लोग भावी पीढ़ी को प्रभु के विषय में
बताएंगे,
उसके उद्धार की घोषणा आगामी सन्तान
से करेंगे,
कि प्रभु ने उसे पूर्ण किया है।

१ मत्ती २७ ४६ और भजन २२ १ की तुलना करो। क्या ये शब्द यीशु मसीह के लिए लिखे गए है?
२ पद २७–३१ अन्तिम दो अवतरण (पेराग्राफ्स) ध्यान से पढ़िए और बताइए कि इन पदों में यीशु मसीह की विजय का कैसा उल्लेख हुआ है। उद्धार की कहानी किन लोगों के लिए है?

४२ प्रभु मेरा चरवाहा है

(भजन २३)

कदाचित् 'भजन संहिता' के सब गीतों में से प्रस्तुत भजन सर्वाधिक लोकप्रिय है। यह बच्चे-बच्चे की जबान पर रहता है। आप भी इसको कंठस्थ कर लीजिए, और फुरसत के समय इसके सुन्दर भावों पर विचार कीजिए। कवि ने परमेश्वर के स्वभाव की कल्पना एक चरवाहे (मेषपाल) से की है। जैसा चरवाहा अपने भेड़ों की देखभाल करता है वैसा ही परमेश्वर अपने भक्तों की चिन्ता करता है।

प्रभु मेरा मेषपाल* है, मुझ-भेड़ को अभाव
न होगा।
वह मुझे हरित भूमि पर विश्राम कराता है,
वह मुझे झरने के शान्त तट पर ले जाता है,
वह मुझे नवजीवन देता है,
वह अपने नाम के लिए

*अथवा, 'चरवाहा'

धर्म के मार्ग पर मेरा नेतृत्व करता है।
यद्यपि मै घोर अन्धकारमय घाटी मे गुजरता हूँ,
तो भी अनिष्ट से नही डरता,
क्योंकि हे प्रभु, तू मेरे साथ है।
तेरी सोंटी, तेरी लाठी मुझे सहारा देती है।

मेरे शत्रुओ की उपस्थिति मे
तू मेरा आतिथ्य करता है,
तू तेल से मेरे सिर का अभ्यंजन करता है।
मेरा प्याला छलक रहा है।
निश्चय भलाई और करुणा
जीवन भर मेरा अनुसरण करेगी,
मै प्रभु के घर मे युग-युगान्त निवास करूँगा।

१ चरवाहा अपने भेड़ों के लिए क्या-क्या करता है? ऐसे ही परमेश्वर हमारे लिए क्या-क्या करता है?
२ क्या आप हिन्दी भाषा मे प्रस्तुत भजन के आधार पर एक गीत या कविता लिख सकते हैं? कोशिश कीजिए।

४३. महिमामय राजा

(भजन २४)

प्रस्तुत गीत मे कवि कल्पना करता है कि परमेश्वर समस्त सृष्टि का राजा अधिपति है। कवि राजा के रूप मे उसकी स्तुति करता है।

पृथ्वी और उसकी परिपूर्णता,
संसार और उसके निवासी—सब प्रभु के है,
क्योंकि प्रभु ने सागरो पर उसे स्थापित किया है,
उसने सरिताओ पर उसे स्थिर किया है।

प्रभु के पर्वत पर कौन चढ सकता है?
कौन उसके पवित्र स्थान पर खड़ा हो सकता है?
वह जिसके हाथ निर्दोष और हृदय निर्मल है,
वह जो व्यर्थ बातो पर मन नही लगाता,
वह जो धोखा देने के लिए शपथ नहीं खाता।
वह प्रभु से आशीष पाएगा,
उसका उद्धारक परमेश्वर उसे निर्दोष सिद्ध करेगा।

ऐसे है वे लोग, जो प्रभु के जिज्ञासु है,
जो याकूब के परमेश्वर के दर्शनाभिलाषी है।

ओ द्वारो, मस्तक उन्नत करो।
ओ स्थायी फाटको, ऊँचे हो जाओ,
जिससे महिमा का राजा प्रवेश करे।
यह महिमा का राजा कौन है?
प्रभु, समर्थ और पराक्रमी,
प्रभु, युद्ध मे पराक्रमी।
ओ द्वारो, मस्तक उन्नत करो।
ओ स्थायी फाटको, ऊँचे हो जाओ,
जिससे महिमा का राजा प्रवेश करे।
यह महिमा का राजा कौन है?
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु,
वही महिमा का राजा है।

१ आरम्भिक एक और दो पदो मे परमेश्वर का किस प्रकार वर्णन किया गया है।
२. जो लोग परमेश्वर का सत्संग प्राप्त करना चाहते है, उनसे परमेश्वर क्या चाहता है? (पद ३–६) यीशु मसीह हमारे लिए परमेश्वर की इस माग को किस प्रकार पूरा करते है?

४४. प्रभु मेरी ज्योति और मेरा सहायक है

(भजन २७)

'भजन-महिमा' के अनेक गीत-कविताएँ राजा दाऊद के द्वारा लिखी गई क्योंकि वह वीर योद्धा के साथ-ही-साथ कवि भी था। प्रस्तुत गीत दाऊद स्वयं अनुभव पर आधारित है। जैसा कि आप जान चुके है कि राजा शाऊल दाऊद को मार डालने की बार-बार कोशिश की थी।

ु मेरी ज्योति और मेरा सहायक है।
; मै किससे डरूं ?
ु मेरा जीवन-रक्षक है,
ा मै क्यों भयभीत होऊं ?

ब कुकर्मी मुझे फाड़-खाने के लिए
झ पर आक्रमण करते है,
ब वे मेरे शत्रु, मेरे बैरी
डखड़ाकर गिर पड़ेगे।
द्यपि सेना ने मुझे घेरा है,
ोभी मेरा हृदय आतंकित न होगा,
द्यपि मेरे विरुद्ध युद्ध छिड़ा है,
फर भी मै आश्वस्त रहूंगा।

ने केवल एक वरदान प्रभु से मांगा है
ा जीवन पर्यन्त प्रभु के घर मे निवास करूं,
ौर प्रभु के सौन्दर्य को निहार सकूं,
सके भवन मे दर्शन करूं।
ै इसी वरदान की खोज करूंगा।

भु सकट के दिन मुझे अपने मण्डप मे
छिपा लेगा,
ह अपने शिविर के भीतर मुझे आश्रय
देगा,
ह मुझे चट्टान पर ऊंचा उठाएगा।

ब चारो ओर के शत्रुओ की अपेक्षा मेरा
मस्तक उन्नत होगा,
मै प्रभु के शिविर मे आनन्द-उल्लास से
बलि चढ़ाऊंगा।
मै गीत गाऊंगा, मै प्रभु का स्तुतिगान
करूंगा।

प्रभु, जब मै तुझको पुकारू तब मेरी पुकार
सुन,
मुझ पर कृपा कर और मुझे उत्तर दे।
तूने कहा था 'तुम मेरे मुख की खोज
करो।'
मेरा हृदय तुझसे यह कहता है,
'हे प्रभु, मै तुझको ही खोजता हूं।'
अपना मुख मुझसे न छिपा,
क्रोध मे अपने सेवक को दूर न कर।
तू ही मेरा सहायक था,
हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर!
मेरा परित्याग न कर,
मुझको मत छोड़।
यद्यपि मेरे माता-पिता ने मुझे छोड़ दिया है,
तो भी प्रभु मुझे ग्रहण करेगा।
प्रभु, मुझे अपना मार्ग दिखा,
उन लोगो के कारण जो मेरी घात मे है,
मुझे समतल मार्ग पर ले चल।
मुझे मेरे बैरियो की इच्छा पर न छोड़,
क्योंकि झूठे गवाह मेरे विरुद्ध खड़े हुए है,
वे हिंसा करने की धुन मे है।

मुझे विश्वास है कि मै
जीव-लोक मे प्रभु की भलाई का दर्शन
करूंगा।
प्रभु की प्रतीक्षा करो,
शक्तिशाली बनो, और तुम्हारा हृदय
साहसी हो,
निश्चय ही प्रभु की प्रतीक्षा करो।

१ दाऊद ने परमेश्वर का किस प्रकार वर्णन किया है ?
२ परमेश्वर किस प्रकार दाऊद की रक्षा करेगा ? परमेश्वर हमारी भी रक्षा किस प्रकार करता है ?

४५. दुर्जन की क्षण-भंगुरता

(भजन ३७)

प्रस्तुत गीत मे एक अनुभवी वृद्ध ने श्रोताओ और पाठको को ज्ञान की

पाने वाले हैं।

दुर्जनों के कारण स्वयं को परेशान न करो,
कुकर्मियों के प्रति ईर्ष्यालु न हो।
वे घास के सदृश अविलम्ब काटे जाएंगे।
वे हरी शाक के समान मुरझा जाएंगे।
प्रभु पर भरोसा रखो और भले कार्य करो,
पृथ्वी पर निवास करो और सत्य का पालन
करो।

तब तुम प्रभु से आनन्दित होगे,
और वह तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करेगा।

अपना जीवन मार्ग प्रभु को सौंप दो,
उस पर भरोसा करो तो वह उसे पूर्ण करेगा।
वह तुम्हारी धार्मिकता को ज्योति के सदृश,
और तुम्हारी सच्चाई को
दोपहर की किरणों जैसे प्रकट करेगा।
प्रभु के समक्ष मौन रहो,
और उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा करो,
उस व्यक्ति के कारण स्वयं को परेशान
न करो,
जो अपने कुमार्ग पर फूलता-फलता है,
जो बुरी युक्तियां रचता है।

क्रोध से दूर रहो, और रोष को त्याग दो।
स्वयं को क्षुब्ध न करो,
क्षोभ केवल बुराई की ओर ले जाता है।
दुर्जन नष्ट किए जाएंगे,
परन्तु जो प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं,
वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
कुछ समय पश्चात् दुर्जन नहीं रहेंगे।
तुम उस स्थान को ध्यान से देखोगे,
पर वहां वह नहीं होगा।
दीन-गरीब लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे,
वे अपार समृद्धि में आनन्द करेंगे।

धार्मिक मनुष्य के विरुद्ध दुर्जन षड्‌यन्त्र
रचता है,
वह उसपर अपने दांत पीसता है,
परन्तु प्रभु उस पर हंसता है,
क्योंकि प्रभु देखता है कि
दुर्जन के दिन समीप आ गए।
पीड़ितों और दरिद्रों को
धूमरित करने के लिए,
पर चलनेवालों को मार डालने
के लिए,
दुर्जनों ने तलवार खींची और धनुष [illegible]
पर उनकी तलवार उनके हृदय [illegible]
बेधेगी,
उनके धनुष तोड़े जाएंगे।

दुर्जनों की समृद्धि से
धार्मिक मनुष्य का अल्पांश श्रेष्ठ है।
दुर्जन की भुजा तोड़ी जाएगी,
किन्तु प्रभु धार्मिक मनुष्य का आधार [illegible]

प्रभु निर्दोष व्यक्तियों की आयु [illegible]
दिन जानता है,
उनकी पैतृक सम्पत्ति सदा बनी [illegible]
वे संकट काल में भी लज्जित न होंगे।
वरन अकाल में भी तृप्त रहेंगे।

परन्तु दुर्जन नष्ट हो जाएंगे,
प्रभु के शत्रु घास के फूल के समान हैं।
वे मिट जाएंगे—
वे धुएं में विलुप्त हो जाएंगे।
दुर्जन उधार लेता है पर चुकाता नहीं
परन्तु धार्मिक मनुष्य उदार होता है
और वह उधार देता है।

प्रभु से आशीष पाए हुए मनुष्य
पृथ्वी के अधिकारी होंगे,
किन्तु वे लोग नष्ट हो जाएंगे
जिनको प्रभु ने शाप दिया है।

प्रभु के द्वारा पुरुष के पग स्थिर होते हैं—
जिस व्यक्ति के मार्ग से प्रभु प्रसन्न होता है
वह उसको स्थिर करता है।
यद्यपि वह गिरता है तो भी वह पड़ा [illegible]
नहीं रहेगा,
क्योंकि प्रभु उसके हाथ का आधार है।
मैं भी तरुण था, और अब वृद्ध हूं—
मैंने यह कभी नहीं देखा,
कि प्रभु ने किसी धार्मिक को कभी त्याग
दिया,
और न मैंने उसकी सन्तान को भीख मांगते
पाया।
धार्मिक मनुष्य सदा उदार बना रहता है
और वह उधार देता है।

र वश आशीष का माध्यम बनता है।
मे दूर रहो, और भले कार्य करो,
म देश मे सदा शान्ति मे बसे रहोगे।
प्रभु न्याय से प्रेम करता है,
पने भक्तो को नही छोड़ेगा।
क मनुष्य सदा के लिए सुरक्षित है,
दुर्जन का वश नष्ट हो जाएगा।
क मनुष्य पृथ्वी के अधिकारी होगे।
थ्वी पर सदा निवास करेंगे।
क मनुष्य ज्ञान का पाठ करता है।
सकी जिह्वा न्याय की बाते करती है।
श्वर की व्यवस्था उसके हृदय मे है,
के पैर नही फिसलेगे।
न धार्मिक मनुष्य की घात मे रहता है,
उसकी हत्या की खोज मे रहता है।
धार्मिक मनुष्य को दुर्जन के हाथ मे
नहीं छोड़ेगा—
धार्मिक मनुष्य का न्याय होगा
प्रभु उसे दोषी नहीं ठहराएगा।
भु की प्रतीक्षा करो।
सके मार्ग पर चलते रहो।
ह तुम्हे उन्नत करेगा

और तुम पृथ्वी के अधिकारी बनोगे।
तुम दुर्जनो का विनाश देखोगे।
मैने एक महाबली दुर्जन को देखा था।
वह बरगद वृक्ष के समान विशाल था।
मै पुन वहा से निकला।
तब वह वहां नही था।
यद्यपि मैने उसे खोजा
तो भी वह वहा नही मिला।
निर्दोष व्यक्ति को ध्यान मे रखो,
और सत्यनिष्ठ मनुष्य पर दृष्टि करो।
शान्तिप्रिय व्यक्ति का भविष्य उज्ज्वल होता है।
किन्तु अपराधी पूर्णत नष्ट किए जाएगे,
दुर्जन का भविष्य अन्धकारमय है।
धार्मिक मनुष्यो का उद्धार प्रभु से है,
वह सकट-काल मे उनका सुदृढ गढ है।
प्रभु धार्मिक मनुष्यो की सहायता करता और उन्हे मुक्त करता है,
वह दुर्जनो से उन्हे छुड़ाकर उनकी रक्षा करता है,
क्योकि वे उसकी शरण मे आते है।

वृद्धजन की सलाह को अपने शब्दो मे बताओ।

४६. मुक्ति-प्राप्ति के लिए स्तुतिगान

(भजन ४०)

प्रस्तुत गीत को हम मुक्तिगान कहेगे।

ने धैर्य से प्रभु की प्रतीक्षा करता हू।
उसने मेरी ओर ध्यान दिया
और मेरी दुहाई सुनी है।
प्रभु ने मुझे अन्ध-कूप से,
कीच-दलदल से ऊपर खीचा है,
उसने मेरे पैर चट्टान पर दृढ किए है,
मेरे कदमो को स्थिर किया है।
प्रभु परमेश्वर ने मुझे एक नया गीत सिखाया है,
कि मै उसको प्रभु की स्तुति मे गाऊ।
अनेक जन यह देखकर भयभीत होगे,
और वे प्रभु पर भरोसा करेगे।

धन्य है वह मनुष्य, जो प्रभु पर भरोसा करता है,
जो अभिमानियो का मुह नही ताकता,
जो झूठ की उपासना नही करता।
हे प्रभु, मेरे परमेश्वर!
तूने हमारे प्रति अपने अद्भुत कार्यों
और अभिप्रायो मे वृद्धि की है।
यदि मै लोगो से उनकी चर्चा करू,
यदि मै उनके विषय मे लोगो को बताऊं,
तो मैं बताते-बताते थक जाऊगा,
क्योकि उनकी गिनती नही हो सकती
प्रभु, तेरे तुल्य कोई नही है।

तुझे बलि और भेंट की चाह नही।
तूने मेरे कानो को खोला
कि मै तेरी व्यवस्था का पालन करू,
तुझे अग्नि-बलि और पाप-बलि की आकाक्षा
नही।
अत मैने कहा, 'देख, मै आ गया हू।
पुस्तक मे मेरे विषय मे यह लिखा है।
हे परमेश्वर! मै तेरी इच्छा को पूर्ण कर
सुखी होता हू।
तेरी व्यवस्था मेरे हृदय मे है।'

मैने आराधको की महासभा मे मुक्ति का
सन्देश सुनाया।
देख, मैने अपने ओठो को बन्द नही किया,
प्रभु! तू यह जानता ही है।
मैने तेरी मुक्तिप्रद सहायता को अपने
हृदय मे गुप्त नही रखा,
वरन् तेरी सच्चाई और उद्धार को घोषित
किया।
मैने आराधको की महासभा से
तेरी करुणा और सच्चाई को नही छिपाया।

प्रभु! मुझे अपनी दया से वचित न कर,
तेरी करुणा और सच्चाई मुझे निरन्तर
सुरक्षित रखे।

असख्य बुराइयो ने मेरे ...
कुकर्मों ने मुझे दबा दिया है।
अत मै दृष्टि ऊपर उठाने मे ...
कुकर्म मेरे ... के ...
मेरा हृदय हताश हो गया है।

प्रभु! मेरे उद्धार के लिए ...
प्रभु, अविलम्ब मेरी सहायता ...
जो मेरे प्राण की खोज मे है,
और उसे नष्ट करना चाहते है
वे पूर्णत लज्जित हो और ...
जो मेरी बुराई की कामना करते है
वे पीठ दिखाए और अपमानित हो।
जो मुझसे 'अहा! अहा!' कहते है
वे अपनी लज्जा के कारण ...
जाए।
परन्तु वे लोग जो तेरी खोज करते है
तुझ मे हर्षित और आनन्दित हो।
जो तेरे उद्धार से प्रेम करते है,
वे निरन्तर यह कहते रहे, 'प्रभु महान्'
मै पीडित और दरिद्र हू,
फिर भी तू, स्वामी, मेरी ...
तू मेरा सहायक, मेरा मुक्तिदाता है
हे मेरे परमेश्वर, विलम्ब न कर।

१ कवि के सामने कौन-सी समस्या थी?
२ परमेश्वर हमसे वास्तव मे क्या चाहता है? धार्मिक कर्मकाण्ड ... करना, अथवा उसकी आज्ञाओ को हृदय से पूरा करना? (... ६–१०)

४७. परमेश्वर के लिए तीव्र इच्छा

(भजन ४२)

प्रस्तुत गीत निराशजन के हृदय मे आशा का सचार करता है।

जैसे हरिणी को बहते झरनो की चाह
होती है
वैसे ही, हे परमेश्वर, मेरे प्राण को तेरी
प्यास है।
मेरा प्राण परमेश्वर के,
जीवन्त परमेश्वर के दर्शन का प्यासा है।
कब आऊगा और परमेश्वर के मुख का
दर्शन ...

रात और दिन मेरे आसू ही मेरा ...
रहे है।
लोग निरन्तर मुझसे पूछते है,
'कहा है तेरा परमेश्वर?'
जब मुझे ये बाते स्मरण आती है
तब मेरे हृदय मे तीव्र भाव उमड़ ...
मै लोगों के साथ गया था।

—री।
समूह जय-जयकार और स्तुति के साथ
र्व मना रहा था।
मेरे प्राण, तू क्यो व्याकुल है?
तू हृदय मे अशान्त है?
मेरे प्राण, तू परमेश्वर की आशा कर,
अपने उद्धार को, अपने परमेश्वर को
सराहूगा।

हृदय मे प्राण व्याकुल है।
दन और हर्मोन प्रदेश मे, मिस्आर पर्वत से
मुझको स्मरण करता हू।
रे जल-प्रपात के गर्जन मे सागर सागर
को पुकारता है,
री लहरे-तरगे मेरे ऊपर से गुजर चुकी
है।
दिन मे प्रभु अपनी करुणा भेजता है।
रात मे उसका गीत गाता हू,

और अपने जीवन के परमेश्वर से प्रार्थना
करता हू।
मै अपने परमेश्वर,
अपनी चट्टान से यह पूछता
'तूने मुझे क्यो भुला दिया?
क्यो मै शत्रु के अत्याचार के कारण शोक-
सन्तप्त
मारा-मारा फिरता हू?'
मेरे बैरी ताना मारते है।
वे मानो मेरी देह पर घातक प्रहार करते है।
वे निरन्तर मुझसे यह पूछते है,
'कहा है तेरा परमेश्वर?'
ओ मेरे प्राण, तू क्यों व्याकुल है?
क्यो तू हृदय मे अशान्त है?
ओ मेरे प्राण, तू परमेश्वर की आशा कर,
मै अपने उद्धार को, अपने परमेश्वर को
पुन सराहूगा।

१. प्रस्तुत गीत का रचयिता किस सीमा तक निराश हो चुका था? (पद ३)
२. अपनी निराशा पर कवि किस प्रकार प्रबल हुआ? (पद ११)

४८. परमेश्वर हमारा गढ़ और शक्ति है

(भजन ४६)

प्रस्तुत गीत मे कवि कहता है कि केवल परमेश्वर ही हमारा शरण स्थल है।

परमेश्वर हमारा गढ और शक्ति है,
वह सकट मे उपलब्ध महा-सहायक है।
इसलिए हम नहीं डरेंगे, चाहे पृथ्वी पलट
जाए—
चाहे पर्वत सागर के पेट मे डूब जाए,
चाहे समुद्र-जल गरजे और उफने
और पर्वत उसकी उत्तेजना से काप उठे।

एक सरिता है जिसकी जल-धाराएं परमेश्वर
के नगर को,
सर्वोच्च परमेश्वर के निवास-स्थान को,
हर्षित करती है।
परमेश्वर नगर के मध्य मे है, नगर टलेगा
नहीं,

परमेश्वर पौ फटते ही उसकी सहायता
करेगा।
राष्ट्र रोष करते है, राज्य विचलित होते है,
किन्तु परमेश्वर के शब्दोच्चार से पृथ्वी
पिघल जाती है।
स्वर्गिक सेनाओ का प्रभु हमारे साथ है,
याकूब का परमेश्वर हमारा गढ़ है।
आओ, प्रभु के महाकर्म देखो,
उसने पृथ्वी पर कैसा विनाश किया है।
वह पृथ्वी की सीमा तक युद्धबन्दी करता है,
वह धनुष को तोड़ता है और भाले को
टुकडे-टुकडे करता है,
वह रथो को अग्नि से भस्म करता है।

शान्त हो—और जान लो कि मैं ही पर-
   मेश्वर हूं।
मैं राष्ट्रों में सर्वोच्च हूं।
मैं पृथ्वी पर सर्वोच्च हूं।
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु हमारे
याकूब का परमेश्वर हमारा है।

प्रस्तुत गीत में कवि ने परमेश्वर को किस रूप में चित्रित किया

४९. पाप-शुद्धि के लिए प्रार्थना

(भजन ५१)

प्रस्तुत गीत का रचयिता राजा दाऊद है। व्यभिचार कर्म करने के बाद उसके हृदय में पश्चात्ताप की भावना उत्पन्न हुई थी। यह गीत उसी पश्चात्ताप की सच्ची अभिव्यक्ति है।

हे परमेश्वर, तू करुणामय है,
अत: मुझ पर कृपा कर।
मेरे अपराधों को मिटा दे,
क्योंकि तेरा अनुग्रह असीम है।
मेरे अधर्म से मुझे पूर्णत: धो,
मेरे पाप से मुझे शुद्ध कर।

मैं अपने अपराधों को जानता हूं,
मेरा पाप निरन्तर मेरे समक्ष रहता है।
तेरे विरुद्ध, तेरे ही विरुद्ध मैंने पाप किया है
और वही किया जो तेरी दृष्टि में बुरा है।
इसलिए तू अपने निर्णय में निर्दोष,
और न्याय में निष्पक्ष है।
मैं अधर्म में उत्पन्न हुआ था,
और पाप में मेरी मां ने
मुझे गर्भ में धारण किया था।

तू अन्त:करण की सच्चाई से प्रसन्न होता है,
अत: मेरे हृदय को ज्ञान की बातें सिखा।
जूफा की डाली से मुझे शुद्ध कर, तब मैं
   पवित्र हो जाऊंगा।
मुझे धो तो मैं हिम से अधिक श्वेत बनूंगा।
मुझे हर्ष और आनन्द का सन्देश सुना
जिससे मेरी हड्डियां
जिन्हें तूने चूर-चूर कर दिया है,
प्रफुल्लित हो सकें।
अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले,
तू मेरे समस्त अधर्म को मिटा दे।
हे परमेश्वर, मुझमें शुद्ध हृदय उत्पन्न कर।

तू मेरे भीतर नई और स्थिर आत्मा उत्पन्न
   कर।
मुझे अपनी उपस्थिति से दूर न कर,
तू अपना पवित्र आत्मा मुझसे वापस न ले।
अपने उद्धार का हर्ष मुझे लौटा दे,
उदार आत्मा से मुझे सहारा दे।

तब मैं अपराधियों को तेरे मार्ग सिखाऊंगा
और पापी तेरी ओर लौटेंगे।
हे परमेश्वर, मेरे उद्धार के परमेश्वर,
मुझे रक्तपात के दोष से मुक्त कर,
तब मैं अपने मुंह से तेरी धार्मिकता का
   जयकार करूंगा।

हे स्वामी, मेरे ओठों को खोल,
तब मेरा मुंह तेरी स्तुति करेगा।
तू बलि से प्रसन्न नहीं होता,
अन्यथा मैं बलि चढ़ाता,
तू अग्नि-बलि की इच्छा नहीं करता।
विदीर्ण आत्मा की बलि परमेश्वर को
   प्रिय है,
हे परमेश्वर, तू विदीर्ण और भग्न हृदय की
   उपेक्षा नहीं करता।

कृपया तू सियोन की भलाई कर,
तू यरूशलम नगर का परकोटा बना दे।
तब तू विधि-सम्मत बलिदानों से,
अग्नि-बलि और पूर्ण अग्नि-बलि से प्रसन्न
   होगा।
तब लोग तेरी वेदी पर बैल चढ़ाएंगे।

१ राजा दाऊद ने किसके प्रति पाप किया था? (पद ४)

राजा दाऊद किस बात के लिए प्रार्थना करता है, और यह हमारे जीवन के लिए किस प्रकार आवश्यक है? (देखो पद १०–१४)

५० परमेश्वर प्यासी आत्मा को तृप्त करता है

(भजन ६३)

अपने जीवन-काल मे अनेक बार दाऊद परमेश्वर की आराधना करने के लोगो के साथ सामूहिक आराधना मे सम्मिलित नही हो पाता था। तब उसका हृदय बहुत बेचैन हो जाता था। उसने अपने भावो को यो प्रकट किया है।

परमेश्वर, तू ही मेरा परमेश्वर है
भोर मे तेरा दर्शन करने जाऊगा।
सूखी और तप्त भूमि पर
जल नही है,
मेरा प्राण तेरे लिए प्यासा है,
मेरी देह तेरे लिए इच्छुक है।
पवित्र स्थान मे तुझ पर दृष्टि करता हू
कि तेरी सामर्थ्य और महिमा के दर्शन
पाऊ।
तेरी करुणा जीवन की अपेक्षा श्रेष्ठ है
मेरे ओंठ तेरी प्रशसा करेगे।
जब तक मै जीवित हू
तुझको धन्य कहता रहूगा
मै तेरी ओर अपने हाथ फैलाऊगा
और तेरे नाम से प्रार्थना करूगा।
मेरा प्राण मध्य भोज के भोजन से तृप्त
हुआ है
मै आनन्दपूर्ण ओंठो से तेरी प्रशसा करूगा।
मै अपने शैय्या पर तुझको स्मरण करता हू,
और रात्रि जागरण मे तेरा ही ध्यान
करता हू।
तू मेरा सहायक था,
मै तेरे पखो की छाया मे जय-जयकार
करता हू।
मेरा प्राण तुझसे जुडा है।
तेरा दाहिना हाथ मुझे सभालता है।
जो मेरे प्राण को नष्ट करने की खोज मे है,
वे धरती के निचले स्थानो को चले जाएगे।
वे तलवार की धार पर उछाले जाएगे,
वे गीदडो का आहार बनेगे।
किन्तु राजा परमेश्वर से हर्षित होगा,
परमेश्वर की शपथ लेनेवाले महिमा प्राप्त
करेगे,
पर झूठे लोगो का मुह बन्द किया जाएगा।

१ अपने शब्दो मे दाऊद की भावनाओ को प्रकट कीजिए।
२ भाई-बन्धुओ, जन-समाज के साथ परमेश्वर की सामूहिक आराधना करना क्यो आवश्यक है?

५१. दुर्जन की नियति

(भजन ७३)

मानव-समाज के सामने एक चिरन्तन प्रश्न है: धार्मिक व्यक्ति, परमेश्वर का भक्त दुःख क्यो पाता है, और दुर्जन, अधार्मिक व्यक्ति ससार का आनन्द क्यो भोगता है। वह अपने मार्ग पर फूलता-फलता है। यह प्रश्न प्रस्तुत गीत मे उठाया गया है।

निश्चय, परमेश्वर इस्राएल के लिए,
शुद्ध हृदयवालों के लिए भला है।
मेरे पैर उखड़ चुके थे,
मेरे पग फिसलने पर थे।
जब मैंने दुर्जनों का फलना-फूलना देखा,
तब मैं घमण्डी लोगों के प्रति ईर्ष्यालु हो
गया।

दुर्जनों को मृत्यु में कष्ट नहीं होता,
उनकी देह स्वस्थ है।
धार्मिक लोग दुःख में हैं पर दुर्जन नहीं,
अन्य मनुष्यों जैसे वे विपत्ति में नहीं पड़ते।
अतः अहंकार उनका कण्ठहार है,
हिंसा उनका ओढ़ना है,
उनकी आंखों से चर्बी झलकती है,
उनके हृदय में दुष्कल्पनाएं उमड़ती है।
वे धार्मिकों का उपहास करते हैं,
वे उनसे दुष्टभाव से बातें करते हैं,
ऊंचे पर बैठकर वे अत्याचार करते हैं।
वे स्वर्ग के विरुद्ध अपना मुंह खोलते हैं,
पृथ्वी पर उनकी जीभ गर्व से चलती है।

इसलिए लोग दुर्जनों के पास आकर उनकी
प्रशंसा करते हैं
और उनमें कोई त्रुटि नहीं पाते।*
वे यह कहते हैं, 'परमेश्वर कैसे जान सकता
है?
क्या सर्वोच्च प्रभु में ज्ञान है?'
ये दुर्जन व्यक्ति हैं,
तो भी सरलता से सदा सम्पत्ति बढ़ाते जाते
हैं।
मैंने व्यर्थ ही अपने हृदय को शुद्ध रखा,
और अपने हाथों को निर्दोषता से धोया।
फिर दिन भर मैं दण्डित
और प्रति भोर को ताड़ित होता रहा।

यदि मैंने यह कहा होता, 'मैं ऐसा बोलूंगा',
तो हे परमेश्वर,
मैं तेरे लोगों के प्रति विश्वासघात करता।
जब मैंने इस भेद पर विचार किया,
तब यह मेरी [illegible]
[illegible]
तब मैंने दुर्जनों का अन्त [illegible]
सचमुच तूने [illegible]
रखा है,
तू विनाश के [illegible]
वे क्षण भर में कैसे उजड़ गए।
वे आतंक द्वारा पूर्णतः [illegible]
जैसे जागने वाला [illegible]
नहीं देता,
वैसे ही प्रभु, [illegible]
को तुच्छ समझता है।**

जब मेरा मन कड़ुवा हो गया था,
मेरे हृदय में अपार पीड़ा थी।
मैं मूर्ख और नासमझ था,
तेरे सम्मुख मैं पशुवत था।
फिर भी मैं निरन्तर तेरे साथ रहूं।
तू मेरे दाहिने हाथ को थामे हुए है।
तू अपनी सलाह से मेरा मार्ग-दर्शन
जीवन के अन्त में तू मुझे महिमा दे,
करेगा।
स्वर्ग में मेरा और कौन है?
तेरे अतिरिक्त पृथ्वी पर
मैं किसी की कामना नहीं करता।
मेरा शरीर और हृदय चाहे हारता है,
पर परमेश्वर, तू सदा
मेरे हृदय का बल और मेरा भाग है।

जो तुझसे दूर हैं,
वे मिट जाएंगे,
जो तेरे प्रति निष्ठावान नहीं हैं,
उन सबको तू नष्ट कर देगा।
पर मेरे लिए परमेश्वर की निकटता
है।
मैंने प्रभु स्वामी को अपना
माना है,
प्रभु, मैं तेरे कार्यों का वर्णन करता।

१ कवि के सम्मुख कौन-सी समस्या थी? (पद २–६)
२ कवि ने अपनी समस्या को किस प्रकार हल किया? (पद १५–[illegible]

*मूल में अस्पष्ट **मूल में अस्पष्ट

जिस राष्ट्र का परमेश्वर प्रभु है, वह निस्सन्देह धन्य है। —भजन संहिता १४४. १५

जब कभी तुम दाहिनी अथवा बायीं ओर मुड़ने लगोगे तब तुम्हारे पीछे से यह वाणी तुम्हारे कानों में पड़ेगी 'मार्ग यही है इसी पर चलो।' —यशायाह 30 : 21

५२ परमेश्वर हमारा रक्षक है

(भजन ६१)

प्रस्तुत गीत मे परमेश्वर की रक्षा का सुन्दर वर्णन हुआ है।

ोच्च प्रभु !
है तेरी स्तुति करना,
है तेरे नाम का गुणगान करना,
तेरी करुणा,
ात मे तेरी सच्चाई घोषित करना,
ार के वाद्य पर,
पर,
र के साथ राग के अनुसार।
मु, तूने अपने कार्यों से मुझे आनन्दित
िया है,
रे कार्यों का जय-जयकार करता
तूने मेरे लिए किए है।

मु, तेरे कार्य कितने महान् है।
विचार कितने गहन-गम्भीर है !
मझ यह नही जानता
मूर्ख यह समझता है
यद्यपि दुर्जन घास के सदृश हरे-भरे
रहते है,
स्त कुकर्मी फलते-फूलते है,
भी वे सदा-सर्वदा के लिए विनष्ट हो
जाएगे,
नु प्रभु, तू युग-युगान्त उन्नत है।

प्रभु, तेरे शत्रु,
हां, तेरे शत्रु मिट जाएगे,
समस्त कुकर्मी छिन्न-भिन्न हो जाएगे।

तूने जगली साड के सीग के सदृश
मेरा सिर ऊचा किया है।
तूने मुझ पर ताजा तेल उण्डेला है।
मेरी आखो ने अपने घातकों का पतन देखा,
मेरे कानो ने उन कुकर्मियों के विनाश को
सुना,
जो मेरे विरुद्ध खड़े हुए थे।
धार्मिक व्यक्ति खजूर वृक्ष के समान फलते-
फूलते है,
वे लबानोन प्रदेश के देवदार-जैसे बढ़ते है।
वे प्रभु के गृह मे रोपे गए है,
वे हमारे परमेश्वर के आगनों मे फलते-
फूलते है।
वे वृद्धावस्था मे भी फलते है
वे सदा रसमय और हरे-भरे रहते है,
जिससे वे यह घोषित कर सके
कि प्रभु सच्चा है,
वह हमारी चट्टान है,
उसमे लेशमात्र भी अधार्मिकता नही है।

१ परमेश्वर हमारी किस प्रकार रक्षा करता है ? (पद १–४)
२ पद १४–१६ मे परमेश्वर हमे किस बात का वचन देता है ?

५३ स्तुतिगान

(भजन ६५, ६६)

प्रस्तुत दोनो गीतो मे परमेश्वर की महानता का विशद वर्णन हुआ है। वि हमे आवाहन देते है कि हम परमेश्वर की स्तुति करे।

ओ, हम प्रभु का जय-जयकार करे,
ने उद्धार की चट्टान का जयघोष करे।
ागान करते हुए हम उसके सम्मुख आए,
ुतिगान गाते हुए उसका जयघोष करे।
ु महान परमेश्वर है,
ु समस्त देवताओ के ऊपर महान राजा है:

उसके अधिकार मे पृथ्वी के गहरे स्थान है,
पर्वतों के शिखर भी उसी के है।
जल भी उसी का है, क्योंकि उसने उसको
बनाया है,
थल की रचना उसी के हाथो ने की है।
आओ, हम उसके चरणो पर

और उसकी आराधना करें,
अपने निर्माता प्रभु के सम्मुख घुटने टेकें।
वह हमारा परमेश्वर है,
और हम उसके चरागाह की रेवड़ हैं,
उसके अधिकार की भेड़ें हैं।

भला होता कि आज तुम उसकी वाणी
सुनते!
तुम अपना हृदय कठोर न करना,
जैसा तुम्हारे पूर्वजों ने उस दिन किया था
जब वे मरीबा में,
निर्जन प्रदेश के मस्सा में थे।
वहां तुम्हारे पूर्वजों ने प्रभु की परीक्षा
की थी,
प्रभु के कार्यों को देखकर भी उसे परखा था।
वह चालीस वर्ष तक उस पीढ़ी से घृणा
करता रहा।
प्रभु ने यह कहा था, 'ये हृदय के भ्रष्ट
लोग हैं,
ये मेरे मार्गों को नहीं जानते हैं।'
अतः प्रभु ने अपने क्रोध में यह शपथ खाई
'ये मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे।'

(भजन ९६)
प्रभु के लिए नया गीत गाओ,
हे पृथ्वी के लोगो, प्रभु के निमित्त गाओ!
प्रभु के लिए गाओ, उसके नाम को धन्य
कहो,
दिन-प्रतिदिन उसके उद्धार का सन्देश
सुनाओ।
राष्ट्रों में उसकी महिमा का,
समस्त जातियों में उसके अद्भुत कार्यों का
वर्णन करो।
प्रभु महान है, वह स्तुति के अत्यन्त योग्य
है,

वह समस्त देवताओं से [illegible]
योग्य है।
अन्य जातियों के देवतागण [illegible]
हैं,
पर प्रभु ने स्वर्ग [illegible]
उसके सम्मुख यश और प्रताप है।
उसके पवित्र-स्थान में शक्ति और [illegible]
है।

हे अन्य जातियों के कुलो, प्रभु [illegible]
करो!
प्रभु की महिमा और शक्ति [illegible]
प्रभु के नाम [illegible]
भेंट लेकर उसके आंगनों में प्रवेश [illegible]
पवित्रता से सज [illegible] उसकी [illegible]
करो,
हे पृथ्वी के लोगो, [illegible]
राष्ट्रों से यह कहो, 'प्रभु राज्य [illegible]
निश्चय ही पृथ्वी की नींव दृढ़ है
वह विचलित न होगी।
प्रभु लोगों का न्याय निष्पक्षता से [illegible]
स्वर्ग आनन्दित और पृथ्वी हर्षित [illegible]
सागर और उसकी परिपूर्णता [illegible]
गर्जन करे।
धरती और जो कुछ उसमें है,
वह प्रफुल्लित हो।
जब प्रभु आएगा
तब वन के समस्त वृक्ष
प्रभु के सम्मुख जय-जयकार करेंगे।
वह पृथ्वी का न्याय करने को आ [illegible]
वह धार्मिकता से संसार का,
और सच्चाई से अन्य जातियों का [illegible]
करेगा।

१ भजन ९५ : १–७ में परमेश्वर का किस प्रकार वर्णन हुआ है?
२ भजन ९६ में किस प्रकार परमेश्वर का चित्रण हुआ है?

५४. प्रभु के उपकारों के लिए स्तुतिगान

(भजन १०३)

कवि प्रस्तुत गीत के माध्यम से हमें आवाहन करता है कि हम परमेश्वर [illegible]
की आशिषों और वरदानों के लिए उसको धन्यवाद दें।

प्राण, प्रभु को धन्य कह,
[illegible] का सर्वस्व
पवित्र नाम को धन्य कहे!
प्राण, उस प्रभु को धन्य कह,
[illegible]के समस्त उपकारों को न भूल,
सब अधर्म को क्षमा करता है,
समस्त रोगों को स्वस्थ करता है,
जीवन को कब्र से मुक्त करता है,
के करुणा और अनुकम्पा से सुशोभित
[illegible]ता है,
[illegible]वन भर तुझे भली वस्तुओं से तृप्त
[illegible]ता है,
[illegible] तेरा यौवन बाज के सदृश गतिवान
जाता है।
समस्त दलितों के लिए
और न्याय के कार्य करता है।
मूसा पर अपने मार्ग,
इस्राएल की सन्तान पर अपने कार्य
[illegible]ट किए।
दयालु और कृपालु है,
विलम्ब-क्रोधी और करुणामय है,
[illegible] सदा डांटता रहता है,
न सदैव क्रोध करता है।
हमारे पापों के अनुसार हमसे व्यवहार
[न]हीं करता,
न हमारे अधर्म के अनुसार हमें प्रतिफल
[दे]ता है।
[आका]श पृथ्वी के ऊपर जितना ऊंचा है,
[उतनी] ही उसकी महान करुणा उसके भक्तों
[प]र है।
पश्चिम से जितनी दूर है,
हमारे अपराध हमसे उतनी ही दूर
करता है।
[पिता] अपने बच्चों पर जैसी दया करता है,
प्रभु भी अपने डरनेवालों पर वैसी ही
दया करता है।
वह हमारी रचना जानता है,
उसे स्मरण है कि हम धूल ही हैं।

मनुष्य की आयु घास के समान है,
वह मैदान के फूल के सदृश खिलता है,
वायु उसके ऊपर से बहती है,
और वह ठहर नहीं पाता,
उसका स्थान भी उसको फिर कभी नहीं
पहचानता!
किन्तु प्रभु की करुणा उसके भक्तों पर
युग-युगान्त तक,
और उसकी धार्मिकता उनके पुत्र-पौत्रों पर
बनी रहती है,
जो उसकी वाचा पूरा करते हैं,
जो उसके आदेशों का स्मरण करते हैं,
कि उनको पूर्ण करें।

प्रभु ने अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थापित
किया है,
और उसकी सत्ता सब पर शासन करती है।
ओ प्रभु के स्वर्गदूतो,
महान शक्तिशालियो, तुम उसका वचन
सुनकर
उसके अनुसार कार्य करते हो,
प्रभु को धन्य कहो!
प्रभु की समस्त सेना,
उसकी इच्छा को पूर्ण करनेवाले समस्त
सेवक,
प्रभु को धन्य कहे!
प्रभु की समस्त सृष्टि,
उसके राज्य के समस्त स्थानों में
प्रभु को धन्य कहे!
ओ मेरे प्राण, प्रभु को धन्य कह!

१ कवि ने जिन आशीषों—वरदानों का उल्लेख किया है, उसकी सूची बनाइए, और उनके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दीजिए।

५५. प्रभु अपनी सृष्टि की देख-भाल करता है

(भजन १०४)

भजन १०३ में परमेश्वर की आशीषों-वरदानों का उल्लेख हुआ है। [प्रस्]तुत गीत में सृष्टि में परमेश्वर की महानता प्रकट की गई है, और कवि

प्रभु तुम्हारी बढ़ती करे,
तुम्हारी और तुम्हारे पुत्रों की।
तुम प्रभु से आशीष पाओ,
प्रभु आकाश और पृथ्वी का सृजक है।

स्वर्ग प्रभु का ही स्वर्ग है,
पर उसने मनुष्य जाति को पृथ्वी प्रदान
की है।

मृतक प्रभु की स्तुति नहीं करते,
क्योंकि वे मृतक लोक को चले
जाते हैं।

पर हम अब से सदा तक
प्रभु को धन्य कहेंगे।
प्रभु की स्तुति करो।

१ पद ३–८ मे मूर्तियों-प्रतिमाओं का किस प्रकार वर्णन हुआ है?
२ पद ९–११ मे परमेश्वर का किस प्रकार वर्णन हुआ है?

५७. प्रभु सर्वज्ञ है

(भजन १३९)

परमेश्वर सर्वज्ञ और हर समय, हर जगह उपस्थित रहता है। यहाँ तक है कि हमारा उठना-बैठना भी उससे छिपा नहीं है।

हे प्रभु, तूने परखकर मुझे जान लिया।
तू मेरा उठना और बैठना जानता है,
तू दूर से ही मेरे विचार समझ लेता है।
तू मेरे मार्ग और विश्राम-स्थल का पता
लगा लेता है,
तू मेरे समस्त मार्गों से परिचित है।
मेरे मुह मे शब्द आने भी नहीं पाता,
कि तू उसे पूर्णतः जान लेता है।
तू आगे-पीछे से मुझे घेरता,
और मुझ पर अपना हाथ रखता है।
प्रभु, यह ज्ञान मेरे लिए अद्भुत है,
बहुत गहरा है,
उस तक मैं नहीं पहुंच सकता।

तेरे आत्मा से अलग हो मैं कहां जाऊंगा?
मैं तेरी उपस्थिति से कहां भाग सकूंगा?
यदि मैं आकाश पर चढ़ूं
तो तू वहां है।
यदि मैं मृतक लोक मे बिस्तर बिछाऊं,
तो तू वहां है।
यदि मैं उषा के पंखों पर उड़कर,
समुद्र के क्षितिज पर जा बसूं,
तो वहां भी तेरा हाथ मेरा नेतृत्व करेगा,
तेरा दाहिना हाथ मुझे पकड़े रहेगा।
यदि मैं यह कहूं, अन्धकार मुझे ढांप ले,
और मेरे चारों ओर का प्रकाश रात हो जाए,
तो अन्धकार भी तेरे लिए अन्धकार नहीं है,

और रात भी दिन के सदृश चमकती है।
तेरे लिए अन्धेरा प्रकाश जैसा है।

तूने ही मेरे भीतरी अंगों को
मेरी मां के गर्भ में तूने मेरी रचना की।
मैं तेरी सराहना करता हूं,
क्योंकि तू भय योग्य और अद्भुत है।
तेरे कार्य कितने आश्चर्यपूर्ण हैं!
तू मुझे भली-भांति जानता है।
जब मैं गुप्त स्थान मे बनाया गया
पृथ्वी के निचले स्थानों मे बुना गया
तब मेरा कंकाल तुझसे छिपा न रहा।
तेरी आंखों ने मेरे भ्रूण को देखा,
तेरी पुस्तक मे सब कुछ लिखा था
दिन भी रचे गए थे,
जब वे दिन अस्तित्व मे थे नहीं।
हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे प्रति
कितने मूल्यवान हैं।
उनका योग कितना बड़ा है!
यदि मैं उनको गिनूं,
तो वे धूलकण से भी अधिक हैं,
जब मैं जागता हूं, तब भी मैं तेरे संग हूं।

हे परमेश्वर, भला होता कि तू दुर्जन को
मारता,
और हत्यारे मुझसे दूर हो जाते।
वे छलपूर्वक तेरा अनादर करते हैं

बुराई के लिए तेरे विरुद्ध स्वयं को उन्नत
करते हैं !
प्रभु, मुझसे बैर करनेवालों से क्या मैं
बैर न करूं ?
रे विरोधियों के प्रति क्या मैं शत्रु-भाव न
रखूं ?

मैं उनसे हृदय से घृणा करता हूं
मैं उनको अपना ही शत्रु समझता हूं।
हे परमेश्वर मुझे परख और मेरा हृदय
पहचान,
मुझे जांच और मेरे विचारों को जान !
मुझे देख, क्या मैं कुमार्ग पर चल रहा हूं ?
प्रभु मुझे शाश्वत् मार्ग पर ले चल !

१ परमेश्वर हमें कितना जानता है ? (पद १–६)
२ परमेश्वर कहां है ? (पद ७–१२)

५८. समस्त सृष्टि प्रभु की स्तुति करे

(भजन १४८, १५०)

इन अन्तिम भजनों-गीतों में कवि ने परमेश्वर की स्तुति की है, और उसको भावनापूर्ण शब्दों में धन्यवाद दिया है।

प्रभु की स्तुति करो !
स्वर्ग में प्रभु की स्तुति करो !
ऊंचे स्थानों में उसकी स्तुति करो !
ओ प्रभु के दूतो, उसकी स्तुति करो,
ओ प्रभु की सेनाओ, उसकी स्तुति करो !
ओ सूर्य और चन्द्रमा, उसकी स्तुति करो
ओ समस्त प्रकाशवान नक्षत्रो, उसकी स्तुति
करो !
ओ आकाश, सर्वोच्च आकाश,
ओ आकाश के ऊपर के जल उसकी स्तुति
करो !
ये सब प्रभु के नाम की स्तुति करें,
क्योंकि प्रभु ने आज्ञा दी,
और वे निर्मित हुए।
प्रभु ने युग-युगान्त के लिए
उन्हें स्थित किया है,
प्रभु ने सविधि प्रदान की,
जो कभी टल नहीं सकती !

पृथ्वी पर प्रभु की स्तुति करो,
ओ मगरमच्छो, ओ सागरो,
ओ अग्नि और ओलो,
ओ बर्फ और कुहरे,
ओ प्रभु का वचन पूर्ण करनेवाली प्रचण्ड
वायु !
ओ पर्वत एवं समस्त घाटियो !
ओ फलवान वृक्षो तथा देवदारो !

ओ पशुओ और पालतू जानवरो
ओ रेंगनेवाले जन्तुओ ओ उड़नेवाले
पक्षियो !
प्रभु की स्तुति करो।
पृथ्वी के राजागण,
और समस्त जातियां,
शासक एवं पृथ्वी के समस्त न्यायकर्ता !
युवक और युवतियां भी,
बच्चों समेत वृद्ध भी !
ये सब प्रभु के नाम की स्तुति करें,
क्योंकि केवल प्रभु का नाम महान है,
उसकी महिमा पृथ्वी और आकाश के
ऊपर है।
प्रभु ने अपने निज लोगों को शक्तिमान
बनाया है,
समस्त सन्तों के लिए,
इस्राएल की सन्तान के लिए
जो प्रभु के निकट हैं,
यह स्तुति का विषय है।
प्रभु की स्तुति हो !

(भजन १५०)

प्रभु की स्तुति करो !
उसके पवित्र स्थान में
परमेश्वर की स्तुति करो,
आकाश के मेहराब में
उसकी सामर्थ्य की स्तुति करो।

उसके महान कार्यों के लिए
उसकी स्तुति करो,
उसकी अपार महानता के अनुरूप
उसकी स्तुति करो।
नरसिंगे की गूंज पर
उसकी स्तुति करो।
सारंगी और सितार पर
उसकी स्तुति करो।
डफ और नृत्य से
उसकी स्तुति करो,
वीणा और बांसुरी से
उसकी स्तुति करो।
झांझो की ध्वनि पर
उसकी स्तुति करो,
उच्च स्वर की झांझ से
उसकी स्तुति करो।
समस्त प्राणी प्रभु की स्तुति करे।
प्रभु की स्तुति करो।

१ भजन १४८ के अनुसार हमे परमेश्वर की स्तुति क्यो करनी चाहिये?
२ भजन १५० के अनुसार हमे किस प्रकार परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए?

दूसरा भाग

नया नियम से संकलित बाइबिल-पाठ

(चारों शुभ-सन्देश और प्रेरितों के कार्य)

१. यह यीशु कौन है ?

(मत्ती १ १–१७, लूका ३ २३–३८)

हमनें पुराना नियम से सम्मिलित पाठों में पढ़ा कि परमेश्वर ने हमारे पापों से हमें मुक्त करने के लिए एक उद्धारकर्त्ता भेजने का निश्चय किया। और इस कार्य को पूर्ण करने के लिए उसने हजारों वर्ष तक सावधानी से तैयारी की थी।

नया नियम का आरम्भ यीशु की वंशावली से होता है। लेखक इस सच्चाई को प्रमाणित करता है कि यीशु ही वह उद्धारकर्त्ता है जिसको भेजने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में की थी।

यीशु की वंशावली

अब्राहम के वंशज, दाऊद के वंशज यीशु मसीह* की वंशावली

अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ। इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ। याकूब से यहूदा और उसके भाई उत्पन्न हुए। यहूदा से तामार द्वारा पेरेस और जेरह उत्पन्न हुए। पेरेस से हेस्रोन उत्पन्न हुआ। हेस्रोन से एराम उत्पन्न हुआ। एराम से अम्मीनादाब उत्पन्न हुआ। अम्मीनादाब से नहशोन उत्पन्न हुआ। नहशोन से सलमोन उत्पन्न हुआ। सलमोन से राहब द्वारा बोअज उत्पन्न हुआ। बोअज से रूत द्वारा ओबेद उत्पन्न हुआ। ओबेद से यिशय उत्पन्न हुआ। और यिशय से राजा दाऊद उत्पन्न हुआ।

ऊरियाह की विधवा स्त्री द्वारा दाऊद से सुलैमान उत्पन्न हुआ। सुलैमान से रहोबआम उत्पन्न हुआ। रहोबआम से अबिय्याह उत्पन्न हुआ। अबिय्याह से आसा उत्पन्न हुआ। आसा से यहोशाफट उत्पन्न हुआ। यहोशाफट से योराम उत्पन्न हुआ। योराम से अजर्याह उत्पन्न हुआ। अजर्याह से योताम उत्पन्न हुआ। योताम से आहाज उत्पन्न हुआ। आहाज से हिजकियाह उत्पन्न हुआ। हिजकियाह से मनश्शे उत्पन्न हुआ। मनश्शे से आमोन उत्पन्न हुआ। आमोन से योशियाह उत्पन्न हुआ। और जब इस्राएली बन्दी होकर बेबीलोन नगर को गए, उस समय योशियाह से यकोन्याह और उसके भाई उत्पन्न हुए।

जब इस्राएली बेबीलोन को निष्कासित किए गए, उसके पश्चात्, यकोन्याह से शालतिएल उत्पन्न हुआ। शालतिएल से जरुब्बाबेल उत्पन्न हुआ। जरुब्बाबेल से अबीहूद उत्पन्न हुआ। अबीहूद से एल्याकीम उत्पन्न हुआ। एल्याकीम से अजोर उत्पन्न हुआ। अजोर से सदोक उत्पन्न हुआ। सदोक से अखीम उत्पन्न हुआ। अखीम से एलीहूद उत्पन्न हुआ। एलीहूद से एलिआजर उत्पन्न हुआ। एलिआजर से मत्तान उत्पन्न हुआ। मत्तान से याकूब उत्पन्न हुआ। और याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ, जो मरियम का पति था। मरियम से यीशु जो 'मसीह' कहलाते हैं, उत्पन्न हुए।

इस प्रकार अब्राहम से दाऊद तक चौदह पीढ़ी, दाऊद से बेबीलोन-निष्कासन तक चौदह पीढ़ी और बेबीलोन-निष्कासन से मसीह तक चौदह पीढ़ी हुई।

यीशु के पूर्वज

ऐसा माना जाता था कि यीशु यूसुफ के पुत्र थे और यूसुफ एली का पुत्र था। और एली

*अथवा, ख्रिस्त' अर्थात् 'जिसका अभिषेक किया गया'

मत्तात का, वह लेवी का, वह मलकी का, वह यन्ना का, वह यूसुफ का, वह मत्तित्याह का, वह आमोस का, वह नहूम का, वह असल्याह का, वह नोगह का, वह मात का, वह मत्तित्याह का, वह शिमी का, वह योसेख का, वह योदाह का, वह यूहन्ना का, वह रेसा का, वह जरुब्बाबेल का, वह शालतिएल का, वह नेरी का, वह मलकी का, वह अद्दी का, वह कोसाम का, वह इलमादाम का, वह एर का, वह यहोशू का, वह एलीएजर का, वह योरीम का, वह मत्तात का, वह लेवी का, वह शिमौन का, वह यहूदा का, वह यूसुफ का, वह योनान का, वह एलयाकीम का, वह मलेआह का, वह मिन्नाह का, वह मत्ताता का, वह नातान का, वह दाऊद का, वह यिशय का, वह ओबेद का, वह बोअज का, वह शेलह का, वह नहशोन का, वह अम्मीनादाब का, वह अदमीन का, वह अरनी का, वह हेस्रोन का, वह पेरस का, वह यहूदा का, वह याकूब का, वह इसहाक का, वह अब्राहम का, वह तेरह का, वह नाहोर का, वह सरूग का, वह रऊ का, वह पेलग का, वह एबर का, वह शेलह का, वह कनान का, वह अर्पक्षद् का, वह शेम का, वह नूह का, वह लामेक का, वह मथूशलह का, वह हनोक का, वह यारद का, वह महललेल का, वह केनन का, वह एनोश का, वह शेत का, वह आदम का, और वह परमेश्वर का पुत्र था।

१ सन्त मत्ती के शुभ-सन्देश मे यीशु की वंशावली कहा से आरम्भ होती है और सन्त लूक की कहा से? क्या आप दोनो का अन्तर पहचान सकते है?

२ नया नियम मे ये दोनो वंशावलिया क्यों है?

२. यीशु के जन्म की घोषणा

(लूका १: २६–३८, मत्ती १: १८–२५)

यीशु का जन्म अपने आप मे एक अद्भुत घटना है। आज तक किसी पुरुष या स्त्री का जन्म इस प्रकार नही हुआ एक कुवारी कन्या के गर्भ से।

इस अद्भुत जन्म के माध्यम से परमेश्वर ने मनुष्य-जाति को यह स्मरण दिलाया कि मनुष्य के हाथ मे यह नही है कि वह अपने उद्धारकर्त्ता को स्वय उत्पन्न करे। किन्तु उद्धारकर्त्ता परमेश्वर का दान है—सम्पूर्ण मनुष्य-जाति को।

प्रस्तुत प्रथम विवरण मे मरियम को यीशु के आगमन की सूचना तथा दूसरे विवरण मे यूसुफ के स्वप्न का वृत्तान्त है, जो यीशु का पालक बनता है।

यीशु के जन्म के सम्बन्ध में भविष्यवाणी

छठे महीने मे परमेश्वर की ओर से स्वर्गदूत जिब्राएल गलील प्रदेश के नासरत नगर मे एक कुआरी के पास भेजा गया। उसकी मगनी दाऊद के वंशज, यूसुफ नामक पुरुष से हुई थी। उस कुवारी का नाम मरियम था।

स्वर्गदूत ने मरियम के पास जाकर कहा, 'मरियम, आनन्द मनाओ, क्योंकि परमेश्वर ने तुम पर कृपा की है। प्रभु तुम्हारे साथ है।'

मरियम इस कथन से बहुत घबरा गई और सोचने लगी कि यह कैसा अभिवादन है।

तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, 'मरियम, भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुम पर हुआ है। देखो, तुम गर्भवती होगी और पुत्र को जन्म दोगी, उसका नाम तुम यीशु* रखना। वह महान होगा और सर्वोच्च परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। प्रभु परमेश्वर उसके

* अथवा 'प्रभु छुड़ानेवाला है'

सीरिया देश
सीदोन (सैदा)
दमिश्क
सोर (सूर)
हेर्मोन पहाड़
कैसरिया फिलिप्पी
कफरनहूम
गलील की झील
कर्मेल पहाड़
काना
नासरत
गदरा
कैसरिया
दसनगर क्षेत्र
सामरी प्रदेश
सूखार
अरिमतिया
लुद्दा
इम्माऊस
यरूशलम
बैतलहम
यहूदा प्रदेश
नये नियम के समय
का पलिस्तीन देश

यरूशलम
और उसकी सीमा

पूर्वज दाऊद का सिंहासन उसे प्रदान करेगा। वह याकूब के वंश पर सर्वदा शासन करेगा तथा उसके राज्य का अन्त नहीं होगा।'

मरियम ने स्वर्गदूत से पूछा, 'यह कैसे सम्भव होगा, क्योंकि मैं अब तक कुआरी हूं?*' स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, 'पवित्र आत्मा तुम पर उतरेगा, और सर्वोच्च परमेश्वर की सामर्थ्य तुम पर छाया करेगी। इस कारण जो जन्म लेगा† वह पवित्र और परमेश्वर-पुत्र कहलाएगा।

'देखो, वृद्धावस्था में तुम्हारी कुटुम्बिनी इलीशिबा के भी गर्भ में पुत्र है। वह उसका जो बांझ कहलाती थी, छठा महीना है क्योंकि परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं।'

तब मरियम ने कहा, 'देखिए, मैं प्रभु की सेविका हूं। आपके वचन के अनुसार मेरे लिए हो।' इसके पश्चात् स्वर्गदूत उसके पास से विदा हो गया।

यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ। यीशु की माता मरियम की मंगनी यूसुफ से हुई थी, पर उनके मिलन के पूर्व वह पवित्र आत्मा से गर्भवती पाई गई। मरियम का मंगेतर, यूसुफ धर्मात्मा था। वह नहीं चाहता था कि मरियम की बदनामी हो। अतः उसने मरियम को चुपचाप त्याग देने का निश्चय किया। यूसुफ इस सम्बन्ध में विचार कर ही रहा था कि प्रभु के दूत ने उसे स्वप्न में दर्शन दिया और कहा, 'यूसुफ! दाऊद के वंशज! अपनी पत्नी मरियम को स्वीकार करने से न डर, क्योंकि उसके जो गर्भ है, वह पवित्र आत्मा से है। वह पुत्र को जन्म देगी, और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से छुड़ाएगा।'

यह सब इसलिए हुआ कि नबी-कथित प्रभु का यह वचन पूरा हो 'कुआरी कन्या गर्भवती होगी और वह पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम "इम्मानुएल" रखा जाएगा (अर्थात्, 'परमेश्वर हमारे साथ')।'

यूसुफ नींद से जागा, और उसने प्रभु के दूत की आज्ञा के अनुसार कार्य किया। उसने मरियम को अपनी पत्नी स्वीकार किया। जब तक मरियम ने अपने पुत्र को जन्म न दिया, यूसुफ ने उसके साथ सहवास नहीं किया।

यूसुफ ने पुत्र का नाम यीशु रखा।

१. स्वर्गदूत ने मरियम से यीशु का किस प्रकार वर्णन किया? (लूका १:३२, ३३)
२. जब यूसुफ ने सुना कि मरियम गर्भवती है तब उसने क्या करने का निश्चय किया? स्वर्गदूत ने उससे यीशु के विषय में क्या बताया (मत्ती १.२०–२३)
३. संसार के उद्धारकर्त्ता यीशु ने एक कुंवारी कन्या से क्यों जन्म लिया?

३. यीशु का जन्म

(लूका २:१–५२)

बाइबिल की सैकड़ों-हजारों सुन्दर कहानियों में सर्व सुन्दर, और सर्वश्रेष्ठ है—यीशु के जन्म की कहानी। यीशु ने न तो किसी राजा के महल में जन्म लिया, और न ही किसी बढ़िया, वातानुकूल, आधुनिक अस्पताल में। संसार के उद्धारकर्त्ता ने जन्म लिया गौशाले में! प्रस्तुत कहानी को आप स्वयं पढ़िए।

उन दिनों सम्राट औगुस्तुस ने आदेश निकाला कि समस्त रोमन साम्राज्य की जनगणना

* अथवा 'क्योंकि मैं पुरुष को नहीं जानती।'

† पाठांतर 'जो तुमसे जन्म लेगा'

की जाए। यह पहली जनगणना उस समय हुई जब क्विरिनियुस सीरिया देश का राज्यपाल था।

सब लोग नाम लिखवाने के लिए अपने-अपने पूर्वज के नगर को जाने लगे। यूसुफ दाऊद के कुटुम्ब और वंश का था। अत वह अपनी मंगेतर मरियम के साथ, जो गर्भवती थी, नाम लिखवाने के लिए गलील प्रदेश से नासरत नगर से यहूदा प्रदेश के बेतलहम गाव को गया जहा राजा दाऊद का जन्म हुआ था।

जब वे वहा थे तब मरियम का प्रसवकाल आ गया, और उसने अपने पहिलौठे पुत्र को जन्म दिया। उसने उसे वस्त्र में लपेट कर चरनी में लिटाया, क्योंकि उनके लिए सराय में स्थान नहीं था।

चरवाहों को सन्देश

उस प्रदेश में चरवाहे थे जो रात को मैदान में रहकर अपने रेवड की रखवाली कर रहे थे। सहसा प्रभु का दूत उनके समीप आकर खड़ा हो गया और प्रभु का तेज उनके चारो ओर चमकने लगा। वे बहुत डर गए।

स्वर्गदूत ने उनसे कहा, 'डरो मत, देखो मै तुम्हें बड़े आनन्द का शुभ-सन्देश सुनाता हू। यह आनन्द का समाचार सब लोगो के लिए होगा।

'आज दाऊद के नगर मे तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता ने जन्म लिया है, यही प्रभु मसीह है। तुम्हारे लिए चिह्न यह है तुम एक शिशु को वस्त्र में लपेटे और चरनी में लेटे हुए पाओगे।'

तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ असख्य स्वर्गदूतो का समूह दिखाई पड़ा जो परमेश्वर की स्तुति कर रहा था,

'स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा हो
और पृथ्वी पर उन मनुष्यो को शान्ति मिले,
जिनसे परमेश्वर प्रसन्न है।*'

जब स्वर्गदूत उनसे विदा होकर स्वर्ग को चले गए तब चरवाहो ने विचार किया, 'क्यो न हम बेतलहम चले और यह घटना अपनी आखो से देखे जो प्रभु ने हम पर प्रकट की है।' वे शीघ्र गए और उन्होने मरियम, यूसुफ और शिशु को पाया जो चरनी मे लेटा हुआ था। जब उन्होने बालक को देखा तब उन्होने सब बाते प्रकट कर दी जो स्वर्गदूत ने उनसे बालक के सम्बन्ध में कही थी। सब सुननेवाले लोग चरवाहो की बातो पर आश्चर्य करने लगे, पर मरियम सब बाते मन मे रखे रही और उनपर विचार करती रही।

चरवाहे, परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए लौट गए, क्योंकि जैसा स्वर्गदूत ने उनसे कहा था वैसा ही उन्होने सब सुना और पाया था।

आठ दिन की समाप्ति पर जब बालक का खतना हुआ तब उसका नाम यीशु रखा गया। यही नाम उसके गर्भ मे आने के पूर्व स्वर्गदूत ने रखा था।

यीशु का मन्दिर में अर्पित किया जाना

मूसा की व्यवस्था के अनुसार उनके शुद्धिकरण के दिन पूरे हुए। तब मरियम और यूसुफ बालक को यरुशलम नगर ले गए कि उसे प्रभु को अर्पित करे (जैसा प्रभु की व्यवस्था मे लिखा है कि प्रत्येक पहिलौठा प्रभु के लिए पवित्र माना जाएगा) और प्रभु की व्यवस्था के अनुसार एक जोड़ा पण्डुक या कबूतर के दो बच्चे चढ़ाए।

शिमौन का गीत

यरुशलम मे शिमौन नामक एक धर्मात्मा और श्रद्धालु मनुष्य था। वह इस्राएल के पुन -

*पाठान्तर, 'पृथ्वी पर शान्ति और मनुष्यो मे सद्भावना'

स्थापन* की प्रतीक्षा कर रहा था। पवित्र आत्मा उसपर था, और उसे पवित्र आत्मा से यह प्रकाश मिला था कि जब तक वह प्रभु के मसीह का दर्शन न कर ले, उसकी मृत्यु न होगी। वह आत्मा की प्रेरणा से मन्दिर में आया। जब माता-पिता बालक यीशु को भीतर लाए कि उसके लिए व्यवस्था की विधि पूरी करें तो शिमौन ने बालक को गोद में लिया तथा परमेश्वर की स्तुति कर यह कहा,

'हे स्वामी, अब अपने सेवक को अपने वचन के अनुसार
शान्ति से विदा कर,
क्योंकि मेरी आंखों ने तेरे उद्धार को देख लिया,
जिसे तूने सब लोगों के सम्मुख प्रस्तुत किया है।
यह अन्य जातियों को प्रकाशित करनेवाली
और तेरी प्रजा इस्राएल को गौरव देनेवाली ज्योति है।'

यीशु के सम्बन्ध में ये बातें सुनकर उसके माता-पिता चकित हुए। शिमौन ने उन्हें आशीर्वाद देकर यीशु की माता मरियम से कहा, 'देखिए, यह बालक एक ऐसा प्रतीक होगा जिसका लोग विरोध करेंगे, और यह तलवार आपके प्राण को आर-पार बेध देगी। इसके कारण इस्राएल राष्ट्र में बहुतों का उत्थान और पतन होगा, और इस प्रकार अनेक मनुष्यों के मनोभाव प्रकट हो जाएंगे।'

हन्नाह की साक्षी

हन्नाह नामक एक नबिया थी जो अशेर वंश के फनूएल की पुत्री थी। वह बहुत बूढ़ी थी। विवाह*के पश्चात् वह सात वर्ष पति के साथ रही और अब चौरासी वर्ष की विधवा थी। उसने मन्दिर कभी नहीं छोड़ा और दिन-रात उपवास तथा प्रार्थना करते हुए परमेश्वर की सेवा में लगी रही।

वह भी उसी क्षण आ पहुंची और परमेश्वर को धन्यवाद देने तथा बालक के विषय में उन सबको बताने लगी, जो यरूशलम की मुक्ति की प्रतीक्षा में थे।

यीशु का बाल्यकाल

जब मरियम और यूसुफ प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ कर चुके तब वे गलील प्रदेश में अपने नगर नासरत को लौट गए। बालक यीशु बढ़कर बलिष्ठ हुआ और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया। उसपर परमेश्वर का अनुग्रह था।

किशोर यीशु मन्दिर में

यीशु के माता-पिता प्रतिवर्ष फसह के पर्व पर यरूशलम की यात्रा करते थे। जब यीशु बारह वर्ष का हुआ तब वे लोग अपनी प्रथा के अनुसार वहां पर्व मनाने गए। जब वे उन दिनों को पूर्ण कर लौटे तब बालक यीशु यरूशलम में ही रह गया। उसके माता-पिता यह नहीं जानते थे, और यह समझकर कि वह यात्रियों के दल में होगा, एक दिन का पड़ाव निकल गए।

तब यीशु को अपने कुटुम्बियों और परिचितों में ढूंढने लगे। पर वह न मिला। अत वे ढूंढते हुए यरूशलम लौटे।

तीन दिन के पश्चात् उन्होंने यीशु को मन्दिर में धर्मगुरुओं के बीच बैठे, उनकी बातें सुनते और उनसे प्रश्न करते हुए पाया। सब सुननेवाले यीशु की बुद्धि और उसके उत्तरों से चकित थे। यीशु को वहां देखकर उसके माता-पिता आश्चर्य करने लगे। उसकी माता ने

*अथवा, 'सात्वना'

कहा, 'पुत्र, तुमने हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया ? देखो, तुम्हारे पिता और मैं चिन्तित होकर तुम्हें ढूढ़ रहे थे।' यीशु ने कहा, 'आप मुझे यहां-वहां क्यों ढूढ़ रहे थे ? क्या आप नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर में होना ही चाहिए ?'

पर जो बात यीशु ने कही, उसे वे न समझे। तब किशोर यीशु उनके साथ नासरत नगर को गया और उनके अधीन रहा। उसकी माता ने सब बातें अपने मन में रखीं।

किशोर यीशु बुद्धि में, डील-डौल में और परमेश्वर तथा मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।

१ यीशु के जन्म की घोषणा सबसे पहले किसको दी गई? (लूक २ ८–१७)
२ स्वर्गदूतों के चले जाने के बाद चरवाहों, गड़रियों ने क्या निश्चय किया ? क्या हमें भी यीशु की वन्दना करना चाहिए ? क्यों ?
३ उद्धारकर्ता के जन्म की प्रतीक्षा करनेवाले दो व्यक्ति कौन थे ?

४. यीशु के दर्शन के लिए पूर्व देश के ज्ञानी पुरुषों (ज्योतिषी) का आगमन

(मत्ती २ १–२३)

न केवल चरवाहे बल्कि पूर्व देशों के विद्वान ज्योतिषी भी यीशु की वन्दना करने आए थे। वे नक्षत्र-तारों का अध्ययन करते थे। उन्होंने तारों की गणना कर यीशु के जन्म का पता लगाया था। एक विशेष तारे ने उनका मार्ग-दर्शन किया, और वे बेतलहम गांव पहुंचे।

जब वे यहूदा प्रदेश की राजधानी यरूशलम में आए तब उन्होंने लोगों से पूछताछ की। अत: समस्त नगरनिवासी तथा राजा चौकन्ना हो गया। यहूदा प्रदेश के राजा ने ईर्ष्या के कारण जघन्य पाप किया। वह यीशु का वध करना चाहता था।

राजा हेरोदेस के समय में जब यहूदा प्रदेश के बेतलहम नगर में यीशु का जन्म हुआ तब पूर्व देश के ज्ञानी* पुरुष यरूशलम नगर में आए। वे लोगों से पूछने लगे, 'यहूदियों का राजा कहां है जिसका जन्म अभी हुआ है ? हमने उसका तारा पूर्व में उदय होते देखा है और उसकी वन्दना करने आए हैं।' यह सुनकर राजा हेरोदेस घबरा गया और उसके साथ यरूशलम के सब निवासी विचलित हो उठे। राजा हेरोदेस ने जनता के सब महापुरोहितों और शास्त्रियों को एकत्र कर उनसे पूछा, 'मसीह का जन्म कहां होना चाहिए ?' उन्होंने बताया, 'यहूदा प्रदेश के बेतलहम गांव में, क्योंकि नबी का यह लेख है

"ओ बेतलहम, यहूदा प्रदेश के गांव,
तू यहूदा के प्रमुख नगरों में किसी से कम नहीं,
क्योंकि तुझमें एक नेता उत्पन्न होगा,
जो मेरी प्रजा इस्राएल का मेषपाल** होगा।"'

तब हेरोदेस ने ज्ञानियों को चुपचाप बुलाकर उनसे पूछताछ की और यह पता लगा लिया कि तारा उन्हें ठीक किस समय दिखाई पड़ा था। फिर उसने यह कहकर उन्हें बेतलहम

*अथवा 'ज्योतिषी', जो तारों और नक्षत्रों का अध्ययन करते थे।

**अथवा, 'चरवाहा'

भेजा, 'जाओ, और बालक के विषय में ठीक-ठीक पता लगाओ, और जब वह मिल जाए तब मुझे समाचार दो, कि मैं भी जाकर उसकी वन्दना करूं।'

राजा का आदेश सुनकर वे चले गए। जो तारा उन्होंने पूर्व में उदय होते देखा था वह उनके आगे-आगे चला, और जहां बालक था, वहां ऊपर ठहर गया। वे तारे को देखकर आनन्द-उल्लास से भर गए। घर में प्रवेश कर उन्होंने बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा। उन्होंने घुटने टेककर बालक की वन्दना की तथा अपनी-अपनी मन्जूषा खोलकर सोना, लोबान और गन्धरस की भेंट बालक को चढ़ाई। तब स्वप्न में प्रभु का आदेश पाकर कि हेरोदेस के पास न लौटना, वे दूसरे मार्ग से अपने देश को चले गए।

मिस्र-गमन

ज्ञानियों के चले जाने के बाद प्रभु के दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दर्शन दिया। उसने यूसुफ से कहा, 'उठ, बालक एवं उसकी माता को लेकर मिस्र देश भाग जा। जब तक मैं न कहूं, वहां रहना, क्योंकि हेरोदेस इस बालक की हत्या करने के लिए इसकी खोज करनेवाला है।'

अतः यूसुफ नींद से उठा और रात में ही बालक तथा उसकी माता को लेकर मिस्र देश चला गया। वह राजा हेरोदेस की मृत्यु तक वहीं रहा जिससे नबी-कथित प्रभु का यह वचन पूरा हो, "मैंने मिस्र देश से अपने पुत्र को बुलाया।"

बालकों की हत्या

जब राजा हेरोदेस ने देखा कि ज्ञानियों ने उसे धोखा दिया है तब वह क्रोध से भड़क उठा। उसने सैनिकों को भेजा और बैतलहम तथा उसके आस-पास के गांवों में उन सब बालकों को, जो ज्ञानियों के बताए समय के अनुसार दो वर्ष के अथवा उससे छोटे थे, मरवा डाला। इस प्रकार नबी यिर्मयाह का यह वचन पूरा हुआ,

"रामाह में रोना, हाय-हाय और करुण विलाप सुनाई दिया।
राहेल अपने बच्चों के लिए रो रही है,
वह शान्ति नहीं चाहती है,
क्योंकि उसके पुत्र अब नहीं रहे।"

मिस्र से लौटना

राजा हेरोदेस की मृत्यु के बाद प्रभु के दूत ने मिस्र देश में यूसुफ को स्वप्न में दर्शन दिया और उससे कहा, 'उठ, बालक और उसकी माता को लेकर इस्राएल देश चला जा, क्योंकि जो लोग बालक का प्राण लेना चाहते थे, वे मर चुके हैं।' अतः यूसुफ नींद से उठा। वह बालक तथा उसकी माता को लेकर इस्राएल देश में आया। परन्तु जब यूसुफ ने सुना कि अरखिलाउस अपने पिता हेरोदेस की मृत्यु के बाद यहूदा प्रदेश में राज्य कर रहा है तब वह वहां जाने से डरा, और स्वप्न में आदेश पाकर गलील प्रदेश को चला गया। वहां वह नासरत नामक नगर में बस गया जिससे नबियों का यह कथन पूरा हो, "वह नासरी* कहलाएगा।"

१. पूर्व देशों के ज्ञानी पुरुषों ने किस प्रकार यीशु के जन्म का पता लगाया ?
२. राजा हिरोद क्यों यीशु की हत्या करना चाहता था ?
३. परमेश्वर ने किस प्रकार यीशु की रक्षा की ?

५. यीशु और यहूदी समाज

(यूहन्ना १: १–३४)

बाइबिल की शिक्षा के अनुसार यीशु ईश्वर है। मनुष्य के रूप में

*मूल शब्द में श्लेष है। उसका दूसरा अर्थ है 'परमेश्वर को अर्पित व्यक्ति'

करने के पूर्व वह अस्तित्व में थे। यीशु के माध्यम से ही इस समस्त पृथ्वी की, विश्व की, सृष्टि की रचना हुई है।

प्रस्तुत विवरण में हम पढ़ेंगे कि वास्तव में यीशु है कौन। वह पहली बार यहूदियों के सामने आते है।

शब्द-परमेश्वर मनुष्य बना

आदि मे शब्द* था, शब्द परमेश्वर के साथ था और शब्द परमेश्वर था। वह आदि मे परमेश्वर के साथ था।

उसके द्वारा सब वस्तुओ की उत्पत्ति हुई, और जो कुछ भी उत्पन्न हुआ उसमे से एक भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई।

उसमे जीवन था** और वह जीवन मनुष्यो की ज्योति था।

ज्योति अन्धकार मे प्रकाश देती रही, परन्तु अन्धकार उस पर कभी विजयी नही हुआ।

परमेश्वर ने एक व्यक्ति को भेजा। उसका नाम यूहन्ना था। यूहन्ना साक्षी देने के लिए आए कि वह ज्योति की साक्षी दे जिससे सब लोग उनके द्वारा ज्योति पर विश्वास करे। वह स्वय ज्योति नही थे, किन्तु ज्योति के सम्बन्ध मे साक्षी देने आए थे।

सच्ची ज्योति, जो प्रत्येक मनुष्य को प्रकाशित करती है, ससार मे आ रही थी।

शब्द ससार मे था, और ससार उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, किन्तु ससार ने उसको न जाना। वह अपने निज लोगो के पास आया और उसके अपनो ने ही उसको स्वीकार नहीं किया। किन्तु जितनो ने उसको स्वीकार किया और उसके नाम पर विश्वास किया, उनको उसने परमेश्वर की सन्तान बनने का अधिकार दिया। वे न तो रक्त से+ न शारीरिक इच्छा से और न किसी पुरुष के सकल्प से, वरन् परमेश्वर से उत्पन्न हुए है।

शब्द देहधारी हुआ और उसने हमारे मध्य निवास किया। हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते पुत्र की महिमा, जो अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण है।

उसके सम्बन्ध मे यूहन्ना ने यह साक्षी दी है। वह उच्च स्वर से कह चुके है, 'यह वही है जिसके सम्बन्ध मे मैने कहा था, कि मेरे पीछे आनेवाला मुझसे श्रेष्ठ है क्योकि वह मुझसे पहले था।'

हम सबको उसकी परिपूर्णता मे से अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त हुआ है, क्योकि व्यवस्था मूसा द्वारा प्रदान की गई, परन्तु अनुग्रह और सत्य यीशु मसीह द्वारा आए।

परमेश्वर को कभी किसी ने नही देखा, पर एकलौते-पुत्र ने जो स्वय परमेश्वर है, और जो पिता की गोद मे है, उसको प्रकट किया है।

यूहन्ना बपतिस्मादाता की साक्षी

यूहन्ना बपतिस्मादाता की साक्षी यह है जब यरूशलम से यहूदियों के धर्मगुरुओ ने पुरोहित और लेवी भेजे कि उनसे पूछे, 'आप कौन हैं', तब यूहन्ना ने स्वीकार किया—अस्वीकार नही किया वरन् स्वीकार किया, 'मै मसीह नही हूं।'

उन लोगो ने यूहन्ना से पूछा, 'तो फिर आप कौन है ? क्या आप एलियाह है ?'

यूहन्ना ने कहा, 'नही।'

'तो क्या आप वह नबी है जो आनेवाला था ?'

उन्होने उत्तर दिया, 'नही।' 'तो फिर आप कौन है ? हमे बताइए कि हम अपने भेजने-

* अथवा, 'वचन'

** अथवा, 'उसके बिना एक भी वस्तु उत्पन्न नहीं हुई। जो कुछ भी उत्पन्न हुआ है, वह उससे जीवन पाता था।

+ अक्षरश: 'रक्तो से'।

वालो को उत्तर दे सके। आपको अपने विषय मे क्या कहना है?'

यूहन्ना ने कहा, 'जैसा नबी यशायाह ने कहा था "मै निर्जन प्रदेश मे पुकारनेवाले की वाणी हू, जो यह पुकारता है प्रभु का मार्ग सीधा बनाओ।"'

कुछ फरीसी भी भेजे गए थे। उन्होने पूछा, 'यदि आप मसीह नही है, एलियाह नही है और न वह नबी है जो आनेवाला था, तो फिर आप बपतिस्मा क्यो देते है?'

यूहन्ना ने उत्तर दिया, 'मै जल से* बपतिस्मा देता हू। तुम्हारे बीच एक व्यक्ति आया है जिसे तुम नही पहचानते। जो मेरे पीछे आनेवाला था, यह वही है। मै उसके जूतो के बन्ध तक खोलने के योग्य नही हू।'

ये बाते यरदन् नदी के पार बैतनियाह गाव मे हुई जहा यूहन्ना बपतिस्मा दे रहे थे।

परमेश्वर का मेमना

दूसरे दिन यूहन्ना बपतिस्मादाता ने यीशु को अपनी ओर आते देखा तो बोले, 'देखो, परमेश्वर का मेमना जो ससार के पाप का भार उठाकर ले जाता है। यह वही है जिसके विषय मे मैने कहा था, "मेरे पीछे एक व्यक्ति आ रहा है जो मुझसे श्रेष्ठ है, क्योकि वह मुझसे पहले था।" मै स्वय उसे नही पहचानता था, परन्तु मै इस कारण जल से बपतिस्मा देता हुआ आया कि वह इस्राएल पर प्रकट हो जाए।'

यूहन्ना ने यह साक्षी दी, 'मैने आत्मा को स्वर्ग से कबूतर के सदृश उतरते देखा, और वह उस पर ठहर गया। मै उसको नही पहचानता था, पर जिसने मुझे जल मे बपतिस्मा देने भेजा था, उसने मुझे बताया, "जिस पर तुम आत्मा उतरते और ठहरते देखो, वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है।" मैने स्वय उसको देखा और मेरी साक्षी है कि यही परमेश्वर का पुत्र है।'

१ इस पाठ के आरम्भ मे यीशु को क्या कहा गया है? आप क्या सोचते है?
२ जो लोग यीशु पर विश्वास करते है, उन्हे क्या प्राप्त हुआ है? (पद १२) उसका क्या अर्थ है?
३ यूहन्ना ने कौन-सी विशेष बात यीशु मे देखी? (पद १४)
४ यूहन्ना ने यीशु को किस नाम से पुकारा? उसका क्या अर्थ है? (पद २६)

६. शैतान से आमना-सामना
(मत्ती ४ १–१४)

आपको याद होगा, सृष्टि के आरम्भिक दिनो मे शैतान ने आदम और हव्वा को परमेश्वर की आज्ञा न मानने के लिए बहकाया था। शैतान क्या है? समस्त बुराइयों का नायक, अधिपति। अब वह ईश्वर-पुत्र यीशु को पाप करने के लिए उकसाता है। यदि यीशु शैतान की परीक्षा मे असफल हो जाते तो मनुष्य-जाति का उद्धार कभी न होता। सब मनुष्य पाप के बन्धन मे जकडे रहते। किन्तु यीशु सब बातों मे सिद्ध है। वह निष्कलक और निष्पाप है। अत उन्होने परीक्षा पर जय प्राप्त की।

तब पवित्र आत्मा यीशु को निर्जन प्रदेश मे ले गया कि शैतान उन्हे परखे। जब यीशु

*अथवा, जल मे।

चालीस दिन और चालीस रात उपवास कर चुके तब उन्हे भूख लगी। परखनेवाला शैतान उनके पास आया। उसने यीशु से कहा, 'यदि आप परमेश्वर-पुत्र है तो कह दीजिए कि ये पत्थर रोटियां बन जाए।' यीशु ने उत्तर दिया, 'धर्मशास्त्र का यह लेख है

"मनुष्य केवल रोटी से ही नही, वरन् परमेश्वर के मुह से निकले हुए प्रत्येक वचन से जीवित रहेगा।" '

तब शैतान यीशु को पवित्र नगर मे ले गया, और मन्दिर के शिखर पर खड़ा कर उनसे कहा, 'यदि आप परमेश्वर-पुत्र है तो नीचे कूद पड़िए, क्योंकि धर्मशास्त्र का यह लेख है:

"परमेश्वर तेरे लिए स्वर्ग-दूतो को आज्ञा देगा।"

और

"स्वर्ग-दूत तुझे अपने हाथो पर उठा लेंगे। कही ऐसा न हो कि तेरे चरणों को पत्थर से ठेस लगे।" '

यीशु ने उससे कहा, 'किन्तु यह भी लिखा है,

"अपने प्रभु परमेश्वर को मत परख।" '

फिर शैतान यीशु को एक अत्यन्त ऊंचे पहाड़ पर ले गया और ससार के समस्त राज्य और उनका वैभव दिखाकर उनसे बोला, 'यदि आप घुटने टेककर मेरी वन्दना करें तो मै यह सब कुछ आपको दे दूगा।' यीशु ने उससे कहा, 'दूर हो शैतान, क्योंकि धर्मशास्त्र का यह लेख है

"अपने प्रभु परमेश्वर की वन्दना कर,
और केवल उसी की आराधना कर।" '

अत शैतान यीशु को छोड़कर चला गया, और स्वर्गदूत आकर उनकी सेवा करने लगे।

कफरनहूम नगर में यीशु का निवास

जब यीशु ने सुना कि यूहन्ना बन्दी बना लिए गए तब वह गलील प्रदेश को चले गए। वह नासरत नगर को छोड़कर कफरनहूम मे रहने लगे जो जबूलून और नप्ताली क्षेत्रों मे झील के तट पर स्थित है। इस प्रकार नबी यशायाह का वचन पूरा हुआ।

१ तीन प्रकार से शैतान ने यीशु को परखा। उनका वर्णन करो।
२ यीशु ने किस प्रकार शैतान को निरुत्तर किया? प्रत्येक प्रश्न के उत्तर मे यीशु ने क्या कहा? ध्यान दीजिए, यीशु एक विशेष उत्तर को तीनो बार दोहराते है। क्या हम भी शैतान की शक्ति का सामना इसी उत्तर के आधार पर कर सकते है?

७. यीशु के प्रथम शिष्य

(यूहन्ना १ : ३५–५१, मरकुस २ : १३–१७)

यीशु ने बारह लोगो को चुना, और उन्हे अपना प्रमुख शिष्य बनाया। ये प्रमुख शिष्य 'प्रेरित' भी कहलाते है। ये प्रमुख शिष्य यीशु के साथ निरन्तर, रात-दिन रहते थे। जहा-जहा यीशु जाते थे वहा-वहा वे भी जाते थे। जैसा कि आप जानते है, यीशु ने तीन वर्ष तक धर्म-सेवा की।

यीशु के बारह प्रमुख शिष्यो मे से एक शिष्य ने यीशु के साथ विश्वासघात

तो भी यीशु के स्वर्ग में चढ़ जाने के बाद वे अपने गुरु का शुभ सन्देश पृथ्वी के छोर तक सुनाने लगे। यीशु ने इन्हीं ग्यारह शिष्यों के माध्यम से कलीसिया की स्थापना की।

दूसरे दिन फिर यूहन्ना बपतिस्मादाता और उनके दो शिष्य खड़े हुए थे। यूहन्ना ने यीशु को जाते देखा और कहा, 'देखो! परमेश्वर का मेमना।'

उन दोनों शिष्यों ने उन्हें यह कहते सुना और वे यीशु के पीछे हो लिए।

जब यीशु मुड़े और उनको अपने पीछे आते देखा, तब उनसे पूछा, 'तुम क्या चाहते हो?'

उन्होंने कहा, 'हे रब्बी (अर्थात् गुरु), आप कहां रहते हैं?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'आओ और देखो।' तब उन्होंने जाकर यीशु का निवास-स्थान देखा और उस दिन उनके साथ रहे।

उस समय लगभग शाम के चार बजे थे। उन दोनों में से एक, जो यूहन्ना बपतिस्मादाता की बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिए थे, शिमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। वह पहिले अपने भाई शिमौन से मिला और उससे कहा, 'हमने परमेश्वर के मसीह (अर्थात् अभिषिक्त जन*) को पा लिया है,' और वह उसको यीशु के पास लाया। यीशु ने उसे ध्यानपूर्वक देखा और कहा, 'तुम यूहन्ना के पुत्र शिमौन हो। तुम कैफा (अर्थात् चट्टान**) कहलाओगे।'

फिलिप्पुस और नतनएल को आवाहन

दूसरे दिन यीशु ने गलील प्रदेश जाने का निश्चय किया। वह फिलिप्पुस से मिले। यीशु ने उससे कहा, 'मेरा अनुसरण करो।'

फिलिप्पुस, अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का निवासी था।

फिलिप्पुस नतनएल से मिला और बोला, 'जिनके विषय में मूसा ने व्यवस्था में, तथा नबियों ने लिखा है, वह यूसुफ के पुत्र, नासरत-निवासी यीशु, हमें मिल गए।'

नतनएल बोल उठा, 'क्या नासरत से कोई अच्छा नेता निकल सकता है?'

फिलिप्पुस ने कहा, 'आओ और देखो।'

यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देखा तो उसके सम्बन्ध में कहा, 'देखो, यह वास्तव में इस्राएली है, इसमें कोई कपट नहीं।' नतनएल ने उनसे पूछा, 'आप मुझे कैसे जानते हैं?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'इससे पहिले कि फिलिप्पुस तुम्हें बुलाए, मैंने तुम्हें अंजीर के पेड़ के नीचे देखा।'

नतनएल बोला, 'गुरुजी, आप परमेश्वर के पुत्र हैं, आप इस्राएल के राजा हैं।'

यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या तुम यह इसलिए कहते हो कि मैंने तुमसे कहा, "तुमको मैंने अंजीर के पेड़ के नीचे देखा!" तुम इससे भी महान कार्य देखोगे।'

यीशु ने यह भी कहा, 'मैं तुम लोगों से सच-सच कहता हूं तुम स्वर्ग को खुला हुआ और परमेश्वर के दूतों को मानव-पुत्र पर उतरते और ऊपर जाते हुए देखोगे।'

शिष्य लेवी का बुलाया जाना

यीशु बाहर निकलकर झील-तट पर गए। समस्त जनसमूह उनके पास आने लगा और वह उन्हें उपदेश देने लगे। जाते हुए यीशु ने हलफई के पुत्र लेवी को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा और उनसे कहा, 'मेरा अनुयायी हो।' लेवी उठा और उनका अनुयायी हो गया।

यीशु लेवी के घर में भोजन करने बैठे। उस भोज में उनके शिष्यों के साथ अनेक कर

*मूल में, 'ख्रिस्त' **मूल में 'पतरस'

लेनेवाले और पापी सम्मिलित हुए, उनकी सख्या बहुत थी।

फरीसी-दल के कुछ शास्त्री भी यीशु के अनुयायी बन गए थे। वे यीशु को पापियों और कर लेनेवालो के साथ भोजन करते देख उनके शिष्यो से बोले, 'यह कर लेनेवालो और पापियो के साथ क्यो खाते-पीते है?'

यीशु ने उनकी बात सुनकर कहा, 'स्वस्थ मनुष्यो को वैद्य की आवश्यकता नही, पर रोगियो को होती है. मै धार्मिको को नही, किन्तु पापियो को बुलाने आया हू।'

१ यीशु ने अपने शिष्य बनने के लिए किस प्रकार के लोगो को चुना?
२ मत्ती किस प्रकार का आदमी था? वह क्या करता था? यहूदी धर्मगुरुओ ने यीशु को भला-बुरा क्यो कहा, जब वह मत्ती के घर मे भोजन करने गए? (मरकुस २ १३–१७)

८. यीशु का प्रथम आश्चर्य-कर्म

(यूहन्ना २ १–२५)

अपने प्रमुख शिष्यो का चुनाव करने के बाद यीशु परमेश्वर की स्तुति और महिमा के लिए आश्चर्यपूर्ण कर्म करने लगे। यीशु ने उस समय के धर्मगुरुओ पर भी अपने ईश्वरीय अधिकार-सामर्थ्य का भी प्रदर्शन किया।

प्रस्तुत दो विवरण इन्ही बातो से सम्बन्धित है।

तीसरे दिन गलील प्रदेश के काना नगर मे विवाह था। यीशु की मा वहा थी, और यीशु एव उनके शिष्य भी विवाह मे निमन्त्रित थे। दाखरस कम पड़ने पर यीशु की मा ने उनसे कहा, 'उनके पास दाखरस नही है।'

यीशु ने उत्तर दिया, 'मा*, मुझे आपसे क्या काम। मेरा समय अभी नही आया है।'

मा सेवको से बोली, 'जो कुछ वह तुमसे कहे, वही करना।'

वहा यहूदियो के शुद्धिकरण की प्रथा के अनुसार पत्थर के छ घड़े रखे थे। प्रत्येक मे सौ सवा-सौ लिटर पानी समाता था।

यीशु ने उनसे कहा, 'घड़ो मे पानी भर दो।' उन्होने घड़ो को मुह तक भर दिया।

तब यीशु बोले, 'अब निकालकर भोज के प्रबन्धक के पास ले जाओ।' सेवक ले गए। प्रबन्धक ने वह जल चखा जो दाखरस बन गया था। वह नही जानता था कि वह कहा से आया है (किन्तु सेवक, जिन्होने जल निकाला था, जानते थे)।

तब भोज के प्रबन्धक ने दूल्हे को बुलाया और उससे कहा, 'प्रत्येक मेजबान अपने मेहमानो को पहले उत्तम दाखरस देता है, और उनके तृप्त हो जाने पर मध्यम। पर तुमने उत्तम दाखरस अब तक रख छोड़ा है।'

इस प्रकार गलील के काना नगर मे यीशु ने अपने आश्चर्यपूर्ण चिह्नो का आरम्भ कर अपनी महिमा प्रकट की, और उनके शिष्यो ने उन पर विश्वास किया। इसके बाद यीशु, उनकी माता और उनके भाई एव शिष्य कफरनहूम नगर गए और वहा कुछ दिन निवास किया।

मन्दिर की शुद्धि करना

यहूदियो का फसह पर्व समीप आने पर यीशु यरूशलम गए। वहा उन्होने मन्दिर मे बैल, भेड़ और कबूतर बेचनेवालो और सर्राफो को बैठे पाया। यीशु ने रस्सियो का कोड़ा

*अक्षरश: 'महिला'

बनाया और भेड़ों और बैलों सहित सबको मन्दिर से बाहर कर दिया। यीशु ने मुद्रा-विनिमय करनेवालों की मुद्राएं बिखेर दीं और उनकी गद्दियां उलट दीं। वह कबूतर बेचनेवालों से बोले, 'इन्हें यहां से ले जाओ। मेरे पिता के भवन को व्यापार का घर मत बनाओ।'

तब उनके शिष्यों को स्मरण हुआ कि धर्मशास्त्र में लिखा है, 'तेरे भवन की धुन मुझे खा जाएगी।'

यहूदियों के धर्मगुरुओं ने यीशु से पूछा, 'यह जो आप कर रहे हैं, इसके लिए आप हमें क्या चिह्न दिखाते हैं?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'इस मन्दिर को गिरा दो और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।' यहूदी धर्मगुरु बोले, 'इस मन्दिर के निर्माण में छियालीस वर्ष लगे। क्या आप इसको गिराकर तीन दिन में खड़ा कर देंगे?'

परन्तु यीशु अपने देह रूपी मन्दिर के विषय में कह रहे थे। जब वह मृतकों में से जीवित हो उठे तब यीशु के शिष्यों को स्मरण हुआ कि यीशु ने ऐसा कहा था। तब शिष्यों ने धर्मशास्त्र के लेख पर, एवं उन शब्दों पर जो यीशु ने कहे थे, विश्वास किया।

यीशु मनुष्य का मन जानते हैं

जब यीशु यरूशलम में थे, तब फसह-उत्सव के समय पर बहुत लोगों ने उन चिह्नों को, जिन्हें वह दिखाते थे, देखकर उनके नाम पर विश्वास किया। परन्तु यीशु ने अपने आपको उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सबको जानते थे। उनको यह आवश्यकता नहीं थी कि कोई व्यक्ति उन्हें मनुष्य के विषय में बताए, क्योंकि वह स्वयं जानते थे कि मनुष्य के मन में क्या है।

१ मेजबान के सामने कौन-सी समस्या थी? यीशु ने उस समस्या को किस प्रकार हल किया? प्रस्तुत आश्चर्यपूर्ण कर्म से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

२ यीशु ने मन्दिर में क्या किया? यीशु के इस कार्य से हम उनके विषय में क्या सीखते हैं?

६. परमेश्वर के राज्य के विषय में यीशु की शिक्षा

(यूहन्ना ३ : १-२७)

एक रात को यहूदी धर्म सभा का एक विख्यात धर्म-गुरु यीशु के पास आया। वह चोरी-छिपे आया था। उसे यहूदी-समाज का डर था। इसलिए वह रात को आया था। उसने यीशु की शिक्षा के बारे में उनसे पूछा। यीशु ने जो उत्तर दिया, वह यहां प्रस्तुत है। सद्गुरु और शाश्वत जीवन की कहानी बाइबिल के प्रमुख वृत्तान्तों में से एक है।

फरीसी सम्प्रदाय का एक मनुष्य था। उसका नाम निकोदिमुस था। वह यहूदियों का एक धर्मगुरु था। वह रात में यीशु के पास आया। वह उनसे बोला, 'गुरुजी, हम जानते हैं कि आप गुरु हैं और परमेश्वर की ओर से गुरु बन कर आए हैं, क्योंकि यदि परमेश्वर साथ न हो तो जो चिह्न आप दिखाते हैं, कोई नहीं दिखा सकता।'

यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं तुमसे सच-सच कहता हूं: जब तक कोई मनुष्य नया* जन्म न ले वह परमेश्वर के राज्य के दर्शन नहीं कर सकता।'

*अथवा, 'ऊपर से'।

निकोदिमुस ने पूछा, 'मनुष्य वृद्ध होकर जन्म कैसे ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश कर जन्म ले सकता है?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा द्वारा जन्म न ले, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।

जो शरीर से जन्म लेता है, वह शरीर है, पर जो आत्मा से जन्म लेता है, वह आत्मा है।

जब मैं कहता हूँ कि तुम्हें नया जन्म लेने की आवश्यकता है तो चकित न हो। वायु* जिधर चाहती है, चलती है, तुम उसका शब्द सुनते हो पर नहीं जानते कि वह कहाँ से आ रही है और किधर जा रही है। जो कोई आत्मा से जन्म लेता है, वह ऐसा ही है।'

निकोदिमुस ने कहा, 'यह कैसे हो सकता है?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'तुम इस्राएलियों के गुरु हो। फिर भी यह नहीं समझते। मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जिसको हम जानते हैं, उसे बताते हैं, और जिसका हमने दर्शन किया है, उसकी साक्षी देते हैं। पर तुम सब हमारी साक्षी स्वीकार नहीं करते।

'जब मैंने तुमसे पृथ्वी की बातें कहीं और तुम उनपर विश्वास नहीं कर रहे हो, फिर यदि मैं स्वर्ग की बातें कहूँ तो कैसे विश्वास करोगे? कोई व्यक्ति स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल एक अर्थात् मानव-पुत्र, जो स्वर्ग से उतरा है। जैसे मूसा ने निर्जन प्रदेश में सर्प को ऊँचा उठाया, उसी प्रकार मानव-पुत्र का ऊँचा उठाया जाना अनिवार्य है। तब जो कोई मनुष्य उस पर विश्वास करेगा वह उसमें शाश्वत जीवन प्राप्त करेगा।'

परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो मनुष्य उसपर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु शाश्वत जीवन पाए।

परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में इसलिए नहीं भेजा कि वह संसार को दण्ड की आज्ञा दे, वरन् इसलिए भेजा कि वह संसार का उद्धार करे।

जो मनुष्य उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं, परन्तु जो मनुष्य उस पर विश्वास नहीं करता, उस पर दण्ड की आज्ञा हो चुकी है, क्योंकि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र पर विश्वास नहीं किया।

दण्ड की आज्ञा का कारण यह है: ज्योति संसार में आई है, परन्तु मनुष्यों ने ज्योति की अपेक्षा अन्धकार से अधिक प्रेम किया, क्योंकि उनके कार्य बुरे थे। प्रत्येक दुराचारी मनुष्य ज्योति से बैर रखता है, वह ज्योति के समीप नहीं आता कि कहीं उसके कार्यों के दोष प्रकट न हो जाएँ। परन्तु सत्य पर आचरण करनेवाला व्यक्ति ज्योति के समीप आता है, जिससे यह प्रकट हो जाए कि उसने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य किए हैं।

यूहन्ना बपतिस्मादाता की अन्तिम साक्षी

इसके बाद यीशु अपने शिष्यों के साथ यहूदा प्रदेश में आए और वहाँ शिष्यों के साथ रहकर बपतिस्मा देने लगे। यूहन्ना भी शालेम के समीप एनोन में बपतिस्मा दे रहे थे, क्योंकि वहाँ जल अधिक था और लोग आकर बपतिस्मा ले रहे थे। यूहन्ना बपतिस्मादाता अभी कारागार में नहीं डाले गए थे।

यूहन्ना बपतिस्मादाता के शिष्यों का किसी यहूदी के साथ शुद्धिकरण के विषय में विवाद उठ खड़ा हुआ। उन्होंने यूहन्ना के पास जाकर कहा, 'गुरुजी, देखिए, यरदन नदी के पार जो आपके साथ थे, जिनके सम्बन्ध में आपने साक्षी दी थी, वह बपतिस्मा देने लगे हैं और सब उनके पास जा रहे हैं।'

यूहन्ना ने उत्तर दिया, 'जब तक स्वर्ग से न दिया जाए, मनुष्य कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। तुम स्वयं साक्षी हो कि मैंने कहा था, 'मैं मसीह नहीं, किन्तु उनसे पहले भेजा गया

*मूल यूनानी शब्द में श्लेष है। उसके अर्थ (१) वायु और (२) आत्मा दोनों हैं।

हू।" जिसकी दुलहिन है, वही दूल्हा है। दूल्हे का मित्र, जो उसके पास खड़ा रहता है वह उसका स्वर सुनता है, और उससे आनन्दित होता है। अतः मेरा यह आनन्द पूर्ण हुआ। यह अनिवार्य है कि वह बढ़े और मै घटू।'

जो स्वर्ग से आया है

जो ऊपर से आता है, वह स्वर्ग का है। जो पृथ्वी से है, वह पृथ्वी का है, और वह पृथ्वी की ही बाते कहता है पर जो स्वर्ग से आता है, वह सबसे ऊपर है। जो कुछ उसने देखा और सुना है, उसकी वह साक्षी देता है, तो भी कोई उसकी साक्षी स्वीकार नही करता। जो उसकी साक्षी स्वीकार करता है, वह इस बात को प्रमाणित कर चुका कि परमेश्वर सत्य है। जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बाते कहता है, क्योंकि परमेश्वर नाप-तौल कर पवित्र आत्मा नही देता। पिता पुत्र से प्रेम करता है, और उसके हाथ मे उसने सब कुछ दे दिया है। जो पुत्र पर विश्वास करता है, शाश्वत जीवन उसका है, और जो पुत्र को नही मानता, वह शाश्वत जीवन का अनुभव नही कर पाएगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।

१ यीशु की शिक्षा के अनुसार परमेश्वर के राज्य मे प्रवेश करने के लिए 'नया जन्म' या 'फिर से जन्म लेना' का क्या अर्थ है ?
२ परमेश्वर का अपनी सृष्टि के प्रति कितना प्रेम है ? उसके प्रेम का उदाहरण क्या है ? (यूहन्ना ३ १६)
३ परमेश्वर ने अपना एकलौता पुत्र क्यों दे दिया ? (यूहन्ना ३ १६, १७)
४ किन लोगो को शाश्वत जीवन प्राप्त होगा, और किन लोगो को नही ?

१०. हरिजन स्त्री और यीशु

(यूहन्ना ४ १–४२)

यहूदियो मे जाति भेद था। वे सामरी प्रदेश मे रहनेवालो को धर्म-च्युत मान कर उन्हे हरिजन, अछूत समझते थे, और उनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध नही रखते थे यहा तक कि वे उनके इलाके—सामरी प्रदेश—से भी नही गुजरते थे। एक दिन यीशु सामरी प्रदेश से गए। वे एक स्त्री से बात करने के लिए ठहर गए। इस प्रकार उन्होंने यहूदी धर्म गुरुओं की धर्म-व्यवस्था को चुनौती दी।

यों यीशु ने प्रमाणित किया कि वह सबसे प्रेम करते थे . अमीर-गरीब, ऊच-नीच सबसे।

यीशु को पता चला कि फरीसियो ने सुना है कि वह यूहन्ना की अपेक्षा अधिक शिष्य बनाता और बपतिस्मा देता है—यद्यपि स्वय यीशु नही वरन् यीशु के शिष्य बपतिस्मा देते थे—अत यीशु ने यहूदा प्रदेश छोड़ दिया और पुन गलील प्रदेश को चले गए।

यीशु को सामरी प्रदेश होकर जाना ही था, अत वह सामरी प्रदेश के सूखार नगर मे पहुचे। यह नगर उस भूमि के समीप है जो याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दी थी। यहा याकूब का कुआं था। यीशु यात्रा से थककर, जैसे थे वैसे ही, कुए पर बैठ गए। वह लगभग दोपहर का समय था।

इतने में सामरी प्रदेश की एक स्त्री जल भरने आई। यीशु ने उससे कहा, 'मुझे पीने को जल दो,' क्योंकि उनके शिष्य भोजन मोल लेने के लिए नगर में गए हुए थे। सामरी स्त्री ने उनसे कहा, 'आप यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से जल मांग रहे हैं?' उसने यह इसलिए कहा, क्योंकि यहूदी सामरियों के पात्रों का उपयोग नहीं करते।

यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि तुम परमेश्वर के वरदान को जानतीं और यह जानतीं कि वह कौन है जो तुमसे कह रहा है, "मुझे पीने को जल दो" तो तुम उससे मांगतीं, और वह तुम्हें जीवन-जल देता।'

स्त्री ने कहा, 'महाशय, आपके पास जल भरने को कुछ नहीं है, और कुआं गहरा है तो जीवन-जल आपके पास कहां से आया? आप हमारे कुलपिता याकूब से महान तो हैं नहीं। उन्होंने हमको यह कुआं प्रदान किया और उसमें से स्वयं उन्होंने, उनके पुत्रों ने एवं उनके पशुओं ने भी पिया।'

यीशु ने उत्तर दिया, 'जो इस जल में से पिएगा वह फिर प्यासा होगा, किन्तु जो कोई उस जल में से पिएगा जिसे मैं दूंगा, वह कदापि प्यासा न होगा, वरन् वह जल जो मैं पीने को दूंगा वह उसमें शाश्वत जीवन तक उमड़नेवाला झरना बन जाएगा।'

स्त्री ने कहा, 'महाशय, मुझे वह जल दीजिए कि मैं फिर प्यासी न होऊं और न यहां जल भरने आऊं।'

यीशु ने कहा, 'जाओ, अपने पति को बुला लाओ।'

स्त्री ने उत्तर दिया, 'मेरा पति नहीं है।'

यीशु ने कहा, 'तुमने सच कहा "मेरा पति नहीं है" क्योंकि तुम पांच पति कर चुकी हो, और अब जो तुम्हारे पास है, वह भी तुम्हारा पति नहीं, यह तुमने सच कहा है।'

स्त्री बोली, 'महाशय, अब मैं समझी, आप कोई नबी हैं। हमारे पूर्वजों ने इस पहाड़ पर आराधना की, और आप यहूदी लोग कहते हैं कि यरूशलम ही वह स्थान है जहां आराधना करनी चाहिए।'

यीशु ने कहा, 'बहिन,* मेरा विश्वास करो। वह समय आ रहा है जब तुम सामरी लोग न तो इस पहाड़ पर और न यरूशलम में पिता की आराधना करोगे।

'तुम उसकी आराधना करते हो जिसे नहीं जानते। हम उसकी आराधना करते हैं जिसे जानते हैं, क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। फिर भी वह समय आ रहा है, वरन् वर्तमान है जब सच्चे आराधक पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता ऐसे ही आराधक चाहता है।

'परमेश्वर आत्मा है, और यह आवश्यक है कि उसके आराधक आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें।'

स्त्री ने कहा, 'मैं जानती हूं कि मसीह जो परमेश्वर का अभिषिक्त जन** कहलाता है, आनेवाला है। जब वह आएगा तब हमें सब बातें स्पष्ट कर देगा।'

यीशु बोले, 'मैं, जो तुमसे बात कर रहा हूं, वही हूं।'

उसी समय यीशु के शिष्य आ गए और आश्चर्य करने लगे कि उनके गुरु एक स्त्री से बात कर रहे हैं। पर तो भी किसी ने नहीं पूछा, 'आप क्या चाहते हैं' अथवा 'आप इस स्त्री से क्यों बातें कर रहे हैं?'

उस स्त्री ने अपना घड़ा वहीं छोड़ा और नगर में जाकर लोगों से कहा, 'आओ, एक मनुष्य को देखो। जो कुछ मैंने किया है, वह सब उसने मुझे बता दिया है। कहीं यह मसीह तो नहीं!' वे लोग नगर से निकले और यीशु की ओर आने लगे।

इसी बीच में यीशु के शिष्यों ने निवेदन किया, 'गुरुजी, भोजन कर लीजिए।' पर यीशु ने उत्तर दिया, 'मेरे पास खाने को वह भोजन है, जिसे तुम नहीं जानते।'

* 'नारी' ** मूल में 'ख्रिस्त'

शिष्य आपस मे कहने लगे, 'कोई इनके लिए भोजन तो नहीं लाया ?

यीशु ने उनसे कहा, 'मेरा भोजन यह है कि मै अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका कार्य पूर्ण करूं। क्या तुम नही कहते, "चार महीने और है कि फसल काटने का समय आएगा ?" मै कहता हूं कि आंखे उठाओ, और खेतो पर दृष्टि करो। वे कटनी के लिए पक चुके है। काटनेवाला मजदूरी प्राप्त कर शाश्वत जीवन के लिए फल संग्रह कर रहा है जिससे कि बोनेवाला और काटनेवालादोनों आनन्द मनाए। अत यहा यह कहावत सच्ची उतरती है, "बोनेवाला और है, काटनेवाला और"। जिसके लिए तुमने कोई परिश्रम नही किया, उसे काटने के लिए मैने तुम्हे भेजा। दूसरो ने परिश्रम किया और उनके परिश्रम का फल तुम्हे प्राप्त है।'

उस नगर के अनेक सामरियो ने यीशु पर विश्वास किया, क्योकि उस स्त्री का, जिसने साक्षी दी थी, यह कथन था, 'जो कुछ मैने किया है, वह सब उसने मुझे बता दिया।' इन सामरी लोगो ने आकर यीशु से निवेदन किया कि हमारे साथ रहिए, और वह उनके साथ दो दिन रहे। उनके उपदेशो के कारण और बहुतो ने उन पर विश्वास किया। सामरी लोग उस स्त्री से बोले, 'हम अब तुम्हारे कथन के कारण विश्वास नही करते हमने स्वय यीशु को सुना है, और हम जानते है कि वह वास्तव मे ससार के उद्धारकर्ता है।'

एक उच्च अधिकारी के पुत्र को स्वस्थ करना

दो दिन के पश्चात् यीशु वहा से निकलकर गलील प्रदेश को गए, क्योंकि उन्होने स्वय साक्षी दी थी कि नबी का अपनी जन्म-भूमि मे आदर नही होता।

जब वह गलील प्रदेश पहुचे तब गलील प्रदेश के निवासियो ने उनका स्वागत किया, क्योकि वे उन सब कामो को देख चुके थे जो यीशु ने पर्व के अवसर पर यरूशलम मे किए थे। वे लोग भी पर्व पर वहा गए थे।

तब वह पुन गलील के काना नगर मे आए जहा उन्होने जल को दाखरस बनाया था। वहा राजा का एक उच्च अधिकारी था जिसका पुत्र कफरनहूम नगर मे बीमार था। जब उसने सुना कि यीशु यहूदा प्रदेश से गलील प्रदेश मे आए हुए है तब वह उनके पास आया। उसने यीशु से निवेदन किया कि चलकर उसके पुत्र को स्वस्थ करे, क्योकि उसका पुत्र मरने पर था।

यीशु ने उससे कहा, 'जब तक तुम चिह्न और चमत्कार न देखोगे, विश्वास नही करोगे।'

उच्च अधिकारी ने कहा, 'प्रभु, मेरे बालक की मृत्यु होने से पूर्व आइए।'

यीशु ने उससे कहा, 'जाओ, तुम्हारा पुत्र जीवित है।' उच्च अधिकारी ने यीशु के कथन पर विश्वास किया और चला गया।

वह मार्ग मे ही था कि उसके सेवक मिले जिन्होंने उससे कहा, 'आपका पुत्र जीवित है।'

उसने उनसे पूछा, 'किस समय से उसकी दशा सुधरने लगी ?'

वे बोले, 'कल दोपहर एक बजे से उसका बुखार उतर गया।'

तब पिता ने जाना कि उसी समय यीशु ने कहा था, 'तुम्हारा पुत्र जीवित है'; और उसने तथा उसके परिवार ने विश्वास किया।

यह दूसरा आश्चर्यपूर्ण चिह्न था जो यीशु ने यहूदा प्रदेश से आकर गलील प्रदेश मे दिखाया।

१ यीशु ने सामरी स्त्री से अपने बारे मे क्या कहा ? (यूहन्ना ४ १३, १४) यीशु के कहने का क्या अर्थ था ?
२. यीशु ने परमेश्वर का किस प्रकार वर्णन किया ? (यूहन्ना ४ . २४)
३. सामरी प्रदेश के निवासी यीशु के बारे मे क्या सोचते थे ? (यूहन्ना ४ : ४२)

४ यीशु ने रोमन अफसर के पुत्र को स्वस्थ किया। इस कहानी के द्वारा हम यीशु के बारे मे क्या सीखते है ?

११. यीशु की घोषणा कि वह ईश्वर हैं

(यूहन्ना ५ १–४७)

यहूदियो को यीशु की यह बात सुनकर बहुत क्रोध आता था कि यीशु अपने आपको ईश्वर कहते है। यहूदियो की दृष्टि मे यह घोर पाप था। किन्तु यीशु ने बार-बार कहा कि वह ईश्वर है, और आज की कहानी मे वह भविष्य-वाणी करते है, कि वह मरेगे, किन्तु तीसरे दिन वह पुन जीवित हो जाएगे।

इसके पश्चात् यहूदियो के एक पर्व पर यीशु यरूशलम गए।

यरूशलम मे भेड़द्वार के समीप एक कुण्ड है जो इब्रानी मे बेतहसदा* कहलाता है। उसमे पाच मण्डप है। इनमे अनेक रोगी—अन्धे, लगडे और अर्द्धांगी पडे रहते थे।

(वे जल के हिलने की प्रतीक्षा मे रहते थे। क्योकि समय-समय पर एक स्वर्गदूत कुण्ड मे उतरता और जल को हिलाता था। जल हिलते ही जो व्यक्ति पहले डुबकी लगाता, वह चाहे किसी रोग से पीड़ित क्यो न हो, स्वस्थ हो जाता था।**)

वहा एक मनुष्य था जो अड़तीस वर्ष से रोगी था। यीशु ने उसे पडे देखकर और यह जानकर कि वह बहुत समय से रोगी है, उससे कहा, 'क्या तुम स्वस्थ होना चाहते हो ?' रोगी ने उत्तर दिया, 'महाशय, मेरी सहायता करनेवाला कोई नही है जो जल के हिलने पर मुझे कुण्ड मे उतारे। मेरे जाते-जाते मुझसे पहले कोई अन्य रोगी उतर जाता है।'

यीशु ने कहा, 'उठो, अपना बिस्तर उठाओ और चलो।'

वह मनुष्य तुरन्त स्वस्थ हो गया और बिस्तर उठाकर चलने-फिरने लगा।

उस दिन विश्राम-दिवस था। इसलिए यहूदियो के धर्मगुरुओ ने स्वस्थ हुए व्यक्ति से कहा, 'आज विश्राम-दिवस है, बिस्तर उठाना तुम्हारे लिए उचित नही।' उसने उत्तर दिया, 'जिसने मुझे स्वस्थ किया, उसने मुझसे कहा, "अपना बिस्तर उठाओ और चलो।"'

उन्होने पूछा, 'वह कौन मनुष्य है जिसने तुमसे कहा कि बिस्तर उठाओ और चलो ?' स्वस्थ हुआ व्यक्ति नही जानता था कि वह कौन है, क्योकि उस स्थान पर भीड़ होने के कारण यीशु वहा से चले गए थे।

कुछ समय पश्चात् यीशु उसे मन्दिर मे मिले और वह उससे बोले, 'देखो, तुम स्वस्थ हो गए हो, आगे पाप न करना। कही ऐसा न हो कि तुम्हारा अधिक अनिष्ट हो जाए।'

उस मनुष्य ने जाकर यहूदी धर्मगुरुओ से कहा 'वह जिन्होंने मुझे स्वस्थ किया, यीशु है।'

इस कारण यहूदी यीशु को सताने लगे कि वह विश्राम-दिवस पर ऐसे कार्य करते थे।

यीशु ने उनसे कहा, 'मेरा पिता अब तक कार्य कर रहा है, और मै भी कार्य कर रहा हू।' अब यहूदी धर्मगुरु यीशु को मार डालने का और भी प्रयत्न करने लगे, क्योकि वह विश्राम-दिवस का ही उल्लघन नही करते थे, वरन् परमेश्वर को अपना पिता कह कर अपने आपको परमेश्वर के तुल्य भी बताते थे।

पिता के प्रति यीशु की अधीनता

यीशु ने उनसे कहा, 'मै तुमसे सच-सच कहता हू पुत्र स्वतन्त्र रूप से कुछ नही कर सकता। वह जैसा पिता को करते देखता है, केवल वही करता है, जैसा पिता करता [illegible] ठीक

*पाठान्तर, 'बैतसैदा'

... नही पाया जाता।

वैसा ही पुत्र भी करता है। केवल वही पिता पुत्र से प्रेम करता है, और जो कुछ करता है, वह सब उसे दिखाता है और इनसे भी बड़े कार्य उसे दिखाएगा कि तुम्हे आश्चर्य हो। क्योंकि जिस प्रकार पिता मृतकों को उठाता और उन्हे जीवन देता है, उसी प्रकार पुत्र भी जिसे चाहे उसको जीवन देता है।

'सच तो यह है कि पिता किसी का न्याय नहीं करता, उसने न्याय करने का सब अधिकार पुत्र को दे दिया है कि सब जैसे पिता का आदर करते है, पुत्र का भी आदर करे। जो पुत्र का आदर नहीं करता वह पिता का भी, जिसने उसे भेजा है, आदर नहीं करता। मै तुमसे सच-सच कहता हू कि जो मेरा सन्देश सुनता और मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, वह शाश्वत जीवन प्राप्त करता है, वह दण्ड का भागी नहीं होता, वरन् वह मृत्यु को पार कर शाश्वत जीवन मे प्रवेश कर चुका है।

'मै तुमसे सच-सच कहता हू वह समय आ रहा है, वरन् वर्तमान है, जब मृत व्यक्ति परमेश्वर के पुत्र की वाणी सुनेंगे, और जो सुनेंगे, वे शाश्वत जीवन प्राप्त करेंगे। क्योंकि जैसे पिता स्वय मे जीवन धारण किए हुए है, वैसे ही उसने पुत्र को भी स्वय जीवन धारण करने का अधिकार दिया है, और उसे मानव-पुत्र होने के कारण दण्ड देने का अधिकार भी दिया है।

'इस बात पर तुम्हे चकित नहीं होना चाहिए, क्योंकि समय आ रहा है कि सब जो कबरो मे है, उसकी वाणी सुनकर निकल आएंगे, सत्कर्म करनेवालो का जीवन के लिए पुनरुत्थान होगा और दुष्कर्म करनेवालो का दण्ड के लिए।

यीशु के सम्बन्ध में साक्षी

'मै अपने आप कुछ नहीं कर सकता। जैसा सुनता हू, वैसा न्याय करता हू, और मेरा न्याय ठीक होता है, क्योंकि मै अपनी इच्छा नहीं, वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करना चाहता हू।

'यदि मै स्वय अपने सम्बन्ध मे साक्षी दू तो मेरी साक्षी सच नहीं, एक और है जो मेरे सम्बन्ध मे साक्षी देता है, और मै जानता हू कि मेरे सम्बन्ध मे उसकी साक्षी सच है। तुमने यूहन्ना बपतिस्मादाता से पुछवाया, और सत्य के सम्बन्ध मे उन्होंने साक्षी दी है। यह नहीं कि मुझे मनुष्य की साक्षी की आवश्यकता है, किन्तु मै यह इसलिए कहता हू कि तुम्हारा उद्धार हो। यूहन्ना जलते और चमकते हुए दीपक थे। उनके प्रकाश मे कुछ समय तक आनन्द मना लेना तुम्हे अच्छा लगा। परन्तु जो साक्षी मुझे प्राप्त है, वह यूहन्ना की साक्षी से महान है। ये कार्य जो पिता ने मुझे पूर्ण करने के लिए दिए है—ये कार्य जो मै कर रहा हू—मेरे सम्बन्ध मे साक्षी है कि पिता ने मुझे भेजा है। पिता ने भी, जिसने मुझे भेजा है, मेरे सम्बन्ध मे साक्षी दी है। तुमने कभी उसकी वाणी नहीं सुनी, न उसका स्वरूप देखा है और न उसका वचन तुममे रहता है, क्योंकि जिसे उसने भेजा है, उस पर तुम विश्वास नहीं करते।

'शास्त्रों का तुम अध्ययन करते हो, क्योंकि तुम्हारी धारणा है कि उनमे तुम्हे शाश्वत जीवन मिलता है, और वे मेरे सम्बन्ध मे साक्षी देते है, फिर भी तुम जीवन प्राप्त करने के लिए मेरे पास नहीं आना चाहते।

'मुझे मनुष्यों का सम्मान नहीं चाहिए। पर मै तुम्हे जानता हू कि तुममे परमेश्वर का प्रेम नहीं है। मै अपने पिता के नाम से आया हू परन्तु तुम मुझे स्वीकार नहीं करते, यदि कोई अन्य अपने नाम से आए तो उसको तुम स्वीकार करोगे। तुम्हे विश्वास कैसे हो सकता है कि जबकि तुम आपस मे एक-दूसरे से सम्मान चाहते हो, और उस सम्मान की खोज नहीं करते जो केवल एक अद्वैत परमेश्वर से प्राप्त होता है।

'यह मत सोचो कि पिता के सम्मुख मै तुम पर अभियोग लगाऊंगा। तुम पर अभियोग लगानेवाले तो मूसा है जिन पर तुमने आशा बाध रखी है। यदि तुम मूसा पर विश्वास करते

तो मुझपर भी विश्वास करते, क्योंकि उन्होंने मेरे सम्बन्ध मे लिखा है. परन्तु यदि तुम उनके लेख पर विश्वास नही करते तो मेरे वचन पर कैसे विश्वास करोगे ?'

१ मसीह यीशु ने कौन-सा आश्चर्यकर्म दिखाया ?
२ यीशु ने अपने पुनरुत्थान की भविष्यवाणी की। क्या हम-सब का पुनरुत्थान शाश्वत जीवन के लिए होगा अथवा पापो के दण्ड को भुगतने के लिए ? (यूहन्ना ५ २५–२६) शाश्वत जीवन का अर्थ है—पिता परमेश्वर के सत्संग को पुन प्राप्त करना।

१२. यीशु प्रमाणित करते हैं कि वह ईश्वर हैं

(मरकुस २ १–१२)

यीशु ने अनेक आश्चर्यपूर्ण कर्म किए, और यह प्रमाणित किया कि वह ईश्वर है, और उनमे दिव्य सामर्थ्य है।

कुछ दिन बाद जब यीशु पुन कफरनहूम आए तब नगर मे समाचार फैल गया कि वह घर मे है, और इतने लोग इकट्ठे हो गए कि द्वार के सामने भी जगह न रही। यीशु उन्हे परमेश्वर का सन्देश सुना रहे थे। उस समय लोग लकवे के रोगी को चार मनुष्यो से उठवाकर यीशु के पास लाए। परन्तु जब भीड के कारण वे यीशु के निकट न पहुच सके तो उन्होने वह छत, जिसके नीचे यीशु थे, खोल डाली, और खाट को, जिस पर लकवे का रोगी लेटा था, नीचे उतार दिया।

यीशु ने उनका विश्वास देखा, तो वह लकवे के रोगी से बोले, 'पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।'

वहा कुछ शास्त्री बैठे हुए थे। वे मन मे तर्क-वितर्क करने लगे, 'यह मनुष्य ऐसा क्यो बोलता है ? यह परमेश्वर की निन्दा करता है। केवल एक अर्थात् परमेश्वर को छोड और कौन पाप क्षमा कर सकता है ?'

यीशु अपनी आत्मा मे जानकर कि वे इस प्रकार तर्क-वितर्क कर रहे है, उनसे बोले, 'तुम अपने मन मे इस प्रकार तर्क-वितर्क क्यो कर रहे हो ? सरल क्या है—लकवे के रोगी से कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, अथवा यह कहना कि उठ, अपनी खाट उठा और चल फिर ? परन्तु जिससे तुम जान लो कि मानव-पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है,' वह लकवे के रोगी से बोले, 'मै तुमसे कहता हू, उठ, अपनी खाट उठा और घर को चला जा।'

वह उठा और तुरन्त अपनी खाट उठाकर उन सबके देखते-देखते बाहर चला गया। इस पर सब आश्चर्यचकित हुए और परमेश्वर की स्तुति करके कहने लगे, 'ऐसा हमने कभी नही देखा।'

१ लकुवे के रोगी से यीशु ने क्या कहा ? उनकी बात सुनकर धर्मगुरु नाराज क्यो हो गए ?
२ यीशु ने यह प्रमाणित करने के लिए कि उन्हे पाप-क्षमा करने का भी अधिकार है, क्या किया ?
३ क्या आप विश्वास करते है कि यीशु आपके भी पाप क्षमा कर सकते

धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि परमेश्वर का राज्य उनका है। —मत्ती ५ ३

तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "पकी फसल तो बहुत है परन्तु मजदूर थोड़े हैं। इसलिए खेत के स्वामी से प्रार्थना करो कि वह अपनी फसल काटने के लिए मजदूर भेजे।" —मत्ती ९ ३७–३८

१३. यीशु का पहाड़ी-उपदेश : पहला भाग

(मत्ती ५)

सम्भवतः सम्पूर्ण विश्व में अगर यीशु का कोई उपदेश सब लोगों को प्रिय है, तो वह है—पहाड़ी उपदेश। प्रस्तुत है प्रथम भाग

जनसमूह को देखकर यीशु पहाड़ पर चढ़ गए। जब वह बैठ गए तब शिष्य उनके समीप आए। यीशु इन शब्दों में उन्हें उपदेश देने लगे

धन्य वचन

'धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि परमेश्वर का राज्य उनका है।
धन्य हैं वे जो शोक करते हैं क्योंकि उन्हें शान्ति प्राप्त होगी।
धन्य हैं वे जो विनम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।
धन्य हैं वे जो दयावान् हैं, क्योंकि उन पर दया होगी।
धन्य हैं वे जिनके हृदय शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
धन्य हैं वे जो शान्ति की स्थापना करते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।
धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि परमेश्वर का राज्य उनका है।

'धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हें बुरा-भला कहें, तुमको सताएं और झूठ बोलकर तुम्हारे विरुद्ध सब प्रकार की बुरी बातें कहें। प्रफुल्लित हो और आनन्द मनाओ, क्योंकि तुम्हें स्वर्ग में बड़ा फल प्राप्त होगा। इसी प्रकार उन्होंने नबियों को सताया था, जो तुमसे पहले हुए थे।

नमक और दीपक से शिक्षा

'तुम पृथ्वी के नमक हो। यदि नमक अपना स्वाद खो बैठे तो वह किस वस्तु से सलोना किया जाएगा? वह इसके अतिरिक्त किसी काम का नहीं कि बाहर फेंक दिया जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।

'तुम संसार की ज्योति हो। पहाड़ पर बसा नगर छिप नहीं सकता। मनुष्य दीपक को जलाकर पैमाने* के नीचे नहीं वरन् दीवट पर रखते हैं, और वह घर में सबको प्रकाश पहुंचाता है। तुम्हारी ज्योति मनुष्यों के सम्मुख इस प्रकार चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, स्तुति करें।

पुराना नियम और नया नियम

'यह न समझो कि मैं व्यवस्था और नबियों के लेखों को लोप करने आया हूं। मैं लोप करने नहीं वरन् उन्हें पूर्ण करने आया हूं। मैं तुमसे सच कहता हूं जब तक आकाश और पृथ्वी न टल जाए, व्यवस्था की एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए न टलेगा। यदि कोई मनुष्य इन छोटी-छोटी आज्ञाओं में से एक का भी उल्लंघन करे, और दूसरे मनुष्यों को भी यही सिखाए, तो वह परमेश्वर के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा, परन्तु जो कोई उनका पालन करे और उनको सिखाए, वह परमेश्वर के राज्य में बड़ा कहलाएगा। मैं तुमसे कहता हूं यदि तुम्हारा धार्मिक आचरण शास्त्रियों और फरीसियों के धार्मिक आचरण से श्रेष्ठ न हो तो तुम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।

क्रोध और हत्या

'तुमने सुना है कि पूर्वजों से कहा गया था, "हत्या न करना, जो कोई हत्या करेगा,

*मूल भाषा में 'मोडियस' अर्थात् वह बरतन जिसमें पचास किलो अनाज समाता हो। प्राचीन काल में बाट-तराजू का व्यापक प्रचलन नहीं था।

उसको न्यायालय में दण्ड मिलेगा।" किन्तु मैं तुमसे कहता हूं जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, उसको न्यायालय में दण्ड मिलेगा, जो अपने भाई को अपशब्द कहेगा, उसको धर्म-महासभा में दण्ड मिलेगा, और जो कोई अपने भाई से, "अरे मूर्ख" कहेगा, वह अग्निमय-नरक में डाला जाएगा।

'यदि तुम अपनी भेंट वेदी पर अर्पण कर रहे हो, और वहां तुम्हें याद आए कि मेरा भाई मुझसे किसी कारण अप्रसन्न है, तो अपनी भेंट वेदी के सम्मुख छोड़ दो, पहले जाकर अपने भाई से मेल करो, और तब आकर भेंट अर्पण करो।

'जब तक तुम अपने मुद्दई के साथ मार्ग में ही हो, उससे शीघ्र समझौता कर लो। ऐसा न हो कि मुद्दई तुम्हें न्यायाधीश को सौंप दे और न्यायाधीश सिपाही को, और तुम बन्दीगृह में डाल दिए जाओ। मैं तुमसे सच कहता हूं जब तक तुम पैसा-पैसा न चुका दोगे, तुम वहां से छूटने न पाओगे।

दुराचार

'तुमने सुना है कि कहा गया था "व्यभिचार न करना।" किन्तु मैं तुमसे कहता हूं जो कोई पुरुष किसी स्त्री पर बुरी इच्छा से आंख लगाए तो वह मन में उसके साथ व्यभिचार कर चुका। यदि तुम्हारी दाहिनी आंख तुम्हारे पतन का कारण है तो उसे निकालकर फेंक दो। तुम्हारा कल्याण इसी में है कि भले ही तुम्हारा एक अंग नष्ट हो, पर समस्त शरीर नरक में न डाला जाए।

'यदि तुम्हारा दाहिना हाथ तुम्हारे पतन का कारण है तो उसे काटकर फेंक दो। तुम्हारा कल्याण इसी में है कि भले ही तुम्हारा एक अंग नष्ट हो पर समस्त शरीर नरक में न पड़े।

तलाक

'कहा गया था, "जो पति अपनी पत्नी को तलाक दे, वह उसे त्यागपत्र लिखकर दे।" किन्तु मैं तुमसे कहता हूं व्यभिचार को छोड़कर यदि किसी अन्य कारण से कोई पति अपनी पत्नी को तलाक देगा तो वह उसे व्यभिचार के लिए बाध्य करता है, और जो तलाक पाई हुई स्त्री से विवाह करेगा, वह भी व्यभिचार करता है।

शपथ और सच्चाई

'फिर तुमने सुना है कि पूर्वजों से कहा गया था, "झूठी शपथ न खाना, परन्तु प्रभु के लिए अपनी शपथों को पूर्ण करना।" किन्तु मैं तुमसे कहता हूं शपथ कभी न खाना—न स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। न पृथ्वी की, क्योंकि वह परमेश्वर के चरणों की चौकी है, न यरूशलेम की, क्योंकि यह महान राजा का नगर है। और न अपने सिर की, क्योंकि तुम अपने एक बाल को भी सफेद या काला नहीं कर सकते। तुम्हारी "हां" का अर्थ हो "हां" और "नहीं" का अर्थ हो "नहीं"। जो इससे अधिक होता है, वह बुराई से* उत्पन्न होता है।

प्रतिशोध

'तुमने सुना है कि कहा गया था, "आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत।" किन्तु मैं तुमसे कहता हूं दुष्ट का विरोध मत करो वरन् जो तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसके आगे दूसरा भी फेर दो। जो तुम पर नालिश करके तुम्हारा कुरता लेना चाहे, उसे अंगरखा भी ले लेने दो। और यदि कोई तुम्हें बेगार में एक किलोमीटर ले जाए, तो उसके साथ दो किलोमीटर चले जाओ। जो तुमसे मांगे उसे दो, और जो तुमसे उधार लेना चाहे, उससे मुंह न मोड़ो।

*अथवा 'शैतान'

शत्रुओं से प्रेम करना

'तुमने सुना है कि कहा गया था, "अपने पड़ोसी से प्रेम करना और अपने शत्रु से द्वेष रखना।" किन्तु मैं तुमसे कहता हूं अपने शत्रुओं से प्रेम करो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो, जिससे तुम अपने पिता की, जो स्वर्ग में है, सन्तान बन सको, क्योंकि वह दुर्जन और सज्जन दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, तथा धार्मिक और अधार्मिक दोनों पर वर्षा करता है।

'यदि तुम केवल उन्हीं से प्रेम करो जो तुमसे प्रेम करते है तो तुम्हें क्या फल मिलेगा? क्या कर लेनेवाले पापी यह नहीं करते? और यदि तुम केवल अपने भाइयों को ही नमस्कार करते हो तो कौन-सा बड़ा काम करते हो? क्या अन्य जाति के लोग ऐसा नहीं करते? अत तुम अपने आचरण में सिद्ध बनो जैसा तुम्हारा स्वर्गिक पिता सिद्ध है।

१ उन लोगों के नाम लिखो, जिन्हें धन्य अथवा सुखी कहा गया है? उन्हें धन्य क्यों कहा गया?
२ यीशु मसीह के अनुयायी—मसीही लोग—किसके समान है? (मत्ती ५ १३–१६)
३ यीशु की दृष्टि में धर्म-नियम, अर्थात् मूसा की प्राचीन व्यवस्था का कितना महत्व है? (मत्ती ५ १७–३७)
४ प्रेम के सम्बन्ध में यीशु की महानतम शिक्षा कौन-सी है? (मत्ती ५ ३८–४८)

१४. पहाड़ी-उपदेश : दूसरा भाग

(मत्ती ६)

गुप्त दान

'सावधान! मनुष्यों के सामने उन्हें दिखाने के लिए अपने धर्म-कार्य मत करो, नहीं तो अपने पिता से, जो स्वर्ग में है, कुछ फल न पाओगे।

'जब तुम दान दो तब इसका ढिंढोरा न पीटो, जैसे पाखण्डी मनुष्य सभागृहों और गलियों में करते है कि लोग उनकी प्रशंसा करे। मैं तुमसे सच कहता हूं वे अपना फल पा चुके है।

'जब तुम दान दो तब तुम्हारा यह कार्य इतना गुप्त हो कि तुम्हारा बायां हाथ भी न जाने कि दाहिना हाथ क्या कर रहा है। तुम्हारा दान गुप्त हो, तब तुम्हारा पिता, जो गुप्त कार्य को भी देखता है, तुम्हें प्रतिफल देगा।

गुप्त प्रार्थना

'जब तुम प्रार्थना करो तब पाखण्डियों के सदृश मत बनो, क्योंकि उन्हें सभागृहों और चौराहों पर खड़े होकर प्रार्थना करना प्रिय लगता है कि लोग उन्हें देखें। मैं तुमसे सच कहता वे अपना फल पा चुके है।

'जब तुम प्रार्थना करो तब अपनी कोठरी में जाओ, द्वार बन्द करो और अपने पिता से, जो गुप्त स्थान में है, प्रार्थना करो, और तुम्हारा पिता, जो गुप्त कार्य को भी देखता है, तुम्हें प्रतिफल देगा। प्रार्थना करते समय अन्य जातियों के समान बक-बक मत करो, क्योंकि उनका विचार है कि बहुत बोलने से उनकी प्रार्थना सुनी जाएगी। तुम उनके समान न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पूर्व ही जानता है कि तुम्हें किन वस्तुओं की आवश्यकता है। अत इस प्रकार प्रार्थना करो,

प्रभु की प्रार्थना

'हे हमारे स्वर्गिक पिता,
तेरा नाम पवित्र माना जाए,
तेरा राज्य आए,
तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग मे पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।
हमे आज उतना भोजन दे जो हमारे लिए आवश्यक है।*
हमारे अपराध क्षमा कर, जैसे हम दूसरो के अपराध क्षमा करते है।
हमारे विश्वास को मत परख, वरन् शैतान से हमे बचा।**
(क्योंकि राज्य, पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही है, आमेन।)+

'यदि तुम मनुष्यो के अपराध क्षमा करोगे तो तुम्हारा स्वर्गिक पिता तुम्हे क्षमा करेगा। परन्तु यदि तुम मनुष्यो के अपराध क्षमा नही करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा नही करेगा।

उपवास

'जब तुम उपवास करो तब पाखण्डियो के समान अपने मुख पर उदासी न लाओ, क्योकि वे अपना मुख म्लान किए रहते है जिससे वे मनुष्यो को उपवासी दिखाई दे। मै तुमसे सच कहता हू, वे अपना फल पा चुके है।

'परन्तु जब तुम उपवास कर रहे हो तब अपने सिर पर तेल मलो और मुह धो डालो, जिससे मनुष्यो को नही वरन् अपने पिता को जो गुप्त मे है, उपवासी दीख पड़ो, और तुम्हारा पिता जो गुप्त कार्य को भी देखता है, तुम्हे प्रतिफल देगा।

सच्चा धन

'पृथ्वी पर अपने लिए धन सचय मत करो जहा कीड़े और काई उसे बिगाड़ते है, तथा चोर सेध लगाते और उसे चुरा लेते है। परन्तु तुम स्वर्ग मे अपने लिए धन सचय करो, जहा न तो कीड़े और काई उसे बिगाड़ते है, और न चोर सेध लगाते और उसे चुराते है। जहा तुम्हारा धन है, वही तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

प्रकाश और अन्धकार

'शरीर का दीपक आख है। यदि तुम्हारी आख ठीक है तो तुम्हारा समस्त शरीर प्रकाशमय होगा, परन्तु यदि तुम्हारी आख रोगी हो जाए तो तुम्हारा समस्त शरीर अन्धकार-मय होगा। यदि तुम्हारे भीतर की ज्योति ही अन्धकार हो तो वह अन्धकार कितना घोर होगा!

धर्म और धन

'कोई मनुष्य दो स्वामियो की सेवा नही कर सकता, या तो वह एक के प्रति द्वेष रखेगा और दूसरे से प्रेम करेगा, अथवा एक के प्रति निष्ठा रखेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनो की सेवा नही कर सकते।

चिन्ता से मुक्ति

'मै तुमसे सच कहता हू अपने जीवन के लिए चिन्ता न करना कि तुम क्या खाओगे

*अथवा 'हमारी दिन भर की रोटी आज हमे दे।'
**अथवा, हमे परीक्षा मे मत डाल वरन् बुराई से बचा।
+ कुछ प्राचीन प्रतियो मे यह वर्णन नही पाया जाता।

और क्या पीओगे, और न शरीर के लिए कि क्या पहिनोगे। क्या भोजन को अपेक्षा जीवन, और वस्त्र को अपेक्षा शरीर अधिक मूल्यवान नही ?

'आकाश के पक्षियो को देखो. वे न बोते है, न काटते, और न कोठार मे बटोरते है, परन्तु तुम्हारा स्वर्गिक पिता उनका पालन करता है। क्या तुम उनसे श्रेष्ठ नही हो ?

'चिन्ता करके तुममे मे कौन व्यक्ति अपनी आयु मे एक घडी भी बढा सकता है ?* वस्त्र के लिए तुम चिन्ता क्यो करते हो ? जगली फूलो से सीखो, कि वे किस प्रकार खिलते है। न तो वे श्रम करते है, और न कातते है। फिर भी, मै तुमसे कहता [redacted] स्वय राजा सुलैमान अपने समस्त वैभव मे उनमे से किसी के समान विभूषित नही था। यदि परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है और कल आग मे झोक दी जाएगी, इस प्रकार हरा-भरा रखता है, तो अल्पविश्वासियो, तुमको वह क्यो न पहिनाएगा ?

'इसलिए चिन्ता न करो ! यह न कहो कि हम क्या खाएगे, क्या पिएगे अथवा क्या पहिनेगे। क्योकि इन सब वस्तुओ की खोज तो अन्य जाति के लोग करते है। तुम्हारा स्वर्गिक पिता जानता है कि तुम्हे इन सबकी आवश्यकता है।

'पहिले परमेश्वर के राज्य की खोज करो और उसकी इच्छा के अनुरूप** आचरण करो तो ये सब वस्तुए भी तुम्हे मिल जाएगी।

'कल की चिन्ता न करना, क्योकि कल अपनी चिन्ता स्वय कर लेगा। आज के लिए आज का ही दुख बहुत है !

१ यीशु ने मत्ती ६ १–४ मे झूठे धर्म के विषय मे चेतावनी दी है। उस चेतावनी को पढ़िए।
२ हमे किस प्रकार प्रार्थना करना चाहिए ?
३ मत्ती ६ १९–२१ मे यीशु धन के विषय मे हमे कौन-सी चेतावनी दे रहे है ?
४ जीवन के प्रति हमारा किस प्रकार का दृष्टिकोण होना चाहिए ? हमे सबसे पहले किसकी खोज करना चाहिए ? पढिए मत्ती ६ २४–३४

१५. पहाड़ी उपदेश : तीसरा भाग
(मत्ती ७)

दूसरों पर दोष लगाना

'दोष न लगाओ जिससे तुम पर दोष न लगाया जाए, क्योंकि जिस माप से तुम दोष लगाते हो, उसी माप से तुम पर भी दोष लगाया जाएगा, और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए नापा जाएगा।

'तुम अपने भाई की आख का तिनका क्यो देखते हो ? अपनी आख का लट्ठा तुम्हे नही सूझता ? तुम अपने भाई से कैसे कह सकते हो कि "आओ, मै तुम्हारी आख से तिनका निकाल दू", जबकि स्वय तुम्हारी आख मे लट्ठा है ? पाखण्डी, पहले अपनी आख का लट्ठा निकाल ले, तभी अपने भाई की आख का तिनका निकालने के लिए तू ठीक-ठीक देख सकेगा।

'पवित्र वस्तु कुत्तो को न दो, और न अपने मोती सूअरो के सामने डालो। ऐसा न हो कि वे उनको पैरो तले रौंदे और पलटकर तुमको चीर डाले।

*इस पद का अनुवाद इस प्रकार भी हो सकता है 'अपने शरीर की लम्बाई एक हाथ और बढ़ा सकता है ?'

**अथवा, उसकी धार्मिकता'

प्रार्थना के सम्बन्ध में प्रतिज्ञा

'मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा। ढूंढो तो तुम पाओगे। खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा, जो कोई मांगता है, उसे मिलता है, जो ढूंढता है, वह पाता है और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाता है।

'तुममें से ऐसा कौन मनुष्य है कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी मांगे तो क्या वह उसे पत्थर देगा? अथवा मछली मांगे तो क्या वह उसे सांप देगा? जब तुम बुरे मनुष्य होते हुए भी अपने बच्चों को अच्छी-अच्छी वस्तुएं देना चाहते हो, तो तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है, तुमसे कहीं अधिक अपने मांगनेवालों को अच्छी-अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?

उत्तम आचरण

'जैसा तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करे वैसा ही तुम भी उनके साथ करो, क्योंकि व्यवस्था और नबियों की यही शिक्षा है।

दो मार्ग

'सकीर्ण द्वार से प्रवेश करो, क्योंकि विशाल है वह द्वार और सरल है वह मार्ग, जो विनाश की ओर ले जाता है। बहुत मनुष्य उससे प्रवेश करते हैं। परन्तु सकीर्ण है वह द्वार और कठिन है वह मार्ग जो जीवन की ओर ले जाता है, पर थोड़े ही मनुष्य उसको पाते हैं।

झूठे नबी

'झूठे नबियों से सावधान! वे तुम्हारे पास भेड़ों के भेस में आते हैं, पर भीतर वे फाड़ खानेवाले भेड़िए हैं। उनके कामों से तुम उन्हें पहचान जाओगे। क्या लोग कटीली झाड़ियों से अंगूर के गुच्छे और ऊंटकटारों से अन्जीर एकत्र करते हैं? इस प्रकार अच्छे पेड़ में अच्छे फल लगते हैं और बुरे पेड़ में बुरे फल। यह हो नहीं सकता कि अच्छे पेड़ में बुरे फल लगें, और बुरे पेड़ में अच्छे फल। जो पेड़ अच्छा फल नहीं देता, वह काटा और आग में झोंका जाता है। अतः झूठे नबियों की शिक्षा के फल से तुम उन्हें पहचानोगे।

कथनी और करनी

'प्रत्येक मनुष्य जो मुझे "हे प्रभु", "हे प्रभु" कहता है, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, परन्तु जो व्यक्ति मेरे स्वर्गिक पिता की इच्छा पर चलता है वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेगा। उस दिन मुझसे बहुत लोग यह कहेंगे, "प्रभु! प्रभु! क्या हमने आपके नाम से नबूवतें नहीं की? क्या आपके नाम से भूतों को नहीं निकाला? क्या हमने आपके नाम से अनेक सामर्थ्य के काम नहीं किए?" तब मैं उनसे स्पष्ट कह दूंगा, "मैंने तुमको कभी नहीं जाना, कुकर्मियो, मुझसे दूर रहो।"

पक्की नींव

'जो व्यक्ति मेरे इन उपदेशों को सुनता और उन पर चलता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान है जिसने अपना मकान चट्टान पर बनाया। वर्षा हुई, बाढ़ आई, आंधी चली और उस मकान से टकराई, तो भी वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर थी।

'परन्तु जो व्यक्ति मेरे इन उपदेशों को सुनता है और उन पर नहीं चलता, वह उस मूर्ख मनुष्य के समान है जिसने अपना मकान रेत पर बनाया। जब वर्षा हुई, बाढ़ आई, आंधी चली और उस मकान से टकराई तो वह गिर पड़ा, और उसका विनाश भयानक था!'

जब यीशु यह उपदेश समाप्त कर चुके तब जनसमूह उनकी शिक्षा सुनकर आश्चर्य-चकित हो गया। क्योंकि वह शास्त्रियों के समान नहीं, वरन् अनुभव के अधिकार के साथ देते थे।

१ मत्ती ७ ७–१२ मे यीशु ने हमे प्रार्थना के सम्बन्ध मे एक वचन दिया है। वह वचन क्या है ?
२ यीशु की दृष्टि मे बुद्धिमान मनुष्य कौन है ? पढिए मत्ती ७ २१–२८.

१६. यीशु के कार्य और शिक्षा

(लूका ३ २३, ७)

आज का पाठ बहुत बडा है। हम तीन-चार विशेष बातो पर ध्यान करेगे। यीशु अनेक आश्चर्यपूर्ण कार्य करते है। वह एक उच्च सैनिक अफसर के पुत्र को स्वस्थ करते है। वह एक विधवा के मृत पुत्र को पुन जीवित करते है।

यूहन्ना बपतिस्मादाता ने यीशु को यहूदी समाज से परिचित कराया था। यूहन्ना अपने देश और कौम की मुक्ति की प्रतीक्षा मे थे। वह परमेश्वर के द्वारा भेजे गए किसी 'मसीह' की प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसके हाथ मे राजनैतिक सत्ता-अधिकार होगा। किन्तु यीशु के पास इस प्रकार की राजनैतिक सत्ता-अधिकार नही था। अत यूहन्ना बपतिस्मादाता को शक हुआ, शायद यीशु 'मसीह' नही है। तब यीशु ने यूहन्ना के शक को दूर किया।

प्रस्तुत पाठ के अन्त मे एक सुन्दर घटना का उल्लेख हुआ है। एक स्त्री, जिसके पाप यीशु ने क्षमा किए थे, अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए अपने आसुओ से यीशु के चरणो को धोती है।

यीशु इस समय लगभग तीस वर्ष के थे।

रोमन सैनिक-अधिकारी के दास को स्वस्थ करना

यीशु कफरनहूम नगर मे आए। वहा किसी रोमन सैनिक-अधिकारी का अत्यन्त प्रिय दास बीमार था और मृत्यु के समीप पहुच चुका था। यीशु की चर्चा सुनकर सैनिक-अधिकारी ने यहूदियो के धर्मवृद्धो को उनके पास भेजा और निवेदन किया कि वह आकर उसके दास को स्वस्थ करे। वे लोग यीशु के पास आए और आग्रहपूर्वक निवेदन करने लगे, 'वह इस योग्य है कि आप उस पर यह कृपा करे, क्योकि वह हमारी जाति से प्रेम करता है और उसी ने हमारे लिए सभागृह बनवाया है।' इस पर यीशु धर्मवृद्धो के साथ चले। जब वह सैनिक-अधिकारी के घर से अधिक दूर नही थे, तब उस सैनिक-अधिकारी ने अपने मित्रो से कहला भेजा, 'प्रभु, कष्ट न कीजिए। मै इस योग्य नही कि आप मेरी छत के नीचे आए। इसीलिए तो मैने अपने को इस योग्य नही समझा कि आपके पास आऊ। एक शब्द ही कह दीजिए तो मेरा सेवक स्वस्थ हो जाएगा। मै स्वय शासन के अधीन हू और सैनिक मेरे अधीन है। मै एक से कहता हू, "जा" तो वह जाता है, दूसरे से कहता हू, "आ" तो वह आता है, और अपने दास से, "यह कर" तो वह कर देता है।' यह सुनकर यीशु को उस पर आश्चर्य हुआ और उन्होने अपने पीछे आते हुए जनसमूह की ओर मुडकर कहा, 'मै तुमसे कहता हू मुझे ऐसा विश्वास इस्राएलियो मे भी नही मिला।' जब भेजे हुए लोग घर लौटे तो उन्होने दास को स्वस्थ पाया।

नाईन नगर की विधवा

इसके कुछ समय पश्चात् यीशु नाईन नगर को गए। उनके साथ उनके शिष्य और एक विशाल जनसमूह जा रहा था। जब यीशु नगर-द्वार पर पहुचे तब लोग एक मृत मनुष्य

को नगर के बाहर ले जा रहे थे। वह अपनी माता का इकलौता पुत्र था, और उसकी माता विधवा थी। नगर की एक बड़ी भीड़ उसके साथ थी। विधवा को देखकर प्रभु का हृदय दया से भर आया। उन्होंने उससे कहा, 'रोओ मत', और आगे बढ़कर अर्थी को छुआ। कन्धा देनेवाले रुक गए। तब यीशु ने कहा, 'युवक, मैं तुझसे कहता हूं, उठ।' मृतक उठ बैठा और बोलने लगा। यीशु ने उसे उसकी माता को सौंप दिया। सब लोगों पर भय छा गया और वे परमेश्वर की स्तुति कर कहने लगे, 'हमारे बीच एक महान नबी उठे हैं, परमेश्वर ने अपनी प्रजा की सुध ली है।' यीशु के सम्बन्ध में यह समाचार समस्त यहूदा प्रदेश तथा आस-पास के सारे क्षेत्र में फैल गया।

यूहन्ना बपतिस्मादाता का प्रश्न

यूहन्ना बपतिस्मादाता के शिष्यों ने उनको इन सब बातों का समाचार दिया। इस पर यूहन्ना ने अपने दो शिष्यों को बुलाया और प्रभु के पास यह पूछने के लिए भेजा, 'जो आनेवाला था, वह आप ही हैं अथवा हम किसी दूसरे की प्रतीक्षा करें ?

शिष्यों ने यीशु के पास आकर कहा, 'यूहन्ना बपतिस्मादाता ने हमको आपके पास यह पूछने के लिए भेजा है कि जो आनेवाला था, वह क्या आप ही हैं, अथवा हम किसी दूसरे की प्रतीक्षा करें ?'

उसी समय यीशु ने अनेक लोगों को उनके रोगों, पीड़ाओं और दुष्टात्माओं से स्वस्थ किया, और अनेक अन्धों को दृष्टि प्रदान की। तब यीशु ने उत्तर दिया, 'जाओ, जो कुछ तुमने देखा और सुना है, उसका समाचार यूहन्ना को दो कि अन्धे देखते हैं, लंगड़े चलते हैं, कुष्ठ रोगी स्वस्थ किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मृतक जीवित किए जाते हैं, और गरीबों को शुभ-सन्देश सुनाया जाता है। धन्य है वह जो मेरे विषय में भ्रम में नहीं पड़ता।'

यूहन्ना द्वारा भेजे गए शिष्यों के लौट जाने पर यीशु यूहन्ना के विषय में जनसमूह से कहने लगे, 'तुम निर्जन प्रदेश में क्या देखने निकले थे ? सरकण्डे को जो हवा में हिलता है ? फिर तुम क्या देखने निकले थे। ऐसे मनुष्य को जो रेशमी वस्त्र पहनता है ? जो राजसी वस्त्र धारण करते और विलास का जीवन बिताते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं। तो फिर तुम क्या देखने निकले थे ? नबी को देखने ? हां, मैं तुमसे कहता हूं, नबी से भी महान व्यक्ति को। उन्हीं के विषय में धर्मशास्त्र का यह लेख है

"देख, मैं तुझ से पहले अपना दूत भेज रहा हूं,
वह तेरे आगे तेरा मार्ग तैयार करेगा।'

मैं तुमसे कहता हूं जो स्त्रियों से उत्पन्न हुए हैं, उनमें यूहन्ना से महान कोई नहीं, फिर भी परमेश्वर के राज्य का छोटे से छोटा व्यक्ति उनसे अधिक महान है।'

सब लोगों ने और कर लेनेवालों ने जब यह सुना, तो उन्होंने यूहन्ना का बपतिस्मा लेने के कारण परमेश्वर की धार्मिकता स्वीकार की*, परन्तु फरीसियों और व्यवस्था के आचार्यों ने उनका बपतिस्मा न लेने के कारण अपने विषय में परमेश्वर की योजना व्यर्थ कर दी।

यीशु ने आगे कहा, 'मैं इस पीढ़ी के लोगों की तुलना किससे करूं ? ये किसके समान हैं ? ये लोग बाजार में बैठे हुए बालकों के समान हैं जो एक-दूसरे को पुकार कर कहते हैं,

"हमने तुम्हारे लिए बांसुरी बजाई, पर तुम न नाचे,
हमने विलाप किया पर तुम न रोए।"

'यूहन्ना बपतिस्मादाता आए। वह साधारण मनुष्य के समान न रोटी खाते और न अंगूर-रस पीते हैं, इस पर भी तुम कहते हो, "इसमें भूत है"। पर मानव-पुत्र आया और वह साधारण मनुष्य के समान खाता और पीता है, और तुम कहते हो, "देखो, पेटू और पियक्कड़

*परमेश्वर की स्तुति की'

मनुष्य, कर लेनेवालों और पापियों का मित्र।" बुद्धि उन सबके द्वारा प्रमाणित होती है जो उसको स्वीकार करते हैं।'

पापिनी स्त्री को क्षमा

किसी फरीसी ने यीशु को अपने साथ भोजन करने के लिए निमन्त्रित किया। वह उस फरीसी के घर गए और भोजन करने के लिए बैठे। उस नगर की एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि यीशु फरीसी के यहां भोजन करने बैठे हैं, संगमरमर के पात्र में सुगन्धित द्रव्य लेकर आई। वह रोती हुई उनके पीछे, चरणों के समीप, खड़ी हो गई और अपने आंसुओं से उनके चरण धोने और सिर के बालों से उन्हें पोंछने लगी। वह बार-बार उनके चरणों का चुम्बन करती एवं उन पर सुगन्धित द्रव्य लगाती थी। यह देखकर वह फरीसी, जिसने यीशु को निमन्त्रण दिया था, सोचने लगा, 'यदि यीशु नबी होते तो जान जाते कि यह स्त्री जो उन्हें छू रही है, कौन है और कैसी है, क्योंकि यह पापिनी है।' इस पर यीशु ने उस फरीसी से कहा, 'शिमौन, मुझे तुमसे कुछ कहना है।' वह बोला, 'गुरु, कहिए।'

यीशु ने कहा, 'किसी महाजन के दो मनुष्य ऋणि थे। एक पर उसका पांच सौ रुपए* ऋण था और दूसरे पर पचास। इन दोनों के पास ऋण चुकाने के लिए कुछ नहीं था, इसलिए उसने दोनों को क्षमा कर दिया। अब उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम करेगा?'

शिमौन ने उत्तर दिया, 'मेरी समझ में वह, जिसका अधिक ऋण क्षमा हुआ।' यीशु ने कहा, 'तुम्हारा विचार ठीक है।' तब उस स्त्री की ओर मुड़कर यीशु ने शिमौन से कहा, 'इस स्त्री को देखते हो? मैं तुम्हारे घर आया। तुमने मेरे पैर धोने के लिए जल नहीं दिया, पर इसने आंसुओं से मेरे पैर भिगोए और अपने बालों से उन्हें पोंछा। तुमने मेरा चुम्बन नहीं लिया, परन्तु जब से यह घर के भीतर आई है, इसने मेरे पैरों का चुम्बन लेना नहीं छोड़ा। तुमने मेरे सिर पर तेल नहीं डाला, परन्तु इसने मेरे पैरों पर सुगन्धित द्रव्य लगाया है। इस कारण मैं तुमसे कहता हूं इसके पाप, जो बहुत हैं, क्षमा हुए, यह इस बात से स्पष्ट है कि इसने बहुत प्रेम किया है। इसलिए जिसे थोड़ा क्षमा किया गया है, वह प्रेम भी थोड़ा करता है।' तब यीशु ने स्त्री से कहा, 'तेरे पाप क्षमा हुए।' जो उनके साथ भोजन पर बैठे थे, वे आपस में कहने लगे, 'यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करते हैं?' यीशु ने स्त्री से कहा, 'तेरे विश्वास ने तेरा उद्धार किया है। शान्ति से जा।'

१ यीशु विधवा के एकलौते पुत्र को मृतकों में से जीवित करते हैं। इस आश्चर्यपूर्ण घटना से हम यीशु के विषय में क्या सीखते हैं?
२ यीशु ने अपने विषय में यूहन्ना बपतिस्मादाता को क्या बताया? (पढ़ो लूका ७ २२)
३ यीशु ने पापिन स्त्री के प्रेम को किस प्रकार समझाया? (पढ़ो, लूक ७ ३६–५०)

१७. यीशु दृष्टान्तों के माध्यम से शिक्षा देते हैं

(मत्ती १३)

यीशु को जन-साधारण बहुत प्रेम करते थे। भीड़-की-भीड़ उनके पीछे-पीछे जाती थी। जब वह उपदेश देते थे, तब हजारों लोग उनके चारों ओर एकत्र

*मूल में दीनार

हो जाते थे। क्यों? इसके अनेक कारण हैं। लेकिन उन कारणों में से एक खास कारण है। वह श्रोताओं को कहानी के द्वारा शिक्षा देते थे। कभी-कभी इन कहानियों को समझना कठिन होता था। लेकिन जो श्रोता यीशु की शिक्षा को समझना चाहते थे, उनसे प्रेम करते थे, उनको यीशु इन कहानियों का अर्थ समझा देते थे। इन कहानियों को हम दृष्टान्त भी कहते हैं।

बीज बोनेवाले का दृष्टान्त

उसी दिन यीशु घर से निकले और भील के तट पर बैठ गए। उनके समीप इतना विशाल जनसमूह एकत्र हो गया कि उन्हें नौका पर चढ़कर बैठना पड़ा, और समस्त जनसमूह तट पर खड़ा रहा। यीशु ने दृष्टान्तों द्वारा उनसे अनेक बातें कहीं।

यीशु ने कहा, 'बीज बोनेवाला एक किसान बीज बोने निकला। बोते समय कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और पक्षियों ने आकर उन्हें चुग लिया। कुछ बीज पथरीली भूमि में गिरे जहां उन्हें बहुत मिट्टी न मिली। मिट्टी के गहरे न होने के कारण वे शीघ्र अंकुरित हो गए, पर सूर्य के उदय होने पर झुलस गए और जड़ न पकड़ने के कारण सूख गए। कुछ बीज कटीली भाड़ियों में गिरे, और भाड़ियां बढ़ीं और उनको दबा दिया। कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे और फूले-फले सौ गुने, साठ गुने और तीस गुने। जिसके कान हों, वह सुन ले।'

दृष्टान्तों का उद्देश्य

शिष्यों ने पास आकर यीशु से पूछा, 'आप दृष्टान्तों में लोगों से क्यों बातें करते हैं?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'इसलिए कि परमेश्वर के राज्य के रहस्यों का ज्ञान तुम्हें दिया गया है, पर उन्हें नहीं। जिसके पास है, उसे दिया जाएगा और उसके पास बहुत हो जाएगा। पर जिसके पास नहीं है, उससे जो कुछ उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा।

'मैं उनसे दृष्टान्तों में इस कारण बात करता हूं कि वे देखते हुए भी नहीं देखते और सुनते हुए भी नहीं सुनते और न समझते ही हैं। इनके विषय में नबी यशायाह की यह नबूवत पूरी होती है:

"वे सुनेंगे अवश्य, पर न समझेंगे,
वे देखेंगे अवश्य, पर उन्हें सूझ न पड़ेगा,
क्योंकि उन लोगों का मन मोटा हो गया है।
वे कानों से ऊंचा सुनने लगे हैं,
उन्होंने अपनी आंखें बन्द कर ली हैं,
जिससे कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें,
कानों से सुनें, मन से समझें,
तथा मुझ-प्रभु की ओर लौटें
और मैं उनको स्वस्थ कर दूं।"

'परन्तु तुम्हारी आंखें धन्य हैं, क्योंकि वे देखती हैं, और तुम्हारे कान धन्य हैं, क्योंकि वे सुनते हैं। मैं तुमसे सच कहता हूं: अनेक नबियों और धर्मात्माओं ने चाहा कि जो बातें तुम देख रहे हो, देखें, पर वे न देख सके, और जो बातें तुम सुन रहे हो, सुनें, पर वे न सुन सके।

दृष्टान्तों की व्याख्या

'अब, तुम बीज बोनेवाले किसान के दृष्टान्त का अर्थ सुनो। जब कोई व्यक्ति परमेश्वर के राज्य का शुभ-सन्देश* सुनता है पर समझता नहीं, तब शैतान आता और जो कुछ उसके हृदय में बोया गया था, छीन लेता है। यह वही बीज है जो मार्ग के किनारे बोया गया था।

'पथरीली भूमि पर बोया गया वह है, जो परमेश्वर के शुभ-सन्देश को सुनकर तुरन्त

आनन्द से ग्रहण करता है, पर उसकी जड़ गहरी नहीं होती। वह अल्प काल तक स्थिर रहता है, और शुभ-सन्देश के कारण कष्ट पड़ने या अत्याचार होने पर तुरन्त उसका पतन हो जाता है।

'कटीली झाड़ियों में बोया गया वह है, जो शुभ-सन्देश को सुनता है, पर संसार की चिन्ता और धन का मोह इस शुभ-सन्देश को दबा देते हैं, और वह पनपने नहीं पाता।

'अच्छी भूमि में बोया गया वह है, जो शुभ-सन्देश को सुनता, समझता और फलवन्त होता है, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना और कोई तीस गुना।'

गेहूं और जंगली बीज

यीशु ने उनके सामने दूसरा दृष्टान्त रखा 'परमेश्वर के राज्य की तुलना उस मनुष्य से की जा सकती है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। परन्तु जब सब लोग सो रहे थे तब उसका शत्रु आया, और गेहूं के बीच जंगली बीज बोकर चला गया।

'जब अंकुर निकले और बालें लगी तब जंगली बीज भी दिखाई दिए। इस पर गृह-स्वामी के सेवकों ने आकर उससे कहा, "प्रभु, क्या आपने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं बोया था? तो इसमें जंगली बीज कहां से आए?"

'वह बोला, "यह किसी शत्रु का कार्य है।"

'सेवकों ने कहा, "क्या आपकी इच्छा है कि हम जाकर उन्हें एकत्र कर ले?"

'उसने कहा, "नहीं, कहीं ऐसा न हो कि जंगली बीज एकत्र करते हुए, तुम उनके साथ गेहूं भी उखाड़ लो। फसल की कटनी तक दोनों को साथ-साथ बढ़ने दो। कटनी के समय मैं काटनेवालों से कहूंगा कि पहले जंगली बीज के पौधे एकत्र करो और जलाने के लिए उनके गट्ठे बांध लो, फिर गेहूं को मेरे कोठार में एकत्र करो।"'

राई का बीज और खमीर

यीशु ने एक और दृष्टान्त उनके सामने रखा 'परमेश्वर का राज्य राई के बीज के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लिया और अपने खेत में बो दिया। वह सब बीजों से छोटा होता है, किन्तु बढ़कर समस्त पौधों से विशाल हो जाता है, और ऐसा वृक्ष बनता है कि उसकी शाखाओं में आकाश के पक्षी आकर बसेरा करते हैं।'

यीशु ने एक और दृष्टान्त उन्हें बताया 'परमेश्वर का राज्य खमीर के समान है, जिसे किसी स्त्री ने लिया और दस किलो* मैदे में मिला दिया, और होते-होते सब में खमीर उठ आया।'

दृष्टान्तों का प्रयोग

ये सब बातें यीशु ने जनसमूह से दृष्टान्तों में कही, और दृष्टान्तों बिना उनसे कुछ नहीं कहा, जिससे नबी-कथित यह वचन पूरा हो,

'मैं दृष्टान्तों में बोलूंगा
सृष्टि के आरम्भ से जो छिपा है, उसे प्रकट करूंगा।'

जंगली बीज के दृष्टांत की व्याख्या

जब यीशु जनसमूह को छोड़कर घर में गए तब उनके शिष्यों ने पास आकर कहा, 'खेत के जंगली बीजों का दृष्टान्त हमें समझा दीजिए।' यीशु ने उत्तर दिया, 'अच्छे बीज बोनेवाला है मानव-पुत्र। खेत है संसार, और अच्छे बीज हैं परमेश्वर के राज्य की सन्तान। जंगली बीज बुराई की सन्तान है, और उन्हें बोनेवाला शत्रु शैतान है। कटनी है संसार का अन्त और काटनेवाले हैं स्वर्गदूत।

'जैसे जंगली बीज एकत्र कर आग में जलाए जाते हैं, वैसे ही संसार के अन्त में होगा। मानव-पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से पतन के सब कारणों को

*अथवा, 'तीन पसेरी'

एवं कुकर्मियों को इकट्ठा कर अग्नि-कुण्ड में डालेंगे, वहां वे रोएंगे और दांत पीसेंगे। तब धर्मात्मा अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे। जिसके कान हों वह सुन ले।

गुप्त खजाना, अमूल्य रत्न और जाल के दृष्टान्त

'परमेश्वर का राज्य खेत में छिपे हुए खजाने के समान है जिसे किसी मनुष्य ने पाया और छिपा दिया। अब वह आनन्दमग्न होकर जाता है और अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल ले लेता है।

'फिर परमेश्वर का राज्य उस व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था। जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तब उसने जाकर अपना सब कुछ बेच दिया और उसे मोल ले लिया।

'फिर परमेश्वर का राज्य उस जाल के समान है जो सागर में डाला गया, और जिसमें सब प्रकार की मछलियां घिर आईं। जब जाल भर गया तब मछुए उसे तट पर खींच लाए, और बैठकर अच्छी मछलियां तो पात्रों में एकत्र कीं, और बुरी फेंक दीं। संसार के अन्त में ऐसा ही होगा। स्वर्गदूत आएंगे, धर्मात्माओं से दुर्जनों को अलग करेंगे, और उन्हें अग्नि-कुण्ड में डालेंगे। वहां वे रोएंगे और दांत पीसेंगे।

पुरानी और नई शिक्षा का महत्व

'क्या तुम ये सब बातें समझे?' वे बोले, 'हां।'

यीशु ने उनसे कहा, 'इस कारण प्रत्येक शास्त्री जो परमेश्वर के राज्य की शिक्षा पा चुका है, उस गृहस्थ के सदृश है, जो अपने भण्डारगृह से नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है।'

नासरत में यीशु का अपमान

यीशु इन दृष्टान्तों को समाप्त कर वहां से चले गए। वह अपने नगर में आकर लोगों को सभागृह में उपदेश देने लगे। लोग उनका उपदेश सुनकर चकित रह गए और बोले, 'इसे यह बुद्धि और सामर्थ्य के काम कहां से प्राप्त हुए? क्या यह बढ़ई का पुत्र नहीं है? क्या इसकी माता का नाम मरियम और इसके भाइयों के नाम याकूब, यूसुफ, शिमौन और यहूदा नहीं हैं? क्या इसकी सब बहिनें हमारे बीच नहीं रहतीं? फिर इसे यह सब कहां से प्राप्त हुआ?' इस प्रकार लोगों को यीशु के सम्बन्ध में भ्रम हुआ।

यीशु ने उनसे कहा, 'अपने नगर और घर को छोड़कर और कहीं नबी का अपमान नहीं होता।' उन्होंने लोगों के अविश्वास के कारण वहां सामर्थ्य के अनेक काम नहीं किए।

१ बीज बोनेवाले किसान के दृष्टान्त के द्वारा यीशु हमें कौन-सी शिक्षा दे रहे हैं?

२ गेहूं और भूसा के दृष्टान्त का क्या अर्थ है? (प्रभु यीशु को उद्धारकर्ता स्वीकार करनेवाले विश्वासी जन परमेश्वर के दण्ड से बचेंगे, किन्तु अन्य लोग अनन्त नरक की आग में डाले जाएंगे।)

१८. यीशु के आश्चर्यपूर्ण कार्य

(मत्ती ८: १–३४)

यीशु ने तीन वर्ष तक जनता की सेवा की थी। इस अवधि में उन्होंने अनेक आश्चर्यपूर्ण कार्य किए: रोगियों को स्वस्थ किया, मृतकों को जीवित किया, कोढ़ियों को शुद्ध किया। प्रस्तुत अध्याय में ऐसे ही कुछ आश्चर्यपूर्ण का उल्लेख किया गया है।

कुष्ठ रोगी को स्वस्थ करना

जब यीशु पहाड़ से उतरे तब विशाल जनसमूह उनके पीछे हो लिया। उस समय एक कुष्ठ रोगी उनके पास आया और वन्दना करके कहने लगा, 'हे प्रभु, यदि आप चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकते है।' यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे स्पर्श किया और कहा, 'निश्चय, मै चाहता हू कि तुम शुद्ध हो जाओ।' और वह तुरन्त कोढ से शुद्ध हो गया। यीशु ने उससे कहा, 'देखो, किसी से न कहना, जाओ, अपने आपको पुरोहित को दिखाओ, और लोगो के प्रमाण के लिए मूसा के आदेश के अनुसार मन्दिर मे भेट अर्पण करो।'

रोमन सैनिक अधिकारी का सेवक

जब यीशु ने कफरनहूम मे प्रवेश किया तब एक रोमन सैनिक अधिकारी* ने आकर उनसे निवेदन किया, 'प्रभु, मेरा सेवक घर मे लकवा रोग से पीड़ित पड़ा है और घोर कष्ट मे है।' यीशु ने उससे कहा, 'मै आकर उसे स्वस्थ करूगा।' सैनिक-अधिकारी ने उत्तर दिया, 'प्रभु, मै इस योग्य नहीं हू कि आप मेरी छत के नीचे आए। आप एक शब्द कह दीजिए तो मेरा सेवक स्वस्थ हो जाएगा। मै स्वय शासन के अधीन हू, और सैनिक मेरे अधीन है। मै एक से कहता हू, "जा" तो वह जाता है, दूसरे से कहता हू, "आ" तो वह आता है, मै अपने दास से कहता हू, "यह कर" तो वह करता है।'

यीशु को यह सुनकर आश्चर्य हुआ और उन्होंने अपने पीछे चलनेवालो से कहा, 'मै तुमसे सच कहता हू, मैंने इस्राएल देश मे भी ऐसा विश्वास किसी मे नही पाया। मै कहता हू, पूर्व और पश्चिम से बहुत लोग आएगे और अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ परमेश्वर के राज्य मे भोजन करने बैठेगे, परन्तु परमेश्वर के राज्य की सन्तान बाहर अन्धकार मे निकाल दी जाएगी, जहा वे रोएगे और दात पीसेगे।' फिर यीशु ने रोमन सैनिक अधिकारी से कहा, 'जाओ, जैसा तुमने विश्वास किया है, वैसा ही तुम्हारे लिए होगा।' और उसी घड़ी उसका सेवक स्वस्थ हो गया।

पतरस की सास तथा अन्य लोगों को स्वस्थ करना

तब यीशु पतरस के घर आए और देखा कि उसकी सास बुखार मे पड़ी है। यीशु ने उसका हाथ स्पर्श किया और उसका बुखार उतर गया। वह उठकर उनका सेवा-सत्कार करने लगी।

सन्ध्या के समय लोग बहुत-से भूत-ग्रस्त मनुष्यो को यीशु के पास लाए। यीशु ने केवल बोलकर ही उन आत्माओ को निकाल दिया और सब रोगियो को स्वस्थ कर दिया, जिससे नबी यशायाह का यह वचन पूरा हो, 'उसने हमारी दुर्बलताए स्वय भोगी और हमारे रोगो का बोझ उठा लिया।'

शिष्य बनने की उत्सुकता

यीशु ने अपने चारो ओर विशाल जनसमूह को देखा तो शिष्यो को दूसरे तट पर जाने का आदेश दिया। तब एक शास्त्री उनके पास आया और उनसे बोला, 'गुरुजी, जहा कही आप जाएगे मै आपका अनुसरण करूगा।' यीशु ने कहा, 'लोमड़ियो के मादे है, और आकाश के पक्षियो के घोसले भी है, परन्तु मानव-पुत्र के पास विश्राम के लिए सिर रखने को भी कहीं स्थान नही।'

एक अन्य शिष्य उनसे कहने लगा, 'प्रभु, मुझे अनुमति दीजिए कि पहिले मै जाकर अपने पिता को गाड़ आऊ।' यीशु ने उससे कहा, 'तुम मेरा अनुसरण करो और मुरदो को अपने मुरदे गाड़ने दो।'

*अथवा, 'शतपति'

तूफान को शान्त करना

यीशु नौका पर चढ़े तो शिष्यों ने उनका अनुसरण किया। एकाएक झील मे प्रचण्ड तूफान उठा, यहा तक कि नौका लहरो से ढक गई। यीशु सो रहे थे। शिष्यों ने आकर उन्हे जगाया और कहा, 'प्रभु, हमे बचाइए, हम तो मरे।' यीशु ने कहा, 'अल्पविश्वासियो, तुम इतने डरे हुए क्यों हो ?' तब यीशु ने उठकर तूफान और लहरो* को आदेश दिया कि वे थम जाए। अत वे थम गए और बड़ी शान्ति छा गई। शिष्य चकित हो कहने लगे, 'यह साधारण मनुष्य नही है, क्योकि तूफान और लहरे भी इनकी आज्ञा मानते है।'

दो भूतग्रसित मनुष्यों को स्वस्थ करना

जब यीशु दूसरे तट पर गदरेनियो के प्रदेश मे आए तब उन्हे भूत से जकड़े हुए दो मनुष्य मिले। वे कबरो के मध्य से निकलकर आए थे। वे इतने भयकर थे कि कोई व्यक्ति उस मार्ग से निकल नही सकता था।

वे चिल्ला उठे, 'हे परमेश्वर-पुत्र, हमारा आपसे क्या सम्बन्ध ? क्या आप हमे समय से पहले ही सताने आए है ?' वहा से कुछ दूर पर बहुत से सूअरो का एक झुण्ड चर रहा था। भूतो ने निवेदन किया, 'यदि आप हमे निकाल ही रहे है तो हमे सूअरो के झुण्ड मे भेज दीजिए।' यीशु ने उनसे कहा, 'जाओ।'

वे निकलकर सूअरो के झुण्ड मे समा गए और वह सारा झुण्ड कगार से झील की ओर झपटा और जल मे डूब मरा।

तब सूअरो के चरवाहे भागे और सब समाचार नगर मे जा सुनाया। उन्होंने उन दोनो मनुष्यों के विषय मे भी बताया जो भूतो से जकड़े हुए थे। इस पर सारा नगर यीशु से मिलने निकल आया। जब लोगो ने यीशु को देखा तब वे उनसे निवेदन करने लगे, 'कृपया, हमारे प्रदेश से चले जाइए।'

यीशु नौका पर चढ़कर पार हुए और अपने नगर मे आए।

> प्रस्तुत अध्याय मे बताए गए आश्चर्यपूर्ण कार्यों के नाम लिखो। प्रत्येक आश्चर्यपूर्ण कार्य से हम यीशु के विषय मे क्या सीखते है ?

१६. यीशु के जीवन-चरित्र की अन्य घटनाएं

(मरकुस ६)

नासरत गाव मे, स्वय यीशु के गाव के लोगो ने यीशु को उद्धारकर्त्ता के रूप मे स्वीकार नही किया। प्रस्तुत पाठ में बताया गया है कि यीशु दूसरी बार अपने गाव में आते है। लेकिन गाववाले उनको नही स्वीकार करते, और उन पर विश्वास नही करते है कि यीशु ईश्वर-पुत्र है, ससार के उद्धारकर्त्ता है।

प्रेरितों का भेजा जाना

यीशु उपदेश देने के लिए गावो मे भ्रमण करने लगे।

उन्होंने बारह प्रेरितो को बुलाया और उन्हे अशुद्ध आत्माओ पर अधिकार देकर,

*झील' या 'समुद्र'

दो-दो करके भेजा। यीशु ने उन्हें आज्ञा दी, 'यात्रा में लाठी के अतिरिक्त कुछ साथ न लो न रोटी, न झोली और न पैसे में रुपए; चप्पल पहनना, परन्तु दो-दो कुरते नहीं।' उन्होंने उनसे कहा, 'जहाँ कहीं तुम किसी घर में प्रवेश करो तो उस स्थान से विदा होने तक वहीं ठहरो। यदि किसी स्थान पर तुम्हारा स्वागत न हो और लोग तुम्हारी बात न सुनें तो चलते समय उनके विरुद्ध प्रमाण के लिए अपने पैरों की धूल झाड़ दो।'

प्रेरितों ने जाकर प्रचार किया कि लोग हृदय-परिवर्तन करें। उन्होंने बहुत से भूत निकाले और अस्वस्थ व्यक्तियों को तेल मलकर स्वस्थ किया।

यूहन्ना बपतिस्मादाता की मृत्यु

राजा हेरोदेस ने यह चर्चा सुनी, क्योंकि यीशु का नाम प्रसिद्ध हो चुका था। लोग कह रहे थे, 'यूहन्ना बपतिस्मादाता मृतकों में से जीवित हो उठे हैं। इस कारण उनमें ये शक्तियाँ क्रियाशील हैं।' दूसरों का कहना था, 'यह एलियाह है।' अन्य लोग कहते थे, 'नबियों के सदृश एक नबी है।' परन्तु जब हेरोदेस ने सुना तब उसने कहा, 'यह यूहन्ना है, जिसका सिर मैंने कटवाया था। वह जीवित हो उठा है।'

राजा हेरोदेस ने सिपाही भेजकर यूहन्ना को बन्दी बनाया और उनको कारागार में डाल दिया था। यह उसने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण किया, जिससे उसने विवाह कर लिया था। यूहन्ना ने हेरोदेस से कहा था, 'तुम्हें अपने भाई की पत्नी को नहीं रखना चाहिए, क्योंकि यह व्यवस्था के विरुद्ध कार्य है।' इस कारण हेरोदियास यूहन्ना से द्वेष करती थी, और चाहती थी कि उन्हें मरवा डाले, पर वह कुछ कर नहीं पाती थी; क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना को धर्मात्मा और पवित्र पुरुष जानकर उनसे डरता था और उनके प्राण की रक्षा करता था। बहुधा वह उनके प्रवचन सुनता और घबरा जाता था, तो भी प्रसन्नता से उनको सुनता था।

सुअवसर आने पर हेरोदेस ने अपने जन्म-दिन पर दरबारियों, सेनापतियों और गलील प्रदेश के प्रतिष्ठित लोगों को भोज में निमन्त्रित किया।

इस समय हेरोदियास की पुत्री भीतर आई और नृत्य करके हेरोदेस एवं उसके अतिथियों को प्रसन्न किया। राजा ने लड़की से कहा, 'तू जो चाहे माँग, मैं तुझे दूँगा।' उसने शपथ खाकर कहा, 'जो कुछ भी तू माँगेगी—यदि तू मेरा आधा राज्य भी माँगेगी तो मैं उसको भी दे दूँगा।'

वह बाहर गई और अपनी माँ से पूछा, 'मैं क्या माँगूँ?' उसने कहा, 'यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर।'

वह तुरन्त शीघ्रतापूर्वक राजा के पास भीतर आई और अनुरोध किया, 'मैं चाहती हूँ कि आप यूहन्ना बपतिस्मादाता का सिर अभी एक थाल में मुझे दें।'

राजा बहुत उदास हुआ, पर अतिथियों और अपनी शपथ के कारण उसे निराश न करना चाहा। उसने एक सैनिक भेजा कि वह यूहन्ना का सिर ले आए। सैनिक गया। उसने कारागार में यूहन्ना का सिर काटा और थाल में लाकर लड़की को दिया और लड़की ने अपनी माता को दे दिया। जब यूहन्ना के शिष्यों ने यह सुना तब वे आए और यूहन्ना का शव ले गए। उन्होंने उनके शव को कबर में गाड़ दिया।

प्रेरितों का लौटना

प्रेरित लौटे और यीशु के पास एकत्र हुए। जो कुछ उन्होंने किया और सिखाया था, सब यीशु से वर्णन किया।

तब यीशु ने उनसे कहा, 'आओ, अकेले निर्जन स्थान में चलो और कुछ देर विश्राम कर लो,' क्योंकि आने-जानेवालों की संख्या इतनी अधिक थी कि उन्हें खाने का भी अवसर नहीं मिला था।

पांच हजार को भोजन कराना

अत यीशु और उनके शिष्य नौका पर बैठकर चुपचाप निर्जन स्थान मे चले गए।

लोगो ने उन्हे जाते हुए देखा और पहचान गए। वे सब नगरो मे स्थल-मार्ग द्वारा दौड-दौडकर उस स्थान पर उनसे पहिले ही पहुच गए। यीशु ने नौका से उतरकर उस विशाल जनसमूह को देखा तो उन पर दया आई, क्योकि ये लोग उन भेडो के सदृश थे जिनका कोई चरवाहा न हो। वह उन्हे अनेक बातो की शिक्षा देने लगे।

जब दिन बहुत ढल गया तब शिष्य उनके पास आए और बोले, 'यह निर्जन स्थान है और दिन बहुत ढल गया है लोगो को विदा कर दीजिए कि वे आसपास के कस्बो और गावो मे जाए और अपने लिए कुछ खाने को मोल ले।'

परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, 'तुम लोग ही इन्हे खाने को दो।' वे बोले, 'क्या हम जाकर दो सौ रुपयो* की रोटी लाए, और इन्हे खाने को दे?' यीशु ने पूछा, 'तुम्हारे पास कितनी रोटिया है? जाओ, देखो।' वे गए। उन्होंने पता लगाकर यीशु को बताया, 'पाच रोटी और दो मछली।'

इस पर यीशु ने उन्हे आज्ञा दी कि वे सब लोगो को हरी घास पर छोटे-छोटे समूहो मे बैठा दे।

लोग पचास-पचास और सौ-सौ की पक्तियो मे बैठ गए।

तब यीशु ने पाच रोटी और दो मछली ली, और ऊपर आकाश की ओर देखकर आशीष मागी। तब यीशु ने रोटी तोडी और शिष्यो को दी कि वे लोगो को परोसे, और यीशु ने दो मछली भी सबमे बाट दी, सबने भोजन किया और तृप्त हुए। उन्होंने रोटी के टुकडो से भरी हुई बारह टोकरिया उठाई और मछलियो के कुछ टुकडे भी। भोजन करनेवालो की सख्या पाच हजार थी।

झील पर चलना

उसी क्षण यीशु ने शिष्यो को नौका पर चढने को विवश किया कि वे उनसे पूर्व झील के उस पार बैतसैदा पहुच जाए, और वह स्वय जनसमूह को विदा करने के लिए रह गए। जब वह लोगो को विदा कर चुके तब वह प्रार्थना करने के लिए पहाड पर चले गए।

सन्ध्या हुई तो नौका झील के मध्य मे थी और वह अकेले तट पर थे। उन्होंने शिष्यों को देखा कि वे कठिनाई से नौका खे रहे है, क्योकि वायु प्रतिकूल थी।

यीशु रात के चौथे पहर मे झील पर चलकर उनकी ओर आए। वह उनके समीप से निकले जा रहे थे। पर शिष्यो ने उन्हे झील पर चलते देखकर समझा कि कोई प्रेत है, और वे चिल्लाने लगे। क्योकि सबने उन्हे देखा और घबरा गए। पर यीशु तुरन्त उनसे बोले, 'धैर्य रखो, मै हू, डरो मत।' वह उनके पास नौका मे चढ आए और वायु थम गई। वे लोग आश्चर्यचकित हो गए, क्योकि भोजन सम्बन्धी घटना उनकी समझ मे नही आई थी। उनका मन जड हो गया था।

गन्नेसरत में रोगियों को स्वस्थ करना

झील पार करके यीशु और उनके शिष्य गन्नेसरत के सीमा-क्षेत्र मे आए और नौका किनारे लगाई। वे नौका से उतरे ही थे कि लोगो ने यीशु को पहचान लिया। वे लोग समस्त प्रदेश मे चारो ओर दौड गए और जहा-जहा उन्होंने सुना कि यीशु आए है, वही खाट पर रोगियो को लाने लगे।

गावो मे, नगरो मे और बस्तियो मे जहा कही यीशु जाते, लोग रोगियो को सार्वजनिक स्थानो मे रख देते और यीशु से निवेदन करते थे कि अपने वस्त्र का सिरा ही उन्हे स्पर्श करने दे और जितनो ने यीशु को स्पर्श किया वे स्वस्थ हो गए।

१ यीशु के गाववाले उनपर क्यों नहीं विश्वास कर सके ?
२ पाच हजार को भोजन करा कर यीशु ने अपने बारे में कौन-सी सच्चाई प्रकट की ?
३ पानी पर चल कर यीशु ने अपने विषय मे क्या प्रकट किया ?

२०. मनुष्य की अशुद्धता : आत्मिक या शारीरिक ?

(मरकुस ७)

यीशु के समय मे यहूदी समाज मे अनेक धर्म-नियम, कर्म-काण्ड प्रचलित थे, जिनका पालन यहूदी लोग केवल दिखावे के लिए कठोरता से करते थे, और सोचते थे कि धर्म-नियमो, कर्म-काण्डो का पालन करने से ही परमेश्वर प्रसन्न होता है। ऐसा ही एक नियम था—बाजार से वापस आने पर हाथ, और बर्तनो को धोना। यीशु ने उन कट्टर यहूदियों की आलोचना की, और उन्हे बताया कि काश वे अपने हृदय और मन की गन्दगी को भी धोते !

परम्परा पालन का प्रश्न

फरीसी और यरूशलेम से आए हुए कुछ शास्त्री यीशु के पास एकत्र हुए। उन्होंने देखा कि यीशु के कुछ शिष्य 'अशुद्ध' अर्थात् बिना धुले हाथों से भोजन कर रहे है—क्योंकि फरीसी और जनसाधारण यहूदी प्राचीन धर्मपरम्परा का पालन करते है और विधि के अनुसार हाथ धोए* बिना भोजन नही करते।

वे बाजार से आने पर जब तक स्नान न कर ले, भोजन नही करते। और भी अनेक परम्पराए है जिनका वे पालन करते है, उदाहरण के लिए, प्यालो, कटोरो, लोटो और ताबा के बरतनों का धोना-माजना।

फरीसी और शास्त्रियो ने यीशु से पूछा, 'क्या कारण है कि आपके शिष्य धर्मवृद्धो की परम्परा के अनुसार आचरण नही करते, वरन् "अशुद्ध" हाथो से भोजन करते है ?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'नबी यशायाह ने तुम पाखण्डियो के विषय मे ठीक ही नबूवत की थी। धर्मशास्त्र मे उनका यह लेख है

"ये लोग ओठों से मेरा आदर करते है,
परन्तु इनका हृदय मुझसे दूर है,
ये व्यर्थ मेरी उपासना करते है,
क्योंकि ये मनुष्य के द्वारा बनाए गए नियमो को
ऐसे सिखाते है मानो वे धर्म-सिद्धान्त हो।"

'तुम मनुष्यो की परम्परा का तो पालन करते हो किन्तु परमेश्वर की आज्ञा का उल्लघन।'

यीशु ने उनसे यह भी कहा, 'अपनी परम्परा का पालन करने के लिए तुम कितनी चतुराई से परमेश्वर की आज्ञा का उल्लघन कर देते हो। मूसा का कथन है, "अपने माता-पिता का आदर कर" और "जो माता-पिता को बुरा कहे उसे प्राण-दण्ड दिया जाए"। परन्तु तुम्हारा कथन है यदि कोई मनुष्य अपने पिता अथवा अपनी माता से कहे, "मुझसे जो कुछ तुम्हे प्राप्त होना था वह 'कुर्बान' अर्थात् अर्पित है", तो फिर तुम उसे पिता अथवा माता के लिए कुछ नही करने देते। इस प्रकार तुम अपनी परम्परा सिखाकर परमेश्वर के वचन को रद्द करते हो। ऐसे ही अनेक कार्य तुम करते हो।'

*मूल भाषा मे शब्द 'पुग्मे' है, जिसके अनेक असमाहित अर्थ विचारणीय है, जैसे-कुहनी, कलाई, मुट्ठी, हथेली के बीच का भाग, आदि।

यीशु ने जनसमूह को फिर अपने पास बुलाया और कहा, 'तुम सब मेरी बात सुनो और समझो। ऐसी कोई वस्तु नहीं जो बाहर से मनुष्य के भीतर जाकर उसे अशुद्ध कर सके, परन्तु जो वस्तुएं मनुष्य में से बाहर निकलती हैं वे उसे अशुद्ध करती हैं।

(जिसके सुनने के कान हों, सुन ले।)*

जब यीशु जनसमूह के पास से घर के भीतर आए तब उनके शिष्यों ने इस दृष्टान्त का अर्थ पूछा। यीशु ने उनसे कहा, 'क्या तुम भी इतने निर्बुद्धि हो? क्या तुम्हारी समझ में नहीं आता कि कोई वस्तु जो बाहर से मनुष्य के भीतर जाती है, उसे अशुद्ध नहीं कर सकती, क्योंकि वह उसके मन में नहीं वरन् पेट में जाती है और मल द्वारा बाहर निकल जाती है'—इस प्रकार यीशु ने सब खाद्य पदार्थों को पवित्र ठहराया।

उन्होंने आगे कहा, 'जो मनुष्य के भीतर से निकलता है, वही उसे अशुद्ध करता है। क्योंकि मनुष्य के भीतर से अर्थात मन से बुरी-बुरी योजनाएं निकलती हैं, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ और द्वेष के काम, कपट, निर्लज्जता, ईर्ष्या, निन्दा, उद्दण्डता और मूर्खता—ये सब बुराइयां मन से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।'

गैरयहूदी बालिका को नीरोग करना

तब यीशु उस स्थान को छोड़कर सोर की सीमा में आए और एक घर में गए। उनकी इच्छा थी कि उनके आगमन की बात कोई न जाने, परन्तु वह छिपे न रह सके। तत्काल एक स्त्री जिसकी पुत्री में अशुद्ध आत्मा थी, उनके विषय में सुनकर आई और उनके चरणों पर गिरी। यह स्त्री यूनानी थी और जाति की सुरूफिनीकी। उसने यीशु से निवेदन किया कि वह उसकी पुत्री में से भूत निकाल दें।

यीशु ने कहा, 'पहले बालकों को तृप्त होने दो, क्योंकि यह ठीक नहीं है कि बालकों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डाली जाए।'

स्त्री ने उत्तर दिया, 'सच है प्रभु, पर कुत्तों को भी बच्चों के भोजन का चूरचार मेज के नीचे मिल ही जाता है।' यीशु ने कहा, 'अपने इस उत्तर के कारण विदा हो। तेरी पुत्री में भूत निकल गया।' जब वह घर आई तब उसने देखा कि बालिका खाट पर लेटी हुई है और भूत उसमें से निकल गया है।

बहरे और हकलानेवाले व्यक्ति को स्वस्थ करना

सोर के निकटवर्ती क्षेत्र से लौटने पर यीशु सीदोन के मार्ग से 'दसनगर' की सीमा से होते हुए, गलील झील के तट पर पहुंचे। यहां लोग उनके पास एक मनुष्य को लाए, जो बहरा था और बोलते समय बहुत हकलाता था। उन्होंने यीशु से अनुरोध किया कि वह अपना हाथ उस पर रखें। यीशु उसे जनसमूह से अलग एकान्त में ले गए। उन्होंने उसके कानों में अपनी अंगुलियां डालीं और थूककर उसकी जीभ को स्पर्श किया। फिर उन्होंने आकाश की ओर देखकर आह भरी और उस मनुष्य से कहा, 'एफ्फथा' अर्थात् 'खुल जा।' बहरे के कान तुरन्त खुल गए, उसकी जीभ के बन्धन भी खुल गए और वह स्पष्ट बोलने लगा। यीशु ने लोगों को आदेश दिया कि यह बात किसी को न बताएं, परन्तु जितना ही अधिक यीशु ने मना किया, उतना ही अधिक लोगों ने उनका प्रचार किया। लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही। वे कहने लगे, 'यह जो कार्य करते हैं अच्छा ही करते हैं। इन्होंने बहरों को कान और गूंगों को वाणी दी है।'

१ मरकुस ७:१५ का अर्थ बताओ।

२ मनुष्य के भीतर से, मन और हृदय से क्या निकलता है?

*इन प्रतियों में यह पद नहीं पाया जाता।

२१. यीशु धर्म-सेवा के लिए अपने शिष्यों को भेजते है

(मत्ती १० १–४२)

यीशु अपने शिष्यो को समय-समय पर जनता के बीच भेजते थे कि वे उनकी शिक्षाओ का प्रचार करे, और अपने गुरु के समान ही आश्चर्यपूर्ण कार्य करे। प्रस्तुत अध्याय मे हम पढेगे कि यीशु अपने बारह प्रमुख शिष्यों को आश्चर्यपूर्ण कार्य करने का अधिकार तथा सामर्थ्य देते है और उन्हे समाज और जनता के मध्य मे भेजते है। आज के युग मे यीशु के अनुयायी, शिष्य बनने का यही अर्थ है।

तब यीशु ने अपने बारह शिष्यों को बुलाकर उन्हे अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि वे उनको निकाले और सब रोगो एव दुर्बलताओ को दूर करे। बारह प्रेरितों* के नाम ये है—प्रथम, शिमौन उपनाम पतरस, उसका भाई अन्द्रियास, जबदी का पुत्र याकूब, उसका भाई यूहन्ना, फिलिप्पुस, बरतुल्मय, थोमा, कर लेनेवाला मत्ती, हल्फई का पुत्र याकूब, तद्दै, शिमौन कनानी और यहूदा इस्करियोती जिसने यीशु को पकडवाया।

इन बारह को यीशु ने यह आज्ञा देकर भेजा, 'अन्य जातियो के नगरो की ओर न जाओ और न सामरी लोगो के नगरो मे प्रवेश करो, वरन् इस्राएल वश की भटकी हुई भेडो के पास जाओ।

'यात्रा करते हुए यह सन्देश सुनाओ परमेश्वर का** राज्य समीप आ गया है।

रोगियो को स्वस्थ करो मृतको को जिलाओ कुष्ठ-रोगियों को शुद्ध करो भूतो को निकालो।

'तुमने बिना मूल्य पाया है, बिना मूल्य दो। अपने बटुए मे सोना-चादी और ताबा के सिक्के न लो, न मार्ग के लिए झोली, न दो कुरते, न जूते और न लाठी, क्योकि मजदूर को उसका भोजन मिलना चाहिए। जिस किसी नगर अथवा गाव मे प्रवेश करो तो पूछो कि वहा शुभ-सन्देश सुनने के लिए कौन योग्य है, और विदा होने तक उसके यहा ठहरो।

'घर मे प्रवेश करते समय उसे शान्ति की आशीष दो। यदि घर योग्य हो तो अपनी शान्ति उस पर रहने दो, और यदि योग्य न हो तो अपनी शान्ति लौट आने दो।

'यदि कोई तुम्हारा स्वागत न करे और तुम्हारा सन्देश न सुने तो उस घर अथवा उस नगर से निकलते पर अपने पावो की धूल झाड डालो। मै तुमसे सच कहता हू। न्याय के दिन उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा नगरो की दशा अधिक सहनीय होगी।

आनेवाला संकट

'देखो, मै तुमको भेडो के सदृश भेडियो के बीच भेज रहा हू। इसलिए साप के समान चालाक और कबूतर के समान भोले बनो।

'यहूदी धर्मगुरुओ से सावधान रहो, क्योकि वे तुम्हे अपनी धर्मसभाओ के हाथ मे सौंप देगे, और अपने सभागृहो मे तुम्हे कोडे मारेगे। मेरे कारण तुम शासको और राजाओ के सामने उपस्थित किए जाओगे और उनके लिए तथा अन्य जातियो के लिए साक्षी होगे।

'जब वे तुम्हे पकडवाए तो चिन्ता न करना कि तुम कैसे बोलोगे और क्या कहोगे। जो कुछ तुमको कहना होगा वह उसी क्षण तुम्हे बता दिया जाएगा, क्योकि वक्ता तुम नही वरन् तुम्हारे पिता का आत्मा है जो तुममे बोलता है।

*प्रेरित अथवा 'प्रेषित' अर्थात् 'भेजा गया व्यक्ति'

**अथवा, 'स्वर्ग'

'भाई, भाई को, और पिता पुत्र को मृत्यु के लिए सौंप देगा। सन्तान माता-पिता के विरुद्ध उठ खड़ी होगी और उन्हें मरवा डालेगी।

'मेरे नाम के कारण सब तुमसे घृणा करेंगे, परन्तु जो व्यक्ति अन्त तक अपने विश्वास में स्थिर रहेगा, वह उद्धार पाएगा।

जब लोग तुम्हें एक नगर में सताएं तब तुम दूसरे नगर को भाग जाना। मैं तुमसे सच कहता हूं, तुम इस्राएल देश के सब नगरों का भ्रमण समाप्त नहीं कर पाओगे कि मानव-पुत्र आ जाएगा।

शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं होता और न दास अपने स्वामी से। शिष्य का अपने गुरु के बराबर होना और दास का अपने स्वामी के बराबर होना ही बहुत है। यदि उन्होंने गृह-स्वामी को बालजबूल* कहा है तो उसके परिवार को क्या कुछ न कहेंगे?

किससे डरना चाहिए?

मनुष्यों से न डरो, क्योंकि ऐसा कुछ नहीं जो ढका हो और खोला न जाएगा, जो छिपा हो और जाना न जाएगा। जो मैं तुमसे अन्धकार में कहता हूं, उसे तुम प्रकाश में कहो, जो कानोंकान सुनते हो, उसका छतों से प्रचार करो।

'उनसे मत डरो जो शरीर को मार डालते हैं, पर आत्मा को नहीं मार सकते, वरन् उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है।

'गौरैया अत्यन्त सस्ते दाम में बिकती है।** पर उनमें से एक भी तुम्हारे पिता के जाने बिना पृथ्वी पर नहीं गिरती। तुम्हारे तो सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। इसलिए डरो मत, तुम बहुत गौरैयों से श्रेष्ठ हो।

समाज के सामने यीशु को प्रभु स्वीकार करना

'जो मनुष्य समाज के सम्मुख मुझे स्वीकार करेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गिक पिता के सम्मुख स्वीकार करूंगा, पर जो मनुष्य समाज के सम्मुख मुझे स्वीकार नहीं करेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गिक पिता के सम्मुख स्वीकार नहीं करूंगा।

यीशु के आगमन का परिणाम

'यह न समझो कि मेरे आगमन से पृथ्वी पर शान्ति होगी। नहीं, मैं शान्ति नहीं वरन् विभाजन की तलवार चलवाने आया हूं। मैं आया हूं कि पुत्र को उसके पिता के, पुत्री को उसकी माता के और बहू को उसकी सास के विरुद्ध कर दूं। मनुष्य के शत्रु उसके घर के लोग ही होंगे।

'जो पुत्र माता या पिता को मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नहीं, जो पिता पुत्र या पुत्री को मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नहीं, और जो शिष्य अपना क्रूस* उठाकर मेरा अनुसरण नहीं करता वह मेरे योग्य नहीं.

'जो मनुष्य अपना प्राण बचाए हुए है, वह उसे खोएगा, और जो मनुष्य मेरे कारण अपना प्राण खो चुका है, वह उसे पाएगा।

'जो मनुष्य तुम्हारा स्वागत करता है, वह मेरा स्वागत करता है, और जो मेरा स्वागत करता है, वह उसका स्वागत करता है जिसने मुझे भेजा है। जो मनुष्य नबी को नबी मान कर उसका स्वागत करे, वह नबी का प्रतिफल पाएगा, और जो धार्मिक को धार्मिक मानकर

*अर्थात् भूतों का नायक'
**मूल में, 'एक पैसे में दो गौरैयां'
, 'सलीब

उसका स्वागत करे, वह धार्मिक का प्रतिफल पाएगा। जो कोई इन छोटों में से किसी को मेरा शिष्य मानकर उसे केवल कटोरा भर ठण्डा पानी पिलाए, तो मैं तुमसे सच कहता हूँ, वह अपना प्रतिफल कदापि न खोएगा।'

१ क्या यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि उनके अनुयायियों, शिष्यों को लोग सताएंगे, दु:ख-तकलीफ देंगे?
२ जब हम प्रभु यीशु के लिए दु:ख-तकलीफ उठाते हैं तब यीशु हमें किस प्रकार सान्त्वना देते हैं? (पढ़िए, मत्ती १० : २८—३३)
३ कौन-सा कार्य करने के लिए यीशु ने हमसे कहा है? इसका क्या अर्थ है? (पढ़िए, मत्ती १० : ३६)

२२. यीशु धर्म-सेवा के लिए बहत्तर शिष्यों को भेजते हैं

(लूका १०)

पिछले अध्याय में हमने पढ़ा कि यीशु ने अपने बारह प्रमुख शिष्य भेजे। अब वह सत्तर शिष्यों को भेजते हैं। प्रस्तुत पाठ में हम पढ़ेंगे कि वे सत्तर शिष्य जनता के मध्य क्या करते हैं। इसी अध्याय में यीशु एक दृष्टान्त भी सुनाते हैं—दयालु सामरी की कहानी।

बहत्तर शिष्यों का भेजा जाना

इसके बाद प्रभु ने अन्य बहत्तर* शिष्यों को नियुक्त किया और प्रत्येक नगर या स्थान को, जहां वह स्वयं जानेवाले थे, उन्हें दो-दो करके आगे भेजा, और उनसे कहा, 'पकी फसल तो बहुत है पर मजदूर थोड़े हैं। इसलिए खेत के स्वामी से प्रार्थना करो कि वह फसल काटने के लिए मजदूर भेजे। जाओ, मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच मेमनों के सदृश भेज रहा हूं। न बटुआ लो, न झोली, न जूते। मार्ग में किसी का कुशल-क्षेम पूछने के लिए मत ठहरो।

'जब किसी घर में प्रवेश करो तो पहले कहो, "इस घर में शान्ति हो।" यदि वहां कोई शान्ति का पात्र** होगा तो शान्ति उसमें विराजेगी, और नहीं तो तुम्हारे पास लौट आएगी। एक घर से दूसरे घर को मत फिरना: उसी घर में रहो। जो कुछ उनसे मिले, वही खाओ-पियो, क्योंकि मजदूर को अपनी मजदूरी मिलनी चाहिए।

'जब तुम किसी नगर में प्रवेश करो और लोग तुम्हारा स्वागत करें, तब जो कुछ तुम्हारे सम्मुख रखा जाए उसे खाओ। वहां के रोगियों को स्वस्थ करो और कहो, "परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है।"

'परन्तु यदि किसी नगर में प्रवेश करो और लोग तुम्हारा स्वागत न करें, तो वहां की सड़कों पर निकल जाओ और कहो, "तुम्हारे नगर की धूल भी, जो हमारे पैरों में लगी है, हम तुम्हारे सामने झाड़ देते हैं। पर यह जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है।" मैं कहता हूं: उस दिन उस नगर की अपेक्षा सदोम नगर की दशा अधिक सहनीय होगी।

अविश्वासी नगरों को धिक्कार

'हाय खुराजीन! हाय बैतसैदा! जो सामर्थ्य के काम तुममें किए गए, वे यदि सोर और सीदोन नगरों में किए जाते, तो उनके निवासियों ने बहुत पहले ही टाट ओढ़कर, और राख में बैठकर हृदय-परिवर्तन कर लिया होता। अत: न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सोर

*कुछ प्राचीन प्रतियों में, 'सत्तर' **अक्षरश:, 'शान्ति-पुत्र'

और सीदोन की दशा अधिक सहनीय होगी।

'और तू, ओ कफरनहूम, क्या तू आकाश तक उन्नत किया जाएगा? नहीं! तू तो अधोलोक में गिरेगा।

'जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी सुनता है, जो तुम्हारा तिरस्कार करता है, वह मेरा तिरस्कार करता है, और जो मेरा तिरस्कार करता है वह उसका तिरस्कार करता है जिसने मुझे भेजा है।

बहत्तर शिष्यों का लौटना

बहत्तर* शिष्य बड़े आनन्द से लौटे और कहने लगे, 'प्रभु, आपके नाम से भूत भी हमारे अधीन हैं।' यीशु ने उनसे कहा, 'मैंने शैतान को बिजली के सदृश आकाश से गिरा हुआ देखा। मैंने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को कुचलने की सामर्थ्य एवं शत्रु की समस्त शक्ति पर अधिकार दिया है, कोई भी तुम्हारी हानि नहीं कर सकेगा। तो भी इस कारण आनन्द न मनाओ कि दुष्ट आत्माएं तुम्हारे अधीन हैं, परन्तु इसलिए आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे गए हैं।'

यीशु का धन्यवाद देना

उसी समय यीशु ने पवित्र आत्मा में उल्लसित होकर कहा, 'हे पिता, आकाश और पृथ्वी के स्वामी, मैं तुझे धन्यवाद देता हूं कि तूने ये बातें ज्ञानियों और बुद्धिमानों से गुप्त रखीं और शिशुओं पर प्रकाशित कीं। हां, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा।

'मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है। कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है पर केवल पिता, और न कोई जानता है कि पिता कौन है, पर केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे।'

शाश्वत जीवन की प्राप्ति का उपाय

तब एक व्यवस्था का आचार्य उठा और उसने यीशु को परखने के उद्देश्य से पूछा, 'गुरुजी, शाश्वत जीवन प्राप्त करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?'

उन्होंने कहा, 'व्यवस्था में क्या लिखा है? तुमने उसमें क्या पढ़ा है?'

उसने उत्तर दिया, 'तू अपने प्रभु परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण हृदय, सम्पूर्ण जीवन, सम्पूर्ण शक्ति और सम्पूर्ण बुद्धि से प्रेम कर, और अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर।' यीशु ने उससे कहा, 'तुमने ठीक उत्तर दिया। यही करो, तो तुम शाश्वत जीवन पाओगे।'

दयालु सामरी

परन्तु व्यवस्था के आचार्य ने अपने प्रश्न को ठीक प्रमाणित करने के लिए यीशु से पूछा 'पर मेरा पड़ोसी है कौन?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'एक मनुष्य यरूशलम से यरीहो नगर जा रहा था। तब वह मार्ग में डाकुओं से घिर गया। डाकुओं ने उसे लूट लिया और मारपीट कर तथा अधमरा छोड़कर चलते बने।

'संयोगवश एक पुरोहित उसी मार्ग से जा रहा था। उसने उसे देखा तो कतरा कर चला गया।

'इसी प्रकार एक लेवी भी उस स्थान पर आया। उसने उसे देखा और कतरा कर चला गया।

*अथवा 'सत्तर'

'अब एक सामरी* यात्री उसके समीप से निकला। वह उसे देखकर दया से भर उठा। वह उसके निकट गया। उसने उसके घावों पर तेल तथा दाखरस डालकर पट्टियाँ बांधीं। तब वह उसे अपनी सवारी पर बैठाकर एक सराय में ले गया और वहाँ उसने उसकी सेवा और देखभाल की।

दूसरे दिन उसने चांदी के दो सिक्के निकालकर सराय के मालिक को दिए और कहा, "इसकी देखभाल करना। यदि आपका अधिक खर्च होगा तो लौटने पर मैं चुका दूंगा।"'

यीशु ने व्यवस्था के आचार्य से पूछा, 'तुम्हारे विचार में, इन तीनों में से कौन डाकुओं के हाथ पड़े मनुष्य का पड़ोसी सिद्ध हुआ?' व्यवस्था के आचार्य ने कहा, 'जिसने उसके प्रति दया दिखाई।'

यीशु ने उससे कहा, 'जाओ, तुम भी ऐसा ही करो।'

दो बहिनें : मार्था और मरियम

एक बार यीशु और उनके शिष्य यात्रा कर रहे थे। तब यीशु किसी गांव में आए। वहाँ मार्था नामक स्त्री ने उनका अपने घर में अतिथि-सत्कार किया। उसकी एक बहिन थी जिसका नाम मरियम था। वह प्रभु के चरणों में बैठी उनके उपदेश सुन रही थी, जबकि मार्था अनेक सेवा-कार्यों में उलझी हुई थी।

मार्था ने पास आकर कहा, 'प्रभु, आपको कुछ भी चिन्ता नहीं कि मुझे मेरी बहिन ने सेवा-सत्कार करने के लिए अकेला छोड़ दिया है। उससे कहिये कि वह मेरा हाथ बटाए।'

प्रभु ने उसे उत्तर दिया, 'मार्था, मार्था, तुम बहुत-सी वस्तुओं के लिए चिन्तित और व्याकुल हो। परन्तु केवल एक ही वस्तु की आवश्यकता है। मरियम ने उस उत्तम भाग को चुन लिया है जो उससे छीना न जाएगा।'

१ यीशु ने अपने शिष्यों को आनन्द मनाने के लिए क्यों कहा? (पढ़िए, लूका १० २०)
२ दयालु सामरी की कहानी में भला मनुष्य किसको कहना चाहिए?

२३. परमेश्वर हमारा पिता है

(यूहन्ना ८:१२–५६)

यहूदी धर्म गुरुओं और यीशु के मध्य वाद-विवाद का एक मुख्य कारण यह भी था कि यीशु परमेश्वर को अपना पिता कहते थे। प्रस्तुत अध्याय में यीशु अपने दावे को सिद्ध करते हैं।

संसार की ज्योति

फिर यीशु ने लोगों से कहा, 'मैं संसार की ज्योति हूं। मेरा अनुयायी अन्धकार में नहीं भटकेगा वरन् जीवन की ज्योति प्राप्त करेगा।'

फरीसी बोले, 'तुम अपने विषय में साक्षी देते हो, तुम्हारी साक्षी सच नहीं।'

यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, 'मैं अपने विषय में आप साक्षी दे रहा हूं, तो भी मेरी साक्षी सच है, क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं कहां से आया और कहां जा रहा हूं। किन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहां से आता हूं और कहां जा रहा हूं। तुम सांसारिक दृष्टि से आलोचना करते हो

*यहूदी जाति से अलग हुई जाति के लोग। यहूदी इन्हें धर्म-च्युत मानते थे और धर्मभ्रष्ट समझकर इनसे घृणा करते थे।

परन्तु मैं किसी पर निर्णय नहीं देता। और यदि मैं निर्णय दूं तो भी मेरा न्याय सच्चा होगा, क्योंकि न्याय मैं अकेला नहीं करता, वरन् मैं और मेरा भेजनेवाला पिता करता है।

'तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है कि दो मनुष्यों की साक्षी सच होती है। मैं अपने विषय में स्वयं साक्षी हूं और मेरा भेजनेवाला पिता भी मेरे विषय में साक्षी देता है।' तब उन्होंने पूछा, 'तुम्हारा पिता कहां है?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'तुम न तो मुझे जानते हो और न मेरे पिता को। यदि तुम मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते।'

ये वचन यीशु ने मन्दिर में शिक्षा देते समय कोषागार में कहे, परन्तु किसी ने उनको पकड़ा नहीं क्योंकि उनका समय अभी नहीं आया था।

आनेवाले दण्ड के सम्बन्ध में चेतावनी

यीशु ने फिर उनसे कहा, 'मैं जा रहा हूं, तुम मुझे ढूंढ़ोगे और अपने पाप में मरोगे। जहां मैं जा रहा हूं वहां तुम नहीं आ सकते।'

तब यहूदियों के धर्मगुरुओं ने आपस में कहा, 'वह आत्महत्या तो नहीं कर लेगा, क्योंकि वह रहा है, "जहां मैं जा रहा हूं, वहां तुम नहीं आ सकते।"'

यीशु ने उनसे फिर कहा, 'तुम नीचे के हो और मैं ऊपर का हूं, तुम इस संसार के हो, पर मैं इस संसार का नहीं। मैंने कहा था कि "तुम अपने पापों में मरोगे।" क्योंकि यदि तुम विश्वास नहीं करते कि मैं "वह" हूं तो तुम अपने पापों में मरोगे।'

लोगों ने पूछा, 'तुम कौन हो?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'वही, जो मैंने आरम्भ में तुमसे कहा है।* तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है, परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, और जो कुछ मैंने उससे सुना है वही संसार से कहता हूं।'

लोग नहीं जानते थे कि वह उनसे पिता के विषय में कह रहे हैं।

तब यीशु ने कहा, 'जब तुम मानव-पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे तब जानोगे कि मैं "वह" हूं और मैं अपने आप कुछ नहीं करता, परन्तु जैसा पिता ने मुझे सिखाया है, बोलता हूं। जिसने मुझे भेजा है, वह मेरे साथ है, और उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं सदा वही करता हूं जिससे वह प्रसन्न होता है।'

यीशु जब ये बातें कह रहे थे तब बहुतों ने उन पर विश्वास किया।

सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा

यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उन पर विश्वास किया था, कहा, 'यदि तुम मेरी शिक्षाओं का पालन करोगे तो तुम वास्तव में मेरे शिष्य हो, तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुमको स्वतन्त्र करेगा।'

उन्होंने उत्तर दिया, 'हम अब्राहम के वंशज हैं, हमने कभी किसी की गुलामी नहीं की। आप कैसे कहते हैं कि "तुम स्वतन्त्र होगे?"'

यीशु ने कहा, 'मैं तुमसे सच-सच कहता हूं, पाप करनेवाला प्रत्येक व्यक्ति पाप का गुलाम है। गुलाम सदैव घर में नहीं रहता, पर पुत्र सदा रहता है। यदि पुत्र तुम्हें स्वतन्त्र करे तो वास्तव में तुम स्वतन्त्र होगे। मैं जानता हूं कि तुम अब्राहम के वंशज हो, पर तुम मुझे मार डालने के उपाय कर रहे हो, क्योंकि मेरे सन्देश के लिए तुम्हारे हृदय में कोई स्थान नहीं है। जो कुछ मैंने अपने पिता के यहां देखा, वही कहता हूं, उसी प्रकार तुमने जो कुछ अपने पिता से सुना, वही करते हो।'

*अथवा, 'मैं तुमसे क्यों बोलूं?'

उन्होंने यीशु से कहा, 'हमारे पूर्वपिता अब्राहम हैं।'

यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि तुम अब्राहम के वंशज होते तो अब्राहम के सदृश कार्य करते। परन्तु तुम तो मुझे, ऐसे मनुष्य को जिसने परमेश्वर से सुना हुआ सत्य तुम्हें बता दिया, मार डालने के प्रयत्न में हो। अब्राहम ने ऐसा नहीं किया। वास्तव में तुम्हारा पिता कोई और है और तुम अपने पिता के कार्य कर रहे हो।'

वे बोले, 'हम जारज-सन्तान नहीं, हमारा पिता एक है, अर्थात् परमेश्वर।'

यीशु ने कहा, 'यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझसे प्रेम करते, क्योंकि मैं परमेश्वर से निकला और आया हूं। मैं स्वयं नहीं आया। वरन् उसने मुझे भेजा है। तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? इसलिए कि तुम मेरा सन्देश ग्रहण नहीं सकते। तुम तो अपने पिता शैतान से हो और अपने इस पिता की इच्छाएं पूरी करना चाहते हो। वह आरम्भ से ही हत्यारा था। वह सत्य पर स्थिर नहीं, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता है तब अपने स्वभाव के अनुसार ही बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है।

'परन्तु मैं सत्य बोलता हूं इसलिए तुम मुझपर विश्वास नहीं करते।

'तुममें से कौन मुझपर पाप का दोष लगाता है? यदि मैं सत्य कहता हूं तो तुम मुझपर विश्वास क्यों नहीं करते?

'जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर का सन्देश* सुनता है तुम परमेश्वर के नहीं हो, इसलिए उसका सन्देश नहीं सुनते।'

यीशु ने कहा, अब्राहम से पूर्व मैं था

यहूदी धर्मगुरुओं ने कहा 'क्या हमारा यह कहना ठीक नहीं कि तुम सामरी हो और तुममें भूत है?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'मुझमें भूत नहीं है। मैं अपने पिता का आदर करता हूं, पर तुम मेरा अनादर कर रहे हो। मैं अपना सम्मान नहीं चाहता, एक है जो चाहता है और वह न्याय करता है। मैं तुमसे सच-सच कहता हूं यदि कोई व्यक्ति मेरे सन्देश को सुनेगा और उसके अनुसार आचरण करेगा, तो वह कभी मृत्यु का स्वाद नहीं चखेगा।'

यहूदी धर्मगुरु बोले, 'अब हम जान गए कि तुममें भूत है। अब्राहम मृत्यु को प्राप्त हुए और नबी भी, और तुम कहते हो कि यदि कोई व्यक्ति मेरे सन्देश को सुनेगा और उसके अनुरूप आचरण करेगा, वह कभी मृत्यु का स्वाद नहीं चखेगा। हमारे पूर्वज अब्राहम तो मर गए। क्या तुम उनसे महान होने का दावा करते हो? नबी भी मृत्यु को प्राप्त हुए। तुम अपने को समझते क्या हो?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि मैं स्वयं अपना सम्मान करूं तो वह कुछ नहीं। मुझे सम्मानित करनेवाला मेरा पिता है जिसे तुम कहते हो कि वह तुम्हारा परमेश्वर है। तुम उसे नहीं जानते पर मैं उसे जानता हूं। यदि मैं कहूं कि मैं उसे नहीं जानता तो तुम्हारे समान झूठा ठहरूंगा, पर मैं उसे जानता हूं और उसके सन्देश के अनुरूप आचरण करता हूं।

'तुम्हारे पूर्वज अब्राहम मेरे दिन का दर्शन करने के लिए उल्लसित हुए। उन्होंने दर्शन किया और आनन्दित हुए।'

यहूदी बोले, 'अभी तुम पचास वर्ष के भी नहीं, और तुम अब्राहम को देख चुके हो?'

यीशु ने कहा, 'मैं तुमसे सच-सच कहता हूं, अब्राहम के उत्पन्न होने से पूर्व मैं हूं।'

तब लोगों ने यीशु को मारने के लिए पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गए।

१ यूहन्ना ८ ३९ पढ़िए, और फिर बताइए कि अब्राहम की सन्तान कौन है?

*अथवा, 'वचन'।

२ यदि परमेश्वर हमारा पिता है तो हमें क्या करना होगा? (पढ़िए, यूहन्ना ८ : ४२)

२४. जन्मांध मनुष्य को दृष्टिदान

(यूहन्ना ९)

यात्रा के दौरान यीशु को एक मनुष्य मिला जो जन्म से अन्धा था। यीशु ने उसको दृष्टि दी, और उसके पश्चात् क्या हुआ, यह आप स्वयं पढ़िए।

मार्ग में यीशु ने एक मनुष्य को देखा जो जन्म से अन्धा था। उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, 'गुरुजी, किसने पाप किया? इसने अथवा इसके माता-पिता ने, कि यह मनुष्य अन्धा उत्पन्न हुआ?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'न तो इसने पाप किया और न इसके माता-पिता ने। परन्तु यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर के कार्य इसमें प्रकट हों।

'दिन रहते हमें उसके कार्य करने में लगा रहना चाहिए जिसने मुझे भेजा है। रात आ रही है, जब कोई व्यक्ति कार्य नहीं कर सकता। जब तक मैं संसार में हूं, मैं संसार की ज्योति हूं।'

यह कहकर यीशु ने भूमि पर थूका, थूक से मिट्टी का लेप बनाया और वह लेप जन्मान्ध मनुष्य की आंखों पर लगाकर कहा, 'जाओ और शीलोह (अर्थात् "प्रेषित") के कुण्ड में धो लो।' अतः जन्मान्ध मनुष्य गया। उसने वहां आंखें धोईं और वह देखने लगा। वह घर लौटा।

उसके पड़ोसी और वे लोग जो पहिले उसे भीख मांगते हुए देखा करते थे, बोले, 'क्या यह वही मनुष्य नहीं जो बैठा हुआ भीख मांगा करता था?'

कुछ ने कहा, 'हां वही है।'

अन्य बोले, 'नहीं, उस जैसा है।'

उसने कहा, 'मैं वही हूं।'

उन्होंने पूछा, 'तुम्हारी आंखें कैसे खुलीं?' उसने उत्तर दिया, 'यीशु नामक मनुष्य ने मिट्टी का लेप बनाकर मेरी आंखों पर लगाया और कहा, "शीलोह के कुण्ड जाओ और अपनी आंखें धो लो।" अतः मैं वहां गया और आंखें धोने के पश्चात् मैं देखने लगा।'

उन्होंने उससे पूछा, 'वह कहां है?'

उसने उत्तर दिया, 'मैं नहीं जानता।'

फरीसियों द्वारा जांच-पड़ताल

लोग उसे जो पहिले अन्धा था, फरीसियों के पास लाए। विश्राम-दिवस पर ही यीशु ने मिट्टी का लेप बनाकर उसकी आंखें खोली थीं, अतः फरीसियों ने उससे फिर पूछा कि वह कैसे देखने लगा। उसने कहा, 'उन्होंने मिट्टी का लेप मेरी आंखों पर लगाया, मैंने आंखों को धोया, और अब मैं देख सकता हूं।'

कुछ फरीसी बोले, 'यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं, क्योंकि यह विश्राम-दिवस को नहीं मानता।' पर दूसरों ने कहा, 'ऐसे आश्चर्यपूर्ण चिह्न एक पापी मनुष्य कैसे कर सकता है?'

फलतः उनमें मतभेद हो गया। उन्होंने उससे जो पहले अन्धा था, फिर पूछा, 'तुम उनके विषय में क्या कहते हो? तुम्हारी तो उन्होंने आंखें खोली हैं।'

उसने कहा, 'वह नबी है।'

परन्तु यहूदी धर्मगुरुओं को विश्वास नहीं हुआ कि वह अन्धा था और अब देखने लगा है, जब तक उन्होंने उसके माता-पिता को बुलाकर यह पूछ न लिया, 'क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसे तुम कहते हो कि अन्धा उत्पन्न हुआ था? फिर यह कैसे देख रहा है?'

उसके माता-पिता ने उत्तर दिया, 'हम जानते है कि यह हमारा पुत्र है, और यह अन्धा उत्पन्न हुआ था। पर अब कैसे देख रहा है, हम नही जानते, और न हम यह जानते है कि किसने इसकी आखे खोली। उससे पूछिए, वह बच्चा नही है! वह अपने विषय मे स्वय बताएगा।'

उसके माता-पिता ने यह बात इसलिए कही कि वे यहूदी धर्मगुरुओं से डरते थे। कारण, यहूदियो ने एका कर लिया था कि यदि कोई व्यक्ति मसीह को स्वीकार करेगा तो उसका सभागृह मे बहिष्कार किया जाएगा। इस कारण उसके माता-पिता ने कहा था, 'वह बच्चा नही है, उससे पूछिए।'

अत फरीसियो ने उसे जो पहले अन्धा था दूसरी बार बुला भेजा और उससे कहा, 'परमेश्वर के सामने सच बोलो। हम जानते है कि यह मनुष्य यीशु पापी है।'

उसने उत्तर दिया, 'वह पापी है या नही, मै नही जानता। एक बात मै जानता हू मै अन्धा था और अब देख सकता हू।'

उन्होने पूछा, 'उसने तुम्हारे साथ क्या किया? कैसे तुम्हारी आखे खोली?'

उसने उत्तर दिया, 'मैने आपको बता दिया है पर आपने सुना ही नही। आप पुन क्यो सुनना चाहते है? क्या आप भी उनके शिष्य बनना चाहते है?'

इस पर वे उसे अपशब्द कहकर बोले, 'तू उसका शिष्य होगा, हम तो मूसा के शिष्य है। हम जानते है कि परमेश्वर ने मूसा को सुना और उनसे बाते की, पर हम नहीं जानते कि यह कहा से है।'

उस मनुष्य ने उत्तर दिया, 'आश्चर्य है कि आप नही जानते कि वह कहा से है, फिर भी उन्होने मेरी आखे खोलीं। हम जानते है कि परमेश्वर पापियो की नही सुनता, परन्तु यदि कोई व्यक्ति उसका उपासक हो और उसकी इच्छा के अनुसार चले तो वह उसको सुनता है। आदिकाल से अब तक यह सुनने मे नही आया कि किसी ने जन्मान्ध की आखे खोली हो। यदि वह परमेश्वर की ओर से नही होते तो वह कुछ भी नही कर पाते।'

उन्होने उत्तर दिया, 'तू पूर्णत पाप मे उत्पन्न हुआ है और हमे सिखाने चला है!' और फरीसियो ने उसे सभागृह से बहिष्कृत कर दिया।

यीशु ने सुना कि उन्होने उसे सभागृह से बाहर निकाल दिया है। अत वह उससे मिले और कहा, 'क्या तुम मानव-पुत्र पर विश्वास करते हो?'

उसने पूछा, 'महाशय, वह कौन है कि मै उसपर विश्वास करू?'

यीशु ने उससे कहा, 'तुमने उसे देखा है, और जो तुमसे वार्तालाप कर रहा है वह वही है।'

उसने कहा, 'मै विश्वास करता हू, प्रभु!', और घुटने टेके।

यीशु ने कहा, 'मै ससार मे न्याय के लिए आया हू कि जो नही देखते, वे देखे, और जो देखते है, वे अन्धे हो जाए।'

उनके साथ कुछ फरीसी थे। वे यह सुनकर बोले, 'क्या हम भी अन्धे है?'

यीशु ने कहा, 'यदि तुम अन्धे होते तो पाप के भागी नही होते। पर तुम कहते हो कि तुम्हे दिखाई पडता है, इसलिए तुम्हारा पाप बना रहता है।'

१ यह मनुष्य जन्म से क्यो अन्धा था?

२ जब यीशु ने उस जन्माध का अन्धापन दूर किया तब धर्मगुरु फरीसी यीशु से क्यो नाराज हुए?

३. यूहन्ना ६ ३३–३४ पढिए। इन पदो से यह प्रमाणित होता है कि यीशु को परमेश्वर ने भेजा था।

२५. यीशु की अनुपम शिक्षा : मैं अच्छा चरवाहा हूं

(यूहन्ना १०)

प्रस्तुत अध्याय में यीशु हमें सिखाते हैं कि वह एक अच्छा चरवाहा (मेषपाल) है। उन्होंने हमें बताया कि वह अपनी भेड़ों को—अर्थात् हमें—बचाने के लिए स्वर्ग से आए हैं। यह शुभ सन्देश सुनकर यहूदी धर्मगुरु आग-बबूला हो गए, और वे यीशु की हत्या करने का प्रयत्न करने लगे।

'मैं तुमसे सच-सच कहता हूं जो द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, किन्तु दूसरी ओर से चढ़ आता है, वह चोर और डाकू है। जो द्वार से प्रवेश करता है, वह भेड़ों का चरवाहा है। उसके लिए द्वारपाल द्वार खोल देता है। भेड़ें उसका स्वर पहचानती हैं। वह अपनी भेड़ों को नाम ले-लेकर पुकारता है और बाहर ले जाता है। अपनी सब भेड़ों को निकाल लेने पर वह उनके आगे-आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे-पीछे चलती हैं, क्योंकि वे उसका स्वर पहचानती हैं। वे किसी अपरिचित के पीछे नहीं जाएंगी, किन्तु उससे दूर भागेंगी, क्योंकि वे अपरिचित मनुष्यों का स्वर नहीं पहचानतीं।'

यीशु ने यह दृष्टान्त उनसे कहा, परन्तु उन्होंने नहीं समझा कि वह क्या कह रहे हैं। इसलिए यीशु ने फिर कहा, 'मैं तुमसे सच-सच कहता हूं भेड़ों का द्वार मैं हूं। जो मुझसे पहले आए, वे सब चोर और डाकू हैं। भेड़ों ने उनकी आवाज नहीं सुनी। द्वार मैं हूं जो मेरे द्वारा प्रवेश करेगा, वह उद्धार पाएगा। वह भीतर-बाहर आया-जाया करेगा और चारा पाएगा।

आदर्श चरवाहा

'चोर केवल चुराने, हत्या करने और नष्ट करने आता है। मैं इसलिए आया हूं कि वे जीवन प्राप्त करें और प्रचुरता से प्राप्त करें। अच्छा चरवाहा मैं हूं। अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है। मजदूर, जो न चरवाहा है और न भेड़ों का मालिक, भेड़िए को आते देख भेड़ों को छोड़कर भाग जाता, और भेड़िया उनको पकड़ता और तितर-बितर कर देता है। मजदूर इस कारण भाग जाता है कि वह मजदूर है, और उसे भेड़ों की कोई चिन्ता नहीं।

'अच्छा चरवाहा मैं हूं। जैसे पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूं, वैसे ही मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं—और मैं भेड़ों के लिए अपना प्राण देता हूं। मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस भेड़शाला की नहीं हैं। मुझे उनको भी लाना है, वे मेरी वाणी सुनेंगी। तब एक ही रेवड़ और एक ही चरवाहा होगा।

'पिता मुझे प्रेम करता है, क्योंकि मैं अपना प्राण देता हूं कि उसे फिर प्राप्त करूं। कोई मेरे प्राण को मुझसे नहीं छीन रहा, वरन् मैं स्वयं दे रहा हूं। मुझे अपना प्राण देने का अधिकार है और उसे पुनः लेने का भी अधिकार है। यह आज्ञा मुझे अपने पिता से मिली है।'

इन शब्दों के कारण यहूदियों में फिर मतभेद हो गया। अनेक कहने लगे, 'उसमें भूत है, वह पागल है, उसकी क्यों सुनते हो?'

अन्य बोले, 'ये बातें भूत से जकड़े हुए व्यक्ति की सी नहीं हैं। क्या भूत अन्धों की आंखें खोल सकता है?'

मन्दिर के प्रतिष्ठान का पर्व

शी[illegible] में

[illegible] थे। यहूदी

लगे, 'आप कब तक हमे दुविधा मे डाले रहेंगे ? यदि आप मसीह है तो हमसे स्पष्ट कह दीजिए।'

यीशु ने उत्तर दिया, 'मै तुमसे कह चुका हू, पर तुम विश्वास करते ही नही। जो कार्य मै पिता के नाम से करता हू, वे मेरी साक्षी देते है, पर तुम विश्वास नही करते, क्योंकि तुम मेरी भेडो मे से नही हो। मेरी भेडे मेरी आवाज सुनती है। मै उन्हे पहचानता हू, और वे मेरा अनुसरण करती है। मै उन्हे शाश्वत जीवन प्रदान करता हू। वे कभी नष्ट नही होगी। उन्हे मेरे हाथ से कोई कभी छीन नही सकता। मेरा पिता, जिसने उनको मुझे दिया है, वह सबसे महान है, और पिता के हाथ से कोई नही छीन सकता। मै और मेरा पिता एक है।'

यहूदी धर्मगुरुओं द्वारा विरोध

यहूदी धर्मगुरुओ ने पुन यीशु को मारने के लिए पत्थर उठाए। इस पर यीशु ने उन्हे उत्तर दिया, 'पिता की ओर से मैने अनेक अच्छे कार्य तुम्हे दिखाए उनमे से किस कार्य के लिए तुम मुझे पत्थरो से मारना चाह रहे हो ?

यहूदी धर्मगुरुओ ने कहा, 'अच्छे कार्य के लिए हम तुझे पत्थरो से नही मारना चाहते। वरन् परमेश्वर की निन्दा के लिए, क्योंकि तू मनुष्य होकर अपने आपको परमेश्वर बनाता है।'

यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या तुम्हारी व्यवस्था मे नही लिखा है, "मैने कहा कि तुम ईश्वर हो।" यदि उसने उनको ईश्वर कहा जिनके लिए परमेश्वर का वचन कहा गया (और धर्मशास्त्र का वचन टल नही सकता), तो जिसे पिता ने पवित्र ठहरा कर ससार मे भेजा, उसे तुम कैसे कहते हो कि "तू परमेश्वर की निन्दा करता है", क्योंकि मैने कहा, "मै परमेश्वर का पुत्र हू ?"

'यदि मै अपने पिता के कार्य नही कर रहा तो मुझपर विश्वास मत करो, परन्तु यदि कर रहा हू, तो चाहे तुम मुझपर विश्वास मत करो पर मेरे कार्यों पर विश्वास करो, जिससे तुम जान सको और समझ सको कि पिता मुझमे है और मै पिता मे।'

इस पर उन्होंने पुन यीशु को पकडने का प्रयत्न किया, परन्तु वह उनके हाथ से निकल गए।

यीशु फिर यरदन नदी के पार उस स्थान पर चले गए, जहा यूहन्ना पहले बपतिस्मा दिया करते थे। वह वही रहे। बहुत लोग उनके पास आने लगे। वे कहते थे, 'यूहन्ना बपतिस्मा-दाता ने कोई चिह्न नही दिखाया, परन्तु जो कुछ यूहन्ना ने यीशु के विषय मे कहा था, वह सब सच था।' वहा बहुतो ने यीशु पर विश्वास किया।

१ पढिए, यूहन्ना १० १७–१८। क्या यीशु ससार के लोगो को बचाने के लिए अपनी इच्छा से प्राण देंगे अथवा उनके शत्रु उनकी इच्छा के विरुद्ध उनकी हत्या करेंगे ?

२ यीशु अपनी 'भेडो' के लिए क्या करते है ? पढिए, यूहन्ना १० १८। यीशु अपनी 'भेडो' को शाश्वत जीवन देते है। क्या कोई यह शाश्वत जीवन उनकी 'भेडो' से छीन सकता है ?

२६. पुनरुत्थान का प्रश्न : क्या मृत व्यक्ति पुनः जीवित होगा ?
(यूहन्ना ११)

हमारे देश मे कुछ धर्म यह सिखाते है कि मनुष्य बार-बार जन्म लेता है. वह मरता है, फिर जन्म लेता है। जन्म और मृत्यु का यह चक्र चलता रहता है। किन्तु यीशु ने यह सिखाया कि मनुष्य इस ससार में केवल एक बार जन्म लेता है।

मरने के बाद या तो मनुष्य स्वर्ग जाता है, अथवा नरक। यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या उसने यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता माना है अथवा नहीं। यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करनेवाले लोग यीशु के साथ स्वर्ग जाते है। आज की कहानी मे यह सिद्ध होता है कि यीशु मे ईश्वरीय-सामर्थ थी, और वह मृत व्यक्ति को भी जीवित कर देते थे।

लाजर नामक एक मनुष्य बीमार था। वह मरियम और उसकी बहिन मार्था के साथ बैतनियाह मे रहता था। यह वही मरियम थी जिसने प्रभु पर सुगन्धरस लगाया और उनके चरणो को अपने केशो से पोछा था इसी का भाई लाजर बीमार था।

दोनो बहिनो ने यीशु को बीमारी की खबर भेजी, 'प्रभु देखिए जिससे आप स्नेह करते है, वह बीमार है।'

जब यीशु ने यह सुना तब बोले, 'इस बीमारी का अन्त मृत्यु नही। यह परमेश्वर की महिमा के लिए है कि इसके द्वारा परमेश्वर का पुत्र महिमान्वित हो।'

यद्यपि यीशु मार्था, उसकी बहिन और लाजर से प्रेम करते थे, फिर भी जब उन्होने सुना कि लाजर बीमार है, तब जहा थे, वही दो दिन और ठहर गए।

इसके बाद उन्होने अपने शिष्यो से कहा, आओ, हम फिर यहूदा प्रदेश चले।'

शिष्य बोले, 'गुरुजी, कुछ समय हुआ, यहूदी धर्मगुरु आपको पत्थरो से मार डालना चाहते थे। इसपर भी आप वही जा रहे है?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या दिन मे बारह घण्टे नही होते? यदि कोई दिन मे चले तो ठोकर नहीं खाता, क्योकि वह इस ससार के प्रकाश को देखता है। परन्तु यदि कोई रात मे चले तो ठोकर खाता है, क्योकि उसमे प्रकाश नही होता।'

उन्होंने ये बाते कही और इसके पश्चात् उनसे बोले, 'हमारा मित्र लाजर सो गया है। मै उसे जगाने जाता हू।'

शिष्यो ने कहा, 'प्रभु, यदि वह सो गया है तो स्वस्थ हो जाएगा।'

यह यीशु ने उसकी मृत्यु के सम्बन्ध मे कहा था, परन्तु शिष्य समझे कि स्वाभाविक नींद के सम्बन्ध मे कह रहे है।

तब यीशु ने उनसे स्पष्ट कहा, 'लाजर मर गया है, और तुम्हारे कारण मुझे प्रसन्नता है कि मै वहा नही था जिससे तुम विश्वास करो। परन्तु अब आओ, हम उसके पास चले।'

थोमा ने, जो दिदुमुस* कहलाता है, अपने साथी शिष्यो से कहा, 'आओ, हम भी इसके साथ मरने को चले।'

यीशु ही पुनरुत्थान और जीवन है

यीशु को बैतनियाह गाव पहुचने पर पता चला कि लाजर को कबर मे गाडे हुए चार दिन हो चुके है। बैतनियाह यरूशलम के समीप, लगभग तीन किलोमीटर** दूर था। अनेक यहूदी मार्था और मरियम के पास उनके भाई की मृत्यु पर शोक प्रकट करने आए थे। ज्योही मार्था ने सुना कि यीशु आ रहे है, वह उनसे भेट करने आई। किन्तु मरियम घर मे ही बैठी रही।

मार्था ने यीशु से कहा, 'प्रभु, यदि आप यहा होते तो मेरा भाई न मरता। अब भी मै जानती हू कि आप जो कुछ परमेश्वर से मागेगे, परमेश्वर आपको देगा।'

यीशु ने उससे कहा, 'तुम्हारा भाई फिर जीवित होगा।' मार्था ने कहा, 'मै जानती हू कि अन्तिम दिन पुनरुत्थान के समय वह पुन जीवित होगा।'

यीशु ने उससे कहा, 'पुनरुत्थान और जीवन मै हू, जो कोई मुझपर विश्वास करता है,

*... (इब्रानी) और दिदुमस (यूनानी) शब्दो का अर्थ है जुडवा **मूल मे 'पन्द्रह स्तदियन'

वह मर भी जाए तो भी जीएगा, और जो जीवित है तथा मुझपर विश्वास करता है, वह कभी नहीं मरेगा—क्या तुम यह विश्वास करती हो ?'

उसने कहा, 'हां, प्रभु, मैंने विश्वास किया है कि आप ही मसीह, अर्थात् परमेश्वर-पुत्र है, जो संसार मे आनेवाला था।' इतना कहकर वह चली गई और अपनी बहिन मरियम को बुलाकर चुपचाप बोली, 'गुरुजी यहीं है और तुझे बुलाते है।'

यह सुनते ही मरियम तत्काल उठी और यीशु के पास आई।

यीशु अभी गाव मे नही पहुचे थे, परन्तु उसी स्थान पर थे जहां मार्था ने उनसे भेट की थी।

जब यहूदियों ने, जो घर पर मरियम के साथ थे और शोक प्रकट कर रहे थे, यह देखा कि वह एकाएक उठी और बाहर निकली, तो वे उसके पीछे-पीछे गए क्योंकि वे समझे कि वह कब्र पर रोने जा रही है।

यीशु रोए

मरियम वहां आई जहां यीशु थे। उनको देखते ही वह उनके चरणो पर गिर पड़ी और बोली, 'प्रभु, यदि आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मरता।

जब यीशु ने उसे और उसके साथ आए यहूदियों को रोते हुए देखा तब उनका हृदय करुणा से भर उठा, और वह गहरी सास लेकर बोले, 'तुमने उसको कहां रखा है ?'

उन्होंने कहा, 'प्रभु, चलिए और देखिए।'

यीशु रोए। इस पर यहूदियो ने कहा, 'देखो, वह उससे कितना प्रेम करते थे।'

परन्तु उनमे से कुछ बोले, 'क्या यह, जिन्होंने अन्धे की आखे खोलीं इतना नही कर सके कि यह मनुष्य नही मरता ?'

लाजर को जीवन-दान

यीशु ने फिर गहरी सास ली और कब्र पर आए। वह एक गुफा थी जिसपर पत्थर रखा हुआ था।

यीशु ने कहा, 'पत्थर हटाओ।'

मृतक की बहिन मार्था बोली, 'प्रभु, अब उसमे से दुर्गन्ध निकल रही होगी, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो चुके है।'

यीशु ने उससे कहा, 'क्या मैंने तुमसे नही कहा था कि यदि तुम विश्वास करोगी तो परमेश्वर की महिमा देखोगी ?' अत लोगो ने पत्थर हटा दिया।

यीशु ने आखे ऊपर उठाईं और कहा, 'हे पिता, मै तुझे धन्यवाद देता हू कि तूने मेरी सुन ली है। मै जानता हू कि तू सदैव मेरी सुनता है, पर चारो ओर खडे जनसमूह के कारण मै यह कहता हू कि वे विश्वास करे कि तूने मुझे भेजा है।'

यह कहकर उन्होंने ऊचे स्वर से पुकारा, 'लाजर, बाहर निकल आ।'

वह मृतक बाहर निकल आया। उसके हाथ-पैर पट्टियो से बधे थे और उसका मुह अगोछे से लिपटा हुआ था।

यीशु ने लोगो से कहा, 'इसे खोल दो और जाने दो।'

तब उन यहूदियो मे से जो मरियम के पास आए थे, और जिन्होंने यह कार्य देखा था, बहुतो ने यीशु पर विश्वास किया। पर कुछ यहूदियो ने फरीसियो के पास जाकर बता दिया कि यीशु ने कौन-सा कार्य किया है।

महापुरोहितों का षड्यन्त्र

इसपर महापुरोहितो और फरीसियो ने धर्ममहासभा के सदस्यों को एकत्र कर कहा, 'हम क्या कर रहे है ? यह तो बहुत चिह्न दिखा रहा है। यदि हम इसको योंही छोड दे तो

सब लोग इसपर विश्वास करेंगे और रोमन आकर हमारे मन्दिर और राष्ट्र दोनो को नष्ट कर देंगे।'

तब उनमे से एक व्यक्ति, काइफा, जो उस वर्ष महापुरोहित था, बोला, 'आप कुछ जानते तो है नही, और न आप सोचते है कि आपकी भलाई किसमे है। आपकी भलाई इसमे है कि एक व्यक्ति जनता के लिए मरे और हमारा राष्ट्र नष्ट न हो।'

यह बात उसने अपनी ओर से नही कही, परन्तु उस वर्ष महापुरोहित होने के कारण भविष्यवाणी की कि यीशु यहूदी राष्ट्र के लिए मरेगे, और न केवल यहूदी राष्ट्र के लिए वरन् इसलिए कि परमेश्वर की बिखरी हुई सन्तान को एकत्र कर एक करे। अत वे उस दिन से यीशु को मार डालने के लिए परामर्श करने लगे। इस कारण उस समय से यीशु ने यहूदी प्रदेश के बीच खुले रूप मे विचरण न किया, पर वहा से उस क्षेत्र को, जो निर्जन प्रदेश के निकट था, अर्थात् एफ्रइम क्षेत्र को, चले गए और अपने शिष्यो सहित वही रहने लगे।

यहूदियो का फसह पर्व समीप था, और देहात से बहुत लोग फसह से पूर्व यरूशलम आए थे कि अपने आपको शुद्ध करे। वे यीशु की खोज मे थे और मन्दिर मे खडे हुए आपस मे पूछ रहे थे 'तुम्हारा क्या विचार है? क्या वह पर्व मे नही आएगे?' उधर महापुरोहितो और फरीसियो ने आदेश दे रखा था कि यदि किसी को यह पता हो जाए कि यीशु कहा है तो वह व्यक्ति उन्हे सूचना दे, जिससे वे यीशु को पकड सके।

१ यीशु के मित्र को क्या हुआ था?
२ उसको मृत हुए कितने दिन हो चुके थे?
३ हमे इस बात का कैसे निश्चय हो कि हम भी मरने के बाद पुन जीवित होगे, और यीशु के साथ सदा रहेगे। (पढिए, यूहन्ना ११ २५–२७)

२७. अन्य दृष्टान्त

(लूका १४ ७–३४, १५, १६)

सन्त लूक ने अपने शुभ-सन्देश मे यीशु के कई दृष्टान्तो का उल्लेख किया है। आज के अध्याय मे हम उन मे से कुछ का अध्ययन करेगे।

नम्रता और आतिथ्य

जब यीशु ने अतिथियो को मुख्य-मुख्य आसन चुनते देखा तब उन्हे यह उदाहरण दिया 'जब कोई तुम्हे विवाह-उत्सव मे निमन्त्रित करे तो मुख्य स्थान पर मत बैठो। कही ऐसा न हो कि उसने तुमसे भी अधिक सम्माननीय व्यक्ति को निमन्त्रित किया हो, और जिस मेजबान ने तुम्हे और उसे निमन्त्रित किया है, वह आकर तुमसे कहे, "इनको स्थान दीजिए।" तब तुमको लज्जित होकर सबसे नीचे स्थान पर बैठना पडेगा। अतएव जब तुम्हे निमन्त्रित किया जाए तब जाकर सबसे नीचे स्थान पर बैठो कि जब तुम्हारा मेजबान आए तो तुमसे कहे, "मित्र, आगे बढकर बैठिए।" इससे अतिथियो के सामने तुम्हारी प्रतिष्ठा होगी। प्रत्येक मनुष्य जो अपने आपको ऊचा करता है, वह नीचा किया जाएगा, और जो अपने आपको नीचा करता है, वह ऊचा किया जाएगा।'

यीशु ने मेजबान से भी कहा, 'जब तुम दोपहर अथवा रात का भोज दो तो अपने मित्रो, भाइयो, सम्बन्धियो अथवा धनवान पडोसियो को मत बुलाओ। ऐसा न हो कि वे भी तुम्हे निमन्त्रित करे और तुम्हे बदला मिल जाए। जब तुम भोज दो तो कगालो, अपगो, लगडो और अन्धो को निमन्त्रित करो, तब तुम धन्य होगे, क्योकि वे इसके बदले मे तुम्हे निमन्त्रित नही कर सकते, और तुम्हे धर्मियो के पुनरुत्थान के समय इसका बदला मिलेगा।'

भोज का दृष्टान्त

यह सुनकर भोज में बैठा हुआ कोई अतिथि यीशु से बोला, 'धन्य है वह जो परमेश्वर के राज्य में भोजन करेगा।'

यीशु ने उससे कहा, 'किसी मनुष्य ने बड़ा भोज दिया और बहुत लोगों को निमन्त्रित किया। भोज का समय होने पर उसने निमन्त्रित व्यक्तियों को अपने सेवक द्वारा कहला भेजा, "पधारिए, क्योंकि सब कुछ तैयार है।" पर वे सब के सब बहाना करने लगे।

'पहले ने कहा, 'मैंने एक खेत मोल लिया है और उसे देखने के लिए मेरा जाना आवश्यक है। निवेदन है कि मेरी ओर से क्षमा माग लेना।"

'दूसरे ने कहा, "मैंने पाच जोड़े बैल मोल लिए हैं और उनको परखने जा रहा हू। निवेदन है कि मेरी ओर से क्षमा माग लेना।'

'एक और बोला, "मैंने विवाह किया है इसलिए नही आ सकता।"

'सेवक ने लौटकर ये बातें अपने स्वामी को कह सुनाईं। इसपर गृहस्वामी ने क्रुद्ध होकर अपने सेवक से कहा, "तुरन्त नगर के मार्गों और गलियो मे जाओ और कगालो, अपगो, लगडो एव अन्धो को यहा ले आओ।"

'सेवक ने बताया, "स्वामी, आपने जो आज्ञा दी थी, वह पूरी हो चुकी। फिर भी और स्थान बचा है।"

'इसपर स्वामी ने सेवक से कहा, 'सडको और बाड़ो की ओर जाओ और लोगों को भीतर आने के लिए विवश करो कि मेरा घर भर जाए। मै तुमसे कहता हू उन निमन्त्रित व्यक्तियो मे से कोई भी मेरे भोज का स्वाद न लेने पाएगा।"'

शिष्यो के लिए आत्म त्याग की आवश्यकता

अब विशाल जनसमूह यीशु के साथ चल रहा था। वह पीछे मुड़कर उनसे कहने लगे, 'यदि कोई मेरे पास आता है और मुझसे अधिक अपने माता-पिता, पत्नी और बच्चो, भाइयो और बहिनो यहा तक कि अपने प्राण को प्रिय मानता है, तो वह मेरा शिष्य नही हो सकता। जो अपना क्रूस नहीं उठाता और मेरे पीछे नही चलता, वह मेरा शिष्य नही हो सकता।

'तुममे से ऐसा कौन व्यक्ति है जो मीनार बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर व्यय का विचार न कर ले कि उसे पूरा करने के साधन उसके पास है या नही? ऐसा न हो कि नीव डालने पर वह उसे पूरा न कर सके और देखनेवाले उसका उपहास करने लगे कि इस मनुष्य ने निर्माण-कार्य आरम्भ तो किया, पर पूरा न कर सका।

'अथवा ऐसा कौन राजा है कि वह दूसरे राजा से युद्ध करने निकले, और पहले बैठकर अच्छी तरह विचार न कर ले कि जो राजा बीस हजार सैनिक लेकर मुझपर चढ़ा आता है, क्या मै दस हजार सैनिकों के साथ उसका सामना कर सकूगा? यदि नही तो उसके दूर रहते ही राजदूत भेजकर उससे सन्धि की चर्चा करेगा। इस प्रकार तुममे से जो व्यक्ति अपना सर्वस्व त्याग न करे, वह मेरा शिष्य नही हो सकता।

नमक की उपयोगिता

'नमक अच्छा है, परन्तु यदि नमक अपना सलोनापन खो बैठे तो वह किससे स्वादिष्ट किया जाएगा? वह न तो भूमि के उपयोग का रहता है और न खाद के। लोग उसे बाहर फेक देते है। जिसके सुनने के कान हो, सुन ले।'

खोई हुई भेड़

सब कर लेनेवाले और पापी लोग यीशु के पास आ रहे थे कि उनकी बातें सुनें फरीसी और शास्त्री बड़बड़ाने लगे, 'यह तो पापियो का स्वागत करता और खाता है।'

तब यीशु ने उनसे यह दृष्टान्त कहा : तुममे से कौन है जिसकी सौ भेड़ हों और उनमे से एक खो जाए तो निन्यानवे को निर्जन प्रदेश मे छोड़कर खोई हुई भेड़ को, जब तक वह मिल न जाए, ढूढ़ता न रहे? मिल जाने पर वह उसे आनन्दपूर्वक कन्धे पर उठा लेता है, और घर आकर अपने मित्रों तथा पड़ोसियों को एकत्र करता और उनसे कहता है "मेरे साथ आनन्द मनाओ, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है।"

'मैं तुमसे कहता हू : इसी प्रकार, हृदय-परिवर्तन करनेवाले एक पापी के विषय मे जितना आनन्द स्वर्ग मे मनाया जाएगा, उतना निन्यानवे ऐसे धार्मिकों के विषय मे नहीं, जिन्हे हृदय-परिवर्तन की आवश्यकता नही है।

खोया हुआ सिक्का

अथवा, तुममे से कौन स्त्री होगी जिसके पास दस सिक्के* हों और उनमें से एक खो जाए तो दीपक जलाकर घर को नही बुहारे? और जब तक मिल न जाए, मन लगाकर उसे ढूढ़ती न रहे? मिल जाने पर वह सहेलियों और पड़ोसिनों को एकत्र करती और उनसे कहती है, "मेरे साथ आनन्द मनाओ, क्योंकि मेरा खोया हुआ सिक्का मिल गया है।" मैं तुमसे कहता हू : इसी प्रकार हृदय-परिवर्तन करनेवाले एक पापी के विषय मे परमेश्वर के दूत आनन्द मनाते है।'

उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त

यीशु ने कहा, 'किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उनमें से छोटे ने पिता से कहा, 'पिताजी, सम्पत्ति में मेरा अंश मुझे दीजिए।' पिता ने सम्पत्ति उनमे बाट दी।

'बहुत दिन न बीते थे कि छोटा पुत्र अपना सब कुछ एकत्र कर किसी दूर देश को चला गया और वहां भोग-विलास मे अपनी सम्पत्ति उड़ा दी। जब वह अपना सब कुछ व्यय कर चुका तब उस देश में भयंकर अकाल पड़ा और वह कंगाल हो गया। इसलिए उसने उस देश में एक नागरिक के यहां आश्रय लिया, जिसने उसे अपने खेतों मे सूअर चराने भेजा। जो फलियां सूअर खाते थे, उनसे अपना पेट भरने के लिए वह तरसता था, पर उसे कोई कुछ नही देता था।

'तब वह अपने होश मे आया और यह कहने लगा, 'मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भर-पेट भोजन मिलता है, और मैं यहां भूखों मर रहा हू। मैं उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उनसे कहूंगा, "पिताजी, मैंने स्वर्ग के विरुद्ध और आपके प्रति पाप किया है। अब मैं इस योग्य नही हू कि आपका पुत्र कहलाऊं। मुझे अपने एक मजदूर के समान रख लीजिए।"

'तब वह उठा और अपने पिता के पास चला। अभी वह दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखा और वह दया से भर गया। पिता ने दौड़कर उसे गले लगा लिया और उसको बहुत प्यार किया।

'पुत्र ने उससे कहा, "पिताजी, मैंने स्वर्ग के विरुद्ध और आपके प्रति पाप किया है। अब मैं इस योग्य नही हू कि आपका पुत्र कहलाऊं।"

'परन्तु पिता ने अपने सेवकों से कहा, "शीघ्रता करो, अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर इसे पहिनाओ, तथा इसके हाथ मे अंगूठी और पैर मे जूते पहिनाओ। मोटा-ताजा पशु लाकर काटो कि हम खाएं और आनन्द मनाएं। क्योंकि मेरा पुत्र मर गया था, परन्तु फिर जी गया है, खो गया था, और फिर मिल गया है।" इस प्रकार वे आनन्द मनाने लगे।

'उसका ज्येष्ठ पुत्र खेत में था। लौटते समय घर के समीप पहुंचने पर उसे संगीत और नाचने-गाने की आवाज सुनाई पड़ी। उसने एक सेवक को बुलाकर पूछा, 'यह सब क्या

*मूल मे 'द्राख्मा'

हो रहा है ?" सेवक ने बताया, "आपके भाई आए हैं, और आपके पिताजी ने मोटा पशु काटा है, क्योंकि उन्होंने उनको सकुशल पाया है।" इसपर वह क्रुद्ध हुआ। वह भीतर नहीं जाना चाहता था। तब उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा। उसने अपने पिता से कहा, "देखिए, मैं इतने वर्षों से आपकी सेवा कर रहा हूं, और मैंने कभी आपकी आज्ञा नहीं टाली, तो भी आपने मुझे कभी बकरी का बच्चा तक न दिया कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द मनाता। परन्तु जब आपका यह पुत्र, जिसने आपकी सम्पत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है, आया तो उसके लिए आपने पला हुआ पशु कटवाया।"

'पिता ने उससे कहा, "पुत्र, तुम तो सदा मेरे साथ हो, और जो कुछ मेरा है, वह तुम्हारा है। परन्तु हमें आमोद-प्रमोद करना और आनन्द मनाना उचित है, क्योंकि तुम्हारा यह भाई मर गया था, फिर जी गया है, खो गया था, फिर मिल गया है।"'

अधर्मी भण्डारी

यीशु ने शिष्यों से यह कहा, 'किसी धनी मनुष्य का एक भण्डारी था। स्वामी के सम्मुख उसपर अभियोग लगाया गया "यह भण्डारी आपकी सम्पत्ति उड़ा रहा है।" स्वामी ने उसे बुलाकर पूछा, "मैं तुम्हारे विषय में यह क्या सुन रहा हूं ? अपने भण्डारीपन का लेखा दो, क्योंकि अब तुम भण्डारी नहीं रह सकते।"

'भण्डारी ने अपने मन में कहा, "अब मैं क्या करूं ? स्वामी मुझसे मेरी नौकरी छीन रहा है। मिट्टी खोदने की मुझमें शक्ति नहीं, और भीख मांगने में मुझे लज्जा आती है। समझा। मैं समझ गया कि मुझे क्या करना है ताकि नौकरी से अलग किए जाने पर भी लोगों के घरों में मेरा स्वागत हो।"

'उसने अपने स्वामी के कर्जदारों को एक-एक कर बुलाया और पहले से पूछा, "तुमपर मेरे स्वामी का कितना ऋण है ?" उसने कहा, "सौ मन तेल।" तब वह उससे बोला, "यह अपना ऋणपत्र लो, बैठो और शीघ्र पचास लिख दो।"

'तब उसने दूसरे से पूछा, "तुमपर कितना ऋण है ?" उसने उत्तर दिया, "सौ मन गेहूं।" तब वह उससे बोला, "अपना ऋणपत्र लो और अस्सी लिख दो।"

'स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी की सराहना की कि उसने चतुराई से काम लिया। क्योंकि इस युग की सन्तान अपनी पीढ़ी के प्रति, ज्योति की सन्तान की अपेक्षा, अधिक चतुर है।

धन का उपयोग

'इसलिए मैं तुमसे कहता हूं अधर्म के धन से अपने लिए मित्र बना लो ताकि जब वह तुम्हारे पास न रहे तो शाश्वत-निवास में तुम्हारा स्वागत हो।

'जो थोड़े में विश्वासपात्र होता है, वह बहुत में भी विश्वासपात्र निकलता है। किन्तु जो थोड़े में अधर्मी होता है, वह बहुत में भी अधर्मी निकलता है। इसलिए यदि तुम अधर्म के धन में विश्वासपात्र न हुए तो तुमको सच्चा धन कौन सौंपेगा ? यदि तुम पराए धन में विश्वासपात्र न हुए तो तुम्हें तुम्हारा अपना धन कौन देगा ?

'कोई सेवक दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक के प्रति बैर रखेगा और दूसरे से प्रेम करेगा, अथवा एक के प्रति भक्ति रखेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।'

व्यवस्था का महत्व

धन के लोभी फरीसी ये सब बातें सुनकर यीशु का उपहास करने लगे। यीशु ने उनसे कहा, 'मनुष्यों के सामने अपने को तुम धर्मात्मा जताते हो, परन्तु परमेश्वर तुम्हारे हृदय को जानता है, क्योंकि जो मनुष्यों के लिए महान है, वह परमेश्वर की दृष्टि में तुच्छ है।

'मूसा की व्यवस्था और नबी यूहन्ना बपतिस्मादाता तक मान्य रहे। उस समय से परमेश्वर के राज्य के शुभ-सन्देश का प्रचार हो रहा है और प्रत्येक व्यक्ति उसमें बलपूर्वक प्रवेश करने का प्रयत्न कर रहा है। किन्तु व्यवस्था की एक मात्रा के मिटने की अपेक्षा आकाश और पृथ्वी का टल जाना अधिक सरल है।

तलाक का प्रश्न

जो पति अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है और जो पति द्वारा त्याग दी गई स्त्री से विवाह करता है, वह भी व्यभिचार करता है।

धनवान मनुष्य और निर्धन लाजर

एक धनी मनुष्य था जो रेशमी वस्त्र तथा मलमल पहिनता था, और ऐश्वर्य के साथ नित्य आमोद-प्रमोद किया करता था। उसके भवन के द्वार पर लाजर नामक एक गरीब मनुष्य घावों से भरा हुआ पड़ा रहता था। वह उस धनवान की मेज से गिरे हुए चूरचार से पेट भरने को तरसता था, यहां तक कि कुत्ते आकर उसके घाव चाटा करते थे।

'अब ऐसा हुआ कि गरीब लाजर मर गया और स्वर्गदूतों ने उसे ले जाकर अब्राहम की गोद में पहुंचा दिया।

'वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया। वह अधोलोक में नरक की पीड़ा सह रहा था। वहां से उसने अपनी आंखें ऊपर उठाईं और दूर से अब्राहम को एवं उनकी गोद में लाजर को देखा। तब वह पुकार उठा, 'पिता अब्राहम, मुझपर दया कीजिए। लाजर को भेजिए कि वह अपनी अंगुली का सिरा जल में डुबाकर मेरी जीभ को ठण्डा करे, क्योंकि मैं इस नरक की ज्वाला में तड़प रहा हूं।"

'पर अब्राहम ने उससे कहा, "पुत्र, स्मरण करो कि अपने जीवन में तुम अच्छी-अच्छी वस्तुएं प्राप्त कर चुके हो और इसी प्रकार लाजर बुरी वस्तुएं। परन्तु अब वह यहां शान्ति में है और तुम पीड़ा में। इसके अतिरिक्त हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई है। यदि कोई यहां से तुम्हारे पास आना चाहे तो नहीं आ सकता, और न वहां से कोई हमारे पास आ सकता है।"

'इस पर धनवान मनुष्य ने कहा, "तब पिता अब्राहम, मैं निवेदन करता हूं कि लाजर को मेरे पिता के घर भेजिए, क्योंकि मेरे पांच भाई हैं। वह उन्हें चेतावनी दे कि वे भी इस पीड़ा के स्थान में न आएं।"

'अब्राहम ने कहा, "मूसा और नबियों की पुस्तकें उनके पास हैं। वे उनकी सुनें।'

'वह बोला, "नहीं, पिता अब्राहम। यदि मृतकों में से कोई उनके पास जाए तो उनका हृदय-परिवर्तन होगा।"

'अब्राहम ने उत्तर दिया, 'जब वे मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो यदि कोई मृतकों में से जी उठे तो उसकी भी नहीं सुनेंगे।

१ आज आपने जो दृष्टान्त पढ़े हैं, उनके नाम लिखिए।
२ आपको सबसे अधिक कौन-सा दृष्टान्त पसन्द आया? क्यों?

२८. यीशु का पुनरागमन

(मत्ती २५)

यीशु ने हमें बताया कि वह अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन पुन: जीवित होंगे, और स्वर्ग में चले जाएंगे। किन्तु वह पुन: आएंगे। यीशु अपने अनुयायियों को आदेश देते हैं कि वे यीशु के पुनरागमन की प्रतीक्षा करें, और जाग्रत रहें।

दस कुंवारियों का दृष्टान्त

'परमेश्वर के राज्य की तुलना दस कुंवारियों से की जाएगी, जो अपना-अपना दीया* लेकर दूल्हे से भेंट करने निकलीं। उनमें पांच मूर्ख थीं, और पांच बुद्धिमती।

'मूर्खों ने दीये तो लिए, पर अपने साथ तेल न लिया, परन्तु बुद्धिमतियों ने अपने दीयों के साथ पात्रों में तेल भी लिया।

'जब दूल्हे के आने में देर हुई तब वे सब ऊंघने लगीं और सो गईं।

'आधी रात को धूम मची, "देखो, दूल्हा आ रहा है, उससे मिलने चलो।" तब सब कुंवारियां उठीं और अपना-अपना दीया संवारने लगीं। अब मूर्खों ने बुद्धिमतियों से कहा, "अपने तेल में से थोड़ा हमें भी दे दो, क्योंकि हमारे दीये बुझ रहे हैं।"

'पर बुद्धिमतियों ने उत्तर दिया, "नहीं, यह कदाचित् हमारे और तुम्हारे लिए पूरा न हो। अच्छा हो कि तुम तेल बेचनेवालों के पास जाकर अपने लिए तेल खरीद लो।"

'जब वे तेल खरीदने जा रही थीं तब दूल्हा आ पहुंचा। जो तैयार थीं, वे उसके साथ विवाह-भवन में गईं और द्वार बन्द हो गया।

'तब दूसरी कुंवारियां आईं और कहने लगीं, "प्रभु, प्रभु, हमारे लिए द्वार खोल दीजिए।"

'पर दूल्हे ने उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता।"

'इसीलिए जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, और न उस घड़ी को।'

सोने के सिक्कों का दृष्टान्त

'बात कुछ ऐसी होगी जैसे विदेश जानेवाले एक मनुष्य ने अपने सेवकों को बुलाया और अपनी सम्पत्ति उनको सौंप दी। उसने एक को सोने के पांच सिक्के**, दूसरे को दो, और तीसरे को एक—अर्थात् प्रत्येक को उसकी योग्यता के अनुसार दिया और विदेश चला गया।

'जिसे सोने के पांच सिक्के मिले थे, उसने तुरन्त जाकर उनसे व्यापार किया, और उसे पांच का लाभ हुआ।

'इसी प्रकार जिसे दो मिले थे, उसे दो का लाभ हुआ।

'पर जिसे एक मिला था, उसने जाकर भूमि खोदी, और अपने स्वामी का धन उसमें छिपा दिया।

'बहुत समय पश्चात् उन सेवकों का स्वामी लौटा और उनसे लेखा लेने लगा।

'जिसे पांच सिक्के मिले थे उसने पांच सिक्के और लाकर कहा, "स्वामी, आपने मुझे पांच सिक्के दिए थे। देखिए, मुझे पांच का और लाभ हुआ है।"

'उसके स्वामी ने कहा, "शाबाश! उत्तम और विश्वासपात्र सेवक! तुम थोड़ी वस्तुओं में विश्वासपात्र निकले। मैं तुमको बहुत वस्तुओं पर अधिकार दूंगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।"

'जिसे सोने के दो सिक्के मिले थे, वह भी आकर बोला, "स्वामी, आपने मुझे दो सिक्के दिए थे, देखिए, मुझे दो का और लाभ हुआ।"

'स्वामी ने उससे कहा, "शाबाश! उत्तम और विश्वासपात्र सेवक, तुम थोड़ी वस्तुओं में विश्वासपात्र निकले, मैं तुमको बहुत वस्तुओं पर अधिकार दूंगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।"

'परन्तु जिसे सोने का एक सिक्का मिला था, वह आकर बोला, "स्वामी, मैं आपको जानता था कि आप कठोर व्यक्ति हैं, जहां आपने बोया नहीं वहां काटते हैं, और जहां बिखेरा नहीं वहां बटोरते हैं। तो डर के मारे मैंने जाकर आपका सोने का सिक्का भूमि में छिपा दिया। लीजिए अपना सिक्का!"

*अथवा 'मशाल' **अथवा 'तलन'

'उसके स्वामी ने उत्तर दिया, "दुष्ट और आलसी सेवक! जब तू जानता था कि जहां मैंने बोया नहीं वहां काटता हूं, और जहां बिखेरा नहीं वहां बटोरता हूं, तो क्या उचित नहीं था कि मेरा धन महाजन के यहां रख देता? मैं आकर उसे ब्याज सहित ले लेता। सेवको, इससे यह सोने का सिक्का ले लो, और जिसके पास दस सिक्के हैं, उसे दे दो। क्योंकि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा और वह सम्पन्न हो जाएगा। परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे वह भी, जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। इस निकम्मे सेवक को बाहर अन्धकार में फेंक दो, जहां वह रोएगा और दांत पीसेगा।"'

न्याय का दिन

'जब मानव-पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएंगे, तब वह अपने महिमामय सिंहासन पर बैठेगा।

'सभी जातियां उसके सम्मुख एकत्र की जाएंगी और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है, वैसे ही वह उन्हें एक-दूसरे से अलग करेगा। वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर, और बकरियों को बाईं ओर खड़ा करेगा।

तब राजा अपनी दाहिनी ओर के लोगों से कहेगा, "मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ। उस राज्य के उत्तराधिकारी हो, जो सृष्टि के आरम्भ से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है।

' 'मैं भूखा था और तुमने मुझे भोजन कराया। मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी पिलाया। मैं परदेशी था और तुमने मुझे अपनाया। मैं नग्न था, और तुमने मुझे वस्त्र पहिनाए। मैं रोगी था और तुमने मेरी देखभाल की। मैं बन्दीगृह में था और तुम मुझसे मिलने आए।"

तब धर्मात्मा उससे कहेंगे, "प्रभु, हमने आपको कब भूखा देखा और भोजन कराया, या प्यासा देखा और पानी पिलाया? हमने आपको कब परदेशी देखा और अपनाया, या नग्न देखा और वस्त्र पहिनाए? हमने आपको कब रोगी या बन्दी देखा और आपसे मिलने आए?"

'इस पर राजा उन्हें उत्तर देगा, "मैं तुमसे सच कहता हूं जो कुछ तुमने मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे साथ किया।"

'तब वह अपनी बाईं ओर के लोगों से कहेगा, "शापित लोगो! मुझसे दूर हो और अनन्त अग्नि में जा पड़ो, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है। क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे भोजन नहीं कराया। मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया। मैं परदेशी था और तुमने मुझे नहीं अपनाया, मैं नग्न था और तुमने मुझे वस्त्र नहीं पहिनाए। मैं रोगी था और बन्दीगृह में था और तुमने मेरी देखभाल नहीं की।"

'इस पर वे कहेंगे, "प्रभु हमने आपको कब भूखा, या प्यासा, या परदेशी, या नग्न, या रोगी, या बन्दीगृह में देखा और आपकी सेवा नहीं की?"

'तब राजा उत्तर देगा, "मैं तुमसे सच कहता हूं जो तुमने मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया।"

'ये लोग अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मात्मा शाश्वत जीवन में प्रवेश करेंगे।'

१ दस कुवारियों के दृष्टान्त से हम क्या सीखते हैं? जब हम यीशु के पुनरागमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं तब हमें क्या करना चाहिए?
२ तलन्त के दृष्टान्त से हम क्या सीखते हैं?
३ जब यीशु इस संसार में पुन: आएंगे तब वह क्या करेंगे?

२६. यीशु की अन्य शिक्षाएं

(मरकुस १०)

प्रस्तुत अध्याय में यीशु सच्चे प्रेम और पवित्र विवाह के विषय में शिक्षा देते हैं। वह पुनः हमें चेतावनी देते हैं कि हम धन-सम्पत्ति के लोभ से बचें।

तलाक का प्रश्न

वहां से उठकर यीशु यरदन नदी के पार यहूदा प्रदेश की सीमा में आए। फिर जनसमूह उनके समीप एकत्र हो गया और वह अपनी रीति के अनुसार उन्हें पुनः उपदेश देने लगे। फरीसी उनके पास आए और उनको परखने के लिए प्रश्न किया, 'क्या किसी पुरुष के लिए अपनी स्त्री को तलाक देना व्यवस्था की दृष्टि से उचित है?'

उत्तर में यीशु ने पूछा, 'मूसा ने तुम्हें अपनी व्यवस्था में क्या आज्ञा दी है?'

वे बोले, 'मूसा ने त्याग-पत्र लिख कर तलाक देने की अनुमति दी है।'

यीशु ने उनसे कहा, 'तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उन्होंने यह आज्ञा लिखी, अन्यथा सृष्टि के आरम्भ से

"परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया।

इस कारण,

"पुरुष अपने माता-पिता को छोड़ कर,
अपनी पत्नी के साथ रहेगा,
और वे दोनों एक तन होंगे"।

'अब वे दो नहीं वरन् एक तन हैं। इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे।'

घर में शिष्यों ने इस सबंध में यीशु से फिर पूछा। उन्होंने उत्तर दिया, 'जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी स्त्री से विवाह करता है, वह अपनी पत्नी के प्रति व्यभिचार करता है, और यदि पत्नी अपने पति को त्यागकर दूसरे पुरुष से विवाह करती है तो वह भी व्यभिचार करती है।'

बच्चों को आशीर्वाद

लोग बच्चों को उनके पास लाने लगे कि यीशु उन्हें स्पर्श करें, पर शिष्यों ने उन्हें डांटा। यीशु ने यह देखा तो वह बहुत अप्रसन्न हुए और उनसे कहा, 'बच्चों को मेरे पास आने दो, उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।

'मैं तुमसे सच कहता हूं यदि कोई मनुष्य परमेश्वर के राज्य को बालक के समान स्वीकार न करे तो वह उसमें कदापि प्रवेश न करने पाएगा।'

तब उन्होंने बच्चों को गोद में लिया, उनके सिर पर हाथ रखे और उन्हें आशीर्वाद दिया।

धन या शाश्वत जीवन

यीशु वहां से निकलकर मार्ग की ओर जा रहे थे कि एक मनुष्य दौड़ता हुआ आया। उसने यीशु के आगे घुटने टेककर उनसे पूछा, 'हे उत्तम गुरु, शाश्वत जीवन पाने के लिए मैं क्या करूं?'

यीशु ने कहा, 'तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? केवल एक अर्थात् परमेश्वर को छोड़ कोई अन्य उत्तम नहीं। तू आज्ञाएं जानता है, "हत्या न कर, व्यभिचार न कर, चोरी न कर, झूठी साक्षी न दे, ठग मत, अपने माता-पिता का आदर कर।"'

उसने उत्तर दिया, 'गुरुजी, इन सबका मैं अपने बचपन से ही पालन करता आ रहा हूं।'

यीशु ने उसपर एकटक दृष्टि की, और उन्हें उस पर प्यार आया। वह बोले, 'तुझमें एक बात का अभाव है। जा, जो कुछ तेरा है, गरीबों को दे डाल और स्वर्ग में तुझे धन मिलेगा, तब आ और मेरा अनुयायी हो।'

यह सुनकर उसका चेहरा उदास हो गया और वह दु:खी होकर चला गया, क्योंकि उसके पास बहुत सम्पत्ति थी।

धन के कारण विघ्न

यीशु ने चारों ओर दृष्टि डाली और अपने शिष्यों से कहा, 'धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है।'

इन शब्दों को सुनकर शिष्य चकित हो गए।

परन्तु यीशु ने फिर कहा, 'बालको, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है। परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने की अपेक्षा ऊंट का सुई के नाके में होकर निकल जाना अधिक सरल है।'

वे और भी विस्मित हुए और आपस में कहने लगे, 'तो फिर उद्धार किसका हो सकता है?'

यीशु ने उनकी ओर एकटक देखकर कहा, 'मनुष्यों के लिए तो यह असम्भव है पर परमेश्वर के लिए नहीं, क्योंकि परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है।'

पतरस बोल उठा, 'देखिए, हम तो सब कुछ त्यागकर आपके अनुयायी हो गए हैं।'

यीशु ने कहा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं, ऐसा कोई नहीं है जो मेरे और परमेश्वर के शुभ-सन्देश के लिए घर, भाई, बहिन, माता, पिता, सन्तान या भूमि का त्याग करे और इस युग में सौ गुना न पाए—घर-द्वार, भाई, बहिन, माता, पिता, सन्तान और भूमि—साथ ही साथ अत्याचार, तथा आनेवाले युग में शाश्वत जीवन। परन्तु अनेक जो प्रथम हैं, अन्तिम होंगे और जो अन्तिम हैं, प्रथम।'

अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में यीशु की भविष्यवाणी

वे उस मार्ग पर जा रहे थे जो यरूशलम को जाता है। यीशु आगे चल रहे थे। शिष्य घबराए हुए थे और पीछे आनेवाले लोग भयभीत थे। यीशु ने बारह प्रेरितों को फिर अपने साथ लिया और उन्हें बताया कि आनेवाले दिनों में उनके साथ यह होगा: 'देखो, हम यरूशलम जा रहे हैं, वहां मानव-पुत्र महापुरोहितों और शास्त्रियों के हाथ में दे दिया जाएगा। वे उसे प्राण-दण्ड के योग्य ठहराएंगे, और गैरयहूदियों के हाथ में सौंप देंगे। वे उसका उपहास करेंगे, उसपर थूकेंगे, कोड़े लगाएंगे और उसे मार डालेंगे, पर वह तीन दिन पश्चात् जी उठेगा।'

यूहन्ना और याकूब का निवेदन

जबदी के दोनों पुत्र, याकूब और यूहन्ना, यीशु के पास आए और बोले, 'गुरुजी, हम चाहते हैं कि जो कुछ हम मांगने पर हैं, आप हमारे लिए करें।'

यीशु ने पूछा, 'तुम क्या चाहते हो? मैं तुम्हारे लिए क्या करूं?'

उन्होंने उत्तर दिया, 'जब आपकी महिमा हो तब आप हममें से एक को अपनी दाहिनी ओर और दूसरे को बाईं ओर बैठने का अधिकार दें।'

यीशु ने उनसे कहा, 'तुम्हें पता नहीं कि तुम अपने लिए क्या मांग रहे हो। क्या तुममें वह दु:ख का प्याला पीने की सामर्थ्य है जो मैं पीनेवाला हूं, अथवा वह बपतिस्मा लेने की सामर्थ्य है जो मैं लेनेवाला हूं?'

उन्होंने उत्तर दिया, 'हां, सामर्थ्य है।' यीशु ने उनसे कहा, 'जो प्याला मैं पी रहा हूं, तुम पीओगे और जो बपतिस्मा मैं ग्रहण कर रहा हूं, तुम ग्रहण करोगे पर अपनी दाहिनी ओर

और बाईं ओर बैठाना मेरा काम नही है। ये स्थान उनके लिए है, जिनके लिए तैयार किए गए हैं।'

महान कौन है

जब अन्य दस प्रेरितो ने यह सुना तब वे याकूब और यूहन्ना पर नाराज हुए।

यीशु ने उनको बुलाकर कहा, 'तुम जानते हो कि जो व्यक्ति किसी राष्ट्र मे शासक माने जाते हैं, वे जनता पर निरकुश शासन करते है, और उनके "बडे लोग" उनपर अधिकार जताते हैं। परन्तु तुममे ऐसा नही होगा, वरन् तुममे जो महान होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। और तुममे जो प्रधान होना चाहे, वह सबका दास बने। क्योकि मानव-पुत्र सेवा कराने नही, वरन् सेवा करने और सब मनुष्यो के लिए* उनकी मुक्ति के मूल्य मे अपने प्राण देने आया है।'

अन्धे बरतिमाई को दृष्टिदान

यीशु और उनके शिष्य यरीहो नगर पहुचे। जब यीशु, शिष्यो और विशाल जनसमूह के साथ, यरीहो से निकल रहे थे तब तिमाई का पुत्र *बरतिमाई, एक अन्धा भिखारी,* मार्ग के किनारे बैठा हुआ था। जब उसने सुना कि नासरत-निवासी यीशु है तो वह पुकारकर कहने लगा, 'हे दाऊद के वशज, हे यीशु, मुझपर दया कीजिए।'

अनेक लोगो ने डाटा कि वह चुप रहे पर वह और जोर से पुकारने लगा, 'हे दाऊद के वशज, मुझपर दया कीजिए।'

यीशु रुक गए और आज्ञा दी, 'उसे बुलाओ।' लोगो ने अन्धे को बुलाया और कहा, 'निराश मत हो, उठ, वह तुझे बुला रहे है।' अत वह अपने वस्त्र फेंककर उछल पड़ा और यीशु के समीप आया।

यीशु ने उससे पूछा, 'तू क्या चाहता है ? मै तेरे लिए क्या करू ?' अन्धे ने कहा, 'गुरुजी, मै देखने लगू।'

यीशु ने कहा, 'जा, तेरे विश्वास ने तुझे स्वस्थ किया।' वह उसी क्षण देखने लगा और मार्ग मे उनके पीछे हो लिया।

१ तलाक के विषय मे यीशु ने क्या शिक्षा दी ?
२ रुपए-पैसे के लोभ के विषय मे यीशु क्या कहते है ?
३ मरकुस १० ४५ पढिए और बताइए कि यीशु इस ससार मे क्यो आए थे ?

३०. यीशु का दिव्य रूपान्तर

(मरकुस ६ २–५०)

प्रस्तुत अध्याय मे हम पढेगे कि यीशु के शिष्य अपने गुरु को दिव्य रूप मे देखते है। परमेश्वर उन्हे यीशु का अनोखा दर्शन दिखाता है।

दिव्य-रूपान्तर

छह दिन बाद यीशु ने पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ लिया और उन्हे अलग एक ऊचे पहाड पर एकान्त मे ले गए। वहा उनके सामने यीशु का रूपान्तर हो गया। यीशु

*अथवा, 'बहुतों के लिए'

के वस्त्र अत्यन्त उज्ज्वल हो जगमगाने लगे—इतने उज्ज्वल कि पृथ्वी पर कोई धोबी नहीं कर सकता।

वहां शिष्यों को मूसा और एलियाह दिखाई दिए। वे यीशु से बातें कर रहे थे।

तब पतरस बोल उठा और उसने यीशु से कहा, 'गुरुजी, कैसी उत्तम बात है कि हम यहां है। आइए, हम तीन मण्डप बनाएं, एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक एलियाह के लिए।' पतरस की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे वे सब भयभीत हो उठे थे। तब एक बादल ने उन्हें ढक लिया और बादल में से यह आवाज आई 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी बात सुनो।' शिष्यों ने एकाएक चारों ओर दृष्टि की तो यीशु के अतिरिक्त और किसी को न देखा।

पहाड़ से उतरते समय यीशु ने आदेश दिया, 'जब तक मानव-पुत्र मृतकों में से जीवित न हो उठे, तब तक यह जो तुमने देखा है, किसी को न बताना।'

इस बात को लेकर वे आपस में विवाद करने लगे कि मृतकों में से जीवित होने का क्या अर्थ है।

उन्होंने यीशु से पूछा, 'शास्त्री क्यों कहते है कि पहिले एलियाह का आना अनिवार्य है?' यीशु ने उत्तर दिया, 'ठीक है, एलियाह पहिले आकर सब कुछ सुधारेंगे, परन्तु मानव-पुत्र के विषय में धर्मशास्त्र में ऐसा लेख क्यों है कि "वह बहुत दुःख उठाएगा और तुच्छ समझा जाएगा"? मैं तुमसे कहता हूं एलियाह आ चुके, और जैसा कि उनके सम्बन्ध में धर्मशास्त्र का लेख है, लोगों ने उनके साथ मनमाना व्यवहार किया।'

अशुद्ध आत्मा से जकड़े हुए बालक को स्वस्थ करना

जब यीशु और उनके तीनों शिष्य अन्य शिष्यों के पास आए, तब देखा कि शिष्यों के चारों ओर बड़ी भीड़ लगी है और शास्त्री उनसे विवाद कर रहे हैं। यीशु को देखते ही भीड़ के सब लोग चकित हुए और दौड़कर उन्हें प्रणाम करने लगे।

यीशु ने पूछा, 'तुम इनसे क्या विवाद कर रहे हो?'

भीड़ में से एक मनुष्य ने उत्तर दिया, 'गुरुजी, मैं आपके पास अपने पुत्र को लाया जिसमें गूंगी आत्मा का वास है। जहां कहीं वह उसे पकड़ती है, पटक देती है। वह मुंह में फेन भर लाता, दांत पीसने लगता और अकड़ जाता है। आपके शिष्यों से मैंने उसे निकालने को कहा, परन्तु उनसे न बन पड़ा।'

यीशु ने कहा, 'ओ अविश्वासी पीढ़ी, कब तक मैं तुम्हारे साथ रहूंगा? कब तक मैं तुम्हारी सहन करूंगा? उसे मेरे पास लाओ।' लोग लड़के को यीशु के पास लाए।

यीशु को देखते ही गूंगी आत्मा ने लड़के को मरोड़ा। लड़का भूमिपर गिर पड़ा और मुंह से फेन निकालते हुए लोटने लगा।

यीशु ने उसके पिता से पूछा, 'इसकी ऐसी दशा कबसे है?' उसने उत्तर दिया, 'बचपन से। इसे नष्ट करने के लिए गूंगी आत्मा ने कई बार इसे अग्नि में और कभी जल में गिराया। यदि आप कर सकें तो दया कर हमारी सहायता कीजिए।'

यीशु ने उससे कहा, ' "यदि आप कर सकें!" विश्वास करनेवाले के लिए सब कुछ सम्भव है।'

इस पर लड़के का पिता पुकार उठा, 'मैं विश्वास करता हूं। मेरे अविश्वास को दूर करने में मेरी सहायता कीजिए।'

यीशु ने देखा कि जनसमूह उमड़ता चला आ रहा है तो अशुद्ध आत्मा को डांट कर कहा, 'ऐ गूंगी और बहरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि इसमें से निकल और फिर कभी प्रवेश मत कर।'

गूंगी आत्मा चिल्लाती हुई और लड़के को बहुत मरोड़ कर उसमें से निकल गई। लड़का

निर्जीव-सा हो गया, यहा तक कि अनेक लोग कहने लगे कि वह मर गया। परन्तु यीशु ने उसे हाथ पकडकर उठाया, और वह खडा हो गया।

जब यीशु घर आए तब शिष्यो ने एकान्त मे उनसे पूछा 'हम उसे क्यो नही निकाल सके ?' उन्होने उत्तर दिया, 'इस वर्ग की आत्माए प्रार्थना के बिना और किसी उपाय से नही निकल सकती।'

अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में यीशु की दूसरी भविष्यवाणी

यीशु और उनके शिष्य वहा से चले गए। वे गलील प्रदेश मे होकर जा रहे थे। यीशु नही चाहते थे कि किसी को इसका पता लगे, क्योकि वह अपने शिष्यो को शिक्षा देने मे लगे हुए थे। उनका कथन था, 'मानव-पुत्र मनुष्यो के हाथ मे पकडवाया जाने को है। वे उसे मार डालेगे, परन्तु मरने के तीन दिन पश्चात् वह फिर जीवित हो उठेगा।' इस कथन का अर्थ शिष्यो की समझ मे न आया, और वे पूछने से डरते थे।

विनम्र बनो

यीशु और उनके शिष्य कफरनहूम मे आए। घर मे प्रवेश करने पर यीशु ने उनसे पूछा, 'मार्ग मे तुम क्या विवाद कर रहे थे ?'

वे चुप रहे, क्योकि मार्ग मे उन्होने विवाद किया था कि उनमे प्रमुख शिष्य कौन है। बैठने के पश्चात् यीशु ने 'बारह' को बुलाया और कहा, 'यदि कोई प्रथम होना चाहता है तो उसे चाहिए कि सबसे अन्तिम हो और सबका सेवक बने।'

तब उन्होने एक बालक को लेकर उनके बीच खडा किया और उसे गोद मे लेकर बोले, 'जो कोई मेरे नाम से ऐसे एक बालक को स्वीकार करता है, वह मुझे स्वीकार करता है। और जो मुझे स्वीकार करता है, वह मुझे नही वरन् उसे स्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है।'

उदार विचार

यीशु के शिष्य यूहन्ना ने कहा, 'गुरुजी, हमने एक मनुष्य को आपके नाम से भूत निकालते हुए देखा, तो हमने उसे रोकने का प्रयत्न किया, क्योकि वह हमारे साथ आपका अनुसरण नही करता है।'

यीशु बोले, 'उसे मत रोको, क्योकि ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो मेरे नाम से सामर्थ्य के काम करे और तुरन्त ही मुझे बुरा कह सके। जो हमारे विरोध मे नहीं वह हमारे पक्ष मे है। यदि कोई मेरे नाम से, इसलिए कि तुम मसीह के हो, तुम्हें एक कटोरा जल पिलाए तो मै तुमसे सच कहता हू कि वह अपना प्रतिफल कदापि न खोएगा।'

दूसरे को फसानेवालों के लिए चेतावनी

'जो कोई इन छोटो मे से, जो मुझपर विश्वास करते है, एक को भी पाप के जाल मे फसाए, उसके लिए अच्छा है कि उसके गले मे चक्की का एक बडा पाट बाधा जाए और वह झील मे फेंक दिया जाए।

'यदि तुम्हारा हाथ तुम्हे पाप मे फसाए तो उसे काट डालो। लूला होकर जीवन मे प्रवेश करना इससे अच्छा है कि दो हाथ रहते हुए तुम नरक मे, न बुझनेवाली अग्नि मे, जाओ।

'यदि तुम्हारा पैर तुम्हे पाप मे फसाए तो उसे काट डालो। लगडे होकर जीवन मे प्रवेश करना इससे कही अच्छा है कि दो पैर रहते तुम नरक मे डाले जाओ।

'और यदि तुम्हारी आख तुम्हे पाप मे फसाए तो उसे निकाल डालो। काने होकर परमेश्वर के राज्य मे प्रवेश करना इससे कही अच्छा है कि दो आखे होते हुए तुम नरक मे

डाले जाओ, जहां "उनका कीड़ा मरता नहीं और न आग बुझती है।"

'प्रत्येक व्यक्ति अग्नि द्वारा सलोना किया जाएगा। नमक अच्छा है, पर यदि नमक अपना सलोनापन खो बैठे तो उसे किस वस्तु से स्वादिष्ट करोगे? अपने मे नमक रखो और एक-दूसरे के साथ शान्तिपूर्वक रहो।'

१ पहाड़ पर कौन-सी घटना घटी?
२ भूत से जकड़े हुए लड़के का भूत (अशुद्ध आत्मा) शिष्य क्यों नहीं निकाल सके?

३१. आनन्द-उल्लास के साथ यरूशलम में प्रवेश
(मरकुस ११)

यीशु जानते थे कि पृथ्वी पर उनका सेवा-कार्य समाप्त हो चुका है। अत वह यरूशलम लौटे। उन्होंने यरूशलम नगर मे प्रवेश किया। उनका यह प्रवेश-कार्य अनोखा था। वह गधे के बछेरू पर सवार थे। उनके साथ विशाल जनसमूह था, जो उनका जयजयकार कर रहा था। प्रस्तुत अध्याय मे इसी ऐतिहासिक घटना का उल्लेख है।

जब यीशु और उनके शिष्य यरूशलम के निकट, जैतून पहाड़ पर बैतफगे और बैतनियाह गाव के समीप आए, तब यीशु ने अपने दो शिष्यों को यह कहकर भेजा, 'सामने के गाव मे जाओ। वहां प्रवेश करते ही तुम्हे गधे का एक बछेरू बधा हुआ मिलेगा जिस पर अब तक किसी ने सवारी नहीं की। उसे खोलकर ले आओ। यदि कोई तुमसे पूछे, "यह क्या कर रहे हो?" तो कहना "प्रभु को इसकी आवश्यकता है। वह इसे शीघ्र ही यहां लौटा देगे।"'

दोनो शिष्य गए और उन्होंने गधे के बछेरू को बाहर सड़क के किनारे एक द्वार पर बधा हुआ पाया। वे उसे खोलने लगे। वहा खड़े हुए लोगो ने पूछा, 'यह क्या कर रहे हो? बछेरू को क्यो खोलते हो?' उन्होंने वही उत्तर दिया जो यीशु ने बताया था। अत लोगो ने उन्हे जाने दिया।

वे गधे के बछेरू को यीशु के पास लाए और उस पर अपने वस्त्र बिछाए। यीशु उस पर बैठ गए।

अनेक लोगो ने मार्ग मे अपनी चादरे बिछायी। अनेक लोगो ने खेतो से पत्तिया तोड़कर मार्ग मे पत्तिया डाली। उनके आगे और पीछे चलनेवाले लोग जयघोष कर रहे थे,

'जय-जय!*
प्रभु के नाम से आनेवाले की स्तुति हो!
हमारे पूर्वज दाऊद के आनेवाले राज्य की स्तुति!
ऊंचे से ऊंचे स्थान मे प्रभु की जय!'

यीशु ने यरूशलम मे प्रवेश किया और वह मन्दिर मे आए। फिर चारो ओर सब कुछ देखकर वह बारह प्रेरितो के साथ बैतनियाह गाव चले गए, क्योंकि उस समय सन्ध्या हो गई थी।

फल-रहित अन्जीर का पेड़

दूसरे दिन जब यीशु और उनके शिष्य बैतनियाह गाव से निकले तब यीशु को भूख लगी। वह दूर से एक हरे-भरे अन्जीर के पेड़ को देखकर उसके पास गए कि कदाचित् उस पर कुछ

*मूल मे 'होशन्ना'।

फल मिल जाए परन्तु वहां पहुंचने पर पत्तों के अतिरिक्त कुछ न पाया, क्योंकि यह अन्जीर फलने का मौसम न था। यीशु पेड़ से बोले, 'अब से तेरा फल कोई न खाए।' उनके शिष्य यह सुन रहे थे।

मन्दिर की शुद्धि

तब यीशु और उनके शिष्य यरुशलम आए। यीशु ने मन्दिर में प्रवेश किया और वह मन्दिर में क्रय-विक्रय करने वालों को वहां से निकालने लगे। उन्होंने मुद्रा-विनिमय करने-वालों की मेजें और कबूतर बेचने वालों की गद्दियां उलट दीं, और किसी को भी मन्दिर से होकर सामान आदि ले जाने नहीं दिया। उन्होंने लोगों को यह शिक्षा भी दी, 'क्या धर्म शास्त्र में नहीं लिखा है

"मेरा घर सब जातियों के लिए
प्रार्थना का घर कहलाएगा।"

'किन्तु तुमने उसे "डाकुओं का अड्डा" बना दिया है।'

जब महापुरोहितों और शास्त्रियों ने यह सुना तो उनका वध करने के उपाय ढूंढ़ने लगे, पर वे यीशु से डरते थे, क्योंकि समस्त जनता यीशु की शिक्षाओं के कारण चकित थी।

सन्ध्या होने पर यीशु और उनके शिष्य नगर के बाहर चले गए।

विश्वास की शक्ति

प्रातःकाल उधर से जाते हुए शिष्यों ने देखा कि अन्जीर का पेड़ जड़ से सूख गया है। पतरस ने स्मरण कर कहा, 'गुरुजी, देखिए, यह अन्जीर का पेड़, जिसे आपने शाप दिया था, सूख गया है।'

यीशु ने उत्तर दिया, 'परमेश्वर पर विश्वास करो। मैं तुमसे सच कहता हूं यदि कोई इस पहाड़ से कहे, "यहां से हट और सागर में जा गिर", और अपने मन में सन्देह न करे, पर विश्वास करे कि जो कुछ मैं कह रहा हूं, वह हो रहा है, तो उसके लिए वह हो जाएगा। इसलिए मैं तुमसे कहता हूं यदि तुम प्रार्थना में कुछ मांगते हो, तो विश्वास करो कि वह तुम्हें मिल गया है और वह तुम्हें मिल जाएगा।

'जब तुम प्रार्थना के लिए खड़े हो, उस समय यदि तुम्हारे हृदय में किसी के प्रति वैर हो तो उसे क्षमा कर दो, जिससे कि तुम्हारा स्वर्गिक पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे।

('पर यदि तुम क्षमा नहीं करोगे तो तुम्हारा स्वर्गिक पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं करेगा।')*

यीशु के अधिकार पर शंका

यीशु और उनके शिष्य पुनः यरुशलम आए। जब यीशु मन्दिर में टहल रहे थे तब महा-पुरोहित, शास्त्री और धर्मवृद्ध उनके समीप आए और उनसे पूछा, 'किस अधिकार से आप ये कार्य करते हैं, और किसने आपको अधिकार दिया कि आप ये कार्य करें?'

यीशु ने उनसे कहा, 'मैं तुमसे एक प्रश्न पूछता हूं। उत्तर दो, फिर मैं भी तुम्हें बताऊंगा कि मैं किस अधिकार से ये कार्य करता हूं। बपतिस्मा देने का अधिकार यूहन्ना को परमेश्वर की ओर से प्राप्त हुआ था या मनुष्यों की ओर से? उत्तर दो।'

वे आपस में तर्क-वितर्क करने लगे, 'यदि हम कहें "परमेश्वर की ओर से", तो वह कहेंगे, "फिर तुमने उनका विश्वास क्यों नहीं किया?" तो क्या हम कहें, "मनुष्यों की ओर से"?' पर वे जनता से डरते थे, क्योंकि सब लोग मानते थे कि यूहन्ना सचमुच नबी थे। इसलिए, उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, 'हम नहीं जानते।' इस पर यीशु ने कहा, 'मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि मैं किस अधिकार से ये कार्य करता हूं।'

*कुछ प्रतियों में यह पद नहीं मिलता।

१ यीशु के यरूशलम-प्रवेश का वर्णन कीजिए।
२ यीशु ने यरूशलम के मन्दिर में क्या किया?

३२. यीशु और भी दृष्टान्त सुनाते हैं
(मरकुस १२)

यीशु के बन्दी होने और सलीब पर चढ़ने के एक सप्ताह पूर्व यीशु ने अपने श्रोताओं को और भी दृष्टान्त सुनाए। प्रस्तुत अध्याय में कुछ दृष्टान्तों का उल्लेख किया गया है।

अंगूर-उद्यान का दृष्टान्त

यीशु महापुरोहितों, शास्त्रियों और धर्मवृद्धों से दृष्टान्तों में कहने लगे 'एक मनुष्य ने अंगूर-उद्यान लगाया उसके चारों ओर बाड़ा बांधा, रस का कुण्ड खोदा और मचान बनाया, और तब उसे किसानों को पट्टे पर देकर विदेश चला गया।

फल का मौसम आने पर उसने एक सेवक को किसानों के पास भेजा कि अंगूर-उद्यान के फल में अपना भाग प्राप्त करे। पर किसानों ने उसे पकड़कर पीटा और खाली हाथ लौटा दिया। उसने फिर अपने दूसरे सेवक को उनके पास भेजा। उन्होंने उसका सिर फोड़ दिया और उसे अपमानित किया। उसने एक और सेवक भेजा। उन्होंने उसे मार डाला। इसी प्रकार अन्य अनेक सेवकों को उन्होंने पीटा अथवा मार डाला।

'अंगूर-उद्यान के स्वामी के पास अब केवल एक था—अपना प्रिय पुत्र।* उसने यह सोचा, "वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे।" अतः उसने अपने प्रिय पुत्र को उनके पास भेजा।

'पर किसानों ने आपस में कहा, "यह उत्तराधिकारी है। आओ, इसे मार डालें, तब इसकी पैतृक सम्पत्ति हमारी हो जाएगी।" अतः उन्होंने उसको पकड़कर मार डाला और उद्यान के बाहर फेंक दिया।'

यीशु ने आगे कहा, 'अंगूर-उद्यान का स्वामी क्या करेगा? निस्सन्देह वह आकर किसानों का वध करेगा और अंगूर-उद्यान दूसरों को दे देगा। क्या तुमने धर्मशास्त्र का यह लेख नहीं पढ़ा

"जिस पत्थर को भवन-निर्माताओं ने रद्द किया,
वह मेहराब की केन्द्र-शिला** बन गया।
यह कार्य प्रभु का है,
और हमारी दृष्टि में अद्भुत है"?'

अतः वे यीशु को बन्दी बनाने के उपाय सोचने लगे, क्योंकि वे समझ गए थे कि यीशु ने यह दृष्टान्त उनके सम्बन्ध में कहा है। पर वे जनता से डरते थे, अतः वे यीशु को छोड़कर चले गए।

रोमन-सम्राट को कर देना उचित है या नहीं

उन्होंने फरीसी और हेरोदेस-दल के कुछ लोग यीशु के पास भेजे कि उन्हें शब्द-जाल में फंसाएं। उन्होंने आकर कहा, 'गुरुजी, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और आपको किसी का भय नहीं है। आप मुंह देखी नहीं कहते पर सच्चाई से परमेश्वर के मार्ग का उपदेश देते हैं। बताइए, व्यवस्था की दृष्टि में रोमन सम्राट को कर देना उचित है अथवा नहीं? हम सम्राट को कर दें अथवा न दें?'

यीशु ने उनकी धूर्तता जानकर उनसे कहा, 'तुम मुझे क्यों परख रहे हो? एक सिक्का लाओ, मैं उसको देखना चाहता हूं।' वे सिक्का ले आए। यीशु ने प्रश्न किया, 'यह किसका

*अथवा, 'एकमात्र पुत्र' **अथवा 'कोने का पत्थर'

चित्र है, और इस पर क्या लिखा है?' उन्होंने उत्तर दिया, 'सम्राट का चित्र है।' यीशु ने कहा, 'जो सम्राट का है वह सम्राट को दो, और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो।' इस पर वे चकित रह गए।

पुनरुत्थान के सम्बन्ध में प्रश्न

यीशु के पास सदूकी आए, जो कहते हैं कि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं होता। उन्होंने प्रश्न किया 'गुरुजी, हमारे लिए मूसा का लेख है कि यदि किसी का भाई निस्सन्तान मर जाए और उसकी पत्नी जीवित रहे, तो उसे* चाहिए कि उस स्त्री से विवाह कर अपने भाई के लिए सन्तान उत्पन्न करे। सात भाई थे। पहले ने विवाह किया और निस्सन्तान मर गया। दूसरे ने उस स्त्री से विवाह किया, वह भी निस्सन्तान मर गया, और यही दशा तीसरे की भी हुई। इस प्रकार सातों भाई निस्सन्तान मर गए। सबके अन्त में उस स्त्री का भी देहान्त हो गया। पुनरुत्थान होने पर जब वे जीवित होंगे तब वह किसकी पत्नी होगी, क्योंकि वह सातों भाइयों की पत्नी रही थी?'

यीशु ने उनसे कहा, 'क्या तुम इस कारण भूल में नहीं पड़े हो कि तुम न तो धर्मशास्त्र से परिचित हो और न परमेश्वर की सामर्थ्य से? मनुष्य जब मृतकों में से जी उठते हैं तो न वे विवाह करते और न वे विवाह में दिए जाते हैं, वरन् वे स्वर्गदूतों के सदृश होते हैं। रहा मृतकों में से जी उठने के विषय में तुम्हारा प्रश्न, तो क्या तुमने मूसा की पुस्तक में, जलती झाड़ी के वर्णन में, यह नहीं पढ़ा कि परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं"? वह मृतकों का नहीं वरन् जीवितों का परमेश्वर है। तुम भारी भूल में हो।'

प्रमुख आज्ञा

एक शास्त्री यह वाद-विवाद सुन रहा था। उसने देखा कि यीशु ने उनको उचित उत्तर दिया है। अत: वह आगे बढ़ा और यीशु से प्रश्न पूछा, 'व्यवस्था की पहली प्रमुख आज्ञा कौन-सी है?' यीशु ने उत्तर दिया, 'प्रमुख आज्ञा यह है "इस्राएल, सुन, प्रभु हमारा परमेश्वर ही एकमात्र प्रभु है। तू अपने परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण हृदय, सम्पूर्ण प्राण, सम्पूर्ण बुद्धि और सम्पूर्ण शक्ति से प्रेम कर।" दूसरी प्रमुख आज्ञा यह है "अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर।" इनसे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं है।'

शास्त्री ने कहा, 'गुरुजी, क्या ही सुन्दर! आपने सच कहा कि परमेश्वर एक है, उसके अतिरिक्त और कोई ईश्वर नहीं। उसे अपने सम्पूर्ण हृदय, सम्पूर्ण बुद्धि और सम्पूर्ण शक्ति से प्रेम करना तथा अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम करना, अग्नि-बलि और पशु-बलि चढ़ाने से बढ़कर है।'

यीशु ने देखा कि उसने बुद्धिमत्ता का उत्तर दिया है तो उससे बोले, 'तुम परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं हो।'

इसके पश्चात् किसी को उनसे और कोई प्रश्न पूछने का साहस नहीं हुआ।

राजा दाऊद के वंशज मसीह

यीशु मन्दिर में उपदेश दे रहे थे। उन्होंने कहा, 'शास्त्री कैसे कहते हैं कि मसीह दाऊद का वंशज है, जब स्वयं दाऊद ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से यह कहा है

"प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा,
'जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों के तले न लाऊं,
तू मेरे दाहिने हाथ पर बैठ'।"

*अक्षरश: 'भाई को'

'दाऊद स्वयं उसे "प्रभु" कहता है तो वह दाऊद का वंशज कैसे हुआ ?' विशाल जनसमूह यीशु की बातें सुनने में रस ले रहा था।

शास्त्रियों के विरुद्ध चेतावनी

अपने उपदेश में यीशु ने कहा, 'शास्त्रियों से सावधान रहो, क्योंकि उन्हें लम्बे-लम्बे चोगे पहिनकर घूमना, बाजार में प्रणाम, सभागृहों में प्रमुख आसन और भोजों में मुख्य स्थान प्रिय है। पर वे विधवाओं के घर निगल जाते हैं और दिखावे के लिए लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएं करते हैं। उन्हें अधिक दण्ड मिलेगा।'

गरीब विधवा का दान

यीशु मन्दिर के कोष के सम्मुख बैठे हुए देख रहे थे कि किस प्रकार लोग कोष में दान डाल रहे हैं। अनेक धनवान बहुत कुछ डाल रहे थे। इतने में एक दरिद्र विधवा आई। उसने दो छोटे सिक्के* कोष में डाले, जिनका मूल्य लगभग एक पैसा होता है। इस पर यीशु ने अपने शिष्यों को बुलाकर कहा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं इस दरिद्र विधवा ने सब दान-दाताओं की अपेक्षा कोष में अधिक दिया है। क्योंकि अन्य सब ने अपनी समृद्धि में से डाला, परन्तु इसने अपनी गरीबी में से डाला है। इसने जो कुछ इसके पास था सब, अपनी सारी जीविका, दान कर दी।'

१ अंगूर-उद्यान के दृष्टान्त के द्वारा यीशु हमें कौन-सी शिक्षा दे रहे हैं ?
२ यीशु ने मृतकों के पुनरुत्थान के विषय में सदूकी-सम्प्रदाय के लोगों से क्या कहा ?
३ पढ़िए मरकुस १२ २९–३१ और बताइए, प्रमुख आज्ञा कौन-सी है ?

३३. यीशु की गिरफ्तारी

(मत्ती २६ १७–५५)

यीशु ने केवल तीन वर्ष तक लोगों को उद्धार का मार्ग बताया, उनको पाप-क्षमा और प्रेम का मार्ग सिखाया। तब उनके एक शिष्य ने उनके साथ विश्वासघात किया। उसने उनको पकड़वा दिया। यीशु बन्दी बना लिए गए। उन पर मुकदमा चला, और वह सलीब पर चढ़ा दिए गए।

प्रस्तुत अध्याय में यीशु के बन्दी बनाए जाने के पूर्व की घटनाओं का उल्लेख है।

अन्तिम भोज

अखमीरी रोटी के पर्व के प्रथम दिन शिष्यों ने यीशु के पास आकर पूछा, 'आप कहां चाहते हैं कि हम आपके लिए फसह का भोजन तैयार करें ?'

उन्होंने कहा, 'नगर में अमुक के पास जाकर उससे कहो, "गुरुजी कहते हैं कि मेरा समय निकट आ पहुंचा है। मैं तुम्हारे यहां अपने शिष्यों के साथ फसह का पर्व मनाऊंगा।"'

जैसा यीशु ने आदेश दिया था वैसा ही शिष्यों ने किया, और फसह का भोजन तैयार किया।

सन्ध्या के समय यीशु बारह शिष्यों के साथ भोजन करने बैठे। जब वे भोजन कर रहे थे

तब यीशु ने कहा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं तुममें से एक शिष्य मुझे पकड़वाएगा।'

इस पर वे अत्यन्त दुःखी हुए और प्रत्येक शिष्य उनसे पूछने लगा, 'प्रभु, मैं तो नहीं हूं?'

उन्होंने उत्तर दिया, 'जो मेरे साथ थाली में हाथ डालता है, वही मुझे पकड़वाएगा। मानव-पुत्र तो जैसा धर्मशास्त्र का उसके विषय में लेख है, जा रहा है परन्तु धिक्कार है उस मनुष्य को जो मानव-पुत्र को पकड़वा रहा है। उस मनुष्य के लिए अच्छा होता कि वह उत्पन्न ही न हुआ होता।'

तब उनके पकड़वानेवाले यहूदा ने कहा, 'गुरु, मैं तो नहीं हूं?'

उन्होंने कहा, 'तुमने कह दिया।'

प्रभु-भोज का अनुष्ठान

भोजन करते समय यीशु ने रोटी ली, आशीष मांगकर तोड़ी और शिष्यों को दी, और कहा, 'लो, खाओ, यह मेरी देह है।'

तब उन्होंने कटोरा लिया, और परमेश्वर को धन्यवाद देकर शिष्यों को दिया और कहा, 'तुम सब इसमें से पियो, क्योंकि यह वाचा* का मेरा रक्त है जो सब मनुष्यों** की पाप-क्षमा के लिए बहाया जा रहा है। मैं तुमसे कहता हूं दाख का यह रस अब से उस दिन तक नहीं पिऊंगा, जब तक अपने पिता के राज्य में, तुम्हारे साथ नया न पिऊं।'

शिष्यों के पतन के सम्बन्ध में भविष्यवाणी

भजन गाने के पश्चात् यीशु और उनके शिष्य जैतून पहाड़ पर चले गए।

तब यीशु ने उनसे कहा, 'आज रात को तुम सबका मेरे विषय में पतन होगा, क्योंकि धर्मशास्त्र का यह लेख है

"मैं चरवाहे पर आघात करूंगा
और झुण्ड की भेड़ें बिखर जाएंगी।"

परन्तु अपने पुनरुत्थान के पश्चात् मैं तुमसे पहले गलील प्रदेश को जाऊंगा।'

पतरस बोला, 'चाहे आपके विषय में सबका पतन हो जाए, पर मेरा पतन कभी न होगा।'

यीशु ने कहा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं, इसी रात को मुर्गे के बांग देने के पहले तुम तीन बार मुझे अस्वीकार करोगे।'

पतरस ने उनसे कहा, 'चाहे मुझे आपके साथ मरना पड़े तो भी मैं आपको कदापि अस्वीकार न करूंगा।'

इसी प्रकार अन्य सब शिष्यों ने भी कहा।

गतसमने बाग में

तब यीशु अपने शिष्यों के साथ गतसमने नामक स्थान पर आए। उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, 'जब तक मैं आगे जाकर प्रार्थना करता हूं, तुम यहां बैठो।'

वह पतरस और जबदी के दोनों पुत्रों को साथ ले गए।

यीशु व्यथित तथा व्याकुल हो उठे। वह उनसे बोले, 'मैं अत्यन्त व्याकुल हूं। मेरा मानो प्राण निकल रहा है। तुम यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।'

तब वह थोड़ा आगे बढ़े, और मुंह के बल गिरकर प्रार्थना करने लगे, 'मेरे पिता, यदि सम्भव हो तो यह दुःख का प्याला मेरे पास से हट जाए। तो भी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, वरन् जैसा तू चाहता है वैसा हो।'

जब वह शिष्यों के पास लौटे तब उन्हें सोते पाकर पतरस से बोले, 'मेरे साथ एक घण्टे

*अथवा, 'व्यवस्थान, विधान, सन्धि, समझौता' **अथवा 'बहुतों'

जागने की भी सामर्थ्य तुममें नहीं? तुम सब जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, पर शरीर दुर्बल है।'

वह फिर दूसरी बार गए और यह प्रार्थना की, 'मेरे पिता, यदि यह प्याला मेरे पिए बिना नहीं हट सकता, तो तेरी इच्छा पूरी हो।' यीशु फिर लौटे। उन्होंने शिष्यों को सोते हुए पाया, क्योंकि उनकी आंखें नींद से भारी हो रही थीं।

उन्हें छोड़कर यीशु पुनः गए और तीसरी बार उन्हीं शब्दों में प्रार्थना की।

तब वह शिष्यों के समीप आए और उनसे कहा, 'अब भी सो रहे हो!-विश्राम कर रहे हो! देखो, समय आ पहुंचा, मानव-पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जा रहा है। उठो, हम चलें, देखो, मेरा पकड़वानेवाला निकट आ गया।'

यीशु का बन्दी होना

यीशु बोल ही रहे थे कि बारह शिष्यों में से एक अर्थात् यहूदा आ गया। उसके साथ तलवारें और लाठियां लिए बड़ी भीड़ थी जिसे महापुरोहितों और समाज के धर्मवृद्धों ने भेजा था।

पकड़वानेवाले ने उन्हें यह संकेत दिया था, 'जिसका मैं चुम्बन करूं, वही है, उसे पकड़ लेना।'

वह तुरन्त यीशु के समीप आकर बोला, 'गुरुजी, प्रणाम', और उनका चुम्बन किया।

यीशु ने उससे कहा, 'मित्र, जिस काम के लिए आए हो, उसे कर लो।'*

तब लोगों ने पास आकर यीशु पर हाथ डाले और उन्हें पकड़ लिया।

इस पर यीशु के एक साथी ने हाथ बढ़ाकर अपनी तलवार खींची और महापुरोहित के दास पर चलाकर उसका कान उड़ा दिया।

यीशु ने उससे कहा, 'अपनी तलवार म्यान में रखो, क्योंकि जो तलवार उठाते हैं, वे तलवार से ही मारे जाएंगे। क्या तुम सोचते हो कि मैं अपने पिता से निवेदन नहीं कर सकता? क्या वह इसी क्षण मुझे स्वर्गदूतों की बारह सेनाओं से अधिक नहीं भेज देगा? परन्तु तब धर्मशास्त्र का लेख कैसे पूरा होगा जिसके अनुसार ऐसा होना अनिवार्य है?'

उस समय यीशु ने भीड़ से कहा, 'क्या तुम तलवारें और लाठियां लेकर मुझे बन्दी करने आए हो, मानो मैं कोई डाकू हूं? मैंने प्रतिदिन मन्दिर में बैठकर तुम्हें उपदेश दिए पर तुमने मुझे नहीं पकड़ा। यह सब इसलिए हुआ कि नबियों का लेख पूरा हो।' तब सब शिष्य यीशु को छोड़कर भाग गए।

महापुरोहित के सम्मुख यीशु का विचार

यीशु को पकड़नेवाले उनको महापुरोहित काइफा के पास ले गए, जहां शास्त्री और समाज के धर्मवृद्ध एकत्र थे। पतरस भी दूर-दूर यीशु के पीछे महापुरोहित के भवन के आंगन तक गया और अन्त देखने के लिए भीतर जाकर कर्मचारियों के साथ बैठ गया।

इधर महापुरोहित और समस्त धर्ममहासभा ने यीशु को मार डालने के लिए उनके विरुद्ध प्रमाण ढूंढने का प्रयत्न किया, पर अनेक झूठे गवाहों के आने पर भी प्रमाण न मिला।

अन्त में दो मनुष्य आकर बोले, 'इसने कहा था कि मैं परमेश्वर के मन्दिर को गिरा सकता हूं और तीन दिन में फिर बना सकता हूं।'

इसपर महापुरोहित ने खड़े होकर यीशु से कहा, 'तू कुछ उत्तर नहीं देता, ये लोग तेरे विरुद्ध क्या साक्षी दे रहे हैं?'

पर यीशु मौन रहे।

महापुरोहित ने कहा, 'मैं तुझे जीवन्त परमेश्वर की शपथ देकर कहता हूं कि, यदि तू परमेश्वर-पुत्र मसीह है तो हम से कह दे।'

*'तुम क्या करने आए हो?'

यीशु बोले, 'आपने कह दिया। मैं आपसे यह भी कहता हूं कि अब से तुम मानव-पुत्र को सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठा हुआ और आकाश के बादलों पर आता हुआ देखोगे।'

इस पर महापुरोहित ने अपने वस्त्र फाड़े और कहा, 'इसने परमेश्वर की निन्दा की है। क्या हमें अब भी गवाहों की आवश्यकता है? आपने स्वयं अपने कानों से परमेश्वर की निन्दा सुन ली। आपका क्या विचार है?'

उन्होंने उत्तर दिया, 'यह प्राण-दण्ड के योग्य है।'

तब उन्होंने यीशु के मुंह पर थूका, और उन्हें घूंसे मारे। कुछ ने थप्पड़ मारकर उनसे कहा, 'मसीह! हमें नबूवत करके बता कि किसने तुझे मारा!'

पतरस का इन्कार करना

पतरस बाहर आंगन में बैठा था। तब एक सेविका उसके पास आकर बोली, 'तू भी गलील-निवासी यीशु के साथ था।'

पर उसने सबके सामने अस्वीकार करते हुए कहा, 'मैं नहीं जानता कि तू क्या कह रही है?'

जब वह बाहर ड्योढ़ी पर चला गया तब किसी और सेविका ने उसे देखा एवं वहां खड़े हुए लोगों से कहा, 'यह मनुष्य नासरत-निवासी यीशु के साथ था।'

पतरस ने शपथपूर्वक फिर अस्वीकार किया, 'मैं उस मनुष्य को नहीं जानता।'

कुछ समय पश्चात् वहां खड़े हुए लोगों ने पतरस के समीप आकर कहा, 'निश्चय, तू उन्हीं में से है, क्योंकि तेरी बोली ही तुझे प्रकट कर रही है।'

तब पतरस अपने आपको कोसने लगा और शपथपूर्वक कहने लगा, 'मैं उस मनुष्य को नहीं जानता।'

तत्काल मुर्गे ने बांग दी।

अब पतरस को वे शब्द स्मरण हुए जो यीशु ने कहे थे, 'मुर्गे के बांग देने से पहले तुम मुझे तीन बार अस्वीकार करोगे।'

पतरस बाहर जाकर फूट-फूटकर रोने लगा।

उपरोक्त अध्याय में आपने जो कुछ पढ़ा है, उसका अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

३४. यीशु की सलीब पर मृत्यु

(मत्ती २७)

प्रस्तुत विवरण को ध्यान से पढ़िए, क्योंकि यह बाइबिल की समस्त घटनाओं-विवरणों में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस विवरण से हमें मालूम होता है कि यीशु हमारे पापों का दण्ड भोगने के लिए सलीब पर मारे गए थे। सच पूछो तो हमें, मानव-जाति को, पापों का दण्ड मिलना चाहिए था, किन्तु स्वयं परमेश्वर ने मानव-जाति के प्रति अपने प्रेम के कारण अपने एकलौते पुत्र का बलिदान स्वीकार किया। आज के अध्याय को पढ़ते समय ध्यान रखिए कि यीशु ने सलीब पर अपना प्राण इसलिए दिया कि आप पाप से मुक्त हो जाएं। यह प्रेम दुनिया में बेमिसाल है।

राज्यपाल पिलातुस के सम्मुख यीशु

जब प्रात काल हुआ तब सब महापुरोहितो और समाज के धर्मवृद्धो ने यीशु के विरुद्ध मन्त्रणा की कि उन्हे मरवा डाले। वे यीशु को बाधकर ले गए और उन्हे राज्यपाल पिलातुस को सौंप दिया।

यहूदा इस्करियोती की मृत्यु

जब यहूदा ने जिसने यीशु को पकडवाया था, यह देखा कि यीशु को मृत्यु-दण्ड की आज्ञा मिली है तब वह पछताया। वह महापुरोहितो और धर्मवृद्धो के पास चादी के तीस सिक्के लेकर आया और उनसे बोला मैने निर्दोष व्यक्ति को मृत्यु-दण्ड के लिए आप लोगो के हाथ मे सौपकर पाप किया है।

उन्होने कहा, 'तुम जानो, इससे हमे क्या?'

इस पर वह चादी के सिक्के मन्दिर मे फेककर वहा से निकल गया और फासी लगाकर आत्महत्या कर ली।

महापुरोहितो ने चादी के सिक्के लेकर कहा, 'इन्हे मन्दिर के कोष मे रखना उचित नहीं, क्योकि ये रक्त का मूल्य है।' अत उन्होने आपस मे मन्त्रणा की और परदेशियो को गाडने के लिए कुम्हार का खेत मोल लिया। इस कारण वह खेत आज भी रक्त-खेत कहलाता है। इस प्रकार नबी यिर्मयाह का यह वचन पूरा हुआ,

'उन्होने चादी के तीस सिक्के लिए
उस व्यक्ति का मूल्य जिस पर इस्राएलियो ने मूल्य लगाया था---
और कुम्हार के खेत के लिए दे दिया,
जैसा प्रभु ने मुझे आदेश दिया था।'

राज्यपाल पिलातुस द्वारा यीशु की जांच

अब यीशु राज्यपाल के सम्मुख खडे थे। राज्यपाल ने उनसे पूछा, 'क्या तुम यहूदियो के राजा हो?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'आप स्वय कह रहे है।'

परन्तु जब महापुरोहितो और धर्मवृद्धो ने उन पर अभियोग लगाए तो उन्होने कुछ उत्तर नही दिया।

पिलातुस ने कहा, 'क्या तुम नही सुन रहे कि ये तुम्हारे विरुद्ध कितनी साक्षिया दे रहे है?'

पर उन्होने एक बात का भी उत्तर नही दिया। इससे राज्यपाल को बहुत आश्चर्य हुआ।

यीशु को मृत्यु-दण्ड

फसह पर्व के समय राज्यपाल जनता की इच्छानुसार एक बन्दी को मुक्त करता था। उस समय बरअब्बा* नामक एक कुख्यात मनुष्य बन्दी था।

लोगो के एकत्र होने पर पिलातुस ने उनसे कहा, 'तुम क्या चाहते हो, मै तुम्हारे लिए किसे मुक्त करू? बरअब्बा को या यीशु को जो मसीह कहलाते है।'** क्योकि वह जानता था कि उन्होने यीशु को ईर्ष्यावश पकडवाया है। इसके अतिरिक्त जब वह न्यायासन पर बैठा था तब उसकी पत्नी ने कहला भेजा था, 'इस धर्मात्मा मनुष्य के मामले मे हस्तक्षेप न करना, क्योकि मैने आज स्वप्न मे इसके कारण बहुत दुःख सहा है।'

महापुरोहितो और धर्मवृद्धो ने भीड को बहका दिया कि वह बरअब्बा की मुक्ति और यीशु की मृत्यु की माग करे।

*पाठान्तर, 'यीशु-बरअब्बा'

** 'यीशु-बरअब्बा को या यीशु को, जो मसीह कहलाते है?'

राज्यपाल ने पूछा, 'तुम क्या चाहते हो ? दोनों में से किसे तुम्हारे लिए छोड़ दूं ?'

वे बोले, 'बरअब्बा को।'

पिलातुस ने कहा, 'तो फिर यीशु का, जो मसीह कहलाते है, क्या करूं ?'

वे सब कहने लगे, 'उसे क्रूस पर चढ़ाओ !'

उसने पूछा, 'क्यों ? उसने क्या अपराध किया है ?'

इस पर वे और भी उच्च स्वर से चिल्लाए, 'उसे क्रूस पर चढ़ाओ।'

जब पिलातुस ने देखा कि उसे यीशु को बचाने में सफलता नहीं मिल रही है वरन् उपद्रव बढ़ता ही जा रहा है, तब उसने पानी लिया और लोगों के सामने हाथ धोकर कहा, 'इस मनुष्य की मृत्यु के लिए मैं दोषी नहीं हूं। तुम्हीं जानो।'

लोगों ने उत्तर दिया, 'इसका रक्त हम पर और हमारी सन्तान पर हो।'

तब पिलातुस ने बरअब्बा को उनके लिए मुक्त कर दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर क्रूस पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया।

यीशु का अपमान

तब राज्यपाल के सैनिक यीशु को राजभवन में ले गए और उन्होंने यीशु के सम्मुख सैन्यदल एकत्र किया। उन्होंने यीशु के वस्त्र उतारकर उन्हें लाल जामा पहिनाया, काटों का मुकुट गूंधकर उनके सिर पर रखा, और उनके दाहिने हाथ में नरकुल थमाया। तब वे उनके आगे घुटने टेककर उपहास करने तथा यह कहने लगे, 'यहूदियों के राजा, आपकी जय हो।'

सैनिकों ने उन पर थूका और वही नरकुल लेकर उनके सिर पर मारा।

जब वे यीशु का उपहास कर चुके तब जामा उतार लिया, और उनके कपड़े पहिनाकर उन्हें क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले चले।

क्रूस

नगर के बाहर जाते समय सैनिकों को शिमौन नामक कुरैन देश का एक निवासी मिला। उसे उन्होंने बेगार में पकड़ा कि वह यीशु का क्रूस उठाकर चले।

जब वे गुलगुता अर्थात् 'कपाल-स्थान' नामक स्थान पर पहुंचे तब उन्होंने यीशु को पित्त-मिश्रित दाखरस पीने को दिया। यीशु ने उसे चखा, पर उसे पीना न चाहा।

तब सैनिकों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया। उन्होंने चिट्ठी डालकर यीशु के वस्त्र आपस में बांट लिए और वहां बैठकर पहरा देने लगे।

उन्होंने यीशु का अभियोग-पत्र कि 'यह यहूदियों का राजा यीशु है' उनके सिर के ऊपर लटका दिया।

यीशु के साथ ही दो डाकू क्रूस पर चढ़ाए गए, एक उनकी दाहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर।

उधर से आने-जानेवाले लोग यीशु की निन्दा कर रहे थे और सिर हिलाकर कहते थे, 'हे मन्दिर को गिरानेवाले और तीन दिन में उसको बनानेवाले, अपने को बचा। यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस से उतर आ !'

इसी प्रकार महापुरोहित, शास्त्री और धर्मवृद्ध उपहास करते हुए कह रहे थे, 'इसने दूसरों को बचाया, पर अपने को नहीं बचा सका। यह तो इस्राएल का राजा है, अब क्रूस से उतरे तो हम भी इस पर विश्वास करें। यह परमेश्वर पर निर्भर रहा, यदि परमेश्वर इसे चाहता है तो अब इसे छुड़ाए। क्योंकि इसने कहा था, "मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।"'

इसी प्रकार डाकू भी, जो यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए थे, यीशु को बुरा-भला कह रहे थे।

मृत्यु

दोपहर से लेकर तीन बजे तक समस्त देश में अन्धकार छाया रहा। लगभग तीन बजे यीशु ने उच्च स्वर से पुकारा, 'एली, एली, लमा सबक्तनी ?' अर्थात् 'हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया ?'

यह सुनकर वहां खड़े लोगों में से कुछ बोले, 'यह एलियाह को पुकार रहा है।' उनमें से एक व्यक्ति ने तुरन्त दौड़कर स्पंज लिया और उसको सिरके में डुबोया। तब सरकण्डे पर रखकर उन्हें पीने को दिया।

दूसरों ने कहा, 'ठहरो, देखें एलियाह उसे बचाने आते हैं या नहीं।'

तब यीशु ने फिर उच्च स्वर से चिल्लाकर अपना प्राण त्याग दिया। और देखो, मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया। पृथ्वी कांप उठी। चट्टानें तड़क गईं। कबरें खुल गईं एवं चिर निद्रा में पड़े अनेक भक्तों के मृत शरीर जीवित हो उठे, जो यीशु के जीवित होने के पश्चात् कबरों से निकलकर पवित्र नगर में गए और अनेक लोगों को दिखाई दिए।

रोमन सैनिक-अधिकारी और उसके सैनिक जो यीशु पर पहरा दे रहे थे, भूकम्प एवं इन घटनाओं को देखकर अत्यन्त भयभीत हो उठे और बोले, 'निश्चय, यह परमेश्वर-पुत्र था।'

अनेक स्त्रियां भी वहां थी, जो दूर से देख रही थीं। ये गलील प्रदेश से यीशु के पीछे आई थीं और उनकी सेवा करती थीं। इनमें मरियम मगदलीनी, याकूब और यूसुफ की माता मरियम, और जबदी के पुत्रों की माता थी।

कबर में रखा जाना

सन्ध्या होने पर अरिमतियाह का निवासी यूसुफ नामक एक धनवान् व्यक्ति आया। वह स्वयं यीशु का शिष्य था। उसने पिलातुस के पास जाकर यीशु का शरीर* मांगा। पिलातुस ने उसे शरीर* देने का आदेश दे दिया।

यूसुफ ने शरीर को लेकर स्वच्छ मलमल की चादर में उसे लपेटा, और अपनी नई कबर में रखा जो उसने चट्टान में खुदवाई थी, तथा कबर के द्वार पर भारी पत्थर लुढ़का कर चला गया।

मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहां कबर के सम्मुख बैठी थी।

कबर पर पहरा

दूसरे दिन, अर्थात् विश्राम-दिवस पर** महापुरोहितों और फरीसियों ने पिलातुस के सम्मुख एकत्र हो उससे कहा, 'महाराज ! हमें स्मरण है कि उस धूर्त ने, जब वह जीवित था कहा था कि मैं तीन दिन पश्चात् जीवित हो जाऊंगा। अतएव आज्ञा दीजिए कि तीसरे दिन तक कबर की रक्षा की जाए। कहीं ऐसा न हो कि उसके शिष्य उसे चुरा ले जाएं और लोगों से कहने लगें, "वह मृतकों में से जीवित हो उठे।" तब यह अन्तिम धोखा पहिले से अधिक बुरा होगा।'

पिलातुस ने कहा, 'तुम्हारे पास पहरेदार हैं। जाओ और जैसा उचित समझो रक्षा करो।'

तब वे गए और उन्होंने कबर के मुंह पर मुहर लगा दी तथा वहां पहरेदारों को बैठाकर कबर को सुरक्षित कर दिया।

यीशु ने आपके लिए जो-जो दुःख सहे, उन पर विचार कीजिए, और

*अथवा, 'शव'
** 'विश्राम दिवस की तैयारी के दिन के बाद का दिन'

उनको अपने शब्दों में लिखिए। यह बताइए कि यीशु आपसे कितना अधिक प्रेम करते थे।

३५. यीशु का पुनरुत्थान

(मत्ती २८)

मृत्यु यीशु पर प्रबल न हो सकी। वह तीसरे दिन पुनः जीवित हो गए। क्योंकि यीशु पुनर्जीवित हुए थे इसलिए हम-सब भी जो उनको अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करते है, पुनर्जीवित होंगे। यह हमारा विश्वास है, यही हमारी आशा है।

विश्राम-दिवस के पश्चात् सप्ताह के प्रथम दिन, उषा-वेला में, मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र देखने आईं। और देखो, बड़ा भूकम्प हुआ, तथा प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा। उसने आकर पत्थर को लुढ़का दिया और उसपर बैठ गया।

उसका रूप बिजली के सदृश था और उसके वस्त्र बर्फ के सदृश सफेद थे। उसके भय से पहरेदार कांपने लगे और मृतप्राय हो गए।

दूत ने स्त्रियों से कहा, 'डरो मत, मैं जानता हूं कि तुम क्रूसित यीशु को ढूंढ़ रही हो। वह यहां नहीं है, किन्तु अपने वचन के अनुसार जीवित हो उठे हैं। आओ, और इस स्थान को देखो जहां वह लिटाए गए थे। फिर शीघ्र जाकर उनके शिष्यों से कहो कि वह मृतकों में से जीवित हो उठे हैं, और तुमसे पहले गलील प्रदेश को जा रहे हैं। वहां तुम लोग उनके दर्शन करोगे। देखो, मैंने तुमसे कह दिया।'

वे तत्काल कब्र से चल दीं, और भय और बड़े आनन्द के साथ उनके शिष्यों को समाचार देने दौड़ीं।

और देखो, यीशु उनसे मिले और बोले, 'सुखी हो।

वे उनके निकट गईं और उनके चरण पकड़कर उनकी वन्दना की।

यीशु ने उनसे कहा, 'डरो मत। जाओ। मेरे भाइयों से कहो कि गलील प्रदेश जाएं। वहां वे मुझे देखेंगे।'

पहरेदारों की सूचना

वे मार्ग में ही थीं कि कई पहरेदार नगर में गए और उन्होंने महापुरोहितों को सब घटनाएं सुना दीं। महापुरोहितों ने धर्मवृद्धों को एकत्र कर मन्त्रणा की और सैनिकों को बहुत धन देकर कहा, 'लोगों से कहना कि जब हम रात को सोए हुए थे तब यीशु के शिष्य आए और उसे चुराकर ले गए। यदि राज्यपाल के कान तक यह बात पहुंचेगी तो हम उन्हें समझा लेंगे और तुम्हारे लिए कोई चिन्ता की बात न होगी।'

पहरेदारों ने धन ले लिया और वैसा ही किया जैसा उन्हें सिखाया गया था।

गलील प्रदेश में प्रेरितों को दर्शन और अन्तिम सन्देश

ग्यारह शिष्य गलील प्रदेश में उस पहाड़ पर गए जहां जाने का यीशु ने उन्हें आदेश दिया था। यीशु को देखकर शिष्यों ने उनकी वन्दना की, परन्तु कुछ को सन्देह हुआ। तब यीशु ने उनके पास आकर कहा, 'स्वर्ग और पृथ्वी का समस्त अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाओ और सब लोगों को मेरा शिष्य बनाओ। उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और जिन बातों की मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, उन सबका पालन करना

उन्हें सिखाओ, और देखो युगान्त तक मैं सदा तुम्हारे साथ हूं।'

१ स्त्रियों को कबर पर कौन मिला ?
२ यीशु के पुनरुत्थान की सच्चाई को छिपाने के लिए यहूदी पुरोहितों ने क्या भूठ बोला ?
३ यीशु ने अपने शिष्यों को कौन-सा आदेश दिया ?

३६. यीशु के पुनरुत्थान के प्रमाण

(लूका २४)

सन्त लूका के द्वारा लिखे गए शुभ-सन्देश में यीशु के पुनरुत्थान के विषय में अनेक प्रमाण मिलते हैं। आप प्रस्तुत अध्याय में उनको पढ़िए।

सप्ताह के पहले दिन पौ फटते ही वे स्त्रियां उन सुगन्धित द्रव्यों को, जो उन्होंने तैयार किए थे, लेकर कबर पर आईं। उन्होंने पत्थर को कबर से लुढ़का हुआ पाया, किन्तु भीतर जाने पर उन्हें प्रभु यीशु का शरीर नहीं मिला।

जब वे इस बात से घबरा रही थीं तब दो पुरुष उनके समीप आ खड़े हुए। वे चमचमाते वस्त्र पहिने हुए थे। वे डर गईं और भूमि की ओर देखने लगीं।

पुरुषों ने उनसे कहा, 'तुम जीवित व्यक्ति को मृतकों में क्यों ढूंढ रही हो? वह यहां नहीं हैं। परन्तु जीवित हो उठे हैं। स्मरण करो कि उन्होंने गलील में रहते हुए तुमसे कहा था कि मानव-पुत्र का पापियों के हाथ सौंपा जाना, क्रूस पर चढ़ाया जाना और तीसरे दिन जी उठना अनिवार्य है।'

अब उन्हें यीशु के शब्द स्मरण हुए, और वे कबर से लौट पड़ीं तथा ग्यारह प्रेरितों को तथा अन्य सबको ये सारी बातें कह सुनाईं।

जिन्होंने प्रेरितों से ये बातें कहीं, वे मरियम मग्दलीनी, योअन्ना, याकूब की माता मरियम तथा उनके साथ की अन्य स्त्रियां थीं।

परन्तु उन लोगों को ये शब्द कोरे गप्प प्रतीत हुए और उन्होंने उन स्त्रियों का विश्वास नहीं किया।

फिर भी पतरस उठा और दौड़कर कबर तक गया। जब उसने झुककर देखा तो कबर में केवल कफन दिखाई दिया। वह इस घटना पर आश्चर्य करता हुआ लौट आया।*

इम्माऊस के मार्ग में शिष्यों को दर्शन

उसी दिन उनमें से दो व्यक्ति इम्माऊस नामक गांव को जा रहे थे, जो यरूशलम से लगभग ग्यारह किलोमीटर** दूर है। वे इन सब बीती घटनाओं के सम्बन्ध में आपस में बातचीत कर रहे थे।

जब वे बातचीत और विचार-विमर्श कर रहे थे, तब स्वयं यीशु उनके समीप आए और साथ-साथ चलने लगे। परन्तु उन लोगों की आंखें ऐसी बन्द थीं कि वे यीशु को न पहचान सके। यीशु ने पूछा, *'तुम चलते-चलते आपस में किस विषय पर बातचीत कर रहे हो?'*

इस पर वे उदास हो गए और रुक गए। तब उनमें से एक, जिसका नाम क्लियुपास था, बोला, 'क्या यरूशलम में केवल आप ऐसे प्रवासी हैं जिसको नहीं मालूम कि इन दिनों वहां क्या हुआ है?'

यीशु ने पूछा, 'क्या हुआ है ?'

वे बोले, 'नासरत-निवासी यीशु को, जो परमेश्वर और समस्त जनता की दृष्टि में कर्म एवं वचन से समर्थ नबी थे, हमारे महापुरोहितों और धर्ममहासभा के अधिकारियों ने प्राण-दण्ड के लिए सौंपा और क्रूस पर चढ़ा दिया। हमें तो आशा थी कि यही हैं वह व्यक्ति जो इस्राएल को मुक्त करेंगे। इन सब बातों के अतिरिक्त एक बात और इस घटना को हुए तीसरा दिन है और अब हम लोगों में से कुछ स्त्रियों ने, जो हमारे ही साथ की है, हमें आश्चर्य में डाल दिया है। वे पौ फटते ही कब्र पर गईं और वहां यीशु का शरीर नहीं पाया। वे आकर बोलीं कि हमें स्वर्गदूत दिखाई दिए, जो कहते थे कि यीशु जीवित है। इस पर हमारे कुछ साथी कब्र पर गए, और जैसा स्त्रियों ने कहा था वैसा ही पाया, परन्तु उन्होंने यीशु को नहीं देखा।'

तब यीशु ने दोनों से कहा, 'निर्बुद्धियो ! तुम कितने मन्दमति हो ! नबियों के सब कथनों पर विश्वास क्यों नहीं करते ? क्या यह अनिवार्य नहीं था कि मसीह ये दुःख उठाता और अपनी महिमा में प्रवेश करता ?' तब यीशु ने मूसा एवं समस्त नबियों से आरम्भ कर, सम्पूर्ण धर्मशास्त्र में अपने विषय में लिखी बातों की व्याख्या उनसे की।

इतने में वे उस गांव के निकट पहुंचे जहां उन्हें जाना था, और यीशु ने ऐसा दिखाया कि वह आगे जाना चाहते हैं। इस पर उन्होंने यीशु से आग्रह किया, 'हमारे साथ रहिए, क्योंकि सन्ध्या हो रही है और दिन अब ढल चुका है।' अतः यीशु उनके साथ ठहरने के लिए घर के भीतर गए।

जब यीशु उनके साथ भोजन करने बैठे तब यीशु ने रोटी लेकर आशीष मांगी और उसे तोड़कर उन्हें देने लगे। तब उनकी आंखें खुल गईं और उन्होंने यीशु को पहचान लिया। पर यीशु उनकी दृष्टि से ओझल हो गए।

इस पर वे आपस में कहने लगे, 'जब वह मार्ग में हमारे साथ बातचीत कर रहे थे और हमें धर्मशास्त्र समझा रहे थे, तब क्या हमारे हृदय में तीव्र इच्छा नहीं जाग उठी थी ?'

वे उसी समय उठे और यरूशलम को लौट पड़े। उन्होंने ग्यारह प्रेरितों एवं यीशु के साथियों को एकत्र पाया, जो कह रहे थे, 'प्रभु सचमुच जीवित हो उठे हैं और शिमौन पतरस को दिखाई दिए हैं।'

तब उन्होंने भी मार्ग में हुई घटनाएं बतलाई और कहा, 'हमने यीशु को रोटी तोड़ते समय पहचाना।'

यीशु का शिष्यों को दर्शन देना

वे लोग ये बातें कर ही रहे थे कि स्वयं यीशु उनके बीच आ खड़े हुए और उनसे कहा, 'तुम्हें शान्ति मिले।'

वे सहम गए और भयभीत होकर सोचने लगे कि वे कोई प्रेत देख रहे हैं।

यीशु ने उनसे कहा, 'तुम क्यों घबराते हो ? तुम्हारे मन में सन्देह क्यों उठते हैं ? मेरे हाथ और मेरे पैर देखो, कि मैं ही हूं। मुझे टटोलकर देखो; क्योंकि प्रेत के मांस और हड्डियां नहीं होतीं जैसी तुम मुझमें देख रहे हो।' यह कहकर उन्होंने उनको अपने हाथ-पैर दिखाए।*

शिष्यों को जब आनन्द के मारे विश्वास नहीं हुआ और वे आश्चर्य में डूबे हुए थे तब यीशु ने कहा, 'क्या तुम्हारे पास यहां कुछ भोजन है ?'

उन्होंने यीशु को भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया। यीशु ने उसे लेकर उनके सम्मुख खाया।

फिर यीशु ने कहा, 'जब मैं तुम्हारे साथ था तब मैंने तुमसे कहा था कि मूसा की व्यवस्था, नबियों की पुस्तकों और भजन-संहिता में जो कुछ मेरे सम्बन्ध में लिखा है, वह सब पूरा होना अनिवार्य है।'

*कुछ प्रतियों में यह पद नहीं पाया जाता

तब यीशु ने शिष्यों की बुद्धि खोल दी कि वे धर्मशास्त्र को समझ सकें, और उनसे कहा, 'धर्मशास्त्र में यह लिखा है कि मसीह दुःख उठाएगा, तीसरे दिन मृतकों में से जीवित हो उठेगा और यरूशलेम से आरम्भ कर सभी जातियों को उसके नाम से हृदय-परिवर्तन और पाप-क्षमा का शुभ-सन्देश सुनाया जाएगा। तुम इन बातों के गवाह हो। देखो, जिसकी इन की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, वह मैं तुम पर भेजूंगा। पर जब तक तुम्हें ऊपर से सामर्थ्य न प्राप्त हो, तुम नगर में ठहरे रहो।

यीशु का स्वर्गारोहण

फिर यीशु उन्हें बैतनियाह गाँव तक ले गए और उन्होंने अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीर्वाद दिया। आशीर्वाद देते हुए वह उनसे अलग हो गए, और स्वर्ग में उठा लिए गए। शिष्यों ने उनकी वन्दना की और वे अत्यन्त आनन्दपूर्वक यरूशलेम लौट आए, और सदा मन्दिर में उपस्थित रहकर परमेश्वर की स्तुति करने लगे।

यीशु के दर्शन के विषय में बताइए।

३७. सन्त यूहन्ना के प्रमाण

(यूहन्ना २० ११–२१ २५)

सन्त यूहन्ना ने भी यीशु के पुनरुत्थान के विषय में विस्तार से लिखा है। आप प्रस्तुत अध्याय में स्वयं पढ़िए।

मरियम मगदलीनी को दर्शन

पर मरियम कबर के पास बाहर रोती हुई खड़ी रही। रोते हुए उसने कबर में झाँका तो दो स्वर्गदूतों को सफेद वस्त्र पहने और उस स्थान पर, जहाँ पहले यीशु का शरीर रखा था, बैठे देखा—एक सिरहाने और दूसरा पैताने।

स्वर्गदूत बोले, 'महिला, तुम क्यों रोती हो?'

मरियम ने उत्तर दिया, 'वे मेरे प्रभु को उठाकर ले गए और मैं नहीं जानती कि उन्हें कहाँ रखा है?' यह कहकर वह पीछे मुड़ी और यीशु को खड़े हुए देखा, पर न पहचाना कि वह यीशु है।

यीशु ने उससे कहा, 'बहिन*, तुम क्यों रो रही हो? तुम किसे ढूंढ रही हो?'

वह यीशु को माली समझकर बोली, 'तुम यदि उन्हें ले गए हो तो मुझे बता दो कि उन्हें कहाँ रखा है, ताकि उस स्थान पर जाकर उनको उठा ले आऊंगी।'

यीशु ने उससे कहा, 'मरियम!'

वह मुड़ी और इब्रानी में बोली, 'रब्बूनी' (अर्थात् मेरे गुरु)!

यीशु ने कहा, 'मुझे मत पकड़ो, क्योंकि मैं अभी पिता के पास ऊपर नहीं गया हूं। मेरे भाइयों के पास जाओ और उनसे कहो, कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा हूं।'

मरियम मगदलीनी ने आकर शिष्यों से कहा, 'मैंने प्रभु को देखा है, और उन्होंने मुझसे ये बातें कही हैं।'

प्रेरितों को दर्शन

उसी दिन अर्थात् सप्ताह के प्रथम दिन, सायंकाल को जब शिष्य यहूदी धर्मगुरुओं के

* 'स्त्री'

भय के कारण घर के द्वार बन्द कर भीतर बैठे हुए थे, तब यीशु आए और उनके बीच खड़े होकर बोले, 'तुम्हें शान्ति मिले।' यह कहकर यीशु ने अपने हाथ और अपनी पसली उन्हें दिखाई।

शिष्य यीशु को देखकर आनन्द-विभोर हो गए।

यीशु ने उनसे फिर कहा, 'तुम्हें शान्ति मिले। जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं तुम्हें भेजता हूं। यह कहकर उन्होंने उन पर श्वास फूंका और कहा, 'पवित्र आत्मा लो। जिनके पाप तुम क्षमा करोगे वे क्षमा किए गए और जिनके पाप तुम क्षमा नहीं करोगे, वे क्षमा नहीं हुए।*

थोमा को दर्शन

जब यीशु आए तो बारह में से एक अर्थात् थोमा, जो दिदुमुस भी कहलाता है, शिष्यों के साथ नहीं था। अन्य शिष्यों ने उससे कहा, 'हमने प्रभु को देखा है।' वह बोला, 'जब तक मैं उनके हाथों में कीलों के चिह्न न देखूं, और कीलों के स्थान में अपनी अंगुली न डालूं और उनकी पसली में अपना हाथ न डालूं, तब तक मैं विश्वास नहीं करूंगा।'

आठ दिन के पश्चात् यीशु के शिष्य फिर घर में थे, और थोमा उनके साथ था। द्वार बन्द थे फिर भी यीशु आए और उनके बीच खड़े होकर बोले, 'तुमको शान्ति मिले।'

तब उन्होंने थोमा से कहा, 'अपनी अंगुली यहां लाओ और मेरे हाथों को देखो, अपना हाथ लाओ और मेरी पसली में डालो, और अविश्वासी नहीं वरन् विश्वासी बनो।'

थोमा बोल उठा 'मेरे प्रभु, मेरे परमेश्वर!'

यीशु ने उससे कहा, 'क्या तुमने इसलिए विश्वास किया है कि मुझे देखा? धन्य हैं वे जिन्होंने मुझे कभी नहीं देखा तो भी विश्वास करते हैं।'

शुभ-सन्देश लिखने का प्रयोजन

यीशु ने अनेक अन्य आश्चर्यपूर्ण चिह्न अपने शिष्यों के सम्मुख दिखाए जिनका विवरण इस पुस्तक में नहीं लिखा है। परन्तु जिन चिह्नों का विवरण लिखा गया है, वह इसलिए लिखा गया है कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही मसीह और परमेश्वर के पुत्र हैं, और अपने इस विश्वास के द्वारा उनके नाम से जीवन प्राप्त करो।

समुद्र-तट पर शिष्यों को दर्शन

इसके पश्चात् यीशु ने तिबिरियास झील के तट पर पुनः अपने आपको शिष्यों पर प्रकट किया। उन्होंने स्वयं को इस प्रकार प्रकट किया

शिमौन पतरस, थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, नतनएल जो गलील के काना नगर का निवासी था, जब्दी के दो पुत्र, तथा अन्य दो शिष्य एकत्र थे। शिमौन पतरस ने उनसे कहा, 'मैं मछली पकड़ने जाता हूं।'

वे बोले, 'हम भी तुम्हारे साथ चलते हैं।'

वे चल पड़े और नौका पर चढ़े। पर वे उस रात कुछ न पकड़ सके।

प्रातःकाल हो ही रहा था, कि यीशु झील के तट पर आ खड़े हुए, परन्तु शिष्यों ने नहीं पहचाना कि वह यीशु हैं।

यीशु ने उनसे कहा, 'मित्रो** क्या तुम्हारे पास खाने को कुछ है?'

उन्होंने उत्तर दिया, 'नहीं।'

वह बोले, 'नौका की दाहिनी ओर जाल डालो तो पाओगे।'

उन्होंने जाल डाला और जाल में इतनी मछलियां फंस गईं कि उनकी अधिकता के कारण वे उसे खींच न सके।

*अक्षरश 'जिनके पाप तुम रखो, वे रखे गए हैं।' **मूल में, 'बालको'

तब वह शिष्य जिससे यीशु स्नेह करते थे पतरस से बोला, 'यह तो प्रभु है।'

जब शिमौन पतरस ने सुना कि प्रभु है तब उसने कमर में अपना अंगरखा कस लिया (वह वस्त्र नहीं पहिने हुआ था), और वह झील में कूद पड़ा। परन्तु अन्य शिष्य नाव पर मछलियों से भरे जाल को खींचते हुए नाव में आए क्योंकि वे तट से अधिक दूर नहीं, केवल सौ मीटर दूर थे।

जब वे झील के तट पर आए तब उन्होंने कोयले की आग पर रखी हुई मछली और रोटी देखी।

यीशु ने उनसे कहा, 'जो मछलियां तुमने अभी पकड़ी हैं, उनमें से कुछ लाओ।'

शिमौन पतरस ने नौका पर चढ़कर एक सौ तिरपन बड़ी-बड़ी मछलियों से भरा जाल तट पर खींचा, और इतनी मछलियां होने पर भी जाल न फटा।

यीशु ने कहा, 'आओ, भोजन करो।'

शिष्यों में से किसी को साहस न हुआ कि उनसे पूछें, 'आप कौन हैं?' क्योंकि वे जानते थे कि वह प्रभु हैं।

यीशु आए और रोटी लेकर उन्हें दी और वैसे ही मछली भी।

मृतकों में से जी उठने के पश्चात् यह तीसरी बार यीशु ने शिष्यों को दर्शन दिया।

पतरस को अन्तिम आदेश

भोजन के पश्चात् यीशु ने शिमौन पतरस से कहा, 'शिमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तुम मुझे इनसे अधिक प्रेम करते हो?'

वह बोला, 'हां प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूं।' उन्होंने कहा, 'मेरे मेमनों को चराओ।'

उन्होंने दूसरी बार फिर कहा, 'शिमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो?' उसने उत्तर दिया, 'हां प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूं।' वह बोले, 'मेरी भेड़ों की रखवाली करो।'

उन्होंने तीसरी बार कहा, 'शिमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो?'

पतरस दुःखी हुआ कि यीशु ने तीसरी बार पूछा कि क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो। वह बोला, 'प्रभु, आप सब कुछ जानते हैं। आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूं।'

यीशु ने कहा, 'मेरी भेड़ों को चराओ। मैं तुमसे सच-सच कहता हूं जब तुम युवा थे तब कमर बांधकर जहां चाहते, जाते थे, पर जब तुम वृद्ध होगे तब अपने हाथ फैलाओगे और कोई दूसरा, तुम्हारी कमर बांधकर, जहां तुम न चाहोगे, वहां तुम्हें ले जाएगा।' (ऐसा उन्होंने यह सूचित करने के लिए कहा कि पतरस किस प्रकार की मृत्यु से परमेश्वर की महिमा प्रकट करेगा।) इतना कहकर यीशु बोले, 'तुम मेरे पीछे आओ।'

यीशु और उनका प्रिय शिष्य

पतरस ने मुड़कर उस शिष्य को पीछे आते हुए देखा, जिससे यीशु स्नेह करते थे, और जिसने भोजन करते समय यीशु की छाती की ओर झुककर पूछा था, 'प्रभु, वह कौन है जो आपको पकड़वाएगा?' उसी शिष्य को आते देखकर पतरस यीशु से बोला, 'प्रभु, इसका क्या होगा?' यीशु ने कहा, 'यदि मेरी इच्छा हो कि वह मेरे आने तक रहे, तो इससे तुम्हें क्या? तुम मेरे पीछे आओ।'

यह बात भाइयों में फैल गई कि वह शिष्य कभी नहीं मरेगा। परन्तु यीशु ने यह नहीं कहा था कि वह नहीं मरेगा, वरन् यह कि 'यदि मेरी इच्छा हो कि वह मेरे आने तक रहे, तुम्हें क्या?'

उपसंहार

यही वह शिष्य है, जो उन बातों के विषय में साक्षी दे रहा है, और जिसने इन बातों को लिखा है, और हम जानते है कि उसकी साक्षी सच है।

और भी अनेक कार्य है जो यीशु ने किए। यदि उनमें से प्रत्येक के बारे में लिखा जाता तो मैं मानता हू कि जो पुस्तके लिखी जाती, वे ससार-भर में नहीं समाती।

१. क्या यीशु के शिष्य यह जानते थे कि उनके गुरु यीशु मृतकों में से पुन जीवित हो जाएंगे ?
२ जब प्रेरित थोमा को विश्वास हो गया कि यीशु पुनर्जीवित हो गए तब यीशु ने क्या कहा ? यीशु के कथन का क्या अर्थ है ? (पढ़िए, यूहन्ना २० २८–२९)

दूसरे खण्ड के ये अन्तिम अध्याय 'प्रेरितों के कार्य' नामक पुस्तक में लिए गए है। यीशु मसीह पुनर्जीवित हो गए, वह स्वर्ग में चढ़ गए, और वहा से वह आनेवाले है।

स्वर्ग में जाने के पूर्व यीशु ने अपने अनुयायियों को आज्ञा दी कि वे उद्धार का शुभ-सन्देश ससार के कोने-कोने में सुनाएं। जो स्त्री-पुरुष, जवान-बूढ़े, लड़के-लड़कियां यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करे, वे परस्पर प्रेम और सहभागिता का सामूहिक जीवन बिताए, और यों पृथ्वी पर यीशु की कलीसिया, मण्डली अथवा चर्च का निर्माण करे।

मसीह की कलीसिया प्रभु यीशु की दृष्टि में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और इस लिए मसीह के अनुयायियो के लिए भी। यीशु ने सलीब पर अपनी बलि इसलिए दी थी कि भटके हुए लोग, पाप-मार्ग पर जानेवाले मनुष्य यीशु की ओर लौटे, और आपस में मिलकर कलीसिया के रूप में सामूहिक आराधना करे।

यदि आप यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करते है, तो यह अनिवार्य और आवश्यक है कि आप मसीह के अनुयायियो के साथ कलीसिया में सम्मिलित हों, और यों सामूहिक आराधना में भाग ले।

'प्रेरितों के कार्य' पुस्तक में मसीह की कलीसिया-चर्च की स्थापना का ऐतिहासिक विवरण है। कलीसिया के आरम्भ में मसीहियों पर बहुत अत्याचार हुआ था। फिर भी कलीसिया बहुत शीघ्र ससार के कोने-कोने में स्थापित हो गई।

३८. मसीही कलीसिया का जन्म

(प्रेरितों के कार्य १, २)

यहूदा इस्करियोती अपने गुरु के साथ विश्वासघात करने के बाद बहुत पछताया, और उसने आत्महत्या कर ली। अब कुल ग्यारह शिष्य रह गए। जब यीशु का स्वर्गारोहण हुआ तब उनके साथ पहाड पर ये ही ग्यारह शिष्य थे। यीशु ने उन्हे आदेश दिया कि वे यरूशलेम नगर को लौट जाएं, और वहा वे तब तक रहे जब तक यीशु ससार के कोने-कोने में शुभ [illegible]

अपने पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से न भर दे। आगे के अध्यायों में आप पढ़ेंगे कि शिष्य पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से लैस होकर सब मनुष्यों को उद्धार का शुभ-सन्देश सुनाने के लिए चल पड़ते हैं।

प्रस्तावना

आदरणीय थियुफिलुस, जब तक यीशु अपने मनोनीत प्रेरितों को पवित्र आत्मा* द्वारा आज्ञा देने के पश्चात् ऊपर न उठा लिए गए, वह कार्य करते और शिक्षा देते रहे। मैंने अपने ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में यीशु के इन्हीं कार्यों और शिक्षाओं का वर्णन किया है। यीशु ने अपनी मृत्यु के पश्चात् अनेक अकाट्य प्रमाणों से अपने आपको प्रेरितों के सम्मुख जीवित प्रदर्शित किया। वह चालीस दिन तक उन्हें दर्शन देते तथा परमेश्वर के राज्य के विषय में उन्हें सिखाते रहे।

प्रेरितों के साथ भोजन करते समय** यीशु ने उन्हें यह आदेश दिया, 'यरूशलेम से बाहर न जाना, वरन् मेरे पिता की उस प्रतिज्ञा के पूर्ण होने की प्रतीक्षा करना, जिसकी चर्चा तुमने मुझसे सुनी है। यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया, परन्तु थोड़े ही दिन पश्चात् तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।'

यीशु का स्वर्गारोहण

जब प्रेरित एकत्र हुए तब उन्होंने यीशु से पूछा, 'प्रभु, क्या आप इस्राएल का राज्य इसी समय पुन: स्थापित करेंगे?'

यीशु ने कहा, 'यह तुम्हारा काम नहीं कि उन निश्चित समय अथवा कालों को जानो जिन्हें मेरे पिता ने अपने अधिकार में रखा है। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य प्राप्त करोगे और यरूशलेम में, समस्त यहूदा प्रदेश में, सामरी प्रदेश में और पृथ्वी के सीमान्त तक मेरे साक्षी होगे।'

इतना कहने के पश्चात् यीशु उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिए गए और बादल ने उन्हें उनकी आंखों से ओझल कर दिया।

जब यीशु के स्वर्गारोहण के समय वे लोग आकाश की ओर टकटकी लगाकर देख रहे थे तो एकाएक उज्ज्वल वस्त्र पहिने हुए दो पुरुष उनके पास आ खड़े हुए। वे उनसे बोले, 'गलीली पुरुषो, तुम खड़े-खड़े आकाश की ओर क्यों देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग में उठा लिए गए हैं, इसी प्रकार आएंगे, जैसे तुमने उनको स्वर्ग में जाते हुए देखा है।'

बारहवें प्रेरित की नियुक्ति

तब प्रेरित जैतून पहाड़ से, यरूशलेम लौट आए। जैतून पहाड़ यरूशलेम से लगभग एक किलोमीटर† दूर है।

वे नगर में पहुंचे और उपरले कक्ष में गए जहां वे ठहरे हुए थे। उनके नाम ये हैं—पतरस, यूहन्ना, याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, थोमा, बरतुल्मय, मत्ती, हलफई-पुत्र याकूब, सिमोन जेलोतेस और याकूब-पुत्र यहूदा। ये सब एक-चित्त प्रार्थना में लगे रहे। उनके साथ कई स्त्रियां और यीशु की माता मरियम तथा यीशु के भाई भी प्रार्थना में सम्मिलित थे।

इन्हीं दिनों पतरस ने भाइयों के बीच, अर्थात् कोई एक सौ बीस व्यक्तियों के समुदाय में खड़े होकर कहा, 'भाइयो, यह अनिवार्य था कि धर्मशास्त्र की भविष्यवाणी पूरी हो जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुंह से यहूदा इस्करियोती के विषय में कही थी। यहूदा यीशु को

*अथवा 'पवित्र आत्मा द्वारा चुने हुए प्रेरितों को'
**शब्दशः 'के मिलकर'। †मूल में 'विश्राम दिवस पर निर्धारित की गई निश्चित दूरी'

पकड़नेवालों का मार्ग-दर्शक था। उसकी गणना हमारे साथ होती थी और वह इस सेवाकार्य में हमारा साथी था। उसने अपने अधर्म के धन से एक खेत मोल लिया। वह मुँह के बल गिरा। उसका पेट फट गया और उसकी आंतें बाहर निकल पड़ीं। यरूशलम के सब निवासी यह जान गए। इस कारण उन्होंने अपनी भाषा में उस खेत का नाम "हकलदमा" अर्थात् रक्त का खेत रखा है। भजन-संहिता का यह लेख भी है

"उसका निवास-स्थान निर्जन हो जाए,
उसमें बसनेवाला कोई न बचे,"

और

"उसका पद कोई दूसरा व्यक्ति ग्रहण करे।"

'इसलिए यह उचित है कि एक मनुष्य हमारे साथ पुनरुत्थान का साक्षी हो और वह उन मनुष्यों में से हो जो यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर यीशु के स्वर्गारोहण के दिन तक, जिन दिनों प्रभु हमारे बीच आते-जाते रहे, सदा हमारे साथ रहे हैं।

इसपर उन्होंने दो व्यक्तियों को खड़ा किया एक यूसुफ, जो बरसबा कहलाता था और जिसका उपनाम यूस्तुस था, और दूसरा मत्तियाह।

तब उन्होंने प्रार्थना की, 'हे अन्तर्यामी प्रभु, हम पर यह प्रकट कर कि इन दोनों में से तूने किसे चुना है ताकि वह उस सेवा एवं प्रेरित-पद को ग्रहण करे, जिससे गिरकर यहूदा अपने स्थान को चला गया।'

तब उन्होंने चुनाव करने के लिए चिट्ठियां डालीं। चिट्ठी मत्तियाह के नाम पर निकली, और वह ग्यारह प्रेरितों के साथ सम्मिलित किया गया।

पवित्र आत्मा का अवतरण

पिन्तेकुस्त-पर्व का दिन* आया। उस दिन यीशु के अनुयायी एक स्थान पर एकत्र थे। तब एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की-सी सनसनाहट की आवाज हुई, और उससे सारा घर, जहां वे बैठे थे, गूंज गया। उन्हें आग के सदृश जीभें दीख पड़ीं जो विभाजित होकर उनमें से प्रत्येक पर आ ठहरीं। वे सब पवित्र आत्मा से भर गए और पवित्र आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी। अतः वे विभिन्न भाषाएं बोलने लगे।

विश्व के प्रत्येक देश के भक्त यहूदी यरूशलम में रहते थे पारथी, मादी, एलामी और मेसोपोटामिया, यहूदिया कप्पदूकिया, पोन्तुस, आसिया, फ्रूगिया, पम्फूलिया, मिस्र, कुरेन के निकटवर्ती लीबिया देश के निवासी, रोम के प्रवासी, यहूदी तथा नवयहूदी** क्रेत और अरब के निवासी। जब यह आवाज हुई तब भीड़ लग गई। लोग घबरा गए, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति ने उनको अपनी ही भाषा में बोलते सुना। वे सब चकित रह गए और विस्मित हो कहने लगे, 'देखो, ये जो बोल रहे हैं, क्या सब गलीली नहीं हैं? तो फिर हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी भाषा कैसे सुन रहा है। हम अपनी-अपनी भाषा में इनसे परमेश्वर के महान कार्यों की चर्चा सुन रहे हैं।'

वे सब चकित रह गए और घबराकर एक-दूसरे से कहने लगे, 'इसका क्या अर्थ है?'

परन्तु दूसरों ने उपहास करते हुए कहा, 'ये तो शराब पीकर मतवाले हो रहे हैं।'

पतरस का भाषण

तब पतरस 'ग्यारह' प्रेरितों के साथ खड़े हुए। उन्होंने लोगों को उच्च-स्वर में सम्बोधित कर इस प्रकार कहा, 'यहूदी भाइयो और सब यरूशलम निवासियो, मेरे शब्दों को ध्यान से सुनो। यह जान लो, कि ये लोग नशे में नहीं हैं जैसा तुम मान रहे हो, क्योंकि अभी तो सबेरे के नौ ही बजे हैं। परन्तु यह वह बात है जो नबी योएल ने कही थी

*अर्थात् 'फसह के दिन के पश्चात् पचासवां दिन'। **यहूदी धर्म को माननेवाले अन्य जातियों के लोग

"परमेश्वर का वचन है, अन्तिम दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों
पर उण्डेलूंगा,
तब तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियां नबूवत करेंगी,
तुम्हारे युवक दिव्य दर्शन पाएंगे,
और तुम्हारे बूढ़े लोग स्वप्न-द्रष्टा होंगे।
मैं अपने सेवक और अपनी सेविकाओं पर,
उन दिनों अपना आत्मा उण्डेलूंगा,
और वे भविष्यवाणी करेंगे।
मैं ऊपर आकाश में अद्भुत कार्य
और नीचे पृथ्वी पर अद्भुत चिह्न दिखाऊंगा—
अर्थात् रक्त, अग्नि एवं धुएं के बादल।
प्रभु का महान और महत्वपूर्ण दिवस आने से पूर्व
सूर्य अन्धकारमय हो जाएगा
और चन्द्रमा रक्तमय।
किन्तु जो मनुष्य प्रभु का नाम लेगा, वह बचाया जाएगा।"

'इस्राएली भाइयो, यह बात सुनो : नासरत-निवासी यीशु नामक एक व्यक्ति थे। उनको परमेश्वर ने सामर्थ्य के कार्यों, चमत्कारों और चिह्नों द्वारा तुम्हारे समक्ष प्रमाणित किया, और ये कार्य परमेश्वर ने उन्हीं यीशु के द्वारा तुम्हारे मध्य किए थे, जैसा कि तुम्हें मालूम है। वह परमेश्वर की निश्चित योजना और पूर्वज्ञान के अनुसार पकड़वाए गए, और तुमने विधर्मियों के हाथों उन्हें क्रूस पर चढ़ाया एवं मार डाला। परन्तु परमेश्वर ने उनको मृत्यु की पीड़ा से मुक्त कर जीवित कर दिया : यह असम्भव था कि वह मृत्यु के वश में रहते। हमारे कुलपिता दाऊद उनके विषय में यह कहते हैं,

"मैं प्रभु को सदा अपने सम्मुख देखता रहा,
क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर है
जिससे मैं विचलित न होऊं।
इस कारण मेरा मन मुदित हुआ, एवं मेरा मुख उल्लसित।
अब मेरा शरीर आशा में विश्राम प्राप्त करेगा,
क्योंकि तू मेरा प्राण अधोलोक में नहीं छोड़ेगा
और न अपने पवित्र जन का मृत शरीर सड़ने ही देगा।
तूने मुझे जीवन का मार्ग बताया है।
तू अपने दर्शन द्वारा मुझे आनन्द-विभोर करेगा।"

'भाइयो, मैं तुमसे कुलपिता दाऊद के विषय में निस्संकोच कह सकता [illegible] कि कुलपिता दाऊद मर गए, गाड़े गए और उनकी कबर आज तक हमारे यहां विद्यमान है। दाऊद नबी थे। इस कारण वह जानते थे कि परमेश्वर ने उनसे शपथ खाई है, "मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊंगा।" दाऊद ने मसीह के पुनरुत्थान के विषय में पहले से ही जान कर कहा कि न तो मसीह अधोलोक में छोड़े गए और न उनका शरीर सड़ा। इन्हीं यीशु को परमेश्वर ने जीवित उठाया है। हम सब इस घटना के साक्षी हैं। इस प्रकार उन्होंने परमेश्वर के दाहिने हाथ से* उच्च पद पाया और पिता से पवित्र आत्मा को, जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, प्राप्त कर हम पर उण्डेल दिया है जो तुम देख और सुन रहे हो। दाऊद स्वर्ग पर नहीं चढ़े, क्योंकि उन्होंने स्वयं कहा है,

"प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिनी ओर बैठ,
जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न बना दूं।"

* 'दाहिनी ओर'

'इसलिए समस्त इस्राएली जाति निश्चित रूप से जान ले कि जिन यीशु को तुमने क्रूस पर चढ़ाया, उन्हीं को परमेश्वर ने प्रभु और मसीह दोनों बना दिया।'

यह सुनकर उनके हृदय में मानो अंकुश चुभ गया। उन्होंने पतरस तथा अन्य प्रेरितों से पूछा, 'भाइयो, हम क्या करें?'

पतरस ने उनसे कहा, 'हृदय-परिवर्तन करो और तुममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुमको पवित्र आत्मा का वरदान प्राप्त होगा क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम्हारे और तुम्हारी सन्तान के लिए है, और उन सब के लिए भी जो दूर हैं, और जिनको हमारा प्रभु परमेश्वर बुलाता है।'

पतरस और भी बहुत-सी बातों में साक्षी दे-देकर उन्हें प्रोत्साहित करते रहे कि वे अपने आपको इस भ्रष्ट पीढ़ी से बचाएं।

जिन लोगों ने पतरस का उपदेश स्वीकार किया, उन्होंने बपतिस्मा लिया, और उस दिन लगभग तीन हजार व्यक्ति विश्वासियों के समूह में सम्मिलित हो गए। वे प्रेरितों की शिक्षा, संगति, प्रभु-भोज* एवं प्रार्थना में तल्लीन रहने लगे।

आरम्भिक मसीही लोगों का धार्मिक जीवन

सब लोगों पर भय छाया हुआ था, और प्रेरितों द्वारा बहुत चमत्कार और चिह्न हुआ करते थे। सब विश्वासी मिल-जुलकर रहते थे और उनकी सब वस्तुएं साझे में थीं। वे अपनी चल और अचल सम्पत्ति बेच देते और जिसको जैसी आवश्यकता होती थी उसके अनुसार आपस में बांट लेते थे।

प्रतिदिन वे मन्दिर में उपस्थित होते, घर-घर में प्रभु-भोज लेते और आनन्दमय, सरल हृदय से भोजन करते थे। वे परमेश्वर की स्तुति करते थे और समस्त जनता उनसे प्रसन्न थी। प्रभु प्रतिदिन लोगों को उनके पापों से बचा रहा था, और उनको विश्वासियों के समूह में सम्मिलित कर रहा था।

१ 'प्रेरितों के कार्य' अध्याय १ में यीशु ने अपने शिष्यों को कौन-सी आज्ञा दी?
२ पेंतिकुस्त के पर्व पर घटी घटना का वर्णन करो?
३ पेंतिकुस्त के पर्व पर कितने लोग मसीह की कलीसिया में सम्मिलित हो गए?

३६. नवस्थापित कलीसिया का विकास

(प्रेरितों के कार्य ३, ४, ५)

कठोर यहूदी धर्म गुरुओं-नेताओं के विरोध, अत्याचार, और सताव के बावजूद आरम्भिक मसीही कलीसिया द्रुतगति से विकसित हुई। इन दिनों में शिष्यों के हाथ से अनेक आश्चर्यपूर्ण कार्य हुए। इन सबसे बढ़कर महा आश्चर्यपूर्ण कार्य था—मसीहियों के मध्य में स्थापित अनुपम प्रेम, आनन्द और सत्संग। आज भी वही प्रेम, आनन्द और सत्संग की भावना मसीही कलीसिया में पाई जाती है।

लंगड़े भिखारी को स्वस्थ करना

पतरस और यूहन्ना प्रार्थना के समय, दोपहर के बाद लगभग तीन बजे, मन्दिर में जा

*शब्दशः 'रोटी तोड़ना'

रहे थे। और उसी समय लोग जन्म के एक लंगड़े को ले जा रहे थे, जिसे वे प्रतिदिन मन्दिर के 'सुन्दर' नामक द्वार पर बैठा देते थे, कि वह मन्दिर में जानेवालों से भीख मांगे। जब लंगड़े भिखारी ने पतरस और यूहन्ना को देखा कि वे मन्दिर में प्रवेश करने को हैं, तब उनसे भीख मांगी। इस पर पतरस ने, और यूहन्ना ने भी एकटक दृष्टि से उसे देखा और कहा, 'हमारी ओर देख।'

वह उनसे कुछ पाने की आशा से उनकी ओर ताकने लगा।

पतरस ने कहा, 'मेरे पास चांदी और सोना तो है नहीं, परन्तु जो कुछ मेरे पास है, वह तुझे देता हूं: नासरत-निवासी यीशु मसीह के नाम से चल-फिर।'

यह कहकर पतरस ने उसका दाहिना हाथ पकड़कर उसको उठाया। तत्काल उसके पैरों और टखनों में बल आ गया। वह उछलकर खड़ा हो गया, चलने-फिरने लगा, और चलता-उछलता तथा परमेश्वर की स्तुति करता हुआ मन्दिर के भीतर चला गया। सब लोगों ने उसे चलते-फिरते और स्तुति करते देखा तो पहचान लिया कि यह वही है जो 'सुन्दर' नामक द्वार पर बैठकर भीख मांगा करता था। उसके साथ जो चमत्कार हुआ था, उसको देखकर सब लोग आश्चर्य से स्तम्भित रह गए।

मन्दिर में पतरस का उपदेश

वह भिखारी पतरस और यूहन्ना के पीछे-पीछे लगा था, इसलिए सारी जनता, जो आश्चर्य में डूबी हुई थी, सुलेमान नामक मण्डप में उनकी ओर दौड़ पड़ी।

यह देखकर पतरस ने जनता को सम्बोधित कर कहा, 'इस्राएली भाइयो, इस मनुष्य पर क्यों आश्चर्य करते हो, और क्यों हमारी ओर दृष्टि लगाए हो, मानो हमने अपनी सामर्थ्य और भक्ति से इसे स्वस्थ कर चलने-फिरने योग्य बना दिया है? अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु को महिमान्वित किया है। पर तुमने उन्हें शत्रुओं के हाथ पकड़वा दिया। जब पिलातुस ने उन्हें छोड़ देने का निश्चय किया तब तुमने उसके सामने उन्हें अस्वीकार किया। तुमने उस पवित्र और धर्मात्मा को अस्वीकार किया, एक हत्यारे को तुम्हारे लिए छोड़ने की मांग की और जीवन के अधिनायक की हत्या कर डाली। पर परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में से जीवित कर दिया। इसके हम साक्षी हैं। यीशु के नाम ने उस विश्वास के द्वारा जो उनके नाम पर है—इस व्यक्ति को, जिसे तुम देखते और जानते हो, बल प्रदान किया है। इस विश्वास के कारण जो यीशु के द्वारा प्राप्त होता है, यह लंगड़ा मनुष्य सबके सामने पूर्ण स्वस्थ हुआ है।

'भाइयो, मैं जानता हूं कि तुमने और तुम्हारे धर्मगुरुओं ने यह काम अज्ञानता में किया। परमेश्वर ने सब नबियों के मुख से पहले ही बता दिया था "मेरा मसीह दुःख उठाएगा"। यह सबूत परमेश्वर ने इस रीति से पूरी की।

'अतः हृदय-परिवर्तन करो और परमेश्वर के पास लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिट जाएं, और प्रभु तुम्हें शान्ति के दिन प्रदान करे और वह तुम्हारे लिए यीशु को, अर्थात् पूर्व निर्धारित मसीह को पुनः भेजे।

'यह आवश्यक है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहें जब तक कि उन सबकी पुनर्स्थापना न हो जाए, जिसकी चर्चा परमेश्वर ने सदा अपने नबियों के द्वारा की है। मूसा ने यह कहा था, "जैसे प्रभु परमेश्वर ने मुझे नबी नियुक्त किया वैसे ही तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए एक नबी नियुक्त करेगा। वह जो कुछ तुमसे कहे, उस पर ध्यान देना। जो मनुष्य उस नबी की बातों पर ध्यान नहीं देगा, वह इस प्रजा के बीच में नष्ट हो जाएगा।" शमूएल से लेकर उनके पश्चात् आनेवालों तक सभी नबियों ने इन दिनों की घोषणा की है। तुम नबियों के वंशज हो, और उस वाचा के उत्तराधिकारी हो जिसको परमेश्वर ने तुम्हारे पूर्वजों के साथ अब्राहम [illegible] जातियां आशीष पाएंगी।"

परमेश्वर ने अपने सेवक को जीवित कर सर्वप्रथम तुम्हारे पास भेजा कि तुम सबको दुष्कर्मों से विमुख करे और तुम्हें आशीष दे।'

धर्ममहासभा के सामने पतरस और यूहन्ना

जब पतरस लोगों से बोल ही रहे थे तब पुरोहित, मन्दिर के सिपाहियों का नायक और सदूकी उनके पास आए, और झुंझलाने लगे कि वे लोगों को उपदेश दे रहे हैं और यीशु का उदाहरण देकर मृतकों के पुनरुत्थान का प्रचार कर रहे हैं।

उन्होंने दोनों प्रेरितों को पकड़ा और दूसरे दिन तक के लिए कारागार में डाल दिया, क्योंकि सन्ध्या हो चली थी, परन्तु जो लोग उनका प्रवचन सुन रहे थे, उनमें से बहुतों ने विश्वास किया। विश्वास करनेवाले पुरुषों की संख्या लगभग पांच हज़ार हो गई।

दूसरे दिन प्रातःकाल यहूदी उच्चाधिकारी, धर्मवृद्ध, शास्त्री, महापुरोहित हन्ना, काइफा, यूहन्ना, सिकन्दर और पुरोहित वंश के सब लोग यरूशलम में एकत्र हुए। उन्होंने पतरस और यूहन्ना को धर्ममहासभा के बीच में खड़ा किया और उनसे पूछा, 'तुम लोगों ने किस सामर्थ्य से अथवा किस नाम से यह काम किया?'

इसपर पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा, 'जनता के शासको और धर्मवृद्धो, यदि आज हमसे एक दुर्बल मनुष्य का उपकार करने के विषय में प्रश्न किया जाता है कि वह किस प्रकार स्वस्थ हुआ, तो आप सबको और इस्राएल की समस्त जनता को विदित हो कि नासरत-निवासी यीशु के नाम से यह मनुष्य आपके सामने स्वस्थ खड़ा है। उन्हीं यीशु को आप लोगों ने क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला था किन्तु परमेश्वर ने उनको मृतकों में से जीवित कर दिया। यह "वही पत्थर है जिसे तुम भवन निर्माताओं ने रद्द किया, परन्तु वह मेहराब की केन्द्रशिला* बन गया।" किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा उद्धार नहीं क्योंकि आकाश के नीचे मनुष्यों को कोई दूसरा नाम नहीं मिला जिसके द्वारा हम बचाए जा सकें।'

वे लोग पतरस और यूहन्ना की निर्भयता देखकर और यह जानकर कि ये अशिक्षित और साधारण मनुष्य हैं, चकित रह गए। फिर उन्होंने उनको पहचाना कि ये यीशु के साथ रहे हैं। पर उनके साथ उस स्वस्थ हुए मनुष्य को देखकर वे विरोध में कुछ न कह सके। उन्होंने उनको धर्ममहासभा से बाहर जाने का आदेश दिया। तत्पश्चात् वे आपस में विचार करने लगे, 'हम इन मनुष्यों का क्या करें? इनके द्वारा एक असाधारण चमत्कार हुआ है—यह सब यरूशलम निवासियों पर प्रकट हो चुका है, और हम इसे अस्वीकार नहीं कर सकते। फिर भी यह बात जनता में अधिक न फैले, इसलिए हम इन्हें धमकाएं कि ये यीशु का नाम लेकर किसी मनुष्य से चर्चा न करें?'

तब पतरस और यूहन्ना को बुलाकर उन्होंने चेतावनी दी कि वे यीशु का नाम लेकर न कोई चर्चा करें और न शिक्षा दें।

इसपर पतरस और यूहन्ना ने उन्हें उत्तर दिया, 'आप ही न्याय कीजिए। परमेश्वर की दृष्टि में क्या यह उचित होगा कि हम परमेश्वर की बात से बढ़कर आपकी बात मानें? यह तो हमसे नहीं हो सकता कि जो कुछ हमने देखा और सुना है, उसे न कहें।'

तब उन्होंने प्रेरितों को पुनः धमका कर छोड़ दिया, क्योंकि जनता के कारण उन्हें दण्ड देने का कोई दांव नहीं मिला।

सब लोग इस घटना के कारण परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे। इस चमत्कार द्वारा जिस व्यक्ति को स्वास्थ्य लाभ हुआ था, उसकी आयु चालीस वर्ष से अधिक थी।

पतरस और यूहन्ना का अपने साथियों के पास लौटना

वहां से छूटकर पतरस और यूहन्ना स्वजनों के पास आए और जो कुछ महापुरोहितों

*अथवा, 'कोने का पत्थर'

और धर्मवृद्धो ने उनसे कहा था, वह सुनाया। यह सुनकर उन्होंने एक साथ उच्च स्वर से परमेश्वर की स्तुति की। उन्होंने कहा, 'हे स्वामी, तू ही आकाश, पृथ्वी और समुद्र तथा इनमे जो कुछ है, सबका सृष्टिकर्ता है। तूने पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे पूर्वज अपने सेवक दाऊद के मुह से यह कहा है

"विश्व की जातिया क्यो क्रुद्ध हुई ?
राष्ट्रो ने क्यो व्यर्थ षड्यन्त्र रचा ?
प्रभु के विरोध मे और उसके मसीह के विरोध मे
पृथ्वी के राजा उठ खडे हुए
और शासकगण एक स्थान पर एकत्र हुए।"

निस्सन्देह तेरे पवित्र सेवक यीशु के विरुद्ध, जिनका अभिषेक तूने किया था, इस नगर मे हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस, विजातियो और इस्राएल की जनता के साथ, एकत्र हुए, ताकि उसे पूरा करे जिसको तेरी योजना एव सामर्थ्य ने पहिले से निर्धारित किया था।

'अब, हे प्रभु, उनकी धमकियो को देख, और अपने सेवको को वरदान दे कि तेरा सन्देश पूरी निर्भयता से सुनाए। स्वस्थ करने के लिए अपना हाथ बढा जिससे तेरे पवित्र सेवक प्रभु यीशु के नाम के द्वारा चिह्न एव चमत्कार हो।'

जब उन्होंने प्रार्थना समाप्त की तब वह स्थान जहा वे एकत्र हुए थे, हिल गया। वे पवित्र आत्मा से भर गए और परमेश्वर का सन्देश निर्भयता से सुनाने लगे।

शिष्यों का सामूहिक जीवन

विश्वासियो का यह समुदाय एक मन और एक प्राण था। उनमे कोई भी व्यक्ति अपनी सम्पत्ति को अपना नही समझता था, वरन् उनकी सब वस्तुए साझे मे थी।

प्रेरित बडी सामर्थ्य से प्रभु यीशु के पुनरुत्थान के सम्बन्ध मे अपनी साक्षी देते थे। सब पर परमेश्वर का बडा अनुग्रह था। उनमे कोई भी दरिद्र नही था, क्योंकि जिनके पास भूमि या घर थे, वे उनको बेच-बेच कर, उनका मूल्य लाते और उसे प्रेरितो के चरणो मे रख देते थे, और फिर प्रत्येक मनुष्य को उसकी आवश्यकता के अनुसार बाट दिया जाता। उदाहरण के लिए, कुप्रुस निवासी यूसुफ नामक एक लेवी के पास, जिसे प्रेरितो ने बरनबास अर्थात् 'सान्त्वना का पुत्र' उपनाम दिया था, कुछ भूमि थी। उसे उसने बेचा, और उसका मूल्य लाकर प्रेरितो के चरणो मे रख दिया।

हनन्याह और सफीरा

हनन्याह नामक एक पुरुष और उसकी पत्नी सफीरा ने कुछ भूमि बेची। हनन्याह ने अपनी पत्नी की सम्मति से मूल्य का कुछ भाग रख लिया और शेष भाग लाकर प्रेरितो के चरणो मे रखा।

इसपर पतरस ने कहा, 'हनन्याह, शैतान ने तुम्हारे मन मे यह बात क्यो डाली कि तुम पवित्र आत्मा से झूठ बोलो और भूमि के मूल्य का कुछ अश रख लो ? जब वह भूमि तुम्हारे पास रही तब क्या तुम्हारी नही थी ? और जब वह बिक गई तो क्या उसका मूल्य तुम्हारे अधिकार मे नही था ? तुमने इस विचार को अपने मन मे क्यो स्थान दिया ? तुम मनुष्य से नही, परमेश्वर से झूठ बोले हो।'

ये शब्द सुनते ही हनन्याह गिर पडा और उसका प्राण निकल गया। और सब सुननेवालो पर बडा भय छा गया। कुछ नवयुवको ने उठकर उसकी अर्थी बनाई और नगर के बाहर ले जाकर उसे गाड दिया।

लगभग तीन घंटे बाद उसकी पत्नी, जो इस घटना से अनजान थी, घर के भीतर

पतरस ने उससे पूछा, 'मुझे बताओ, क्या तुमने वह भूमि इतने में ही बेची थी ?'

उसने कहा, 'हां, इतने में ही।'

पतरस ने उससे कहा, 'यह क्या बात है कि तुम प्रभु के आत्मा को परखने के लिए एकमत हो गए ? देखो, तुम्हारे पति को गाड़नेवाले द्वार पर हैं, और वे तुम्हें भी ले जाएंगे।'

वह उसी क्षण पतरस के चरणों पर गिर पड़ी और प्राण त्याग दिया। युवकों ने भीतर आकर उसे मृत पाया और बाहर ले जाकर उसके पति के समीप गाड़ दिया।

इससे सारी कलीसिया पर, और जितनों ने यह सुना उन सब पर, बड़ा भय छा गया।

चिह्न और चमत्कार

प्रेरितों द्वारा जनता में बहुत से चिह्न और चमत्कार हो रहे थे। सब विश्वासी एक साथ सुलैमान के मण्डप में एकत्र हुआ करते थे। दूसरे लोगों में से किसी को उनसे मिलने का साहस नहीं होता था, फिर भी जनता उनकी प्रशंसा करती थी।

प्रभु पर विश्वास करनेवाले स्त्री-पुरुषों की संख्या बढ़ती गई। सच तो यह है कि लोग रोगियों को सार्वजनिक स्थानों पर लाकर खाटों और खटोलियों पर लिटा देते थे, कि जब पतरस आए तब उसकी छाया ही रोगियों में से किसी पर पड़ जाए।

यरूशलेम के आसपास के नगरों से भी बहुत लोग एकत्र हो रोगियों और अशुद्ध आत्माओं से पीड़ित व्यक्तियों को लाते, और वे सब स्वस्थ हो जाते थे।

धर्ममहासभा के सम्मुख

इस पर महापुरोहित और उनके सब साथी—अर्थात् सदूकी सम्प्रदाय के लोग—ईर्ष्यालु हो उठे। उन्होंने प्रेरितों को पकड़कर सार्वजनिक कारागार में डाल दिया। परन्तु प्रभु के एक दूत ने रात को कारागार का द्वार खोला और उन्हें बाहर लाकर कहा, 'जाओ, मन्दिर में खड़े होकर जनता को इस जीवन के विषय में सब बातें सुनाओ।' यह सुनकर वे सवेरा होते ही मन्दिर में चले गए और वहां उपदेश देने लगे।

महापुरोहित और उनके साथी एकत्र हुए तो उन्होंने धर्ममहासभा एवं इस्राएलियों के सब धर्मवृद्धों को बुलवाया, और बन्दीगृह में कहला भेजा कि प्रेरितों को लाया जाए। पर जब सिपाही वहां पहुंचे तब कारागार में उनको नहीं पाया। उन्होंने लौटकर समाचार दिया, 'हमने बन्दीगृह को बड़ी सावधानी से बन्द पाया और पहरेदारों को द्वार पर खड़े देखा, परन्तु खोलने पर भीतर कोई न मिला।' जब मन्दिर के सिपाहियों का नायक और महा-पुरोहितों ने यह समाचार सुना तो वे चिन्ता में पड़ गए कि प्रेरितों को क्या हुआ। इतने में किसी ने आकर उन्हें समाचार दिया, 'देखिए, जिन लोगों को आपने कारागार में डाल दिया था, वे मन्दिर में खड़े होकर जनता को उपदेश दे रहे हैं।' तब नायक कुछ सिपाहियों के साथ मन्दिर गया और उन्हें ले आया, परन्तु बलपूर्वक नहीं, क्योंकि वे जनता से डरते थे कि कहीं जनता उन पर पथराव न करने लगे।

वे प्रेरितों को ले आए और धर्ममहासभा के सामने उनको खड़ा कर दिया। महापुरोहित ने प्रेरितों से पूछा, 'क्या हमने तुम्हें कड़ा आदेश नहीं दिया था कि इस नाम से शिक्षा न देना ? पर तुमने सारे यरूशलेम को अपनी शिक्षा से भर दिया है और इस व्यक्ति की हत्या का दोष हमारे सिर पर मढ़ना चाहते हो।'

इसपर पतरस और प्रेरितों ने उत्तर दिया, 'यह अनिवार्य है कि हम मनुष्यों की अपेक्षा परमेश्वर की आज्ञा मानें। जिन यीशु को तुम लोगों ने क्रूस* पर लटकाकर मार डाला, उनको हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने जीवित कर दिया है। परमेश्वर ने उनको अपने दाहिने हाथ में अधिनायक और उद्धारकर्ता का उच्च पद दिया कि वह इस्राएल को हृदय-परिवर्तन

*अक्षरश: 'काठ'

एव पाप-क्षमा प्रदान करे। इन बातो के साक्षी हम है और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने अपनी आज्ञा मानने वालो को दिया है।'

यह सुनकर धर्ममहासभा के सदस्य आगबबूला हो गए और उनको मार डालना चाहा, परन्तु गमलीएल नामक एक फरीसी था। वह व्यवस्था का आचार्य और सारी जनता की श्रद्धा का पात्र था। वह धर्ममहासभा के सम्मुख खडा हुआ, उसने प्रेरितो को थोडी देर के लिए बाहर कर देने की आज्ञा दी। इसके पश्चात् उसने लोगो से कहा, 'इस्राएलियो, सावधान रहो कि तुम इन लोगो के साथ क्या करना चाहते हो। कुछ दिन पूर्व थियूदास ने विद्रोह का झण्डा उठाया था। वह कहता था कि मै भी कुछ हू। कोई चार सौ मनुष्य उसके साथ हो लिए, परन्तु वह मारा गया और उसके माननेवाले सब लोग बिखर कर नष्ट हो गए। इसके पश्चात् जनगणना के दिनो मे गलील निवासी यहूदा ने सिर उठाया और अपने नेतृत्व मे जनता को उत्तेजित किया। वह भी नष्ट हो गया और उसके माननेवाले बिखर गए। अतएव इस विषय मे मेरा तुमसे कहना है कि इन लोगो से दूर ही रहो और इन्हे छोड़ दो। यदि यह आन्दोलन या कार्य मनुष्यो की ओर से है तो नष्ट हो जाएगा, परन्तु यदि परमेश्वर की ओर से है तो तुम इन्हे नष्ट नही कर सकोगे। यह भी सम्भव है कि तुम इनके काम मे हस्तक्षेप करने के कारण अपने आपको परमेश्वर का विरोधी पाओ।'

धर्ममहासभा ने गमलीएल की यह बात मान ली। उन्होने प्रेरितो को बुलाकर पिटवाया, और यह आदेश देकर छोड दिया कि वे यीशु के नाम से कुछ न कहे।

प्रेरित धर्ममहासभा से आनन्द मनाते हुए बाहर निकले कि उन्हे इस बात का गौरव प्राप्त हुआ कि वे यीशु के नाम के लिए अपमानित हुए। वे प्रतिदिन मन्दिर मे और घर-घर जाकर निरन्तर शिक्षा देने और शुभ सन्देश का प्रचार करते रहे कि यीशु ही मसीह है।

१ जो अध्याय अभी आपने पढे, उनमे वर्णित घटनाओ की सूची बनाइए।
२ परमेश्वर ने हनन्याह और सफीरा को क्यो दण्ड दिया ? क्या आधुनिक कलीसिया मे धन-सम्पत्ति का भ्रष्टाचार फैला है ? उपरोक्त घटना से हम क्या सीखते है ?

४०. सताव का आरम्भ

(प्रेरितो के कार्य ६, ७, ८ १–४)

मसीह की छोटी-सी कलीसिया, पर उसपर विरोध और अत्याचार का पहाड टूट पडा। यहूदी धर्म के नेताओ ने भरसक प्रयत्न किया कि कलीसिया को दफन कर दे लेकिन उनके विरोध और सताव के बावजूद कलीसिया का विकास दिन दूना रात-चौगुना बढता गया।

आज हम पढेगे कि मसीह की कलीसिया का प्रथम शहीद स्तिफनुस (स्तीफान) था।

सात सेवकों का निर्वाचन

उन दिनो जब शिष्यो की सख्या बढ रही थी, यूनानी-भाषी शिष्य इब्रानी-भाषा बोलनेवाले शिष्यो पर कुडकुडाने लगे कि दैनिक दान-वितरण के समय यूनानी-भाषी विधवाओ की उपेक्षा की जाती है।

इस पर बारह प्रेरितो ने शिष्य-मण्डली को बुलाकर कहा, 'यह शोभा नही देता कि [illegible] त्याग कर खिलाने-पिलाने की सेवा मे लगे। अत: भाइयो, अपने

से में सात सच्चरित्र पुरुषों को ढूंढ निकालो जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों। उन्हें हम इस कार्य पर नियुक्त कर देंगे, और स्वयं प्रार्थना में और सन्देश सुनाने की सेवा में संलग्न रहेंगे।'

यह बात समस्त मण्डली को अच्छी लगी और उन्होंने स्तिफनुस नामक व्यक्ति को, जो विश्वास तथा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था तथा फिलिप्पुस, प्रुखुरुस, नीकानोर, तीमोन, परमिनास और अन्ताकिया-निवासी नवयहूदी नीकुलाउस को चुनकर, प्रेरितों के सामने उपस्थित किया, और प्रेरितों ने प्रार्थना कर उन पर हाथ रखे।

परमेश्वर का सन्देश फैलता गया, शिष्यों की संख्या यरूशलेम में अधिकाधिक बढ़ती गई और बहुत से पुरोहितों ने इस विश्वास को स्वीकार कर लिया।

स्तिफनुस का विरोध

स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण हो जनता में चमत्कार और बड़े-बड़े चिह्न प्रदर्शित करने लगा। परन्तु कुछ यहूदी उसका विरोध करने लगे। ये स्वतन्त्रता-प्राप्त दल के सभागृह (जैसा वह कहलाता है) के सदस्य थे। इनके साथ कुरेन सिकन्दरिया किलिकिया और आसिया के यहूदी स्तिफनुस से वाद-विवाद करने लगे। किन्तु जिस बुद्धि और आत्मा द्वारा स्तिफनुस बोल रहा था, उसका विरोध करने में वे असमर्थ रहे।

तब उन लोगों ने कुछ व्यक्तियों को उत्तेजित किया जो यह कहने लगे, 'हमने इसे मूसा और परमेश्वर के लिए निन्दापूर्ण शब्द कहते सुना है।' इस प्रकार जनता को, धर्मवृद्धों को एवं शास्त्रियों को भड़का कर वे चढ़ आए और स्तिफनुस को पकड़ कर धर्ममहासभा में ले गए। वहां उन्होंने झूठे गवाह खड़े किए जिन्होंने कहा, "यह मनुष्य सदा इस पवित्र मन्दिर एवं मूसा की व्यवस्था के विरुद्ध बोलता है। हमने इसको यह कहते सुना है कि नासरत-निवासी यीशु इस स्थान को ध्वस्त कर देगा और वह उन प्रथाओं को बदल देगा जो हमें मूसा ने प्रदान की थीं।" धर्ममहासभा में बैठे लोगों ने अपनी दृष्टि स्तिफनुस पर गड़ा दी, उस समय उसका मुख उन्हें स्वर्गदूत के मुख के सदृश तेजोमय दीख पड़ा।

स्तिफनुस का भाषण

महापुरोहित ने पूछा, 'क्या ये बातें सच हैं?'

स्तिफनुस ने कहा, 'बन्धुओ और पितृगण, सुनिए। हमारे पूर्वज अब्राहम हारान में निवास करने से पूर्व मेसोपोतामिया में थे। महिमामय परमेश्वर ने उन्हें दर्शन दिया और कहा, "तू अपने देश से और कुटुम्ब से निकल और उस देश में चल जो मैं तुझे दिखाऊंगा।" तब अब्राहम कसदी जाति के देश से निकल कर हारान में जा बसे।

उनके पिता की मृत्यु के पश्चात् परमेश्वर उनको हटाकर इस देश में लाया जहां तुम अब रहते हो। यहां उनको परमेश्वर ने भूमि पर पैतृक अधिकार तो क्या, पैर रखने को स्थान तक न दिया, किन्तु तो भी उनसे प्रतिज्ञा की, "मैं यह देश तेरे, और तेरे पश्चात् तेरे वंश के अधिकार में कर दूंगा," यद्यपि उस समय अब्राहम के कोई पुत्र नहीं था।

परमेश्वर ने उनसे इस प्रकार कहा, "तेरे वंशज अन्य देश में प्रवास करेंगे, जहां के लोग उन्हें गुलाम बनाएंगे और चार सौ वर्ष तक उन पर अत्याचार करेंगे।"

फिर परमेश्वर ने कहा, 'जो जाति उन्हें गुलाम बनाएगी उसे मैं दण्ड दूंगा। इसके पश्चात् वे मिस्र देश से बाहर निकल आएंगे और इस स्थान पर मेरी उपासना करेंगे।'

उनके साथ परमेश्वर ने खतने की वाचा भी स्थापित की।

इस प्रकार अब्राहम इसहाक के जन्मदाता बने और इसहाक का आठवें दिन खतना किया, इसहाक से याकूब और याकूब से बारह कुल-पिता उत्पन्न हुए।

इन कुल-पिताओं ने द्वेष के कारण यूसुफ को मिस्र देश में बेच दिया। किन्तु परमेश्वर

उसके साथ था और सब विपत्तियों से उसको बचाता रहा तथा उसे मिस्र के राजा फरओ* का कृपापात्र बना दिया और उसे बुद्धि प्रदान की। फरओ ने यूसुफ को मिस्र का और अपने सम्पूर्ण राजभवन का अधिकारी नियुक्त किया।

जब समस्त मिस्र देश और कनान देश मे अकाल तथा सकट पडा और हमारे पूर्वजो को अन्न नही मिला तब याकूब ने यह सुनकर कि मिस्र देश मे अन्न है, हमारे पूर्वजो को पहली बार वहा भेजा। दूसरी यात्रा मे यूसुफ ने अपने भाइयो पर स्वय को प्रकट कर दिया। फरओ को भी यूसुफ के कुल का पता चल गया। तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब और अपने समस्त परिवार, अर्थात् पचहत्तर व्यक्तियो को बुला भेजा। याकूब मिस्र देश को गए। वही उनका देहान्त हुआ और हमारे पूर्वजो का भी। वे शकेम नगर मे लाए गए और उस कबर मे रखे गए जिसे अब्राहम ने धन देकर शकेम निवासी हमोर के वशजो से मोल लिया था।

ज्यो-ज्यो उस प्रतिज्ञा के पूर्ण होने का समय आता गया जिसकी घोषणा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी, मिस्र मे हमारे पूर्वज बढते गए और उनकी सख्या बहुत हो गई।

मिस्र मे एक ऐसा राजा हुआ जो यूसुफ को नही जानता था। उसने हमारी जाति के साथ धूर्तता की एव हमारे पूर्वजो पर अत्याचार कर उन्हे विवश किया कि वे जन्म होते ही अपने बच्चो को फेक दिया करे, जिससे वे जीवित न बचे। ऐसे समय मूसा का जन्म हुआ।

वह परमेश्वर की दृष्टि मे सुन्दर थे। तीन महीने तक उनका पालन-पोषण अपने पिता के घर मे हुआ। वहा से फेके जाने पर फरओ की पुत्री ने उन्हे गोद लिया और पुत्र समझ कर उनका पालन किया। इस प्रकार मूसा को मिस्रियो की समस्त विद्या प्राप्त हुई, और वह कुशल वक्ता और कर्मठ निकले।

जब मूसा चालीस वर्ष के हुए तब उनके मन मे आया कि वह अपने जाति-भाई इस्राए-लियो से भेट करे। एक दिन उन्होने देखा कि एक मिस्र निवासी उनके जाति-भाई के साथ दुर्व्यवहार कर रहा है। अत मूसा ने मिस्री को मार डाला और अपने जाति-भाई की रक्षा की, और इस प्रकार पीडित इस्राएली भाई का प्रतिशोध लिया।

मूसा यह सोचते थे "मेरे भाई समझ जाएगे कि परमेश्वर मेरे हाथो उनका उद्धार करेगा।" परन्तु इस्राएली न समझे।

दूसरे दिन जब दो इस्राएली आपस मे लड रहे थे तब वहा से मूसा निकले। मूसा ने उन्हे मेलमिलाप करने के लिए समझाया। उन्होने कहा, "सज्जनो, आप लोग भाई-भाई है। तब आप एक-दूसरे के साथ दुर्व्यवहार क्यो करते है?"

इस पर उसने, जो पडोसी पर अन्याय कर रहा था, मूसा को एक ओर ढकेल दिया और कहा, "तुझे किसने हमारे ऊपर शासक और न्यायाधीश नियुक्त किया है? जिस तरह कल तूने उस मिस्री की हत्या कर डाली, क्या उसी तरह मेरी भी हत्या करना चाहता है?"

यह बात सुनकर मूसा वहा से भागे और मिस्र देश छोडकर मिद्यान देश मे परदेशी के रूप मे बस गए। वहा उनके दो पुत्र हुए।

जब पूरे चालीस वर्ष बीत गए तब सीनाय पहाड के निर्जन क्षेत्र मे, जलती हुई झाडी की ज्वाला मे, एक स्वर्गदूत ने मूसा को दर्शन दिया। यह दर्शन पाकर मूसा विस्मित हो गए। जब वह देखने के लिए जलती झाडी के निकट गए तब उन्हे प्रभु की वाणी सुनाई दी, "मै तेरे पूर्वजो का परमेश्वर हू—अब्राहम का, इसहाक का और याकूब का परमेश्वर।"

मूसा काप उठे। वह उस ओर देखने का साहस न कर सके। प्रभु ने उनसे कहा, "अपने पैरो से जूते उतार, क्योकि जिस स्थान पर तू खडा है, वह पवित्र है। मैने मिस्र देश मे अपनी प्रजा की दुर्दशा भली-भाति देखी है और मैने उनकी दुहाई सुनी है, और उनका उद्धार करने के लिए उतरा हू। अब तैयार हो, मै तुझे मिस्र देश भेजूगा।"

जिन मूसा को इस्राएलियो ने यह कहकर अस्वीकार कर दिया था कि तुझे किसने शासक

*'फिरौन'

और न्यायाधीश नियुक्त किया, उन्ही को परमेश्वर ने—उस स्वर्गदूत द्वारा जो उन्हे झाडी मे दिखाई दिया था—शासक और उद्धारक बना कर भेजा। वह मिस्र देश मे, लालसागर मे एव चालीस वर्ष तक निर्जन प्रदेश मे चिह्न और चमत्कार दिखाकर इस्राएलियो को निकाल लाए। यह वही मूसा है जिन्होने इस्राएलियो से कहा था, "परमेश्वर तुम्हारे भाइयो मे से तुम्हारे लिए एक नबी नियुक्त करेगा जैसे उसने मुझे नियुक्त किया है।" यह वही मूसा है जो निर्जन प्रदेश की मण्डली मे उस स्वर्गदूत के साथ थे, जिसने सीनाय पहाड पर उनसे वार्तालाप किया था। वह हमारे पूर्वजो के साथ भी थे। मूसा को परमेश्वर की जीवन्त दिव्यवाणी प्राप्त हुई थी कि वह उसको हमे प्रदान करे।

परन्तु हमारे पूर्वज उनकी बात नही सुनना चाहते थे, इसलिए उनको अस्वीकार कर दिया, और अपना मन पुन मिस्र की ओर लगाया। वे हारून से बोले, "हमारे लिए ऐसा देवता बनाओ जो हमारा मार्गदर्शन करे, क्योंकि उस मूसा का जो हमे मिस्र से निकाल कर लाया था, न जाने क्या हुआ।"

उन दिनो इस्राएलियो ने एक बछडा बनाया और उसकी मूर्ति के आगे बलि चढाई। वे अपने हाथो से बनाई गई मूर्ति के लिए उत्सव मनाने लगे।

इस पर परमेश्वर भी उनसे विमुख हो गया। उसने उन्हे आकाश के तारागण पूजने को छोड दिया, जैसा कि नबियो की पुस्तक मे लिखा है

"हे इस्राएल वश, क्या तूने निर्जन प्रदेश मे चालीस वर्ष तक
मुझे पशु-बलि और अन्नबलि चढाई ?
नही, तुम लोग तो मोलोक देवता के शिविर को
और रिफान देवता के तारे को
अर्थात् प्रतिमाओ को जो तुमने पूजने के लिए बनाई थी
अपने साथ लिए फिरे।
तुमको मै बेबीलोन के उस पार निष्कासित करूगा।"

साक्षी का शिविर निर्जन प्रदेश मे हमारे पूर्वजो के साथ था—यह उस आदेश के अनुरूप था जो परमेश्वर ने मूसा को बताया था, "जैसी आकृति तुमने देखी है, उसी के अनुसार बनाना।"

जिस समय हमारे पूर्वजो ने अन्य जातियो पर अधिकार जमाया—जिनके पैर परमेश्वर ने उनके सामने उखाड दिए थे—उस समय वे यहोशू के नेतृत्व मे, परम्परा से प्राप्त इस शिविर को लाए, और दाऊद के दिनो तक ऐसा ही रहा।

दाऊद पर परमेश्वर ने कृपा की तो उसने याकूब के वश के लिए* एक निवास-स्थान पाने की अनुमति मागी। पर सुलैमान ने परमेश्वर के लिए एक भवन का निर्माण किया। किन्तु सर्वोच्च परमेश्वर मनुष्य के हाथो द्वारा बनाए गए भवनो मे नही रहता, जैसा कि नबी ने कहा है

"स्वर्ग मेरा सिहासन है,
और पृथ्वी मेरे चरणो की चौकी।
प्रभु कहता है, तुम मेरे लिए कैसा घर बनाओगे ?
मेरा विश्राम-स्थल कहा होगा ?
क्या ये सब मेरे हाथ की सृष्टि नही है ?"

हठधर्मियो, मन से विधर्मी और कान से बहरे लोगो ! तुमने सदा पवित्र आत्मा का विरोध किया है। जैसे तुम्हारे पूर्वज थे, वैसे ही तुम हो। तुम्हारे पूर्वजो ने किस नबी को नही सताया ? उन्होने धर्म-पुरुष** के आगमन का सन्देश देनेवालो की हत्या की थी, अब

*कुछ प्रतियो मे, 'याकूब के परमेश्वर के लिए'

**अर्थात् 'यीशु'

तुमने उस धर्मपुरुष को पकड़वाया और उसकी हत्या के भागी बने। तुम्हें स्वर्गदूतों की मध्यस्थता से व्यवस्था प्राप्त हुई, पर उसका तुमने पालन नहीं किया।'

स्तिफनुस की हत्या

यह कथन सुनकर लोग आगबबूला हो उठे और स्तिफनुस पर दांत किटकिटाने लगे। स्तिफनुस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो स्वर्ग की ओर अपलक दृष्टि की, और परमेश्वर की महिमा को, एवं यीशु को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़े हुए देखा। वह बोल उठा, 'मैं स्वर्ग को खुला हुआ और मानव-पुत्र को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़े देख रहा हूं।'

इस पर लोग ऊंचे स्वर से चिल्लाए। कान बन्द कर एक साथ स्तिफनुस पर टूट पड़े और उसको नगर से बाहर निकालकर पत्थर मारने लगे। गवाहों ने अपने वस्त्र शाऊल नामक युवक के पैरों के पास रख दिए थे। लोग स्तिफनुस को पत्थर मारते रहे, किन्तु उसने प्रार्थना की, 'प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।'

तब स्तिफनुस ने घुटने टेक कर उच्च स्वर से कहा, 'प्रभु, यह पाप इन पर मत लगाना।' और यह कहकर प्राण त्याग दिया।

कलीसिया पर अत्याचार

शाऊल स्तिफनुस की हत्या से सहमत था।

उस दिन से यरूशलम की कलीसिया पर घोर अत्याचार आरम्भ हुआ, और प्रेरितों को छोड़कर सब के सब विश्वासी यहूदा और सामरी प्रदेशों मे बिखर गए।

श्रद्धालु लोगों ने स्तिफनुस को कबर में गाड़ा और उसके लिए बहुत विलाप किया।

उधर शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था। वह घर-घर मे प्रवेश करता और पुरुष और स्त्रियों को वहां से निकालता और उन्हें कारागार मे डाल देता था।

१. स्तिफनुस कौन था? यहूदियों ने उसकी हत्या क्यों की?
२. शहीद स्तिफनुस की हत्या के पश्चात् कौन-सी घटनाएं घटीं?
३. जब मसीही समाज के सदस्य यहां-वहां बिखर गए तब उसका अच्छा परिणाम क्या निकला?

४१. सामरी प्रदेश में फिलिप्पुस का प्रचार-कार्य

(प्रेरितों के कार्य ८: ४–४०)

आरम्भिक कलीसिया के सम्मुख अनेक समस्याएं थीं। उनमे से एक यह थी क्या उद्धार का शुभ-सन्देश केवल यहूदियों के लिए है अथवा संसार के सब लोगों के लिए?

आज के अध्याय मे परमेश्वर यह स्पष्ट करता है कि उसके उद्धार का शुभ-सन्देश संसार के सब लोगो के लिए है, चाहे वे अमीर हों, चाहे गरीब। चाहे काले हों अथवा गोरे, बड़े हों अथवा छोटे।

जो विश्वासी बिखर गए थे, वे घूम-घूम कर शुभ सन्देश का प्रचार करने लगे। फिलिप्पुस ने सामरी प्रदेश के किसी नगर मे आकर मसीह का सन्देश सुनाना आरम्भ। जनता एकचित्त हो फिलिप्पुस के कथन पर ध्यान देती थी। लोगों ने फिलिप्पुस

के प्रवचन सुने और उसके द्वारा किए गए चमत्कार देखे क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं चिल्लाती हुई निकलीं और अनेक लकवे के रोगी तथा लंगड़े स्वस्थ हो गए। इस प्रकार उस नगर में आनन्द ही आनन्द हो गया।

जादूगर शिमौन

उस नगर में शिमौन नामक एक आदमी रहता था। वह जादू के काम दिखाकर सामरी प्रदेश की जनता को आश्चर्यचकित करता था और अपने आपको महान पुरुष बताता था। सब लोग, छोटे से बड़े, उसका सम्मान करते थे और कहते थे कि यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है जो महाशक्ति कहलाती है।

वे उसे बहुत मानते थे, क्योंकि उसने बहुत दिनों से उन्हें जादू के काम दिखा-दिखाकर मुग्ध कर रखा था। परन्तु जब लोगों को फिलिप्पुस की बातों पर विश्वास हुआ, जो परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह के नाम का शुभ-सन्देश सुना रहा था, तो स्त्री-पुरुष बपतिस्मा लेने लगे स्वयं शिमौन को भी विश्वास हुआ और वह बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा। वह चमत्कार और महान सामर्थ्य के कार्य होते देखकर चकित था।

सामरी प्रदेश में पतरस और यूहन्ना

जब यरूशलम में प्रेरितों ने सुना कि सामरी जनता ने परमेश्वर का सन्देश स्वीकार कर लिया है, तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा।

पतरस और यूहन्ना वहां गए और सामरियों के लिए प्रार्थना की कि वे पवित्र आत्मा पाए, क्योंकि पवित्र आत्मा अब तक उनमें से किसी पर अवतरित नहीं हुआ था। उन्होंने तो प्रभु यीशु के नाम पर केवल बपतिस्मा ही पाया था।

अतः प्रेरितों ने सामरी लोगों पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया।

शिमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा मिलता है तब वह उनके पास रुपये लाकर बोला, 'मुझे भी यह शक्ति दीजिए कि मैं जिस पर हाथ रखूं उसे पवित्र आत्मा प्राप्त हो।'

पतरस ने उससे कहा, 'नाश हो तेरा, और तेरे रुपयों का, क्योंकि तूने परमेश्वर का वरदान रुपयों से मोल लेना चाहा। इस विषय में न तेरा कुछ भाग है और न अधिकार* क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में तेरा हृदय शुद्ध नहीं है। अब अपनी इस नीचता पर पश्चाताप कर, और प्रभु से प्रार्थना कर कि यदि हो सके तो तेरे मन का दुर्विचार क्षमा किया जाए। मैं देख रहा हूं कि तू विष की गांठ** है और अधर्म के बन्धन में जकड़ा हुआ है।'

इस पर शिमौन ने कहा, 'आप ही मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना कीजिए कि आपने जो कुछ कहा, वह मुझ पर घटित न हो।'

जब पतरस और यूहन्ना साक्षी देकर प्रभु का सन्देश सुना चुके तब यरूशलम लौटते समय उन्होंने सामरी प्रदेश के अनेक गांवों में शुभ-सन्देश सुनाया।

फिलिप्पुस और इथियोपिआ का उच्च पदाधिकारी

प्रभु के दूत ने फिलिप्पुस से कहा, 'उठ और दक्षिण की ओर यरूशलम से गाजा जानेवाले मार्ग पर जा।'

यह एक मरुस्थली मार्ग है।

फिलिप्पुस उठकर चल पड़ा। अब देखिए, इथियोपिआ-निवासी एक कंचुकी† इथियोपिआ की रानी कन्दाके का उच्च पदाधिकारी और कोषाध्यक्ष था। वह आराधना के लिए यरूशलम आया था, और अब लौट रहा था। वह अपने रथ पर बैठा हुआ नबी यशायाह

*अक्षरशः 'उत्तराधिकार' **अक्षरशः 'पित्त की कड़वाहट' †अथवा 'खोजा'

की पुस्तक का पाठ कर रहा था। पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, 'आगे बढ़ और इस रथ के साथ चल।'

फिलिप्पुस उस ओर दौड़ा। उसने कंचुकी को नबी यशायाह का पाठ करते सुना। उसने पूछा, 'जो पढ़ रहे हो उसे समझते भी हो?'

उसने कहा, 'जब तक कोई व्यक्ति मुझे न समझाए, मैं कैसे समझ सकता हूं?' तब उसने फिलिप्पुस से अनुरोध किया कि वह ऊपर आकर उसके साथ बैठे। धर्मशास्त्र का अंश जिसे वह पढ़ रहा था, यह था

'जैसे भेड़ वध के लिए ले जाते समय,
और मेमना ऊन कतरनेवाले के सम्मुख चुप रहते हैं,
वैसे ही उसने अपना मुह नहीं खोला।
उसकी दशा शोचनीय थी, उसके साथ न्याय नहीं हुआ।
उसकी वंशावली का वर्णन कौन करेगा?
क्योंकि उसका जीवन पृथ्वी पर समाप्त किया जा रहा है।'

उच्च पदाधिकारी ने फिलिप्पुस से पूछा, 'कृपया बताइए कि नबी ने यह किसके विषय में कहा है? अपने विषय में या किसी अन्य व्यक्ति के विषय में?'

तब फिलिप्पुस ने कहना आरम्भ किया, और धर्मशास्त्र के इसी पाठ से आरम्भ कर यीशु का शुभ-सन्देश सुनाया।

चलते-चलते मार्ग में वे ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां जल था। उच्चपदाधिकारी बोला, 'देखिए जल! अब मेरे बपतिस्मा लेने में क्या बाधा है?'

(फिलिप्पुस ने कहा, 'यदि तुम सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करते हो तो अनुमति है।'

उसने उत्तर दिया, 'मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं।'*) तब उसने आदेश दिया कि रथ रोका जाए।

फिलिप्पुस और उच्चपदाधिकारी दोनों जल में उतर पड़े और फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया।

जब वे जल से निकलकर ऊपर आए तब प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया।

उच्चपदाधिकारी ने उसे फिर न देखा और आनन्द-मग्न हो अपना मार्ग लिया। उधर फिलिप्पुस अशदोद नगर में दिखाई दिया तथा कैसरिया पहुंचने तक वह नगर-नगर में शुभ-सन्देश सुनाता रहा।

१ फिलिप्पुस निर्जन प्रदेश में किससे मिले?
२ इस विदेशी जन ने फिलिप्पुस से क्या प्रश्न पूछा?
३ तब फिलिप्पुस ने उसके लिए क्या किया?

४२. गैरयहूदियों को शुभ-सन्देश

(प्रेरितों के कार्य ९, १०, ११, १२)

आज के अध्याय में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर समस्त संसार में प्रभु-यीशु का शुभ-सन्देश सुनाने के लिए द्वार खोल देता है। पौलुस (शाऊल) दमिश्क के मार्ग पर विद्रोही से प्रेरित बनता है। उसका हृदय-परिवर्तन होता है, और वह यीशु के लिए 'अन्य जातियों का प्रेरित' बन जाता है।

पतरस को दर्शन में परमेश्वर यही सच्चाई पुनः प्रकट करता है कि यीशु

के उद्धार का शुभ-सन्देश केवल यहूदी जाति के लिए नहीं, वरन् संसार की सब जातियों-कौमों के लिए है।

शाऊल का हृदय-परिवर्तन

शाऊल अब तक प्रभु के शिष्यों को धमकाने और उनकी हत्या करने की धुन में था। वह महापुरोहित के पास गया, और उसने दमिश्क नगर के सभागृहों के नाम इस आशय के अधिकार-पत्र मांगे कि, यदि वह इस पन्थ के माननेवालों को पाए चाहे वे पुरुष हों या स्त्री, तो उन्हें बन्दी बनाकर यरूशलम ले आए।

शाऊल यात्रा करते हुए दमिश्क नगर के निकट पहुंचा तब आकाश से एक ज्योति उसके चारों ओर सहसा चमक उठी। वह भूमि पर गिर पड़ा और एक आवाज सुनी। कोई उससे यह कह रहा था, 'शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है ?'

उसने कहा, 'प्रभु, आप कौन हैं ?'

उत्तर मिला, 'मैं यीशु हूं, जिसे तू सता रहा है। फिर भी उठ और नगर में प्रवेश कर। वहां तुझे बताया जाएगा कि तुझे क्या करना है।'

उसके सहयात्री अवाक् खड़े थे, क्योंकि उन्हें आवाज तो सुनाई दी, पर उन्होंने देखा किसी को नहीं। शाऊल भूमि से उठा, परन्तु आंख खोलने पर उसे कुछ दिखाई न दिया। तब लोग उसका हाथ पकड़कर उसे दमिश्क नगर ले गए।

उसे कुछ न दिखाई दिया। और उन दिनों उसने कुछ खाया-पिया नहीं।

दमिश्क नगर में शाऊल

दमिश्क में हनन्याह नामक यीशु का एक शिष्य था। प्रभु यीशु ने उसे दर्शन देकर कहा, 'हनन्याह !'

उसने उत्तर दिया, 'आज्ञा, प्रभु !'

प्रभु ने उससे कहा, 'उठ और "सीधी" नामक गली में जा, वहां यहूदा के घर पर तरसुस निवासी शाऊल को पूछना। देख वह प्रार्थना कर रहा है, और उसे दर्शन हुआ है कि हनन्याह नामक एक व्यक्ति ने घर में प्रवेश कर उस पर हाथ रखा है कि उसे पुनः दृष्टि प्राप्त हो जाए।'

हनन्याह ने उत्तर दिया, 'प्रभु, मैं इस व्यक्ति के विषय में बहुतों से सुन चुका हूं कि उसने यरूशलम में तेरे भक्तों को बहुत कष्ट दिया है। उसको महापुरोहितों से अधिकार मिला है कि यहां दमिश्क में जितने तेरा नाम लेते हैं, उन सब को बन्दी बना ले।'

प्रभु ने उससे कहा, 'जा, मैंने उसको चुना है कि उसके माध्यम से मैं गैरयहूदी जातियों, राजाओं और इस्राएलियों के सम्मुख अपने नाम की घोषणा करूंगा और मैं उसे बताऊंगा कि उसे मेरे नाम के लिए कितना कष्ट सहना है।'

तब हनन्याह गया। उसने घर में प्रवेश किया और शाऊल पर अपने हाथ रखकर कहा, 'भाई शाऊल, प्रभु ने, अर्थात् जिसने मार्ग में आते समय तुमको दर्शन दिया है, उन यीशु ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि तुम फिर दृष्टि प्राप्त करो और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ।'

उसी क्षण शाऊल की आंखों से छिलके-से गिरे और उसे पुनः दृष्टि प्राप्त हो गई। वह उठा और उसने बपतिस्मा लिया। भोजन करने से उसे बल प्राप्त हुआ।

यीशु का भक्त शाऊल सन्देश सुनाता है

शाऊल दमिश्क में शिष्यों के साथ कुछ दिन रहा और शीघ्र ही सभागृहों में यीशु का

प्रचार करने लगा कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं। इससे सब सुननेवाले चकित रह गए और बोले, 'क्या यह वही व्यक्ति नहीं जो यरूशलम में इस नाम से परमेश्वर की भक्ति करनेवालों की हत्या कर रहा था और यहां भी इस अभिप्राय से आया था कि उनको बन्दी बनाकर महापुरोहितों के पास ले जाए।

पर इससे शाऊल को और भी बल मिला, और इस बात का प्रमाण देकर कि यीशु ही मसीह हैं, उसने दमिश्क में रहनेवाले यहूदियों का मुंह बन्द कर दिया।

शाऊल बाल-बाल बचा

इस प्रकार अनेक दिन बीत गए। अब यहूदियों ने शाऊल की हत्या करने के लिए षड्यन्त्र रचा, पर शाऊल को उनके षड्यन्त्र का पता चल गया। यहूदी उसको मार डालने के लिए दिन-रात फाटकों पर पहरा देते रहे और उधर शाऊल के शिष्यों ने उसे टोकरे में बैठा कर रात को शहरपनाह से नीचे उतार दिया।

यरूशलम और तरसुस नगरों में शाऊल

यरूशलम पहुंचने पर शाऊल ने विश्वासियों के समूह में सम्मिलित हो जाने का प्रयत्न किया। परन्तु सब लोग उससे डरते थे, क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं होता था कि वह भी शिष्य बन गया है।

तब बरनबास शाऊल को प्रेरितों के पास ले गया और बताया कि शाऊल पौलुस ने किस प्रकार मार्ग में प्रभु का दर्शन किया और प्रभु ने उससे बातें कीं। बरनबास ने उन्हें यह भी बताया, 'शाऊल ने दमिश्क में निर्भयतापूर्वक यीशु के नाम का प्रचार किया है।'

अब शाऊल प्रेरितों के साथ यरूशलम में आने-जाने और निर्भयतापूर्वक प्रभु के नाम का प्रचार करने लगा। वह यूनानी-भाषी यहूदियों से वार्तालाप और वाद-विवाद किया करता था। वे लोग शाऊल के प्राण के ग्राहक हो गए। जब भाइयों को इसका पता चला तब वे शाऊल को कैसरिया ले गए और वहां से उसे तरसुस नगर को भेज दिया।

इस प्रकार, समस्त यहूदा, गलील और सामरी प्रदेशों में कलीसिया को शान्ति प्राप्त हुई और वह दिन-प्रतिदिन निर्मित होती गई। वह प्रभु के भय में आचरण करती हुई और पवित्र आत्मा की सान्त्वना प्राप्त कर वृद्धि करती गई।

पतरस एनियास को स्वस्थ करते हैं

पतरस सब स्थानों का भ्रमण करते हुए लुद्दा नगर में रहनेवाले प्रभु-भक्तों के यहां पहुंचे। वहां उन्हें एनियास नामक व्यक्ति मिला जो लकवा रोग से पीड़ित था और आठ वर्ष से रोग-शैया पर पड़ा था। पतरस ने उससे कहा, 'एनियास, यीशु मसीह तुमको स्वस्थ कर रहे हैं। उठो और भोजन तैयार करो।'* वह उसी क्षण उठ बैठा।

लुद्दा और शारोन के निवासियों ने यह देखा और उन्होंने यीशु को अपना प्रभु स्वीकार किया।

पतरस दोरकास को जिलाते हैं

याफा नगर में तबीता अर्थात् दोरकास** नामक यीशु की एक शिष्या रहती थी। वह पुण्य-कर्म और दान-धर्म में लगी रहती थी। वह उन दिनों बीमार पड़ी और मर गई। लोगों ने उसे स्नान कराके अटारी में लिटा दिया।

लुद्दा नगर याफा नगर के समीप है। अतएव जब शिष्यों ने सुना कि पतरस वहां है, तब उन्होंने दो आदमियों को पतरस के पास भेजा और उनसे अनुरोध किया, 'कृपाकर हमारे यहां आइए।'

* 'अपना बिस्तर बिछाओ' **अर्थात् हरिणी'

पतरस उठे और उनके साथ चल पड़े।

जब पतरस वहां पहुंचे तब लोग उन्हें उस अटारी पर ले गए। वहां सब विधवाएं रोती हुई उनके पास आ खड़ी हुईं। दोरकास ने उनके साथ रहते समय जो-जो कुरते और कपड़े बनाए थे, वे पतरस को दिखाने लगीं।

पतरस ने सबको बाहर कर दिया।

तब उन्होंने घुटने टेककर प्रार्थना की, एवं शव की ओर देखकर कहा, 'तबीता, उठो।' उसने आंखें खोल दीं और वह पतरस को देखकर उठ बैठी। पतरस ने हाथ के सहारे से उसे उठाया और भक्तों तथा विधवाओं को बुलाकर उसे जीती-जागती उनके सामने उपस्थित कर दिया।

यह बात समस्त याफा नगर में फैल गई और बहुतों ने प्रभु यीशु पर विश्वास किया।

पतरस याफा में शिमौन नामक एक व्यक्ति के घर में बहुत दिनों तक रहे। शिमौन चमड़े का कारोबार करता था।

पतरस और करनेलियुस

कैसरिया में करनेलियुस नामक एक व्यक्ति था। वह इतालवी नामक सैन्यदल का नायक* था। वह धर्मपरायण था और समस्त परिवार सहित परमेश्वर की भक्ति करता था। वह गरीब यहूदियों को बहुत दान देता था और निरन्तर परमेश्वर से प्रार्थना किया करता था।

उसे एक दिन लगभग तीन बजे स्पष्ट दर्शन मिला। उसने देखा कि परमेश्वर का दूत उसके पास आकर कह रहा है, 'करनेलियुस!' करनेलियुस ने इस पर दृष्टि गड़ा दी और भयभीत होकर बोला, 'प्रभु, क्या है?'

उसने कहा, 'तुम्हारी प्रार्थनाओं और दान का स्मरण परमेश्वर के समक्ष हुआ है। अब, कुछ मनुष्यों को याफा भेज दो और शिमौन, उपनाम पतरस, को आमन्त्रित करो। वह शिमौन नामक चर्मकार के यहां अतिथि है, जिसका घर समुद्र-तट पर है।'

जब वह स्वर्गदूत जिसने उससे बातें की थीं, चला गया तो उसने दो सेवकों को और अपने अनुचरों में से एक धर्मपरायण सैनिक को बुलाया, और उन्हें सब बातें समझाकर याफा नगर भेजा।

दूसरे दिन जब वे लोग यात्रा करते-करते नगर के पास पहुंच रहे थे, तब लगभग दोपहर के समय पतरस प्रार्थना करने के लिए छत पर गए।

उन्हें भूख लगी और कुछ खाने की इच्छा हुई। लोगों के भोजन बनाते समय पतरस ध्यान-मग्न हो गए। उन्होंने देखा कि आकाश खुल गया है और चारों कोनों से लटकती हुई लम्बी-चौड़ी चादर जैसी कोई वस्तु पृथ्वी पर उतर रही है और उसमें सब प्रकार के पृथ्वी के पशु, रेंगनेवाले जीव-जन्तु और आकाश के पक्षी विद्यमान हैं। उन्हें यह वाणी भी सुनाई पड़ी, 'पतरस, उठ। इन्हें मार और खा।' पतरस ने कहा, 'नहीं प्रभु, कदापि नहीं, क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र और अशुद्ध वस्तु नहीं खाई।'

इसपर उन्हें दूसरी बार फिर वाणी सुनाई दी, 'जिसे परमेश्वर ने शुद्ध कहा है, उसे तू अपवित्र मत कह।'

तीन बार ऐसा ही हुआ और तब वह चादर तुरन्त आकाश में उठा ली गई।

पतरस के हृदय में अभी असमंजस था कि जो दर्शन उन्हें मिला है उसका क्या तात्पर्य हो सकता है। उसी समय करनेलियुस के भेजे हुए सेवक और सैनिक शिमौन का घर पूछते-पूछते द्वार पर आ खड़े हुए। उन्होंने ऊंची आवाज में पूछा, 'क्या शिमौन उपनाम पतरस, यहीं ठहरे हैं?'

*अथवा, 'शतपति'

पतरस अभी उस दर्शन के विषय में विचार कर रहे थे कि आत्मा ने उनसे कहा, 'देख, तीन मनुष्य तुझे ढूंढ़ रहे हैं। उठ, नीचे उतर और निस्संकोच उनके साथ चला जा, क्योंकि मैंने ही उन्हें भेजा है।'

तब पतरस उन लोगों के पास नीचे आकर बोले, 'जिसको तुम ढूंढ़ रहे हो, वह मैं ही हूं। तुम किसलिए यहां आए हो?'

उन्होंने कहा, 'हमारे सैनिक-अधिकारी कुरनेलियुस एक धर्म-परायण और परमेश्वर की भक्ति करनेवाले व्यक्ति हैं। समस्त यहूदी जाति उनका सम्मान करती है। उनको एक पवित्र दूत से आज्ञा मिली है कि वह आपको अपने घर आमन्त्रित कर आपका उपदेश सुनें।'

तब पतरस उन लोगों को भीतर ले गए और उनका अतिथि-सत्कार किया।

दूसरे दिन वह उनके साथ चले तो याफा से कुछ विश्वासी भाई भी उनके साथ हो लिए।

अगले दिन वे कैसरिया पहुंच गए, जहां कुरनेलियुस अपने सम्बन्धियों और अपने इष्ट-मित्रों के साथ उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।

जब पतरस भीतर आनेवाले ही थे, तब कुरनेलियुस उनसे मिला। उसने पतरस के चरणों पर गिरकर उन्हें प्रणाम किया। पतरस ने उसे उठाते हुए कहा, 'उठो, मैं भी तो मनुष्य हूं।'

वह कुरनेलियुस से बातचीत करते हुए भीतर गए और वहां बहुत लोगों को एकत्र देखकर उनसे कहा, 'तुम स्वयं जानते हो कि किसी यहूदी के लिए अन्य जाति के व्यक्ति से सम्पर्क रखना अथवा उसके घर आना वर्जित है। परन्तु परमेश्वर ने मुझपर प्रकट किया कि किसी व्यक्ति को अपवित्र या अशुद्ध न मानूं। अतः आमन्त्रित किए जाने पर मैं बिना कुछ कहे चला आया हूं। अब मैं पूछता [illegible] कि तुमने मुझे किस कारण बुलाया है?'

कुरनेलियुस ने उत्तर दिया, 'चार दिन हुए ठीक इसी समय जब मैं अपने घर में तीसरे पहर की प्रार्थना कर रहा था तब उज्ज्वल वस्त्र पहिने हुए एक मनुष्य मेरे सम्मुख आ खड़ा हुआ। उसने मुझसे कहा, "कुरनेलियुस, तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई और तुम्हारे दान का स्मरण परमेश्वर के समक्ष हुआ है। अतः अब किसी को याफा भेजकर शिमोन, उपनाम पतरस, को आमन्त्रित करो। वह समुद्र-तट पर शिमोन चर्मकार के घर अतिथि है।" मैंने उसी क्षण आपके पास आदमी भेजे और आपने बड़ी कृपा की कि आप आ गए। अब हम सब परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित हैं और आपके मुख से वह सब सुनना चाहते हैं जो प्रभु ने आपसे कहा है।'

पतरस का भाषण

तब पतरस ने इन शब्दों में उन्हें उपदेश दिया, 'अब मुझे स्पष्ट समझ में आया कि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता, वरन् प्रत्येक जाति में जो कोई उससे भय मानता है और धर्म पर चलता है, उसे वह प्रिय जानता है। उसने इस्राएलियों के पास सन्देश भेजा और उन्हें यीशु मसीह के द्वारा—वही सब के प्रभु हैं—शान्ति का शुभ सन्देश सुनाया। तुम जानते हो कि यूहन्ना के बपतिस्मा-प्रचार के पश्चात् गलील से लेकर समस्त यहूदा प्रदेश में क्या-क्या हुआ, नासरत-निवासी यीशु को परमेश्वर ने पवित्र आत्मा एवं सामर्थ्य से अभिषिक्त किया, और यीशु भ्रमण करते हुए शुभ-कार्य करते और सब लोगों को स्वस्थ करते रहे जो शैतान के वश में थे। परमेश्वर उनके साथ था। उन्होंने जो कार्य यहूदा प्रदेश और यरूशलम में किए, उन सबके हम साक्षी हैं। लोगों ने उनको क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला, परन्तु परमेश्वर ने तीसरे दिन उनको जीवित किया और प्रत्यक्ष दिखाया—सबको नहीं, वरन् उन गवाहों को जिनको परमेश्वर ने पहले से मनोनीत कर लिया था, अर्थात् हमको, जिन्होंने उनके मृतकों में से जीवित होने के पश्चात् उनके साथ खाया-पिया। यीशु ने हमें आज्ञा दी कि हम जनता में प्रचार करें और स्पष्ट साक्षी दें कि यह वही हैं जिन्हें परमेश्वर ने जीवितों

एवं मृतकों का न्यायकर्त्ता नियुक्त किया है। इन्हीं के विषय में सब नबी साक्षी देते हैं कि जो कोई यीशु पर विश्वास करेगा, उसे यीशु के नाम द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।'

गैरयहूदी लोगों पर पवित्र आत्मा का अवतरण

पतरस अभी बोल ही रहे थे कि उन सब पर जो प्रवचन सुन रहे थे पवित्र आत्मा उतर आया। यहूदी विश्वासी, जो पतरस के साथ आए हुए थे, चकित रह गए कि पवित्र आत्मा का वरदान गैरयहूदियों पर भी उण्डेला गया। वे उन्हें अन्य-अन्य भाषाएं बोलते और परमेश्वर की स्तुति करते सुन रहे थे।

इस पर पतरस ने पूछा, 'जिन लोगों ने हमारे समान ही पवित्र आत्मा प्राप्त किया है, क्या उनके लिए कोई बपतिस्मा का जल रोक सकता है?' और पतरस ने आदेश दिया कि वे यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लें।

इसके पश्चात् उन लोगों ने पतरस से निवेदन किया कि वह कुछ दिन उनके साथ रहे।

पतरस द्वारा अपने कार्य का स्पष्टीकरण

प्रेरितों और यहूदा प्रदेश के यहूदी बन्धुओं ने सुना कि गैरयहूदियों ने परमेश्वर का सन्देश स्वीकार कर लिया है। अतः जब पतरस यरूशलेम आए तब खतने के पक्षधरों ने उनकी आलोचना की और कहा, 'आप खतना-विहीन व्यक्तियों के घर क्यों गए और उनके साथ भोजन क्यों किया?'

अतः पतरस ने क्रमपूर्वक सब घटनाओं का विवरण उनके सम्मुख रखा। उन्होंने कहा, 'मैं याफा नगर में था और प्रार्थना कर रहा था। ध्यान-मग्न अवस्था में मैंने देखा कि चारों कोनों से लटकती हुई लम्बी-चौड़ी चादर जैसी कोई वस्तु आकाश से उतर रही है। वह मुझ तक आई। जब मैंने ध्यान से देखा तब मुझे उसमें पृथ्वी के चौपाए, वन-पशु, रेंगनेवाले जीव-जन्तु और आकाश के पक्षी दिखाई दिए। मुझे यह वाणी भी सुनाई दी, "पतरस, उठ। इन्हें मार और खा।"

'किन्तु मैंने कहा, "नहीं प्रभु, आजतक मैंने कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है।"

'स्वर्गिक वाणी ने दूसरी बार कहा, "जिसे परमेश्वर ने शुद्ध कहा है, उसे तू अशुद्ध मत कह।"

'तीन बार यही हुआ और तब सब कुछ आकाश में उठ गया।

'ठीक उसी क्षण कैसरिया से मेरे पास भेजे गए तीन व्यक्ति उस घर के सामने आ खड़े हुए जहां हम थे।

'आत्मा ने मुझे आदेश दिया कि मैं निस्संकोच उनके साथ जाऊं।

'ये छः बन्धु भी मेरे साथ गए और हमने उस मनुष्य के घर में प्रवेश किया।

'उसने हमें बताया कि उसने अपने घर में एक स्वर्गदूत खड़ा हुआ देखा था। स्वर्गदूत ने उससे कहा, "किसी को याफा भेजकर सिमौन उपनाम पतरस को आमन्त्रित कर। वह तुझे उपदेश देगा जिससे तुझको सपरिवार उद्धार प्राप्त होगा।"

'मैंने बोलना आरम्भ ही किया था कि पवित्र आत्मा, जैसे कलीसिया के आरम्भ में हमपर उतरा था, वैसे ही उनपर उतर आया। उस समय मुझे प्रभु के शब्द स्मरण हुए, "यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।" यदि परमेश्वर ने उनको भी वही वरदान दिया जो हमें दिया था जब हमने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया था, तो मैं कौन होता हूं, और मेरी क्या सामर्थ्य है कि मैं परमेश्वर को रोकता?'

यह सुनकर वे शान्त हो गए और परमेश्वर की स्तुति करने लगे कि परमेश्वर ने गैर-यहूदियों को भी हृदय-परिवर्तन का वरदान दिया है कि वे भी जीवन प्राप्त करें।

गैरयहूदियों की प्रथम कलीसिया

स्तिफनुस को लेकर जो अत्याचार आरम्भ हुआ था, उसके कारण विश्वासी बिखर गए और फोनीके प्रदेश, साइप्रस द्वीप तथा अन्ताकिया महानगर तक पहुँचे। परन्तु वे यहूदियों के अतिरिक्त और किसी को शुभ-सन्देश नहीं सुनाया करते थे।

किन्तु उनमें से कुछ साइप्रस और कुरेन के निवासी, जब महानगर अन्ताकिया पहुँचे तो उन्होंने यूनानियों को भी प्रभु येशु का शुभ-सन्देश सुनाया। परमेश्वर की सामर्थ्य उनके साथ थी, अत: बहुत-से लोग विश्वास कर प्रभु की ओर लौटे।

जब इनके विषय में यरूशलेम की कलीसिया के कानों तक समाचार पहुँचा, तब उन्होंने बरनबास को महानगर अन्ताकिया भेजा।

बरनबास वहाँ पहुँचा। जब उसने परमेश्वर का अनुग्रह देखा तब अत्यन्त प्रसन्न हुआ, और सबको प्रोत्साहित किया कि तन-मन से प्रभु के प्रति निष्ठा रखें। बरनबास सज्जन था और पवित्र आत्मा एवं विश्वास से परिपूर्ण था। इसलिए बहुत से लोग प्रभु से आ मिले।

तब बरनबास शाऊल की खोज में तरसुस गया और उससे भेंट होने पर वह उसे महानगर अन्ताकिया ले आया।

वे दोनों पूरे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ रहे और बहुत-से लोगों को उपदेश दिया। अन्ताकिया में ही येशु के शिष्य पहली बार मसीही कहलाए।

यरूशलेम की कलीसिया को सहायता

उन दिनों यरूशलेम से कुछ नबी महानगर अन्ताकिया आए। उनमें से अगबुस नामक नबी उठा और उसने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से भविष्यवाणी की कि समस्त संसार में भयंकर अकाल पड़नेवाला है।

यह अकाल सम्राट क्लौदियुस के शासन-काल में पड़ा।

तब शिष्यों ने निश्चय किया कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार यहूदा प्रदेश में रहनेवाले भाइयों की सहायता के लिए कुछ भेजेगा। उन्होंने ऐसा ही किया और बरनबास और शाऊल के हाथ धर्मवृद्धों के पास सहायता भेजी।

राजा हेरोदेस अग्रिप्पा-प्रथम का अत्याचार

इन्हीं दिनों राजा हेरोदेस कलीसिया के कई व्यक्तियों पर अत्याचार करने लगा। उसने यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मरवा डाला। जब उसने यह देखा कि इससे यहूदी प्रसन्न हुए हैं, तब उसने पतरस को भी बन्दी कर लिया। यह अखमीरी रोटी के पर्व के समय हुआ। उसने पतरस को पकड़कर कारागार में डाल दिया और उनकी रखवाली के लिए चार-चार सैनिकों के चार दल नियुक्त कर दिए। राजा हेरोदेस की इच्छा थी कि फसह-पर्व के पश्चात् पतरस को जनता के सामने उपस्थित करे।

पतरस कारागार में बन्द थे और इधर कलीसिया उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने में लगी हुई थी।

पतरस की कारागार से मुक्ति

जब राजा हेरोदेस पतरस को जनता के सम्मुख पेश करने को था, उस रात को पतरस दो हथकड़ियों से बंधे, दो सैनिकों के बीच सो रहे थे, और प्रहरी कारागार के द्वार की चौकसी कर रहे थे।

सहसा प्रभु का दूत आ खड़ा हुआ और कोठरी प्रकाश से भर गई। दूत ने पतरस की पसली को थपथपाकर उन्हे जगाया और कहा, 'शीघ्र उठ।' तब पतरस की हथकड़िया खुलकर गिर पडी।

स्वर्गदूत ने उनसे कहा, 'कमर बाध, और अपनी चप्पल पहिन ले।'

पतरस ने वैसा ही किया।

फिर स्वर्गदूत उनसे बोला, 'अपना वस्त्र पहिनकर मेरे पीछे आ।'

पतरस उसके पीछे-पीछे बाहर आए। पर उन्हे निश्चय नही हो रहा था कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है, वह वास्तविक घटना है। उन्होने सोचा कि सम्भवत वह कोई स्वप्न देख रहे है।

अत वे पहले और दूसरे प्रहरी को पार कर उस लौह-द्वार पर पहुचे जहा से नगर की ओर मार्ग जाता है। यह द्वार उनके लिए स्वत खुल गया। वे बाहर निकलकर गली के छोर तक ही गए थे कि सहसा स्वर्गदूत पतरस को छोडकर चला गया।

तब पतरस सचेत हुए और बोले, 'अब मैने सचमुच जान लिया कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के पन्जे से छुडाया और यहूदियो की सारी योजनाए निष्फल कर दी।'

पतरस परिस्थिति समझकर यूहन्ना, उपनाम मरकुस, की माता मरियम के घर आए। वहा बहुत से लोग एकत्र थे और प्रार्थना कर रहे थे। जब पतरस ने प्रवेश-द्वार खटखटाया तब रुदे नामक सेविका देखने आई कि कौन है। पर पतरस की आवाज सुनकर, उसने प्रसन्नता के मारे द्वार न खोला, वरन् दौडकर भीतर गई और कहने लगी कि पतरस द्वार पर है।

लोगो ने कहा, 'तू पगली है।'

जब उसने दृढता से कहा कि वह ठीक कह रही है तब वे बोले, 'उनका स्वर्गदूत होगा।'

उधर पतरस द्वार खटखटाए ही जा रहे थे। अत लोगो ने द्वार खोला और उनको देखकर चकित रह गए।

पतरस ने उन्हे हाथ से सकेत किया कि वे चुप रहे। पतरस ने उन्हे बताया कि किस प्रकार प्रभु उनको कारागार से बाहर ले आया। अन्त मे पतरस ने कहा, 'याकूब और भाइयो से ये बाते कह देना', और वहा से निकलकर किसी अन्य स्थान को चले गए।

प्रात काल हुआ तो सैनिको मे बडी खलबली मची कि पतरस का क्या हुआ। हेरोदेस ने पतरस की बहुत खोज की पर कोई पता न चला। उसने प्रहरियो की जाच कर उन्हे प्राण-दण्ड का आदेश दिया। इसके बाद हेरोदेस यहूदा प्रदेश छोडकर चला गया, और वह कैसरिया मे जाकर रहने लगा।

हेरोदेस की मृत्यु

हेरोदेस सोर और सीदोन के निवासियो से बहुत अप्रसन्न था। अत वे सब सगठित हो उसके पास आए और राजमहल के प्रबन्धक ब्लास्तुस को मिलाकर उससे सन्धि का प्रस्ताव किया, क्योकि उनके देश का पालन-पोषण राजा हेरोदेस के देश पर निर्भर था।

नियत दिन आने पर हेरोदेस ने राजसी वस्त्र पहने और सिंहासन पर बैठकर उनके सम्मुख भाषण देने लगा। इसपर जनता पुकार उठी कि यह मनुष्य की वाणी नहीं, देवता की वाणी है। उसी क्षण प्रभु के दूत ने उसपर प्रहार किया। जो महिमा उसको प्रभु को देनी थी, वह उसने नहीं दी। अत हेरोदेस के शरीर मे कीडे पड गए, और वह मर गया।

परमेश्वर का शुभ-सन्देश निरन्तर बढ़ता और फैलता गया।

उधर बरनबास और शाऊल यरूशलम मे अपना सेवा-कार्य पूरा कर लौटे और वे अपने साथ यूहन्ना उपनाम मरकुस को भी लेते आए।

अन्ताकिया की कलीसिया

महानगर अन्ताकिया की स्थानीय कलीसिया मे कई नबी और उपदेशक थे जैसे

बरनबास, शिमौन जो कालुआ अथवा 'नीगर' कहलाता था, कुरेन निवासी लूकियुस, शासक हेरोदेस के साथ पाला गया मनाहेन और शाऊल। जब वे प्रभु की उपासना में लगे हुए थे और उपवास कर रहे थे तो पवित्र आत्मा ने कहा, 'मेरे लिए बरनबास और शाऊल को उस कार्य के लिए अलग करो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है।'

तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना कर उन पर हाथ रखे और उन्हें विदा किया।

१ पौलुस के विद्रोही से प्रेरित बनने की घटना अपने शब्दों में लिखो।
२ क्या आप मानते हैं कि भारत में प्रभु यीशु के उद्धार का शुभ-सन्देश सुनने का सबको अधिकार है?

४३. प्रेरित पौलुस की प्रथम प्रचार-यात्रा

(प्रेरितों के कार्य १३, १४)

यदि आप ध्यान से 'प्रेरितों के कार्य' की पुस्तक पढ़े तो आपको मालूम होगा कि उपरोक्त पुस्तक के अधिकांश भाग में प्रेरित पौलुस की मिशनरी-यात्राओं का वर्णन हुआ है। पहली यात्रा—एसिया माइनर के नगरों की है। प्रेरित पौलुस के अनुभवों को आप स्वयं पढ़िए।

पवित्र आत्मा द्वारा भेजे जाने पर बरनबास और शाऊल सिलूकिया बन्दरगाह गए। वहा से उन्होंने जलयान पर चढ़कर साइप्रस द्वीप की यात्रा की, और सलमीस नगर पहुंचकर यहूदियों के सभागृहों में परमेश्वर का शुभ-सन्देश सुनाया। यूहन्ना उनका सेवक था।

पूरे द्वीप की यात्रा कर वे पाफुस नगर पहुंचे तो वहा उनकी भेंट बारयीशु नामक जादूगर से हुई, जो यहूदी था और झूठा नबी था। वह प्रदेश के शासक सिरगियुस पौलुस के साथ रहता था। सिरगियुस एक विचारशील व्यक्ति था। उसने बरनबास एवं शाऊल को बुलाकर परमेश्वर का शुभ-सन्देश सुनने की इच्छा प्रकट की। पर जादूगर बारयीशु ने, जो यूनानी भाषा में इलीमास कहलाता है, इन लोगों का विरोध किया और सिरगियुस को विश्वास करने से रोकना चाहा।

तब शाऊल ने, जो पौलुस भी कहलाते हैं, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो और उसकी ओर टकटकी लगाकर कहा, 'ओ सब कपट और धूर्तता की खान, शैतान की सन्तान समस्त धार्मिकता के शत्रु, क्या तू प्रभु के सरल मार्गों को कुटिल बनाना नहीं छोड़ेगा? अच्छा तो देख, अब प्रभु का हाथ तेरे विरुद्ध उठा है, तू अन्धा हो जाएगा और कुछ समय तक सूर्य का प्रकाश नहीं देख सकेगा।'

उसी समय उसकी आंखों के सामने धुंधलापन और अन्धकार छा गया, और वह इधर-उधर टटोलने लगा कि कोई उसका हाथ पकड़कर ले चले।

प्रदेश के शासक ने जब यह घटना देखी तब उसने प्रभु की शिक्षाओं पर चकित हो विश्वास किया।

पिसीदिया प्रदेश के यहूदियों के मध्य पौलुस का उपदेश

पौलुस और उनके साथी जलमार्ग द्वारा पाफुस से पम्फूलिया के पिरगा नगर में आए। यूहन्ना उनको वहा छोड़कर यरूशलम लौट गया।

वे पिरगा से चलकर पिसीदिया के अन्ताकिया नगर में आए और विश्राम-दिवस पर सभागृह में जाकर बैठ गए। व्यवस्था-शास्त्र और नबियों की पुस्तकों से पाठ पढ़े जाने के पश्चात्

यीशु के द्वारा प्रत्येक विश्वासी को मुक्ति प्राप्त होती है। इसलिए सावधान, कहीं नबियो का यह कथन तुमपर चरितार्थ न हो

"ओ निन्दा करनेवालो! देखो, चकित हो और नष्ट हो जाओ,
क्योकि मै तुम्हारे समय मे यह कार्य कर रहा हू
जिसे यदि कोई तुम्हे बताए तो तुम उसपर विश्वास नहीं करोगे।"'

पौलुस और बरनबास सभागृह से बाहर निकले। लोगो ने उनसे अनुरोध किया कि अगले विश्राम-दिवस को ये बाते उन्हे फिर सुनाए।

जब सभा विसर्जित हो गई तब बहुत-से यहूदियो और धर्म-परायण नवयहूदियो ने पौलुस और बरनबास का अनुसरण किया। पौलुस और बरनबास ने उनसे बाते की, और उन्हे समझाया कि वे परमेश्वर के अनुग्रह मे बने रहे।

गैरयहूदियों में पौलुस द्वारा प्रचार का आरम्भ

आगामी विश्राम-दिवस को प्रभु का सन्देश सुनने के लिए लगभग सारा नगर उमड़ पड़ा। इस भीड़ को देखकर यहूदियो को बड़ी ईर्ष्या हुई और वे पौलुस की तीव्र निन्दा और उनके कथन का विरोध करने लगे।

इसपर पौलुस और बरनबास ने निर्भय होकर कहा, 'यह अनिवार्य था कि परमेश्वर का शुभ-सन्देश पहले तुम्हे सुनाया जाए। परन्तु तुम उसकी अवहेलना करते और अपने आपको शाश्वत जीवन के अयोग्य मानते हो। अत हम गैरयहूदियो को सन्देश सुनाने के लिए जाते है, क्योकि प्रभु ने हमे ऐसी ही आज्ञा दी है

"मैने तुझे विजातियो के लिए प्रकाश नियुक्त किया है
कि तू पृथ्वी की अन्तिम सीमा तक उद्धार का माध्यम बने।"'

यह सुनकर गैरयहूदी लोग आनन्दित हुए और प्रभु के शुभ-सन्देश की प्रशसा करने लगे, एव जो शाश्वत जीवन के लिए नियुक्त हुए थे, उन्होने विश्वास किया।

प्रभु का शुभ-सन्देश सारे देश मे फैल गया। परन्तु यहूदियो ने धनी और धर्मभीरु महिलाओ को और नगर के नेताओ को उकसाया, और पौलुस तथा बरनबास के विरुद्ध उपद्रव खड़ा कर उनको अपनी सीमा से निकाल दिया। पौलुस और बरनबास भी उनके विरोध मे पैरो की धूल झाड़कर इकुनियुम नगर चले गए।

इधर अन्ताकिया के शिष्यगण आनन्द एव पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे।

इकुनियम में पौलुस और बरनबास

ऐसी ही घटना इकुनियुम नगर मे घटी पौलुस और बरनबास ने यहूदियो के सभागृह मे प्रवेश किया और इस प्रकार सन्देश सुनाया कि यहूदियो और यूनानियो के एक बड़े समुदाय ने यीशु पर विश्वास कर लिया। किन्तु जिन यहूदियो ने विश्वास नही किया था, उन्होने गैर-यहूदियों को उकसाया और भाइयो के विरुद्ध उनका मन बिगाड़ दिया।

बहुत दिनो तक पौलुस और बरनबास वहा रहे और निर्भयतापूर्वक प्रभु का प्रचार करते रहे। प्रभु ने भी उनके हाथो चिह्न और चमत्कार दिखाकर अपने अनुग्रहमय सन्देश को प्रमाणित किया।

अब नगर की जनता मे फूट पड़ गई—कुछ लोग यहूदियो के साथ हो गए और कुछ प्रेरितो के।

जब गैरयहूदियो और यहूदियो ने अपने नेताओ के साथ मिलकर पौलुस और बरनबास को अपमानित करने और पत्थरो से मार डालने का प्रयत्न किया, तो वे परिस्थिति समझकर लुकाउनिया प्रदेश के नगरो, लुस्त्रा और दिरबे, एव उनके आसपास के गावों की ओर तुरन्त [illegible]

लुस्त्रा में

लुस्त्रा नगर में एक मनुष्य पैरों से असमर्थ होने के कारण बैठा हुआ था. वह जन्म से लंगड़ा था और कभी नहीं चला था। वह पौलुस का प्रवचन सुन रहा था।

तब पौलुस ने उसकी ओर एकटक दृष्टि की और यह देखकर कि उसे स्वस्थ होने का विश्वास है, उच्च स्वर में कहा, 'अपने पैरों पर सीधा खड़ा हो।'

वह उछल पड़ा और चलने लगा। पौलुस का यह कार्य देखकर लोग लुकाउनिया की भाषा में चिल्ला उठे 'देवता मनुष्यों का रूप धारण कर हमारे बीच उतर आए हैं।'

उन्होंने बरनबास को ज्यूस देवता कहा, और पौलुस को हिरमेस देवता, क्योंकि वह प्रमुख वक्ता थे। ज्यूस का पुजारी भी, जिसका मन्दिर नगर के सामने था सारी भीड़ के साथ पशु-बलि चढ़ाने के लिए बैलों और पुष्पमालाओं को लेकर मन्दिर के द्वार पर आ पहुंचा।

परन्तु जब प्रेरितों ने अर्थात् बरनबास और पौलुस ने यह सुना तब उन्होंने इस ईश-निन्दा के लिए अपने वस्त्र फाड़े, और भीड़ में कूद पड़े। उन्होंने पुकारकर कहा, 'तुम लोग यह क्या कर रहे हो? हम भी तो तुम्हारे समान दुःख-सुख भोगनेवाले मनुष्य हैं। हम तुम्हें शुभ-सन्देश सुनाते हैं कि निस्सार मूर्तियों से विमुख होकर जीवन्त परमेश्वर पर विश्वास करो जिसने आकाश, पृथ्वी, समुद्र एवं जो कुछ उनमें है, सबको रचा है। उसने बीते युगों में सब जातियों को अपने-अपने पन्थ के अनुसार चलने दिया और फिर भी वह मनुष्य जाति को अपनी भलाई का प्रमाण देता रहा वह आकाश से तुम्हें वर्षा एवं फलवती ऋतुएं प्रदान करता और तुमको भोजन एवं मानसिक आनन्द से तृप्त कर, तुम्हारा उपकार करता रहा।' यह कहकर पौलुस और बरनबास ने लोगों को बड़ी कठिनाई से रोका कि उनके लिए पशु-बलि न चढ़ाएं।

पर अन्ताकिया और इकुनियुम से यहूदी आ पहुंचे। उन्होंने जनता को अपने पक्ष में कर पौलुस पर पत्थरों से प्रहार किया तथा उन्हें मृत समझकर नगर के बाहर खींच ले गए।

जब शिष्य पौलुस के चारों ओर एकत्र हुए तब वह उठे और नगर में गए।

दूसरे दिन बरनबास के साथ वह दिरबे नगर को चले गए।

महानगर अन्ताकिया को लौटना

पौलुस और बरनबास ने दिरबे नगर में शुभ-सन्देश सुनाया और अनेक शिष्य बनाकर लुस्त्रा, इकुनियुम नगर और अन्ताकिया नगर की ओर लौटे। वे शिष्यों के मन सुदृढ़ करते और उन्हें विश्वास में स्थिर रहने को प्रोत्साहित करते थे, और कहते थे कि हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए बहुत संकट झेलने होंगे।

उन्होंने प्रत्येक कलीसिया में धर्मवृद्ध नियुक्त किए और प्रार्थना एवं उपवास कर उन्हें प्रभु यीशु को, जिनपर उन्होंने विश्वास किया था, सेवा के लिए अर्पित किया।

तब पौलुस और बरनबास पिसिदिया से होते हुए पम्फूलिया प्रदेश पहुंचे, और पिरगा नगर में शुभ-सन्देश सुनाकर अतालिया नगर में आए। वहां से वे जलमार्ग द्वारा महानगर अन्ताकिया पहुंचे, जहां उन्हें उस कार्य के लिए परमेश्वर के अनुग्रह को अर्पण किया गया था, जो उन्होंने अब पूरा कर दिया था।

महानगर अन्ताकिया पहुंचकर पौलुस और बरनबास ने कलीसिया को एकत्र किया और उसे बताया कि परमेश्वर ने उनका साथ देकर कैसे-कैसे महान कार्य किए और किस प्रकार गैर-यहूदियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया है।

अन्ताकिया में वे शिष्यों के साथ बहुत दिन तक रहे।

१ परमेश्वर ने प्रेरित पौलुस और बरनबास को प्रथम मिशनरी-यात्रा के लिए किस प्रकार चुना? (पढ़िए, प्रेरितों १३ : १—३)

२. प्रथम मिशनरी-यात्रा की दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटनाएं कौन-सी हैं?

४४. प्रेरित पौलुस की द्वितीय प्रचार-मिशनरी-यात्रा

(प्रेरितो के कार्य १५, १६, १७, १८: १–२१)

प्रेरित पौलुस यरूशलम नगर को लौटे। वहा कलीसिया की धर्ममहासभा का प्रथम सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन का मुख्य विचार-विषय यह था क्या अन्य जातियो, गैरयहूदियो को कलीसिया मे सम्मिलित करना चाहिए? कलीसिया के नेताओ ने प्रेम और प्रार्थना के साथ समस्या का निदान ढूढा। परमेश्वर ने स्वय कलीसिया का मार्ग-दर्शन किया और बताया कि यीशु के उद्धार का शुभ सन्देश केवल यहूदियो के लिए नही है, वरन्, समाज के सब वर्गों, रगों, जातियो, राष्ट्रो और देशो के लिए है।

सम्मेलन की समाप्ति के बाद प्रेरित पौलुस अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर निकल पडते है।

गैरयहूदी मसीही और मूसा की व्यवस्था

अब कुछ लोग यहूदा प्रदेश से अन्ताकिया मे आकर भाइयो को यह सिखाने लगे 'जब तक मूसा की प्रथा के अनुसार तुम्हारा खतना नही होगा, तुम उद्धार प्राप्त नही कर सकते।'

उनका पौलुस और बरनबास के साथ बहुत झगडा और वाद-विवाद हुआ। तब यह निश्चित किया गया कि पौलुस, बरनबास और उनमे से अन्य व्यक्ति इस प्रश्न के निर्णय के लिए यरूशलम मे प्रेरितो और धर्मवृद्धो के पास जाए।

कलीसिया के सदस्य उन्हे कुछ दूर तक पहुचाने गए।

उन्होने फीनीके और सामरी प्रदेश से होकर यात्रा की और वहा सब भाइयो को गैर-यहूदियो के धर्म-परिवर्तन का विवरण देकर आनन्दित किया।

जब वे यरूशलम पहुचे तब कलीसिया ने, प्रेरितो ने और धर्मवृद्धो ने उनका स्वागत किया। पौलुस और बरनबास ने बताया कि परमेश्वर ने उनके माध्यम से कैसे-कैसे महान कार्य किए है।

इसपर फरीसी दल के कुछ लोग, जो विश्वासी हो गए थे, उठकर कहने लगे, 'गैरयहूदी भाइयो का खतना होना चाहिए और उन्हे आज्ञा दी जानी चाहिए कि वे मूसा की व्यवस्था का पालन करे।'

कलीसिया की परिषद्

इस विषय पर विचार करने के लिए प्रेरित और धर्मवृद्ध एकत्र हुए। बहुत वाद-विवाद के पश्चात् पतरस ने उठकर कहा, 'भाइयो, तुम्हे ज्ञात है कि कलीसिया के आरम्भ मे परमेश्वर ने तुममे से मुझे चुना कि गैरयहूदी लोग मेरे मुह से शुभ-सन्देश सुने और विश्वास करे। अन्तर्यामी परमेश्वर ने हमारे समान ही गैरयहूदियो को पवित्र आत्मा देकर उनके पक्ष मे साक्षी दी, तथा विश्वास द्वारा उनका हृदय विशुद्ध कर हम यहूदियो और उनके बीच कोई भेद नही रखा। तो तुम अब परमेश्वर को क्यो परखते हो, और शिष्यो के कन्धो पर व्यवस्था का वह जुआ क्यो लादते हो जिसे न हम और न हमारे पूर्वज ढो सके? हमारा विश्वास है कि प्रभु यीशु के अनुग्रह द्वारा उद्धार होता है जैसे हमारा, वैसे ही उनका।'

यह सुनकर सभा के सब सदस्य चुप हो गए और बरनबास एव पौलुस का विवरण सुनने लगे कि परमेश्वर ने उनके द्वारा गैरयहूदियो मे कैसे महान चिह्न और चमत्कार किए।

जब वे चुप हुए तब याकूब ने कहा, 'भाइयो, मेरी बात सुनो। शिमौन बता चुके है कि

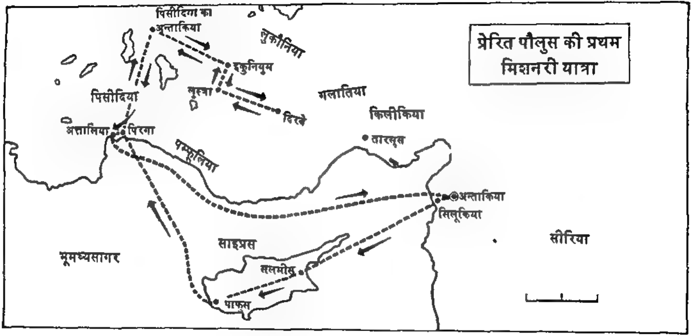
प्रेरित पौलुस की प्रथम
मिशनरी यात्रा
पिसीदिया का
अन्ताकिया
इकुनियुम
लुस्त्रा
दिरबे
पिसीदिया
अत्तालिया
पिरगा
पम्फूलिया
गलातिया
किलीकिया
तारसुस
अन्ताकिया
सिलूकिया
सीरिया
साइप्रस
सलमीस
पाफुस
भूमध्यसागर

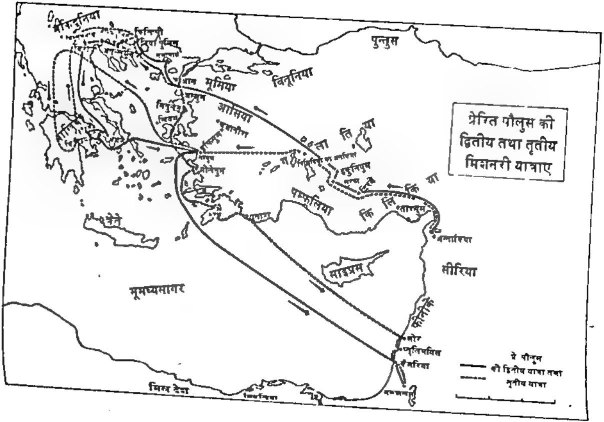
प्रेरित पौलुस की
द्वितीय तथा तृतीय
मिशनरी यात्राएं
पुन्तुस
बितूनिया
मूसिया
आसिया
गलातिया
पम्फूलिया
किलिकिया
सीरिया
साइप्रस
मकिदुनिया
फिलिप्पी
त्रोआस
इफिसुस
मिलेतुस
तारसुस
अन्ताकिया
फीनीके
सूर
कैसरिया
क्रेते
भूमध्यसागर
मिस्र देश
पौलुस की द्वितीय यात्रा तथा
तृतीय यात्रा

किस प्रकार प्रारम्भ में परमेश्वर ने अपने नाम के लिए गैरयहूदियों में से अपने निज लोगों को चुनने की कृपा की। इस बात का समर्थन नबियों की वाणी से होता है, जैसा कि लेख है

"इसके पश्चात् मैं लौटूंगा,
और दाऊद के गिरे हुए निवास-स्थान को बनाऊंगा
उसके खण्डहरों का पुनः निर्माण करूंगा,
और उसे फिर सीधा करूंगा,
जिससे शेष मानवजाति भी शुभ-प्रभु की खोज करे,
अर्थात् वे सब विजातियां जिन्हें मेरा नाम प्रदान किया गया है।
यह उसी प्रभु का कथन है जो सृष्टि के आरम्भ से यह प्रकट करता आया है।"

इस कारण मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि जो लोग गैरयहूदियों में से परमेश्वर की ओर फिर रहे हैं, उन्हें हम उलझन में न डालें, वरन् उन्हें लिख भेजें, कि वे मूर्तियों की अशुद्धताओं से, व्यभिचार से, गला घोंटे हुए पशुओं के मांस से* और उसके खून से पृथक् रहें। क्योंकि प्राचीन-काल से नगर-नगर में मूसा की व्यवस्था के प्रचारक विद्यमान हैं, जो प्रत्येक विश्राम-दिवस पर सभागृहों में उसका पाठ करते हैं।'

परिषद् का निर्णय

तब समस्त कलीसिया, प्रेरितों और धर्मवृद्धों ने निश्चय किया कि अपने बीच से कुछ लोगों को चुनकर पौलुस एवं बरनबास के साथ महानगर अन्ताकिया भेजें। उन्होंने यहूदा उपनाम बरसब्बा और सीलास के हाथ, जो भाइयों में प्रमुख थे, यह पत्र लिखकर भेजा

'अन्ताकिया, सीरिया और किलिकिया-निवासी गैरयहूदी भाइयों को, तुम्हारे भाई प्रेरितों और धर्मवृद्धों की ओर से नमस्कार। हमने सुना है कि हमारे यहां के कुछ यहूदी भाइयों ने अपनी बातों से तुमको व्याकुल कर दिया है और तुम्हारे मन को अशान्त। हमने उनको कोई ऐसा आदेश नहीं दिया था। अतः हमने सर्वसम्मति से निर्णय किया है कि कुछ व्यक्तियों को चुनें और उन्हें प्रिय बरनबास एवं पौलुस के साथ, जिन्होंने अपना जीवन हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर अर्पित कर दिया है, तुम्हारे पास भेजें। हम यहूदा और सीलास को भी भेज रहे हैं। ये स्वयं अपने मुंह से इन बातों का वर्णन करेंगे। पवित्र आत्मा का और हमारा निर्णय है कि निम्नलिखित आवश्यक बातों को छोड़कर तुमपर मूसा की व्यवस्था का और अधिक बोझ न लादा जाए मूर्तियों पर चढ़े प्रसाद से, रक्त के खान-पान से गला घोंटे हुए पशुओं के मांस से और व्यभिचार से बचो। इनसे अलग रहने में तुम्हारी भलाई है। शेष शुभ।'

तब वे सब विदा हुए और महानगर अन्ताकिया पहुंचे। उन्होंने सभा बुलाई और उन्हें पत्र दिया। उसे पढ़कर वे लोग आश्वासन के सन्देश से प्रसन्न हुए। यहूदा और सीलास स्वयं नबी थे। उन्होंने भी अनेक प्रवचनों द्वारा भाइयों को प्रोत्साहित और दृढ़ किया। यहूदा और सीलास कुछ दिन तक अन्ताकिया में रहे। उसके पश्चात् वे अपने भेजनेवालों के पास लौटने के लिए शान्तिपूर्वक भाइयों से विदा हुए।

(पर सीलास ने वहीं रहने का निश्चय किया इसलिए अकेला यहूदा ही लौटा।)**

पौलुस और बरनबास भी अन्ताकिया में रह गए और अन्य बहुत लोगों के साथ प्रभु के वचन की शिक्षा देने और शुभ-सन्देश सुनाते रहे।

पौलुस और बरनबास का अलग होना

कुछ दिन पश्चात् पौलुस ने बरनबास से कहा, 'आओ, जिन-जिन नगरों में हमने प्रभु

*कुछ प्राचीन प्रतियों में ये शब्द नहीं पाए जाते।

**अनेक प्राचीन प्रतियों में यह पद नहीं मिलता

का शुभ-सन्देश सुनाया था, वहां चलें और भाइयों को देखें कि वे कैसे हैं।'

बरनबास की इच्छा थी कि यूहन्ना उपनाम मरकुस को भी ले चलें, परन्तु पौलुस ने यह उपयुक्त नहीं समझा कि जिस व्यक्ति ने उन्हें पम्फूलिया प्रदेश में छोड़ दिया था, और जो उनके साथ सेवा-कार्य पर नहीं गया था, उसे अपने साथ ले जाएं।

इस पर उनमें तीव्र मतभेद हो गया, यहां तक कि वे एक-दूसरे से अलग हो गए। बरनबास मरकुस को लेकर जलमार्ग से साइप्रस द्वीप चले गए।

इधर पौलुस ने सीलास को चुना, और जब भाइयों ने उन्हें प्रभु के अनुग्रह को अर्पण कर दिया, तो वे वहां से चल पड़े और सीरिया देश एवं किलिकिया का भ्रमण कर कलीसिया को विश्वास में सुदृढ़ करने लगे।

पौलुस का तिमुथियुस को साथ लेना

पौलुस दिरबे और लुस्त्रा नगर पहुंचे। वहां तिमुथियुस नामक शिष्य था जो यीशु पर विश्वास करनेवाली किसी यहूदी महिला का पुत्र था, पर उसका पिता यूनानी था। लुस्त्रा और इकुनियुम नगरों में रहनेवाले भाइयों में उसका बड़ा मान था।

पौलुस की इच्छा थी कि उसे अपने साथ ले लें। इसलिए उन स्थानों के यहूदियों के कारण उसका खतना कराया, क्योंकि सब जानते थे कि उसका पिता यूनानी है।

तब पौलुस, सीलास और तिमुथियुस ने नगर-नगर भ्रमण कर गैरयहूदी भाइयों तक उस निर्णय को पहुंचाया जो यरूशलम में प्रेरितों और धर्मवृद्धों ने किया था, कि वे लोग उसका पालन करें।

इस प्रकार कलीसिया विश्वास में सुदृढ़ होती और संख्या में प्रतिदिन बढ़ती गई।

फ्रूगिया प्रदेश, गलातिया प्रदेश और त्रोआस नगर में

पवित्र आत्मा ने पौलुस, सीलास और तिमुथियुस को आसिया प्रदेश में प्रभु का सन्देश सुनाने को मना कर दिया। इसलिए वे फ्रूगिया और गलातिया में होकर निकले।

जब वे मूसिया प्रदेश की सीमा पर पहुंचे तब उन्होंने बिथुनिया प्रदेश में प्रवेश करने का प्रयत्न किया पर यीशु की आत्मा ने अनुमति नहीं दी। अतः वे मूसिया से होकर त्रोआस नगर में आए। वहां पौलुस ने रात में दर्शन पाया कि कोई मकिदुनिया निवासी खड़ा हुआ उनसे यह निवेदन कर रहा है, 'पार उतर कर मकिदुनिया प्रदेश में आइए और हमारी सहायता कीजिए।'

ज्योंही उन्होंने यह दर्शन पाया, हम लोग मकिदुनिया प्रदेश पहुंचने का प्रयत्न करने लगे, क्योंकि हमने जान लिया था कि परमेश्वर उन लोगों में शुभ सन्देश सुनाने के लिए हमें बुला रहा है।

यूरोप में शुभ-सन्देश का आरम्भ : फिलिप्पी

त्रोआस से हमने समुद्र-यात्रा आरम्भ की तो सीधे समुत्राके प्रायद्वीप तक गए, और दूसरे दिन नियापुलिस बन्दरगाह। फिर वहां से फिलिप्पी पहुंचे जो मकिदुनिया प्रदेश का एक प्रमुख नगर* एवं उपनिवेश है।

हम फिलिप्पी नगर में कुछ दिन रहे।

विश्राम-दिवस पर हम नगर-द्वार के बाहर नदी-तट पर गए, क्योंकि हमारा अनुमान था कि वहां कोई प्रार्थना करने का स्थान होगा। हम नदी-तट पर बैठ गए, और वहां एकत्र हुई स्त्रियों से बातचीत करने लगे।

उनमें लुदिया नाम की थुआथीरा नगर की रहनेवाली और बहुमूल्य बैंजनी वस्त्र बेचनेवाली परमेश्वर-भक्त एक महिला थी, जो हमारी बातें सुन रही थी।

* अथवा, 'मकिदुनिया प्रदेश के प्रथम जिले का एक नगर'

प्रभु ने उसका मन खोला कि वह पौलुस के प्रवचनों पर ध्यान दे।

उसने सपरिवार बपतिस्मा लिया और पौलुस से अनुरोध किया 'यदि आप मानते हैं कि मैं प्रभु की विश्वासिनी हूं तो चलकर मेरे घर रहिए।'

यों उसने हमें विवश किया कि हम उसके घर जाएं।

पौलुस और सीलास बन्दीगृह में

एक दिन हम प्रार्थना-स्थान को जा रहे थे तो हमें एक गुलाम लड़की मिली जिसमें भविष्य कहनेवाली आत्मा थी और जो भविष्यवाणी द्वारा अपने स्वामियों के लिए बहुत कुछ कमा लाती थी।

वह पौलुस के और हमारे पीछे लग गई और चिल्लाने लगी, 'ये लोग सर्वोच्च परमेश्वर के सेवक हैं। ये तुम लोगों को उद्धार के मार्ग का सन्देश देते हैं।'

वह बहुत दिनों तक ऐसा ही करती रही।

अन्त में पौलुस तंग आकर उसकी ओर मुड़े और उस आत्मा से बोले, "यीशु मसीह के नाम से मैं तुझे आज्ञा देता हूं इसमें से निकल जा।' उसी क्षण भविष्य कहने वाली आत्मा उस गुलाम लड़की में से निकल गई।

जब लड़की के स्वामियों ने देखा कि उनके लाभ की आशा जाती रही तब उन्होंने पौलुस और सीलास को पकड़ा और उन्हें उच्चाधिकारियों के पास चौक में घसीट कर ले गए। उन्होंने दण्डाधिकारियों के सम्मुख उन्हें ले जाकर कहा, 'ये यहूदी हैं और नगर में उपद्रव मचा रहे हैं। ये ऐसी प्रथाओं का प्रचार करते हैं, जिनको मानना या करना हम रोमनों के लिए निषिद्ध है।'

पौलुस और सीलास के विरुद्ध भीड़ एकत्र हो गई। इस पर दण्डाधिकारियों ने बन्दियों के वस्त्र फाड़ डाले और उनको बेंत लगाने का आदेश दिया। उन्होंने उन्हें बेंतों से बहुत पीटा और बन्दीगृह में डाल दिया, तथा बन्दीगृह के अधीक्षक को आज्ञा दी कि वह सावधानी से उनकी रखवाली करे। उसने यह आदेश पाकर उन्हें बन्दीगृह के भीतरी भाग में रखा और उनके पैर जंजीर में जकड़ दिए।

पौलुस और सीलास की बन्दीगृह से मुक्ति

लगभग आधी रात के समय पौलुस और सीलास प्रार्थना कर रहे थे। वे परमेश्वर की स्तुति गा रहे थे। कारागार के कैदी यह सुन रहे थे। इतने में एकाएक भारी भूकम्प आया जिससे कारागार की नींव हिल गई। क्षण भर में सब द्वार खुल गए और सब कैदी बन्धन-मुक्त हो गए।

कारागार का अधीक्षक नींद से जाग उठा। उसने कारागार के द्वारों को खुला देखा तो यह सोचकर कि कैदी भाग गए, अपनी तलवार खींच ली और आत्महत्या करना चाहा। इस पर पौलुस ने ऊंची आवाज से पुकार कर कहा, 'अपने आपको हानि न पहुंचाओ, क्योंकि हम सब यहां हैं।'

तब वह दीपक मंगाकर भीतर दौड़ आया और कांपता हुआ पौलुस एवं सीलास के चरणों पर गिरा। वह उन्हें बाहर ले गया और बोला, 'सज्जनो, मुझे उद्धार-प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए?'

उन्होंने उत्तर दिया, 'प्रभु यीशु पर विश्वास करो तो तुम एवं तुम्हारा परिवार उद्धार पाएगा।' और उन्होंने उसको और उसके सब परिवार को प्रभु का शुभ सन्देश सुनाया।

कारागार का अधीक्षक रात को उसी घड़ी उनको कमरे में ले गया। वहां उसने उनके घाव धोए और अपने समस्त परिवार सहित तत्काल बपतिस्मा लिया। उसके बाद वह उनको अपने घर ले गया, और वहां उनको भोजन कराया। उसने अपने परिवार के साथ आनन्द मनाया कि उसने परमेश्वर पर विश्वास किया।

दिन होने पर दण्डाधिकारियों ने दो सिपाहियों के हाथ यह आदेश भेजा कि पौलुस और सीलास छोड़ दिए जाएं। बन्दीगृह के अधीक्षक ने पौलुस को बताया, 'दण्डाधिकारियों ने आपको छोड़ देने के लिए आदेश भेजा है। अब बाहर चलिए और शान्ति से जाइए।'

पर पौलुस ने सिपाहियों से कहा, 'उन्होंने हम पर लगाए गए अभियोगों पर विचार किए बिना ही, हम रोमन नागरिकों को लोगों के सामने पीटा और कारागार में डाला, और अब हमें चुपके से निकाल रहे हैं ? ऐसा नहीं होगा। वे स्वयं आकर हमें बाहर ले जाएं।'

सिपाहियों ने दण्डाधिकारियों को ये बातें सुनाईं। जब उन्होंने सुना कि पौलुस और सीलास रोमन नागरिक हैं तब वे डर गए और आकर उन्हें मनाने लगे। वे उन्हें बाहर ले आए और उनसे निवेदन किया कि वे नगर से विदा हो जाएं।

अतः पौलुस और सीलास कारागार से निकल कर लुदिया के घर गए। वे भाइयों से मिले और उन्हें विश्वास में प्रोत्साहित कर वहां से विदा हो गए।

थिस्सलुनीके नगर में

पौलुस और सीलास अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया नगरों में होते हुए थिस्सलुनीके नगर में आए। यहां यहूदियों का सभागृह था। पौलुस अपनी रीति के अनुसार उनकी सभाओं में गए और तीन विश्राम-दिवस पर उनसे शास्त्रों पर वाद-विवाद करते रहे, और उनका अर्थ स्पष्ट कर इस बात का प्रमाण देते रहे कि मसीह का दुःख भोगना और मृतकों में से जी उठना अनिवार्य था, एवं 'यीशु ही, जिनकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूं, मसीह है।'

उनमें से अनेक व्यक्तियों ने—धर्मपरायण यूनानियों के बड़े समूह ने और बहुत सी प्रतिष्ठित स्त्रियों ने भी—विश्वास किया और पौलुस एवं सीलास के साथ सम्मिलित हो गए।

इस पर यहूदी ईर्ष्या से जल उठे और कुछ बाजारू गुण्डों को लेकर एवं भीड़ एकत्र कर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे। वे यासोन के घर पर चढ़ आए और पौलुस और सीलास को नगर-सभा के सम्मुख ले जाने का प्रयत्न किया। उन्हें न पाकर वे यासोन और कई भाइयों को नगर के उच्चाधिकारियों के पास खींच लाए और चिल्लाने लगे, 'संसार में उलट-पलट करनेवाले ये लोग यहां भी आ पहुंचे हैं, और यासोन के अतिथि हैं। ये सब सम्राट के नियम का विरोध करते हैं और कहते हैं कि दूसरा व्यक्ति-यीशु-राजा है।'

जनता और नगर उच्चाधिकारी ये बातें सुनकर विचलित हो उठे। इसलिए उच्चाधिकारियों ने यासोन एवं शेष व्यक्तियों से जमानत ली और उन्हें जाने दिया।

बिरीया नगर में

भाइयों ने पौलुस और सीलास को शीघ्र ही रातोंरात बिरीया नगर में भेज दिया। वे वहां पहुंचने पर यहूदियों के सभागृह में गए। बिरीया के लोग थिस्सलुनीके लोगों की अपेक्षा अधिक उदार-हृदय थे, क्योंकि इन्होंने बड़ी उत्सुकता से प्रभु के सन्देश को ग्रहण किया। वे प्रतिदिन अपने धर्मशास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें ऐसी ही हैं अथवा नहीं। इनमें से बहुतों ने—कुलीन यूनानी महिलाओं ने और बहुत पुरुषों ने—विश्वास किया।

किन्तु जब थिस्सलुनीके के यहूदियों को पता चला कि पौलुस बिरीया में परमेश्वर का सन्देश सुना रहे तो वे वहां भी आकर हलचल मचाने और जनता को भड़काने लगे।

तब भाइयों ने पौलुस को तुरन्त विदा कर दिया कि वह समुद्र-तट पर चले जाएं। पर सीलास और तिमुथियुस वहीं रह गए। पौलुस को पहुंचाने वाले उन्हें अथेने नगर तक ले गए। वहां पौलुस ने उन्हें सीलास एवं तिमुथियुस के लिए यह आदेश दिया कि वे तुरन्त चले आएं। पौलुस को पहुंचाने वाले लोग लौट गए।

अथेने नगर में

पौलुस अथेने नगर में सीलास और तिमुथियुस की प्रतीक्षा कर रहे थे, तो नगर में देवी-देवताओं की मूर्तियों की भरमार देखकर उन्हें बहुत क्षोभ हुआ। इस कारण वह प्रतिदिन सभागृह में यहूदियों और धर्मपरायण व्यक्तियों से तथा चौक में आने-जाने वालों से वाद-विवाद करने लगे। कुछ इपिकूरी* और स्तोइकी** दार्शनिकों से भी उनका वार्तालाप हुआ।

कई बोले, 'यह बकवादी कहना क्या चाहता है?'

दूसरों ने कहा, 'विदेशी देवताओं का प्रचारक प्रतीत होता है'—क्योंकि वह यीशु का और मृतकों के पुनरुत्थान का प्रचार किया करते थे।

इसलिए वे लोग पौलुस को अपने साथ अरियोपगुस की सभा में ले गए। वहां उन्होंने पौलुस से पूछा, 'क्या हम जान सकते हैं कि आप यह कौन-सी नई शिक्षा दे रहे हैं? आप कुछ ऐसी बातें कहते हैं जो हमारे कानों को अनोखी लगती हैं। हम जानना चाहते हैं कि इनका क्या अर्थ है।' अथेने नगर के सब निवासी एवं परदेशी जो वहां रहते थे, नई-नई बातें कहने और सुनने के अतिरिक्त और किसी कार्य में समय नहीं बिताते थे।

अरियोपगुस की सभा में पौलुस का भाषण

तब पौलुस अरियोपगुस सभा के बीच खड़े होकर कहने लगे, 'अथेने नगर के रहनेवाले सज्जनो, मैं देखता हूं कि आप बड़े धर्मप्रेमी हैं। जब मैं घूमता-फिरता आपके उन स्थानों को देख रहा था जहां आप लोग आराधना करते हैं, तब मुझे एक वेदी मिली जिस पर लिखा था, "अज्ञात ईश्वर के लिए।" जिसे आप अनजाने पूजते हैं, मैं आपको उसी का सन्देश सुनाता हूं।

'परमेश्वर ने इस संसार को एवं इसमें स्थित प्रत्येक वस्तु को रचा है। वह आकाश और पृथ्वी का अधिपति है। वह हाथ के बनाए मन्दिरों में निवास नहीं करता। न उसे किसी वस्तु का अभाव है कि मनुष्य उसके लिए काम करें और उसकी आवश्यकता की पूर्ति करें, क्योंकि वह तो स्वयं सबको जीवन, श्वास और सब वस्तुएं प्रदान करता है।

उसने एक ही मूल पुरुष से सब मानव जातियों को उत्पन्न किया है कि वे सारी पृथ्वी पर बस जाएं। उसने इतिहास की अवधि और निवास की सीमाएं निर्धारित कर दी, कि लोग परमेश्वर को ढूंढ़ें और खोजें और कदाचित् उसे प्राप्त करें। फिर भी वह हम में से किसी से दूर नहीं है, क्योंकि "उसी में हम जीवित रहते, चलते-फिरते और अस्तित्व रखते हैं", आपके ही कुछ कवियों ने कहा है "हम भी परमेश्वर की सन्तान हैं।"

'अब यदि हम परमेश्वर की सन्तान हैं, तो हमें समझना चाहिए कि ईश्वर-तत्व सोने, चांदी अथवा पत्थर की प्रतिमा के सदृश नहीं है, ये सब मनुष्य की कला और कल्पना की उपज हैं। परमेश्वर ने अज्ञानता के युगों पर ध्यान नहीं दिया, परन्तु अब उसकी आज्ञा है कि सब जगह सब मनुष्य हृदय-परिवर्तन करें। उसने एक दिन निश्चित कर दिया है जब वह पूर्व निश्चित व्यक्ति द्वारा संसार का धर्मपूर्वक न्याय करेगा, उसने इस व्यक्ति को मृतकों में से जीवित कर सब लोगों को इस बात का प्रमाण दिया है।'

मृतकों के पुनरुत्थान की बात सुनकर कुछ व्यक्ति पौलुस का मजाक उड़ाने लगे। परन्तु कुछ लोग बोले, 'हम इस विषय में आपसे फिर कभी सुनेंगे।'

पौलुस उनके बीच से चले गए। फिर भी कुछ मनुष्यों ने पौलुस का साथ दिया और विश्वास किया। इनमें अरियोपगुस सभा का सदस्य दियुनुसियुस तथा दमरिस नाम की एक महिला थी। इनके अतिरिक्त कुछ और लोग थे जिन्होंने विश्वास किया था।

*भोगवादी विचारधारा के लोग **कठोर नैतिकतावादी

कुरिन्थुस नगर में

इसके पश्चात् पौलुस अथेने से विदा होकर कुरिन्थुस नगर में आए। वहां उनकी भेंट अक्विला नामक एक यहूदी से हुई जिसका जन्म पुन्तुस प्रदेश में हुआ था। वह अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ कुछ समय पूर्व ही इटली देश से आया था। क्योंकि सम्राट क्लौदियुस ने सब यहूदियों को रोम से निकल जाने का आदेश दिया था।

पौलुस उनके यहां गए और एक ही व्यवसाय के होने के कारण उनके साथ रहने और काम करने लगे—उनका व्यवसाय तम्बू बनाना था।

पौलुस प्रत्येक विश्राम-दिवस पर सभागृह में वाद-विवाद करके यहूदियों और यूनानियों दोनों को समझाने का प्रयत्न करते थे।

जब सीलास और तिमुथियुस मकिदुनिया से आ गए तब पौलुस प्रभु का सन्देश सुनाने में तल्लीन हो गए और यहूदियों के समक्ष साक्षी देने लगे कि यीशु ही मसीह हैं। परन्तु ये लोग पौलुस का विरोध करने और निन्दा करने लगे तो उन्होंने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, 'तुम्हारा रक्त तुम्हारे सिर पर। मैं निर्दोष हूं। अब से मैं गैर-यहूदियों के पास जाऊंगा।'

वहां से वह तीतुस युस्तुस नामक परमेश्वर के एक भक्त के यहां आ गए जिसका घर सभागृह के समीप था। सभागृह के अध्यक्ष क्रिसपुस ने सपरिवार प्रभु पर विश्वास किया, और कुरिन्थुस के अनेक निवासियों ने भी विश्वास कर बपतिस्मा लिया।

तब प्रभु ने एक रात पौलुस को दर्शन देकर कहा, 'डर मत, बोलते जा और चुप मत रह। क्योंकि मैं तेरे साथ हूं। कोई मनुष्य तुझ पर आक्रमण कर तुम्हें हानि न पहुंचा सकेगा, क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत लोग हैं।' अतः पौलुस परमेश्वर का सन्देश सुनाते हुए उनके बीच डेढ़ वर्ष रहे।

प्रशासक गल्लियो और पौलुस

जिस समय गल्लियो यूनान देश का प्रशासक था, यहूदियों ने एका कर पौलुस पर आक्रमण किया। वे पौलुस को पकड़ कर न्यायासन के सम्मुख खींच लाए और कहने लगे, 'यह लोगों को परमेश्वर की उपासना की ऐसी पद्धति सिखाता है जो मूसा की व्यवस्था के विरुद्ध है।'

पौलुस बोलने के लिए मुह खोल ही रहे थे कि गल्लियो ने यहूदियों से कहा, 'यहूदियो, यदि यह कोई अन्याय अथवा छल-कपट का मुकदमा होता तो मेरे लिए तुम्हारा अभियोग सुनना बुद्धिसंगत होता। किन्तु यदि यह वाद-विवाद शब्दों और नामों और तुम्हारे धर्मशास्त्र के विषय में है, तो तुम्ही जानो, क्योंकि मैं इन विषयों का न्याय नहीं करना चाहता।'

और उसने उन्हें न्यायासन के सामने से निकाल दिया। तब सब यहूदियों ने सभागृह के अध्यक्ष सोस्थिनेस को पकड़ कर न्यायासन के सम्मुख ही पीटा, पर गल्लियो ने इस पर कुछ ध्यान नहीं दिया।

सीरिया देश को लौटना

इसके पश्चात् पौलुस वहां बहुत दिन रहे। फिर भाइयों से विदा लेकर जलमार्ग द्वारा सीरिया देश को चले गए। उनके साथ प्रिस्किल्ला और अक्विला भी थे। किसी प्रन के कारण पौलुस ने किंख्रिया में अपने सिर का मुंडन करा लिया।

इफिसुस नगर पहुंच कर पौलुस ने प्रिस्किल्ला और अक्विला को वहीं छोड़ दिया, और स्वयं सभागृह में प्रवेश कर यहूदियों से वाद-विवाद करने लगे।

जब उन लोगों ने निवेदन किया कि हमारे साथ कुछ दिन रहें तो उन्होंने स्वीकार नहीं किया। और पौलुस ने यह कहकर उनसे विदा ली, 'यदि परमेश्वर की इच्छा हुई तो तुम्हारे पास फिर आऊंगा ?'

वह इफिसुस से जलमार्ग द्वारा कैसरिया गए और वहां से यरूशलम। यरूशलम में

उन्होंने कलीसिया के सदस्यों से भेंट की और वहा से महानगर अन्ताकिया चले गए।

प्रेरित पौलुस की दूसरी मिशनरी-यात्रा का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

४५. प्रेरित पौलुस की तृतीय मिशनरी-यात्रा

(प्रेरितो के कार्य १८ २२–२८, १९, २०, २१ १–१५)

प्रेरित पौलुस अपनी तृतीय मिशनरी-यात्रा पर निकलने के लिए अधिक समय तक नही ठहरे। वह कैसरिया के बन्दरगाह पर उतरे, और वहा से वह अन्ताकिया के मसीही समाज से मिलने गए। अन्ताकिया से वह फिर यात्रा पर निकल पड़ते है—स्थापित कलीसियाओं का दौरा करते है, तथा जगह-जगह नई कलीसियाओ की स्थापना करते है।

अन्ताकिया मे कुछ दिन ठहर कर पौलुस फिर बाहर निकले और क्रमश गलातिया और फ्रूगिया मे भ्रमण करते हुए शिष्यो को विश्वास मे सुदृढ करते रहे।

इफिसुस नगर में अपुल्लोस

अपुल्लोस नामक एक यहूदी था। उसका जन्म सिकन्दरिया मे हुआ था। वह अच्छा वक्ता और धर्मशास्त्र का पंडित था। वह इफिसुस नगर पहुचा। उसने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी। वह यीशु की कथा को बडे आत्मिक उत्साह से ठीक-ठीक सुनाता और सिखाता था। परन्तु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा से परिचित था।

वह सभागृह मे निर्भीकता से बोलने लगा। प्रिस्किल्ला और अक्विला उसकी बाते सुनकर उसे अपने साथ ले गए और अधिक ठीक रीति से परमेश्वर के मार्ग के विषय मे उसे बताया। उसकी इच्छा थी कि वह समुद्र पार कर यूनान देश को जाए। भाइयो ने उसे इस विषय मे प्रोत्साहित किया और शिष्यो को लिखा कि वे उसका स्वागत करे।

यूनान पहुच कर अपुल्लोस ने उन लोगो की विश्वास मे बडी सहायता की, जो परमेश्वर के अनुग्रह के कारण विश्वासी बन चुके थे, क्योंकि उसने यहूदियो का सबके सामने प्रबल खण्डन कर धर्मशास्त्र से प्रमाणित किया कि यीशु ही मसीह है।

इफिसुस में यूहन्ना बपतिस्मादाता के शिष्य

जब अपुल्लोस कुरिन्थुस मे था तब पौलुस समुद्र से दूरवर्ती प्रदेशो का भ्रमण करते हुए इफिसुस नगर मे आए। वहा उन्हे कुछ शिष्य मिले। उनसे पौलुस ने पूछा, 'क्या विश्वास करते समय तुम्हे पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ ?'

उन्होंने उत्तर दिया, 'हमने तो सुना भी नही कि पवित्र आत्मा है।'

पौलुस ने कहा, 'तो तुमने किसका बपतिस्मा लिया ?'

वे बोले, 'यूहन्ना बपतिस्मादाता का।'

इस पर पौलुस ने उनसे कहा, 'यूहन्ना बपतिस्मादाता हृदय-परिवर्तन का बपतिस्मा देते थे। वह लोगो से कहते थे, 'जो मेरे पीछे आनेवाले है उन पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना।'

यह सुनकर उन्होने प्रभु यीशु के नाम मे बपतिस्मा लिया। जब पौलुस ने उन पर हाथ रखा तब पवित्र आत्मा उन पर उतरा और वे अध्यात्म भाषाए बोलने तथा नबूवत करने लगे। ये सब लगभग बारह पुरुष थे।

इफिसुस नगर में पौलुस

पौलुस सभागृह में गया और तीन महीने तक परमेश्वर के राज्य के विषय में निर्भीकता पूर्वक विवाद करने और लोगों को समझाते रहे। परन्तु जब कुछ लोगों ने कठोर होकर उनकी बात न मानी और सभा में इस मार्ग की निन्दा करने लगे तब पौलुस ने उनको छोड़ दिया और शिष्यों को भी उनसे अलग कर दिया।

अब वह तुरन्नुस नामक व्यक्ति के गोष्ठी-भवन में प्रतिदिन वाद-विवाद करने लगे। यह क्रम दो वर्ष तक चला। यहां तक कि आसिया निवासी, क्या यहूदी, क्या यूनानी, सबने प्रभु का सन्देश सुन लिया।

परमेश्वर पौलुस के हाथों अलौकिक सामर्थ्य के काम करता था। यहां तक कि उनके शरीर से स्पर्श किए हुए अंगोछे और रूमाल रोगियों पर डाल दिए जाते तो उनके रोग दूर हो जाते और दुष्टात्माएं निकल जाती थीं।

कुछ इधर-उधर घूमने-फिरने वाले यहूदी-ओझों ने प्रयत्न किया कि दुष्ट आत्मा से जकड़े हुए लोगों पर प्रभु यीशु के नाम का प्रयोग करें और कहें, 'तुम्हें यीशु की शपथ, जिसका प्रचार पौलुस करते हैं।'

स्किवा नामक यहूदी महापुरोहित के सात पुत्र ऐसा ही करते थे। एक बार दुष्टात्मा ने उनसे कहा, 'यीशु को मैं जानती हूं और पौलुस को भी पहचानती हूं, पर तुम कौन हो?' दुष्टात्मा से जकड़े हुए मनुष्य ने झपट कर उन सबको वशीभूत कर लिया और ऐसा पछाड़ा कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से निकल भागे।

यह बात इफिसुस के रहनेवाले सब यहूदियों पर विदित हो गई। उन सब पर भय छा गया और प्रभु यीशु के नाम का गुणगान होने लगा। जिन्होंने विश्वास किया था, उनमें से अनेकों ने स्पष्ट स्वीकार किया कि वे जादू-टोना करते थे। बहुत से जादू-टोने के व्यवसायियों ने अपनी पोथियां एकत्र कर सबके सम्मुख जला दीं, और जब उनका मूल्य जोड़ा गया तब वह लगभग पचास हजार रुपया निकला। इस प्रकार प्रभु का सन्देश प्रबलता से फैला और प्रभावशाली हुआ।

यह सब होने पर पौलुस ने सकल्प किया, 'मैं मकिदुनिया और यूनान देश होते हुए यरूशलम जाऊंगा और वहां पहुंचने के पश्चात् रोम भी अवश्य देखूंगा।' अत: उन्होंने अपने सहायकों में से दो अर्थात् तिमुथियुस और इरास्तुस को मकिदुनिया भेज दिया और स्वयं कुछ दिन तक आसिया में ठहरे रहे।

इफिसुस में विरोध

इन्हीं दिनों की बात है कि इस मार्ग को लेकर बड़ी हलचल मची। देमेत्रियुस नामक सुनार देवी अरतिमिस के मन्दिर की चांदी की अनुकृतियां बनवाकर कारीगरों को बहुत काम दिलाता था। इनको और ऐसे ही अन्य व्यवसायों के कारीगरों को एकत्र कर उसने कहा, 'सज्जनो, आप जानते हैं कि इस व्यवसाय से हमें कितना धन मिलता है। आप यह भी देख रहे हैं और सुन रहे हैं कि इस पौलुस ने केवल इफिसुस में ही नहीं, वरन् लगभग समस्त आसिया में, एक बड़े समुदाय को समझा-बुझाकर बहका दिया है कि "हाथ के बने ईश्वर, ईश्वर नहीं।" इससे केवल यही डर नहीं कि हमारे व्यवसाय की प्रतिष्ठा जाती रहेगी, वरन् यह भी कि लोग महान देवी अरतिमिस के मन्दिर को तुच्छ समझने लगेंगे, और यह देवी जिसकी पूजा समस्त आसिया और संसार करता है, अपने गौरव से वंचित हो जाएगी।'

यह सुनकर लोगों का क्रोध भड़क उठा। वे चिल्लाने लगे, 'इफिसियों की देवी अरतिमिस महान है!'

नगर में खलबली मच गई। लोगों ने गयुस और अरिस्तर्खुस को, जो पौलुस के सहयात्री और मकिदुनिया-निवासी थे, पकड़ लिया और एक साथ रंगशाला की ओर दौड़ पड़े।

पौलुस भीतर जनता के सम्मुख जाना चाहते थे, पर शिष्यों ने उन्हें जाने न दिया। आसिया के कई उच्चाधिकारी पौलुस के मित्र थे। उन्होंने भी सन्देश भेजकर आग्रह किया, 'आप रंगशाला में जाने का दुस्साहस न करना।'

रंगशाला में कोई कुछ चिल्ला रहा था, कोई कुछ। सभा में कोलाहल मचा हुआ था। अधिकांश लोग यह भी नहीं जानते थे कि वे किस कारण इकट्ठे हुए हैं। तब कुछ लोगों ने सिकन्दर को, जिसे यहूदियों ने खड़ा किया था, भीड़ में आगे बढ़ाया। सिकन्दर ने हाथ से चुप रहने का संकेत कर जनता से अपने पक्ष के समर्थन में कुछ कहना चाहा। परन्तु जब लोगों को मालूम हुआ कि वह यहूदी है तब सबके सब कोई दो घंटे तक एक स्वर में चिल्लाते रहे, 'इफिसियों की अरतिमिस देवी की जय!'

तब नगर के एक मंत्री ने जनसमूह को शान्त कर कहा, 'इफिसुस-निवासी सज्जनो, ऐसा कौन मनुष्य है जो नहीं जानता कि इफिसुस का यह नगर महान देवी अरतिमिस के मन्दिर का और आकाश से अवतरित मूर्ति का सेवक है? यदि यह बात निर्विवाद है तो आपको शान्त रहना चाहिए और बिना सोचे-विचारे कोई काम नहीं करना चाहिए। आप ऐसे मनुष्यों को पकड़ लाए हैं जिन्होंने न तो मन्दिर को अपवित्र किया है और न हमारी देवी का अपमान। यदि देमेत्रियुस और उसके साथी कारीगरों का किसी से कुछ झगड़ा है तो न्यायालय खुले हैं और प्रशासक विद्यमान हैं। वे एक-दूसरे पर अभियोग चलाएं। परन्तु यदि आप कुछ और चाहते हैं तो इसका निर्णय नियमित सभा में किया जाएगा। हमें शंका है कि आज के उपद्रव का दोष कहीं हम पर न मढ़ा जाए, क्योंकि हम इस अव्यवस्था का कारण नहीं बता सकेंगे।' यह कहकर उसने सभा विसर्जित कर दी।

मकिदुनिया, यूनान और त्रोआस में पौलुस

उपद्रव शान्त होने के पश्चात् पौलुस ने शिष्यों को बुलाया और उन्हें विश्वास में प्रोत्साहित कर उनसे विदा ली, और वह मकिदुनिया प्रदेश की ओर चले गए। वह इन भूभागों में लोगों का उत्साह बढ़ाते हुए यूनान देश में आए। वहां तीन महीने बिताने के उपरान्त जब वह जलमार्ग से सीरिया देश को जाने लगे तब उन्हें ज्ञात हुआ कि यहूदी उनके विरुद्ध षड्यन्त्र रच रहे हैं। अतः उन्होंने मकिदुनिया होकर लौटने का निश्चय किया।

उनके साथ पुर्स का पुत्र सोपत्रुस जो बिरीय्या का निवासी था, थिस्सलुनीके का निवासी अरिस्तर्खुस एवं सिकुन्दुस, दिरबे नगर का गयुस, तिमथियुस, तथा आसिया का तुखिकुस और त्रुफिमुस थे। ये हम से पहले चले गए और त्रोआस बन्दरगाह में हमारी प्रतीक्षा करने लगे। हमने अखमीरी रोटी के पर्व के पश्चात् फिलिप्पी से जलयात्रा आरम्भ की और पांच दिन में उनके पास त्रोआस पहुंचे और वहां सात दिन रहे।

पौलुस का त्रोआस से विदा लेना

सप्ताह के पहले दिन हम प्रभु-भोज के लिए एकत्र हुए। पौलुस, जो दूसरे दिन चले जाने को थे, लोगों से बातचीत करने लगे, और यह वार्ता आधी रात तक चलती रही। जिस अटारी पर हम लोग एकत्र हुए थे, वहां बहुत से दीपक जल रहे थे। जब पौलुस देर तक वार्तालाप करते रहे तब यूतखुस नामक एक युवक को जो खिड़की पर बैठा था, गहरी नींद आ गई। वह नींद के झोंके में तिमंजिले से नीचे गिर पड़ा। उसे लोगों ने मृत अवस्था में उठाया। पौलुस नीचे उतरे। झुक कर उसको गले लगाया और बोले, 'घबराओ मत। इसमें अभी प्राण शेष हैं।'

फिर वह ऊपर गए। उन्होंने प्रभु-भोज की रोटी तोड़ी और खाई। उसके पश्चात् वह इतनी देर तक बातें करते रहे कि सवेरा हो गया। तब वह विदा हुए। लोग उस युवक को जीवित ले आए और उन्हें पूर्ण सान्त्वना प्राप्त हुई।

मीलेतुस नगर की यात्रा

हम जलयान द्वारा पहले ही अस्सुस नगर को चल दिए थे। हमारा उद्देश्य था कि वहा पौलुस को जलयान पर चढ़ा लेगे, क्योंकि वह स्थल मार्ग से आने को थे। उन्होंने ऐसा ही प्रबन्ध किया था।

अस्सुस मे पौलुस हमसे मिले। हमने उन्हे जलयान पर चढ़ा लिया और हम मितुलेन द्वीप मे आए।

दूसरे दिन वहा से लगर उठा कर हम खियुस द्वीप के सामने पहुचे, अगले दिन सामुस द्वीप जा लगे* और फिर एक दिन पश्चात् मीलेतुस नगर मे आए।

पौलुस ने निश्चय कर रखा था कि इफिसुस को छोड़ते हुए निकल जाएगे जिससे आसिया प्रदेश मे विलम्ब न हो। वह इसलिए शीघ्रता कर रहे थे कि हो सके तो पिन्तेकुस्त पर्व के दिन यरूशलम मे हो।

इफिसुस के धर्मवृद्धों से विदा लेना

अब पौलुस ने मीलेतुस से इफिसुस सन्देश भेजा और कलीसिया के धर्मवृद्धो को बुलाया। धर्मवृद्ध आए। पौलुस ने उनसे कहा,

'तुम जानते हो कि जिस दिन से मै आसिया पहुचा, मैने अपना सारा समय तुम्हारे साथ किस प्रकार बिताया। किस प्रकार अत्यन्त दीनता से आसू बहा-बहाकर उन सकटो मे, जो यहूदियो के षड्यन्त्रो के कारण मुझ पर आ पड़े थे, मै प्रभु की सेवा करता रहा। जो बाते तुम्हारे हित की थी, उनके विषय मे मै मौन नही रहा, किन्तु सार्वजनिक रूप से तथा घर-घर जाकर तुमको उपदेश देता रहा। मै यहूदियों और यूनानियो दोनो के सम्मुख स्पष्ट साक्षी देता रहा ताकि वे परमेश्वर की ओर मन फिराए और हमारे प्रभु यीशु पर विश्वास करे।

'परन्तु अब मै आत्मा की प्रेरणा से विवश होकर यरूशलम जा रहा हू। वहा मुझ पर क्या बीतेगी, मै नही जानता। केवल यह जानता हू कि प्रत्येक नगर मे पवित्र आत्मा मुझे चेतावनी दे रहा है कि बेड़िया और विपत्तिया मेरी राह देख रही है। मेरे जीवन का मेरे लिए कोई महत्व नही। यदि है तो केवल यह कि मेरी वह दौड़ और वह सेवा पूर्ण हो, जो प्रभु यीशु ने मुझे प्रदान की है, अर्थात् मै परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण शुभ सन्देश की साक्षी देता रहू। अब, देखो, मुझे निश्चय है कि तुम सब, जिनके बीच मे मै परमेश्वर के राज्य का शुभ सन्देश सुनाता रहा, मेरा मुख फिर न देख पाओगे। इस कारण मै आज तुम्हारे सम्मुख साक्षी देता हू कि यदि तुम्हारे विश्वास का पतन होगा तो मै उत्तरदायी नही हूगा। मैने परमेश्वर का सम्पूर्ण अभिप्राय तुम्हे बताने मे कोई बात नही उठा रखी।

'तुम अपना और अपने समस्त रेवड़ का ध्यान रखो। इस रेवड़ पर पवित्र आत्मा ने तुमको रखवाला नियुक्त किया है ताकि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने प्रिय पुत्र के रक्त से प्राप्त किया है।

'मै जानता हू कि मेरे जाने के उपरान्त भयानक भेड़िए तुममे घुस आएगे, जो रेवड़ को न छोड़ेगे।

'हा, तुम्हारे ही मध्य ऐसे लोग उठ खड़े होगे जो शिष्यो को अपना अनुगामी बनाने के लिए उन्हे उलटी-सीधी शिक्षाए देगे। इसलिए जागते रहो और स्मरण रखो कि मैने तीन वर्ष तक दिन-रात आसू बहा-बहाकर तुममे से एक-एक व्यक्ति को समझाया है।

'और अब मै तुमको परमेश्वर के और उसके अनुग्रहपूर्ण वचन के सरक्षण मे छोड़ता हू। वह तुम्हारा निर्माण करने और समस्त भक्तों के साथ तुम्हारा उत्तराधिकार तुम्हे प्रदान करने मे समर्थ है।

'मैने किसी के सोने-चादी और वस्त्रो का लोभ नही किया। तुम स्वय जानते हो कि इन हाथो ने मेरी और मेरे साथियो की आवश्यकताए पूरी की है। मैने सदा तुम्हारे सम्मुख उदाहरण रखा कि हमे किस प्रकार परिश्रम करके निर्बलो को सभालना चाहिए। हमे प्रभु

यीशु के शब्द स्मरण रखना चाहिए जो उन्होंने स्वयं कहे थे, "लेने की अपेक्षा देना धन्य है।"

इतना कहकर पौलुस ने घुटने टेके और सबके साथ प्रार्थना की। तब वे सब फूट-फूटकर रोने और पौलुस के गले लिपटकर उन्हें बार-बार प्यार करने लगे। वे अत्यन्त दुःखी हुए विशेषकर पौलुस की इस बात से कि 'तुम मेरा मुख फिर न देखने पाओगे।'

वे लोग पौलुस को जलयान तक पहुंचाने गए।

मीलेतुस से सोर नगर को

इफिसुस के धर्मवृद्धों से विदा लेकर हमने लंगर उठाया और सीधे मार्ग से होकर हम कोस द्वीप में आए। फिर दूसरे दिन रुदुस द्वीप और वहां से पतारा नगर में। फीनीके प्रदेश जानेवाला एक जलयान हमें मिला। हम उस पर चढ़े और लंगर खोल दिया।

अब हमें साइप्रस द्वीप दिखाई दिया। परन्तु हम उसे अपने बाएं छोड़कर सीरिया की ओर बढ़े और सोर नगर में उतरे, क्योंकि वहां जलयान को अपना भार उतारना था। हमने वहां शिष्यों को ढूंढ़ निकाला और सात दिन तक उनके यहां रहे। उन्होंने आत्मा की प्रेरणा से पौलुस से कहा, 'आप यरूशलम में पैर न रखें।'

जब सात दिन बीत गए तब हमने उनसे विदा ली। सब लोग अपने स्त्री-बच्चों सहित, नगर के बाहर तक हमें पहुंचाने आए। हमने समुद्र तट पर घुटने टेककर प्रार्थना की, और एक-दूसरे से विदा होकर हम जलयान पर चढ़े और वे अपने घर लौट गए।

कैसरिया नगर को

हमने सोर से प्तुलिमयिस नगर पहुंच कर अपनी जलयात्रा समाप्त की और भाइयों से भेंट कर एक दिन उनके यहां रहे। वहां से चलकर हम दूसरे दिन कैसरिया पहुंचे। वहां हम धर्म-प्रचारक फिलिप्पुस के यहां ठहरे। वह 'सात सेवकों' में से एक था। उसकी चार कुंवारी पुत्रियां थीं जो नबूवत किया करती थीं।

हमें वहां रहते-रहते कई दिन बीत गए, तो अगबुस नामक नबी यहूदा प्रदेश से वहां आया। जब वह हमसे मिलने आया तब उसने पौलुस का कटिबन्ध लिया और अपने हाथ-पैर बांध कर कहा, 'पवित्र आत्मा का कहना है कि जिस व्यक्ति का यह कटिबन्ध है उसको यरूशलम में यहूदी इसी प्रकार बांधेंगे और गैरयहूदियों के हाथ में सौंप देंगे।'

जब हमने यह सुना तब हम और वहां के लोग पौलुस से अनुरोध करने लगे कि वह यरूशलम न जाए। पर उन्होंने उत्तर दिया, 'तुम यह क्या कह रहे हो? इस प्रकार रो-रोकर तुम मेरे हृदय को क्यों पीड़ित करते हो? मैं तो प्रभु यीशु के नाम के कारण यरूशलम में बन्दी होने को ही नहीं वरन् मरने को भी तैयार हूं।' जब पौलुस ने न माना तब हम यह कहकर चुप हो गए कि प्रभु की इच्छा पूरी हो। इन दिनों के पश्चात् हमने तैयारी की और यरूशलम को चल दिए।

१. आप क्या सोचते हैं? प्रेरित पौलुस यरूशलम नगर को क्यों लौटना चाहते थे?
२. तृतीय मिशनरी-यात्रा की मुख्य घटना कौन-सी है?

४६. यरूशलम नगर में प्रेरित पौलुस का बन्दी होना

(प्रेरितों के कार्य २१ : १७–४०; २२, २३, २४, २५, २६)

प्रेरित पौलुस की हार्दिक इच्छा थी कि वह रोम नगर जाए, और वहां प्रभु यीशु के उद्धार का शुभ-सन्देश सुनाए। परमेश्वर ने उनकी इच्छा [illegible]

किन्तु आज़ाद मनुष्य के रूप में नहीं, बल्कि बन्दी के रूप में। प्रस्तुत अध्याय में उन घटनाओं का वर्णन हुआ है, जिनके कारण प्रेरित पौलुस बन्दी होते हैं।

यहूदी जाति के मसीहियों को प्रसन्न करने का प्रयत्न

जब हम यरूशलेम पहुंचे तो भाइयों ने हमारा सहर्ष स्वागत किया। दूसरे दिन पौलुस हमें याकूब के पास ले गए। वहां सब धर्मवृद्ध एकत्र थे। पौलुस ने उनका अभिवादन किया और परमेश्वर ने उनके सेवाकार्य द्वारा जो कुछ गैरयहूदियों के बीच में किया था, सब एक-एक करके उन्हें बता दिया। उन्होंने यह सुनकर परमेश्वर की स्तुति की और कहा, 'भाई, तुम देखते हो कि यहूदियों में से कई हज़ार लोगों ने विश्वास कर लिया है, और ये सब मूसा की व्यवस्था के कट्टर समर्थक हैं। इनको बताया गया है कि विजातियों के बीच रहनेवाले यहूदियों को तुम सिखाते हो कि मूसा की शिक्षा त्याग दें, अर्थात् अपने बच्चों का खतना न कराएं और धर्मविधियों के अनुसार आचरण न करें। तो फिर क्या किया जाए? ये अवश्य सुनेंगे कि तुम आ पहुंचे हो। अतः जो हम बताते हैं, वह करो।

'हमारे यहां चार व्यक्ति हैं, जिन्होंने व्रत लिया है। उन्हें ले जाओ और उनके साथ अपने को शुद्ध करो एवं उन्हें धर्मविधि का खर्च दो कि वे अपना मुण्डन कराएं। इस प्रकार सब लोगों को पता लग जाएगा कि तुम्हारे विषय में उन्हें जो कुछ बताया गया है, वह मिथ्या है, और तुम स्वयं मूसा की व्यवस्था को मानते एवं उसपर चलते हो। रहा गैरयहूदियों के विषय में, जिन्होंने विश्वास कर लिया है,—इस सम्बन्ध में हमने निर्णय भेज ही दिया है कि वे मूर्तियों पर चढ़ाए हुए प्रसाद से, रक्त के खान-पान से, गला घोंटे हुए पशुओं के मांस से और व्यभिचार से अपने को बचाएं।'

दूसरे दिन पौलुस इन चार मनुष्यों को लेकर और उनके साथ शुद्ध हो मन्दिर में गए। उन्होंने सूचित किया कि शुद्धिकरण के दिन अर्थात् उनमें से प्रत्येक के लिए बलि चढ़ाने के दिन, कब पूरे होंगे।

यरूशलेम में उपद्रव, पौलुस का बन्दी होना

शुद्धिकरण की सात दिन की अवधि पूर्ण होने को थी। आसिया के यहूदियों ने पौलुस को मन्दिर में देखकर समस्त जनसमूह में उत्तेजना फैला दी और उनको पकड़कर चिल्लाने लगे, 'इस्राएली सज्जनो, सहायता करो। यही वह व्यक्ति है जो सर्वत्र हमारी जाति और मूसा की व्यवस्था तथा इस स्थान के विरुद्ध सबको शिक्षा देता है। इतना ही नहीं, इसने यूनानियों को मन्दिर में लाकर इस पवित्र स्थान को भ्रष्ट कर दिया है।'

वे लोग पौलुस के साथ इफिसुस निवासी त्रुफिमुस को नगर में देख चुके थे, इसलिए उन्होंने समझा कि पौलुस उसे मन्दिर में ले आए हैं।

सारे नगर में हलचल मच गई और लोगों का जमघट लग गया। वे पौलुस को पकड़कर मन्दिर के बाहर घसीट लाए, और तुरन्त द्वार बन्द हो गए। वे लोग पौलुस को मार डालना चाहते थे कि सैन्यदल के सेनापति को सूचना मिली कि सारे यरूशलेम में उपद्रव मचा हुआ है। वह शीघ्र ही सैनिकों और सेना-नायकों को लेकर दौड़ पड़ा। जब लोगों ने सेनापति और सैनिकों को देखा तब पौलुस को पीटना छोड़ दिया। सेनापति ने समीप आकर पौलुस को बन्दी कर लिया, और उन्हें दो बेड़ियों से बांधने की आज्ञा दी।

तब उसने पूछा, 'यह कौन है? इसने क्या किया है?'

भीड़ में से कोई कुछ चिल्ला रहा था और कोई कुछ। हुल्लड़ के मारे वह सच्चाई तक न पहुंच सका। अतः उसने पौलुस को गढ़ में ले जाने की आज्ञा दी।

जब पौलुस सीढ़ी पर पहुंचे तब भीड़ की हिंसक वृत्ति के कारण सिपाहियों को उन्हें उठाकर ले जाना पड़ा क्योंकि भीड़ उनका पीछा कर रही थी, और चिल्ला रही थी 'इसका सफाया करो!'

पौलुस जब गढ़ में प्रवेश करने को थे तब उन्होंने सेनापति से कहा, 'यदि आप अनुमति दें तो मैं आपसे कुछ निवेदन करूं।'

उसने कहा, 'क्या तुम यूनानी जानते हो? क्या तुम वह मिस्र-निवासी नहीं जिसने कुछ दिन पहले विद्रोह किया था और चार हजार कटार बन्द लोगों को अपने साथ निर्जन प्रदेश में ले गया था?'

पौलुस ने कहा, 'मैं यहूदी हूं, किलिकिया के तरसुस का निवासी—मैं किसी छोटे नगर का नागरिक नहीं हूं। आपसे निवेदन है कि मुझे इन लोगों से बातचीत करने की अनुमति दीजिए।'

उसने अनुमति दे दी।

तब पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े होकर लोगों को हाथ का संकेत किया। चारों ओर सन्नाटा छा गया। तब वह इब्रानी भाषा में कहने लगे

यहूदियों के सम्मुख पौलुस का भाषण

'भाइयो और बुजुर्गो!* मेरे पक्ष के समर्थन में मेरा वक्तव्य सुनो।'

जब लोगों ने सुना कि पौलुस उनसे इब्रानी में बोल रहे हैं तब वे और भी चुप हो गए।

पौलुस बोले, 'मैं यहूदी हूं। किलिकिया के तरसुस नगर में मेरा जन्म हुआ, पर मैंने अपनी शिक्षा-दीक्षा इस नगर में आचार्य गमलीएल के चरणों में बैठकर पाई। पूर्वजों की व्यवस्था का मैंने विधिवत् अध्ययन किया और परमेश्वर का ऐसा उत्साही उपासक बना जैसे कि तुम सब इसके आज हो। मैंने इस "मार्ग" के प्रति घोर अत्याचार किया और इसके पुरुषों एवं स्त्रियों को बांध-बांधकर बन्दीगृह में डाला। इस बात के लिए स्वयं महापुरोहित और सब धर्मवृद्ध मेरे साक्षी हैं। एक दिन मैं इनसे भाइयों के नाम अधिकार-पत्र लेकर दमिश्क जा रहा था कि वहां के लोगों को भी बन्दी कर दण्ड दिलाने के लिए यरूशलम लाऊं।

'जब मैं यात्रा करते-करते दमिश्क के निकट पहुंचा तब दोपहर के समय आकाश से एक महान ज्योति एकाएक मेरे चारों ओर चमकी। मैं भूमि पर गिर पड़ा, और किसी की आवाज सुनी। कोई मुझसे कह रहा था, "शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?" मैंने पूछा, "प्रभु, आप कौन हैं?" उसने मुझसे कहा, "मैं नासरत का यीशु हूं जिसे तू सता रहा है?" मेरे साथियों ने ज्योति तो देखी पर जो मुझसे बोल रहा था, उसकी वाणी नहीं सुनी। मैंने कहा, "प्रभु, मैं क्या करूं?" प्रभु ने मुझसे कहा, "उठ और दमिश्क जा। तेरे करने के लिए जो कुछ निश्चित किया गया है, वह सब तुझे वहीं बताया जाएगा।" उस ज्योति के तेज के कारण मुझे कुछ दिखाई न दिया तो मैं अपने साथियों के हाथ पकड़े हुए दमिश्क आया।

'तब हनन्याह नामक एक व्यक्ति, जो मूसा की व्यवस्था के अनुसार धर्मनिष्ठ थे और उस स्थान के यहूदियों में प्रतिष्ठित गिने जाते थे, मेरे पास आए और खड़े होकर मुझसे बोले, "शाऊल भाई, दृष्टि प्राप्त करो!" उसी क्षण मुझे दृष्टि मिल गई और मैंने उन्हें देखा। तब उन्होंने कहा, "हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने पहले से ही तुम्हें मनोनीत कर लिया है कि तुम उसकी इच्छा को जानो, धर्म-पुरुष यीशु के दर्शन करो एवं उनके मुंह की वाणी सुनो, क्योंकि तुम उनकी ओर से सब मनुष्यों के सम्मुख उन बातों के साक्षी होनेवाले हो जो तुमने देखी और सुनी हैं। अब विलम्ब क्यों? उठो, बपतिस्मा लो और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डालो।"

'जब मैं यरूशलम लौटा और मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था, तब मैं ध्यानमग्न हो गया। मैंने देखा कि प्रभु यीशु मुझसे कह रहे हैं, "शीघ्रता कर और तुरन्त यरूशलम से बाहर चला जा, क्योंकि ये लोग मेरे सम्बन्ध में तेरी साक्षी स्वीकार नहीं करेंगे।" मैंने कहा, "प्रभु, इन्हें तो ज्ञात है कि मैं आपके विश्वासियों को बन्दी करता और उन्हें पीटता था; और जब आपके

*अथवा 'पितृगण'

स्तिफनुस की हत्या की जा रही थी, उस समय मैं स्वयं पास खड़ा था और उसकी हत्या में सहमत होकर हत्यारों के वस्त्रों की रखवाली कर रहा था।" किन्तु प्रभु ने मुझसे कहा, 'जा, क्योंकि मैं तुझे गैरयहूदियों के पास दूर-दूर तक भेजूंगा।"'

पौलुस की रोमन-नागरिकता

यहां तक तो लोगों ने पौलुस की बात सुनी। पर अब वे ऊंचे स्वर से चिल्ला उठे, 'इस मनुष्य को पृथ्वी की सतह से मिटा दो। यह जीवित रहने योग्य नहीं।'

जब वे चिल्लाने, वस्त्र उछालने और आकाश में धूल उड़ाने लगे, तब सेनापति ने आदेश दिया, 'इसे भीतर गढ़ में ले चलो और कोड़े मारकर इसकी जांच करो, ताकि मुझे पता चले कि ये लोग इसके विरुद्ध इस प्रकार क्यों चिल्ला रहे हैं।'

जब वे लोग पौलुस को बन्धनों से जकड़ चुके तब पौलुस ने पास खड़े सेनानायक से पूछा, 'क्या यह कानून के अनुसार उचित है कि आप ऐसे व्यक्ति को कोड़े लगाएं, जो रोमन नागरिक है और जिसका अपराध सिद्ध नहीं हुआ है?'

सेनानायक ने यह सुना तो सेनापति के पास जाकर कहा, 'यह आप क्या कर रहे हैं? यह व्यक्ति तो रोमन नागरिक है।'

सेनापति ने पौलुस के पास आकर पूछा, 'मुझे बताओ, क्या तुम रोमन नागरिक हो?'

उन्होंने कहा, 'हां।'

सेनापति बोला, 'मुझे यह नागरिकता भारी धन खर्च करने पर मिली है।'

पौलुस ने कहा, 'पर मैं तो जन्म से ही रोमन हूं।'

तब वे लोग जो उनकी जांच करने को थे, तत्काल दूर हट गए। सेनापति भी यह जानकर सहम गया कि पौलुस रोमन नागरिक है और उसने उनको बन्दी किया है।

पौलुस का धर्ममहासभा के सम्मुख वक्तव्य

दूसरे दिन तथ्य जानने की इच्छा से कि यहूदी पौलुस पर क्यों अभियोग लगाते हैं, सेनापति ने पौलुस के बन्धन खोल दिए। उसने महापुरोहितों एवं समस्त धर्ममहासभा को एकत्र होने की आज्ञा दी, और पौलुस को लाकर उनके सम्मुख खड़ा किया।

पौलुस ने धर्ममहासभा की ओर एकटक दृष्टि से देखा और यह कहा, 'भाइयो, मैंने आज के दिन तक परमेश्वर के लिए शुद्ध अन्तःकरण से जीवन व्यतीत किया है।'

इस पर महापुरोहित हनन्याह ने पास खड़े लोगों को आज्ञा दी कि इसके मुंह पर थप्पड़ मारो।

पौलुस ने उससे कहा, 'अरे चूना पुती दीवार! तुम्हें परमेश्वर मारेगा। तुम व्यवस्था-शास्त्र के ही विरुद्ध मुझे मारने को कहते हो?'

पास खड़े लोग उनसे बोले, 'आप परमेश्वर के महापुरोहित को अपशब्द कह रहे हैं?'

इसपर पौलुस ने क्षमा मांगी, और कहा, 'भाइयो, मुझे मालूम नहीं था कि यह महापुरोहित है। क्योंकि धर्मशास्त्र का लेख है "समाज के किसी धर्मगुरु को अपशब्द न कहना।"'

पौलुस ने यह देखा कि भीड़ में एक दल सदूकियों का है और दूसरा फरीसियों का। अतः उन्होंने महासभा में पुकारकर कहा, 'भाइयो, मैं फरीसी हूं और फरीसियों का वंशज। मृतकों के पुनरुत्थान की आशा के कारण मुझपर अभियोग चलाया जा रहा है।'

उनका यह कहना था कि फरीसी और सदूकी आपस में झगड़ने लगे। उनमें विवाद होने लगा और सभा में फूट पड़ गई। क्योंकि सदूकियों का कहना है कि न पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत और न आत्मा, परन्तु फरीसी इन सबको मानते हैं। अतः बड़ा कोलाहल मचा। फरीसी दल के कुछ शास्त्री उठकर झगड़ने और कहने लगे, 'हम इस व्यक्ति में कोई बुराई नहीं पाते। कौन जाने कोई आत्मा या स्वर्गदूत बोला हो।'

जब विवाद बहुत बढ़ा तब सेनापति को भय हुआ कि कहीं वे पौलुस के टुकड़े-टुकड़े न कर डालें। इसलिए उसने सैन्यदल को आज्ञा दी कि वे नीचे जाकर पौलुस को छुड़ा लें और गढ़ में ले आएं।

उसी रात को प्रभु ने पौलुस के समीप खड़े होकर कहा, 'निर्भय हो! जैसे तूने यरूशलेम में मेरी साक्षी दी है, वैसे ही तुझे रोम में मेरी साक्षी देनी होगी।'

यहूदियों का पौलुस के विरुद्ध षड्यन्त्र

दूसरे दिन सवेरा होने पर यहूदियों ने षड्यन्त्र रचा और मिलकर शपथ ली कि जब तक वे पौलुस की हत्या न कर लेंगे तब तक अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। जिन लोगों ने यह षड्यन्त्र रचा था, उनकी संख्या चालीस से अधिक थी। उन्होंने महापुरोहितों और धर्मवृद्धों के पास जाकर कहा, 'हमने गम्भीर शपथ ली है कि जब तक हम पौलुस की हत्या न कर लेंगे तब तक अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। इसलिए आप लोग धर्ममहासभा और सेनापति को सूचित कीजिए कि वे उसे आपके पास भेज दें, मानो आप उसके सम्बन्ध में और भी ठीक जांच करना चाहते हैं। हम लोग तैयार हैं। उसके यहां पहुंचने से पहले ही हम उसे मार्ग में मार डालेंगे।'

पौलुस के भानजे ने इस षड्यन्त्र के विषय में सुना। वह गढ़ में पहुंचा और भीतर जाकर पौलुस को षड्यन्त्र की खबर दी। पौलुस ने सेना-नायक को बुलाकर कहा, 'इस नवयुवक को सेनापति के पास ले जाइए, क्योंकि इसको उनसे कुछ कहना है।'

वह उसको सेनापति के पास ले गया, और उससे कहा, 'बन्दी पौलुस ने मुझे बुलाकर निवेदन किया कि इस नवयुवक को आपके पास लाऊं, क्योंकि यह आपसे कुछ कहना चाहता है।'

सेनापति उसका हाथ पकड़कर उसे एकान्त में ले गया और उससे पूछा, 'तुम मुझको कौन-सी बात बताना चाहते हो?'

उसने कहा, 'यहूदियों ने मन्त्रणा की है कि वे आपसे निवेदन करें कि कल आप पौलुस को धर्ममहासभा में ले जाएं मानो वे उसके सम्बन्ध में और अधिक जांच करना चाहते हैं। आप उन लोगों की बात मत मानिए, क्योंकि उनमें से चालीस से अधिक लोग पौलुस की घात में हैं। उन्होंने शपथ ली है कि जब तक वे पौलुस की हत्या न कर लेंगे तब तक अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। वे इस क्षण भी तैयार हैं और आपके निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

सेनापति ने पौलुस के भानजे को यह आदेश दिया, 'यह किसी को न बताना कि तुमने इन बातों की सूचना मुझे दे दी है,' और यह कहकर उसको भेज दिया।

पौलुस का कैसरिया को प्रस्थान

सेनापति ने दो सेना-नायकों को बुलाया और उनसे कहा, 'कैसरिया जाने के लिए दो सौ पैदल सैनिक, सत्तर घुड़सवार सैनिक और दो सौ भालैत आज रात नौ बजे तक तैयार करो। घोड़ों का भी प्रबन्ध करो जिनपर पौलुस को बैठाकर वे उन्हें राज्यपाल फेलिक्स के पास सकुशल पहुंचा दें।' उसने राज्यपाल फेलिक्स के नाम इस आशय का पत्र भी लिखा,

'परम श्रेष्ठ राज्यपाल फेलिक्स को क्लौदियस लूसियास का नमस्कार। इस मनुष्य को यहूदियों ने पकड़ लिया था और वे इसे मार डालना चाहते थे। पर मैं सैनिकों सहित जा पहुंचा, और जब मुझे मालूम हुआ कि यह रोमन नागरिक है तो इसे छुड़ा लिया। मैं जानना चाहता था कि इसके विरुद्ध क्या अभियोग है, इसलिए मैं इसे उनकी धर्ममहासभा में ले गया। वहां मुझे पता चला कि वे अपने धर्मशास्त्र के कुछ प्रश्नों के विषय में इसपर अभियोग लगा रहे हैं। पर यह कोई ऐसा अभियोग नहीं है जिसके कारण इसे कारागार में बन्द किया जाए या मृत्यु-दण्ड दिया जाए। मुझे पता चला है कि इस मनुष्य के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा जा रहा है। इसलिए मैं इसे तुरन्त आपके पास भेज रहा हूं। जिन लोगों ने इसपर अभियोग लगाया है

उनको भी मैंने आदेश दिया है कि वे आपके सामने इसके विरुद्ध अभियोग चलाएं।'

सैनिक सेनापति के आदेश के अनुसार पौलुस को लेकर रातों-रात अन्तिपत्रिस नामक कस्बे में आए, और दूसरे दिन घुड़सवार सैनिकों को पौलुस के साथ जाने के लिए छोड़कर गढ़ को लौट गए।

सैनिकों ने कैसरिया जाकर राज्यपाल फेलिक्स को पत्र दिया और पौलुस को भी उसके सम्मुख उपस्थित किया।

पत्र पढ़ने के पश्चात् राज्यपाल ने पूछा, 'तुम किस प्रदेश के हो?' और यह जानकर कि पौलुस किलिकिया के निवासी हैं, उसने कहा, 'जब तुमपर दोष लगानेवाले अभियोगी आ जाएंगे तब मैं तुम्हारे मुकद्दमे की बातें सुनूंगा।' उसने आदेश दिया कि पौलुस को हेरोदेस के गढ़* में पहरे में रखा जाए।

राज्यपाल फेलिक्स के सम्मुख पौलुस का अभियोग

पांच दिन के पश्चात् महापुरोहित हनन्याह कुछ धर्मवृद्धों और तिरतुल्लुस नामक वकील के साथ वहां आया। इन लोगों ने राज्यपाल के सम्मुख पौलुस के विरुद्ध अभियोग-पत्र प्रस्तुत किया। जब पौलुस की पुकार हुई तब तिरतुल्लुस ने उनपर इस प्रकार आरोप लगाया

'परमश्रेष्ठ फेलिक्स, आपके कारण हमारे बीच शान्ति स्थापित है। आपके शासन-प्रबन्ध से हमारी यहूदी जाति के लिए अनेक सामाजिक सुधार आरम्भ हुए हैं—यह बात हम लोग सब प्रकार से सब स्थानों में बड़ी कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करते हैं। मैं आपका अधिक समय नहीं लेना चाहता। अतः आपसे निवेदन करता हूं कि हमारे दो शब्द सुनने की कृपा करें।

'यह मनुष्य संक्रामक रोग के सदृश है। यह संसारभर के सारे यहूदियों में आन्दोलन करता फिरता है। यह नासरी कुपन्थ का नेता है। इसने यहां तक प्रयत्न किया कि हमारे मन्दिर को अपवित्र करे, पर हमने इसे पकड़ लिया।

('इसे हमने अपने व्यवस्था-शास्त्र के अनुसार दण्ड दिया होता, किन्तु सेनापति लूसियास ने आकर इसे हमारे हाथ से छीन लिया, और इसपर अभियोग लगानेवालों को आपके सम्मुख उपस्थित होने की आज्ञा दी।) आप स्वयं इन सब बातों के विषय में इससे पूछताछ करें, तो आपको हमारे अभियोगों की सच्चाई का पता चल जाएगा।'

यहूदियों के धर्मवृद्धों ने भी अभियोग का समर्थन किया और कहा, 'ये बातें ठीक इसी प्रकार हैं।'

राज्यपाल ने पौलुस को बोलने का संकेत किया तो पौलुस ने इस प्रकार उत्तर दिया, 'यह जानकर कि आप अनेक वर्षों से यहूदी जाति के न्यायाधीश हैं, मुझे अपने पक्ष का समर्थन करने में हर्ष हो रहा है।

'आप पता लगा सकते हैं कि मुझे उपासना के लिए यरूशलेम में आए अभी बारह दिन से अधिक नहीं हुए हैं। इन लोगों ने मुझे न तो मन्दिर में, न सभागृहों और न कहीं नगर में किसी से वाद-विवाद करते अथवा जनता में उत्तेजना फैलाते पाया। और न वे इन अभियोगों को, जो वे अब मुझपर लगा रहे हैं, आपके सामने प्रमाणित कर सकते हैं।

'हां, यह मैं आपके सम्मुख स्वीकार करता हूं कि उस "मार्ग" के अनुसार जिसे ये लोग कुपन्थ कहते हैं, मैं अपने पूर्वजों के परमेश्वर की उपासना करता हूं। मूसा की व्यवस्था एवं नबियों ने जो कुछ लिखा है, उस सब पर मैं विश्वास करता हूं। मुझे परमेश्वर से आशा है, जैसे इनको भी है, कि धर्मात्मा और अधर्मी, दोनों का पुनरुत्थान होगा। इसलिए मैं सदा प्रयत्न करता हूं कि परमेश्वर और मनुष्यों की दृष्टि में मेरा अन्तःकरण निर्दोष प्रमाणित हो।

*मूल में 'प्रेतोरियम'

'अनेक वर्षों के पश्चात् मैं अपने लोगों को दान पहुँचाने तथा भेंट चढ़ाने यरूशलेम आया था। मुझे लोगों ने शुद्ध दशा में मन्दिर के भीतर यह सब करते हुए देखा। मैं न तो भीड़ लगाए हुए था और न हुल्लड़ मचा रहा था। परन्तु आसिया के कुछ यहूदी उचित तो यह था कि यदि उन्हें मेरे विरोध में कुछ कहना था तो वे आपके सामने उपस्थित होकर अभियोग लगाते। या फिर ये लोग ही बताएँ कि जब मैं धर्ममहासभा के सम्मुख उपस्थित हुआ तब इन्होंने मुझमें कौन-सा अपराध पाया? हाँ, जब मैं इनके बीच खड़ा था तब ऊँचे स्वर से मैंने यह अवश्य कहा था, "मृतकों के पुनरुत्थान के विषय में आज आपके सामने मुझपर अभियोग चलाया जा रहा है।"

फेलिक्स द्वारा सुनवाई का स्थगित होना

फेलिक्स को इस 'मार्ग' की अच्छी जानकारी थी, इसलिए उसने सुनवाई स्थगित कर दी और कहा, 'सेनापति लूसियास के आने पर मैं तुम्हारे मामले पर अपना निर्णय दूँगा।' फिर उसने सेना-नायक को बुलाकर आज्ञा दी कि पौलुस को पहरे में रखा जाए, पर उन्हें कुछ स्वतन्त्रता रहे और उनके स्वजनों को उनकी आवश्यकता-पूर्ति करने से न रोका जाए।

कुछ दिनों के पश्चात् फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिल्ला को लेकर आया। वह यहूदी जाति की थी। फेलिक्स ने पौलुस को बुलवाया। पौलुस ने उससे मसीह यीशु के विश्वास के सम्बन्ध में बातचीत की, और फेलिक्स ने उनको सुना। परन्तु जब पौलुस धार्मिकता, संयम और आनेवाले दण्ड की चर्चा करने लगे तब फेलिक्स भयभीत हो उठा और बोला, 'अभी तुम जाओ। समय मिलने पर मैं तुम्हें फिर बुलाऊँगा।' उसे पौलुस से घूस में कुछ धन प्राप्त होने की आशा थी। इसलिए भी वह प्रायः उन्हें बुलाकर उनसे बातचीत करता था।

दो वर्ष बीतने पर जब फेलिक्स के स्थान पर फेस्तुस राज्यपाल के पद पर नियुक्त हुआ तब फेलिक्स यहूदियों को प्रसन्न करने के उद्देश्य से पौलुस को बन्दी ही छोड़ गया।

फेस्तुस के सम्मुख पौलुस पर अभियोग

फेस्तुस अपने प्रदेश में आने के तीन दिन पश्चात् कैसरिया से यरूशलेम गया। वहाँ महापुरोहितों और यहूदियों के प्रमुख नेताओं ने पौलुस का मामला उसके सम्मुख रखा और अनुरोध किया, 'आप पौलुस को यरूशलेम में फिर बुलवा लें तो बड़ी कृपा होगी,' क्योंकि वे लोग मार्ग में ही उनकी हत्या कर डालने का षड्यन्त्र रच रहे थे।

फेस्तुस ने उत्तर दिया, 'पौलुस कैसरिया में बन्दी है और मैं वहाँ शीघ्र जानेवाला हूँ। इसलिए आप लोगों में से जो नेता हैं, वे मेरे साथ चलें, और यदि उसने कोई अनुचित काम किया है तो उसपर अभियोग चलाएँ।'

फेस्तुस उनके बीच कोई आठ या दस दिन बिताकर कैसरिया लौटा। उसने दूसरे ही दिन न्यायासन पर बैठकर आज्ञा दी कि पौलुस को उपस्थित किया जाए।

पौलुस के उपस्थित होने पर यरूशलेम से आए हुए यहूदियों ने उन्हें घेर लिया और उनपर अनेक गम्भीर आरोप लगाने लगे, जिन्हें वे प्रमाणित नहीं कर सके।

पौलुस ने अपने पक्ष के समर्थन में कहा, 'मैंने न तो यहूदियों के व्यवस्था-शास्त्र के विरुद्ध, न मन्दिर के विरुद्ध, और न रोमन सम्राट के विरुद्ध कोई अपराध किया है।'

फिर भी फेस्तुस ने यहूदियों को प्रसन्न करने के लिए पौलुस से पूछा, 'क्या तुम चाहते हो कि यरूशलेम जाओ और वहाँ मेरे सम्मुख इन बातों के सम्बन्ध में तुम्हारा न्याय हो?'

इसपर पौलुस ने कहा, 'मैं रोमन सम्राट के न्यायासन के सम्मुख खड़ा हुआ हूँ। यहीं मेरा न्याय होना चाहिए। जैसाकि आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैंने यहूदियों का कोई अनिष्ट नहीं किया। यदि मैं अपराधी हूँ, और यदि मैंने मृत्यु-दण्ड के योग्य कोई काम किया है तो मैं मरने से मुँह नहीं मोड़ता। परन्तु यदि इनके द्वारा मुझपर लगाए गए अभियोग मिथ्या हैं

तो कोई मुझे उनके हाथ नहीं सौंप सकता। मैं सम्राट की दुहाई देता हूँ।'

तब फेस्तुस ने मन्त्रिमण्डल से परामर्श कर उत्तर दिया, 'तुमने सम्राट के यहां दुहाई दी है। तुम सम्राट के यहां ही जाओगे।'

राजा अग्रिप्पा-द्वितीय के सम्मुख पौलुस

कुछ दिन और बीत गए तो राजा अग्रिप्पा और उसकी बहिन बिरनीके फेस्तुस का अभिनन्दन करने कैसरिया में आए। वे वहां कई दिन ठहरे।

फेस्तुस ने पौलुस के विषय में राजा को बताया। उसने कहा, 'फेलिक्स एक मनुष्य को बन्दी छोड़ गए हैं। जब मैं यरूशलम में था तब यहूदियों के महापुरोहितों और धर्मवृद्धों ने उसके सम्बन्ध में मुझे सूचना दी और निवेदन किया कि उसे दण्ड दिया जाए। मैंने उन्हें उत्तर दिया, "हम-रोमनों की प्रथा यह नहीं है कि अभियुक्त को अपने अभियोगियों के सम्मुख अभियोग का खण्डन करने का अवसर न दे और बिना जांच किए उसको दण्ड दे।" वे लोग यहां एकत्र हुए तो मैं अविलम्ब दूसरे ही दिन न्यायासन पर बैठा और उस मनुष्य को उपस्थित करने की आज्ञा दी। अभियोगी खड़े हुए पर उन्होंने उसपर कोई ऐसा गम्भीर अपराध का अभियोग नहीं लगाया, जिसकी मुझे आशा थी। उससे उनका झगड़ा अपने धार्मिक विषयों के सम्बन्ध में था, और किसी यीशु के विषय में भी, जो मर चुका है, परन्तु पौलुस का कथन है कि वह जीवित है। मेरी समझ में नहीं आया कि इन बातों की छानबीन कैसे की जाए। अतः मैंने उससे पूछा कि क्या वह यरूशलम जाना चाहेगा कि वहां इस सम्बन्ध में उसका न्याय किया जाए? परन्तु जब पौलुस ने दुहाई दी कि उसे सम्राट के न्याय एवं निर्णय के लिए संरक्षण में रखा जाए, तो मैंने आदेश दिया कि जब तक मैं उसे सम्राट के पास नहीं भेजता, वह पहरे में रहे।'

इसपर अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, 'मैं भी इस मनुष्य की बातें सुनना चाहता हूं।'

फेस्तुस बोला, 'कल आप सुन लेंगे।'

अतः दूसरे दिन अग्रिप्पा और बिरनीके बड़े धूमधाम के साथ आए। उन्होंने सेनापतियों एवं नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ सभा-भवन में प्रवेश किया।

तब फेस्तुस के आदेश से पौलुस लाए गए।

फेस्तुस ने कहा, 'हे राजन् अग्रिप्पा और समस्त उपस्थित सज्जनो, इस व्यक्ति को देखिए। इसके विषय में सब यहूदियों ने यहां और यरूशलम में भी मुझसे चिल्ला-चिल्लाकर अनुरोध किया कि यह व्यक्ति जीवित रहने योग्य नहीं है। परन्तु मैं इस निश्चय पर पहुंचा हूं कि इस व्यक्ति ने मृत्यु-दण्ड के योग्य कोई काम नहीं किया है। परन्तु जब स्वतः इसी ने सम्राट की दुहाई दी तब मैंने इसे रोम भेज देने का निर्णय किया। मेरे पास इसके विषय में हमारे प्रभु सम्राट को लिखने के लिए कोई निश्चित बात नहीं है। अतएव मैंने आप लोगों के सम्मुख, और विशेषकर, हे राजन अग्रिप्पा, आपके सम्मुख, इस व्यक्ति को उपस्थित किया है कि इसकी जांच करने के उपरान्त लिखने के लिए मुझे कुछ सामग्री मिले। मुझे यह बात तर्कसंगत नहीं लगती कि बन्दी को भेजा जाए और उसके अभियोगों का निर्देश न किया जाए।'

पौलुस का स्पष्टीकरण

राजा अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, 'तुम्हें अपने सम्बन्ध में बोलने की अनुमति है।'

इसपर पौलुस हाथ उठाकर अपना पक्ष-समर्थन करते हुए कहने लगे :

'महाराज अग्रिप्पा, यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आपके सामने उन बातों का खण्डन करने का अवसर मिला जिनका अभियोग यहूदी मुझपर लगाते हैं। आप यहूदियों की सब प्रथाओं और विवादों से विशेष रूप से परिचित हैं। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि आप मेरी बात धैर्यपूर्वक सुनने की कृपा करें।

'मेरा जीवन आरम्भ से ही अपनी जाति के मध्य और यरूशलम मे रहते हुए बीता है। मेरा जीवन युवावस्था से ही कैसा रहा, इसे सब यहूदी जानते है। वे मेरे पुराने परिचित है। यदि वे साक्षी देना चाहे तो दे सकते है, क्योंकि उन्हे मालूम है कि मै यहूदी धर्म के सबसे कठोर पन्थ का अनुयायी था। मैने फरीसी सम्प्रदाय के अनुसार जीवन बिताया है। परन्तु अब मुझपर अभियोग चल रहा है, क्योकि मुझे उस प्रतिज्ञा की आशा है जो परमेश्वर ने हमारे पूर्वजो से की। इसी आशा की पूर्ति के लिए हमारे बारह कुल तत्परता से रात-दिन परमेश्वर की उपासना करते है; और महाराज अग्रिप्पा, इसी आशा के लिए यहूदी मुझपर दोष लगाते है। आप लोगो को यह बात अविश्वसनीय क्यो लगती है कि परमेश्वर मृतको को जीवित करता है?

'मै स्वयं सोचता था कि नासरत निवासी येशु के नाम के विरुद्ध मुझे बहुत कुछ करना है। मैने यरूशलम मे ऐसा ही किया भी। मैने महापुरोहितों से अधिकार-पत्र लेकर, अनेक भक्तो को कारागार मे डाल दिया, और जब उनकी हत्या की गयी तो उसमे मेरी सहमति थी। मैने अनेक सभागृहो मे प्रयत्न किया कि भक्तो को मार-मारकर उन्हे येशु की निन्दा करने के लिए विवश करूं। मै क्रोध के कारण इतना पागल हो गया था कि विदेश के नगरो मे भी जाकर उनको सताता था।

'ऐसी स्थिति मे महापुरोहितो से अनुमति और अधिकार प्राप्त कर मै दमिश्क नगर को जा रहा था। महाराज, दोपहर के समय मार्ग मे मुझे एक दिव्य ज्योति दिखाई दी जो सूर्य से भी अधिक प्रकाशवान थी। वह मेरे तथा मेरे सहयात्रियो के चारो ओर चमक रही थी।

'हम सब भूमि पर गिर पड़े और मैने सुना कि एक वाणी इब्रानी भाषा मे मुझसे कह रही है, "शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यो सताता है? तू अपने पैरो पर क्यों कुल्हाड़ी मार रहा है?* तुझे ही चोट लगेगी।"

'मैने पूछा, "प्रभु, आप कौन है?"

'प्रभु ने कहा, "मै येशु हू, जिसे तू सता रहा है। परन्तु उठ और अपने पैरो पर खड़ा हो। मैने तुझको इस कारण दर्शन दिया है कि जो बाते मैने तुझे दिखाई है और भविष्य मे दिखाऊगा, उन सबके लिए तुझको मै अपना सेवक और साक्षी नियुक्त करू। मै इस्राएली लोगो से तेरी रक्षा करूगा, और उन गैरयहूदियो से भी जिनके पास मै तुझको भेज रहा हू। मै तुझको भेज रहा हूं ताकि तू उनकी आखे खोल दे, जिससे वे अन्धकार से ज्योति की ओर, तथा शैतान के अधिकार से मुक्त हो परमेश्वर की ओर फिरे, वे अपने पापो की क्षमा पाए और उन लोगो के बीच स्थान प्राप्त करे, जिन्होने मुझपर विश्वास किया है और जो अपने इस विश्वास के द्वारा पवित्र हुए है।"

'फलत महाराज अग्रिप्पा, मैने इस दिव्य दर्शन की आज्ञा का उल्लघन नही किया। परन्तु पहले दमिश्क मे और तब यरूशलम तथा समस्त यहूदा प्रदेश एव गैरयहूदियो मे प्रचार करता रहा, "हृदय-परिवर्तन करो। परमेश्वर की ओर लौटो, और हृदय-परिवर्तन के अनुरूप कार्य करो।" यही कारण था कि यहूदियो ने मुझे मन्दिर मे पकड़ा और मार डालने की चेष्टा की। किन्तु परमेश्वर की सहायता से मै आज तक विद्यमान हू, और छोटे-बड़े सबके सम्मुख साक्षी दे रहा हू। जिन बातो की भविष्यवाणी नबियो ने और मूसा ने की, उनसे अधिक मै कुछ नही बताता, अर्थात् यह कि मसीह को दुःख उठाना था और यह कि वही सर्वप्रथम मृतको मे से जीवित हुए और उन्होने इस्राएली जाति को एव गैरयहूदियो को ज्योति का सन्देश दिया।'

राजा अग्रिप्पा को पौलुस का निमन्त्रण

जब पौलुस इस प्रकार अपने पक्ष का समर्थन कर रहे थे तब फेस्तुस उच्च स्वर मे पुकार

* मूल मे, 'अकुश पर पद-प्रहार करते हो'

प्रेरित पौलुस की रोम-यात्रा
काला सागर
इटली
सिसली
माल्टा
मकिदुनिया
गलातिया
लूकिया
पम्फूलिया
किलिकिया
सीरिया
साइप्रस
भूमध्यसागर
लिबिया
मिस्र

उठा, 'फेस्तुस, तुम पागल हो। गहन अध्ययन ने तुम्हें पागल कर दिया है।'

पौलुस ने उत्तर दिया, 'परम श्रेष्ठ फेस्तुस, मैं पागल नहीं हूं। मेरी बात सच और विवेकपूर्ण है। महाराज इस विषय को जानते हैं। उन्हीं के सम्मुख मैं निस्संकोच हो बोल रहा हूं। मुझे निश्चय है कि उनसे कोई बात छिपी नहीं, क्योंकि यह घटना किसी कोने में नहीं हुई। महाराज अग्रिप्पा, क्या आप नबियों पर विश्वास करते हैं? मैं जानता हूं कि आप विश्वास करते हैं।'

इसपर अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, 'क्या तुम अनायास* ही मेरे मुंह से कहलवाओगे कि मैं मसीही हूं?'

पौलुस ने उत्तर दिया, 'अनायास हो या सप्रयास, परमेश्वर करे कि न केवल आप, वरन् ये सब, जो आज मेरी बातें सुन रहे हैं, इन बेड़ियों को छोड़ मेरे समान बन जाएं।'

तब राजा अग्रिप्पा, राज्यपाल फेस्तुस और बिरनीके तथा उनके साथ बैठे हुए व्यक्ति उठ गए, और एकान्त में जाकर एक-दूसरे से बातें करने लगे। उन्होंने कहा, 'इस व्यक्ति ने मृत्यु-दण्ड अथवा कारागार में डाले जाने के योग्य कोई काम नहीं किया है।'

अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, 'यदि इस मनुष्य ने सम्राट की दुहाई न दी होती तो मुक्त हो सकता था।'

पहले पढ़िए, प्रेरितो २६ २३–२४। मसीही धर्म की महानतम सच्चाई क्या है जिसके कारण राज्यपाल फेस्तुस को कहना पड़ा कि प्रेरित पौलुस पागल हो गए हैं?

४७. रोम नगर को प्रस्थान

(प्रेरितों के कार्य २७, २८)

सम्भवत. यह प्रेरित पौलुस की चौथी मिशनरी-यात्रा कही जानी चाहिए। प्रेरित पौलुस बन्दी के रूप में रोम नगर जाते हैं। 'प्रेरितों के कार्य' पुस्तक में हमें प्रेरित पौलुस के आगे के जीवन का वर्णन पढ़ने को नहीं मिलता। हम यह नहीं जान पाते हैं कि उनके जीवन का अन्त कैसे हुआ। फिर भी ध्यान दीजिए, 'प्रेरितों के कार्य' पुस्तक पौलुस का जीवन-चरित्र नहीं है, लेकिन मसीही कलीसिया के जन्म और विकास का इतिहास है। दूसरी बात यहीं पर कलीसिया का अन्त नहीं हो जाता। कलीसिया आज भी सारे संसार में विकसित हो रही है, और स्वयं को मसीह के पुनरागमन के लिए तैयार कर रही है, क्योंकि यीशु पृथ्वी पर फिर आनेवाले हैं।

जब यह निश्चित हो गया कि हम जलयान द्वारा इटली देश जाएंगे तब पौलुस और अन्य कई बन्दीजन यूलियुस नामक सेनानायक के हाथ सौंप दिए गए। वह सम्राट औगुस्तुस के सैन्यदल का था।

हम लोग अद्रमुत्तियुम नगर के एक जलयान पर चढ़े जो आसिया के तटवर्ती स्थानों पर होता हुआ इटली देश जानेवाला था। हमने लंगर खोल दिया। मकिदुनिया प्रदेश के थिस्स-लुनीके नगर का रहनेवाला अरिस्तर्खुस नामक एक विश्वासी भी हमारे साथ था।

दूसरे दिन हमने सीदोन में लंगर डाला। वहां यूलियुस ने पौलुस के प्रति कृपा दिखाई और उन्हें अपने मित्रों के यहां जाने एवं उनकी सहायता स्वीकार करने की अनुमति दे दी।

*अथवा, 'अल्प समय में ही'

वहा से लगर उठाकर हम साइप्रस द्वीप की आड मे जलयान खेने लगे, क्योंकि वायु प्रतिकूल थी। जब हम किलिकिया और पम्फूलिया के तटवर्ती समुद्र को पार कर चुके तब लूकिया के मूरा नामक स्थान पर पहुचे। वहा सेना-नायक को सिकन्दरिया नगर का एक जलयान मिला जो इटली देश को जा रहा था।

उसपर उसने हमे चढ़ा दिया। हम लोग कई दिनो तक धीरे-धीरे जलयान खेते हुए कठिनाई से कनिदुस प्रायद्वीप के सम्मुख पहुचे। अब वायु हमे आगे बढ़ने से रोक रही थी, इसलिए हम सलमोन अन्तरीप के समीप क्रेते द्वीप की आड मे जलयान खेने लगे। उसके किनारे-किनारे खेते हुए हम कठिनाई से 'मनोहर पोताश्रय' नामक स्थान पर पहुचे। वहां से लसया नगर निकट है।

पर्याप्त समय बीत चुका था, यहा तक कि उपवास का प्रायश्चित्त दिवस भी बीत गया था। इसलिए जल-यात्रा करना खतरे से खाली नही था। अत पौलुस ने लोगों को परामर्श दिया, 'मित्रो, मै देख रहा हू कि इस जलयात्रा में हमपर विपत्ति आएगी, और हमें न केवल माल और जलयान की ही नही, वरन् प्राणो की भी हानि उठानी पड़ेगी।'

किन्तु सेना-नायक ने पौलुस के कथन की अपेक्षा कप्तान और जलयान के मालिक की बातो पर अधिक ध्यान दिया।

यह बन्दरगाह शीत ऋतु के लिए उपयुक्त नही था। इस कारण अधिकांश लोगो की सम्मति हुई कि यहा से लगर खोल दे और किसी न किसी प्रकार फीनिक्स पहुचकर वहा शीत-ऋतु बिताए। यह क्रेते द्वीप का एक बन्दरगाह है जिसका मुख दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम की ओर है।

भूमध्यसागर में तूफान

जब दक्षिण-पवन मन्द-मन्द बहने लगा तब उन्होंने सोचा कि हमारा उद्देश्य सफल हो गया। उन्होने लगर उठाया और क्रेते के किनारे-किनारे चल पडे। पर शीघ्र ही स्थल की ओर से यूरकुलीन नामक तूफान उठा। जलयान तूफान मे फस गया और वह उसका सामना करने मे असमर्थ हो गया। अत हमने उसे बहने दिया।

कौदा नामक एक छोटे द्वीप की आड मे बहते-बहते हम कठिनाई से डोंगी को ऊपर खींच सके। उसे उठाने के पश्चात् नाविको ने अनेक उपाय करके जलयान को नीचे से बाधा और सुरतिस नामक रेतीली खाडी मे फस जाने के भय से पाल उतारकर योंही बह चले।

हम तूफान से बुरी तरह झकझोर खा रहे थे, इसलिए वे दूसरे दिन समुद्र मे माल फेंकने लगे। तीसरे दिन उन्होने अपने ही हाथो जलयान के रस्से आदि भी फेंक दिए। बहुत दिनो तक सूर्य और तारो के दर्शन नही हुए एव तूफान का वेग भी वैसा ही रहा। अब हमे अपने बचने की कोई आशा न रही।

पौलुस का आश्वासन

लोगो ने कई दिनो से भोजन नही किया था। अत पौलुस ने उनके बीच मे खडे होकर कहा, 'मित्रो, उचित तो यह था कि तुम मेरी बात पर ध्यान देते और क्रेते से लगर न उठाते। तब न तो यह विपत्ति हम पर आती और न यह हानि उठानी पडती। तो भी मेरा तुमसे अनुरोध है कि धैर्य रखो। तुम लोगो मे से कोई भी व्यक्ति नहीं मरेगा, केवल जलयान नष्ट हो जाएगा। जिस परमेश्वर का मै सेवक हू और जिसकी उपासना मै करता हू, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे समीप खडे होकर कहा, "पौलुस, डर मत। तू सम्राट् के सम्मुख अवश्य उपस्थित होगा। और देख, परमेश्वर ने इन सब सहयात्रियो का जीवन तेरे हाथ मे सौंप दिया है।" इस कारण, धैर्य रखो। मुझे परमेश्वर पर विश्वास है। जैसा उसने मुझसे कहा ठीक वैसा ही होगा। हम अवश्य किसी द्वीप से जा लगेगे।'

जब चौदहवीं रात आई और हम आद्रिया सागर में इधर-उधर भटक रहे थे तब लगभग आधी रात को नाविकों ने अनुभव किया कि हम किसी देश के निकट पहुंच रहे हैं। उन्होंने थाह ली तो सैंतीस मीटर जल पाया। थोड़ा आगे चलकर फिर उन्होंने थाह ली तो छब्बीस मीटर। तब इस डर से कि कहीं चट्टानों से न टकरा जाएं, उन्होंने जलयान के पिछले भाग से चार लंगर डाले और प्रातःकाल होने की प्रतीक्षा करने लगे। किन्तु नाविक जलयान से भागने का विचार कर रहे थे और अगले भाग से लंगर डालने के बहाने वे डोंगी को समुद्र में उतार चुके थे। अतः पौलुस ने सेना-नायक और सैनिकों से कहा, 'यदि ये नाविक जलयान से भाग गए, तो आप लोग भी नहीं बच सकते।' इसपर सैनिकों ने रस्सियां काटकर डोंगी गिरा दी।

जब दिन निकलने को हुआ तब पौलुस ने उन सबको भोजन करने के लिए उत्साहित किया। उन्होंने कहा, 'आज चौदह दिन हो गए, तुम लोग चिन्ता के कारण निराहार हो। तुमने कुछ नहीं खाया। मेरा तुमसे अनुरोध है कि कुछ तो भोजन करो। इससे तुम जीवित रहोगे। मित्रो, जैसा परमेश्वर ने कहा है, तुममें से किसी की कुछ भी हानि न होगी।' यह कहकर पौलुस ने रोटी ली। उन्होंने सबके सामने परमेश्वर को धन्यवाद दिया और तोड़कर खाने लगे। इससे सबको आश्वासन मिला और वे भी भोजन करने लगे। जलयान पर हम सब दो सौ छिहत्तर* प्राणी थे। भोजन से तृप्त हो जाने पर लोगों ने समुद्र में गेहूं फेंक दिया, और जलयान को हलका कर दिया।

नौका डूबी

दिन निकला। परन्तु वे उस भूमि को न पहचान सके। तब उनकी दृष्टि एक खाड़ी पर पड़ी जिसका तट रेतीला था। उन्होंने विचार किया कि यदि हो सके तो इसी में जलयान को लगा दिया जाए। उन्होंने लंगर काटकर समुद्र में डाल दिए और साथ ही पतवारों के बन्धन ढीले कर दिए। तब वे वायु के सम्मुख पाल चढ़ाकर तट की ओर चले। परन्तु जलयान जलमग्न बालू में धस गया। अतः उन्होंने जलयान को वैसे ही रहने दिया। उसका अगला भाग गड़कर अचल हो गया, पर पिछला भाग लहरों के थपेड़ों से टूटने लगा। सैनिकों का विचार था कि बन्दियों को मार डाला जाए जिससे कोई तैरकर भाग न सके। परन्तु सेना-नायक ने पौलुस के प्राण बचाने के उद्देश्य से उनकी योजना रोक दी। उसने आज्ञा दी कि जो तैर सकते हैं, वे पहले जल में कूदकर भूमि पर निकल जाएं, और शेष लोग लकड़ी के पटरों और जलयान की टूटी वस्तुओं के सहारे जाएं। इस प्रकार हम सब भूमि पर सकुशल पहुंच गए।

माल्टा द्वीप में पौलुस का स्वागत

इस प्रकार बच जाने के उपरान्त हमें पता चला कि उस द्वीप का नाम माल्टा है। वहां के निवासियों ने हमारे साथ बड़ा उदार व्यवहार किया। उन्होंने आग जलाकर हमारा स्वागत किया। वर्षा होने लगी थी और ठण्ड भी थी।

जब पौलुस ने लकड़ियों का गट्ठा एकत्र कर आग पर रखा था तब ताप के कारण एक सर्प निकला और उनके हाथ से लिपट गया। वहां के निवासियों ने उस जन्तु को उनके हाथ से लटकते देखा तो वे एक-दूसरे से कहने लगे, 'निश्चय, यह कोई हत्यारा है। यह समुद्र से बच निकला था पर न्याय की देवी** इसे जीने नहीं देना चाहती।'

पौलुस ने उस सर्प को अग्नि में झटक दिया, और उन्हें कोई हानि नहीं पहुंची। लोगों का अब भी अनुमान था कि उनका शरीर सूज जाएगा और वह सहसा गिरकर मर जाएंगे। जब वे देर तक प्रतीक्षा करते रहे और देखा कि पौलुस का कुछ अनिष्ट न हुआ तो उन लोगों का विचार बदल गया और वे कहने लगे, 'यह कोई देवता है।'

*कुछ प्रतियों के अनुसार, 'छिहत्तर'

**अक्षरशः 'दिके'

माल्टा द्वीप के मुखिया का नाम पुबलियुस था। उसके खेत आसपास ही थे। उसने हमारा स्वागत किया और तीन दिन तक प्रेमभाव से हमारा आतिथ्य किया। पुबलियुस [illegible] पिता ज्वर तथा उदर रोग से पीड़ित था। पौलुस ने उसके पास घर में जाकर प्रार्थना की और उसपर हाथ रखकर उसे स्वस्थ कर दिया। जब लोगों को यह मालूम हुआ तब द्वीप के अन्य रोगी भी आकर स्वस्थ होने लगे। उन्होंने हमारा बहुत आदर किया।* जब हम चलने लगे तब हमारे लिए आवश्यक वस्तुएं लाकर जलयान में रख दीं।

माल्टा द्वीप से रोम की ओर

तीन महीने के पश्चात् हम सिकन्दरिया के एक जलयान पर चढ़े, जिसने इस द्वीप में शीतकाल बिताया था और जिसका चिह्न था दियुसकूरी**। हम सुरकूसा बन्दरगाह में लंगर डालकर वहां तीन दिन ठहरे। वहां से किनारे-किनारे जलयान पर रेगियुम बन्दरगाह पहुंचे। वहां एक दिन ठहरे, और जब दक्षिण-पवन चलने लगा, तो दूसरे दिन पुतियुली बन्दरगाह आए। वहां विश्वासी भाइयों से हमारी भेंट हुई। उनके अनुरोध पर हम सात दिन उनके यहां ठहरे। इस प्रकार हम रोम तक आ पहुंचे। वहां भाई हमारी खबर सुनकर हमसे मिलने के लिए अप्पियुस के चौक और 'तीन सराय' नामक स्थान में आए। उन्हें देखकर पौलुस को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। उन्होंने परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

हम रोम पहुंचे। पौलुस को अनुमति मिल गई कि वह एक सैनिक के साथ, जो उनकी रखवाली के लिए नियुक्त था, अपने निजी स्थान में रह सकते हैं।

रोम के यहूदियों से वार्तालाप

तीन दिन पश्चात् पौलुस ने यहूदियों के प्रमुख नेताओं को बुलाया। जब वे आए तब पौलुस ने उनसे कहा, 'भाइयो, मैंने अपनी यहूदी जाति अथवा पूर्वजों की प्राचीन प्रथाओं के विरुद्ध कोई काम नहीं किया। फिर भी यरूशलेम के यहूदी धर्मगुरुओं ने मुझे बन्दी बनाकर रोमनों के हाथ दे दिया है। रोमन उच्चाधिकारियों ने मेरी जांचकर मुझे मुक्त करना चाहा, क्योंकि मैंने मृत्यु-दण्ड के योग्य कोई काम नहीं किया था। परन्तु यहूदियों के विरोध से विवश होकर मुझे सम्राट की दुहाई देनी पड़ी—यह नहीं कि मुझे अपने ही लोगों पर अभियोग लगाना था। इसी कारण मैंने आपको बुलाया है कि आपसे मिलूं और बातचीत करूं। मैं इस्राएली राष्ट्र की आशा का समर्थक हूं। इसलिए मैं इन जंजीरों से बंधा [illegible]।'

उन्होंने पौलुस से कहा, 'हमें यहूदा प्रदेश से आपके सम्बन्ध में कोई पत्र नहीं मिला, और न वहां से आए हुए भाइयों में से किसी ने आपके विषय में सन्देश दिया अथवा कोई बुरी बात कही। हम आपके विचार सुनना चाहते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि इस पन्थ का सब जगह विरोध हो रहा है।'

उन्होंने पौलुस के लिए एक दिन निश्चित किया और बड़ी संख्या में उनके यहां आए। पौलुस ने प्रातःकाल से सन्ध्या तक परमेश्वर के राज्य की साक्षी दी और उन्हें यीशु के सम्बन्ध में मूसा की व्यवस्था तथा नबियों की पुस्तकों से समझाया।

कुछ उनकी बातों से सहमत हुए, पर कुछ अविश्वासी बने रहे। जब वे आपस में एकमत नहीं हुए और विदा होने लगे, तब पौलुस ने उनसे यह बात कही: 'पवित्र आत्मा ने नबी यशायाह के द्वारा तुम्हारे पूर्वजों से ठीक कहा है,

"इन लोगों के पास जाकर कहो,
तुम सुनोगे अवश्य, पर न समझोगे,
तुम देखोगे अवश्य, पर तुम्हें सूझ न पड़ेगा,
क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है।

*'हमें बहुत उपहार दिये' **अर्थात् 'यमजदेव'

ये कानों से ऊंचा सुनने लगे हैं;
इन्होंने अपनी आंखें बन्द कर ली हैं,
कि कहीं ऐसा न हो कि ये आंखों से देखें,
कानों से सुनें, मन से समझें, और मुड़-प्रभु के पास लौट आएं
और मैं इनको स्वस्थ कर दूं।"'

पौलुस ने आगे कहा, "इसलिए तुम्हें ज्ञात हो कि परमेश्वर के उद्धार का यह शुभ-सन्देश गैरयहूदियों के पास भेजा गया है। वे यह शुभ-सन्देश सुनेंगे।

(पौलुस के यह कहने पर यहूदी आपस में विवाद करते हुए वहां से चले गए।*)

उपसंहार

पौलुस वहां अपने व्यय से** पूरे दो वर्ष तक रहे। वह अपने पास आनेवाले लोगों का स्वागत करते थे। वह निर्भीकता से तथा बिना किसी बाधा के परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते और उन्हें प्रभु यीशु मसीह के विषय में शिक्षा देते थे।

१ प्रेरित पौलुस किस प्रकार रोम नगर में पहुंचे?

२. तूफान में फंसे हुए जलयान में प्रेरित पौलुस ने किस प्रकार व्यवहार किया? हम उनसे क्या सीखते हैं?

*कुछ प्रतियों में यह पद नहीं पाया जाता
**अथवा 'किराए के घर में'

तीसरा भाग

प्रेरित पौलुस के कुछ पत्र
तथा प्रकाशन ग्रन्थ

संक्षिप्त नई हिन्दी बाइबिल का यह तीसरा भाग दोनों भागों से भिन्न है। पाठक से यह आशा की जाती है कि वह एक ही बैठक में पूरे अध्याय को पढ़ेगा, यद्यपि ये संकलित पाठ पर्याप्त बड़े हैं।

ये पाठ वस्तुतः पत्र हैं, जो समय-समय पर प्रेरित पौलुस तथा प्रभु यीशु के शिष्य यूहन्ना द्वारा कलीसियाओं को लिखे गए थे।

जैसा कि आप जानते हैं, नई कलीसिया अथवा नया मसीही विश्वासी प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करने के बाद कई समस्याओं का सामना करता है। इन पत्रों में ऐसी ही समस्याओं का समाधान है।

हम अपने निजी पत्रों को एक ही बार में समाप्त करते हैं, आप इन पाठों को भी निजी पत्र समझकर पढ़िए, फिर चाहे वे लम्बे क्यों न हों।

प्रत्येक पत्र की भूमिका में बताया गया है कि पत्र किसको लिखा गया था और उस पत्र की मुख्य शिक्षा क्या है। यदि आप झुण्ड, अथवा समूह में बाइबिल पढ़ रहे हैं तो प्रत्येक पाठक पत्र की एक-एक विशेषता नोट करे और पाठ की समाप्ति पर दूसरों के साथ उसकी चर्चा करे।

मसीही जीवन

१. यीशु के पुनरागमन की तैयारी

(१ थिस्सलुनीकियो १–५)

जो पत्र सबसे पहले प्रेरित पौलुस ने लिखा, वह था—थिस्सलुनीकिया नगर के मसीही लोगो को। इस पत्र को बाइबिल मे 'थिस्सलुनीकिया नगर की कलीसिया को प्रेरित पौलुस का प्रथम पत्र' कहते है। कोई नही जानता है कि प्रेरित पौलुस कितने समय तक इस नगर की कलीसिया के साथ रहे। कुछ विद्वान कहते है, केवल तीन सप्ताह, और कुछ कहते है, प्रेरित पौलुस कई महीनो तक वहा थे। खैर, तथ्य कुछ भी हो, सच यह है कि प्रेरित पौलुस के वहा रहने से कट्टर यहूदी मसीही कलीसिया का विरोध करने लगे थे। उनकी शत्रुता इतनी बढ गई कि प्रेरित पौलुस को थिस्सलुनीकिया नगर छोडना पड़ा।

इस पत्र को लिखने का समय सम्भवत प्रेरित पौलुस ने अपनी दूसरी मिशनरी-यात्रा के अन्तिम चरण मे कुरिन्थनगर से यह पत्र लिखा था।

पत्र की मुख्य विशेषता : यदि आप ध्यान से पत्र को पढे तो आपके सम्मुख यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि प्रेरित पौलुस यीशु के पुनरागमन की चर्चा कर रहे है। वह इस बात पर जोर दे रहे है कि हम यीशु के पुनरागमन का अर्थ समझे, और उसके लिए तैयारी के रूप में शुद्ध और निष्कलक जीवन बिताए।

'व्यावहारिक उपदेश' शीर्षक के अन्तर्गत लिखी हुई बातो पर ध्यान दीजिए। यह अवतरण (पेराग्राफ) आदर्श मसीही जीवन पर प्रकाश डालता है।

अभिवादन

पौलुस, सिलवानुस और तिमुथियुस की ओर से,

थिस्सलुनीके नगर की कलीसिया के नाम पत्र जो पिता-परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह मे है

तुम्हे अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

भाइयो, तुम्हारा विश्वास अनुकरणीय है

तुम सबके लिए हम परमेश्वर को निरन्तर धन्यवाद देते है और तुम्हे अपनी प्रार्थनाओ मे स्मरण करते है, क्योकि हम अपने पिता-परमेश्वर के सम्मुख तुम्हारे विश्वास-जन्य कार्य, प्रेमपूर्ण परिश्रम और प्रभु यीशु मे तुम्हारा आशायुक्त धैर्य कभी भूलते नहीं।

भाइयो, परमेश्वर के प्यारो, हमे निश्चय है कि परमेश्वर ने तुम्हे चुना। क्योकि हमने तुम्हारे बीच प्रभु यीशु का शुभ-सन्देश केवल वाणी द्वारा नही, किन्तु सामर्थ्य के साथ, और पवित्र आत्मा के प्रभाव एवं पूर्ण विश्वास के साथ सुनाया। तुम्हे ज्ञात ही है कि हमारा आचरण तुम्हारे बीच तुम्हारे हित के लिए कैसा रहा। तुमने भी हमारा एव प्रभु का अनुसरण किया,

क्योकि तुम्हे प्रभु यीशु का शुभ-सन्देश स्वीकार करने मे घोर कष्ट सहने पड़े, फिर भी तुम पवित्र आत्मा मे आनन्दित रहे। परिणाम यह हुआ कि तुम मकिदुनिया प्रदेश और यूनान देश के सभी विश्वासियो के लिए आदर्श बने। प्रभु का सन्देश तुम्हारे यहा से न केवल मकिदुनिया और यूनान मे गूज उठा, वरन् परमेश्वर के प्रति तुम्हारे विश्वास की चर्चा सब ओर फैल गई। अब हमे कुछ कहने को शेष नही रहा। लोग स्वय बताते है कि तुम्हारे यहा हमारा कैसा स्वागत हुआ और किस प्रकार तुम झूठे देवताओं को छोडकर परमेश्वर की ओर फिरे, कि तुम सत्य और जीवन्त परमेश्वर की सेवा करो और उसके पुत्र अर्थात् यीशु के स्वर्ग से आगमन की प्रतीक्षा करो, जिन्हे परमेश्वर ने मृतकों मे से जीवित किया है। यही यीशु परमेश्वर के आनेवाले क्रोध से हमे बचाते है।

धर्म-प्रचार में पौलुस का निष्कपट व्यवहार

भाइयो, तुम्हे स्वय ज्ञात है कि तुम्हारे यहा हमारा आना निष्फल नही हुआ। जैसा कि तुम जानते हो, हमे कुछ ही समय पहिले फिलिप्पी नगर मे कष्ट और अपमान सहना पड़ा था, किन्तु हमने घोर विरोध होने पर भी परमेश्वर की सहायता से निर्भीकतापूर्वक तुम्हे परमेश्वर का शुभ-सन्देश सुनाया। हमारे आग्रह का स्रोत कोई भ्रम अथवा अपवित्रता नहीं, और न उसमे कोई छल-कपट है। परमेश्वर ने हमे परखा है और खरा समझकर अपना शुभ-सन्देश सुनाने का दायित्व सौंपा है। यही कारण है कि हम प्रचार करते है। और इसमे हम मनुष्यों को नही, वरन् परमेश्वर की प्रसन्नता के इच्छुक है जो सदा हमारे हृदय को परखता है।

जैसाकि तुम्हे ज्ञात है हमने कभी चापलूसी की बाते नहीं कीं। परमेश्वर साक्षी है कि हमने लालच के कारण कोई चाल नहीं चली, और न हमने मनुष्यो से—तुमसे अथवा किसी अन्य व्यक्ति से प्रशंसा प्राप्त करने का प्रयत्न ही किया। यद्यपि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर अधिकार जता सकते थे, किन्तु हम तुम्हारे मध्य मे बालकों के समान विनम्र बनकर रहे।* जैसे मा अपने बच्चो का लालन-पालन प्रेम से करती है वैसे ही तुम्हारे प्रति हमारा व्यवहार ममता-पूर्ण रहा। ममता के कारण हमारी कामना रही कि परमेश्वर का शुभ-सन्देश ही नहीं वरन् तुम्हारे लिए अपने प्राण तक अर्पित कर दे, क्योंकि तुम हमारे प्रिय बन चुके थे।

भाइयो, तुम्हे हमारे परिश्रम और प्रयत्न का स्मरण है. जब हम परमेश्वर के शुभ-सन्देश का तुम्हारे बीच प्रचार कर रहे थे, तो रात दिन अपने व्यवसाय मे लगे रहते थे कि किसी पर भार न डाले। तुम स्वय साक्षी हो, एव परमेश्वर भी साक्षी है कि तुम विश्वासियों के बीच हमारा आचरण कितना पवित्र, धार्मिक और निर्दोष रहा। तुम्हे ज्ञात है कि जैसे पिता अपनी सन्तान के प्रति व्यवहार करता है वैसे ही हम भी तुम्हे आदेश देते, तुम्हारा उत्साह बढ़ाते और तुमसे आग्रह करते रहे कि तुम परमेश्वर के योग्य आचरण करो, जिसने तुम्हे अपने राज्य और महिमा के लिए बुलाया है।

कष्ट और संकट

हम परमेश्वर को इसलिए भी निरन्तर धन्यवाद देते है कि जब तुम्हे हमारे द्वारा परमेश्वर का सन्देश मिला तो तुमने उसे मनुष्यो का वचन नही समझा, किन्तु जैसा वह सचमुच है, परमेश्वर का वचन मानकर उसका स्वागत किया, और यह वचन तुम विश्वासियो मे क्रियाशील है।

भाइयो, तुमने परमेश्वर की कलीसियाओ का अनुसरण किया है, जो यहूदा प्रदेश मे मसीह यीशु मे है। तुमने भी अपने सजातीय लोगो के हाथ वैसा ही कष्ट सहा है जैसा उन्होने यहूदियो के हाथ, जिन्होंने प्रभु यीशु और नबियो की हत्या की और अब हमारे पीछे पड़े हैं।

*पाठान्तर, 'तुम्हारे बीच हमारा व्यवहार कोमल रहा'।

वे परमेश्वर को अप्रसन्न करते है और सब मनुष्यों के विरोधी है। वे हमें रोकते है कि हम गैर-यहूदियों को उनके उद्धार का सन्देश नहीं सुनाएं। इस प्रकार उनके पाप का घड़ा भरता जाता है, और अब उनपर परमेश्वर का कोप भड़कनेवाला है।

थीसलुनीकियों से भेंट करने को उत्सुक

भाइयो, हम तुमसे कुछ समय के लिए, हृदय से नहीं किन्तु आंखों से दूर हो गए थे। इस कारण हमें तुम्हारे दर्शन की बड़ी इच्छा थी। अत: हमने, विशेषकर मुझ पौलुस ने, बार-बार तुम्हारे पास आना चाहा, पर शैतान ने उसमें बाधा पहुंचाई। तुमको छोड़कर और कौन है जो हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख, उनके आगमन के समय, हमारी आशा, आनन्द और विजय-मुकुट हो? हमारे गौरव और आनन्द तुम्ही हो।

तिमुथियुस का कार्य

इस कारण जब हमसे और न रहा गया तो हमने अपने में अकेला रहना स्वीकार किया, और अपने भाई तिमुथियुस को, जो मसीह के शुभ-सन्देश सुनाने में परमेश्वर का सहकर्मी है, तुम्हारे पास भेजा था कि तुम्हें सुदृढ़ करे और तुम्हारे विश्वास में तुम्हें प्रोत्साहन दे, जिससे इन संकटों के मध्य तुममें से कोई विचलित न हो जाए। तुम्हें स्वयं ही ज्ञात है कि हमारे लिए इन संकटों का आना अनिवार्य है। हमने पहिले ही, जब हम तुम्हारे यहां थे, तुमसे कह दिया था कि हम पर विपत्तियां आएंगी, और, यह तुम जानते हो, हुआ भी ऐसा ही। अत: जब मुझसे नहीं रहा गया तब मैंने तुम्हारे विश्वास का समाचार जानने के लिए तिमुथियुस को भेजा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि 'प्रलोभन में डालनेवाले शैतान' ने तुम्हें प्रलोभन में डाला हो और हमारा श्रम व्यर्थ हो गया हो।

परन्तु तिमुथियुस अभी तुम्हारे यहां से लौटा है और तुम्हारे विश्वास एवं प्रेम के विषय में हमें अच्छा समाचार दिया है। उसने बताया है कि तुम हमें सदा प्रेमपूर्वक स्मरण करते हो, और हमें देखने को उसी प्रकार लालायित हो, जैसे हम तुम्हें। इस कारण भाइयो, सभी कष्टों और विपत्तियों के होते हुए भी हमें तुम्हारे विश्वास से सान्त्वना प्राप्त हुई है। अब हम भी जी गए, क्योंकि तुम प्रभु में अटल हो। तुमने परमेश्वर के सम्मुख हमें कितना आनन्द प्रदान किया है। तुम्हारे कारण हम अपने परमेश्वर को कैसे और कितना धन्यवाद दें। रात-दिन हमारी यही प्रार्थना रहती है कि हम फिर तुम्हें देख सकें और तुम्हारे विश्वास की अपूर्णता को पूर्णता प्रदान कर सकें। स्वयं हमारा पिता परमेश्वर एवं हमारे प्रभु यीशु, तुम्हारे पास आने के लिए हमारा मार्ग खोलें।

जैसे हमारा प्रेम तुम्हारे प्रति है, वैसे ही प्रभु करें कि तुम्हारा प्रेम एक-दूसरे के प्रति और सब के प्रति बढ़े और उमड़ता रहे। इस प्रकार तुम्हारे मन को स्थिरता प्रदान करें कि जब हमारे प्रभु यीशु का अपने सन्तों सहित आगमन हो, तो तुम हमारे पिता परमेश्वर की उपस्थिति में निर्दोष और पवित्र ठहरो।

व्यावहारिक उपदेश

भाइयो, तुमने उचित आचरण करना और परमेश्वर को प्रसन्न करना हमसे सीखा है, और वैसा ही तुम कर भी रहे हो। फिर भी प्रभु यीशु में हमारा तुमसे यह निवेदन है, आग्रह है, कि इस सम्बन्ध में तुम और अधिक प्रगति करो।

तुम्हें ज्ञात है कि हमने प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें क्या आदेश दिए थे। परमेश्वर की इच्छा है कि तुम पवित्र बनो और व्यभिचार से बचो। तुममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने शरीर को पवित्र रखना एवं उसका आदर करना सीखे,* उसे भोग-विलास का साधन न समझे, जैसाकि

*अथवा, 'जाने कि किस प्रकार पवित्रता एवं सम्मानपूर्वक अपने उपयुक्त पत्नी प्राप्त की जाती है'

परमेश्वर को न जाननेवाले अन्य धर्मी लोग समझते हैं।

हम तुम्हें पहिले ही गंभीर चेतावनी दे चुके हैं कि व्यवसाय* में कोई धूर्तता से अपने भाई के अधिकार का उल्लंघन न करे। क्योंकि प्रभु इन सब बातों का प्रतिशोध लेगा। परमेश्वर ने अपवित्र जीवन व्यतीत करने के लिए हमें नहीं बुलाया है वरन् पवित्रता से जीवन बिताने के लिए बुलाया है। इस कारण जो व्यक्ति इन आदेशों को तुच्छ समझता है, वह मनुष्य को नहीं, परमेश्वर को, जो तुम्हें पवित्र आत्मा प्रदान करता है, तुच्छ समझता है।

भातृ-प्रेम के विषय में तुम्हें कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि तुमने परस्पर प्रेम भाव रखना स्वयं परमेश्वर से सीखा है, और समस्त मकिदुनिया प्रदेश के सब भाइयों के प्रति तुम इसका पालन भी कर रहे हो। पर भाइयों, हमारा अनुरोध है कि इस सम्बन्ध में और भी उन्नति करो। इसमें गौरव मानो कि तुम शान्तिपूर्वक जीवन-यापन करते हो, अपने-अपने व्यवसाय में संलग्न रहते हो, और अपने हाथों अपना काम करते हो, जैसाकि हमने तुम्हें आदेश दिया था। इससे अन्य लोग तुम्हारा आदर करेंगे, और तुम किसी पर निर्भर नहीं रहोगे।

यीशु का आगमन

भाइयों, हम नहीं चाहते कि तुम उनकी दशा से अनजान रहो जो मर गए हैं। ऐसा न हो कि आशाहीन मनुष्यों के समान तुम भी मृतक के लिए शोक करो। हमारा विश्वास है कि यीशु मरे और जी उठे, इसी प्रकार जो लोग यीशु में विश्वास करते हुए मर गए हैं, उनको परमेश्वर यीशु के साथ ले आएगा।

हम तुम्हें प्रभु का यह सन्देश सुनाते हैं हम जो प्रभु के आगमन तक जीवित बचे रहेंगे मृतकों से पहले नहीं पहुंचेंगे। जब आदेश होगा, प्रधान स्वर्गदूत का स्वर सुनाई पड़ेगा और परमेश्वर की तुरही गूंजेगी, उस समय स्वयं प्रभु स्वर्ग से उतरेंगे, और जो मसीह में मृत हैं, वे पहले जी उठेंगे। तत्पश्चात् हम भी जो जीवित बचे होंगे, उन लोगों के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे कि वायु-मण्डल में प्रभु से मिलें। इस प्रकार हम सदैव प्रभु के साथ रहेंगे। इस प्रकार की बातों से एक-दूसरे को सान्त्वना दो।

जागरूकता की आवश्यकता

भाइयो, इसकी आवश्यकता नहीं है कि प्रभु के आगमन का समय और कालों के विषय में तुमको कुछ लिखा जाए। तुम भली-भांति जानते हो कि प्रभु का दिन ऐसे आएगा जैसे रात को चोर। लोग कह रहे होंगे, 'सब कुशल है', 'सब सुरक्षित है', किन्तु उस समय एकाएक विनाश आरम्भ हो जाएगा जैसे गर्भवती को अचानक प्रसव-वेदना आरम्भ हो जाती है। तब भागने का कोई मार्ग नहीं मिलेगा।

परन्तु भाइयो, तुम अन्धकार में नहीं हो कि चोर की भांति वह दिन तुम्हें आ दबाए। तुम सब ज्योति की सन्तान हो, दिन की सन्तान हो। हमारा सम्बन्ध रात अथवा अन्धकार से नहीं है। अत: हम अन्य व्यक्तियों के सदृश सोए नहीं, वरन् जागते रहें तथा संयमी बनें; क्योंकि जो सोते हैं वे रात को ही सोते हैं, और जो मतवाले होते हैं, वे रात को ही मतवाले होते हैं। किन्तु हमारा सम्बन्ध दिन से है, अत: हम संयमी बनें और विश्वास तथा प्रेम का कवच एवं उद्धार की आशा का शिरस्त्राण धारण करें, क्योंकि परमेश्वर ने हमें प्रकोप का पात्र होने के लिए नहीं, किन्तु हमारे प्रभु यीशु मसीह द्वारा उद्धार प्राप्त करने के लिए मनोनीत किया है। यीशु हमारे लिए मरे जिससे हम चाहे जागते हों या चिर-निद्रा में सो गए हों—उनके साथ जीवन बिताएं। इसलिए एक-दूसरे को शान्ति दो और परस्पर उन्नति के कारण बनो, जैसाकि तुम कर भी रहे हो।

* , 'इस सम्बन्ध में'

अन्तिम उपदेश

भाइयो, हमारा तुमसे निवेदन है कि उनका आदर करो जो तुम्हारे बीच परिश्रम करते हैं, प्रभु में तुम पर अधिकार रखते हैं और तुम्हें परामर्श देते हैं। उनके कार्य के कारण बड़े प्रेम से उनका सम्मान करो।

आपस में मेल से रहो।

भाइयो, हमारा तुमसे अनुरोध है कि जो भाई अपने कार्य में आलस्य करते हैं उन्हें चेतावनी दो, जो कायर हैं उन्हें प्रोत्साहित करो, जो दुर्बल हैं उन्हें सम्भालो और सबके साथ सहनशीलता का व्यवहार करो।

सावधान, बुराई के बदले कोई किसी के साथ बुराई न करे, वरन् आपस में एवं सबके साथ सदा भलाई ही करे।

सदा प्रसन्नचित्त रहो।

निरन्तर प्रार्थना करो।

प्रत्येक दशा में कृतज्ञ रहो, क्योंकि मसीह यीशु में परमेश्वर तुमसे यही चाहता है।

पवित्र आत्मा की आग न बुझाओ।

नबूवत को तुच्छ न जानो।

सब बातों को जांचो-परखो और जो सच्ची हों उन्हें स्वीकार करो।

सब प्रकार की बुराइयों को छोड़ दो।

शान्तिदाता परमेश्वर स्वयं, तुमको पूर्ण रीति से पवित्र करे, और तुम्हारी आत्मा, प्राण और शरीर को हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन तक निर्दोष और स्वस्थ रखे।

तुम्हें बुलानेवाला परमेश्वर विश्वसनीय है, वह ऐसा ही करेगा।

भाइयो, हमारे लिए भी प्रार्थना करो। सब भाइयों को पवित्र चुम्बन द्वारा नमस्कार करो। तुम्हें प्रभु की शपथ, यह पत्र सब भाइयों को पढ़कर सुना देना।

हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारे साथ हो।

१. प्रस्तुत पत्र में प्रेरित पौलुस किस बात पर जोर दे रहे हैं?
२. प्रेरित पौलुस ने अपने निष्कपट व्यवहार का किस प्रकार प्रमाण दिया। (दूसरा अध्याय)।
३. यीशु के पुनरागमन के सम्बन्ध में प्रेरित पौलुस क्या कहते हैं?
४. यीशु के पुनरागमन के लिए हमें किस प्रकार तैयारी करना चाहिए?

२. प्रभु यीशु के विश्वास में दृढ़ रहो

(२ थिस्सलुनीकियों १–३)

थिस्सलुनीकिया नगर के मसीहियों को प्रथम पत्र लिखने के कुछ दिन बाद प्रेरित पौलुस ने दूसरा पत्र लिखा।

प्रस्तुत पत्र में प्रेरित पौलुस मसीहियों को कठोर चेतावनी देते हैं कि वे यीशु के प्रति अपने विश्वास में स्थिर और दृढ़ रहें। वह यह भविष्यवाणी करते हैं कि यीशु मसीह के पुनरागमन के पूर्व मसीहियों का घोर पतन होगा। वे भ्रष्टाचार और अनैतिक आचरण करेंगे।

आज विश्व की कई कलीसियाओं में हम यही देखते हैं। यद्यपि मसीही स्वयं को मसीह के नाम से पुकारते हैं, किन्तु उनका आचरण, उनका जीवन? 'वे सत्य पर विश्वास नहीं करते, और अधर्म में मगन रहते हैं।'

अभिवादन

थिस्सलुनीके की कलीसिया के नाम जो हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह मे है

पौलुस, सिलवानुस और तिमुथियुस की ओर से पत्र

पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हे अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

न्याय-दिवस

हमारा कर्तव्य है कि तुम्हारे लिए परमेश्वर को निरन्तर धन्यवाद दे। भाइयो, ऐसा करना उचित भी है, क्योंकि तुम्हारा विश्वास निरन्तर बढ़ रहा है और तुमसब के पारस्परिक प्रेम मे भी वृद्धि हो रही है। हम स्वय परमेश्वर की कलीसियाओं मे तुमपर अभिमान करते है, क्योंकि तुम धैर्य और विश्वास के साथ अत्याचार और कष्टो को सहन कर रहे हो। यह इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर का निर्णय न्यायपूर्ण होगा और तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य समझे जाओगे, जिसके लिए तुम दुख उठा रहे हो। क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि मे यह सर्वथा न्याय-सगत है कि जो तुम्हे कष्ट देते है, उनको कष्ट देकर वह प्रतिकार करे और तुम सब कष्ट-पीड़ितो को हमारे साथ विश्राम प्रदान करे।

यह उस समय होगा जब प्रभु यीशु स्वर्ग से अपने शक्तिशाली दूतों के साथ प्रकट होंगे, और अग्नि-ज्वाला मे उन लोगों को दण्ड देंगे जो परमेश्वर को नही मानते और हमारे प्रभु यीशु के शुभ-सन्देश की आज्ञा का उल्लघन करते है। ऐसे लोग प्रभु की समीपता और उनके तेजोमय ऐश्वर्य से पृथक् होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएगे। यह उस दिन होगा जब प्रभु आएगे और उनके भक्त उनकी महिमा करेगे, और सब विश्वासी उनके आगमन से विस्मित होगे।

तुमने उस साक्षी पर विश्वास किया है जो हमने तुम्हे दी है। अत हम तुम्हारे लिए निरन्तर प्रार्थना करते है कि हमारा परमेश्वर तुम्हे अपने बुलावे के योग्य बनाए और तुम्हारी प्रत्येक सद् इच्छा और विश्वासजन्य कार्य को अपनी शक्ति से पूर्ण करे। इस प्रकार परमेश्वर के और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह द्वारा हमारे प्रभु यीशु का नाम तुममे महिमा पाए और तुम उनमे महिमा पाओ।

प्रभु के आगमन के सम्बन्ध में भ्रम

भाइयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन के सम्बन्ध मे तथा उनके सम्मुख हमारे एकत्र होने के विषय मे हमारा तुमसे यह निवेदन है किसी आत्मिक प्रकाशन, सन्देश अथवा पत्र द्वारा, जो हमारे नाम से आया जान पडे, यह न समझ लेना कि प्रभु का दिन आ पहुचा है। इस प्रकार तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए और तुम व्याकुल न हो उठो। कही कोई तुमको भ्रम मे न डाल दे, क्योंकि वह दिन तब तक नही आ सकता जब तक पहिले धर्म-विद्रोह न हो ले और वह 'पाप-पुरुष'* प्रकट न हो जाए जिसका विनाश अनिवार्य है। वह ईश्वर कहलानेवाली अथवा आराध्य समझी जानेवाली प्रत्येक सत्ता का विरोध करता है, और अपने आपको इतना बड़ा मानता है कि परमेश्वर के मन्दिर मे बैठकर स्वय को ईश्वर घोषित करता है। क्या तुम भूल गए कि जब मै तुम्हारे बीच मे था तो ये बाते कहा करता था? तुम्हे ज्ञात ही है कि वह कौन-सी सामर्थ्य है जो उसे अभी रोके हुए है कि वह अपने समय पर प्रकट हो। अब अधर्म की गुप्त शक्ति अपना कार्य आरम्भ कर चुकी है। लेकिन जब तक उसे रोकनेवाला हट नही जाता, वह गुप्त ही रहेगी। तब वह 'पाप-पुरुष' प्रकट होगा जिसे प्रभु यीशु अपने मुह की फूक से नष्ट करेगे, अपने आगमन के तेज से भस्म कर देगे।

शैतान के प्रभाव से वह अनेक झूठे शक्ति-युक्त कार्य, चिह्न एव चमत्कार दिखाएगा।

मसीह के न्याय-दिवस पर—प्रत्येक मनुष्य के कार्य की जाँच की जाएगी। —१ कुरिन्थियों ३:१३

एक दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था पूरी करो। —गलातियों ६:२

नाश होनेवाले व्यक्ति सब प्रकार से अधर्ममय भ्रमों में पड़ जाएंगे, क्योंकि उन्होंने सत्य से प्रेम करना स्वीकार नहीं किया जिससे उनका उद्धार होता। इस कारण परमेश्वर उनमें महा भ्रम उत्पन्न करता है कि वे झूठ का विश्वास करें। जो सत्य पर विश्वास नहीं करते और अधर्म में मग्न रहते हैं, वे सब दण्ड पाएंगे।

धन्यवाद और प्रार्थना

भाइयो, प्रभु के प्यारो, हमारा कर्तव्य है कि हम तुम्हारे लिए परमेश्वर को निरन्तर धन्यवाद दें, क्योंकि परमेश्वर ने सर्वप्रथम तुम्हें ही चुना है कि तुम पवित्र आत्मा द्वारा पवित्र बनकर और सत्य पर विश्वास कर उद्धार प्राप्त करो। जो शुभ-सन्देश हमने तुम्हें सुनाया है, उसके द्वारा परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया है कि हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा से तुम विभूषित हो जाओ। अतएव भाइयो, दृढ़ बनो और उन परम्पराओं का पालन करो, जिनकी शिक्षा तुमने प्रवचन या पत्र द्वारा हमसे प्राप्त की है।

स्वयं हमारे प्रभु यीशु मसीह और हमारा पिता-परमेश्वर, जिसने हमसे प्रेम किया है और अनुग्रह कर हमें शाश्वत शान्ति और उत्तम आशा प्रदान की है, तुम्हारे मन को शान्ति दे और तुम्हें सत्कर्म तथा सद्‌वचनों में दृढ़ करे।

हमारे लिए प्रार्थना करो

भाइयो, हमारे लिए प्रार्थना करते रहो कि प्रभु का वचन शीघ्रता से फैले और विजयी हो, जैसा कि तुम लोगों के बीच में हुआ है तथा भ्रष्ट एवं दुष्ट मनुष्यों से हमारा पीछा छूटे; क्योंकि सभी विश्वासी नहीं हैं।

प्रभु यीशु विश्वास के योग्य है, वह तुम्हें सुदृढ़ करेंगे और पाप से बचाएंगे। हमें प्रभु में तुमपर पूरा भरोसा है कि तुम हमारी आज्ञाओं का पालन कर रहे हो और करते रहोगे। प्रभु यीशु तुम्हारे हृदय को परमेश्वर के प्रेम की ओर ले जाए और तुम मसीह के समान धीरज रखना सीखो।

आलस्य से दूर रहो

भाइयो, हम तुम्हें प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं कि ऐसे किसी भाई से सहयोग मत करो जो आलसी है और अपना पेट भरने के लिए काम नहीं करता। वह उस परम्परा का पालन नहीं करता जो तुमने हमसे प्राप्त की है। तुम स्वयं जानते हो कि तुम्हें किस प्रकार हमारे सदृश आचरण करना चाहिए। हम तुम्हारे बीच आलसी नहीं रहे। हमने बिना मूल्य दिए किसी का अन्न नहीं खाया वरन् रात-दिन परिश्रम तथा उद्योग करते रहे कि तुममें किसी पर भार स्वरूप न हों।

बात यह नहीं कि हमें इसका कोई अधिकार नहीं है। पर हम तुम्हारे सामने एक आदर्श रखना चाहते थे जिसका तुम अनुकरण कर सको।

सच तो यह है कि जब हम तुम्हारे यहां थे तो हमारा आदेश था कि यदि कोई व्यक्ति काम नहीं करना चाहता, तो वह खाए भी नहीं। परन्तु सुनने में आता है कि तुममें कुछ व्यक्ति आलसी हो गए हैं, जो अपना काम तो करते नहीं, दूसरों के कामों में हस्तक्षेप किया करते हैं। ऐसे लोगों को प्रभु यीशु मसीह के नाम से हम आदेश देते हैं, उनसे अनुरोध करते हैं, कि वे चुपचाप अपना काम देखें और अपनी कमाई की रोटी खाएं।

भाइयो, शुभ-कार्य करने में पीछे न रहो। यदि कोई हमारे इस पत्र में लिखी बातों को न माने तो उससे सावधान रहो और उससे सहयोग मत करो। इससे वह लज्जित होगा। उसे अपना शत्रु न समझो, परन्तु भाई जानकर उसे समझाओ।

आशीर्वाद

स्वयं प्रभु यीशु जो शान्ति-स्रोत है, तुम्हें सर्वदा सब प्रकार शान्ति प्रदान करे। प्रभु तुमसब

के साथ हो।

मुझ पौलुस ने स्वयं अपने हाथ से यह नमस्कार लिखा है। यह मेरे पत्र की पहचान है, मै इस प्रकार लिखता हू।

तुम सब पर हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह रहे।

१ यीशु के पुनरागमन के पूर्व क्या होगा? (पढ़िए अध्याय २)
२ अध्याय ३ १–५ मे प्रेरित पौलुस कलीसिया से विशेष निवेदन करते है। इस निवेदन का हमारे लिए क्या महत्व है?
३ अध्याय ३ ६–१५ मे प्रेरित पौलुस ने हमे क्या चेतावनी दी है?

३. प्रेम और एकता के लिए प्रेरित पौलुस का आवाहन

(१ कुरिन्थियो १–१६)

प्रेरित पौलुस के समय मे कुरिन्थ नगर समस्त भ्रष्टाचारो और पापो का केन्द्र था, कहना चाहिए खान था। प्रेरित पौलुस ने यहाँ अठारह महीने व्यतीत किए, और एक मसीही कलीसिया की स्थापना की। हम आज भी कल्पना कर सकते है कि इस कलीसिया को कितनी कठिनाइयो का सामना करना पड़ता होगा चारो ओर का वातावरण दूषित था, स्वयं कलीसिया के भीतर भी शत्रुता और फूट के बीज पनप रहे थे।

प्रत्येक नव मसीही पाठक को यह पत्र ध्यान से पढ़ना चाहिए, क्योकि इस पत्र से यह सच्चाई प्रकट होती है कि पाप के ससार मे कलीसिया का जीवन कितना कठिन हो जाता है। परमेश्वर ने कलीसिया के प्रत्येक सदस्य को मसीह मे नवजीवन के लिए बुलाया है। अतः सदस्य को अनेक समस्याओ का सामना करना पड़ता है।

प्रेरित पौलुस पत्र का आरम्भ कलीसिया की परस्पर फूट और विभाजन से करते है (पढिए १ १–४ : २१)। हमे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम इस ससार के नेताओ के पीछे न चले, किन्तु एक ही प्रभु, एक ही गुरु, एक ही नेता यीशु मसीह को अपना पथ-प्रदर्शक माने। सावधान रहिए कि शैतान आपकी कलीसिया मे फूट-विभाजन के बीज न बो सके।

पत्र की दूसरी प्रमुख शिक्षा है—अनैतिक सेक्स। अध्याय ५ : १–७ : ४० में प्रेरित पौलुस ने इस विषय पर विस्तार से चर्चा की है। हर प्रकार का अनैतिक सम्बन्ध पाप है, और इस पाप की उपेक्षा कलीसिया को नही करना चाहिए। किन्तु कुरिन्थ की कलीसिया में यह पाप व्याप्त था। प्रेरित पौलुस हमे सिखाते है कि अनैतिकता के प्रति हमारा कैसा दृष्टिकोण होना चाहिए, और उसका किस प्रकार सामना करना चाहिए।

तीसरी शिक्षा : प्रेरित पौलुस ८ : १–११ : १ मे हमे बताते है कि यीशु मसीह मे हमारा जीवन सासारिक कानून, नियम, रीति-रिवाजो से ऊपर होता है। यीशु मसीह ने हमे स्वतन्त्र किया है। प्रेरित पौलुस लिखते है कि हमें किस ...र दूसरो को बिना हानि पहुचाए स्वतन्त्रता का जीवन बिताना चाहिए।

चौथी शिक्षा : इसके बाद प्रेरित पौलुस सामूहिक आराधना पर प्रकाश डालते है। वह हमें सुझाव भी देते है कि आराधना मे सम्मिलित होने पर उचित वेश-भूषा पहिनना और उचित आचरण करना चाहिए।

कलीसिया मानो शरीर है, और कलीसिया के सब सदस्य मानो शरीर के अंग है (११ : २–१४ : ४०)।

इसी अवतरण मे अध्याय १३ भी है, जो प्रेम पर लिखा गया ससार मे अद्वितीय अध्याय माना जाता है।

पांचवी शिक्षा : अध्याय १५ मे प्रेरित पौलुस प्रभु यीशु के पुनरुत्थान पर प्रकाश डालते है। यह अध्याय मसीही विश्वास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। आप इस को ध्यान से पढ़िए।

अध्याय १६ मे प्रेरित पाल निजी बातो की चर्चा करते है। वह यरुशलम के गरीब मसीहियो के लिए दान ले जाना चाहते है। वह उपसहार के रूप मे कुरिन्थ नगर के मसीहियो को मसीही जीवन के विषय मे अन्तिम निर्देश-शिक्षा भी देते है।

अभिवादन और धन्यवाद

यह पत्र पौलुस की ओर से है, जो परमेश्वर की इच्छा मे मसीह यीशु का प्रेरित होने के लिए बुलाया गया है, तथा भाई सोस्थिनुस की ओर से है।

परमेश्वर की कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस मे है। मसीह यीशु मे पवित्र किए गए व्यक्तियों के नाम जो भक्त होने के लिए बुलाए गए है, जैसे वे सब लोग जो सर्वत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते है। वह उनका और हमारा सबका प्रभु है।

हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हे अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

मैं तुम्हारे लिए अपने परमेश्वर को निरन्तर धन्यवाद देता हू, क्योकि तुमको परमेश्वर का अनुग्रह मसीह यीशु मे प्राप्त है। मसीह मे तुम सब प्रकार से सम्पन्न हुए हो। तुम समस्त ज्ञान और उस ज्ञान की अभिव्यक्ति से परिपूर्ण हो। हमने मसीह के सम्बन्ध में तुम्हे जो शुभ-सन्देश सुनाया था, वह तुममे सचमुच प्रमाणित हुआ है। तुम्हे किसी आध्यात्मिक वरदान का अभाव नही। अब तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहे हो। परमेश्वर अन्त तक तुम्हे सुदृढ़ रखेगा ताकि तुम हमारे यीशु मसीह के दिन निर्दोष सिद्ध हो। परमेश्वर विश्वसनीय है, उसने तुमको अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की सगति मे बुलाया है।

कलीसिया में दलबन्दी

भाइयो, अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से मै तुममे अनुरोध करता हू कि तुम सब एकमन रहो और आपस मे दलबन्दी न करो। तुम्हारे मन और विचारो मे पूर्ण एकता हो। मुझे खलोए के परिवार ने स्पष्ट बताया है कि तुम्हारे बीच झगडे चल रहे है। मेरे कहने का तात्पर्य यह कि तुममे से प्रत्येक यह कहता है, 'मैं पौलुस के दल का हू' या 'अपुल्लोस के दल का हू' या 'मैं कैफा के दल का हू' या 'मसीह के दल का हू'। क्या मसीह का विभाजन हो गया है? क्या तुम्हारे लिए पौलुस क्रूस पर चढ़ा था? क्या तुमने पौलुस के नाम से बपतिस्मा लिया था? परमेश्वर को धन्यवाद कि मैंने क्रिसपुस और गयुस को छोड़कर तुममे से किसी को बपतिस्मा नहीं दिया, जिससे कोई न कहे कि उसने मेरे नाम से बपतिस्मा लिया है। हां, मैंने स्तिफनुस के परिवार को भी बपतिस्मा दिया। मुझे स्मरण नहीं कि इनके अतिरिक्त मैंने किसी और

को बपतिस्मा दिया। मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए नहीं, बल्कि शुभ-सन्देश सुनाने के लिए भेजा है। अतः मैंने शुभ-सन्देश सुनाते समय सांसारिक ज्ञान से भरे हुए शब्दों का प्रयोग नहीं किया जिससे मसीह के क्रूस की शक्ति पूर्णरूप से प्रमाणित हो।*

क्रूस की शक्ति

जो विनाश के पथ पर है, उनके लिए क्रूस का सन्देश मूर्खता है, किन्तु हमारे लिए जो मुक्ति के मार्ग पर है, वह परमेश्वर की सामर्थ्य है। धर्मशास्त्र का लेख भी है, 'मैं ज्ञानियों का ज्ञान नष्ट कर दूंगा, और चतुर व्यक्तियों की चतुराई, निष्फल कर दूंगा।' कहां है ज्ञानी? कहां है शास्त्री? कहां है इस संसार का निपुण प्रवक्ता? क्या परमेश्वर ने नहीं दिखा दिया कि संसार का 'ज्ञान' मूर्खता है? परमेश्वर के ज्ञान का ऐसा विधान हुआ कि संसार अपने ज्ञान द्वारा परमेश्वर को न पहचान सका।

अतः परमेश्वर को रुचिकर लगा कि शुभ-सन्देश के प्रचार की मूर्खता द्वारा वह विश्वास करनेवालों का उद्धार करे।

यहूदी चमत्कारों की मांग करते हैं और यूनानी ज्ञान की खोज में हैं। किन्तु हम क्रूसित मसीह की घोषणा करते हैं। यह यहूदियों के लिए ठोकर है और गैरयहूदियों के लिए मूर्खता, किन्तु परमेश्वर के चुने हुए लोगों के लिए—चाहे वे यहूदी हों अथवा यूनानी—यही मसीह परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर का ज्ञान है। क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान की अपेक्षा अधिक ज्ञानवान है और परमेश्वर की दुर्बलता मनुष्यों की शक्ति की अपेक्षा शक्तिवान है।

भाइयो, जब परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया तब तुम क्या थे? इसपर विचार करो। सांसारिक दृष्टि से तुममें कुछ ही लोग बुद्धिमान, शक्तिवान अथवा कुलीन हैं। परन्तु परमेश्वर ने जगत् के अज्ञानियों को चुना है जिससे वह ज्ञानियों को लज्जित करे। परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुना है कि वह बलवानों को लज्जित करे। जो संसार की दृष्टि में तुच्छ, नीच और नगण्य है उनको परमेश्वर ने चुना है कि बलवान को निर्बल सिद्ध करे, जिससे कोई प्राणी परमेश्वर के सम्मुख अहंकार न कर सके। परमेश्वर के कारण ही तुम मसीह यीशु में विद्यमान हो। प्रभु यीशु हमारे लिए परमेश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान है, धार्मिकता है, पवित्रता है, विमोचन है, जैसा कि धर्मशास्त्र में लिखा है, 'यदि कोई व्यक्ति गर्व करे तो वह प्रभु पर अहंकार करे।'

क्रूसित मसीह के सम्बन्ध में घोषणा

भाइयो, मैं तुम्हारे यहां आया तो मैंने परमेश्वर के रहस्य की घोषणा बड़े-बड़े शब्दों और सांसारिक ज्ञान से भरे पाण्डित्य द्वारा नहीं की। मैंने ठान लिया था कि तुम्हारे बीच रहते हुए यीशु मसीह, क्रूसित मसीह, को छोड़कर और किसी विषय पर ध्यान नहीं दूंगा। मैं तुम्हारे पास दुर्बल, भयभीत और कांपता हुआ आया। और मैंने अपनी बात, अपना सन्देश, आकर्षक और विद्वत्तापूर्ण शब्दों में नहीं सुनाया वरन् उसे आत्मा और शक्ति से प्रमाणित किया, जिससे तुम्हारे विश्वास का आधार मनुष्य की [illegible] वरन् परमेश्वर की सामर्थ्य हो।

'हम उन बातों का वर्णन करते हैं,
जो लोगों की दृष्टि में कभी नहीं आईं,
जिनको लोगों ने कभी सुना नहीं,
जो मनुष्यों की कल्पना से परे हैं,
और जिन्हें परमेश्वर ने अपने भक्तों
के लिए प्रस्तुत किया है।'

अपने आत्मा द्वारा परमेश्वर ने उन्हें हम पर प्रकाशित कर दिया है, क्योंकि आत्मा सब वस्तुओं की, परमेश्वर की गहनता की भी, खोजबीन करता है। मनुष्यों में मनुष्य की अन्तरात्मा को छोड़ अन्य कौन मानवस्वभाव को जान सकता है? इसी प्रकार परमेश्वर के आत्मा को छोड़ अन्य कोई भी परमेश्वर के सम्बन्ध में नहीं जानता।

हमें सांसारिक आत्मा नहीं मिला, बल्कि परमेश्वर की ओर से आत्मा प्राप्त हुआ है, जिससे हम वह सब जान सकें जो परमेश्वर ने अनुग्रह कर हमें दिया है।

इसलिए हम आध्यात्मिक तथ्यों का आध्यात्मिक शब्दों में विवेचन करते हैं। हम इन वरदानों के सम्बन्ध में मानवी बुद्धि से प्रेरित शब्दों में नहीं किन्तु आत्मा द्वारा प्रेरित होकर बोलते हैं। जो मनुष्य आध्यात्मिक नहीं वह परमेश्वर के आत्मा विषयक तथ्यों को स्वीकार नहीं करता, क्योंकि वे उसके लिए मूर्खतापूर्ण हैं। वह उन्हें नहीं जान सकता, क्योंकि उनकी खोज-बीन आत्मा द्वारा ही हो सकती है। दूसरी ओर आध्यात्मिक मनुष्य के लिए सब वस्तुओं की खोज-बीन सम्भव है, पर उस मनुष्य को कोई नहीं परख सकता। क्योंकि 'प्रभु के मन को कौन जान सकता है? कौन उसको परामर्श दे सकता है?' फिर भी हममें मसीह का मन है।

दलबन्दी की भर्त्सना

भाइयो, जहां तक मेरा सम्बन्ध है मैं तुमसे इस प्रकार बात नहीं कर सकता था जैसे आध्यात्मिक मनुष्यों से की जाती है। अतः मुझे तुमसे ऐसा व्यवहार करना पड़ा मानो आध्यात्मिक नहीं, इस संसार के मनुष्य हो, तुम मसीह में मानो दुधमुंहे बच्चे हो। मैंने तुमको दूध दिया, भोजन नहीं, क्योंकि तुम इसे पचा नहीं सकते थे, और सच तो यह है कि अब तक भी नहीं पचा सके। अब भी तुम्हारा आचरण संसार के मनुष्यों का-सा है। जब तुम्हारे बीच द्वेष और विवाद चल रहे हैं तो क्या तुम सांसारिक मनुष्य नहीं? क्या तुम्हारा आचरण निम्न मनुष्यों का-सा नहीं? क्योंकि जब एक कहता है, 'मैं पौलुस के दल का हूं' और दूसरा, 'मैं अपुल्लोस के दल का हूं' तो क्या तुम निम्न मनुष्य नहीं हुए?

अपुल्लोस क्या है, और पौलुस क्या है? हम सेवक मात्र हैं, जिनके द्वारा तुमने विश्वास किया है, और हममें से प्रत्येक व्यक्ति प्रभु के दान के अनुसार सेवा करता है। मैंने पौधे लगाए, अपुल्लोस ने उन्हें सींचा, परन्तु बढ़ाया उनको प्रभु ने। अतः लगानेवाला एवं सींचनेवाला कुछ नहीं, उनको बढ़ानेवाला परमेश्वर ही सब कुछ है। पौधे लगाने और सींचनेवाले मिलकर काम करते हैं, और दोनों को अपने-अपने श्रम के अनुसार प्रतिफल मिलेगा।

हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं, और तुम परमेश्वर के खेत हो।

तुम परमेश्वर का भवन हो। परमेश्वर के द्वारा सौंपे गए दायित्व के अनुसार मैंने कुशल कारीगर की भांति नींव रखी, कोई दूसरा उस पर भवन निर्माण कर रहा है। प्रत्येक मनुष्य ध्यान रखे कि वह उस भवन का निर्माण कैसा कर रहा है। जो नींव डाल दी गई है, उसके अतिरिक्त, अर्थात् यीशु मसीह के अतिरिक्त, अन्य नींव कोई नहीं डाल सकता। यदि कोई उस नींव पर स्वर्ण, चांदी और बहुमूल्य पत्थर से, अथवा लकड़ी और घास-फूस से निर्माण करेगा, तो उसका यह कार्य प्रकट हो जाएगा, 'क्योंकि न्याय* दिवस, जो अग्नि से प्रदीप्त होगा, उसे प्रकट करेगा। इस अग्नि द्वारा प्रत्येक मनुष्य के कार्य की जांच की जाएगी। यदि किसी का

*अक्षरश: 'वह दिवस'

निर्माण-कार्य स्थायी रहा तो उसे पारिश्रमिक मिलेगा, किन्तु यदि वह भस्म हो गया तो वह पारिश्रमिक से वंचित हो जाएगा। फिर भी वह स्वयं बच जाएगा परन्तु मानो अग्नि मे झुलसा हुआ।

क्या तुम नही जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुममे निवास करता है? यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट करे तो परमेश्वर उसे नष्ट कर देगा, क्योकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।

कोई अपने आपको धोखा न दे। यदि तुम्हारे बीच कोई मनुष्य अपने आपको इस संसार मे बुद्धिमान समझता हो, तो वह मूर्ख बन जाए जिससे वह बुद्धिमान हो सके, क्योकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के समक्ष मूर्खता है। धर्मशास्त्र का यह लेख भी है, 'वह बुद्धिमानो को स्वयं उन्ही की चतुराई मे फंसा देता है।' अन्य लेख, 'प्रभु, बुद्धिमानो के तर्क-वितर्क को जानता है क्योकि वे व्यर्थ है।' अतः कोई व्यक्ति मनुष्यों पर गर्व न करे; क्योकि सब कुछ तुम्हारा है, वह पौलुस हो, या अपुल्लोस या कैफा, वह संसार हो या जीवन या मृत्यु, वर्तमान हो या भविष्य, सब कुछ तुम्हारा ही है, और तुम मसीह के हो, तथा मसीह परमेश्वर के।

प्रेरित का परमेश्वर के प्रति उत्तरदायित्व

मनुष्य हम प्रेरितो को मसीह के सेवक और परमेश्वर के रहस्यो के भण्डारी समझे। भण्डारी से अपेक्षा की जाती है कि वह विश्वासपात्र हो। मेरी दृष्टि मे इस बात का कोई महत्व नही कि मेरा न्याय तुम करते हो या मनुष्यों की कोई अदालत। मै स्वयं भी अपना न्याय नही करता। मेरी अन्तरात्मा मुझे दोषी नही ठहराती, फिर भी इससे मै निर्दोष प्रमाणित नहीं होता। प्रभु मेरे न्यायकर्ता है। निष्कर्ष यह कि समय से पूर्व—जब तक प्रभु न आ जाए—किसी बात का न्याय मत करो। वही अन्धकार मे छिपी हुई बातो को प्रकाश मे लाएंगे और मानव के गूढ़ अभिप्रायो को प्रकट करेगे। तब प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर से ही प्रशंसा प्राप्त करेगा।

भाइयो, मैने अपना और अपुल्लोस का उदाहरण देकर तुम्हारे लिए उपर्युक्त बाते लिखी है ताकि हमारे जीवन के उदाहरण से यह सीखो। तुम धर्मग्रन्थ के लेख से आगे न बढ़ना तथा अहंकार के कारण एक का पक्ष लेकर दूसरे का तिरस्कार न करना। तुममे आखिर ऐसा है क्या कि लोग तुम्हे 'महान' समझे? तुम्हारे पास है क्या जो तुम्हे मिला न हो? और यदि तुम्हे मिला है तो अहंकार क्यो करते हो मानो तुम्हे किसी दूसरे से नही मिला?

तुम तो तृप्त हो गए! तुम सम्पन्न हो गए! हमारे बिना ही तुम राजा बन गए। कैसा अच्छा होता कि तुम राजा बन सकते, तो फिर हम भी तुम्हारे साथ राज्य करते! मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर ने हम प्रेरितो को मृत्यु-दण्ड पाए व्यक्तियो की भांति जुलूस के अन्त मे प्रदर्शित किया है, क्योकि हम समस्त विश्व के मनुष्यों और स्वर्गदूतो के समक्ष प्रदर्शित है। हम मसीह के कारण मूर्ख है, तुम मसीह मे बुद्धिमान हो। हम दुर्बल है, तुम बलवान हो। तुम आदर के पात्र हो और हम अपमान के! हम आज भी भूखे-प्यासे है, फटेहाल है, मार खाते है और मारे-मारे फिरते है। हम अपने हाथों कठिन परिश्रम करते है। हम गाली खाते हैं और आशीर्वाद देते है, अत्याचार सहते है किन्तु सहिष्णु रहते है, बदनाम किये जाते है फिर भी शान्ति के वचन कहते है। आज भी हम मानो संसार का मैल और सबका कूड़ा-करकट बने हुए है।

परामर्श एवं चेतावनी

यह मै तुमको लज्जित करने के लिए नही लिख रहा, वरन् अपने प्यारे बच्चो की भांति चेतावनी दे रहा हूं। मसीह मे तुम्हारे हजारो शिक्षक हो सकते है, किन्तु पिता अनेक नही हो सकते। मैने तुम्हे मसीह यीशु मे शुभ-सन्देश द्वारा जन्म दिया है। इसलिए मेरा तुमसे अनुरोध है कि मेरे उदाहरण का अनुसरण करो। यही कारण है कि मैंने तिमुथियुस को—जो प्रभु मे

मेरा प्रिय एवं विश्वस्त पुत्र है—तुम्हारे पास भेजा है। वह तुम्हें मसीह यीशु में मेरी जीवन-चर्या का स्मरण कराएगा, जिसका मैं सर्वत्र सब कलीसियाओं में उपदेश देता हूं। कुछ लोग यह सोचकर घमण्ड से फूले नहीं समा रहे हैं कि मैं नहीं आ रहा हूं। परन्तु प्रभु की इच्छा हुई तो मैं शीघ्र ही आऊंगा और इन अहंकारियों की बातों को नहीं, उनकी सामर्थ्य को देखूंगा, क्योंकि परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं, सामर्थ्य में है। तो तुम क्या चाहते हो? मैं तुम्हारे यहां छड़ी लेकर आऊं, या प्रेम और नम्रता की भावना के साथ आऊं?

दुराचार का भयंकर उदाहरण

यहां तक सुनने में आया कि तुम्हारे बीच व्यभिचार हो रहा है—ऐसा व्यभिचार जो अन्य जातियों में भी नहीं होता, अर्थात् किसी ने अपने पिता की पत्नी को रख लिया है। और इसपर भी तुम्हें अहंकार है! तुम्हें तो शोक मनाना चाहिए था जिससे ऐसा कुकर्मी तुम्हारे बीच से बहिष्कृत हो जाता। मैं शरीर से अनुपस्थित होने पर भी आत्मा से उपस्थित हूं और इस रूप में ऐसे कुकर्मी के विरुद्ध निर्णय दे चुका हूं। जब तुम लोग हमारे प्रभु यीशु के नाम में एकत्र हो, और मेरी आत्मा वहां उपस्थित हो तब अपने प्रभु यीशु की सामर्थ्य से ऐसे व्यक्ति को शैतान के हाथ सौंप दो जिससे उसका शरीर नष्ट हो किन्तु उसकी आत्मा प्रभु-दिवस पर उद्धार प्राप्त करे।

तुम्हारा अहंकार करना अच्छा नहीं। क्या तुम नहीं जानते, 'थोड़ा-सा खमीर सारे गूंधे आटे को खमीर बना देता है।' पुराने खमीर को निकाल डालो और अपने आपको शुद्ध करो कि नया गूंधा आटा बनो। तुम अखमीरी हो, क्योंकि हमारे फसह पर्व के मेमने, मसीह का बलिदान हुआ है। इसलिए हम पुराने खमीर, बुराई और दुष्टता के खमीर, से नहीं किन्तु निष्कपटता और सच्चाई की अखमीरी रोटी से आनन्द-उत्सव मनाएं।

अपने पत्र में मैंने लिखा था कि व्यभिचारियों की संगति मत करो। यह नहीं कि तुम संसार के व्यभिचारियों, लोलुप, लुटेरों और मूर्ति-पूजकों से बिलकुल अलग रहो, इस दशा में तो तुम्हें संसार से बिलकुल बाहर निकलना पड़ेगा। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यदि कोई मनुष्य मसीही* कहलाता है, पर वह व्यभिचारी, लोलुप और मूर्ति-पूजक है, अथवा अपशब्द बोलनेवाला, शराबी और लुटेरा है तो उसकी संगति से अलग रहो, उसके साथ भोजन तक मत करो। मुझे बाहरवालों का न्याय करने से क्या प्रयोजन? बाहरवालों का न्याय परमेश्वर करेगा। क्या तुम्हारा कर्तव्य नहीं कि तुम भीतरवालों का न्याय करो? उस दुष्ट मनुष्य को अपने बीच से निकाल दो।

मसीहियों में मुकदमेबाजी

तुममें कौन ऐसा दुस्साहस करेगा कि उसका किसी से झगड़ा हो तो वह सन्तों की कलीसिया के पास न जाकर अन्य धर्मियों के न्यायालय में पहुंचे। क्या तुम नहीं जानते कि सन्त संसार का न्याय करेंगे? तुम्हें तो संसार का न्याय करना है। क्या तुम छोटे-छोटे मामलों का निर्णय नहीं कर सकते? क्या तुम्हें ज्ञात नहीं कि हम स्वर्गदूतों का भी न्याय करेंगे? तो फिर सांसारिक झगड़े की क्या बड़ी बात है। यदि तुम्हारे यहां सांसारिक झगड़े हैं तो क्या तुम उन लोगों को पञ्च बनाओगे जो कलीसिया की दृष्टि में नगण्य हैं? मैं यह इसलिए कहता हूं कि तुम लज्जित हो! क्या सचमुच तुममें ऐसा कोई बुद्धिमान नहीं जो भाई-भाई के बीच में निर्णय कर सके? भाई-भाई में मुकद्दमा होता है और वह भी अविश्वासियों के सम्मुख!

वास्तव में बड़ा दोष तो यही है कि तुममें आपस में मुकद्दमा चलता है। इसकी अपेक्षा अन्याय क्यों नहीं सह लेते? अपने हक से वंचित क्यों नहीं हो जाते? परन्तु तुम तो स्वयं

*मूल में, 'भाई'

अन्याय करते और दूसरों का हक मारते हो—और वह भी अपने मसीही भाइयों का। क्या तुम्हें ज्ञात नहीं कि अन्यायी व्यक्ति परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं होंगे? भ्रम में न पड़ो। व्यभिचारी, मूर्तिपूजक, परस्त्रीगामी, कामातुर, पुरुषगामी, चोर, लोलुप, शराबी, अपशब्द बोलनेवाले और लुटेरे परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं होंगे। तुममें से अनेक ऐसे थे, परन्तु तुम अब प्रभु यीशु मसीह के नाम में, और हमारे परमेश्वर के आत्मा द्वारा धोए गए, पवित्र किए गए और धर्मात्मा बनाए गए हो।

अपवित्रता से दूर भागो

'मेरे लिए व्यवस्था की दृष्टि में सब कुछ उचित है', किन्तु सब कुछ हितकर नहीं। 'मेरे लिए सब कुछ उचित है', पर मैं किसी का गुलाम नहीं बनूंगा। यह सच है 'भोजन पेट के लिए है और पेट भोजन के लिए', और परमेश्वर इसका और उसका दोनों का अन्त कर देगा। परन्तु यह सच नहीं कि शरीर व्यभिचार के लिए है। वह प्रभु के लिए है, और प्रभु शरीर के लिए। जैसे परमेश्वर ने प्रभु को जीवित उठाया वैसे ही वह अपनी सामर्थ्य से हमें भी जीवित उठाएगा। तो क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा शरीर मसीह का अंग है? क्या मैं मसीह के अंगों को लेकर वेश्या के अंग बना दूं? कदापि नहीं। क्या तुम नहीं जानते कि जो वेश्या से संयुक्त होता है, वह उसके साथ एक-तन हो जाता है क्योंकि कहा गया है, 'वे दोनों एक-तन हो जाएंगे।' किन्तु जो प्रभु से संयुक्त होता है, वह प्रभु के साथ एकात्म होता है। व्यभिचार से दूर भागो। अन्य सब पाप जो मनुष्य करता है, वे शरीर से पृथक हैं, परन्तु व्यभिचार करनेवाला स्वयं अपने शरीर के विरुद्ध पाप करता है। क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है जो तुममें निवास करता है और जो तुम्हें परमेश्वर से प्राप्त हुआ है? तुम अपने नहीं हो, मूल्य देकर मोल लिए गए हो। अतः अपने शरीर द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।

ब्रह्मचर्य एवं विवाह

अब वे बातें लें जिनके विषय में तुमने पत्र में लिखकर पूछा है

पुरुष के लिए अच्छा तो यह है कि स्त्री का स्पर्श न करे। किन्तु अनैतिक सम्बन्ध से बचने के लिए प्रत्येक पुरुष की अपनी पत्नी हो और प्रत्येक स्त्री का अपना पति। पति अपनी पत्नी को उसका हक दे और इसी प्रकार पत्नी अपने पति को। पत्नी का अपने शरीर पर अधिकार नहीं, वह उसके पति का है। इसी प्रकार पति का अपने शरीर पर अधिकार नहीं, वह उसकी पत्नी का है। एक-दूसरे को उसके इस हक से वंचित मत करो। यदि ऐसा करो भी तो आपस में परामर्श कर केवल कुछ समय के लिए, जिससे प्रार्थना के लिए अवकाश मिले। इसके पश्चात् फिर साथ रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे असंयम के कारण शैतान तुम्हें प्रलोभन में डाले। यह मैं अनुमति के रूप में कहता हूं, आदेश के रूप में नहीं। मैं तो चाहता हूं कि जैसा मैं हूं, वैसे ही सब हों। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर की ओर से विशिष्ट वरदान मिला है—किसी को एक प्रकार का, किसी को दूसरे प्रकार का।

अविवाहितों और विधवाओं से मैं यह कहता हूं:

यदि वे मेरे सदृश रहें तो उनके लिए उत्तम है। किन्तु यदि वे संयम नहीं कर सकते हों तो विवाह कर लें, क्योंकि कामाग्नि में जलते रहने से तो यही अच्छा है कि विवाह कर लिया जाए। पर विवाहितों को मेरी आज्ञा है—मेरी नहीं, प्रभु की आज्ञा है—कि पत्नी पति से अलग न हो और यदि अलग हो जाए तो विवाह न करे, अथवा अपने पति से पुनः मेल कर ले। इसी प्रकार पति पत्नी का परित्याग न करे।

सम्भव है, तो वह भाई उसे न छोड़े। और यदि किसी स्त्री का पति प्रभु पर विश्वास नहीं करता, और वह उसके साथ रहने को सहमत है, तो वह स्त्री उसे न छोड़े। जो पति विश्वास-रहित है, वह अपनी पत्नी के कारण पवित्र बनता है और जो पत्नी विश्वास-रहित है, वह विश्वासयुक्त पति के कारण पवित्र बनती है। नहीं तो तुम्हारी सन्तान कलंकित होती। परन्तु अब तुम्हारी सन्तान पवित्र है।

किन्तु यदि कोई व्यक्ति, जो विश्वास-रहित है अपनी पत्नी से अलग होता है तो उसे अलग होने दो। ऐसी दशा मे कोई भाई या बहिन बन्धन मे नहीं है। परमेश्वर ने शान्ति मे रहने के लिए तुम्हे बुलाया है। तनिक विचार करो हो सकता है पत्नी अपने पति के उद्धार का कारण हो। इसी प्रकार यह भी सम्भव है कि पति अपनी पत्नी के उद्धार का कारण हो जाए।

परमेश्वर की कृपा के अनुसार जीवन बिताओ

प्रभु ने जिसको जैसी स्थिति मे रखा है, परमेश्वर ने जिसको जैसी स्थिति मे बुलाया है, वह उसी प्रकार जीवन बिताए। मै सभी कलीसियाओ मे ऐसी ही व्यवस्था देता हू। क्या कोई खतने की स्थिति मे बुलाया गया है? वह अपनी स्थिति न छिपाए। क्या कोई खतना-रहित स्थिति मे बुलाया गया है? वह खतना न कराए। न खतने मे कुछ रखा है और न खतना-रहित होने मे। मुख्य बात परमेश्वर की आज्ञा मानना है।

जिसे जिस स्थिति में बुलाया गया, वह उसी मे रहे। क्या दासता की स्थिति मे तुम्हे बुलाया गया है? कोई चिन्ता नहीं। यदि स्वतन्त्र होना सम्भव हो तो अवसर का लाभ उठा लो।* प्रभु में आह्वान के समय जो दास था, वह प्रभु मे 'स्वतन्त्र व्यक्ति' हो गया है। इसी प्रकार जो आह्वान के समय स्वतन्त्र था, वह मसीह का दास बन गया। तुम मूल्य देकर मोल लिए गए हो; मनुष्यो के दास न बनो। भाइयो, प्रत्येक व्यक्ति जिस स्थिति मे बुलाया गया, उसी मे परमेश्वर के साथ रहे।

अविवाहित पुरुष और स्त्रियां

कुमारियो के विषय मे मुझे प्रभु से कोई आदेश नहीं मिला। फिर भी प्रभु की दया से मै विश्वास के योग्य हू, इस कारण परामर्श दे रहा हू।

मेरा विचार है कि वर्तमान कठिन परिस्थिति मे मनुष्य के लिए यही अच्छा है कि वह जैसा है वैसा ही रहे। क्या तुम्हारे पत्नी है? उससे मुक्त होने का प्रयत्न न करो। क्या तुम्हारे पत्नी नहीं है? तो फिर पत्नी की खोज न करो। यदि तुम विवाह करो तो पाप नहीं करते, और यदि कुमारी विवाह करे तो वह पाप नहीं करती। किन्तु ऐसे लोगो को सासारिक जीवन मे कष्ट सहने पड़ेगे, और मै तुम्हे उनसे बचाना चाहता हू। भाइयो, मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि समय थोड़ा रहा है। अत जिनके पत्नी हैं, वे ऐसे रहे मानो पत्नी रहित है। जो शोक करते हैं, वे ऐसे रहे मानो शोक नहीं कर रहे। जो आनन्द मनाते है, वे ऐसे मनाए मानो आनन्द नहीं मना रहे। जो व्यवसाय करते हैं, वे ऐसे करे मानो उनके पास कुछ नहीं है; और जो ससार का उपभोग करते हैं वे इस प्रकार रहे मानो उसका उपभोग नहीं कर रहे, क्योकि ससार का वर्तमान रूप परिवर्तित हो रहा है।

मै चाहता हू कि तुम चिन्ता-मुक्त रहो। अविवाहित पुरुष को प्रभु के विषय मे चिन्ता रहती है कि प्रभु को कैसे प्रसन्न करे। पर विवाहित पुरुष को सासारिक बातो की चिन्ता रहती है। वह सोचता है कि पत्नी को कैसे प्रसन्न करे। उसके हृदय मे अन्तर्द्वन्द्व रहता है। अविवाहित स्त्री तथा कुमारी को प्रभु के विषय मे चिन्ता रहती है कि तन और मन दोनो मे पवित्र रहे। परन्तु विवाहित को सासारिक बातो की चिन्ता रहती है कि अपने पति को कैसे

*अथवा 'अपनी गुलामी की स्थिति का लाभ उठाओ'।

प्रसन्न करे। यह मै तुम्हारी भलाई के लिए कह रहा हू, तुम्हे बन्धन मे डालने के लिए नहीं वरन् इसलिए कि यह तुम्हे शोभा देता है, कि तुम दत्तचित्त होकर प्रभु की सेवा मे लगे रहो।

यदि कोई पुरुष समझता है कि वह अपनी मगेतर* के प्रति अशोभनीय व्यवहार कर रहा है, और यदि काम-इच्छा सयमित नही है, और दूसरा उपाय न होने पर अपनी इच्छानुसार वे विवाह कर ले। इसमे पाप नही। परन्तु जिसका हृदय विचलित नही, स्थिर है, जिसको काम-इच्छा की आवश्यकता अनुभव नही होती, जिसे अपनी इच्छा-शक्ति पर पूर्ण अधिकार है, जिसने अपनी मगेतर से विवाह न करने का पूर्ण निश्चय कर लिया है, वह अच्छा करता है। इस प्रकार जो अपनी मगेतर के साथ विवाह करता है, वह अच्छा करता है, किन्तु जो विवाह नही करता, वह और भी अच्छा करता है।

विधवा

जब तक किसी स्त्री का पति जीवित है, वह उसके बन्धन मे है। परन्तु पति की मृत्यु होने पर वह स्वतन्त्र है और जिससे चाहे विवाह कर सकती है, किन्तु आवश्यक यह है कि यह विवाह प्रभु मे हो। फिर भी मेरे विचार मे यदि वह जैसी है वैसी ही रह जाए तो अधिक धन्य है। मै समझता हू कि मुझमे भी परमेश्वर का आत्मा है।

क्या मूर्तियों को चढ़ाया गया प्रसाद खा सकते हैं ?

मूर्तियो को अर्पित की गई वस्तुओ के विषय मे हमे निश्चय है कि हम सब ज्ञानवान हैं। इस 'ज्ञान' से अहकार होता है, परन्तु प्रेम से उत्थान होता है। यदि कोई सोचता है कि वह जानता है, तो जैसे जानना चाहिए, नही जानता। परन्तु यदि कोई परमेश्वर से प्रेम करे तो परमेश्वर उसे पहचानता है।

मूर्तियो को अर्पित भोजन ग्रहण करने के विषय मे: हम जानते है कि ससार मे मूर्ति निस्सार होती है, और एक परमेश्वर को छोड़कर कोई अन्य परमेश्वर नही। आकाश और पृथ्वी पर तथाकथित देवता भले ही हो, और सच पूछिए तो ऐसे देवता और प्रभु बहुत है, पर हमारे लिए परमेश्वर एक है, और वह पिता है, उससे ही सबका उद्‌भव है और उसी के लिए हम जीते है। प्रभु भी एक है अर्थात् यीशु मसीह जिनके द्वारा सब कुछ है और जिनके द्वारा हम भी है।

दूसरों की भावनाओं का ध्यान रखो

परन्तु यह ज्ञान सबको प्राप्त नही। कुछ मसीही भाई अब तक मूर्तिपूजा के अभ्यस्त है। वे इस भोजन को मूर्तियो को अर्पित समझकर खाते है और इस प्रकार उनका अन्त करण, निर्बल होने के कारण, कलुषित हो जाता है। यह भोजन हमे परमेश्वर के समीप नही ले जाता। यदि हम न खाए तो कोई हानि नही, और यदि खाए तो कोई लाभ नहीं। पर सावधान रहो कि तुम्हारे अधिकार के प्रयोग से किसी दुर्बल विश्वासी को ठेस न लगे। यदि कोई भाई, जिसका अन्त करण दुर्बल है, तुम जैसे ज्ञानी को मन्दिर मे भोजन करते देखे तो क्या उसे मूर्ति के सम्मुख चढ़ाए गए भोजन को खाने का साहस न हो जाएगा ? इस प्रकार तुम्हारे ज्ञान से वह दुर्बल व्यक्ति नष्ट हो जाएगा—वह भाई जिसके लिए मसीह मरे। यदि तुम अपने भाइयो के विरुद्ध पाप करते और उनके दुर्बल मन को ठेस पहुचाते हो, तो मसीह के विरुद्ध पाप करते हो। इसलिए यदि मेरे मास खाने से मेरे भाई को ठेस पहुचती है तो मैं कदापि मास नही खाऊगा, जिससे मेरे भाई का पतन न हो।

पौलुस ने अपने अधिकारों से लाभ नहीं उठाया

क्या मैं स्वतन्त्र नहीं हू ? क्या मै प्रेरित नही हू ? क्या मैने यीशु, हमारे प्रभु, के दर्शन

नहीं किए? क्या तुम लोग प्रभु में मेरी रचना नहीं हो? चाहे दूसरों के लिए मैं प्रेरित न हू पर तुम्हारे लिए तो निश्चय ही हू, क्योंकि प्रभु में तुम मेरे प्रेरित-पद की छाप हो।

अपने आलोचकों से अपने पक्ष के समर्थन में मुझे यह कहना है क्या हमें खाने-पीने का अधिकार नहीं? क्या अन्य प्रेरितो की भाति, और प्रभु के भाइयो तथा कैफा की भाति, हमें अधिकार नहीं कि किसी मसीही महिला से विवाह करें और जहा जाए वहा उसे साथ ले जाए? या केवल मेरा और बरनबास का ही कर्तव्य है कि जीविका अर्जन करते रहे? कौन है जो अपने व्यय से सेना में सेवा करता है? कौन है जो अगूर का उद्यान लगाए और उसका फल न खाए, अथवा पशुपालन करे किन्तु उन पशुओ का दूध न पिए? क्या मैं मानवीय स्तर पर बात कर रहा हू? क्या व्यवस्था भी यह नहीं कहती? मूसा के व्यवस्था-शास्त्र में लिखा है, 'दाय करते बैल का मुह न बाधना।' क्या परमेश्वर बैलो के लिए चिन्तित है, अथवा वह हम सबके लिए कह रहा है? यह हमारे लिए लिखा गया है। क्योंकि यह उचित ही है कि जोतनेवाला आशा से जोते और दाय करनेवाला अपने हिस्से की प्राप्ति की आशा से दाय करे। यदि हमने तुम्हारे लिए आध्यात्मिक बीज बोए, तो क्या यह बड़ी बात है कि हम तुमसे लौकिक फल प्राप्त करें? यदि औरो का तुमपर यह अधिकार है तो क्या हमारा विशेषाधिकार नहीं? पर हमने इस अधिकार का उपयोग नहीं किया। हम सब कुछ सहन करते हैं कि हमारे द्वारा मसीह के शुभ-सन्देश सुनाने में बाधा न पहुचे।

क्या तुम नहीं जानते कि मन्दिर में सेवाकार्य करनेवाले मन्दिर से खाते हैं? और वेदी पर सेवा करनेवाले वेदी से बलि-भाग प्राप्त करते हैं? इसी प्रकार प्रभु ने आदेश दिया कि शुभ-सन्देश सुनानेवाले प्रचारक शुभ-सन्देश से जीविका प्राप्त करें। किन्तु मैंने इन अधिकारो में लाभ नहीं उठाया। मैं यह इसलिए नहीं लिख रहा कि मेरे लिए यह सब हो जाए। ऐसा होने से तो मेरा मर जाना अच्छा। कोई मुझे इस गौरव से वचित न करे। यदि मैं प्रभु यीशु के शुभ-सन्देश का प्रचार करता हू तो इसमें मेरे लिए कोई गर्व की बात नहीं। मैं विवश हू। यदि मैं शुभ-सन्देश न सुनाऊ तो मुझे धिक्कार! यदि मैं स्वेच्छा से सुनाता तो मुझे पारिश्रमिक मिलता; पर मैं स्वेच्छा से नहीं सुना रहा, केवल अपने भण्डारीपन का कर्तव्य पूरा कर रहा हू। तो फिर क्या है मेरा पारिश्रमिक? यह कि मैं प्रभु यीशु के शुभ-सन्देश का प्रचार बिना मूल्य लिए करू और उससे सम्बन्धित अपने अधिकारो को उपयोग में न लाऊ।

पौलुस सबके लिए सब कुछ बने

स्वतन्त्र होने पर भी मैंने अपने को सबका दास बना लिया है कि बहुत लोगो को प्राप्त करू। मैं यहूदियो के लिए यहूदी जैसा बन गया कि यहूदियो को प्राप्त करू। जो लोग व्यवस्था के अधीन है, उनके लिए मैं, स्वय व्यवस्था के अधीन न होने पर भी, व्यवस्था के अधीन जैसा बन गया कि व्यवस्था के अधीन व्यक्तियो को प्राप्त करू। जो लोग व्यवस्था-विहीन हैं, उनके लिए मैं, जो परमेश्वर की व्यवस्था-विहीन नहीं किन्तु मसीह की व्यवस्था के अधीन हू, व्यवस्था-विहीन जैसा बन गया कि व्यवस्था-विहीन व्यक्तियो को प्राप्त करू। मैं दुर्बलो के लिए दुर्बल जैसा बन गया कि दुर्बलो को प्राप्त करू। मैं सबके लिए सब कुछ बना कि किसी प्रकार कुछ का उद्धार हो जाए। मैं प्रभु यीशु का शुभ-सन्देश सुनाने के लिए सब कुछ करता हू कि औरो के साथ उसमें सहभागी बन सकू।

विजय के लिए प्रयत्न

क्या तुम नहीं जानते कि प्रतियोगिता में दौड़ते सभी है परन्तु पुरस्कार केवल एक को ही मिलता है। इस प्रकार दौड़ो कि पुरस्कार प्राप्त करो। प्रतियोगिता में भाग लेनेवाला व्यक्ति सब प्रकार से सयम करता है। वे नष्ट होनेवाले मुकुट की प्राप्ति के लिए यह सब करते हैं, और हम अविनाशी मुकुट की प्राप्ति के लिए। इसलिए मैं लक्ष्यहीन नहीं दौड़ता। मैं घूसे

का युद्ध लड़ता हूं, पर हवा नहीं पीटता। मैं अपने शरीर को ताड़ना देता और वश में रखता हूं कि कहीं ऐसा न हो कि दूसरों को उपदेश दूं, और स्वयं अयोग्य हो जाऊं।

इस्राएल के इतिहास से चेतावनी

भाइयो, मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि हमारे सभी पूर्वज मेघ-छाया में चले, सब के सब समुद्र से पार हुए, और सब मेघ एवं समुद्र में बपतिस्मा लेकर मूसा के अनुयायी हुए। सबने एक ही आध्यात्मिक भोजन किया, सबने एक ही आध्यात्मिक जल पिया, क्योंकि वे एक आध्यात्मिक चट्टान से पिया करते थे, 'जो उनके साथ-साथ चलती थी, और यह चट्टान मसीह थे।

फिर भी उनमें से अधिकांश से परमेश्वर प्रसन्न नहीं हुआ; अतः उन लोगों को मरुभूमि में मरना पड़ा। ये घटनाएं हमारे लिए प्रतीक थीं कि हम बुरी बातों के लिए इच्छुक न हों जैसे कि हमारे पूर्वज थे। तुम भी उनमें से अनेक व्यक्तियों के सदृश मूर्तिपूजक मत बनो, जैसाकि लिखा है, 'वे बैठे तो खाने-पीने के लिए, और उठे तो नाचने के लिए।' हम व्यभिचार न करें, जैसे उनमें से अनेक ने किया, और एक ही दिन में तेईस हजार मर गए। हम प्रभु की परीक्षा न लें, जैसे उनमें से कुछ ने ली, और सांपों के काटने से मर गए। तुमको कुड़कुड़ाना नहीं चाहिए जैसे उनमें से कुछ कुड़कुड़ाए और विनाशक दूत द्वारा विनष्ट हुए। ये घटनाएं, जो उनपर बीतीं, प्रतीक स्वरूप थीं, और ये हम लोगों की चेतावनी के लिए लिखी गईं, क्योंकि हम युगान्त में जी रहे हैं।

इसलिए जो अपने को विश्वास में स्थिर समझता है, वह सावधान रहे कि कहीं गिर न पड़े। अब तक तुम पर कोई ऐसा प्रलोभन नहीं आया जो मानवी शक्ति से परे हो। परमेश्वर विश्वसनीय है—वह तुम्हें किसी ऐसे प्रलोभन में पड़ने भी न देगा जो तुम्हारी शक्ति से अधिक हो। और प्रलोभन आने पर वह उसमें से बाहर निकलने का मार्ग दिखाएगा जिससे तुम उसे सहन कर सको।

मूर्तिपूजा का त्याग

मेरे प्यारे भाइयो, मूर्तिपूजा से दूर रहो। मैं तुम्हें बुद्धिमान जानकर कह रहा हूं, तुम स्वयं मेरे कथन पर विचार करो। आशीर्वाद का कटोरा जिसपर हम आशीष मांगते हैं, क्या हम उसके द्वारा मसीह के रक्त में सहभागी नहीं होते? और जिस रोटी को हम तोड़ते हैं, क्या उसके द्वारा हम मसीह की देह में सहभागी नहीं होते? रोटी एक ही है, इस कारण हम अनेक होने पर भी एक देह हैं, क्योंकि उस एक रोटी में सहभागी हैं। जो शरीर की दृष्टि से यहूदी हैं, उनकी प्रथाओं पर ध्यान दो। क्या बलि-भोज खानेवाले व्यक्ति वेदी में सहभागी नहीं? तो क्या मैं कह रहा हूं कि मूर्ति पर चढ़ाया प्रसाद कुछ है? अथवा मूर्ति कुछ है? नहीं, मेरा कहना है कि जो बलि गैरयहूदी चढ़ाते हैं, वह परमेश्वर को नहीं, दुष्टात्माओं को चढ़ाते हैं, और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं के सहभागी बनो। तुम प्रभु के कटोरे और दुष्टात्माओं के कटोरे दोनों में से नहीं पी सकते। तुम प्रभु की मेज और दुष्टात्माओं की मेज दोनों में साझी नहीं हो सकते। क्या हम प्रभु को क्रुद्ध कर रहे हैं? क्या हम उनसे अधिक शक्तिमान हैं?

जो कुछ करो, परमेश्वर की महिमा के लिए करो

'मेरे लिए व्यवस्था की दृष्टि में सब कुछ उचित है'—किन्तु सब कुछ हितकर नहीं, 'सब कुछ उचित है'—किन्तु सब कुछ रचनात्मक नहीं। सब मनुष्य अपना नहीं, दूसरों का हित ढूंढ़े। जो कुछ मांस-बाजार में बिकता है, उसे खाओ और अन्तःकरण के समाधान के लिए कुछ पूछताछ मत करो, क्योंकि 'यह पृथ्वी और इसका समस्त भण्डार प्रभु का है।' यदि अविश्वासियों में से कोई तुम्हें निमन्त्रित करे और तुम जाना चाहो, तो वहां जो कुछ

तुम्हारे सामने परोसा जाता है उसे खाओ, और अन्त:करण के समाधान के लिए पूछताछ न करो। किन्तु यदि कोई कहे, 'यह मूर्ति का प्रसाद है', तो उस कहनेवाले के कारण एवं अन्त:करण के कारण मत खाओ। मेरा तात्पर्य तुम्हारे अन्त:करण से नहीं वरन् उस दूसरे के अन्त:करण से है। मेरी स्वतन्त्रता की परख किसी अन्य के अन्त:करण से क्यों हो? यदि मैं धन्यवाद देकर भोजन ग्रहण करता हूं तो फिर इस भोजन के लिए मेरी निन्दा क्यों हो?

खाओ या पीओ या कुछ भी करो सब परमेश्वर की महिमा के लिए करो। तुम्हारे कारण न तो यहूदियों को ठेस लगे, न यूनानियों को और न परमेश्वर की कलीसिया को। मैं सबको सब प्रकार प्रसन्न रखता हूं, और अपना नहीं किन्तु दूसरों का हित सोचता हूं कि उनका उद्धार हो। तुम मेरा अनुसरण करो जैसे मैं मसीह का अनुसरण करता हूं।

सार्वजनिक आराधना में नारी का स्थान

मैं तुम्हारी सराहना करता हूं कि तुम सदा मेरा ध्यान रखते हो और जो परम्पराएं मैंने तुम्हें सौंपी हैं, उनका पूर्ण रूप से पालन करते हो। फिर भी मैं तुम्हें बता देना चाहता हूं कि प्रत्येक पुरुष के ऊपर, अर्थात् उसका सिर मसीह है, स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर।

जो पुरुष सिर ढककर प्रार्थना या नबूवत करता है, वह अपने सिर का अपमान करता है। जो स्त्री सिर खोलकर प्रार्थना या नबूवत करती है, वह अपने सिर का अपमान करती है, वह मुण्डित स्त्री के समान है। यदि स्त्री ओढ़नी नहीं पहिनती तो सिर मुंडा ले, किन्तु यदि उसके लिए केश कटाना या मुण्डन कराना लज्जा की बात है तो अपना सिर ढके रहे। हां, पुरुष के लिए अपना सिर ढकना आवश्यक नहीं, क्योंकि वह परमेश्वर का प्रतिरूप और गौरव स्वरूप है। इसी प्रकार स्त्री पुरुष के लिए गौरव स्वरूप है, क्योंकि स्त्री से पुरुष नहीं बना वरन् पुरुष से स्त्री बनी; और स्त्री के लिए पुरुष की सृष्टि नहीं हुई वरन् पुरुष के लिए स्त्री की सृष्टि हुई। इस कारण, और स्वर्गदूतों के कारण भी, स्त्री को उचित है कि मान-मर्यादा* का चिह्न अपने सिर पर रखे। फिर भी प्रभु में स्त्री बिना पुरुष के, और पुरुष बिना स्त्री के कुछ नहीं, क्योंकि जैसे पुरुष से स्त्री का उद्गम हुआ वैसे ही स्त्री से पुरुष जन्म लेता है; किन्तु सबका उद्गम परमेश्वर से है।

तुम स्वयं विचार करो: क्या यह शोभा देता है कि स्त्री खुले सिर परमेश्वर से प्रार्थना करे? क्या स्वयं प्रकृति नहीं सिखाती कि लम्बे केश रखना पुरुष के लिए लज्जा की बात है, किन्तु लम्बे केश स्त्री की शोभा है, क्योंकि ये उसे आवरण के लिए प्राप्त हुए हैं। यदि इसपर भी कोई विवाद करना चाहे तो वह समझ ले कि परमेश्वर की कलीसिया में, हमारे यहां अथवा अन्यत्र, कोई दूसरी प्रथा प्रचलित नहीं है।

प्रभु-भोज का दुरुपयोग

ये आदेश देते समय मुझे एक विषय में तुम्हारी भारी भर्त्सना करनी है। प्रभु-भोज के लिए तुम्हारे एकत्र होने से भलाई की अपेक्षा बुराई अधिक उत्पन्न होती है। पहिली बात यह मैंने सुना है कि जब तुम कलीसिया में एकत्र होते हो तो तुममें दलबन्दियां दीख पड़ती हैं। मैं मानता हूं कि यह बात कुछ अंशों में सच है। तुममें विवाद होना आवश्यक है जिससे योग्य व्यक्ति तुममें प्रकाश में आएं। जब तुम एकत्र होते हो तब यह प्रभु-भोज ग्रहण करना नहीं है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपना-अपना भोजन खाने में लग जाता है। परिणाम यह कि कोई भूखा रह जाता है तो कोई मतवाला हो जाता है। क्या खाने-पीने के लिए तुम्हारे घर नहीं हैं? क्या तुम परमेश्वर की कलीसिया को हेय दृष्टि से देखते हो और निर्धन का अपमान करने का साहस करते हो? मैं तुमसे क्या कहूं! क्या इसके लिए मैं तुम्हारी सराहना करूं? कदापि नहीं!

*अक्षरश: 'अधिकार'

प्रभु-भोज का अनुष्ठान

जो परम्परा मैंने तुम्हें सौंपी है, वह मुझे प्रभु से प्राप्त हुई थी . जिस रात को प्रभु यीशु पकड़वाए गए, उन्होंने रोटी ली, धन्यवाद देकर तोड़ी और कहा, 'यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिए है मेरी स्मृति में यह किया करो।' इसी प्रकार भोजन के पश्चात् यीशु ने कटोरा लिया और कहा, 'यह कटोरा मेरे रक्त द्वारा स्थापित नई वाचा* है। जब कभी पियो तो मेरी स्मृति में यह किया करो।' अत जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे से पीते हो, तब प्रभु के आने तक उनकी मृत्यु की घोषणा करते हो।

प्रभु-भोज में उचित रीति से सम्मिलित होना

इसलिए जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए अथवा उनके कटोरे से पिए, वह प्रभु की देह और रक्त का अपराधी होगा। मनुष्य अपने को परखे और तब इस रोटी को खाए और इस कटोरे से पिए, क्योंकि जो कोई प्रभु की देह** का अर्थ समझे बिना खाता और पीता है, वह दण्ड के लिए खाता और पीता है। यही कारण है कि तुम लोगों के बीच बहुत से दुर्बल और रोगी हैं, और अनेक मर गए हैं। यदि हम अपने को ठीक-ठीक जांचते तो दण्ड के भागी न होते। फिर भी प्रभु हमारे सुधार के लिए हमारी ताड़ना कर रहे हैं कि हम संसार के साथ दण्डनीय न हों।

मेरे भाइयो, जब तुम प्रभु-भोज के लिए एकत्र हो तो एक-दूसरे की प्रतीक्षा करो। यदि कोई भूखा हो तो घर पर खा ले, जिससे तुम्हारा एकत्र होना दण्ड का कारण न बने।

शेष बातों की व्यवस्था मैं आने पर करूंगा।

आध्यात्मिक वरदानों की अनेकता और एकता

हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम आध्यात्मिक वरदानों के विषय में अपरिचित रहो। तुम जानते हो कि जब तुम अन्यधर्मी थे तो गूंगी मूर्तियों के पास जैसे हांके जाते थे, चले जाते थे। इसलिए मैं तुम्हें बताए देता हूं कि जो परमेश्वर के आत्मा से प्रेरित है, वह कभी नहीं कहता कि 'यीशु शापित हैं', और पवित्र आत्मा के बिना कोई नहीं कह सकता कि 'यीशु प्रभु हैं।'

वरदान विभिन्न हैं, परन्तु आत्मा एक है। सेवाएं अनेक प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक हैं। प्रभावशाली कार्य अनेक प्रकार के हैं, किन्तु परमेश्वर एक ही है जो सबमें सब प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। प्रत्येक व्यक्ति को सबके कल्याण के लिए आत्मा का प्रकाश मिलता है। किसी को आत्मा द्वारा बुद्धिमानी की बातें करने, किसी को उसी आत्मा द्वारा ज्ञान के शब्द बोलने और किसी अन्य को उसी आत्मा द्वारा विश्वास करने का वरदान मिलता है; किसी को स्वस्थ करने, किसी को आश्चर्यपूर्ण सामर्थ्य के काम करने और किसी को नबूवत करने की शक्ति प्राप्त होती है। उसी आत्मा से एक को आत्माओं की परख करने, दूसरे को भिन्न-भिन्न अध्यात्म भाषाओं में बोलने, और किसी को उन अध्यात्म भाषाओं का अर्थ समझाने की सामर्थ्य मिलती है। ये सब कार्य उसी एक आत्मा के हैं जो अपनी इच्छानुसार प्रत्येक व्यक्ति को वरदान बांटता है।

शरीर का उदाहरण

जैसे शरीर एक है और उसके अंग अनेक, एवं शरीर के अंग अनेक होने पर भी शरीर एक ही है—इसी प्रकार मसीह हैं। हम यहूदी हों या यूनानी, गुलाम हों या स्वतन्त्र—हम सबने एक आत्मा द्वारा एक देह में बपतिस्मा लिया है। हम सबने एक ही आत्मा का पान किया है।

*अथवा, 'व्यवस्थान', 'विधान', 'सन्धि', 'समझौता'
**अथवा, 'देहरूपी कलीसिया'

शरीर में तो एक नहीं अनेक अंग हैं। यदि पैर कहे, 'मैं हाथ नहीं इसलिए मैं शरीर नहीं' तो क्या इस कारण वह शरीर का अंग नहीं? यदि कान कहे, 'मैं आंख नहीं, इसलिए मैं शरीर [redacted] अंग नहीं', तो क्या इस कारण वह शरीर का अंग नहीं? यदि समस्त शरीर आंख हो तो सुनना कहां रहेगा? यदि समस्त शरीर कान हो तो सूंघना कहां रहेगा? परन्तु स्थिति यह है कि परमेश्वर ने अपनी इच्छा के अनुसार प्रत्येक अंग को शरीर में स्थान दिया है। यदि सब के सब एक ही अंग होते तो शरीर कहां रहता। परन्तु सब अंग अनेक होने पर भी शरीर एक ही है। आंखें हाथ से नहीं कह सकतीं, 'मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं' और न सिर पैरों से कह सकता है, 'मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं।' वरन् इसके विपरीत शरीर के जो अंग कोमल समझे जाते हैं, वे अत्यन्त आवश्यक हैं, और शरीर के जिन अंगों को हम कम महत्वपूर्ण समझते हैं, उन्हीं को हम अधिक आदर देते हैं। जिन अंगों को हम अशोभनीय समझते हैं, उन्हें ढककर शोभनीय बनाते हैं, किन्तु हमारे सुडौल अंगों को इसकी आवश्यकता नहीं होती। परमेश्वर ने शरीर का संगठन करते समय कम महत्वपूर्ण अंगों को अधिक सम्मानित किया, जिससे शरीर में विरोध उत्पन्न न हो, किन्तु विभिन्न अंग एक दूसरे की चिन्ता करें। अत: यदि एक अंग दु:ख उठाता है तो उसके साथ सब अंग दु:ख उठाते हैं, और यदि एक अंग का सम्मान होता है तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं।

तुम सब मिलकर मसीह की देह हो और व्यक्तिगत रूप से उसके अंग। परमेश्वर ने कलीसिया में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को नियुक्त किया है: प्रथम प्रेरित, दूसरे नबी, तीसरे शिक्षक, तब आश्चर्यपूर्ण कार्य करनेवाले, तब वे जिन्हें स्वस्थ करने का वरदान मिला है, सहायक, प्रबन्धक एवं अनेक अध्यात्म भाषा बोलनेवाले। क्या सब प्रेरित हैं? सब नबी हैं? सब शिक्षक हैं? सब आश्चर्यपूर्ण कार्य करते हैं? सबको स्वस्थ करने का वरदान मिला है? सब अध्यात्म भाषाएं बोलते हैं? क्या सब उनका अर्थ समझाते हैं? तुम्हें श्रेष्ठतर वरदानों की धुन रहे।

प्रेम सबसे उत्तम है

अब मैं तुम्हारे सम्मुख सर्वोत्तम मार्ग प्रस्तुत करता हूं।

यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाएं बोलूं, किन्तु दूसरों से प्रेम न करूं, तो मैं ठनठनाता घड़ियाल और झनझनाती झांझ हूं।

यदि मैं नबूवत कर सकूं, समस्त रहस्य और समस्त ज्ञान को जान लूं, तथा मेरा विश्वास इतना पूर्ण हो जाए कि पहाड़ों को उनके स्थान से हटा सकूं, किन्तु मुझमें प्रेम न हो, तो मैं कुछ भी नहीं हूं।

यदि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति दान कर दूं और अपना शरीर भस्म होने के लिए अर्पित कर दूं,* किन्तु मुझमें प्रेम न हो, तो मुझे अपने त्याग से कोई लाभ नहीं।

प्रेम सहनशील है।
प्रेम दयालु है।
वह ईर्ष्या नहीं करता, अहंकार नहीं करता।
बढ़-चढ़कर बातें नहीं करता।
प्रेम अभद्र व्यवहार नहीं करता,
स्वार्थ नहीं खोजता,
झुंझलाता नहीं,
बुराई का लेखा नहीं रखता,
अधर्म पर प्रसन्न नहीं होता—वरन् सच्चाई से प्रसन्न होता है।
प्रेम सब बातें सहन करता है,

*पाठान्तर 'प्रसिद्धि पाने के लिए अपना शरीर अर्पित कर दूं।'

सब बातों पर विश्वास करता है,
सब बातों की आशा रखता है।
सब बातों में धैर्य रखता है।
प्रेम का अन्त कभी न होगा
नबूवते हैं, वे समाप्त हो जाएंगी
अध्यात्म भाषाएं हैं, वे मौन हो जाएंगी,
ज्ञान है, वह लुप्त हो जाएगा,
क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और अधूरी हैं हमारी नबूवतें,
किन्तु जब पूर्ण आएगा तो अपूर्ण का अन्त हो जाएगा।

जब मैं बालक था तब बालक के समान बोलता था, बालक के समान सोचता था और बालक के समान समझता था। परन्तु जब जवान हुआ तब बालकों की-सी बातें छोड़ दीं।

इस समय हमें दर्पण में धुंधला-सा दिखाई पड़ता है, परन्तु उस समय हम प्रत्यक्ष देखेंगे। इस समय मेरा ज्ञान अपूर्ण है—उस समय पूर्णरूप से जानूंगा, जैसा परमेश्वर मुझे पूर्णरूप से जानता है।

अतः विश्वास, आशा और प्रेम, ये तीनों स्थायी हैं, किन्तु प्रेम सबसे महान है।

नबूवत करना और अध्यात्म भाषाएं बोलना

प्रेम के लिए प्रयत्न करो, परन्तु आध्यात्मिक वरदानों की प्राप्ति के लिए भी उत्सुक रहो, विशेषतः नबूवत के लिए। जो व्यक्ति अध्यात्म-भाषा में बोलता है, वह मनुष्यों [illegible] नहीं परमेश्वर से बोलता है। कोई उसे नहीं समझता। वह आत्मा द्वारा ऐसी बातें कहता है जो रहस्यमय होती हैं। परन्तु जो व्यक्ति नबूवत करता है, वह परमेश्वर के सन्देश द्वारा मनुष्य का जीवन-निर्माण करता, उसे उत्साह एवं सान्त्वना प्रदान करता है।

जो अध्यात्म भाषा बोलता है, वह अपने जीवन का निर्माण करता है, किन्तु जो नबूवत करता है, वह कलीसिया के जीवन का।

मैं चाहता हूं कि तुम सब अध्यात्म भाषाएं बोलो, पर इससे कहीं अधिक यह चाहता हूं कि नबूवत करो। यदि अध्यात्म भाषाएं बोलनेवाला कलीसिया के निर्माण के लिए स्वयं उनकी व्याख्या न कर सके, तो उससे बढ़कर वह है जो नबूवत करता है।

भाइयो, मान लो यदि मैं तुम्हारे यहां आकर अध्यात्म भाषाएं बोलूं, पर प्रकाशित-सत्य, ज्ञान, नबूवत और शिक्षा प्रदान न करूं, तो मैं तुम्हारा क्या हित करूंगा? जैसे बांसुरी अथवा वीणा—जो निर्जीव वस्तुएं हैं पर जिनसे ध्वनि निकलती है—यदि उनके स्वरों में भेद न हो, तो यह कैसे ज्ञात होगा कि बांसुरी अथवा वीणा पर क्या बज रहा है। यदि तुरही का शब्द स्पष्ट न हो तो कौन युद्ध के लिए प्रस्तुत होगा? इसी प्रकार तुम भी, यदि अध्यात्म भाषा बोलो और कोई सार्थक बात न कहो, तो तुम्हारी बात कौन समझेगा? सुननेवाले को ऐसा लगेगा कि तुम हवा से बातें कर रहे हो।

इस संसार में न जाने कितने प्रकार के शब्द हैं। परन्तु उनमें कोई भी अर्थहीन नहीं है। यदि मैं किसी शब्द का अर्थ न जानूं तो मैं बोलनेवाले के लिए विदेशी [illegible] और बोलनेवाला मेरे लिए। इसलिए तुम भी जो पवित्र आत्मा के वरदानों के लिए प्रयत्नशील हो, ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारी वरदान-प्राप्ति से कलीसिया का निर्माण हो।

फलतः अध्यात्म भाषा बोलनेवाला प्रार्थना करे कि वह उसका अर्थ भी बता सके। यदि मैं अध्यात्म भाषा में प्रार्थना करूं तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है पर मन उसमें सक्रिय नहीं होता? तो हम क्या करें? मैं आत्मा द्वारा प्रार्थना करूंगा, और मन से भी प्रार्थना करूंगा। मैं आत्मा द्वारा गीत गाऊंगा और मन से भी गाऊंगा।

उपस्थित है, तुम्हारे धन्यवाद के पश्चात् 'आमेन' कैसे कहेगा ? क्योंकि वह नहीं जानता कि तुम क्या कह रहे हो। तुमने धन्यवाद अच्छी रीति से दिया, परन्तु दूसरे व्यक्ति का उत्थान नहीं हुआ। परमेश्वर को धन्यवाद, मैं अध्यात्म भाषाएं तुम सबसे अधिक बोलता हूं, पर कलीसिया में अध्यात्म भाषा के दस हजार शब्दों की अपेक्षा अपने मन से पांच शब्द बोलना उत्तम मानता हूं, जिससे दूसरों को भी उपदेश दे सकूं।

भाइयो, विचार में बालक न बनो, वरन् बड़ों के समान सोचो-समझो, हां बुराई के सम्बन्ध में शिशु बने रहो। व्यवस्था ग्रन्थ में लिखा है—

प्रभु का कथन है,

"मैं अजनबी-भाषाएं बोलनेवाले विदेशी लोगों द्वारा अपने निज लोगों से बातें करूंगा। परन्तु इसपर भी वे लोग मेरी बात नहीं सुनेंगे।"

स्पष्ट है कि अध्यात्म भाषाएं विश्वासियों के लिए नहीं, अविश्वासियों के लिए चिह्न-स्वरूप है। किन्तु नबूवत अविश्वासियों के लिए नहीं, विश्वासियों के लिए है। यदि समस्त कलीसिया एक स्थान पर एकत्र हो और सबके सब अध्यात्म भाषाएं बोलने लगें, और कुछ नव-विश्वासी अथवा भिन्न धर्मावलम्बी भीतर आ जाएं तो क्या वे तुम्हें पागल नहीं समझेंगे। परन्तु सब नबूवत करने लगें और कोई भिन्न धर्मावलम्बी अथवा नव-विश्वासी भीतर आ जाए तो उसे इस दृश्य से अपने पाप का बोध होगा और वह अपनी जांच करेगा। इस प्रकार उसके हृदय के गोपनीय रहस्य प्रकाश में आ जाएंगे, और वह परमेश्वर के सम्मुख घुटने टेककर आराधना करेगा और मान लेगा कि सचमुच तुम्हारे बीच परमेश्वर है।

उपासना में अनुशासन की आवश्यकता

भाइयो, फिर क्या निष्कर्ष निकला ? जब कभी तुम एकत्र होते हो तब प्रत्येक के मन में कोई भजन, कोई उपदेश, कोई प्रकाशित-सत्य, कोई अध्यात्म भाषा अथवा उसकी व्याख्या होती है, यह सब एक-दूसरे के उत्थान के लिए हो। यदि कोई अध्यात्म भाषा बोले तो दो या अधिक से अधिक तीन व्यक्ति बोलें और क्रम से बोलें तथा एक व्यक्ति उनका अर्थ समझाए। यदि कोई अर्थ समझानेवाला न हो तो अध्यात्म भाषा बोलनेवाला कलीसिया में मौन रहे और मन ही मन स्वयं से एवं परमेश्वर से बात करे।

नबूवत करनेवालों में से दो या तीन बोलें और शेष लोग उनकी बातों पर चिन्तन-मनन करें। यदि बैठे हुओं में से किसी को परमेश्वर का कोई सन्देश प्राप्त हो, तो उस समय बोलनेवाला चुप हो जाए। तुम सब एक-एक करके नबूवत कर सकते हो जिससे सबको उपदेश का प्रोत्साहन मिले। नबियों की आत्मा नबी के वश में होनी चाहिए, क्योंकि परमेश्वर अव्यवस्था का नहीं शान्ति का परमेश्वर है।

जैसे सन्तों की समस्त कलीसियाओं में प्रथा है वैसे ही तुम्हारी कलीसियाओं में भी स्त्रियां चुप रहें। उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है। जैसा व्यवस्था का कथन है, वे अधीनता पूर्वक रहें। यदि वे कुछ सीखना चाहती हैं तो घर में अपने-अपने पति से पूछें। स्त्री के लिए कलीसिया में बोलना लज्जा की बात है। भाइयो, क्या परमेश्वर का सन्देश तुम्हीं लोगों से प्रारम्भ हुआ ? क्या वह केवल तुम्हीं तक पहुंचा है ?

यदि कोई अपने को नबी या आध्यात्मिक व्यक्ति समझता है तो वह जान ले कि जो बातें मैंने तुम्हें लिखी हैं, वे प्रभु के आदेश हैं। यदि वह इनकी उपेक्षा करेगा तो उसकी उपेक्षा की जाएगी। मेरे भाइयो, नबूवत के लिए प्रयत्नशील रहो एवं अध्यात्म भाषा बोलनेवालों को मत रोको। परन्तु सब कुछ सुचारु और व्यवस्थित रूप से होना चाहिए।

मसीह का पुनरुत्थान

भाइयो, मैं तुम्हें उस शुभ-सन्देश का स्मरण कराता हूं जिसे मैंने तुमको दिया था, जिसे तुमने स्वीकार किया और जिसमें तुम अटल बने हुए हो। यदि तुम इस

पर स्थिर रहो जैसा मैंने तुम्हें सुनाया है, तो तुम्हारा उद्धार है, अन्यथा तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ।

मैंने तुमको सबसे पहिले वह प्रमुख सत्य पहुंचा दिया, जो मुझे प्राप्त हुआ था : धर्मशास्त्र के अनुसार मसीह हमारे पापों के लिए मरे, वह गाड़े गए तथा धर्मशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी उठे। उन्होंने कैफा को दर्शन दिया और तब बारह प्रेरितों को। इसके पश्चात् उन्होंने एक ही समय में पांच सौ से अधिक भाइयों को दर्शन दिया जिनमें से अधिकांश आज तक जीवित हैं, यद्यपि कुछ मर गए हैं। तत्पश्चात् उन्होंने याकूब को दर्शन दिया और तब समस्त प्रेरितों को। सबसे अन्त में उन्होंने मुझे भी दर्शन दिया, यद्यपि मैं मानो समय पूर्व उत्पन्न हुआ था। मैं प्रेरितों में सबसे छोटा हूं। मैं प्रेरित कहलाने योग्य भी नहीं, क्योंकि मैंने परमेश्वर की कलीसिया पर अत्याचार किया था। किन्तु मैं जो कुछ भी हूं परमेश्वर के अनुग्रह से हूं, और उसका अनुग्रह मुझपर निष्फल नहीं हुआ। मैंने उन सबसे अधिक परिश्रम किया—मैंने नहीं, यह परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा सम्पन्न हुआ जो मुझमें है। चाहे मैं हूं, चाहे वे, हम इसी शुभ-सन्देश का प्रचार करते हैं, और तुमने भी इसी पर विश्वास किया है।

मृतकों का पुनरुत्थान

जब मसीह के विषय में यह प्रचार किया जाता है कि वह मृतकों में से जी उठे तो तुममें से कुछ व्यक्ति कैसे कहते हैं कि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं है। यदि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं है तो मसीह भी नहीं जी उठे। और यदि मसीह नहीं जी उठे तो हमारा शुभ-सन्देश सुनाना व्यर्थ है, और व्यर्थ है तुम्हारा विश्वास। यदि मृतक नहीं जी उठते तो हम परमेश्वर के झूठे साक्षी प्रमाणित हुए, क्योंकि हमने परमेश्वर की ओर से यह साक्षी दी कि परमेश्वर ने मसीह को जीवित किया, परन्तु यदि वास्तव में मृतक नहीं जिलाए जाते तो उसने मसीह को जीवित नहीं किया। यदि मृतक नहीं जी उठते, तो मसीह भी नहीं जी उठे, और यदि मसीह नहीं जी उठे तो तुम्हारा विश्वास मिथ्या है और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो। इतना ही क्यों, जो व्यक्ति मसीह में सो गए हैं, वे भी नष्ट हुए। यदि हमें केवल इसी जीवन में मसीह से आशा है तो समस्त मनुष्य जाति में हमारी दशा सबसे अधिक दयनीय है।

परन्तु सच्चाई यह है कि मसीह मृतकों में से जी उठे हैं, और जो लोग सो गए हैं, उनमें वह प्रथम फल हैं। क्योंकि मानव द्वारा मृत्यु आई तो मानव द्वारा ही मृतकों का पुनरुत्थान हुआ। जिस प्रकार आदम में सब मनुष्य मरते हैं, उसी प्रकार मसीह में सब जीवित किए जाएंगे। पर यह प्रत्येक के अपने क्रम में होगा प्रथम फल मसीह, तब मसीह के पुनरागमन पर उनके अपने लोग। तब युगान्त होगा और मसीह प्रत्येक शासक, अधिकारी एवं शक्ति को नष्ट कर अपना राज्य परमेश्वर पिता को सौंप देंगे। क्योंकि 'जब तक परमेश्वर अपने सभी शत्रुओं को मसीह के चरण तले न ले आए' तब तक मसीह का शासन करते रहना अनिवार्य है। सब के अन्त में नष्ट होनेवाला शत्रु है मृत्यु। क्योंकि धर्मशास्त्र कहता है, 'सब कुछ मसीह के चरण तले किया गया है'. जब यह कहा गया कि सब कुछ अधीन किया गया तो इस कथन में निस्सन्देह परमेश्वर को छोड़ दिया गया है जिसने अधीन किया। जब सब कुछ पुत्र के अधीन हो जाएगा, तब स्वयं पुत्र भी पिता के अधीन हो जाएगा। पिता ने सब कुछ पुत्र के अधीन कर दिया, जिससे सबमें परमेश्वर ही सब कुछ हो।

नहीं तो जो व्यक्ति मृतकों के लिए बपतिस्मा लेते हैं, वे करते ही क्या हैं? यदि मृतक जी नहीं उठते तो उनके लिए बपतिस्मा क्यों लिया जाता है? और हम भी क्यों प्रति क्षण संकट का सामना करते हैं? भाइयो, उस अभिमान की शपथ जो मुझे अपने प्रभु मसीह यीशु में तुम पर है, मैं प्रतिदिन मरता हूं। यह मैं मनुष्य की दृष्टि से कह रहा हूं. यदि मुझे इफिसुस में जंगली पशुओं से लड़ना पड़ा तो मुझे क्या लाभ हुआ? यदि मृतक नहीं जी उठते तो 'हम [illegible] बुरी संगति उत्तम चरित्र को नष्ट

कर देती है। धर्म के प्रति जागरूक रहो और पाप में मत गिरो। कुछ लोग परमेश्वर के सम्बन्ध में नितान्त अज्ञानी हैं। यह मैं इसलिए कहता हूँ कि तुम्हें लज्जा आए।

शरीर पुनरुत्थान

किन्तु कोई पूछेगा, 'मृतक कैसे जी उठते हैं? और किस शरीर मे आते है?' ओ मूर्ख! जो कुछ तुम बोते हो, वह मरे बिना जीवित नहीं होता। तुम बोते हो, तो उस शरीर को नहीं बोते जो उत्पन्न होगा, परन्तु निरे दाने को बोते हो—चाहे गेहूं का हो या किसी अन्य अनाज का। परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छानुसार उसे शरीर प्रदान करता है—प्रत्येक बीज को उसका अपना शरीर।

सब शरीर एक समान नहीं है। मनुष्य का शरीर एक प्रकार का है, पशु का शरीर दूसरे प्रकार का, और पक्षियों का तथा मछलियों का शरीर अन्य प्रकार का। स्वर्गिक देह है, पार्थिव देह भी है; परन्तु स्वर्गिक देहों का तेज भिन्न है और पार्थिव देहों का भिन्न।

सूर्य का तेज एक प्रकार का होता है, चन्द्रमा का तेज दूसरे प्रकार का और तारों का तेज अन्य प्रकार का, यहां तक कि एक तारे का तेज दूसरे तारे से भिन्न होता है।

मृतकों का पुनरुत्थान भी इसी प्रकार है। शरीर नाशवान स्थिति में बोया जाता है, अविनाशी रूप में जी उठता है। निस्तेज की स्थिति में बोया जाता है, तेजस्वी रूप में जी उठता है। दुर्बलता की स्थिति में बोया जाता है, बल के साथ जी उठता है। शरीर प्राकृतिक स्थिति में बोया जाता है, आध्यात्मिक स्थिति में जी उठता है। यदि प्राकृतिक शरीर है तो आध्यात्मिक शरीर भी है। धर्मशास्त्र का लेख भी यही है. 'प्रथम आदम सजीव व्यक्ति बना और अन्तिम आदम जीवनदायक आत्मा।' तो भी पहिले आध्यात्मिक नहीं, प्राकृतिक हुआ, और उसके पश्चात् आध्यात्मिक। प्रथम मानव पृथ्वी से था, मिट्टी का बना हुआ था, किन्तु दूसरा मानव स्वर्ग से है। मिट्टी का बना मानव जैसा था, वैसे ही वे है, जो मिट्टी से बने है, और स्वर्गिक मानव जैसा है, वैसे ही वे है, जो स्वर्ग के है। जैसे हमें मिट्टी के मानव का रूप मिला है, उसी प्रकार स्वर्गिक मानव का रूप भी प्राप्त होगा।

भाइयो, मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि मांस और रक्तवाला मनुष्य परमेश्वर के राज्य का अधिकारी नहीं हो सकता और न नाशवान अविनाशी अवस्था को प्राप्त कर सकता है।

सुनो, मैं तुम्हें एक रहस्य बताता हूं. हम सबकी मृत्यु नहीं होगी, किन्तु सबका रूप परिवर्तित होगा, और यह अन्तिम तुरही के बजते समय, क्षण भर में, पलक मारते ही हो जाएगा; क्योंकि तुरही बजेगी, मृतक अविनाशी अवस्था में जीवित किए जाएंगे और हमारा रूप परिवर्तित हो जाएगा। यह अनिवार्य है कि नश्वर शरीर अनश्वर रूप धारण करे और मरणशील काया अमरता प्राप्त करे। जब नश्वर, अनश्वरता को, और मरणशील, अमरता को धारण कर लेगा तो धर्मशास्त्र का यह वचन पूरा हो जाएगा—

'मृत्यु विजय में विलीन हो गई।
ओ मृत्यु, कहां है तेरी विजय?
ओ मृत्यु, कहां है तेरा डंक?'

मृत्यु का डंक पाप है, और पाप को बल मिलता है व्यवस्था से। परन्तु परमेश्वर की स्तुति हो, वह हमारे प्रभु यीशु मसीह द्वारा हमें मृत्यु पर विजय प्रदान करता है। अत प्यारे भाइयो, विश्वास में दृढ़ और अटल रहो। प्रभु के कार्य में निरन्तर बढ़ते जाओ, और यह निश्चय जानो कि प्रभु में तुम्हारा परिश्रम निष्फल नहीं है।

दान के विषय में

सन्तों के लिए दान के सम्बन्ध में जैसा निर्देश मैंने गलातिया की कलीसिया को दिया है, वैसा ही तुम भी करो। सप्ताह के पहले दिन तुममें से प्रत्येक अपनी आय के अनुसार अपने

पास कुछ रख छोड़ा करे। ऐसा न हो कि जब मैं आऊं तो दान एकत्र करना पड़े। जब मैं आऊंगा तो जिन्हें तुम चाहोगे उन्हें पत्र देकर भेजूंगा कि तुम्हारा दान यरूशलम पहुंचा दें, और मेरा वहां जाना उचित हुआ तो वे मेरे साथ जाएंगे।

यात्रा का कार्यक्रम

मैं मकिदुनिया की यात्रा समाप्त कर तुम्हारे पास आऊंगा, क्योंकि इस समय मैं मकिदुनिया की यात्रा पर हूं। सम्भव है कि मैं तुम्हारे यहां ठहरूं और शीत ऋतु तुम्हारे यहां बिताऊं। तब जहां मुझे जाना हो, वहां के लिए तुम मुझे विदा कर देना। मैं तुमसे इस समय चलते-चलते नहीं मिलना चाहता। मुझे आशा है कि यदि प्रभु की इच्छा हुई तो मैं कुछ दिन तुम्हारे साथ रहूंगा।

मैं पिन्तेकुस्त के पर्व तक इफिसुस में रहूंगा, क्योंकि मुझे वहां अपने कार्य के लिए एक महान तथा उपयोगी अवसर प्राप्त हुआ है और विरोध करनेवाले भी अनेक हैं।*

यदि तिमुथियुस आए तो ध्यान रखना कि उसे तुम्हारे बीच किसी प्रकार का भय न हो। मेरे समान वह भी प्रभु का कार्य कर रहा है। कोई उसकी उपेक्षा न करे। उसे कुशलपूर्वक मेरे पास भेज देना। मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं कि वह भाइयों के साथ कब आता है।

अन्तिम आदेश और अभिवादन

भाई अपुल्लोस के सम्बन्ध में मैंने उनसे बहुत आग्रह किया कि भाइयों सहित तुम्हारे पास चले आएं, परन्तु इस समय वह बिल्कुल नहीं आना चाहते। अवसर आने पर वह आएंगे। जागते रहो, विश्वास में अटल रहो, साहसी एवं शक्तिशाली बनो। जो कुछ भी करते हो, प्रेम से करो।

भाइयो, तुम स्तिफनुस-परिवार के सदस्यों से परिचित हो। तुम जानते हो कि वे यूनान के प्रथम फल हैं और सन्तों की सेवा करने के लिए सदा प्रस्तुत रहते हैं। मेरा अनुरोध है कि तुम ऐसे व्यक्तियों का सम्मान करो और साथ ही दूसरों का भी, जो उन्हें सहयोग देते और परिश्रम करते हैं।

स्तिफनुस, फूरतूनातुस और अखइकुस के आने से मैं प्रसन्न हूं, क्योंकि इन्होंने तुम्हारी अनुपस्थिति को दूर किया है एवं मेरे और तुम्हारे हृदय को शान्ति दी है। ऐसे मनुष्यों को मान्यता दो।

आसिया की कलीसियाओं का तुमको नमस्कार। अक्विला और प्रिसका एवं उस कलीसिया का जो उनके घर में एकत्र होती है, तुमको प्रभु में बहुत नमस्कार। सब भाइयों का तुम्हें नमस्कार। पवित्र चुम्बन से एक-दूसरे का अभिवादन करो।

मुझ पौलुस ने यह अभिवादन अपने हाथ से लिखा है।

यदि कोई प्रभु से प्रेम न करे, तो वह शापित है।

'मारनाथा!'—प्रभु, आइए।

हमारे प्रभु यीशु का अनुग्रह तुम्हारे साथ हो।

मेरा प्रेम मसीह यीशु में तुम सबके साथ रहे। आमेन।

१. प्रेरित पौलुस ने उपरोक्त पत्र में किन पांच बातों पर प्रकाश डाला है?
२. क्या आपकी स्थानीय कलीसिया पर ये पांचों बातें लागू होती हैं?

४. अपनी कलीसिया के लिए एक पास्टर का प्रेम

(२ कुरिन्थियों १–१३)

... उसका प्रभाव कलीसिया पर नहीं

हुआ, और कुरिन्थ नगर की कलीसिया मे वाद-विवाद, लडाई-झगडे होते रहे। उन्होंने प्रेरित पौलुस के नेतृत्व को भी चुनौती दी। अत प्रेरित पौलुस अविलम्ब कुरिन्थ नगर को गए। उन्होंने कलीसिया के विवादो को सुलझाने की भरसक कोशिश की। लेकिन उनको सफलता नही मिली, और निराश हो लौट गए। लौटने के बाद प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थ नगर की कलीसिया को एक कठोर पत्र लिखा। दुर्भाग्य से यह पत्र खो गया, और हमे उपलब्ध नही है।

प्रेरित पौलुस तीतुस को कुरिन्थ नगर भेजते है। तीतुस के आने से वाद-विवाद ठण्डा पड जाता है। कलीसिया के सदस्य प्रेरित पौलुस को अपना नेता स्वीकार कर लेते है।

अत्यन्त आनन्द, सन्तोष, प्रेम और धन्यवाद के साथ प्रेरित पौलुस यह पत्र लिखते है।

सक्षिप्त भूमिका के पश्चात् प्रेरित पौलुस अपने नेतृत्व के पक्ष मे प्रभावपूर्ण दलील पेश करते है (१ १–७ १६)। वह उनको स्मरण दिलाते है कि उन्होने कुरिन्थ की कलीसिया के लिए कितना त्याग, परिश्रम किया है, कितना दु ख उठाया है, और वह उनसे कितना प्रेम करते है।

दूसरी मुख्य शिक्षा प्रेरित पौलुस कुरिन्थ की कलीसिया को दान देने का महत्व समझाते है (८ १–९ १५)। नव मसीहियो और नव कलीसिया के लिए ये दो अध्याय बहुत महत्वपूर्ण है। आप इनको ध्यान से पढिए। परमेश्वर ने हमे बताया है कि हम उसके लिए जीवन बिताए। वह कहता है कि हम उसके नाम अपनी धन-सम्पत्ति कलीसिया को अर्पित करे।

अन्तिम अवतरण उपसहार है (१० १–१३ . १४)। प्रेरित पौलुस अपनी धर्म-सेवा के पक्ष मे पुन तर्क प्रस्तुत करते है। वह कलीसिया को सावधान करते है कि वह झूठे नबियो और झूठे धर्म-शिक्षको से सावधान रहे।

अभिवादन

परमेश्वर की कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस मे है और उन सब सन्तो के नाम जो समस्त यूनान मे है

हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हे अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

यह पत्र पौलुस की ओर से है जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, और भाई तिमुथियुस की ओर से है।

पौलुस परमेश्वर को धन्यवाद देते है

धन्य है हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता तथा परमेश्वर—परम दयालु पिता एव पूर्ण शान्ति का दाता परमेश्वर—जो हमारे सब कष्टो मे हमे शान्ति देता है जिससे हम भी, परमेश्वर से प्राप्त इस शान्ति द्वारा, अनेक व्यक्तियो को शान्ति दे सके जो कष्ट और दुख पा रहे है।

हमे मसीह के लिए जितना अधिक कष्ट सहना पडता है, मसीह के द्वारा हमे उतनी ही अधिक शान्ति मिलती है। यदि हमे क्लेश है तो तुम्हारी शान्ति एव उद्धार के लिए, और यदि हमे शान्ति है तो तुम्हारी शान्ति के लिए। इसीका प्रभाव है कि तुम धैर्यपूर्वक उन कष्टो को

सह लेते हो जिन्हें हम भी सहन करते है।

तुम्हारे विषय मे हमारी आशा अटल है, क्योंकि हम जानते है कि जैसे तुम हमारे कष्टो मे, वैसे ही हमारी शान्ति मे भी सहभागी हो।

भाइयो, हम तुम्हे उस कष्ट के विषय मे बताना चाहते है, जो हमे आसिया मे सहना पड़ा। इस कष्ट का भार हमारी सहनशक्ति से कही अधिक था, यहा तक कि हमे जीवित रहने की भी आशा नही रही। ऐसा प्रतीत होता था कि हमे मृत्यु-दण्ड मिला है। यह सब इसलिए हुआ कि हम अपने पर नही किन्तु परमेश्वर पर निर्भर रहे, जो मृतको को भी जीवित कर देता है। उसने ही हमे भयानक विपत्ति से बचाया और अब भी बचा रहा है। हम उसी पर आशा लगाए है कि वह आगे भी बचाता रहेगा। तुम्हे भी चाहिए कि प्रार्थना द्वारा हमारी सहायता करते रहो। इस प्रकार बहुत-सी प्रार्थनाओ के कारण हमे आशीष मिलेगी, और तब बहुत से लोग हमारी ओर से परमेश्वर को धन्यवाद देगे।

पौलुस की निष्कपटता

हमे एक बात का गर्व है—हमारे अन्त करण की यह साक्षी है कि हमने इस ससार के प्रति, और विशेषत तुम्हारे प्रति, सासारिक बुद्धि से नही, किन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से प्रेरित होकर व्यवहार किया, और इस व्यवहार मे परमेश्वर द्वारा दी गई निष्कपटता तथा सच्चाई रही। हमारे लिखने का अभिप्राय वही रहा है, जो तुम पढते और समझ सकते हो, उससे भिन्न नही। मुझे आशा है कि तुम हमे पूर्णरूप से समझोगे, जैसे कुछ अशो मे समझते रहे हो और तुम हम पर अभिमान कर सको, जैसे हमारे प्रभु यीशु के दिवस पर हम तुम पर *अभिमान करेगे।*

भेंट में विलम्ब

इसी भरोसे पर पहिले मै तुम्हारे यहा आना चाहता था कि तुम्हे एक और आशीष प्राप्त हो· मै चाहता था कि तुम लोगो से मिलकर मकिदुनिया प्रदेश जाऊ और पुन मकिदुनिया से तुम्हारे पास आऊ, और तब तुम मुझे यहूदा प्रदेश की ओर भेज दो। तो क्या ऐसी इच्छा करके मैने चञ्चलता दिखाई? क्या मै अपनी योजनाए सासारिक स्तर पर बनाता हू कि 'हा-हा' भी कहू और 'न-न' भी? जिस प्रकार परमेश्वर विश्वसनीय है, इसी प्रकार हम भी तुमसे 'हा और न' की मिश्रित वाणी मे नही बोलते। परमेश्वर-पुत्र मसीह यीशु, जिनका प्रचार मैने और सिल्वानुस एव तिमुथियुस ने तुम्हारे मध्य किया, वह 'हा और न' दोनो नही बने, उनमे 'हा' मात्र ही थी। क्योकि परमेश्वर की समस्त प्रतिज्ञाओ की 'हा' मसीह मे पाई जाती है। अत मसीह के द्वारा हम परमेश्वर की महिमा के लिए 'आमेन' कहते है। परमेश्वर तुम्हारे साथ-साथ हमे भी मसीह मे सुदृढ करता और हमारा अभिषेक करता है। उसने हम पर अपनी मुहर लगाई है और बयाने के रूप मे अपना आत्मा हमारे हृदय मे प्रदान किया है।

परमेश्वर मेरा साक्षी है। मुझे तुमपर दया आई, इसलिए मै कुरिन्थुस नही आया। विश्वास के विषय मे तुम पर प्रभुता जताने के लिए हम यह नही कह रहे, हम तो तुम्हारे आनन्द मे सहायक मात्र हैं· विश्वास द्वारा तुम्हारी स्थिति सुदृढ है।

इसी कारण मैने निश्चय किया कि मै तुम्हे दु ख देने के लिए तुम्हारे यहा दूसरी बार नहीं आऊगा। क्योंकि यदि मै तुम्हे दु ख दू तो मुझे सुखी कौन करेगा? वही न जिसे मैने दुखी किया है! और यही बात मैने तुमको लिखी थी जिससे कहीं ऐसा न हो कि मेरे आने पर, जिन लोगो से मुझे आनन्द मिलना चाहिए, उनसे मुझे शोक प्राप्त हो। तुम सबके विषय मे मेरी यही धारणा है कि मेरा आनन्द तुम सबका आनन्द है। मैने तुम्हे घोर कष्ट एव हृदय की पीडा मे आसुओ के सागर मे डूबकर लिखा था—तुम्हे दु ख देने के लिए नही, वरन् तुम्हारे प्रति अपना गहन प्रेम प्रकट करने के लिए।

अपराधी को क्षमा

यदि किसी ने हृदय को दुःख दिया है तो मेरे ही नहीं वरन् कुछ अंशों में तुम्हारे हृदय को भी दुःख दिया है—यह बात मैं बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कह रहा हूं।* ऐसे व्यक्ति को बहुमत द्वारा दिया हुआ इतना दण्ड ही पर्याप्त है। अब उसे क्षमा कर दो। उसे धैर्य दो कि कहीं वह शोक में डूब न जाए। मेरा तुमसे अनुरोध है कि उसे अपने प्रेम का प्रत्यक्ष प्रमाण दो। मेरे लिखने का प्रयोजन था कि तुम्हारी परीक्षा करूं कि तुम प्रत्येक बात में मेरी आज्ञा मानते हो या नहीं। जिसे तुम क्षमा करो उसे मैंने भी क्षमा कर दिया। यदि मैंने कुछ क्षमा किया है, तो तुम्हारे हित में तथा मसीह की उपस्थिति में क्षमा किया है, जिससे शैतान हमारी स्थिति का लाभ न उठाए। हम उसकी कुटिलता से भलीभांति परिचित हैं।

संकट और विजय-उल्लास

जब मैं मसीह के शुभ-सन्देश को सुनाने के लिए त्रोआस नगर आया तब प्रभु ने मुझे अवसर दिया।** फिर भी मेरा मन व्याकुल रहा, क्योंकि मुझे अपना भाई तीतुस वहां नहीं मिला। अतः मैं उन लोगों से विदा लेकर मकिदुनिया चला गया। परमेश्वर को धन्यवाद! वह हमें मसीह की विजय-यात्रा में सदा साथ रखता है और सब जगह हमारे द्वारा अपने ज्ञान की सुगन्ध फैलाता है। हम उन सब मनुष्यों के बीच जो उद्धार प्राप्त कर रहे हैं अथवा नष्ट हो रहे हैं, परमेश्वर के लिए, मसीह की सुगन्ध हैं—नष्ट होनेवालों के लिए मृत्यु की प्राणघातक गन्ध, और उद्धार पानेवालों के लिए जीवन की प्राणदायक सुगन्ध।

यह सब करने के लिए पर्याप्त शक्ति किसमें है! फिर भी हम बहुत से लोगों के समान परमेश्वर के सन्देश में मिश्रण नहीं करते। हम सच्चे मन से परमेश्वर की ओर से परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह में बोलते हैं।

पौलुस का प्रशंसा-पत्र

क्या हम पुनः अपनी प्रशंसा करने लगे? क्या हम कुछ व्यक्तियों के समान तुम्हें या तुमसे प्रशंसा-पत्र लेने अथवा तुम्हें देते हैं? तुम स्वयं हमारे पत्र हो, हमारे हृदय-पटल पर लिखे हुए पत्र, जिन्हें सब पढ़ते और पहचानते हैं। यह स्पष्ट है कि तुम मसीह का पत्र हो जिसे हम सेवकों ने स्याही से नहीं, जीवन्त परमेश्वर के आत्मा से, पत्थर की पट्टियों पर नहीं, वरन् हृदय-पटल पर लिखा है।

नई वाचा के सेवक

जो अपने चेहरे पर आवरण डाले रहते थे कि इस्राएली लोग उनके क्रमश: क्षीण होनेवाले तेज की अन्तिम झलक भी न देखें। पर वे लोग मतिमन्द हो गए थे और आज जब पुरानी वाचा पढ़ी जाती है तब भी उनके हृदय में वह आवरण हटता नहीं, क्योंकि वह केवल मसीह द्वारा ही हटता है। हां, आज तक जब कभी मूसा का ग्रन्थ पढ़ा जाता है, तब भी उनके हृदय पर, एक आवरण पड़ा रहता है, किन्तु ज्योंही कोई प्रभु की ओर उन्मुख होता है, वह आवरण हट जाता है। प्रभु आत्मा है, और जहां प्रभु का आत्मा है, वहां स्वतन्त्रता है। हम सब खुले चेहरे से, दर्पण के सदृश, प्रभु का तेज प्रतिबिम्बित करते हैं, और प्रभु द्वारा, जो आत्मा है, तेज पर तेज ग्रहण करते हुए उनके प्रतिरूप बनते जाते हैं।

शुभ-सन्देश की निर्भय घोषणा

परमेश्वर की दया के कारण यह सेवा हमें प्राप्त हुई है। अत: हम निराश नहीं होते। हमने अन्धकार का लज्जाजनक एवं कपटपूर्ण आचरण त्याग दिया है। हम परमेश्वर के सन्देश में मिश्रण नहीं करते, किन्तु केवल सत्य को प्रकाशित करते और परमेश्वर के सम्मुख प्रत्येक मनुष्य के अन्त:करण को अपने विषय में निश्चय कराते हैं। यदि हमारे शुभ-सन्देश पर आवरण पड़ा भी है तो वह नष्ट होनेवालों के लिए पड़ा है। इन अविश्वासियों की बुद्धि को इस युग के शैतान* ने अन्धा कर दिया है कि वे उस शुभ-सन्देश का प्रकाश न देख सकें, जिसमें मसीह की महिमा प्रकट होती है जो परमेश्वर का प्रतिरूप है।

हम अपने विषय में प्रचार नहीं करते, किन्तु यह प्रचारित करते हैं कि मसीह यीशु ही प्रभु है, और हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं। क्योंकि जिस परमेश्वर ने कहा, 'अन्धकार में प्रकाश हो जाए' वह हमारे हृदय में प्रकाशित हो उठा है, ताकि मसीह के मुख-मण्डल पर प्रकाशित अपने तेज के ज्ञान से वह हमें भी प्रकाशित करे।

प्रेरित की दुर्बलता और परमेश्वर की सामर्थ्य

फिर भी हमारे पास यह आत्मिक कोष मिट्टी के पात्रों में रखा है जिससे प्रत्यक्ष हो जाए कि यह अनुपम सामर्थ्य प्रभु की है, हमारी नहीं। हम पर चारों ओर से कष्ट आते हैं, पर हम परास्त नहीं होते, निरुपाय हो जाते हैं, पर निराश नहीं होते, अत्याचारों से पीड़ित हैं, पर अपने आपको परमेश्वर के द्वारा छोड़ा हुआ नहीं समझते। गिराए जाते हैं, परन्तु नष्ट नहीं होते। हम यीशु की मृत्यु निरन्तर अपने शरीर में लिए फिरते हैं जिससे यीशु का जीवन भी हमारे शरीर में प्रकट हो। हम जीवित हैं, तो भी यीशु के कारण सदा मृत्यु के हाथों सौंपे जाते हैं, जिससे हमारे नश्वर शरीर में यीशु का जीवन प्रकट हो। इस प्रकार मृत्यु हममें क्रियाशील है, और जीवन तुममें।

धर्मशास्त्र का कथन है, 'मैंने विश्वास किया और इसी कारण मैं चुप नहीं रहा।' विश्वास का यह आत्मा हमें मिला है, अतएव हम विश्वास करते हैं, और इसी कारण बोलते भी हैं। हमें निश्चय है कि जिसने प्रभु यीशु को जीवित किया, वह यीशु के साथ हमें भी जीवित करेगा और तुम्हारे साथ अपने सम्मुख उपस्थित करेगा। क्योंकि सब कुछ तुम्हारे ही लिए है कि बहुतों के हेतु अनुग्रह की प्रचुरता हो, और परमेश्वर की महिमा के लिए प्रचुर धन्यवाद का कारण बने। इसलिए हम निराश नहीं होते, और यद्यपि हमारा शारीरिक बल क्षीण हो रहा है, तो भी हमारा आत्मिक बल दिन-प्रतिदिन नवीन होता जाता है। हमारा यह कष्ट अल्प और हलका है, किन्तु वह हमारे लिए भारी मात्रा में अनन्त और अपार महिमा उत्पन्न कर रहा है, क्योंकि हम दृश्यमान वस्तुओं पर नहीं, अदृश्य वस्तुओं पर दृष्टि लगाए हुए हैं। दृश्यमान वस्तुएं अल्प समय के लिए हैं, किन्तु अदृश्य शाश्वत हैं।

*अक्षरश: 'देवता'

हमारा घर स्वर्ग में है

हम जानते हैं कि जब पृथ्वी पर हमारा देहरूपी घर, शिविर के सदृश गिरेगा तब स्वर्ग में परमेश्वर की ओर से हमें भवन प्राप्त होगा जो हाथ का बना हुआ नहीं वरन् शाश्वत है। सचमुच हम इस शिविर में कराहते हैं और अपने स्वर्गिक भवन को वस्त्र के सदृश धारण करने के लिए इच्छुक हैं। हमें आशा है कि उस वस्त्र को धारण करने पर हम नग्न नहीं रहेंगे। हम इस शिविर में रहते हुए बोझ से कराहते हैं, क्योंकि हम अपना पुराना वस्त्र उतारना नहीं चाहते, उस पर दूसरा धारण करना चाहते हैं जिससे जो मरणशील है वह जीवन में विलीन हो जाए। इसी अभिप्राय से परमेश्वर ने हमारी रचना की है, और बयाने के रूप में हमें अपना आत्मा प्रदान किया है।

इसलिए हम सदा आश्वस्त हैं। हम जानते हैं कि जब तक हम शरीर में हैं, हम प्रभु से अलग हैं, क्योंकि हम प्रत्यक्ष के आधार पर नहीं, वरन् विश्वास के सहारे जीते हैं। हम आश्वस्त हैं, तथा शरीर से अलग होकर प्रभु के साथ मानो स्वदेश में रहना उत्तम समझते हैं। अत: हम चाहे प्रभु के साथ रहें अथवा उनसे अलग, हमारी तीव्र लालसा यह है कि हम प्रभु को प्रिय लगें। क्योंकि मसीह के न्यायासन के सम्मुख हम सबकी वास्तविकता प्रकट हो जाएगी जिससे प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में किए हुए भले अथवा बुरे कर्मों का प्रतिफल मिल सके।

मसीह का प्रेम हमें विवश करता है

हम प्रभु का भय मानते हैं इसलिए मनुष्यों को समझाते हैं, परन्तु परमेश्वर पर हमारी दशा प्रकट है और मुझे आशा है कि यह दशा तुम्हारे अन्त:करण के समक्ष भी प्रकट होगी। हम तुमसे पुन: अपनी प्रशंसा नहीं कर रहे, किन्तु तुम्हें अवसर दे रहे हैं कि हम पर गर्व करो और उन्हें उत्तर दे सको जो भीतर की भावना पर नहीं, बाहरी बातों पर घमण्ड करते हैं। यदि हम पागल हैं तो परमेश्वर के लिए, और यदि हम समझदार हैं तो तुम्हारे लिए। मसीह का प्रेम हमें विवश करता है।

हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि जब एक सबके लिए मरे, तो सबके सब मर गए। मसीह सबके लिए मरे कि जो जीवित हैं वे आगे को अपने लिए नहीं वरन् मसीह के लिए जिएं, जो उनके लिए मरे और जी उठे।

मसीह से नवजीवन

अब से हम सांसारिक दृष्टि* से किसी का मूल्यांकन नहीं करते, हमने यदि सांसारिक दृष्टि* से कभी मसीह का मूल्यांकन किया भी था तो अब नहीं करते। यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें समाप्त हो गईं। अब सब कुछ नया बन गया है। यह सब परमेश्वर की ओर से हुआ है। उसने मसीह द्वारा अपने साथ हमारा मिलाप कर लिया है और हमें मिलाप कराने की सेवा सौंपी है। परमेश्वर ने मसीह में संसार का अपने साथ मिलाप किया। उसने मनुष्यों के अपराधों का लेखा नहीं किया वरन् मिलाप का सन्देश हमें सौंप दिया है। अत: हम मसीह के राजदूत हैं और परमेश्वर तुमसे हमारे द्वारा अनुरोध कर रहा है। हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं कि परमेश्वर के साथ मिलाप कर लो। मसीह जो पाप से अपरिचित थे, उनको परमेश्वर ने हमारे लिए पाप** बना दिया जिससे हम उनके द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता प्राप्त कर सकें।

परमेश्वर के सहकर्मी होने के कारण हम तुमसे अनुरोध करते हैं कि तुम्हें जो परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त हुआ है, उसे निष्फल न होने दो। परमेश्वर का कथन है :

'प्रसन्नता की बेला में मैंने तुम्हारी सुनी है,

*अक्षरश: 'शरीर'
**अथवा 'पाप-बलि'

उद्धार-दिवस पर मैंने तुम्हारी सहायता की है।'
देखो, यही है प्रसन्नता की बेला, यही है उद्धार का दिन!

हम किसी के लिए ठोकर का कारण नहीं बनते, जिससे हमारी सेवा पर लाछन न लगे। हम प्रत्येक परिस्थिति मे स्वय को परमेश्वर के योग्य सेवक प्रमाणित करते है: धैर्य धारण करने से, कष्टो से, अभावो से और सकटो से, कोड़े खाने, बन्दी होने और उत्पात सहने से, परिश्रम, जागरण तथा भूख से, पवित्रता, ज्ञान, सहिष्णुता, तथा करुणा से, पवित्र आत्मा, निष्कपट प्रेम, सत्य के प्रचार तथा परमेश्वर की शक्ति से, दाहिने एव बाए हाथ मे धर्म के शस्त्र लिए, मान मे और अपमान मे, यश मे और अपयश मे। हम मिथ्यावादी समझे जाते है, किन्तु हम सत्यवादी हैं। अज्ञात समझे जाते है, किन्तु विख्यात है। मृतक समझे जाते है, किन्तु जीवित है। हम मार खाते है किन्तु मरते नहीं। शोकित है, पर सदा आनन्दमग्न रहते है। निर्धन है, किन्तु बहुतो को धनवान बनाते है। हमारे पास कुछ नहीं है, तो भी हमारे पास सब कुछ है।

हमारा हृदय तुम्हारे लिए खुला है

कुरिन्थुस निवासियो, हमने तुमसे खुलकर बाते की है। हमारा हृदय तुम्हारे लिए खुला है। हमारा हृदय तुम्हारे लिए सकुचित नही है। सकुचित तो तुम्हारा हृदय है। मै तुम्हें अपने पुत्र जानकर कहता हू कि प्रतिदान मे अपना हृदय हमारे प्रति खोल दो।

जीवन्त परमेश्वर का मन्दिर

अविश्वासियो के साथ बनमेल जुए मे न जुतो। धार्मिकता का अधर्म से क्या मेल? प्रकाश का अन्धकार के साथ क्या सयोग? मसीह का शैतान* के साथ क्या सामजस्य, विश्वासी का अविश्वासी के साथ क्या सहभाग, परमेश्वर के मन्दिर का मूर्तियो से क्या सम्बन्ध? हम जीवन्त परमेश्वर के मन्दिर है, जैसा कि परमेश्वर का कथन है,

'मै उनके बीच निवास करूगा और विचरण करूगा,
मै उनका परमेश्वर हूगा और वे मेरे निज लोग होगे।
इस कारण प्रभु का कथन है,
उनके बीच से निकलो और अलग हो,
अशुद्ध को स्पर्श मत करो,
तब मै तुम्हे ग्रहण करूगा,
मै तुम्हारा पिता हूगा,
और तुम मेरे लिए पुत्र तथा पुत्री होगे
सर्वशक्तिमान प्रभु का यह कथन है।'

प्रिय भाइयो, ये प्रतिज्ञाए हमसे की गई है। अत हम अपने को समस्त शारीरिक तथा आत्मा की मलीनता से शुद्ध करे और परमेश्वर का भय मानते हुए पवित्रता की सिद्धि मे लग जाए।

पौलुस का हर्ष

हमे अपने हृदय मे स्थान दो। हमने किसी के साथ अन्याय नही किया, किसी को बर्बाद नही किया, किसी से अनुचित लाभ नही उठाया। मै तुमपर दोष नही लगा रहा। जैसाकि मै पहिले कह चुका हू, तुम हमारे हृदय मे बसे हो और हमारा-तुम्हारा जीवन-मरण का साथ है। मुझे तुमपर बड़ा भरोसा है। मुझे तुमपर बड़ा गर्व है। मै सान्त्वना से परिपूर्ण हू। अपने विभिन्न कष्टो मे मुझे परम आनन्द है।

मकिदुनिया पहुचने पर भी हमारे शरीर को कुछ विश्राम नही मिला, चारो ओर कष्ट

*मूल में 'बेलियार', एक विशिष्ट दुष्टात्मा

ही दीख पड़ता था—बाहर झगड़े और भीतर चिन्ताएं। पर दीनों को सान्त्वना देनेवाले परमेश्वर ने तीतुस के आगमन से मुझे सान्त्वना दी है—उसके आगमन से ही नहीं वरन् उस आश्वासन से भी, जो तुमने उसे दिया था, मुझे सान्त्वना मिली है। तीतुस ने मुझे तुम्हारी अभिलाषा, तुम्हारी वेदना और मेरे प्रति तुम्हारी निष्ठा के सम्बन्ध में बताया। अतः मेरा हृदय आनन्द से परिपूर्ण हो उठा है।

मेरे पत्र से तुम्हें दुःख पहुंचा, इसका मुझे अब तक खेद रहा, परन्तु अब नहीं है, क्योंकि मैं देखता हूं कि उस पत्र से कुछ समय तक ही तुम दुःखी रहे। मुझे प्रसन्नता है, इसलिए नहीं कि तुम्हें दुःख हुआ, पर इसलिए कि उस दुःख का परिणाम यह निकला कि तुमने हृदय-परिवर्तन किया। तुम्हारा दुःख परमेश्वर की इच्छानुसार था, इस कारण हमारी ओर से तुम्हें कोई हानि न पहुंची। परमेश्वर की इच्छानुसार दुःख सहने का परिणाम होता है हृदय-परिवर्तन एवं उद्धार, इसमें पछताना नहीं पड़ता। परन्तु सांसारिक दुःख का परिणाम है मृत्यु। तुमने परमेश्वर की इच्छानुसार दुःख सहा। तुम्हीं देखो कि इससे तुममें लांछन से मुक्त होने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हो गई! तुममें रोष, भय, उत्कण्ठा, उत्साह एवं न्याय के लिए दण्ड देने की भावनाएं कैसी जाग उठीं। तुमने सब प्रकार से प्रमाणित कर दिया कि तुम इस विषय में निर्दोष हो। यदि मैंने तुम्हें लिखा तो न उस व्यक्ति के कारण जिसने अन्याय किया, और न उसके कारण जिसके प्रति अन्याय हुआ, वरन् इसलिए लिखा कि परमेश्वर के सम्मुख तुमपर प्रकट हो जाए कि हमारे प्रति तुम्हारी कितनी निष्ठा है। इससे हमें सान्त्वना मिली है। सान्त्वना के साथ-साथ हमें तीतुस के आनन्द को देखकर हर्ष भी हुआ है, क्योंकि उसका मन तुम सबसे अत्यन्त सन्तुष्ट है। यदि मैंने तीतुस के सामने तुम लोगों पर गर्व किया था तो इसके लिए मुझे लज्जित नहीं होना पड़ा, किन्तु जैसे मैंने जो कुछ तुमसे कहा वह सच था, वैसे ही तीतुस के सामने की गई मेरी गर्वोक्ति भी सच प्रमाणित हुई। जब तीतुस को स्मरण होता है कि तुम सब कितने आज्ञाकारी हो और किस प्रकार डरते-कांपते हुए तुमने उसका स्वागत किया तो तुम्हारे प्रति उसका हृदय प्रेम से भर आता है। मुझे प्रसन्नता है कि मैं तुम्हारे विषय में पूर्णतः आश्वस्त हूं।

यरूशलम में रहनेवाले सन्तों के लिए दान

भाइयो, हम तुम्हें उस अनुग्रह के विषय में बताना चाहते हैं जो मकिदुनिया की कलीसिया को परमेश्वर से प्राप्त हुआ है। कष्टों की अग्नि-परीक्षा में भी उनका आनन्द अपार है, और घोर दरिद्रता की दशा में भी उन्होंने उदारतापूर्वक दान दिया है। उनके विषय में मेरी साक्षी है कि उन्होंने अपनी शक्ति भर, वरन् शक्ति से भी अधिक दिया, और स्वतन्त्रता से दिया। वे स्वतः हमारी अनुनय-विनय करते रहे कि हम उन्हें भी सन्तों की सहायता में भाग लेने का सौभाग्य प्रदान करें। वे हमारी आशा से कहीं अधिक बढ़ गए। उन्होंने पहिले प्रभु को आत्मसमर्पण किया और तब परमेश्वर की इच्छानुसार हमें। फलतः हमने तीतुस से प्रार्थना की है कि जैसे उसने दान का यह कार्य आरम्भ किया था वैसे ही उसे तुम्हारे बीच पूर्ण भी करे। तुम सब बातों में—विश्वास में, शुभ-सन्देश सुनाने में, ज्ञान में, धुन में और हमारे प्रति प्रेम में* बढ़ रहे हो। ऐसे ही दान के कार्य में भी आगे बढ़ जाओ।

यीशु का उदाहरण

मैं तुमसे यह आज्ञा के रूप में नहीं कह रहा, किन्तु दूसरों की लगन का उदाहरण देकर तुम्हारे प्रेम की सच्चाई को परखने का प्रयत्न कर रहा हूं। तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह से परिचित हो। वह धनवान् होने पर भी तुम्हारे लिए दरिद्र हो गए जिससे उनकी दरिद्रता से तुम धनवान बन सको।

मैं इस विषय में तुम्हें केवल सलाह दे रहा हूं क्योंकि इसमें तुम्हारा कल्याण है। तुमने

*पाठांतर, 'और प्रेम में जो हमने तुममें जगाया है'

'उसने उदारता से भरपूर दिया है, दरिद्रो को दिया है,
उसकी धार्मिकता युगानुयुग स्थिर रहेगी।'

जो परमेश्वर बोनेवाले को बीज तथा भोजन के लिए आहार देता है वही तुम्हे साधन-सम्पन्न कर तुम्हारी धार्मिकता की उपज मे वृद्धि करेगा। तुम सब प्रकार से समृद्ध होकर पूर्ण उदारता दिखा सकोगे, जिससे हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो, क्योकि इस दान के सेवा-कार्य से सन्तो की आवश्यकताए ही पूरी नही होती, वरन् इससे परमेश्वर के प्रति धन्यवाद की भावना भी उमडती है। तुम्हारी इस सेवा को प्रामाणिक मानकर लोग परमेश्वर की महिमा करेगे, क्योकि तुम मसीह के शुभ-सन्देश पर विश्वास करने, सन्तो के अधीन रहते तथा उनके एव सबके लिए उदारतापूर्वक दान देते हो। तुमपर परमेश्वर का महान अनुग्रह देखकर तुम्हारे प्रति उनका प्रेम उमड पडेगा और वे तुम्हारे लिए प्रार्थना करेगे। परमेश्वर का दान शब्दो मे प्रकट नही किया जा सकता है। उस अमूल्य दान के लिए परमेश्वर को धन्यवाद !

परमेश्वर की ओर से पौलुस को अधिकार

मै वही पौलुस हू, जो तुम्हारे सम्मुख दीन बना रहता हू, पर तुम्हारी पीठ पीछे साहस दिखाता हू, मसीह की दीनता एव नम्रता के कारण तुमसे निवेदन करता हू, अनुरोध करता हू कि जब मै आऊ तो मुझे निर्भय होकर साहस न दिखाना पडे। जो समझते है कि हमारा आचरण सासारिक है, उनके प्रति साहस दिखाने के लिए मैने दृढ निश्चय किया है। हम ससार मे रहते है अवश्य, किन्तु हमारा युद्ध सासारिक नहीं। हमारे युद्ध के अस्त्र-शस्त्र भी सासारिक नही, उनमे किलो को ध्वस्त करने की ईश्वरीय सामर्थ्य है। हम कुतर्कों का, तथा ईश्वरीय ज्ञान के विरुद्ध सिर उठानेवाली बातो का खण्डन करते है, और प्रत्येक विचार को बन्दी बनाने की चेष्टा करते है कि हम मसीह के अधीन हो जाए। तुम्हारे पूर्णरूप से आज्ञाकारी होने पर हम किसी भी अवज्ञाकारी को दण्ड देने मे नही हिचकेगे।

जो बात सर्वथा प्रत्यक्ष है, उसे देखो। यदि किसी को अपने सम्बन्ध मे निश्चय है कि वह मसीह का है, तो वह इस पर भी विचार करे कि जैसे वह मसीह का है, वैसे ही हम भी है। और यदि मै अपने अधिकार का—जिसे प्रभु ने मुझे तुम्हारे विनाश के लिए नही, वरन् आध्यात्मिक उत्थान के लिए दिया है—कुछ अधिक गर्व करता हू, तो उसमे मुझे लज्जा नही। यह न समझो कि मै पत्र लिखकर तुम्हे डराना चाहता हू। कुछ लोग कहते है, 'उसके पत्र तो गम्भीर और प्रभावशाली होते है, पर जब वह स्वय उपस्थित होता है तब वह अपनी उपस्थिति से कोई प्रभाव उत्पन्न नही करता। उसके भाषण प्रभावहीन होते है।' ऐसे लोग स्मरण रखे कि अनुपस्थित होने पर हम जो लिखते है, उपस्थित होने पर उसे कर भी दिखाते है।

जो व्यक्ति अपनी-प्रशसा आप करते है उनके साथ अपनी गणना अथवा तुलना करने का हमे साहस नही। जब वे अपने को अपना मान-दण्ड बनाते है, अथवा अपनी तुलना अपने से ही करते है, तो वे निस्सन्देह मूर्ख है। हम अपनी मर्यादा से बाहर गर्व नही करेगे, किन्तु जो मर्यादा परमेश्वर ने हमारे लिए निर्धारित कर दी है, अर्थात् हमारे कार्य-क्षेत्र की सीमा, जिसमे तुम सब लोग भी सम्मिलित हो, वहीं तक रहेगे। हम मर्यादा से बाहर बाते नही कर रहे, जैसे तुम्हारे पास कभी पहुचे ही न थे। हम मर्यादा से बाहर दूसरो के परिश्रम पर गर्व नहीं करते। हमे आशा है कि ज्यो-ज्यो तुम्हारे विश्वास की वृद्धि होगी, हमारा कार्य-क्षेत्र भी अधिक विस्तृत होता जाएगा। तब दूसरो के कार्य-क्षेत्र मे कार्य करने का गर्व न कर हम तुम्हारी सीमा से आगे के भूभाग मे शुभ-सन्देश सुना सकेगे। 'गर्व करनेवाला प्रभु मे गर्व करे'; क्योकि जो अपनी प्रशसा आप करता है वह प्रशसा के योग्य नही, किन्तु जिसकी प्रशसा प्रभु यीशु करते है, वह निस्सन्देह प्रशसा के योग्य है।

प्रेरितीय अधिकार

यदि तुम मेरी थोड़ी-सी मूर्खता सह लेते, तो कैसी उत्तम बात होती! कृपया मेरा व्यवहार सहन करो। मुझे तुम्हारे लिए चिन्ता है—परमेश्वर की-सी चिन्ता। मैंने मसीह के साथ तुम्हारी सगाई की थी कि तुमको, एक पवित्र कुआरी की भांति, तुम्हारे एकमात्र पति मसीह को अर्पण कर सकूं। किन्तु मुझे भय है कि जैसे सांप ने हव्वा को धूर्तता से धोखा दिया, वैसे ही कोई तुम्हारे विचारों को मसीह के प्रति निष्कपट और सच्ची भक्ति से हटाकर भ्रष्ट न कर दे। क्योंकि यदि कोई किसी अन्य यीशु का प्रचार करता आए, जिसका प्रचार हमने नहीं किया, अथवा तुम्हें कोई और आत्मा मिले जो तुम्हें पहिले नहीं मिला था, अथवा कोई अन्य शुभ-सन्देश सुनाए जो तुमने पहिले स्वीकार नहीं किया था, तो तुम उससे तुरन्त सहमत हो जाते हो। मेरा विचार है कि मैं इन जैसे श्रेष्ठ प्रेरितों से कदापि कम नहीं [redacted]! सम्भव है मैं भाषण देने में कच्चा हूं, पर ज्ञान में नहीं। हमने सब प्रकार से सब बातों में इसे तुम्हारे सम्मुख प्रकट कर दिया है।

क्या मैंने इसमें कोई पाप किया कि तुम्हें ऊंचा उठाने के लिए अपने को नीचा बनाया और परमेश्वर का शुभ-सन्देश तुमको मुफ्त सुनाया? मैंने अन्य कलीसियाओं को वंचित किया और उनसे धन लेकर तुम्हारी सेवा की। जब मैं तुम्हारे यहां था तब अभाव-ग्रस्त होने पर भी मैंने तुम पर भार नहीं डाला, क्योंकि मकिदुनिया से आए हुए भाइयों ने मेरी आवश्यकताएं पूरी कर दीं। मैंने किसी प्रकार अपने आपको तुम पर भार नहीं होने दिया, और न होने दूंगा। यदि मसीह की सच्चाई मुझमें है तो यूनान के प्रदेशों में मुझे यह गर्व करने से कोई नहीं रोक सकेगा। यह क्यों? क्या इसलिए कि मैं तुमसे प्रेम नहीं करता? परमेश्वर जानता है कि मैं तुमसे प्रेम करता हूं।

जो मैं ऐसा करता हूं उसी को मैं आगे भी करता रहूंगा कि उन तथाकथित प्रेरितों का दांव न लगने दूं जो इस विचार में हैं कि जिस प्रेरित-पद का उन्हें गर्व है, उसमें हमारी समानता करें। ये व्यक्ति झूठे प्रेरित और धूर्त कार्यकर्ता हैं। ये मसीह के प्रेरित होने का स्वांग रचते हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि स्वयं शैतान ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है! फिर उसके सेवक धार्मिकता के सेवक बनने का स्वांग रचें तो कौन-सी बड़ी बात है। जैसे उनके काम हैं वैसे ही उनका परिणाम होगा।

पौलुस और उनके विरोधियों में तुलना

मैं फिर कहता [redacted] कि कोई मुझे मूर्ख न समझे, और यदि तुम मूर्ख समझते ही हो तो मुझे थोड़ा गर्व से कहने दो। जो मैं कहने को हूं, वह प्रभु के अधिकार से नहीं, वरन् मूर्ख के सदृश निस्संकोच गर्व से कह रहा हूं। जब अनेक लोग सांसारिक बातों पर गर्व करते हैं तो मैं भी क्यों न करूं? तुम तो बुद्धिमान होने के कारण सहर्ष मूर्खों का व्यवहार सह लेते हो। यदि कोई तुम्हें गुलामी में जकड़े, तुम्हारी धन-सम्पत्ति हड़प ले, तुमको ठगे, गर्व से फूले, या तुम्हारे मुंह पर थप्पड़ मारे तो तुम उसका यह व्यवहार सह लेते हो। मैं लज्जापूर्वक स्वीकार करता [redacted] कि मुझमें ऐसा व्यवहार सहन करने की शक्ति नहीं है।

पौलुस की कुलीनता और कष्ट-सहिष्णुता

परन्तु यदि कोई किसी अन्य विषय में अभिमान करने का साहस करे—मैं मूर्ख के समान यह कह रहा हूं—तो मैं भी ऐसा साहस कर सकता हूं। क्या वे इब्रानी हैं? मैं भी हूं। क्या वे इस्राएली हैं? मैं भी हूं। क्या वे अब्राहम की सन्तान हैं? मैं भी हूं। क्या वे मसीह के सेवक हैं? मेरा पागलपन क्षमा करो, मैं उनसे बढ़कर हूं। मैंने उनसे अधिक परिश्रम किया है, मैं उनसे अधिक बार बन्दी हुआ, न मालूम मैं कितनी बार पीटा गया, अनेक बार मरते-मरते बचा। मैंने पांच बार यहूदियों से उन्तालीस कोड़े खाए, तीन बार बेंतों की मार सही।

एक बार मुझे मार डालने के लिए मुझपर पथराव किया गया। तीन बार जलयान, जिन पर मैं था, टूट गए। एक दिन-रात मुझे समुद्र मे बहना पड़ा। मुझे बार-बार यात्राएं करनी पड़ीं जिनमे नदियो से विपत्ति, डाकुओ से विपत्ति, सजातीय यहूदियो से विपत्ति, अन्य जातियो से विपत्ति, नगर से विपत्ति, निर्जन प्रदेश से विपत्ति, समुद्र मे विपत्ति तथा कपटी भाइयों से विपत्ति आई। परिश्रम और कष्ट मे, नींद रहित रातो मे, भूख-प्यास और बहुधा उपवास मे, जाड़े मे और उघाड़े मे मैने दिन काटे है। और इन सबके अतिरिक्त है वह दैनिक भार—सब कलीसियाओ के विषय मे मेरी चिन्ता। कौन दुर्बल है, जिसकी दुर्बलता का मै अनुभव नहीं करता? कौन पाप मे फसता है, और मै उसके लिए व्याकुल नही होता?

यदि अभिमान करना ही है तो मै अपनी दुर्बलताओ पर अभिमान करूंगा। प्रभु यीशु का पिता और परमेश्वर, जो युगानुयुग धन्य है, जानता है कि मै झूठ नही बोलता। दमिश्क में राजा अरितास के एक उच्चाधिकारी ने नगर पर पहरा बैठाकर मुझे पकड़ना चाहा। किन्तु मै टोकरे मे शहरपनाह की एक खिड़की से नीचे उतार दिया गया और उसके हाथ से बच निकला।

दिव्य दर्शन और मानवीय दुर्बलता

अभिमान करने से कोई लाभ नही, फिर भी यदि अभिमान करना ही है तो मै प्रभु द्वारा दिए गए दर्शन और प्रकाशन की चर्चा करूगा मै मसीह मे एक व्यक्ति को जानता हू जो चौदह वर्ष हुए तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया—सदेह अथवा विदेह यह परमेश्वर जाने, मै नहीं जानता। मै जानता हू कि वह व्यक्ति स्वर्गधाम मे उठाया गया—सदेह अथवा विदेह, यह परमेश्वर जाने, मै नहीं जानता—और उसने ऐसी बातें सुनीं, जिनका वर्णन करना मनुष्यो के लिए उचित नहीं और जो शब्दो मे नहीं बताई जा सकती है। इस मनुष्य पर तो मैं अभिमान करूंगा, किन्तु अपने विषय मे अपनी दुर्बलताओ को छोड़कर और किसी बात पर अभिमान नहीं करूगा। यदि मै अपने ऊपर अभिमान करना चाहू तो भी मूर्ख नहीं, क्योंकि सच बोलता हू। किन्तु मै मौन हू; मै नहीं चाहता कि लोग जैसा मुझे देखते और मुझसे सुनते हो, उससे बढ़कर मुझे समझे। ईश्वरीय प्रकाशनो की प्रचुरता से कही मेरा अहकार न बढ़ जाए, इसलिए मेरे शरीर मे एक कांटा चुभाया गया है, शैतान का एक दूत मानो मेरी ताड़ना करता है कि मै अहकारी न हो जाऊ। तीन बार मैने प्रभु से विनय की कि यह मुझसे दूर हो जाए, पर उन्होने मुझे उत्तर दिया, 'तेरे लिए मेरा अनुग्रह पर्याप्त है, क्योकि मेरी सामर्थ्य दुर्बलता मे ही सिद्ध होती है।' इसलिए मैं सहर्ष अपनी दुर्बलताओ पर गर्व करूगा कि मसीह की सामर्थ्य मुझमे निवास करे। मसीह के लिए मै दुर्बलताओ, दुर्व्यवहारो, कठिनाइयो, कष्टो और विपत्तियो मे प्रसन्न रहता हू, क्योंकि जब मै दुर्बल हू, तभी बलवान हूं।

कुरिन्थुस की कलीसिया के लिए पौलुस की चिन्ता

मै मूर्ख बन गया हू। तुम्ही ने मुझे इसके लिए विवश किया है। उचित तो यह था कि तुम मेरी प्रशसा करते। यद्यपि मै कुछ नही हू तो भी इन जैसे श्रेष्ठ प्रेरितो से कदापि कम नही [illegible]। तुम्हारे बीच मैने धैर्य-आचरण द्वारा, चिह्नो-चमत्कारो और सामर्थ्य के कार्यों द्वारा सच्चे प्रेरित के लक्षण प्रदर्शित किए। दूसरी कलीसियाओ की अपेक्षा तुम लोगो मे किस बात की कमी रही? केवल इसी की न, कि मै तुम लोगो पर भार स्वरूप नही हुआ? इस अन्याय के लिए मुझे क्षमा करो!

देखो, मैं तुम्हारे यहां तीसरी बार आने के लिए तैयार हू। मै किसी पर अपना बोझ न डालूगा, क्योकि मै तुमको चाहता हू, तुम्हारी सम्पत्ति को नहीं। बालक माता-पिता के लिए धन एकत्र नही करते, किन्तु माता-पिता अपने बालको के लिए धन एकत्र करते है। मै तुम्हारी आत्मा के लिए आनन्दपूर्वक अपना सब कुछ बलि कर दूंगा और स्वय बलि हो जाऊगा।

क्या जितना ही अधिक मैं तुमसे प्रेम करता हूं, उतना ही कम तुम मुझसे प्रेम करोगे? हो सकता है कि कोई कहे कि मैं तुम पर भार-स्वरूप नहीं हुआ, किन्तु धूर्त होने के कारण छल-कपट द्वारा तुमसे कुछ ठग लिया। क्या जिन्हें मैंने तुम्हारे पास भेजा, उनके द्वारा तुमसे कुछ लाभ उठाया? मैंने तुम्हारे पास आने के लिए तीतुस से अनुरोध किया और उसके साथ एक भाई को भेजा। क्या तीतुस ने तुमसे कुछ लाभ उठाया? क्या हमने एक ही आत्मा से प्रेरित होकर काम नहीं किया? क्या हम एक ही पथ पर नहीं चले?

तुम सोच रहे होगे कि अब तक हम तुम्हारे सामने अपना पक्ष-समर्थन कर रहे हैं। प्रिय भाइयो, नहीं, हम यह सब परमेश्वर के सम्मुख, मसीह में, कह रहे हैं जिससे तुम्हारा आध्यात्मिक उत्थान हो सके। मुझे भय है कि वहां आने पर मैं तुम्हें जैसा पाना चाहता हूं वैसा नहीं पाऊं और तुम भी मुझे जैसा नहीं चाहते हो वैसा पाओ। कहीं तुम्हारे बीच झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, स्वार्थ, परनिन्दा, चुगलखोरी, अहंकार और अव्यवस्था न हो। मुझे भय है कि तुम्हारे यहां पुनः आने पर कहीं परमेश्वर तुम्हारे विषय में मेरा गर्व चूर-चूर न करे, जिससे मुझे बहुतों के लिए विलाप करना पड़े, जिन्होंने पाप किया और फिर भी अपनी अशुद्धता, व्यभिचार और लम्पटता के आचरण पर पश्चात्ताप नहीं किया है।

चेतावनी

अब मैं तीसरी बार तुम्हारे यहां आ रहा हूं। धर्मशास्त्र कहता है: 'दो या तीन गवाहों के होने पर ही कोई अभियोग सुना जा सकेगा।' जब मैं दूसरी बार तुम्हारे यहां आया था, तो मैंने सब लोगों को, विशेषकर उन्हें जिन्होंने पाप किया था, चेतावनी दी थी, और अब अपनी अनुपस्थिति में पहिले से ही चेतावनी देता हूं कि यदि मैं फिर आया तो किसी पर दया न करूंगा। तुम प्रमाण चाहते हो कि मुझमें मसीह हैं और वह मेरे द्वारा बोलते हैं। तुम अपने प्रति व्यवहार करने में मसीह को दुर्बल नहीं पाओगे, तुम्हारे बीच वह समर्थ हैं। वह दुर्बल दशा में क्रूसित हुए किन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य से जीवित हैं। हम भी दुर्बलता में उनके सहभागी हैं, परन्तु साथ ही तुम्हारे प्रति व्यवहार करने में समर्थ हैं, क्योंकि हम परमेश्वर की सामर्थ्य से, मसीह के साथ जीवित हैं। अपने को परखकर देखो कि तुम विश्वास में स्थिर हो या नहीं। आत्मनिरीक्षण करो। क्या तुम अनुभव नहीं करते कि मसीह यीशु तुममें हैं? यदि नहीं करते तो तुम कसौटी पर खरे नहीं निकले। मुझे आशा है कि तुम मानते हो कि हम भी कसौटी पर खरे उतरे हैं।

परमेश्वर से हमारी प्रार्थना है कि तुम कोई बुरा कार्य न करो—इसलिए नहीं कि हम खरे दीख पड़ें, वरन् इसलिए कि तुम शुभ-कार्य करो—चाहे हम बुरे प्रतीत हों। हम सत्य के विरोध में कुछ नहीं कर सकते, पर सत्य के लिए सब कुछ कर सकते हैं। जब हम दुर्बल हैं, और तुम सबल हो, तो हमें हर्ष होता है। हमारी यही प्रार्थना है कि तुम्हारी पूर्ण उन्नति हो। मैंने ये बातें अपनी अनुपस्थिति में इसलिए लिखी हैं कि जब आऊं तो मुझे कठोरता से अपने अधिकार का प्रयोग न करना पड़े, जिसे प्रभु ने मुझे तुम्हारे विनाश के लिए नहीं वरन् तुम्हारे आध्यात्मिक उत्थान के लिए दिया है।

अभिवादन

भाइयो, अब विदा! हमारा निवेदन सुनो, अपने को सुधारो, एक मत हो और शान्तिपूर्वक रहो। तब प्रेम और शान्ति का परमेश्वर तुम्हारे साथ होगा। पवित्र चुम्बन द्वारा परस्पर अभिवादन करो। सब सन्त तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सबके साथ हो।

१ प्रेरित पौलुस कुरिन्थ की कलीसिया में किस प्रकार सेवा-कार्य करने

लोगों के सम्मुख—परन्तु एकान्त में प्रतिष्ठित लोगों के सम्मुख—उस शुभ-सन्देश को रखा, जिसका प्रचार मैं गैरयहूदियों में किया करता हूं, कि कहीं ऐसा न हो कि जो दौड़धूप मैं कर रहा हूं अथवा कर चुका हूं, वह व्यर्थ हो जाए। परन्तु किसी ने मेरे साथी तीतुस को भी, जो यूनानी है, खतना कराने के लिए विवश नहीं किया।

पर खतने का यह प्रश्न उन झूठे भाइयों के कारण उठा जिन्हें कलीसिया में चुपचाप भीतर लाया गया था, कि जो स्वतन्त्रता मसीह यीशु में हमको प्राप्त है, उसका भेद लें, और हमें फिर गुलामी में डाल दें। हमने एक क्षण के लिए भी उनकी अधीनता स्वीकार नहीं की, जिससे शुभ-सन्देश की सच्चाई तुम्हारे लिए बनी रहे।

फिर जो लोग प्रतिष्ठित समझे जाते हैं—वे पहले कैसे थे, इससे मेरे विचार में कोई अन्तर नहीं पड़ता, क्योंकि परमेश्वर मुंहदेखा न्याय नहीं करता—इन प्रतिष्ठित लोगों से मुझे कोई नई बात प्राप्त नहीं हुई। वरन् उन लोगों ने देखा कि, जैसे पतरस को खतनेवालों में शुभ-सन्देश सुनाने का कार्य सौंपा गया वैसे ही मुझे खतना-रहितों में (क्योंकि जिस परमेश्वर ने पतरस द्वारा खतनेवालों में प्रेरित का कार्य किया, उसने मेरे द्वारा खतना-रहितों में कार्य किया।) और जब उन्होंने उस अनुग्रह को पहचाना जो मुझे प्राप्त हुआ है, तो याकूब, कैफा और यूहन्ना ने, जो कलीसिया के आधार-स्तम्भ समझे जाते हैं, मुझे और बरनबास को संगति का दाहिना हाथ दिया कि हम गैरयहूदियों में और वे यहूदियों में कार्य करें। उन्होंने केवल यह कहा कि हम गरीब यहूदी भाइयों को स्मरण रखें। मैं स्वयं यह कार्य करने के लिए उत्सुक था।

पतरस की भर्त्सना

परन्तु जब कैफा अन्ताकिया में आए तब मैंने उनके मुह पर उनका विरोध किया, क्योंकि वह दोषी थे। कारण यह है कि याकूब के यहां से कुछ लोगों के आने से पूर्व वह गैर-यहूदियों के साथ भोजन करते थे, परन्तु उनके आने पर खतना की प्रथा माननेवाले यहूदी भाइयों के भय से वह पीछे हटने लगे और किनारा करने लगे। अन्य यहूदी भाइयों ने भी इस कपट-आचरण में उनका साथ दिया, यहां तक कि बरनबास भी उन लोगों के कपट-आचरण के कारण भटक गए। परन्तु जब मैंने देखा कि वे लोग शुभ-सन्देश के सत्य के अनुसार शुद्ध आचरण नहीं कर रहे तो सबके सम्मुख मैंने कैफा से कहा, 'जब तुम यहूदी होकर विजातियों के सदृश आचरण करते हो, और यहूदियों के समान नहीं, तो गैरयहूदियों को यहूदियों के समान आचरण करने को क्यों विवश करते हो?'

व्यवस्था की असफलता

हम लोग जन्म से यहूदी हैं, और पापी गैरयहूदियों में से नहीं। फिर भी हम जानते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के अनुरूप किए कर्मों से नहीं वरन् मसीह यीशु पर विश्वास करने से परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिक ठहरता है, इसीलिए तो हमने स्वयं मसीह यीशु पर विश्वास किया है कि हम व्यवस्था के कर्मों से नहीं पर मसीह पर विश्वास करने से धार्मिक ठहरें; क्योंकि व्यवस्था के कर्मों से कोई मनुष्य धार्मिक नहीं ठहरेगा। अतः हम जो मसीह में धार्मिक ठहराए जाने की इच्छा कर रहे हैं, यदि स्वयं ही पापी निकले तो क्या मसीह पाप के सेवक हैं? कदापि नहीं! जिन वस्तुओं को मैं नष्ट कर चुका हूं यदि उन्हीं का फिर निर्माण करने लगूं तो मैं अपने आपको परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करनेवाला बनाता हूं। क्योंकि मैं व्यवस्था द्वारा व्यवस्था के लिए मर चुका हूं जिससे परमेश्वर के लिए जी सकूं। मैं मसीह के साथ क्रूसित हो चुका हूं। अब मैं जीवित नहीं परन्तु मसीह मुझमें जीवित हैं। जो अब मैं शरीर में जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए अपने आपको दे दिया। मैं परमेश्वर के अनुग्रह की उपेक्षा

के नाम पत्र

हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो!

भाइयो, मैं न मनुष्यों की ओर से और न मनुष्यों द्वारा प्रेरित नियुक्त हुआ, किन्तु स्वयं यीशु मसीह तथा उनको मृतकों में से जीवित करनेवाले पिता परमेश्वर ने मुझे नियुक्त किया है।

यीशु ने हमारे पापों के लिए अपने आपको बलि कर दिया कि वह हमारे पिता परमेश्वर की इच्छा-अनुसार हमें वर्तमान बुरे युग से छुड़ाए। परमेश्वर की स्तुति युगानुयुग हो। आमेन।

गलातियों से पौलुस को निराशा

मुझे आश्चर्य है कि जिस परमेश्वर ने मसीह के अनुग्रह से तुमको बुलाया है, उसे तुम इतना शीघ्र त्यागकर किसी दूसरे ही शुभ-सन्देश की ओर मुड़ रहे हो। दूसरा शुभ-सन्देश तो कोई है नहीं, किन्तु कुछ लोग हैं जो तुम्हें विचलित करते और मसीह के शुभ-सन्देश में उलटफेर करना चाहते हैं। परन्तु यदि स्वयं हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस शुभ-सन्देश से भिन्न, जो हमने तुमको सुनाया था, कोई अन्य शुभ-सन्देश तुम्हें सुनाए तो वह शापित हो। जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही अब मैं पुनः कहता हूं जो शुभ-सन्देश तुम्हें प्राप्त हुआ है उससे भिन्न शुभ-सन्देश यदि कोई तुमको देता है तो वह शापित हो।

मसीह का शुभ-सन्देश, परमेश्वर की ओर से है

तो कहो, क्या अब मैं मनुष्यों का कृपा-पात्र बनने का प्रयत्न कर रहा हूं, अथवा परमेश्वर का? यदि मैं अभी तक मनुष्यों को प्रसन्न करता होता तो मसीह का सेवक नहीं होता।

भाइयो, मैं तुम्हें बताए देता हूं कि जो शुभ-सन्देश मैंने तुमको सुनाया था वह मनुष्य-रचित नहीं है, क्योंकि वह मुझे किसी मनुष्य से प्राप्त नहीं हुआ, न किसी ने मुझे उसकी शिक्षा दी, वरन् वह मुझे यीशु मसीह के प्रकाशन द्वारा प्राप्त हुआ।

यहूदी धर्म में मेरे पूर्व-आचरण के विषय में तुम सुन चुके हो मैं परमेश्वर की कलीसिया पर बहुत अत्याचार करता था और उसको नष्ट कर रहा था। मैं यहूदी धर्म में अपनी जाति के बहुत युवकों से अधिक प्रगति कर रहा था जो मेरी उम्र के थे। मैं अपने पूर्वजों की प्रथाओं का पालन करने में अत्यन्त उत्साही था। परन्तु परमेश्वर ने जिसने मुझे माता के गर्भ से ही अपने कार्य के लिए चुना था, उसने अपने अनुग्रह से मुझे बुलाया और उसकी कृपा हुई कि वह अपने पुत्र को मुझमें प्रकट करे जिससे मैं गैरयहूदियों में उसका शुभ-सन्देश सुनाऊं। तब मैंने किसी मनुष्य से परामर्श नहीं किया और न मैं यरूशलेम में उनके पास गया जो मुझसे पहिले प्रेरित थे, वरन् पहिले मैं सीधा अरब देश गया और वहां से फिर दमिश्क नगर को लौट आया।

तब तीन वर्ष के पश्चात् मैं कैफा से भेंट करने यरूशलेम गया और उनके साथ पन्द्रह दिन रहा। किन्तु प्रभु के भाई याकूब के अतिरिक्त और किसी प्रेरित से मेरी भेंट नहीं हुई। परमेश्वर साक्षी है कि जो कुछ मैंने लिखा है, उसमें कुछ भी झूठ नहीं। इसके पश्चात् मैं सीरिया और किलिकिया के प्रदेशों में आया। उस समय यहूदा प्रदेश की कलीसियाओं ने, जो मसीह में है, मुझे नहीं देखा था। उन्होंने सुना भर था कि जो पहिले उन पर अत्याचार करता था, वही अब उस विश्वास का प्रचार करता है, जिसे वह पहले नष्ट करने का प्रयत्न कर रहा था। वे कलीसियाएं मेरे विषय में परमेश्वर की स्तुति करती थीं।

पौलुस के कार्य की यरूशलेम में मान्यता

चौदह वर्ष पश्चात् मैं बरनबास के साथ फिर यरूशलेम गया और तीतुस को अपने साथ ले गया। मैं प्रभु के आदेश से वहां गया था जो उन्होंने मुझे एक दर्शन में दिया था। मैंने उन

लोगों के सम्मुख—परन्तु एकान्त में प्रतिष्ठित लोगों के सम्मुख—उस शुभ-सन्देश को रखा, जिसका प्रचार मैं गैरयहूदियों में किया करता हूं कि कहीं ऐसा न हो कि जो दौड़धूप मैं कर रहा हूं अथवा कर चुका हूं, वह व्यर्थ हो जाए। परन्तु किसी ने मेरे साथी तीतुस को भी, जो यूनानी है, खतना कराने के लिए विवश नहीं किया।

पर खतने का यह प्रश्न उन झूठे भाइयों के कारण उठा जिन्हें कलीसिया में चुपचाप भीतर लाया गया था, कि जो स्वतन्त्रता मसीह यीशु में हमको प्राप्त है, उसका भेद लें, और हमें फिर गुलामी में डाल दें। हमने एक क्षण के लिए भी उनकी अधीनता स्वीकार नहीं की, जिससे शुभ-सन्देश की सच्चाई तुम्हारे लिए बनी रहे।

फिर जो लोग प्रतिष्ठित समझे जाते हैं—वे पहले कैसे थे, इससे मेरे विचार में कोई अन्तर नहीं पड़ता, क्योंकि परमेश्वर मुंहदेखा न्याय नहीं करता—इन प्रतिष्ठित लोगों से मुझे कोई नई बात प्राप्त नहीं हुई। वरन् उन लोगों ने देखा कि, जैसे पतरस को खतनेवालों में शुभ-सन्देश सुनाने का कार्य सौंपा गया वैसे ही मुझे खतना-रहितों में (क्योंकि जिस परमेश्वर ने पतरस द्वारा खतनेवालों में प्रेरित का कार्य किया, उसने मेरे द्वारा खतना-रहितों में कार्य किया।) और जब उन्होंने उस अनुग्रह को पहचाना जो मुझे प्राप्त हुआ है, तो याकूब, कैफा और यूहन्ना ने, जो कलीसिया के आधार-स्तम्भ समझे जाते हैं, मुझे और बरनबास को संगति का दाहिना हाथ दिया कि हम गैरयहूदियों में और वे यहूदियों में कार्य करें। उन्होंने केवल यह कहा कि हम गरीब यहूदी भाइयों को स्मरण रखें। मैं स्वयं यह कार्य करने के लिए उत्सुक था।

पतरस की भर्त्सना

परन्तु जब कैफा अन्ताकिया में आए तब मैंने उनके मुंह पर उनका विरोध किया, क्योंकि वह दोषी थे। कारण यह है कि याकूब के यहां से कुछ लोगों के आने से पूर्व वह गैरयहूदियों के साथ भोजन करते थे, परन्तु उनके आने पर खतना की प्रथा माननेवाले यहूदी भाइयों के भय से वह पीछे हटने लगे और किनारा करने लगे। अन्य यहूदी भाइयों ने भी इस कपट-आचरण में उनका साथ दिया, यहां तक कि बरनबास भी उन लोगों के कपट-आचरण के कारण भटक गए। परन्तु जब मैंने देखा कि वे लोग शुभ-सन्देश के सत्य के अनुसार शुद्ध आचरण नहीं कर रहे तो सबके सम्मुख मैंने कैफा से कहा, 'जब तुम यहूदी होकर विजातियों के सदृश आचरण करते हो, और यहूदियों के समान नहीं, तो गैरयहूदियों को यहूदियों के समान आचरण करने को क्यों विवश करते हो?'

व्यवस्था की असफलता

हम लोग जन्म से यहूदी हैं, और पापी गैरयहूदियों में से नहीं। फिर भी हम जानते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के अनुरूप किए कर्मों से नहीं वरन् मसीह यीशु पर विश्वास करने से परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिक ठहरता है, इसीलिए तो हमने स्वयं मसीह यीशु पर विश्वास किया है कि हम व्यवस्था के कर्मों से नहीं पर मसीह पर विश्वास करने से धार्मिक ठहरें; क्योंकि व्यवस्था के कर्मों से कोई मनुष्य धार्मिक नहीं ठहरेगा। अतः, हम जो मसीह में धार्मिक ठहराए जाने की इच्छा कर रहे हैं, यदि स्वयं ही पापी निकले तो क्या मसीह पाप के सेवक हैं? कदापि नहीं! जिन वस्तुओं को मैं नष्ट कर चुका हूं यदि उन्हीं का फिर निर्माण करने लगूं तो मैं अपने आपको परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करनेवाला बनाता हूं। क्योंकि मैं व्यवस्था द्वारा व्यवस्था के लिए मर चुका हूं जिससे परमेश्वर के लिए जी सकूं। मैं मसीह के साथ क्रूसित हो चुका हूं। अब मैं जीवित नहीं परन्तु मसीह मुझमें जीवित है। जो अब मैं शरीर में जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए अपने आपको दे दिया। मैं परमेश्वर के अनुग्रह की उपेक्षा

नहीं करता, क्योंकि यदि धार्मिकता व्यवस्था से मिल सकती तो मसीह का मरना व्यर्थ हुआ।

अब्राहम की सन्तान

अरे निर्बुद्धि गलातियो! किसने तुम पर जादू डाल दिया? हमने तुम्हारी आंखों के सम्मुख तो यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़े हुए चित्रित किया था। मैं तुमसे इतना ही जानना चाहता [illegible] तुमने व्यवस्था के अनुरूप कर्म करके पवित्र आत्मा प्राप्त किया है अथवा विश्वास का शुभ-सन्देश सुनकर? क्या तुम इतने निर्बुद्धि हो कि जो आत्मा से आरम्भ किया उसे अब एक बाह्य विधि से* पूरा करोगे? क्या तुम्हें वे बड़े अनुभव व्यर्थ प्राप्त हुए थे? क्या वे सचमुच ही व्यर्थ थे! जो परमेश्वर तुम्हें आत्मा प्रदान करता और तुममें सामर्थ्य के काम करता है, वह क्या इसलिए करता है कि तुमने व्यवस्था के अनुरूप कर्म किए, अथवा इसलिए कि तुमने मसीह यीशु के सन्देश पर विश्वास किया?

अब्राहम ने 'परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उनके लिए धार्मिकता गिना गया।' अतः यह समझ लो कि विश्वास करनेवाले ही अब्राहम की सन्तान हैं। और धर्मशास्त्र ने तो आगे से यह देखकर कि परमेश्वर अन्य जातियों को विश्वास द्वारा धार्मिक ठहराएगा, अब्राहम को पहिले से ही यह शुभ-सन्देश सुना दिया, 'तुममें सभी जातियां आशीष प्राप्त करेंगी।' इसलिए विश्वास करनेवाले व्यक्ति ही विश्वासी अब्राहम के साथ परमेश्वर की आशीष प्राप्त करते हैं।

परन्तु जो लोग व्यवस्था के कर्मों पर निर्भर हैं, वे सब शाप के अधीन हैं, क्योंकि धर्मशास्त्र का लेख है, 'जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी सभी बातों का पालन नहीं करता, वह शापित है।' फिर भी यह स्पष्ट है कि व्यवस्था द्वारा कोई मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिक नहीं ठहरता, क्योंकि 'विश्वास द्वारा धार्मिक मनुष्य जिएगा।'** और व्यवस्था का विश्वास से कोई सम्बन्ध नहीं, क्योंकि 'जो इन बातों का पालन करेगा वह इनके द्वारा जिएगा।' मसीह ने व्यवस्था के शाप से हमें मोल लेकर छुड़ाया और स्वयं हमारे लिए शापित हुए, क्योंकि धर्मशास्त्र का लेख है, 'काठ पर लटकनेवाला प्रत्येक व्यक्ति शापित है।' यह सब इसलिए हुआ कि अब्राहम की आशीष मसीह यीशु में अन्य जातियों को मिले, और हमें विश्वास द्वारा वह आत्मा प्राप्त हो जिसकी प्रतिज्ञा की गई है।

भाइयो, मैं मानव जीवन से एक उदाहरण लेता हूं। मनुष्य का वसीयतनामा भी जब एक बार पक्का हो जाता है तो उसे कोई रद्द नहीं करता है और न उसमें कुछ जोड़ता ही है। प्रतिज्ञाएं अब्राहम और उनके 'वंशज' से की गई थीं। धर्मशास्त्र नहीं कहता, 'वंशजों से' मानो बहुत हों, किन्तु 'तेरे वंशज से' मानो एक के विषय में हो, और वह मसीह है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि जो वसीयतनामा परमेश्वर ने पहिले से पक्का कर दिया, उसको चार सौ तीस वर्ष पश्चात् होनेवाली व्यवस्था रद्द नहीं कर सकती और न उसकी प्रतिज्ञा को व्यर्थ बना सकती है। क्योंकि यदि उत्तराधिकार व्यवस्था से मिलता है तो फिर प्रतिज्ञा से नहीं, परन्तु परमेश्वर ने अब्राहम को यह उत्तराधिकार प्रतिज्ञा द्वारा दिया।

व्यवस्था का उद्देश्य

फिर व्यवस्था क्यों? वह उल्लंघन के लिए पीछे से जोड़ी गई कि उस वंशज के आने तक रहे जिससे प्रतिज्ञा की गई थी। वह स्वर्गदूतों द्वारा मध्यस्थ के हाथ प्रस्तुत की गई। और मध्यस्थता कम से कम दो के बीच की जाती है,+ किन्तु परमेश्वर तो एक है।

तो क्या व्यवस्था परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के विरुद्ध है? कदापि नहीं! यदि ऐसी

*अक्षरश: 'शरीर से'

**अथवा, 'जो मनुष्य विश्वास के द्वारा परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिक ठहरा है, वह जीवित रहेगा।'

+ 'मध्यस्थ केवल एक का नहीं होता'

व्यवस्था दी गई होती जो जीवन प्रदान कर सकती है, तो वास्तव मे व्यवस्था पालन से धार्मिकता मिलती। परन्तु धर्मशास्त्र का कथन है कि सब पाप के अधीन हो गए है जिससे वह प्रतिज्ञा, जिसका आधार यीशु मसीह मे विश्वास करना है, विश्वास करनेवालो के लिए पूर्ण हो।

विश्वास के आने से पूर्व हम व्यवस्था के सरक्षण मे बन्दी थे, और विश्वास के प्रकाशन तक हम पर नियन्त्रण था। इस प्रकार मसीह के पास लाने के लिए व्यवस्था हमारी सरक्षक रही जिससे हम विश्वास द्वारा धार्मिक ठहरे।

परन्तु जब विश्वास आ गया है, तो अब हम सरक्षक के अधीन नही रहे।

विश्वास का परिणाम

विश्वास द्वारा तुम सब मसीह यीशु मे परमेश्वर की सन्तान हो। तुममे से जितनो ने मसीह मे बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को धारण कर लिया है। अब न कोई यहूदी है और न यूनानी, न गुलाम है और न स्वतन्त्र, न पुरुष है और न स्त्री, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु मे एक हो। और यदि तुम मसीह के हो, तो अब्राहम के वशज हो और परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार उत्तराधिकारी।

मेरा तात्पर्य यह है उत्तराधिकारी जब तक नाबालिग है, तब तक समस्त सम्पत्ति का स्वामी होने पर भी, उसमे और गुलाम मे कोई भेद नही होता। वह पिता द्वारा निश्चित की गई अवधि तक सरक्षको और गृह-प्रबन्धको के अधीन रहता है। इसी प्रकार हम भी जब तक नाबालिग थे तब तक ससार की दैवी शक्तियो के अधीन गुलाम बने हुए थे। परन्तु जब समय पूरा हुआ तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा। वह एक नारी से उत्पन्न हुआ और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ जिससे वह व्यवस्था के अधीन लोगो को मोल लेकर छुड़ाए और हम परमेश्वर के पुत्र बने। अब तुम पुत्र हो क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र का आत्मा हमारे हृदय मे भेजा जो पुकारता है, 'अब्बा, हे पिता।' फलत अब तुम गुलाम नहीं, पुत्र हो, और यदि पुत्र हो तो परमेश्वर द्वारा उत्तराधिकारी भी बनाए गए हो।

पुरानी गुलामी में मत लौटो

जब तुम परमेश्वर को नही जानते थे तब उनके गुलाम थे जो वस्तुत ईश्वर नही है, परन्तु तुमने अब परमेश्वर को पहचान लिया है अथवा यो कहे कि परमेश्वर ने तुमको पहचान लिया है, तो फिर तुम उन निर्बल और निकम्मी दैवी शक्तियो की ओर क्यो मुड रहे हो? एक बार फिर तुम उनकी गुलामी क्यो करना चाहते हो? तुम विशेष-विशेष दिन, महीने, ऋतुए और वर्ष मनाने लगे हो। मुझे भय होने लगा है कि कही तुम लोगो के बीच मेरा श्रम व्यर्थ तो नहीं हो गया।

भाइयो, मेरा तुमसे अनुरोध है कि मेरे समान बनो, क्योंकि मै तुम्हारे समान हो गया हू। तुमने मेरा कुछ नही बिगाडा था। तुम्हे ज्ञात है कि मैंने शारीरिक अस्वस्थता के कारण पहले तुम्हारे बीच मसीह यीशु का शुभ-सन्देश सुनाया था। यद्यपि मेरी शारीरिक दशा तुम्हारे लिए परीक्षा बन गई थी, तो भी तुमने मुझसे घृणा नही की और न नाक भौं सिकोडी, वरन् परमेश्वर के दूत के समान या मसीह यीशु के समान मेरा स्वागत किया। तुम्हारी वह आनन्द की भावना कहां गई? मै तुम्हारा साक्षी हू- यदि हो सकता तो तुम मेरे लिए अपनी आखे तक निकाल कर दे देते। तो क्या सच बोलने के कारण मै तुम्हारा शत्रु हो गया हू? वे मेरे विरोधी, तुम्हे सिर-आखो पर उठाए फिरते है, पर उनका उद्देश्य अच्छा नही। वे तुम्हे मुझसे अलग करना चाहते है जिससे तुम उन्हे सिर-आखो पर उठाए फिरो। किसी के सिर-आखो पर रहना अच्छी बात है, परन्तु यह अच्छे उद्देश्य से हो और सदा रहे, केवल उस समय तक नही जब तक मै तुम्हारे बीच उपस्थित रहता हू। मेरे बालको, जब तक तुममे मसीह का रूप विकसित न हो जाए, मै तुम्हारे लिए फिर से प्रसव-पीड़ा सह रहा हू। जी चाहता है कि मै इसी क्षण तुम्हारे पास पहुच जाऊ, क्योंकि मैं असमजस मे पड गया हू और

नही जानता हू कि मुझे तुमसे किस प्रकार बोलना चाहिए।

पुराने नियम से एक उदाहरण

तुम जो व्यवस्था के अधीन रहना चाहते हो, मुझे बताओ कि क्या तुमने व्यवस्था को नहीं सुना? उसमे लिखा है कि अब्राहम के दो पुत्र थे, एक दासी से और दूसरा विवाहिता स्त्री से। दासी का पुत्र शरीर-जन्य था, परन्तु विवाहिता स्त्री का प्रतिज्ञा-जन्य। ये बाते रूपक है। ये स्त्रियां मानो दोनो वाचा है एक सीनय पर्वत से है जो गुलामी के लिए बच्चो को जन्म देती है। यह हाजिरा है। हाजिरा मानो अरब का सीनय पर्वत है। यह आधुनिक यरूशलम के सदृश है क्योंकि यह भी अपने बालको सहित गुलामी मे है। पर ऊपर की यरूशलम स्वतन्त्र है और वह हमारी माता है, क्योंकि धर्मशास्त्र का लेख है,

'ओ बाझ स्त्री, तू निस्सन्तान है,
तूने प्रसव-पीडा नही भोगी।
पर अब तू उमग मे,
उच्च स्वर मे गीत गा,
क्योकि त्याग दी गई स्त्री को
सुहागन स्त्री से अधिक बच्चे होगे।'

और तुम, हे भाइयो, इसहाक के सदृश परमेश्वर की प्रतिज्ञा की सन्तान हो। किन्तु जैसे उन दिनो शरीर-जन्य पुत्र आत्मा-जन्य पुत्र पर अत्याचार करता था, वैसा ही आज भी हो रहा है। पर धर्मशास्त्र क्या कहता है? 'दासी और उसके पुत्र को निकाल दे, क्योकि दासी का पुत्र विवाहिता स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नही होगा।' अतएव हे भाइयो, हम दासी के नही वरन् स्वतन्त्र स्त्री की सन्तान हैं।

स्वतन्त्रता की रक्षा करो

स्वतन्त्रता के लिए मसीह ने हमे स्वतन्त्र किया है, इसलिए दृढ रहो और फिर से गुलामी के जुए मे न जुतो।

देखो, मै पौलुस तुमसे कहता हू कि यदि खतना कराओगे तो तुमको मसीह से कुछ लाभ नही होगा। मै प्रत्येक खतना करानेवाले को बताए देता हू कि उसे सारी व्यवस्था का पालन करना है। तुममे से जो लोग व्यवस्था द्वारा धार्मिक ठहराया जाना चाहते है, वे मसीह से अलग है और अनुग्रह से पतित। परन्तु हम धार्मिकता की उस आशा की प्रतीक्षा करते है जो विश्वास से है, और परमेश्वर के आत्मा द्वारा प्राप्त होती है। क्योकि मसीह यीशु मे न खतने का कुछ महत्व है और न खतनारहित होने का, पर केवल विश्वास का, जो प्रेम द्वारा क्रियाशील होता है।

तुम तो अच्छी दौड दौड रहे थे। किसने तुमको रोक दिया कि सत्य को न मानो? यह भुलावा उसकी ओर से नही जिसने तुम्हे बुलाया है। थोड़ा-सा खमीर सारे गूधे हुए आटे को खमीरा बना देता है। मुझे प्रभु मे तुम पर भरोसा है कि तुम्हारी पूर्व-भावना मे परिवर्तन नहीं होगा, पर तुम्हे विचलित करनेवाला, चाहे वह कोई क्यो न हो, दण्ड भोगेगा। और भाइयो, यदि मै अब तक खतने का प्रचार करता होता तो खतनेवाले मुझपर अत्याचार क्यो कर रहे है? उस स्थिति मे क्रूस के प्रचार-कार्य की बाधा दूर हो गई होती! कैसा अच्छा होता कि तुम्हे विचलित करनेवाले अपना अग काट डालते।

स्वतन्त्रता का प्रेम द्वारा नियन्त्रण

भाइयो, स्वतन्त्र होने के लिए तुम बुलाए गए हो। इस स्वतन्त्रता को शारीरिक वासनाओ का साधन न बनाओ, वरन् प्रेम से एक-दूसरे की सेवा करो। क्योकि समस्त व्यवस्था इस वाक्य मे पूर्ण होती है कि 'अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर।' परन्तु यदि तुम एक-

दूसरे को फाड़ डालने और निगल जाने के लिए तत्पर हो तो सावधान ! अन्यथा तुम एक-दूसरे को नष्ट कर दोगे।

पवित्र आत्मा द्वारा संचालन

मेरा कहना है, आत्मा के निर्देशन में चलो।* तब तुम शारीरिक वासनाओं की पूर्ति नहीं करोगे। क्योंकि शरीर आत्मा के विरुद्ध लालसा करता है और आत्मा शरीर के। इन दोनों का आपस में विरोध है। इसी कारण तुम जो करना चाहते हो, नहीं कर पाते। परन्तु यदि तुम्हारा संचालन आत्मा से होता है तो तुम व्यवस्था के अधीन नहीं। अब, शरीर के कर्म स्पष्ट है, जैसे व्यभिचार, अशुद्धता, निर्लज्जता, मूर्तिपूजा, जादू-टोना, शत्रुता, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, स्वार्थ, मतभेद, दलबन्दी, द्वेष, मतवालापन और रंगरेलियां और इस प्रकार के अन्य कर्म। मैं इनके विषय में तुमसे कह देता हूं, जैसाकि पहिले भी कह चुका हूं, कि ऐसे कर्म करनेवाले परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी नहीं होंगे।

परन्तु आत्मा का फल है प्रेम, आनन्द, शान्ति, सहनशीलता, दयालुता, हितकामना, सच्चाई, नम्रता और आत्मसंयम। इनके विरुद्ध कोई व्यवस्था नहीं है। जो लोग मसीह यीशु के है, उन्होंने शरीर को उसकी वासनाओं और इच्छाओं सहित क्रूस पर चढ़ा दिया है।

यदि हम आत्मा द्वारा जीवित है तो आत्मा के निर्देश के अनुसार आचरण करें। हम मिथ्या अभिमानी न हों, एक-दूसरे को न भड़काएं और एक-दूसरे से द्वेष न रखें।

एक-दूसरे की सहायता करो

भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा जाए तो तुम जो आध्यात्मिक हो, उसे नम्रतापूर्वक सुधारो। पर ध्यान रखो कि कहीं तुम भी प्रलोभन में न पड़ जाओ। एक-दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था पूर्ण करो। यदि कोई मनुष्य कुछ न होने पर भी अपने को कुछ समझता है तो वह अपने आपको धोखा देता है। प्रत्येक मनुष्य अपने कर्मों की जांच करे, उसे तब दूसरों के विषय में नहीं, वरन् अपने ही विषय में गर्व करने का कारण होगा। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य को अपना भार स्वयं उठाना होगा।

जो मनुष्य परमेश्वर के वचन की शिक्षा पा रहा है, वह अपने शिक्षा देनेवाले को सभी उत्तम वस्तुओं में साझी बनाए।

धोखा न खाओ, परमेश्वर का उपहास नहीं किया जा सकता, क्योंकि मनुष्य जो बोता है, वही काटेगा। जो शरीर के लिए बोता है, वह शरीर से विनाश की फसल काटेगा परन्तु जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा से शाश्वत जीवन की फसल काटेगा।

हम अच्छे काम करने में निराश न हों, क्योंकि यदि हम शिथिल नहीं हुए तो ठीक समय पर फसल काटेंगे। इसलिए जहां तक अवसर मिले हम सबके साथ भलाई करें, विशेषकर उनके साथ जो विश्वासी-परिवार के हैं।

अन्तिम चेतावनी

देखो, मैं तुमको कैसे बड़े-बड़े अक्षरों में अपने हाथ से लिख रहा हूं। जो लोग झूठी प्रशंसा पाना चाहते हैं** वे ही तुम्हारा खतना करवाने पर तुले हुए हैं, यह केवल इसलिए कि मसीह के क्रूस के कारण उन्हें अत्याचार न सहने पड़ें। क्योंकि जिन्होंने खतना कराया है, वे स्वयं तो व्यवस्था का पालन करते नहीं, पर तुम्हारा खतना कराना चाहते हैं कि तुम्हारे शरीर पर गर्व करें। परन्तु परमेश्वर न करे कि मैं केवल अपने प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के अतिरिक्त किसी अन्य बात का गर्व करूं, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में क्रूसित हो चुका है, और मैं संसार की दृष्टि में। क्योंकि न तो खतने का कुछ महत्व है और न खतनारहित होने

*अक्षरशः 'आत्मा द्वारा चलो'
**अक्षरशः 'शरीर में प्रदर्शन चाहते हैं'

का परन्तु महत्व है केवल नई सृष्टि का। जो लोग इस नियम का पालन करते है, उन पर तथा परमेश्वर के समस्त इस्राएली राष्ट्र पर शान्ति और करुणा हो।

अबसे मुझे कोई न सताए। मै यीशु के दागो को अपने शरीर पर लिए फिरता हू।

भाइयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे। आमेन।

१ प्रस्तुत पत्र के सन्दर्भ मे बताइए कि हमे किस प्रकार निश्चय हो सकता है कि हमे उद्धार प्राप्त हो चुका है ?

२ *अध्याय ५ और ६ मे मसीही जीवन की प्रमुख विशेषताए उल्लेख* की गई है। उनका विवरण दीजिए।

६. मसीही धर्म क्या है ?

(रोमियो १–१६)

हम नही जानते है कि किस व्यक्ति ने सर्वप्रथम रोम नगर मे शुभ-सन्देश का बीज डाला था। सम्भवत हो सकता है, यह व्यक्ति पेतिकुस्त के दिन घटी घटना के समय यरूशलम नगर मे उपस्थित था। जैसा कि आप जानते है, पेतिकुस्त के दिन से ही मसीह की कलीसिया का विकास चारो दिशाओ मे द्रुतगति से आरम्भ हुआ था। रोम नगर मे प्रेरित पौलुस के पहले कलीसिया स्थापित हो चुकी थी। प्रस्तुत पत्र के आरम्भिक पृष्ठो से यह बात स्पष्ट है कि *प्रेरित पौलुस रोम की कलीसिया का दौरा करने के लिए उत्सुक थे।*

वह कुरिन्थ मे थे, और उनकी तीसरी मिशनरी यात्रा समाप्त हो रही थी। तब उन्होने यह पत्र लिखा। वह स्पेन देश जाने के लिए रोम की कलीसिया की सहायता चाहते थे।

प्रेरित पौलुस ने भिन्न-भिन्न कलीसियाओ को अनेक पत्र लिखे है। लेकिन मसीही धर्म के सम्बन्ध मे जितने साफ-सुथरे शब्दो और शैली मे यह पत्र लिखा है, उतना किसी अन्य पत्र मे नही। जीवन और मसीही धर्म की विशद और सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत पत्र मे पाई जाती है।

प्रेरित पौलुस अपने पत्र के आरम्भ मे (१ १–३ २०) यह स्पष्ट कर देते है कि विश्व के सब मनुष्यो को उद्धार की आवश्यकता है, क्योकि प्रत्येक मनुष्य का, फिर चाहे वह यहूदी हो, अथवा अन्य धर्मी हो, परमेश्वर न्याय करेगा। प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मो का लेखा देना होगा। जिन्होने प्रभु यीशु *के उद्धार का शुभ-सन्देश* नही सुना, वे उस प्रकाश के आधार पर न्याय पाएगे, जो उनको उपलब्ध है (१ . १८–२१)। कोई भी मनुष्य परमेश्वर के न्याय मे नही बच सकेगा, औ किसी प्रकार का बहाना नही बना सकेगा कि उसने अमुक-अमुक कारण से सच्चे परमेश्वर की आराधना नही की।

प्रेरित पौलुस यह स्पष्ट कहते है कि जो मनुष्य यीशु को अपना उद्धारकर्ता नही मानता, *वह परमेश्वर के सम्मुख न्याय के लिए खडा होगा, और* दण्डनीय ठहराया जाएगा।

मनुष्य परमेश्वर के सम्मुख निर्दोष किस प्रकार ठहरता है ? प्रेरित

पौलुस ३ २१–८ ३९ मे विस्तार मे इस विषय को स्पष्ट करते है। यह पठनीय अंश है, और मसीही धर्म की विशेषता को समझने के लिए बहुत जरूरी है। अवश्य पढिए।

पत्र के तीसरे भाग (९ १–११ ३६) मे प्रेरित पौलुस उस योजना को प्रकट करते है जो परमेश्वर ने यहूदी और अयहूदी दोनो के उद्धार के लिए बनाई है। परमेश्वर के अनुग्रह (कृपा) से यहूदी और अयहूदी दोनो उद्धार पाते है। मनुष्य जाति को अपने उद्धार के लिए केवल परमेश्वर का अनुग्रह (कृपा) चाहिए, और कुछ नही।

पत्र के अन्त मे, अध्याय १२ से अन्त तक प्रेरित पौलुस मसीही जीवन के व्यावहारिक पहलू पर प्रकाश डालते है।

अभिवादन

मसीह यीशु के सेवक पौलुस की ओर से रोम नगर मे रहनेवाले तुम सबके नाम तुम परमेश्वर के प्रिय हो और उसके निज लोग बनने के लिए बुलाए गए हो।

तुम्हे हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह से अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

मै प्रेरित होने के लिए बुलाया गया और परमेश्वर के उस शुभ-सन्देश के लिए अलग किया गया जिसकी प्रतिज्ञा उसने पहले से ही अपने नबियो द्वारा पवित्र धर्मशास्त्र मे अपने पुत्र एव हमारे प्रभु यीशु मसीह के सम्बन्ध मे की थी।

यीशु शरीर की दृष्टि से दाऊद के वश मे उत्पन्न हुए, पर पवित्र आत्मा की दृष्टि से और मृतको मे से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर के पुत्र प्रमाणित हुए। उनके द्वारा हमे अनुग्रह और प्रेरित-पद मिला कि हम उनके नाम के लिए सब जातियो को विश्वास के अनुगामी बनाए जिनमे तुम भी हो, क्योकि तुम यीशु मसीह के निज लोग बनने के लिए बुलाए गए हो।

रोम नगर आने की हार्दिक इच्छा

पहले, मै यीशु मसीह द्वारा तुम सबके लिए अपने परमेश्वर को धन्यवाद देता हू, क्योकि तुम्हारे विश्वास की कीर्ति समस्त ससार मे फैल रही है। जिस परमेश्वर की आत्मिक आराधना मै उसके पुत्र के शुभ-सन्देश सुनाने के द्वारा करता हू, वह मेरा साक्षी है कि मै तुम्हे निरन्तर अपनी प्रार्थनाओ मे स्मरण करता हू, और सदा विनती करता हू कि परमेश्वर की इच्छा से यदि सम्भव हो तो मै किसी प्रकार शीघ्र तुम्हारे पास आने मे सफल हो जाऊ।

मै तुमसे मिलने के लिए उत्कण्ठित हू ताकि तुम्हे विश्वास मे सुदृढ करने के लिए आध्यात्मिक वरदान दे सकू। जब मै तुम्हारे बीच मे होऊ तब मै तुम्हारे विश्वास से प्रोत्साहन प्राप्त करू और तुम मेरे विश्वास से।

भाइयो, मै नही चाहता कि तुम इससे अनजान रहो कि मैने बार-बार तुम्हारे पास आने की योजना बनाई थी कि मै तुम्हारे बीच भी कुछ फल प्राप्त कर सकू जैसे अन्य जातियो मे मैने प्राप्त किया था। परन्तु अब तक मेरी योजना मे विघ्न पडते रहे है।

मै यूनानियो और गैरयूनानियो का, तथा ज्ञानियो और अज्ञानियो का ऋणी हू। इसलिए मुझे उत्सुकता है कि तुम रोम-निवासियो को भी प्रभु यीशु मसीह का शुभ-सन्देश सुनाऊ।

शुभ-सन्देश की शक्ति

शुभ-सन्देश सुनाने मे मै लज्जित नही होता, यह परमेश्वर की सामर्थ्य है और प्रत्येक विश्वासी के उद्धार के लिए है—पहले यहूदी, और फिर यूनानी के लिए। इस शुभ-सन्देश

अनुसार फल देगा। जो लोग धीरतापूर्वक सत्कर्म करते हुए महिमा, आदर और अमरत्व की खोज में हैं, उनको वह शाश्वत जीवन प्रदान करेगा, परन्तु जो दलबन्दी करते और सत्य को न मानकर अधर्म पर चलते हैं, उनपर परमेश्वर का क्रोध भड़केगा।

प्रत्येक व्यक्ति पर जो दुष्कर्म करता है—पहिले यहूदी पर और फिर यूनानी पर—कष्ट और संकट पड़ेंगे, किन्तु प्रत्येक व्यक्ति को जो सत्कर्म करता है—पहिले यहूदी को और फिर यूनानी को—महिमा, प्रतिष्ठा और शान्ति प्राप्त होगी। क्योंकि परमेश्वर मुँहदेखा न्याय नहीं करता।

जो मूसा की व्यवस्था से अनजान थे और जिन्होंने उस दशा में पाप किया है, उनका उस दशा में नाश होगा, और जिन्होंने व्यवस्था के अधीन होकर पाप किया है, उन्हें व्यवस्था के अनुसार दण्ड मिलेगा। क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में व्यवस्था के सुननेवाले धार्मिक नहीं, वरन् व्यवस्था पर आचरण करनेवाले परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिक ठहरेंगे। जब विजातियों के लोग, जिन्हें मूसा की व्यवस्था नहीं मिली, स्वभाव से ही व्यवस्था की बातों पर आचरण करते हैं तब वे व्यवस्था-विहीन होने पर भी अपने लिए स्वयं व्यवस्था बन जाते हैं। वे व्यवस्था के आदेशों को अपने हृदय पर अंकित प्रदर्शित करते हैं। उनका अन्तःकरण साक्षी देता है, तथा उनके विचार परस्पर एक-दूसरे को कभी दोषी बताते हैं, और सम्भवतः कभी निर्दोष। यह उस दिन और स्पष्ट होगा जब परमेश्वर यीशु मसीह द्वारा, मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा। यही शुभ-सन्देश मैं सुनाता हूं।

यहूदी भी दण्डनीय है

तुम यहूदी कहलाते हो। व्यवस्था पर तुम्हारा भरोसा है। परमेश्वर पर तुम्हें गर्व है। परमेश्वर की इच्छा का तुम्हें ज्ञान है। व्यवस्था में शिक्षित होने के कारण तुम उत्तम बातों को प्रिय जानते हो। तुम्हारी धारणा है कि तुम अन्धों के पथ-प्रदर्शक हो, अन्धकार में पड़े हुओं के लिए प्रकाश हो, अज्ञानियों के शिक्षक हो और बालकों के गुरु हो, क्योंकि तुम्हें व्यवस्था में ज्ञान और सत्य का स्वरूप उपलब्ध हुआ है—तो तुम जो दूसरों को शिक्षा देते हो क्या अपने को शिक्षा नहीं देते? तुम प्रचार करते हो, 'चोरी मत करो', पर क्या तुम स्वयं चोरी करते हो? तुम कहते हो, 'व्यभिचार मत करो', परन्तु क्या तुम स्वयं व्यभिचार करते हो? तुम मूर्तियों से घृणा करते हो, पर क्या तुम स्वयं मन्दिरों की लूट में साझा रखते हो? तुम जो व्यवस्था पर अभिमान करते हो, क्या तुम व्यवस्था का उल्लंघन कर परमेश्वर का अपमान करते हो? जैसाकि धर्मशास्त्र का लेख है, 'तुम्हारे कारण गैरयहूदी जातियों में परमेश्वर के नाम की निन्दा होती है।'

खतने से लाभ है—यदि तुम व्यवस्था का पालन करो। परन्तु यदि तुम व्यवस्था का उल्लंघन करो तो तुम्हारा खतना ऐसा है मानो वह खतना न हो। इसी प्रकार यदि कोई खतना-विहीन व्यक्ति व्यवस्था के आदेशों को पूरा करे, तो क्या उसकी खतना-विहीन दशा खतने के सदृश नहीं गिनी जाएगी? वह शरीर से खतना-विहीन होने पर भी व्यवस्था का पूर्ण पालन करता है। इस प्रकार वह तुम्हें, जो धर्मशास्त्र और खतने से सम्पन्न होकर भी व्यवस्था का उल्लंघन करते हो, दोषी सिद्ध करेगा। क्योंकि यहूदी वह नहीं जो बाह्य रूप से यहूदी है, और खतना वह नहीं जो बाह्य और शारीरिक है। किन्तु यहूदी वह है जिसका अन्तःकरण यहूदी है। खतना वह है जो हृदय का है। ऐसा खतना लिखित व्यवस्था पर नहीं, परन्तु पवित्र आत्मा पर निर्भर है। ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा मनुष्य नहीं वरन् स्वयं परमेश्वर करता है।

शंका-समाधान

फिर यहूदी को विशेष क्या मिला? अथवा, खतने से क्या लाभ हुआ? बहुत कुछ. प्रथम तो यह कि परमेश्वर ने यहूदियों के माध्यम से मनुष्य जाति को

दिया। यदि कुछ अविश्वासी निकले तो क्या हुआ? क्या उनका विश्वासघात यह प्रमाणित करता है कि परमेश्वर विश्वसनीय नहीं है? कदापि नहीं। चाहे प्रत्येक मनुष्य झूठा निकले किन्तु परमेश्वर सच्चा प्रमाणित होगा जैसाकि धर्मशास्त्र का लेख है,

'तेरे वचन तुझे निर्दोष ठहराते है,
जब तेरा न्याय होता है तब तू विजयी होता है।'

परन्तु यदि हमारा अधर्म परमेश्वर के धर्म को स्पष्ट करता है तो हम क्या कहे? क्या यह कि जब परमेश्वर क्रोध प्रकट करता है तो वह अन्याय करता है? (मै मानवी व्यवहार के अनुसार बोल रहा हू) कदापि नही। अन्यथा, परमेश्वर ससार का न्याय कैसे करेगा? यदि मेरे झूठ से परमेश्वर का सत्य प्रमाणित होता है, और उसकी महिमा बढ़ती है, तो मै पापी के समान दण्डनीय क्यो होता हू? फिर, हम बुराई क्यो न करे जिससे भलाई उत्पन्न हो? जैसाकि कुछ लोग हमारी निन्दा करते हुए कहते है कि हम यही सिखाते है। ऐसे लोगो को दण्ड मिलना न्यायसगत है।

मानव की पूर्ण असफलता

तो फिर क्या हुआ? क्या हम यहूदी अधिक श्रेष्ठ है? लेशमात्र भी नही। मै पहिले ही सब पर—यहूदियो और यूनानियो दोनो पर—दोष लगा चुका हू कि सब के सब पाप के अधीन है। जैसाकि धर्मशास्त्र का लेख है

'कोई मनुष्य धार्मिक नही है, एक भी नही।
कोई भी मनुष्य बुद्धिमान नही है,
कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की खोज नही करता।
सब के सब भटक गए है, सभी भ्रष्ट हो गए है।
कोई भी भलाई नही करता, एक भी नही।
उनका गला खुली कबर है, उनकी वाणी मे कपट है,
और उनके ओठो मे नाग का विष है।
उनके मुह अभिशाप और कटुता से भरे है।
उनके पैर हत्या करने के लिए दौड पडते है,
उनके मार्ग मे विनाश और क्लेश है,
और वे शान्ति के पथ से अपरिचित है।
उनकी आखो मे परमेश्वर का भय नही है।'

हम जानते है कि व्यवस्था जो कुछ कहती है, वह उन्ही से कहती है जो व्यवस्था के अधीन है, जिससे प्रत्येक का मुह बन्द हो जाए और समस्त ससार परमेश्वर के सम्मुख उत्तरदायी हो, क्योकि व्यवस्था के कर्मों से कोई भी प्राणी परमेश्वर की दृष्टि मे धार्मिक नही ठहरेगा कारण कि व्यवस्था से पाप का केवल ज्ञान होता है।

विश्वास द्वारा धार्मिकता

परन्तु अब परमेश्वर का धर्म प्रकट हुआ है, जो व्यवस्था से नितान्त पृथक है—यद्यपि व्यवस्था और नबी उसकी साक्षी देते है। परमेश्वर का यह धर्म यीशु मसीह पर विश्वास करने से प्राप्त होता है और उन सब के लिए है जो विश्वास करते है। क्योकि अब कोई भेदभाव नही रहा, सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से वचित हो गए है, परन्तु परमेश्वर के मुफ्त अनुग्रह द्वारा वे धार्मिक ठहराए गए है। यह उस विमोचन द्वारा हुआ जो मसीह यीशु मे है, जिन्हे परमेश्वर ने मनुष्य के पाप-निवारण का साधन बनाया। यह पाप निवारण यीशु की मृत्यु द्वारा सम्पन्न हुआ और यह विश्वास करने से प्राप्त होता है। इस प्रकार परमेश्वर ने अपना धर्म प्रमाणित किया; क्योकि उसने अतीत मे अपनी सहनशीलता के कारण हमारे

पूर्वजों के पापों पर ध्यान नहीं दिया। वर्तमान युग में परमेश्वर ने अपना धर्म प्रमाणित किया है कि वह स्वयं धर्मस्वरूप है तथा जो व्यक्ति यीशु पर विश्वास करता है उसको अपनी अपनी दृष्टि में धार्मिक ठहराता है।

तो फिर हमारा अहंकार कहां रहा? उसके लिए कोई स्थान नहीं। किस विधान से? कर्म के विधान से? नहीं, विश्वास के विधान से। क्योंकि हमारी मान्यता है कि मनुष्य व्यवस्था के कर्मों से नहीं, विश्वास से धार्मिक ठहरता है। क्या परमेश्वर केवल यहूदियों का ही है? क्या वह गैरयहूदियों का नहीं? हां, वह गैरयहूदियों का भी है, क्योंकि परमेश्वर एक है। वह खतनावालों को उनके विश्वास के आधार पर और खतना-विहीन को उनके विश्वास द्वारा धार्मिक ठहराएगा। तब क्या हम अपने विश्वास से व्यवस्था का लोप करते हैं? कदापि नहीं, वरन् व्यवस्था की पुष्टि करते हैं।

विश्वास के सम्बन्ध में अब्राहम का उदाहरण

तो हम अब्राहम के विषय में क्या कहें जो शरीर के नाते हमारे पूर्वज हैं? उन्हें अपने विश्वास के लिए क्या मिला? यदि अब्राहम कर्मों द्वारा धार्मिक ठहराए गए होते तो वह अहंकार कर सकते थे, किन्तु परमेश्वर के समक्ष नहीं, क्योंकि धर्मशास्त्र का यह कथन है, 'अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह विश्वास उनके लिए धार्मिकता माना गया।' काम करनेवाले मजदूर को मजदूरी देना उसपर कृपा करना नहीं, वरन् यह उसका हक माना जाता है। पर यहां जो काम नहीं करता किन्तु पापी को धार्मिक ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास धार्मिकता के रूप में गिना गया है। दाऊद ने भी उस मनुष्य को धन्य कहा है जिसे परमेश्वर कर्मों के बिना ही धार्मिक मानता है

'धन्य हैं वे जिनके अपराध क्षमा हो गए,
और जिनके पाप ढक दिए गए,
धन्य है वह मनुष्य जिसके पाप का लेखा प्रभु नहीं लेगा।'

तो क्या यह आशीष खतनावालों के लिए ही है? या खतना-विहीन के लिए भी? हमारा कहना है, 'अब्राहम के लिए उनका विश्वास ही धार्मिकता माना गया।' तो यह कैसे माना गया? खतने की दशा में या खतना-विहीन दशा में? खतने की दशा में नहीं, किन्तु खतना-विहीन दशा में। खतने का चिह्न तो उस धार्मिकता की पुष्टि है, जो उन्हें खतना-विहीन दशा में विश्वास द्वारा प्राप्त हुई। यह इसलिए कि वह उन सबके पूर्वज हो सके जो खतना-विहीन होते हुए भी विश्वास करते हैं, और इस प्रकार उनका विश्वास धार्मिकता माना जाता है। इसलिए भी कि वह उन लोगों के पूर्वज हो सके जो खतने की दशा में है, परन्तु जो खतने पर ही निर्भर नहीं वरन् विश्वास के पद-चिह्नों का अनुसरण करते हैं। इसी विश्वास-पथ पर हमारे पूर्वज अब्राहम खतना-विहीन दशा में चले थे।

विश्वास के द्वारा प्रतिज्ञा की पूर्ति

अब्राहम और उनके वंश से प्रतिज्ञा की गई थी कि वे पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे। यह प्रतिज्ञा व्यवस्था द्वारा नहीं वरन् विश्वास से मिलनेवाली धार्मिकता द्वारा की गई थी। यदि मनुष्य व्यवस्था के बल पर उत्तराधिकारी बनते हैं तो विश्वास व्यर्थ और प्रतिज्ञा निष्फल है। क्योंकि व्यवस्था का परिणाम परमेश्वर का प्रकोप है; परन्तु जहां व्यवस्था नहीं, वहां उसका उल्लंघन भी नहीं।

परमेश्वर की योजना का आधार है विश्वास, जिससे सब कुछ अनुग्रह पर निर्भर रहे और प्रतिज्ञा अब्राहम के सब वंशजों के लिए अटल हो—केवल उनके लिए ही नहीं जो व्यवस्था को मानते हैं, वरन् उनके लिए भी जो अब्राहम का-सा विश्वास रखते हैं। वह हम सबके पिता हैं, जैसाकि धर्मशास्त्र का लेख है, 'मैंने तुझे बहुत-सी जातियों का पिता नियुक्त किया।'

यह प्रतिज्ञा उस परमेश्वर के सम्मुख अटल हुई जिसपर अब्राहम ने विश्वास किया, और जो मृतकों को जीवन प्रदान करता है, तथा जिन वस्तुओं का अस्तित्व है ही नहीं, उनको अस्तित्व में लाता है।

अब्राहम ने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, जिससे इस वचन के अनुसार कि 'तेरा वंश ऐसा होगा' वह बहुत-सी कौमों के पूर्वज बने। वह जानते थे कि उनका शरीर मृत्यु के समीप पहुंच चुका है—उनकी अवस्था लगभग सौ वर्ष की थी—और सारा का गर्भाशय नितान्त शक्तिहीन है, तो भी उनका विश्वास दुर्बल नहीं हुआ। उन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञा के विषय में, अविश्वास के कारण, संदेह नहीं किया, वरन् विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की स्तुति की। उनको पूर्ण निश्चय था कि जिस बात की परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में समर्थ है। इसी कारण यह विश्वास 'उनके लिए धार्मिकता माना गया।'

और ये शब्द कि विश्वास 'उनके लिए धार्मिकता माना गया' केवल अब्राहम के लिए ही नहीं वरन् हमारे लिए भी लिखे गए। हमारे लिए भी यह 'माना जाना' निश्चित है—यदि हम उस परमेश्वर पर विश्वास करें जिसने हमारे प्रभु यीशु को मृतकों में से जीवित किया. उन्हें हमारे अपराधों के कारण मृत्यु-दण्ड दिया गया था, किन्तु हमें परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिक ठहराने के लिए वह फिर जी उठे।

विश्वास का परिणाम

विश्वास के आधार पर हम परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिक ठहराए गए हैं। अतः हमें अपने प्रभु यीशु मसीह द्वारा परमेश्वर से शान्ति प्राप्त है।* उन्हीं यीशु के द्वारा** हम इस अनुग्रह तक पहुंचे हैं, जिसमें हम स्थित हैं, तथा परमेश्वर की महिमा में भागी होने की आशा से फूले नहीं समाते। इतना ही नहीं, हम कष्टों में भी आनन्द मनाते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि कष्ट से धीरता, धीरता से सच्चरित्रता और सच्चरित्रता से आशा उत्पन्न होती है, और यह आशा हमें निराश नहीं होने देती, क्योंकि पवित्र आत्मा द्वारा, जो हमें प्राप्त है, परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदय में उण्डेला गया है।

जब हम असहाय थे तभी, निर्धारित समय पर मसीह हम अधर्मियों के लिए मरे। कदाचित् ही कभी कोई व्यक्ति किसी धर्मात्मा के लिए अपने प्राण दे—हां किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का साहस करे तो करे। परन्तु परमेश्वर ने हमारे प्रति अपना प्रेम इस प्रकार प्रमाणित किया है कि जब हम पापी ही थे तो मसीह हमारे लिए मरे।

जब हम मसीह की मृत्यु के कारण धार्मिक ठहराए गए हैं तो फिर उनके द्वारा अन्तिम न्याय के कोप से क्यों न बचेंगे? क्योंकि जब शत्रुता की अवस्था में परमेश्वर के साथ हमारा मेल-मिलाप उसके पुत्र की मृत्यु द्वारा हो गया, तो फिर मेल-मिलाप हो जाने पर उनके जीवन द्वारा हमारा उद्धार क्यों नहीं होगा? केवल इतना ही नहीं, हम अपने प्रभु यीशु मसीह द्वारा, जो हमारे मेल-मिलाप का कारण है, परमेश्वर में आनन्द-मग्न हैं।

आदम द्वारा मृत्यु, मसीह द्वारा जीवन

यह बात विचारणीय है कि एक व्यक्ति द्वारा संसार में पाप आया और पाप द्वारा मृत्यु आई। इस प्रकार मृत्यु का सब मनुष्यों में प्रसार हुआ, क्योंकि सबने पाप किया है। यह सच है कि मूसा की व्यवस्था के दिए जाने के पूर्व संसार में पाप था, परन्तु जहां व्यवस्था नहीं, वहां पाप का लेखा नहीं लिया जाता। फिर भी मृत्यु ने आदम से लेकर मूसा तक, उन लोगों पर भी शासन किया जिन्होंने आदम के सदृश्य परमेश्वर की अवज्ञा कर पाप नहीं किया था।

और आदम उसका प्रतीक है जो आनेवाला था।

*पाठान्तर 'हम शान्ति प्राप्त करें'

**कुछ प्राचीन प्रतियों के अनुसार जोड़िए 'विश्वास के कारण ही'

परन्तु परमेश्वर के वरदान की स्थिति वैसी नहीं है, जैसी अपराध की। यदि एक मनुष्य के अपराध से अनेक मरे, तो अब अनेकों के लिए, सबके लिए, परमेश्वर का अनुग्रह अधिक उमड़ पड़ा। यह एक मानव अर्थात् यीशु मसीह के अनुग्रह-पूर्ण वरदान द्वारा हुआ। कहां उस एक व्यक्ति के पाप का परिणाम और कहां परमेश्वर का यह वरदान। क्योंकि यदि एक अपराध* के कारण दण्ड की आज्ञा मिली थी तो अब अनेक अपराधों से मुक्ति का वरदान मिला है। यदि एक व्यक्ति के अपराध के कारण उसी के द्वारा, मृत्यु ने शासन किया, तो जिन्होंने परमेश्वर का प्रचुर अनुग्रह और धार्मिकता का वरदान प्राप्त किया है, वे एक ही मनुष्य, अर्थात् यीशु मसीह द्वारा, जीवन में शासन अवश्य करेंगे।

जिस प्रकार एक अपराध द्वारा सब मनुष्यों को दण्डाज्ञा मिली वैसे ही एक धर्म-कार्य द्वारा सब मनुष्यों को जीवन और मुक्ति प्राप्त हुई, क्योंकि जैसे एक मनुष्य के आज्ञा-उल्लंघन से सब मनुष्य** पापी हुए, उसी प्रकार एक मनुष्य के आज्ञा-पालन से सब मनुष्य धार्मिक बनाए जाएंगे। व्यवस्था बीच में आ गई कि अपराध में वृद्धि हो। परन्तु जहां पाप की बढ़ती हुई वहां अनुग्रह की और भी अधिक वृद्धि हुई। अतः जिस प्रकार पाप ने मृत्यु को फैलाते हुए शासन किया, उसी प्रकार परमेश्वर का अनुग्रह धार्मिकता द्वारा शासन करता है कि हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह द्वारा शाश्वत जीवन प्राप्त हो।

मसीही जीवन और पाप का परस्पर विरोध

तो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह की वृद्धि हो? कदापि नहीं। हम जो पाप के प्रति मर चुके हैं, अब कैसे उसमें जीवन बिताएंगे? क्या तुम नहीं जानते कि हम जिन्होंने मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया है, उनकी मृत्यु में बपतिस्मा लिया है? हम मृत्यु का बपतिस्मा पाने के द्वारा उनके साथ गाड़े गए हैं कि जैसे पिता की महिमा से मसीह मृतकों में से जीवित हो उठे, वैसे ही हम भी नए जीवन के पथ पर चलें। यदि मसीह के समान मरने में हमारा उनसे संयोग हुआ, तो उनके पुनरुत्थान में भी हमारा संयोग होगा। हम जानते हैं कि हमारा पुराना स्वभाव उनके साथ क्रूसित हो चुका है जिससे पापमय शरीर अशक्त हो जाए और हम आगे पाप के गुलाम न रहें। क्योंकि जो मर चुका, वह पाप से मुक्त हो गया। परन्तु यदि हम मसीह के साथ मर चुके हैं तो हमें विश्वास है कि उनके साथ उनके जीवन में भी सहभागी होंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि मसीह मृतकों में से जीवित होकर फिर कभी मरने के नहीं, उनपर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की। वह मरे तो पाप के लिए एक बार ही मरे, परन्तु वह जीवित है तो परमेश्वर के लिए जीवित है। इसी प्रकार तुम अपने आपको पाप के लिए मृतक और परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित समझो।

अतएव पाप को अपने नश्वर शरीर पर शासन मत करने दो, जिससे तुम शारीरिक वासनाओं के अधीन होने से बचो। अपने अंगों को अधर्म का साधन होने के लिए पाप को अर्पित मत करो, वरन् अपने को, मृतकों में से जीवित मनुष्यों के समान, परमेश्वर को समर्पित करो तथा अपने अंगों को धार्मिकता के साधन होने के लिए परमेश्वर को अर्पित कर दो। तब पाप को तुमपर प्रभुता नहीं होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के वश में नहीं वरन् परमेश्वर के अनुग्रह के अधीन हो।

गुलामी की प्रथा का दृष्टांत

तो क्या हुआ? क्या हम पाप करें क्योंकि हम व्यवस्था के वश नहीं वरन् परमेश्वर के अनुग्रह के अधीन हैं? कदापि नहीं! क्या तुम नहीं जानते कि जिसकी आज्ञा मानने के लिए अपने आपको गुलाम के सदृश सौंप देते हो, तुम उसी के गुलाम हो? चाहे वह पाप की अधीनता हो जिसका अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञाकारिता की जिसका फल धार्मिकता है। परन्तु परमेश्वर को धन्यवाद! तुम जो पहिले पाप के गुलाम थे अब हृदय से उस शिक्षा का, जिसके सांचे में

*अथवा एक **अथवा 'बहुत'

तुम डाल गए*, पालन करने लगे हो, और पाप से मुक्त किए जाने पर धार्मिकता के गुलाम हो गए हो। मैं तुम्हारी मानवीय दुर्बलताओं के कारण मनुष्यों की भांति ही बोल रहा हूं, कि जैसे तुमने अपने अंगों को अपवित्रता और दुराचार की गुलामी में दे दिया था, जिससे दुराचार बढ़ा, उसी प्रकार अब अपने अंगों को धर्म की गुलामी में अर्पित कर दो कि तुम पवित्र बन सको।

जब तुम पाप के गुलाम थे तब धर्म से स्वतन्त्र थे। तब तुम्हें क्या फल मिला? केवल वे बातें जिनसे अब तुम लज्जित होते हो, क्योंकि उनका परिणाम मृत्यु है। परन्तु अब तुम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर के गुलाम बन गए हो, जिसका फल है पवित्रता की प्राप्ति, और जिसका परिणाम है शाश्वत जीवन।

पाप की मजदूरी है मृत्यु, परन्तु परमेश्वर का वरदान है शाश्वत जीवन जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में है।

विवाहित जीवन का दृष्टान्त

भाइयो, मैं विधिशास्त्र के जाननेवालों से कह रहा हूं—क्या तुम नहीं जानते कि जब तक मनुष्य जीवित रहता है तभी तक उस पर विधि-नियम लागू होते हैं। उदाहरण के लिए, कानून के अनुसार विवाहिता स्त्री अपने पति के जीवन-काल में उसके बन्धन में है, परन्तु यदि उसका पति मर जाए तो वह विवाह के कानून से छूट जाती है। इसलिए यदि पति के जीवन-काल में वह किसी दूसरे के साथ रहे तो व्यभिचारिणी कहलाएगी, परन्तु यदि पति मर जाए तो वह उस विवाह-कानून से मुक्त है, और किसी दूसरे पुरुष की हो जाने पर व्यभिचारिणी नहीं।

मेरे भाइयो, इसी प्रकार तुम भी व्यवस्था के लिए, मसीह की देह द्वारा मर चुके हो ताकि दूसरे के हो जाओ, अर्थात् मसीह के जो मृतकों में से जी उठे हैं, जिससे हम परमेश्वर के लिए फलदायक हों। जब हम शारीरिक स्वभाव के अनुसार आचरण करते थे, तब पापमय वासनाएं व्यवस्था से प्रेरणा पाकर, हमारे अंगों में काम कर रही थीं कि मृत्यु के फल उत्पन्न हों। परन्तु अब हम व्यवस्था से मुक्त हो गए हैं। हम उसके प्रति मर चुके हैं जो हमें बन्धन में डाले हुए थी, जिससे ऐसी सेवा कर सकें जो प्राचीन-लिखित पद्धति पर न हो वरन् आत्मा की नवीन पद्धति के अनुसार हो।

व्यवस्था और पाप

तो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं। पर व्यवस्था के बिना मैं पाप को नहीं पहचान सकता था। यदि व्यवस्था-शास्त्र ने नहीं कहा होता 'लालच मत कर' तो मैं लालच को नहीं जानता। परन्तु आज्ञा की उपस्थिति में पाप को अवसर मिला और उसने मुझमें सब प्रकार की बुरी वासनाएं उत्पन्न कर दीं, क्योंकि व्यवस्था-शास्त्र के बिना पाप निर्जीव है। मैं स्वयं पहिले व्यवस्था-शास्त्र के बिना जीवित था, पर आज्ञा आई तो पाप जीवित हुआ। और मैं मर गया और इस प्रकार आज्ञा जो जीवन के लिए थी, वह मेरे लिए मृत्यु का कारण हुई। क्योंकि पाप ने आज्ञा की उपस्थिति में अवसर पाकर मुझे धोखा दिया और उसी के द्वारा मुझे मार डाला। निष्कर्ष यह कि व्यवस्था-शास्त्र पवित्र है, और आज्ञा भी पवित्र, धर्म-सम्मत एवं कल्याणकारी है।

मनुष्य के हृदय का अन्तर्द्वन्द्व

तो क्या जो कल्याणकारी था वही मेरे लिए घातक सिद्ध हुआ? कदापि नहीं। वरन् पाप, कल्याणकारी वस्तु द्वारा, मेरे लिए घातक सिद्ध हुआ, जिससे आज्ञा द्वारा पाप अतिशय पापपूर्ण बन जाए और प्रत्यक्ष हो जाए कि वह पाप ही है। हम जानते हैं कि व्यवस्था-शास्त्र

*अथवा जिसको सुपुर्द तुम कर दिए गए

आध्यात्मिक है, पर मैं सामाजिक हूं, पाप के हाथों बिका हुआ हूं। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या कर बैठता हूं। मैं जो चाहता हूं वह नहीं करता, परन्तु जिस बात से घृणा करता हूं वही करता हूं। अब यदि मैं वही काम करता हूं जिसे मैं नहीं चाहता तो मैं स्वीकार कर लेता हूं कि व्यवस्था उत्तम है। ऐसी दशा में कर्ता मैं नहीं रहा, वरन् वह पाप है जो मुझमें बसा हुआ है। क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझमें अर्थात् मेरे शरीर में, भलाई का निवास नहीं है। अच्छे कार्य करने की इच्छा तो मुझमें है पर मुझसे बन नहीं पड़ते। क्योंकि जिस सत्कर्म को मैं करना चाहता हूं उसे नहीं करता, पर जिस कुकर्म को करना नहीं चाहता उसीको करता हूं। फलतः यदि मैं वह काम करता हूं जिसे मैं करना नहीं चाहता तो कर्ता मैं न रहा वरन् पाप है, जो मुझमें बसा हुआ है। मैं यह नियम पाता हूं कि जब मैं किसी सत्कर्म का सकल्प करता हूं तब कुकर्म ही मुझसे बन पड़ता है। मेरी अन्तरात्मा तो परमेश्वर की व्यवस्था से प्रसन्न है, पर मुझे अपने शरीर के अंगों में दूसरी ही व्यवस्था दिखाई पड़ती है जो मेरे अन्तर्मन के नियम से संघर्ष करती और मुझे उस पाप के नियम का बन्दी बना देती है जो मेरे अंगों में है। मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं। मुझे इस मृत्यु के शरीर से कौन छुड़ाएगा? केवल परमेश्वर। वह मुझे हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा छुड़ाएगा। परमेश्वर का धन्यवाद हो!

अतः अन्तरात्मा से तो मैं परमेश्वर की व्यवस्था का गुलाम हूं, परन्तु शरीर से पाप के नियम का।

आत्मा के अनुसार आचरण

अतएव जो लोग मसीह यीशु में हैं उनके लिए अब कोई दण्ड की आज्ञा नहीं है! क्योंकि मुझे पवित्र आत्मा के जीवनदायक नियम ने, जो मसीह यीशु में है, पाप और मृत्यु के नियम से स्वतन्त्र कर दिया है। परमेश्वर ने वह काम किया जो मानव-स्वभाव की दुर्बलता के कारण व्यवस्था के लिए असाध्य था, अर्थात् उसने अपने पुत्र को हमारे पापी शरीर के रूप में पाप का बलिदान होने के लिए भेजा और शरीर में पाप को दण्डित किया, जिससे हम लोगों में, जो शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार आचरण करते हैं, व्यवस्था की उचित मांग पूरी हो जाए।

शरीर के अनुसार आचरण करनेवालों की भावनाएं शारीरिक होती हैं, परन्तु आत्मा के अनुसार आचरण करनेवालों की भावनाएं आध्यात्मिक। शारीरिक भावना का अर्थ है मृत्यु, और आध्यात्मिक भावना का अर्थ है, जीवन और शान्ति क्योंकि शारीरिक भावनाएं रखना परमेश्वर से शत्रुता करना है ये भावनाएं परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन नहीं होतीं—हो ही नहीं सकतीं। शरीर-सेवी लोग परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

परन्तु तुम तो शरीर-सेवी नहीं, आध्यात्मिक हो—यदि परमेश्वर का आत्मा सचमुच तुममें निवास करता है। क्योंकि जिस व्यक्ति में मसीह का आत्मा नहीं, वह मसीह का नहीं। यदि मसीह तुममें निवास करते हैं, तो पाप के कारण चाहे तुम्हारा शरीर मृत हो, परन्तु धार्मिक गिने जाने के कारण तुम्हारी आत्मा जीवित है। यदि उस परमेश्वर का आत्मा, जिसने यीशु को मृतकों में से जीवित कर दिया, तुममें निवास करता है, तो जिसने मसीह यीशु को मृतकों में से जीवित किया, वह अपने आत्मा द्वारा, जिसका तुममें निवास है, तुम्हारे नश्वर शरीर को भी नवजीवन प्रदान करेगा।

अतः भाइयो, हम ऋणी हैं, किन्तु शारीरिक स्वभाव के नहीं कि उसके अनुसार जीवन बिताएं। यदि तुम शरीर के अनुसार जीवन बिताते हो तो निश्चय मरोगे, परन्तु यदि पवित्र आत्मा द्वारा शारीरिक प्रवृत्तियों का दमन करते हो तो जीवन प्राप्त करोगे, क्योंकि जिनका

देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान है, और यदि सन्तान है तो उत्तराधिकारी भी—परमेश्वर के उत्तराधिकारी और मसीह के सह-उत्तराधिकारी, केवल एक शर्त है कि हम मसीह के साथ दु ख सहे, जिससे उनके साथ महिमा मे भी सहभागी हो।

निकट भविष्य मे प्रकट होनेवाली महिमा

मेरा निश्चित मत है कि जो महिमा हम पर प्रकट होनेवाली है, उसकी तुलना मे वर्तमान समय के दु ख नगण्य है। सृष्टि आतुर उत्कठा से परमेश्वर के पुत्रो के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रही है, क्योकि सृष्टि अपनी इच्छा से निस्सारता के अधीन नही हुई परन्तु परमेश्वर की इच्छा से जिसने उसे अधीन कर दिया, इस आशा से कि स्वय सृष्टि विकृति की गुलामी से मुक्त हो और परमेश्वर की सन्तान की महिमामय स्वतन्त्रता मे भाग ले। हम जानते है कि समस्त सृष्टि अब तक प्रसव वेदना के कष्ट मे कराह रही है। केवल यही नही, वरन् हम भी, जिन्हे आत्मा का प्रथम फल प्राप्त है, भीतर ही भीतर तडपते है और परमेश्वर की प्रतीक्षा करते है कि वह हमे अपने पुत्र बनाए और हमारे शरीर को पाप से छुडाए। इस आशा मे हमारा उद्धार हुआ है। यदि हम उस वस्तु को देख सकते है जिसकी हम आशा करते है, तो हम इसे आशा नही कहते। मनुष्य जिस वस्तु को देख रहा है उसकी आशा क्या करेगा? परन्तु यदि हम उस वस्तु की आशा करते है जिसे नही देखते, तो धीरतापूर्वक उसकी प्रतीक्षा करते है।

इसी प्रकार पवित्र आत्मा भी हमारी दुर्बलता मे हमारी सहायता करता है, क्योकि हम नही जानते कि हमे किस रीति से* प्रार्थना करना चाहिए, किन्तु आत्मा स्वय आहे भरकर—जो शब्दो द्वारा प्रकट नही की जा सकती है—हमारे लिए निवेदन करता है। और अन्तर्यामी परमेश्वर, जो हृदयो का पारखी है, जानता है कि आत्मा का अभिप्राय क्या है, क्योकि आत्मा परमेश्वर की इच्छानुसार भक्तो के लिए प्रार्थना करता है। हमे ज्ञात है कि जो व्यक्ति परमेश्वर से प्रेम करते है और उसके उद्देश्य के अनुरूप बुलाए गए है,** उनका कल्याण परमेश्वर प्रत्येक परिस्थिति मे करता है। क्योकि जिनको उसने पहिले से जान लिया, उनको अपने पुत्र के समरूप होने के लिए पहिले से ही निर्धारित कर दिया जिससे यीशु बहुत भाइयो मे ज्येष्ठ ठहरे, और जिनको पहिले से निर्धारित किया, उनको परमेश्वर ने बुलाया भी, और जिनको बुलाया उन्हे धार्मिक भी किया, एव जिनको धार्मिक किया उन्हे महिमान्वित भी किया।

परमेश्वर का प्रेम

तो इन बातो के विषय मे हम क्या कहे। यदि परमेश्वर हमारे पक्ष मे है, तो हमारा विरोध कौन कर सकता? परमेश्वर ने अपने पुत्र को भी नही रख छोडा, वरन् हम सबके लिए समर्पित कर दिया। तब क्या वह अपने पुत्र के साथ सब कुछ हमे नही देगा? परमेश्वर के मनोनीत लोगो पर कौन अभियोग लगाएगा? परमेश्वर हमे मुक्त कर रहा है, तो फिर कौन दण्ड की आज्ञा देगा? स्वय मसीह यीशु मरे, इतना ही नही, वह जीवित भी हो उठे और परमेश्वर की दाहिनी ओर विराजमान है। वह हमारी ओर से निवेदन करते है। कौन हमे मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है। क्या कष्ट, या सकट, या अत्याचार, या अकाल, या गरीबी, या भय, या तलवार? जैसे धर्मशास्त्र का लेख है,

'तुम्हारे लिए दिन भर हमारी हत्या होती है,
वध होनेवाली भेडो मे हमारी गणना की जाती है।'

परन्तु जिसने हमसे प्रेम किया है उसके द्वारा हम इन सब बातो मे पूर्ण विजय प्राप्त करते है। मुझे पूरा निश्चय है कि न तो मृत्यु न जीवन, न स्वर्गदूत न अपदूत, न वर्तमान न भविष्य,

*अथवा 'किस बात के लिए'

**अथवा, 'उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं'

न आकाश की शक्तियां न पाताल की, और न कोई अन्य सृष्ट वस्तु, हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकेगी जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है।

यहूदियों के लिए पौलुस की अन्तर्वेदना

मैं मसीह में सच कह रहा हूं, मैं झूठ नहीं बोलता, पवित्र आत्मा में मेरा अन्तःकरण इस बात का साक्षी है कि मुझे भारी शोक है और मेरे हृदय में निरन्तर वेदना रहती है। मैं तो यहां तक चाहता ▮ कि अपने बन्धुओं, शरीर की दृष्टि से अपने सजातियों, के लिए मैं शापग्रस्त हो जाऊं, और मसीह से अलग हो जाऊं! ये लोग इस्राएली हैं। इन्हें पुत्रत्व का अधिकार, महिमा के दर्शन, वाचा, मूसा की व्यवस्था, बलि-विधान और परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं प्राप्त हुईं। महान् पूर्वज इनमें से हैं और शरीर के नाते इन्हीं में से मसीह भी हैं—परम प्रधान परमेश्वर की युगानुयुग स्तुति हो, आमेन।*

परमेश्वर की प्रतिज्ञा विफल नहीं हुई

यह बात नहीं कि परमेश्वर की प्रतिज्ञा विफल हो गई। क्योंकि जिन्होंने इस्राएल के वंश में जन्म लिया है, वे सब के सब इस्राएली नहीं, और न सब अब्राहम के वंशज होने के कारण उनकी सन्तान हैं, वरन् धर्मशास्त्र के वचनानुसार 'इसहाक से तेरा वंश चलेगा'। तात्पर्य यह कि शरीर-जन्य सन्तान परमेश्वर की सन्तान नहीं, पर प्रतिज्ञा-जन्य सन्तान ही परमेश्वर की सन्तान गिनी जाएगी। प्रतिज्ञा के ये शब्द हैं, 'मैं निर्धारित समय पर आऊंगा, और सारा को पुत्र उत्पन्न होगा।' और इतना ही बस नहीं। रिबका एक ही पुरुष अर्थात् हमारे पूर्वज इसहाक से गर्भवती हुई। अभी बालक उत्पन्न भी नहीं हुए थे, और न उन्होंने कोई सुकर्म अथवा कुकर्म ही किया था, तो भी रिबका से कहा गया, 'ज्येष्ठ पुत्र छोटे पुत्र का गुलाम होगा।' —इसलिए कि परमेश्वर का चुनाव सम्बन्धी उद्देश्य पूरा हो, जो कर्मों पर नहीं, पर बुलानेवाले पर निर्भर है। शास्त्र का लेख भी है, 'याकूब से मैंने प्रेम किया, किन्तु एसाव को अप्रिय जाना।'

परमेश्वर अन्यायी नहीं

तो हम क्या कहें? परमेश्वर के यहां अन्याय होता है? कदापि नहीं! क्योंकि परमेश्वर ने मूसा से कहा है, 'मैं जिस पर कृपा करना चाहूंगा, उस पर कृपा करूंगा, एवं जिस पर करुणा करना चाहूंगा, उस पर करुणा।' अतः यह मनुष्य की इच्छा पर अथवा उसके दौड़-धूप करने पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की कृपा पर निर्भर है। जैसाकि फरओ** के प्रति धर्मशास्त्र का कथन है, 'तुझे खड़ा करने में मेरा अभिप्राय यह है कि तेरे द्वारा मैं अपनी सामर्थ्य प्रकट करूं जिससे समस्त संसार में मेरे नाम का प्रचार हो।' निष्कर्ष यह कि परमेश्वर जिस पर चाहे कृपा करे और जिसे चाहे हठधर्मी बना दे।

परमेश्वर सर्वशक्तिमान

तुम मुझसे प्रश्न करोगे, 'तो परमेश्वर दोष क्यों लगाता है? उसकी इच्छा का विरोध कौन कर सकता है?' अरे मनुष्य, तू है कौन जो परमेश्वर को प्रत्युत्तर दे? क्या गढ़ी हुई वस्तु अपने गढ़नेवाले से कह सकती है कि तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया? क्या मिट्टी पर कुम्हार को अधिकार नहीं कि एक ही लोंदे में से किसी पात्र को उत्तम कार्यों के लिए बनाए और किसी को साधारण कार्यों के लिए? यदि परमेश्वर ने अपना क्रोध प्रकट करने और अपनी सामर्थ्य दिखाने की इच्छा से प्रकोप के पात्रों को, जो विनष्ट होने के लिए तैयार थे, बड़े धैर्य से सहन किया तो क्या हुआ! यह उसने इसलिए किया कि अपनी महिमा का वैभव अपने कृपापात्रों पर प्रकट करे जिनको उसने महिमा के लिए पहले से ही नियुक्त किया है। वे कृपापात्र हम

*अथवा, 'जो परम प्रधान परमेश्वर हैं, उनकी युगानुयुग स्तुति हो, आमेन'

है जिनको उसने केवल यहूदियों में से ही नहीं, वरन् गैर यहूदियों में से भी बुलाया है। उसने नबी होशे की पुस्तक में कहा भी है

जो मेरे निज लोग नहीं है, उन्हें मैं अपने निज लोग कहूंगा,
जो मेरी प्रेमिका नहीं है, उसे मैं अपनी प्रेमिका कहूंगा।
क्योंकि जिस स्थान पर उनसे कहा गया
कि तुम मेरी प्रजा नहीं हो
वहीं वे जीवन्त परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।'

और इस्राएल के विषय में नबी यशायाह के वचन हैं

'इस्राएल की सन्तान की संख्या
समुद्र के रेत-कणों के सदृश असंख्य ही क्यों न हो,
तो भी उनमें से मुट्ठी भर ही बचाए जाएंगे
क्योंकि पृथ्वी पर प्रभु अपने वचन को अविलम्ब और पूर्णत: कार्यरूप में परिणत करेगा।'

नबी यशायाह यह भी कह चुके हैं,

'यदि स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु ने हमारे लिए कुछ वंशज नहीं छोड़े होते,
तो हम सदोम के सदृश उजाड़ हो गए होते,
और हमारी उपमा अमोरा से दी जाती।'

इस्राएल की विफलता का कारण

तो अब क्या कहें? यह कि गैरयहूदियों ने जो धार्मिकता के लिए प्रयत्न नहीं करते थे, ऐसी धार्मिकता प्राप्त की जो विश्वास से प्राप्त होती है। किन्तु इस्राएल व्यवस्था के माध्यम से धार्मिकता के लिए सदा प्रयत्नशील रहा। पर वह उस व्यवस्था का पालन करने में असफल हो गया। क्यों? इसलिए कि इस्राएल के प्रयत्न का आधार विश्वास नहीं, कर्म था। इस प्रकार ठेस के पत्थर से उन्हें ठेस लग ही गई। जैसाकि धर्मशास्त्र का लेख है

'देखो, मैं सियोन में ठेस का पत्थर
और ठोकर खाने की "चट्टान" रखता हूं,
परन्तु उस पर विश्वास करनेवाला निराश नहीं होगा।'

भाइयो, मेरी यह हार्दिक इच्छा है और परमेश्वर से प्रार्थना है कि यहूदियों का उद्धार हो। मैं उनके विषय में प्रमाणित करता हूं कि उनमें परमेश्वर के लिए उत्साह है पर यह उत्साह विवेकपूर्ण नहीं। वे परमेश्वर द्वारा दी जानेवाली धार्मिकता से अनजान हैं और अपनी ही धार्मिकता स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं, इसलिए परमेश्वर द्वारा दी गई धार्मिकता उन्हें मान्य नहीं।

क्योंकि मसीह में व्यवस्था का अन्त हुआ है जिससे सब विश्वासियों को धार्मिकता प्राप्त हो।

धार्मिकता का यह नया मार्ग सबके लिए है

मूसा ने लिखा है कि जो व्यक्ति व्यवस्था पर आधारित धार्मिकता का अनुसरण करता है, वह उसके द्वारा जीवन प्राप्त करेगा। पर विश्वास पर आधारित धार्मिकता का वक्तव्य यह है 'अपने मन में यह मत कह कि स्वर्गारोहण कौन करेगा' (इसका अर्थ है मसीह को नीचे लाना) अथवा, 'अधोलोक में कौन उतरेगा' (इसका अर्थ है मसीह को मृतकों में से उठाना)। परन्तु उस धार्मिकता का कथन क्या है? 'सन्देश तुम्हारे समीप है, वह तुम्हारे मुंह में, तुम्हारे हृदय में है'—अर्थात् वह विश्वास सम्बन्धी सन्देश जिसका हम प्रचार करते हैं। यदि तुम मुंह से स्वीकार करो कि 'यीशु प्रभु हैं', और हृदय में विश्वास करो कि 'परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में से जीवित किया' तो तुम्हारा उद्धार होगा, क्योंकि मनुष्य हृदय से विश्वास कर

धार्मिकता प्राप्त करता है और मुंह से स्वीकार कर उद्धार। धर्मशास्त्र का भी कथन है, 'जो कोई उन पर विश्वास करे वह लज्जित नहीं होगा।' अतः यहूदी और यूनानी में अब कोई भेद नहीं रहा, वही प्रभु सबका प्रभु है और वह अपने दुहाई देनेवालों पर उदारता से वरदानों की वर्षा करता है। क्योंकि 'जो कोई प्रभु के नाम की दुहाई देगा, उसका उद्धार होगा।'

पर लोग उसकी दुहाई कैसे देंगे जिस पर वे विश्वास नहीं करते? और उससे विश्वास कैसे करेंगे जिसके विषय में उन्होंने सुना नहीं? और सुनेंगे कैसे जब तक कोई प्रचार न करे? और लोग प्रचार कैसे करेंगे जब तक कि भेजे न जाएं? अतः धर्मशास्त्र का लेख है, 'प्रभु का शुभ-सन्देश सुनानेवालों का आगमन कैसा सुखद होता है*।' परन्तु सबको यह सन्देश सुनना मान्य नहीं हुआ क्योंकि नबी यशायाह का कथन है, 'प्रभु, हमारे सन्देश पर किसने विश्वास किया?' अतः सन्देश के सुनने से विश्वास होता है और सन्देश का सुनना मसीह के शब्दों पर निर्भर है। परन्तु मैं पूछता हूं क्या उन्होंने नहीं सुना? अवश्य ही सुना है।

'सन्देशवाहकों की वाणी समस्त पृथ्वी पर
और उनका सन्देश समस्त विश्व में पहुंच गया है।'

मैं फिर पूछता हूं, क्या इस्राएल ने इसे नहीं समझा?' पहिले तो प्रभु ने मूसा के द्वारा यह कहा,

'जो लोग राष्ट्र नहीं हैं उनके प्रति मैं तुम्हें ईर्ष्यालु बनाऊंगा।
निर्बुद्धि राष्ट्र के प्रति मैं तुम्हें क्रुद्ध करूंगा।'

फिर यशायाह ने तो साहस कर प्रभु के सम्बन्ध में यहां तक कहा है—

'जो मेरी खोज नहीं करते थे, उन्होंने मुझे पा लिया,
जो मेरा पता नहीं पूछते थे, मैं उन पर प्रकट हो गया।'

किन्तु इस्राएल के विषय में उसका कथन है 'आज्ञा न माननेवाले और विद्रोही, अपने निज लोगों की ओर प्रभु सारे दिन हाथ फैलाए रहा।'

परमेश्वर ने इस्राएल का पूर्णतः त्याग नहीं किया

मेरा प्रश्न है 'क्या परमेश्वर ने अपने निज लोग इस्राएलियों को त्याग दिया है?' मैं यह नहीं मानता! मैं स्वयं इस्राएली हूं, अब्राहम के वंश का हूं और बिन्यामिन के कुल का। परमेश्वर ने अपने निज लोगों को, जिन्हें वह पहिले से जानता है, त्याग नहीं किया। क्या तुम नहीं जानते हो कि धर्मशास्त्र एलियाह के विषय में क्या कहता है? एलियाह ने इस्राएल के विरुद्ध परमेश्वर से यह याचना की, 'प्रभु, इस्राएलियों ने तेरे नबियों की हत्या कर डाली और तेरी वेदियों को ध्वस्त कर दिया। अकेला मैं ही बचा हूं, और वे मेरे प्राण भी लेना चाहते हैं।' किन्तु परमेश्वर ने उत्तर दिया, 'मैंने अपने लिए सात हजार पुरुषों को रख छोड़ा है जिन्होंने बअल देवता की मूर्ति के आगे घुटने नहीं टेके।' ठीक उसी प्रकार वर्तमान समय में कुछ व्यक्ति शेष हैं जिनको परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से चुना है। परन्तु यदि अनुग्रह से यह हुआ है तो निर्वाचन कर्मों पर आधारित नहीं, अन्यथा अनुग्रह, अनुग्रह नहीं रह जाता।

इसका परिणाम? इस्राएल जिसकी खोज में था, वह उसे नहीं मिला, पर निर्वाचितों को वह प्राप्त हो गया। शेष लोग जड़मति हो गए, जैसाकि शास्त्र का लेख है,

'परमेश्वर ने उनके मन और इन्द्रियों को भावशून्य कर दिया,
उन्हें ऐसे नेत्र दिए, जो न देखें,
उन्हें ऐसे कान दिए, जो न सुनें,
और आज तक उनकी दशा ऐसी ही बनी हुई है।'

दाऊद भी कहता है,

'उनका भोजन उनके लिए जाल और फन्दा बन जाए,

*अथवा 'के चरण कैसे सुन्दर होते हैं'

वह उनके लिए पतन एवं दण्ड का कारण हो।
उनकी आंखों के आगे अन्धेरा छा जाए कि वे देख न सकें।
उनकी कमर को तू सदैव झुकाए रख।

मैं पूछता हूं, क्या यहूदियों को ऐसी ठोकर लगी कि उनका पूर्ण पतन हो गया? कदापि नहीं। किन्तु इनके पतन द्वारा गैर-यहूदियों का उद्धार हुआ है कि यहूदी भी उद्धार पाने के लिए ईर्ष्यालु बनें। अब यदि यहूदियों के पतन से समाज की समृद्धि हुई और इनकी क्षति में गैरयहूदियों की समृद्धि, तो फिर इनकी पूर्णता से क्या नहीं होगा।

गैरयहूदियों का उद्धार: कलम लगाने का उदाहरण

तुम गैरयहूदियों से मैं यह कहता हूं मैं तुम्हारे लिए प्रेरित हूं, अतएव तुम्हारे प्रति अपनी सेवा को विशेष महत्त्व देता हूं कि अपने सजातियों में प्रतिस्पर्धा उत्पन्न कर किसी प्रकार उनमें से कुछ का उद्धार कर सकूं। यदि उनका परित्याग समाज के मेल-मिलाप का कारण बना तो उनकी स्वीकृति पुनर्जीवन के अतिरिक्त और क्या होगी? यदि अर्पण का प्रथम पेड़ा पवित्र है तो पूरा गूंधा हुआ आटा भी पवित्र है। यदि जड़ पवित्र है तो शाखाएं भी पवित्र हैं। यदि कुछ शाखाएं काट डाली गईं और तुम जंगली जैतून उनके स्थान पर कलम लगाए गए और जैतून की जड़ तथा रस-भण्डार के सहभागी हुए तो उन शाखाओं के सम्मुख गर्व मत करना, और यदि तुम्हें गर्व हो तो स्मरण रखना कि तुम जड़ पर आश्रित हो न कि जड़ तुम पर।

तुम कहोगे, 'शाखाएं काटी गईं कि मैं कलम बन सकूं।' यह ठीक है, पर वे अविश्वास के कारण काटी गईं, किन्तु तुम विश्वास के कारण वृक्ष के अंग हो। अतएव अहंकार मत करो, वरन् परमेश्वर का भय मानो, क्योंकि यदि परमेश्वर ने प्राकृतिक शाखाओं को नहीं छोड़ा तो वह तुम्हें भी नहीं छोड़ेगा। परमेश्वर की कृपा और कठोरता दोनों पर ध्यान दो—विश्वास से गिरे हुए व्यक्तियों पर उसकी कठोरता है तथा तुम पर उसकी कृपा। शर्त यह है कि तुम उसकी कृपा के पात्र बने रहो, अन्यथा तुम भी काट डाले जाओगे। इसी प्रकार, यदि वे अविश्वास में अड़े नहीं रहेंगे, तो वे भी कलम लगाए जाएंगे। परमेश्वर सामर्थ्यवान् है और वह उन्हें फिर लगा सकता है। क्योंकि यदि तुम जंगली जैतून से काटकर उपवन के जैतून में प्रकृति के विरुद्ध कलम लगाए गए, तो फिर वे प्राकृतिक शाखाएं अपने ही वृक्ष में कितनी सरलता से लगाई जा सकेंगी।

परमेश्वर का चरम उद्देश्य: सब पर करुणा करना

भाइयो, कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने को बहुत बुद्धिमान समझ बैठो। अतएव मैं नहीं चाहता कि तुम इस रहस्य से अपरिचित रहो, कि जब तक गैरयहूदियों का सम्पूर्ण प्रवेश न हो जाए तभी तक इस्राएल का एक भाग जड़मति रहेगा। और इस प्रकार समस्त इस्राएल का उद्धार होगा। जैसाकि धर्मशास्त्र का लेख है,

'सियोन से मुक्तिदाता का आगमन होगा,
वह याकूब के वंश से अधार्मिक भाव दूर करेगा।
जब मैं उनके पापों को दूर करूंगा
तो उनके साथ मेरी यही वाचा होगी।'

प्रभु के शुभ-सन्देश की दृष्टि से तुम्हारे लिए वे यहूदी परमेश्वर के शत्रु हैं। परन्तु निर्वाचन की दृष्टि से, पूर्वजों के कारण वे परमेश्वर के प्रिय लोग हैं, क्योंकि परमेश्वर के वरदान एवं आह्वान सदा अटल हैं। तुम कभी परमेश्वर की अवज्ञा करते थे परन्तु उन यहूदियों की अवज्ञा के कारण अब तुमने दया प्राप्त की है। अब जब तुमने दया प्राप्त की, वे अवज्ञा करते हैं कि स्वयं दया प्राप्त करें। परमेश्वर ने सबको अवज्ञा के बन्धन में बांध लिया है कि वह सब पर दया करे।

अहा, कैसा अथाह है परमेश्वर का वैभव, बुद्धि और ज्ञान! कैसे गहन है उसके निर्णय! कैसे अगम है उसके मार्ग! क्योंकि

'प्रभु का मन किसने जाना है?
अथवा किसने उसको परामर्श दिया है?
किसने उसको कुछ दिया है
कि उससे अधिकारपूर्वक मांगे?'

सब कुछ परमेश्वर से, परमेश्वर के द्वारा तथा परमेश्वर के लिए है। उसकी स्तुति युगानुयुग हो। आमेन।

मसीह में नया जीवन

अतएव भाइयो, मैं तुम्हें परमेश्वर की करुणा के कारण स्मृति दिलाता हू, और तुमसे अनुरोध करता हू कि अपने शरीर को जीवित, पवित्र और रुचिकर बलि के रूप मे परमेश्वर को अर्पित करो, यही तुम्हारी आत्मिक आराधना है। इस संसार* के अनुरूप आचरण मत करो, किन्तु मन के नवीन होने से तुममे पूर्ण परिवर्तन हो जाए जिससे तुम परमेश्वर की इच्छा का अनुभव कर सको कि उसकी दृष्टि मे उत्तम, रुचिकर और पूर्ण क्या है।**

आध्यात्मिक वरदानों का उचित उपयोग

मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझे प्राप्त हुआ है, तुम सबसे कहता हू कि तुममे से कोई अपने आपको जितना उचित है, उससे अधिक न समझे, परन्तु विश्वास की मात्रा के अनुसार, जैसा कुछ परमेश्वर ने दिया है उसी के अनुसार अपना सतुलित मूल्याकन करे। क्योंकि जिस प्रकार एक शरीर मे अनेक अग है, और इन सब अगो का कार्य एक-सा नही है, उसी प्रकार हम अनेक होते हुए भी, मसीह मे एक शरीर है और परस्पर एक-दूसरे के अग है। हमारे वरदान भी, हम पर किए गए अनुग्रह के अनुसार, भिन्न-भिन्न है। यदि किसी को नबूवत करने का वरदान प्राप्त है तो वह विश्वास के अनुरूप उसका ठीक-ठीक उपयोग करे, यदि सेवा का, तो सेवा करे। जो शिक्षक है वह शिक्षा देने मे सलग्न रहे, और जो उपदेशक है वह उपदेश देने मे। दाता उदारतापूर्वक दे, अधिकारी उत्साहपूर्वक नेतृत्व करे, एव जो दया करे वह सहर्ष दया करे।

मसीही जीवन के नियम

तुम्हारा प्रेम निष्कपट हो।
बुराई से घृणा करो, भलाई मे लगे रहो।
भाईचारे की भावना से प्रेरित होकर एक-दूसरे से स्नेह रखो।
आदर करने मे एक-दूसरे से बढ़ चलो।
प्रयत्न करने मे आलसी न हो।
आत्मिक उत्साह मे पूर्ण रहो।
प्रभु की सेवा करो।
आशा मे आनन्दित रहो।
विपत्ति मे धैर्य रखो।
प्रार्थना मे लवलीन रहो।
अभाव की अवस्था मे सन्तो की सहायता करो, और अतिथि-सेवा मे तत्पर रहो।
अपने सतानेवालो को आशीर्वाद दो—हा आशीर्वाद दो—अभिशाप नहीं।
जो आनन्द मे हैं उनके साथ आनन्द मनाओ और जो शोक मे है उनके साथ शोक।

*अक्षरश: 'युग'

**अथवा 'तुम परमेश्वर की उत्तम, रुचिकर और पूर्ण इच्छा का अनुभव कर सको'

परस्पर एक-सी भावना रखो।

अहंकारी मत बनो किन्तु दीन* जनों के साथ मिलजुलकर रहो।

अपने आपको बहुत बुद्धिमान मत समझो।

बुराई के बदले बुराई मत करो।

जो बातें सब मनुष्यों की दृष्टि में आदर्श हैं उन्हें अपना लक्ष्य बनाओ।

जहां तक तुम्हारा सम्बन्ध है, सबके साथ, यथासम्भव, शान्तिपूर्वक रहो।

प्रिय भाइयो, प्रतिशोध न लो, किन्तु ईश्वरीय प्रकोप को कार्य करने का अवसर दो क्योंकि धर्मशास्त्र में लिखा है, 'प्रभु कहता है प्रतिशोध लेना मेरा काम है, मैं बदला अवश्य लूंगा।'

यदि तुम्हारा शत्रु भूखा है तो उसे भोजन कराओ, और यदि प्यासा है तो उसे पानी पिलाओ, क्योंकि इस प्रकार तुम्हारे प्रेमपूर्ण व्यवहार से वह पानी-पानी हो जाएगा।**

बुराई से पराजित न हो, किन्तु भलाई से बुराई पर विजय प्राप्त करो।

अधिकारियों के प्रति अधीनता

प्रत्येक व्यक्ति शासन के अधिकारियों के अधीन रहे। कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से नहीं—और वर्तमान अधिकारियों की व्यवस्था परमेश्वर द्वारा हुई है। फलत: जो शासन का विरोध करता है, वह परमेश्वर के प्रबन्ध के प्रति विद्रोह करता है, और विद्रोहियों को परमेश्वर दण्ड देगा।

शासकवर्ग सुकर्मी के लिए नहीं, किन्तु कुकर्मी के लिए भय का कारण है। क्या तुम शासक से निर्भय रहना चाहते हो? तो सुकर्म करो और वह तुम्हारी प्रशंसा करेगा, क्योंकि वह तुम्हारी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक है। किन्तु यदि तुम कुकर्म करते हो तो डरो, क्योंकि वह व्यर्थ ही शस्त्र धारण नहीं करता। वह परमेश्वर का सेवक है और उसके प्रकोप का साधन होकर कुकर्मियों को दण्ड देता है। फलत: अनिवार्य है कि तुम केवल प्रकोप के कारण ही नहीं, वरन् अन्तरात्मा के कारण भी शासन के अधीन रहो।

तुम राज्य-कर इसलिए देते हो कि अधिकारी परमेश्वर के सेवक हैं और इस सेवा में तत्पर हैं। जिसका जो हक है वह उसे दो। जिसे कर देना चाहिए उसे कर दो।

जिसे चुंगी देना चाहिए उसे चुंगी दो, जिससे भय मानना चाहिए उससे भय मानो। जिसका सम्मान करना चाहिए उसका सम्मान करो।

पारस्परिक प्रेम

पारस्परिक प्रेम को छोड़कर अन्य किसी विषय में एक-दूसरे के ऋणी मत बनो; क्योंकि जो पड़ोसी से प्रेम करता है, उसने व्यवस्था का पूर्णरूप से पालन किया है। कारण, 'परस्त्रीगमन मत कर, हत्या मत कर, चोरी मत कर, लालच मत कर', और इनके अतिरिक्त यदि कोई और आज्ञा हो तो उसका भी सारांश इस वाक्य में पाया जाता है कि 'अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर।' प्रेम, पड़ोसी की हानि नहीं करता, इसलिए व्यवस्था की पूर्ति है—प्रेम।

यीशु के पुनरागमन का दिवस

समय को पहचानो और इन सब बातों पर ध्यान दो। तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने का समय आ पहुंचा है। जब हमने विश्वास किया था, उस समय की अपेक्षा अब हमारा उद्धार अधिक समीप है। रात बीत चुकी है और दिन निकलने को है। इसलिए हमें चाहिए कि अन्धकार के कुमार्गों को त्यागकर ज्योति के शस्त्र धारण करें। [illegible]। आचरण करें जो

*अथवा, 'तुच्छ समझे जानेवाले कर्तव्यों को मन लगाकर पूरा करो'

**अथवा, 'तुम [illegible]

दिन मे शोभनीय होता है, न कि रग-रग, मदिरा-सेवन, लम्पटता और निर्लज्जता, ईर्ष्या और लड़ाई-झगडे मे फस जाए। प्रभु यीशु मसीह को धारण करो और शारीरिक वासनाओ की तृप्ति का ध्यान छोड दो।

दुर्बल विश्वासी भाइयो के प्रति उदार बनो

जो मनुष्य विश्वास मे दुर्बल है, तुम उसे अपना लो, किन्तु उसकी विचारधारा के कारण उससे विवाद मत करो। किसी का विश्वास है कि सब प्रकार का भोजन धर्म की दृष्टि से उचित है। दूसरा भाई विश्वास मे दुर्बल है और शाकपात ही खाता है। खानेवाला, न-खानेवाले को तुच्छ न जाने, और न-खानेवाला, खानेवाले पर दोष न लगाए, क्योकि परमेश्वर ने उसे अपना लिया है।

दूसरे के सेवक पर दोष लगानेवाला तू कौन है? उसकी स्थिरता और पतन, उसका स्वामी जाने। और वह अवश्य स्थिर रहेगा, क्योकि उसको स्थिर रखने की सामर्थ्य उसके प्रभु मे है।

कोई व्यक्ति तो एक दिन को दूसरे दिन से बढ़कर मानता है, और दूसरा व्यक्ति सब दिनो को एक समान समझता है। ऐसे विषयो पर प्रत्येक की अपनी धारणा होनी चाहिए। जो व्यक्ति किसी दिन को विशेष रूप से मानता है वह उसे प्रभु के लिए मानता है। इसी प्रकार जो मनुष्य सब कुछ खाता है वह प्रभु के लिए खाता है, क्योकि वह परमेश्वर को धन्यवाद देता है। जो नही खाता वह भी प्रभु के लिए नही खाता एव परमेश्वर को धन्यवाद देता है।

हममे से न तो कोई अपने लिए जीता है और न अपने लिए मरता है। यदि हम जीवित है तो प्रभु के लिए और यदि मरते है तो प्रभु के लिए। अत हम जिए या मरे, प्रभु के ही है। मसीह इसलिए मरे और जीवित हुए कि मृतक के और जीवित दोनो के प्रभु हो सके।

तो तू अपने भाई पर दोष क्यो लगाता है? अथवा अपने भाई को तुच्छ क्यो समझता है? हम सब को परमेश्वर के न्याय-आसन के सम्मुख खड़ा होना है, क्योकि धर्मशास्त्र का लेख है,

'प्रभु का वचन है "मै दृढ़तापूर्वक कहता हू
कि प्रत्येक मनुष्य मुझे अपना प्रभु मानेगा,
प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर को स्वीकार करेगा।"'

अत हममे से प्रत्येक मनुष्य अपना-अपना लेखा परमेश्वर को देगा।

अपने भाई के पतन का कारण मत बनो

है तो वह उसके लिए अशुद्ध है। यदि तुम्हारे भोजन के कारण तुम्हारे भाई को क्षोभ होता है तो तुम प्रेम-मार्ग पर नही चल रहे। जिस भाई के लिए मसीह ने प्राण दिए उसका भोजन से विनाश मत करो। तुम्हारी दृष्टि मे जो भला है उसका ऐसा उपयोग मत करो कि तुम्हारे सम्बन्ध मे बुरी चर्चा फैले, क्योकि परमेश्वर का राज्य खाने-पीने मे नही, किन्तु धार्मिकता, शान्ति और आनन्द मे है जो पवित्र आत्मा से प्राप्त होता है। जो मनुष्य इस प्रकार मसीह की सेवा करता है वह परमेश्वर को प्रसन्न करता है और मनुष्यो को खरा जचता है।

हम ऐसे कार्यो मे लगे रहे जिनसे शान्ति मिलती और एक-दूसरे के जीवन का निर्माण होता है। भोजन के लिए परमेश्वर की रचना को नष्ट मत करो। वस्तुत सब कुछ शुद्ध है, किन्तु भोजन द्वारा दूसरे के मार्ग मे रोडे अटकाना बुरा है। उत्तम तो यह है कि मास-मदिरा का सेवन न किया जाए और न अन्य कोई ऐसा कार्य किया जाए जिससे तुम्हारा भाई पथ-

भ्रष्ट हो। यदि तुम्हारी कोई निश्चित धारणा है तो उसे अपने तक और परमेश्वर तक सीमित रखो. धन्य है वह जो अपनी इस धारणा की कसौटी पर अपने को खरा पाता है। परन्तु यदि कोई संशय करके कुछ खाता है तो दोष का भागी होता है, क्योंकि उसका कार्य विश्वास-जन्य नहीं और जो कार्य विश्वास-जन्य नहीं, वह पाप है।

दूसरो को सुखी बनाओ

हम जो विश्वास में शक्तिशाली है, हमें चाहिए कि विश्वास में कमजोर मनुष्य की दुर्बलताओं के प्रति सहनशील रहें और केवल अपने ही सुख का ध्यान न रखें। हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने पड़ोसी के कल्याण एवं जीवन-निर्माण के लिए उसके सुख का ध्यान रखे। क्योंकि मसीह ने अपने सुख का ध्यान नहीं रखा, जैसा धर्मशास्त्र का लेख है, 'तेरे निन्दकों से निन्दा ही मुझे मिली।' पूर्व काल में जो कुछ लिखा गया, हमारी शिक्षा के लिए लिखा गया जिससे धैर्य द्वारा एवं धर्मशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा हम आशावान् हो। धैर्य एवं प्रोत्साहन प्रदान करनेवाला परमेश्वर तुम्हें ऐसा वर दे कि मसीह यीशु के सदृश तुम परस्पर एकचित्त रहो, और मिलकर एक स्वर से प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की स्तुति करते रहो।

सबके लिए शुभ-सन्देश

जैसे मसीह ने परमेश्वर की महिमा के लिए तुम्हें अपनाया वैसे ही तुम भी एक-दूसरे को अपनाओ। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि मसीह परमेश्वर की विश्वस्तता प्रमाणित करने के लिए यहूदियों के सेवक बने जिससे पूर्वजों से की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करे, और गैरयहूदी भी दया प्राप्त कर परमेश्वर की स्तुति करें। जैसाकि धर्मशास्त्र का लेख है,

'इस कारण मैं गैरयहूदियों में तेरी स्तुति करूंगा,
और तेरे नाम के गीत गाऊंगा।'

धर्मशास्त्र फिर कहता है,

'ओ गैरयहूदी लोगो, परमेश्वर के निज लोगों के साथ आनन्द मनाओ।'

धर्मशास्त्र यह भी कहता है,

'ओ विश्व की जातियो, प्रभु की स्तुति करो,
समस्त राष्ट्र उसकी प्रशंसा करें।'

नबी यशायाह का कथन है,

'यिशय का मूल प्रकट होगा,
गैरयहूदियों पर शासन करने के लिए उसका उत्थान होगा,
विश्व की जातियां उसपर आशा रखेंगी।'

परमेश्वर, जो आशा का स्रोत है, तुमको तुम्हारे विश्वास के कारण सम्पूर्ण आनन्द तथा शान्ति से परिपूर्ण करे जिससे तुम्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ्य द्वारा भरपूर आशा प्राप्त हो।

अधिकारपूर्वक लिखने का कारण

मेरे भाइयो, मुझे तुम्हारे विषय में निश्चय है कि तुम भलाई से परिपूर्ण हो। तुम समस्त ज्ञान के भण्डार हो, और एक-दूसरे को परामर्श देने में समर्थ हो। फिर भी मैंने तुम्हारी स्मृति के लिए कुछ विषयों पर लिखने का साहस किया है। परमेश्वर से मुझे यह अनुग्रह मिला कि मैं गैरयहूदियों के बीच मसीह यीशु का सेवक बनूं, और परमेश्वर के शुभ-सन्देश की सेवा पुरोहित के रूप में करूं, जिससे गैरयहूदी पवित्र आत्मा से पवित्र होकर परमेश्वर को अर्पित हों और उसको स्वीकार हों।

मैंने जो कार्य परमेश्वर के लिए किए हैं उनपर मुझे यीशु में गर्व है। मैं किसी अन्य विषय पर बोलने का साहस नहीं करूंगा, केवल यही बताऊंगा कि वचन और कर्म द्वारा, चिह्नों और

चमत्कारों द्वारा, तथा पवित्र आत्मा की सामर्थ्य द्वारा मसीह ने मुझे माध्यम बनाकर गैर-यहूदियों को अपना आज्ञाकारी बनाया। फलतः मैंने यरूशलम से आरम्भ कर इल्लुरिकुम तक चारों ओर मसीह के शुभ-सन्देश का पूरा-पूरा प्रचार कर दिया है। मैंने इसमें गौरव माना है कि जहां मसीह का नाम अज्ञात है वहीं शुभ-सन्देश का प्रचार करूं। कहीं ऐसा न हो कि मैं दूसरे की नींव पर घर उठाऊं, वरन् जैसा धर्मशास्त्र का लेख है

'जिनको उसके बारे में कभी नहीं बताया गया, वे उसको देखेंगे,
और जिन्होंने उसके विषय में नहीं सुना, वे समझेंगे।'

यात्रा की रूपरेखा

यही कारण है कि मुझे अनेक बार तुम्हारे यहां आने से रुकना पड़ा। परन्तु अब इस भूभाग में मेरे लिए कोई नया कार्य-क्षेत्र नहीं रहा। बहुत वर्षों से मुझे उत्कण्ठा रही है कि मैं स्पेन देश जाते समय तुम्हारे पास होता आऊं। इसलिए मुझे आशा है कि इस यात्रा में तुम्हारे दर्शन होंगे। मैं पहले तुम्हारी संगति का आनन्द उठाऊंगा। उसके पश्चात् तुम मुझे कुछ दूर पहुंचाकर विदा कर देना।

अभी तो मैं सन्तों की सेवा के लिए यरूशलम जा रहा हूं, क्योंकि मकिदुनिया और यूनान के लोगों ने शुभ-संकल्प किया है कि यरूशलम के निर्धन सन्तों के लिए कुछ आर्थिक सहायता भेजें। उनका यह संकल्प उत्तम है, और सच तो यह है कि वे यरूशलम के सन्तों के ऋणी भी हैं, क्योंकि यदि गैरयहूदी जातियां आध्यात्मिक सम्पत्ति में उनकी साझीदार हुई तो यह उचित ही है कि वे लौकिक सम्पत्ति द्वारा उनकी सेवा करें।

कार्य समाप्त करने पर अर्थात् यह दान* यरूशलम के सन्तों को सौंपने के पश्चात् मैं तुम्हारे पास होता हुआ स्पेन जाऊंगा। मुझे निश्चय है कि जब मैं तुम्हारे पास आऊंगा तब मसीह की पूर्ण आशीषों के साथ आऊंगा।

भाइयो, हमारे प्रभु येशु मसीह द्वारा और पवित्र आत्मा के प्रेम द्वारा, मेरा तुमसे अनुरोध है कि मेरे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ संघर्ष करो जिससे मैं यहूदा प्रदेश में रहनेवाले अविश्वासियों से निरापद रहूं, यरूशलम के लिए मेरी सेवा सन्तों को स्वीकार हो और परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे यहां आनन्द पहुंचकर कुछ दिन तुम्हारी संगति में विश्राम प्राप्त करूं। शान्तिदाता परमेश्वर तुम सबके साथ हो। आमेन।

अभिवादन

किंख्रिया नगर की कलीसिया की सेविका—हमारी बहिन फीबे—के लिए मेरा निवेदन है कि, जैसा सन्तों के लिए शोभनीय है, तुम प्रभु में उसका स्वागत करो, और यदि किसी कार्य में उसे तुम्हारी आवश्यकता हो तो उसकी सहायता करो, क्योंकि उसने बहुत लोगों की तथा मेरी भी सहायता की है।

मसीह येशु में मेरे सहकर्मी प्रिस्का और अक्विला को नमस्कार, जिन्होंने मेरी प्राण-रक्षा के लिए स्वयं अपना जीवन संकट में डाल दिया। मैं ही नहीं वरन् गैरयहूदियों की समस्त कलीसियाएं उनकी अनुगृहीत हैं। उनके घर में एकत्र होनेवाली कलीसिया को भी नमस्कार।

मेरे प्रिय इपैनितुस को, जो मसीह के लिए आसिया का प्रथम फल है, नमस्कार। मरियम को जिसने तुम्हारे लिए बहुत परिश्रम किया है, नमस्कार।

अन्द्रनीकुस और यूनियास को नमस्कार, जो मेरे जाति-भाई हैं, मेरे साथ कारागार में रह चुके हैं, और प्रेरितों में उल्लेखनीय हैं। ये मुझसे भी पहिले मसीह की शरण में आए।

प्रभु में मेरे प्रिय अम्पलियातुस को नमस्कार।

मसीह में हमारे सहकर्मी उरबानुस को, तथा मेरे प्रिय इस्तखुस को नमस्कार।

*अक्षरशः 'फलों को मुहांकित करके'

मसीह मे सुपरीक्षित अपिल्लोस को नमस्कार।
अरिस्तुबुलुस के परिवार को नमस्कार।
मेरे जाति-भाई हेरोदियोन को नमस्कार।
नरकिसुस के परिवार के सदस्यो को, जो प्रभु मे है, नमस्कार।
प्रभु मे श्रम करनेवाली बहन त्रूफेना और त्रूफोसा को नमस्कार।
प्रिय बहन पिरसिस को, जिसने प्रभु मे बहुत श्रम किया है, नमस्कार।
प्रभु के कर्मठ अनुयायी रूफुस तथा उसकी माता को, जो मेरी भी माता है, नमस्कार।
असुंक्रितुस, फिलगोन, हिर्मेस, पत्रुबास, हिमास एव उनके साथ के भाइयो को नमस्कार।
फिलुलुगुस, यूलिया, नेर्युस एव उसकी बहिन, और उलुम्पास तथा उनके साथी समस्त सन्तो को नमस्कार।

पवित्र चुम्बन द्वारा परस्पर नमस्कार करना।

मसीह की समस्त कलीसियाओ की ओर से तुम्हे नमस्कार।

भाइयो, मेरा तुमसे अनुरोध है कि जो शिक्षा तुमने पाई है, उसके विरुद्ध मतभेद पैदा करनेवालो तथा विश्वासियो को पथभ्रष्ट करनेवालो से सावधान रहना, और उनके निकट न जाना, क्योकि वे हमारे प्रभु मसीह की सेवा नही वरन् अपनी पेट-पूजा करते है और अपनी चिकनी-चुपडी बातो से सरल हृदय लोगो को भुलावे मे डालते है।

तुम्हारे आज्ञा-पालन की चर्चा सब लोगो मे फैल चुकी है। इससे मुझे प्रसन्नता है। फिर भी मेरी इच्छा है कि तुम सुकर्म करने मे दक्ष बनो और कुकर्मो से अलग रहो। शान्तिदाता परमेश्वर शीघ्र ही शैतान को तुम्हारे पैरो-तले कुचल देगा। हमारे प्रभु यीशु का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।

मेरे सहकर्मी तिमुथियुस, और मेरे जाति भाई लूकियुस, यासोन, और सोसिपत्रुस का तुमको नमस्कार।

मेरे और समस्त कलीसिया का आतिथ्य करनेवाले, गयुस का तुम लोगो को नमस्कार।
नगर-कोषाध्यक्ष इरास्तुस और भाई क्वार्तुस का भी तुम्हे नमस्कार।
इस पत्र को लिपिबद्ध करनेवाले, मुझ तिरतियुस का, आप लोगो को प्रभु मे नमस्कार।
(हमारे प्रभु यीशु का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।) *

परमेश्वर की स्तुति

अब उस परमेश्वर की स्तुति करो जो तुमको यीशु मसीह के शुभ-सन्देश के अनुसार, जिसको मैंने तुम्हे सुनाया है, सुदृढ रखने मे समर्थ है।

यह शुभ-सन्देश उस रहस्य का उद्घाटन है जो युगो से छिपा हुआ था, परन्तु अब प्रकाशित हो गया है। यह नबियो के ग्रन्थो द्वारा शाश्वत परमेश्वर के आदेशानुसार, सब जातियो मे प्रकट किया गया है, जिससे कि वे विश्वास की अधीनता स्वीकार करे—उसी अद्वैत ज्ञानस्वरूप परमेश्वर की यीशु मसीह द्वारा युगानुयुग स्तुति हो। आमेन।

१ अध्याय पहला पढिए और बताइए क्या आप विश्वास करते है कि जो मनुष्य प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता नही मानता, वह परमेश्वर की दृष्टि मे दण्डनीय है?
२. परमेश्वर की दृष्टि मे धार्मिक ठहरने के लिए प्रेरित पौलुस क्या आवश्यक मानते है। प्रेरित पौलुस की शिक्षा को बताइए।
३ अन्तिम अध्याय मे प्रेरित पौलुस ने मसीही जीवन के व्यावहारिक पक्ष पर लिखा है। ये बाते हमारे देश मे किस प्रकार महत्वपूर्ण है?

*कुछ प्राचीन प्रतियो मे यह पद नही पाया जाता।

७. एक गुलाम के सम्बन्ध मे प्रेरित पौलुस का पत्र

(फिलेमोन)

प्रेरित पौलुस के नाम लिये गए सब पत्रो मे प्रस्तुत पत्र विस्तार की दृष्टि से सबसे छोटा है। प्रेरित पौलुस ने यह पत्र कारागार मे लिखा था। उन दिनो वह प्रभु यीशु के शुभ-सन्देश के कारण बन्दी थे।

प्रेरित पौलुस ने यह पत्र एक गुलाम के सम्बन्ध मे लिखा था। वह गुलाम अपने स्वामी-मालिक के घर से भाग गया था, और रोम चला गया था। उसने प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार कर लिया।

प्रेरित पौलुस ने पत्र मे लिखा कि मालिक अपने भूतपूर्व गुलाम को स्वीकार करे, न केवल इसलिए कि वह उस का गुलाम था, वरन् इस लिए कि वह अब मसीह यीशु मे उस का भाई है।

अभिवादन

पौलुस जो मसीह यीशु के लिए बन्दी है और भाई तिमुथियुस की ओर से,

हमारे प्रिय सहकर्मी फिलेमोन, बहिन अफफिया और साथी सैनिक अरखिप्पुस एव तुम्हारे घर मे एकत्र होनेवाली कलीसिया के नाम पत्र

तुम्हे हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह से अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

फिलेमोन का प्रेम

जब मै अपनी प्रार्थनाओ मे तुम्हे स्मरण करता हू तो सदैव अपने परमेश्वर को धन्यवाद देता हू, क्योकि मै निरन्तर उस प्रेम और विश्वास की चर्चा सुनता हू जो तुम्हारे हृदय मे प्रभु यीशु और समस्त सन्तो के प्रति है। मेरी प्रार्थना है कि विश्वास मे तुम्हारे सहभागी होने का ऐसा प्रभाव हो कि हम इस कल्याण को और अधिक समझ सके, जो मसीह मे हमारा है। भाई, तुमने सन्तो के हृदय को तृप्त किया है, इस कारण मै तुम्हारी प्रेम-भावना से अत्यन्त आनन्दित और उत्साहित हू।

भागे हुए दास के लिए निवेदन

[illegible]

जन्म दिया है।

पहिले यह तुम्हारे लिए अनुपयोगी था, परन्तु अब तुम्हारे और मेरे दोनो के लिए 'उपयोगी'* बन गया है। मै इसे तुम्हारे पास लौटा रहा हू—इसे, जो मेरे कलेजे का टुकडा है। इच्छा तो थी कि इसे अपने ही पास रख लू कि तुम्हारी ओर से यह इस कारावास मे, जो मसीह यीशु का सन्देश सुनाने के लिए है, मेरी सेवा करे, पर तुम्हारी सम्मति के बिना मैने कुछ नही करना चाहा, जिससे तुम्हारा शुभकार्य दबाव से नही वरन् स्वेच्छा से हो। क्या जाने वह कुछ दिन के लिए तुमसे इसी कारण बिछुड गया था कि पुन सदा के लिए तुम्हे प्राप्त हो जाए—दास के रूप मे नही वरन् दास से भी उत्तम, प्रिय भाई के रूप मे। यह मुझे

[illegible] तो वह

*'उनेसिमुस' नाम का अर्थ है, 'उपयोगी'

मेरे नाम लिख लेना। मैं पौलुस अपने हाथ से लिख रहा हू कि मैं वह ऋण चुका दूगा—यहा यह कहने की आवश्यकता नही कि तुम्हारा सम्पूर्ण जीवन मेरा ऋणी है। भाई, प्रभु मे मुझे तुमसे कुछ लाभ तो हो! मसीह मे मेरे हृदय को तृप्त कर दो।

अन्तिम अभिवादन

मुझे निश्चय है कि तुम मेरी बात मानोगे, इसी कारण मैंने तुम्हे यह लिखा है। मै जानता हू कि जो कुछ मै कह रहा हू उससे अधिक तुम करोगे। एक बात और मेरे ठहरने के लिए एक कमरा तैयार रखना, क्योंकि मुझे आशा है कि तुम सब की प्रार्थनाए सुनी जाएगी और परमेश्वर मुझे तुम्हारे यहा पहुचाएगा।

मसीह यीशु के लिए बन्दी अपफ्रास जो मेरे साथ है, तथा मेरे सहकर्मी मरकुस, अरिस्तर्खुस, देमास और लूका तुम्हे अभिवादन भेज रहे है।

प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारे आत्मा के साथ हो।

> उपरोक्त पत्र के माध्यम से हम अपने नौकरों, सेवकों, अथवा अपने नीचे काम करनेवालों के प्रति किस प्रकार का व्यवहार करना सीखते है?

८. यीशु परमेश्वर के एकलौते पुत्र है

(कुलुस्सियो १–४)

कुलस्से नगर मे कुछ मसीही थे। किन्तु प्रेरित पौलुस ने उन की कलीसिया का कभी दौरा नही किया था।

कुलस्से की कलीसिया मे एक खतरनाक भ्रान्त-विश्वास ने जड जमा ली। यह भ्रान्त-विश्वास आज भी ससार की अनेक कलीसियाओं के सामने सिर उठाए है।

यह भ्रान्त विश्वास क्या है?

कई भ्रष्ट धर्मगुरु कुलस्से की कलीसिया को सिखाते थे कि यीशु स्वय एकमात्र ईश्वर नही है, वरन् अनेक ईश्वरो-देवताओं मे से एक है! यीशु सर्वोच्च ईश्वर नही है।

प्रेरित पौलुस ने कठोर शब्दों मे इस भ्रान्त–विश्वास की निन्दा की, और कहा, 'यीशु अदृश्य परमेश्वर के प्रतिरूप तथा समस्त सृष्टि मे प्रथम है, क्योंकि उन्ही के द्वारा सब वस्तुओं की सृष्टि हुई, चाहे वे स्वर्ग की हो या पृथ्वी की, दृश्य हो या अदृश्य, सिहासन हो या प्रभुता, प्रधानता हो या अधिकार—इन सब की उन्ही के द्वारा और उन्ही के लिए सृष्टि हुई। वही सबसे पूर्ण है और उन्ही मे सब वस्तुओं की स्थिति है।' (१ १५–१७) ये शब्द मसीही शिक्षा के प्राण है।

पत्र के दो भाग है। प्रथम भाग १ : १–३ : ४ मे प्रेरित पौलुस यीशु मसीह के स्वरूप, स्वभाव पर प्रकाश डालते है। द्वितीय भाग ३ ५–४ · १८ मे मसीही जीवन के व्यावहारिक पक्ष पर प्रकाश डाला गया है।

अभिवादन

पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है और भाई तिमु-

तिमुथ की ओर से,

मसीह के उन सन्तों और विश्वासी भाइयों के नाम पत्र जो कुलुस्से नगर में रहते हैं। हमारे पिता परमेश्वर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

धन्यवाद और प्रार्थना

हम तुम्हारे लिए प्रार्थना करते समय परमेश्वर को—अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता को—सदा धन्यवाद देते हैं, क्योंकि हमने प्रभु मसीह यीशु में तुम्हारे विश्वास और सब सन्तों के प्रति तुम्हारे प्रेम के विषय में सुना है। इन दोनों का कारण यह आशा है जो स्वर्ग में तुम्हारे लिए सुरक्षित है और जिसके विषय में तुमने पहले पहल उस समय सुना जब प्रभु यीशु के सन्देश का सत्य वचन तुम्हें प्राप्त हुआ। यह शुभ-सन्देश, जैसे समस्त संसार में वैसे ही तुम्हारे बीच में भी उस दिन से फल-फूल रहा है, जबसे तुमने परमेश्वर के अनुग्रह के विषय में सच्चे रूप से सुना और समझा है। इसकी शिक्षा तुम्हें हमारे साथी सेवक प्रिय इपफ्रास से प्राप्त हुई, जो हमारी ओर से मसीह का विश्वासी सेवक है। उसने तुम्हारे प्रेम को, जो पवित्र आत्मा से है, हम पर प्रकट किया।

अतः जिस दिन से हमने इस विषय में सुना है, हम तुम्हारे लिए परमेश्वर से निरन्तर प्रार्थना और निवेदन करते हैं। तुम पूर्ण आध्यात्मिक बुद्धि एवं अन्तर्दृष्टि प्राप्त करो और परमेश्वर की इच्छा के ज्ञान से परिपूर्ण हो जाओ, जिससे तुम्हारा आचरण प्रभु के योग्य हो और तुम प्रभु को सब प्रकार सन्तुष्ट कर सको, तुम सत्कर्म रूपी फलों से भर जाओ और परमेश्वर की पहचान में उत्तरोत्तर बढ़ो। साथ ही तुम परमेश्वर की महिमामय सामर्थ्य से प्रत्येक प्रकार का बल प्राप्त कर बलवान् बनो, जिससे सब बातों में धैर्य और सहनशीलता का परिचय दे सको। पिता को आनन्द के साथ धन्यवाद दो कि उसने तुम्हें भक्तों के साथ ज्योति में भाग प्राप्त करने की योग्यता दी। वह हमें अन्धकार के अधिकार से मुक्त कर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में ले आया जिसके द्वारा हमको विमोचन अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त हुई।

मसीह और उनके कार्य

यीशु अदृश्य परमेश्वर के प्रतिरूप तथा समस्त सृष्टि में प्रथम हैं, क्योंकि उन्हीं के द्वारा सब वस्तुओं की सृष्टि हुई, चाहे वे स्वर्ग की हों या पृथ्वी की, दृश्य हों या अदृश्य, सिंहासन हों या प्रभुता, प्रधानता हो या अधिकार—इन सब की उन्हीं के द्वारा और उन्हीं के लिए सृष्टि हुई। वही सबसे पूर्व हैं और उन्हीं में सब वस्तुओं की स्थिति है।

मसीह देह अर्थात् कलीसिया का सिर है। वही है आदि और मृतकों में से प्रथम जीवित ताकि सब में प्रथम स्थान स्वयं उन्हीं का हो। परमेश्वर ने शुभ संकल्प किया कि उसकी समस्त परिपूर्णता मसीह में निवास करे, और क्रूस पर प्रवाहित मसीह के रक्त से शान्ति स्थापित कर, उन्हीं के द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी की सब वस्तुओं का अपने साथ मेल करे।

किसी समय तुम पराए थे और कुकर्मों के कारण तुम्हारे मन में विद्रोह था। परन्तु अब परमेश्वर ने अपने पुत्र के मानव शरीर में मृत्यु द्वारा तुम्हारे साथ मेल कर लिया है कि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र, निष्कलंक और निर्दोष उपस्थित करे। किन्तु यह अनिवार्य है कि विश्वास में तुम्हारी नींव दृढ़ और गहरी रहे, एवं तुम उस शुभ-सन्देश की आशा से विचलित न हो, जिसे तुमने सुना है, और जो आकाश के नीचे प्रत्येक प्राणी को सुनाया गया है तथा जिसका मैं पौलुस सेवक बना हूं।

मसीह का सहकर्मी

मुझे तुम्हारे लिए कष्ट सहने में आनन्द मिलता है। मैं मसीह के कष्टों का शेष भाग, अपने शरीर में, उनकी देह अर्थात् कलीसिया के लिए पूरा करता हूं। परमेश्वर के प्रबन्ध

के अनुसार मैं कलीसिया का सेवक नियुक्त हुआ कि तुम्हारे हित के लिए परमेश्वर के वचन का अर्थात् उस रहस्य का पूरा-पूरा प्रचार करूं जो युगों और पीढ़ियों से छिपा हुआ था, परन्तु अब उसके भक्तों पर प्रकट है। इन्हें परमेश्वर ने स्वेच्छा से बताया कि अन्य जातियों में वह रहस्य कैसा महिमामय और वैभवपूर्ण है। रहस्य यह है कि मसीह तुम में विद्यमान है। उनसे तुम महिमा प्राप्त करने की आशा कर सकते हो। हम मसीह की घोषणा करते है, सब मनुष्यों को चेतावनी देते है और सम्पूर्ण ज्ञान का उपदेश करते है जिससे प्रत्येक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध बना कर प्रस्तुत करें। इसी अभिप्राय से मैं कार्यरत हूं और उनकी उस सामर्थ्य के अनुसार, जो मुझमें प्रबल रूप से क्रियाशील है, घोर परिश्रम कर रहा हूं।

मसीह से संयुक्त होना

मैं चाहता हूं कि तुम यह बात जान लो कि मैं तुम्हारे लिए, लौदीकिया निवासियों के लिए और इसी प्रकार अन्य लोगों के लिए जो व्यक्तिगत रूप से मुझे नहीं जानते, कठोर परिश्रम करता हूं, जिससे वे उत्साहित हों, परस्पर प्रेम-बन्धन में बन्धे रहें, समस्त अन्तर्ज्ञान की पूर्ण निधि प्राप्त करें एवं परमेश्वर के रहस्य को भली भांति समझें। यह रहस्य स्वयं मसीह है, क्योंकि उन्हीं में बुद्धि और ज्ञान की समस्त निधि निहित है। यह मैं इसलिए कह रहा हूं कि कोई व्यक्ति तुम्हें भ्रमपूर्ण युक्तियों से धोखा न दे। मैं यद्यपि शारीरिक रूप से अनुपस्थित हूं, पर आत्मिक रूप से तुम्हारे पास हूं, और तुम्हारे व्यवस्थित जीवन को एवं मसीह के विश्वास में तुम्हारी दृढ़ता को देखकर आनन्दित होता हूं।

जैसे तुमने मसीह यीशु को प्रभु स्वीकार किया, वैसे ही अब उनमें अपना जीवन बिताओ। उनमें जड़ जमाओ और आत्म-निर्माण करो। तुम्हें जैसी शिक्षा मिली है, उसके अनुसार विश्वास में दृढ़ रहो। कृतज्ञता की भावना में उन्नति करो।

झूठे दार्शनिक विवादों से सावधान

सावधान! कोई व्यक्ति तुम्हें उन झूठे विचारों और खोखले प्रपन्च द्वारा भ्रम में न डाले, जो मनुष्य की परम्पराओं और संसार की दैवी शक्तियों पर आधारित है, और मसीह पर आधारित नहीं। मसीह में परमेश्वर की समस्त परिपूर्णता सशरीर निवास करती है और उन्हीं में, जो समस्त प्रधानों और अधिकारियों में शिरोमणि है, तुमने पूर्णता प्राप्त की है। मसीह में तुम्हारा खतना हुआ है—ऐसा खतना नहीं जो हाथ से किया जाता है, वरन् मसीह का खतना जिससे हमारा पापमय स्वभाव परिवर्तित हो जाता है।

तुम बपतिस्मा में मसीह के साथ-साथ गाड़े गए और उन्हीं के साथ जीवित भी किए गए, क्योंकि तुमने परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास किया जिसने मसीह को मृतकों में से जीवित कर दिया।

तुम मृत थे, क्योंकि अपराधों में और शरीर की खतना-रहित दशा में थे, किन्तु परमेश्वर ने तुम्हें मसीह के साथ जीवित किया है। उसने हमारे सब अपराध क्षमा कर दिए, हमारे विरुद्ध धर्म नियमों का दस्तावेज रद्द कर दिया, तथा उसे क्रूस पर कीलों से जड़ कर नष्ट कर दिया। उसने प्रधानों एवं अधिकारियों को निरस्त्र किया, समाज के सम्मुख उनका उपहास किया, और क्रूस की विजय-यात्रा में उन्हें बन्दियों की भांति घुमाया।

कोई व्यक्ति तुम्हें खान-पान, त्यौहार, अमावस्या एवं विश्राम-दिवस-पालन के विषय में दण्डनीय न समझे। क्योंकि ये आनेवाली बातों की छाया मात्र है मूल सत्य तो मसीह है।

कोई आत्मपीड़ा और देवपूजा के बल पर तुम्हें अयोग्य प्रमाणित न करे। ऐसे व्यक्ति दिव्य दर्शनों का आडम्बर रचते है, अपनी भौतिक भावनाओं के कारण गर्व करते है। वे उस 'सिर' से अलग है जिससे समस्त शरीर सन्धियों और ग्रन्थियों द्वारा पोषक तत्व प्राप्त करता और सुगठित हो परमेश्वर की योजना के अनुसार उन्नति करता है।

यदि तुम मसीह के साथ संसार की दैवी शक्तियों की ओर से मर चुके हो, तो फिर संसारी लोगों की भाँति ऐसी विधियों से क्यों बन्धे हो कि 'इसे मत हाथ लगा' 'उसे मत चख', 'इसे मत छू'? ये नियम मनुष्य के बनाए हैं और उसके सिद्धान्तों के अनुसार हैं, और उन वस्तुओं के सम्बन्ध में हैं जो उपयोग में आते-आते नष्ट हो जाती हैं। इन नियमों में ज्ञान का आभास तो है, परन्तु ये स्वनिर्धारित, पूजा-पाठ, आत्म-पीड़ा और कठोर शारीरिक तप करने की प्रेरणा देते हैं। इनसे शारीरिक वासनाओं के संयम में कोई सहायता नहीं मिलती।

मसीह के साथ जीवित होने का परिणाम

यदि तुम मसीह के साथ जी उठे हो तो स्वर्गिक वस्तुओं के लिए प्रयत्न करो, जहाँ मसीह परमेश्वर की दाहिनी ओर विराजमान है। स्वर्गिक वस्तुओं का चिन्तन करो, सांसारिक बातों का नहीं, क्योंकि तुम मर चुके हो और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह, जो तुम्हारा जीवन है प्रकट होंगे, तब तुम भी उनके साथ महिमा में प्रकट होंगे।

अतएव अपने सांसारिक स्वभाव* का दमन करो जैसे अशुद्धता, व्यभिचार, वासनाएँ, बुरी इच्छाएँ और लोभ का, जो मूर्ति-पूजा के तुल्य है। इन कुकर्मों के कारण परमेश्वर की इच्छा न माननेवालों पर परमेश्वर का क्रोध भड़क उठता है। जब तुम इन कुकर्मों में जीवन बिताते थे तब तुम्हारा भी आचरण ऐसा ही था। किन्तु अब क्रोध, रोष, वैरभाव, निन्दा, मुँह से अश्लील बातें निकालना—इन सबको सर्वथा त्याग दो। एक-दूसरे से झूठ न बोलो क्योंकि तुमने पुराने स्वभाव तथा उसके कर्मों को छोड़ दिया है, और नया स्वभाव धारण कर लिया है। यह नया स्वभाव ज्ञान-प्राप्ति के लिए अपने सृष्टिकर्ता का प्रतिरूप ग्रहण करता और नवीन बनता जाता है। इसमें न कोई यूनानी है और न यहूदी, न कोई खतना-सहित है और न कोई खतना-रहित, न कोई बर्बर है और न जंगली*, न कोई दास है और न स्वतन्त्र, किन्तु केवल मसीह ही सब में और सब कुछ है।

अत: परमेश्वर के मनोनीत भक्तों और प्रिय जनों के सदृश सहानुभूति, करुणा, दीनता, विनम्रता और सहनशीलता धारण करो। परस्पर सहिष्णु बनो, और यदि तुम्हारी किसी के प्रति शिकायत हो तो उसको क्षमा करो। जैसे प्रभु ने तुम्हें क्षमा किया है, वैसे ही तुम भी क्षमा करो। परन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि प्रेम बनाए रखो। यह पूर्ण एकता का सूत्र है। मसीह की शान्ति तुम्हारे हृदय में शासन करे। इसी शान्ति के लिए तुम एक देह में बुलाए गए हो। कृतज्ञ बने रहो। मसीह का वचन अपने समस्त वैभव के साथ तुममें निवास करे। पूर्ण ज्ञान से एक-दूसरे को शिक्षित करो और चेतावनी दो। कृतज्ञतापूर्ण हृदय से परमेश्वर की प्रशंसा में भजन, स्तोत्र और भक्ति गीत गाया करो। जो कुछ कहो या करो, सब प्रभु यीशु के नाम से करो और उनके द्वारा पिता परमेश्वर के प्रति कृतज्ञ बने रहो।

मसीही जन का पारिवारिक जीवन

पत्नियो, जैसा प्रभु में उचित है, अपने-अपने पति के अधीन रहो।

पतियो, अपनी-अपनी पत्नियों से प्रेम रखो, और उनसे कटु व्यवहार मत करो।

बालको, प्रत्येक बात में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, क्योंकि इससे प्रभु प्रसन्न होता है।

तुम जो पिता हो, अपने बालकों को तंग न करो, ऐसा न हो कि उनका साहस टूट जाए।

दासो, सांसारिक दृष्टि से जो तुम्हारे स्वामी हैं, उनकी आज्ञा मानो। मनुष्यों को प्रसन्न करने अथवा केवल दिखाने के लिए नहीं, किन्तु हृदय की सरलता से तथा प्रभु के भय से उनकी सेवा करो। जो कुछ करो, मन लगा कर करो, मानो मनुष्य के लिए नहीं, प्रभु के लिए

कर रहे हो, क्योंकि तुम्हे ज्ञात है कि प्रभु से इसके प्रतिफल मे तुम उत्तराधिकार प्राप्त करोगे। प्रभु यीशु मसीह के दास बनो।

बुरा करनेवाला बुराई का फल पाएगा। प्रभु की अदालत में मुह देखा न्याय नही होता।

स्वामियो, स्वर्ग मे तुम्हारा भी स्वामी है, यह जानकर अपने दासो के साथ न्यायपूर्ण एव उचित व्यवहार करो।

प्रार्थना मे लवलीन रहो। प्रार्थना करते समय जागरूक और कृतज्ञ रहो। हमारे लिए भी प्रार्थना करो कि परमेश्वर शुभ-सन्देश सुनाने को और मसीह का रहस्य बताने को, हमारे लिए द्वार खोल दे। इसी के कारण मै बन्दी हू। प्रार्थना करो कि मै इस रहस्य को उपयुक्त शब्दो मे प्रकट कर सकू।

अवसर को बहुमूल्य समझो और बाहरवालो के साथ बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार करो। तुम्हारी बातचीत मनभावनी और सलोनी हो, ताकि तुम यह बात जान सको कि किस व्यक्ति को कैसे उत्तर देना चाहिए।

अन्तिम अभिवादन

मेरा प्रिय भाई, विश्वासी-सेवक और प्रभु के कार्य मे सहकर्मी तुखिकुस तुम्हे मेरे सम्बन्ध मे सब समाचार बताएगा। उसे मै इसी अभिप्राय से तुम्हारे पास भेज रहा हू कि वह हमारा कुशल समाचार सुनाकर तुम्हारे हृदय को शान्ति दे। उसके साथ विश्वासी और प्रिय भाई उनेसिमुस भी है, जो तुममे से है। ये दोनो तुम्हे यहा की सब बाते बताएगे।

मेरे साथी कैदी अरिस्तार्खुस और मरकुस का तुम्हें नमस्कार। यह मरकुस बरनबास का भाजा है और इसी के विषय मे तुम्हे आदेश मिला है कि जब यह तुम्हारे यहा आए तब इसका आदर-सत्कार करना। यहोशू उपनाम यूस्तुस तुम्हे नमस्कार कहता है।

खतनेवालो मे से केवल इन्ही तीनो ने मेरे साथ परमेश्वर का राज्य फैलाने मे कार्य किया है, और इनसे मुझे सान्त्वना मिली है।

इपफ्रास, जो तुममे से ही है, तुम्हें नमस्कार भेज रहा है। यह मसीह यीशु का सेवक है और तुम्हे अपनी प्रार्थनाओं मे सदा पूरी लगन से स्मरण करता है कि परमेश्वर की जैसी भी इच्छा हो, तुम उसमे पूर्णता और दृढ़तापूर्वक स्थिर रहो। मै इसका साक्षी हू कि वह तुम्हारे लिए और लौदीकिया एव हियरापुलिस के निवासियो के लिए बहुत परिश्रम करता रहा है। प्रिय वैद्य लूका और देमास का तुम्हे नमस्कार मिले।

लौदीकिया नगर मे रहनेवाले भाइयो को, बहिन नुम्फास को और उसके घर मे एकत्र होनेवाली कलीसिया के सदस्यों को मेरा नमस्कार कहना। जब यह पत्र तुम्हारे यहा पढ़ कर सुना दिया जाए तब ऐसा प्रबन्ध करना कि यह लौदीकिया की कलीसिया मे भी पढा जाए, और जो पत्र लौदीकिया से आए, उसे तुम पढ लेना। अर्खिप्पुस से कहना कि जो सेवा प्रभु मे उसे सौंपी गई है, उसे सावधानी से पूरा करे।

मै पौलुस स्वय अपने हाथ से यह नमस्कार लिख रहा हू। मेरी जन्जीरो को न भूलना। तुम पर अनुग्रह बना रहे।

१ क्यों यह बात महत्वपूर्ण है कि यीशु अन्य देवताओ के समान एक देवता नही है, वरन् वह सर्वोच्च परमेश्वर है ?

२. प्रेरित पौलुस ने हमारे जीवन के व्यावहारिक पक्ष के सम्बन्ध मे कुछ परामर्श दिए है। वे कौन-कौन से है ?

६. कलीसिया क्या है ?

(इफिसियो १–६)

प्रेरित पौलुस ने सम्भवत यह पत्र सब कलीसियाओ को एक परिपत्र-सरकुलर—के रूप मे लिखा था, ताकि सब कलीसियाए उससे लाभ उठा सके।

प्रेरित पौलुस कलीसिया की प्रकृति, संरचना को समझाते है। कलीसिया मसीह की देह है, और वह उसका सिर है (४ १५–१६)। सब मसीही जन इस देह के अग है। जैसे दूल्हा अपनी दुल्हिन को प्यार करता है वैसे ही मसीह अपनी कलीसिया को प्रेम करते है।

आजकल एक भ्रान्त विश्वास लोगो मे फैला हुआ है। वे कहते है मसीही कहलाने के लिए या बनने के लिए यह आवश्यक नही है कि आप मसीह की देह, अर्थात् कलीसिया के अग बने। मसीह का अनुसरण करना ही पर्याप्त है।

यह निस्सन्देह भ्रान्त-विश्वास है। हो सकता है, किन्ही कारणो से कुछ समय तक कोई मसीही कलीसिया का सदस्य—अग न बन सका हो, किन्तु यह परमेश्वर की हार्दिक इच्छा है कि उसकी सब सतान कलीसिया का सदस्य बने, और यो मसीह की देह के अग बने। क्या देह से अलग कोई भी अग सजीव-जीवित रह सकता है, उसका अस्तित्व तो उससे जुडे रहने मे है।

पत्र के दो भाग है। प्रथम भाग १ १–३ २१ मे प्रेरित पौलुस ने कलीसिया के भेद और परमेश्वर की उद्धार की योजना को समझाया है। दूसरे भाग, शेष पत्र मे मसीही जीवन से सम्बन्धित व्यावहारिक उपदेश है।

पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, इफिसुस नगर मे रहनेवाले सन्तो और मसीह यीशु के विश्वासियो के नाम पत्र

हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह से तुम्हे अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

परमेश्वर की स्तुति

धन्य है हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता तथा परमेश्वर जिसने मसीह द्वारा स्वर्गिक क्षेत्र मे हमे सब प्रकार की आध्यात्मिक आशीषे प्रदान की है। उसने सृष्टि की रचना करने से पूर्व हमे मसीह मे चुन लिया* कि हम उसकी दृष्टि मे पवित्र तथा निष्कलक बने। उसने प्रेमपूर्वक पहले ही हमे नियुक्त किया कि यीशु मसीह द्वारा हम उसके दत्तक पुत्र बने। यह उसकी मगलमयी इच्छा से हुआ ताकि उसके महिमामय अनुग्रह की, जो उसने उदारतापूर्वक अपने 'प्रिय' मे हमपर किया है, स्तुति हो।

मसीह मे और उन्ही के रक्त मे हमे विमोचन अर्थात् पापो की क्षमा प्राप्त है—ऐसा है परमेश्वर के अनुग्रह का वैभव! यह अनुग्रह परमेश्वर ने हमे प्रचुर मात्रा मे पूर्ण बुद्धिमत्ता और अन्तर्दृष्टि-सहित प्रदान किया है। उसने अपनी मगलमयी इच्छा से, जो मसीह मे पहले से ही निर्धारित है, हमे अपने उद्देश्य का रहस्य बताया है। और रहस्य यह है कि समय पूरा होने पर ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग और पृथ्वी मे है, वह सब मसीह की अध्यक्षता मे सयुक्त हो जाए।

मसीह मे हम यहूदियो को उत्तराधिकार प्राप्त हुआ है, क्योकि जो सब कुछ अपनी सुनिश्चित इच्छा से करता है, उसके उद्देश्य के अनुसार यह पहले से ही निर्धारित हो चुका है

*अथवा, 'निर्वाचित' या 'मनोनीत किया'

से बाहर थे, प्रतिज्ञा की वाचा से अपरिचित थे, आशा से वंचित थे, और संसार में परमेश्वर से अलग थे। परन्तु अब मसीह यीशु में तुम, जो एक समय दूर थे, मसीह के रक्त द्वारा समीप आ गए हो।

मसीह हमारी शान्ति है; मसीह ने यहूदी और गैर-यहूदी दोनों को एक किया, और भेद डालनेवाली बैर-भाव की दीवार को अपने बलिदान से ढाह दिया। उन्होंने व्यवस्था-शास्त्र के विधि-विधानों को मिटा दिया कि दोनों से, यहूदी और गैर-यहूदी से, अपने में एक नवीन मानवता की सृष्टि करे जिससे शान्ति की स्थापना हो। उन्होंने क्रूस द्वारा दोनों का एक ही देह में परमेश्वर से मिलाप कराया और इस प्रकार शत्रुता समाप्त कर दी। वह आए और उन्होंने तुम्हें जो दूर थे और उन्हें जो निकट थे, शान्ति का शुभ-सन्देश सुनाया। उन्हीं के द्वारा हम दोनों एक आत्मा में पिता के समीप आ सकते हैं।

अतः तुम अब परदेशी और प्रवासी नहीं, सन्तों के साथ रहनेवाले नागरिक और परमेश्वर के परिवार हो, जिसका निर्माण प्रेरितों और नबियों की नींव पर हुआ है और जिसकी आधार-शिला* स्वयं मसीह यीशु हैं। इन्हीं मसीह में सम्पूर्ण रचना सुगठित होकर, प्रभु को समर्पित पवित्र मन्दिर के रूप में उठ रही है। इन्हीं में पवित्र आत्मा तुम लोगों को भी परमेश्वर के लिए एक साथ निवास-स्थान बना रहा है।

गैरयहूदियों के लिए पौलुस की सेवा

अतः मैं पौलुस तुम गैरयहूदियों के लिए मसीह यीशु का बन्दी हूं। परमेश्वर का अनुग्रह मुझे तुम्हारे हित के लिए दिया गया है, इस प्रबन्ध के विषय में तुमने अवश्य सुना होगा। यह रहस्य मुझ पर ईश्वरीय प्रकाशन द्वारा प्रकट हुआ। इस सम्बन्ध में संक्षेप में पहले ही लिख चुका हूं, जिसे पढ़कर तुम समझ सकते हो कि मुझे मसीह के रहस्य का कितना ज्ञान है। यह रहस्य मानव-जाति को पिछली पीढ़ियों में नहीं बताया गया था परन्तु अब आत्मा द्वारा मसीह के पवित्र प्रेरितों और नबियों पर प्रकट है। रहस्य यह है कि मसीह यीशु के शुभ-सन्देश द्वारा अन्य जाति के व्यक्ति मसीह यीशु में सह-उत्तराधिकारी, एक ही देह के अंग, और प्रतिज्ञा में सहभागी हैं।

परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य के प्रभाव से अनुग्रह प्रदान कर मुझे अपने शुभ-सन्देश का सेवक बनाया। मुझे, जो समस्त सन्तों में तुच्छों में भी तुच्छ हूं, यह अनुग्रह प्राप्त हुआ कि गैरयहूदियों को मसीह की अपार निधि का शुभ-सन्देश सुनाऊं और सब मनुष्यों पर वह रहस्यमय प्रबन्ध प्रकट करूं, जो युगों से विश्व के सृष्टिकर्ता परमेश्वर में गुप्त रहा है, जिससे अब परमेश्वर की विलक्षण बुद्धि, कलीसिया द्वारा स्वर्गिक क्षेत्र के शासकों और अधिकारियों पर प्रकाशित हो जाए। युग-युग से चला आनेवाला यह उद्देश्य, हमारे प्रभु मसीह यीशु में पूर्ण हुआ है, जिनमें विश्वास करने से हमें निर्भय होकर परमेश्वर के समीप आने का साहस होता है। इसलिए मेरा निवेदन है कि जो कष्ट तुम्हारे लिए सह रहा हूं, उनके कारण निराश न होना—इसमें तुम्हारा गौरव है।

परमेश्वर के प्रेम के लिए प्रार्थना

मैं पिता के सम्मुख घुटने टेकता हूं। पिता ही प्रत्येक परिवार** का नाम रखता है, फिर चाहे वह परिवार स्वर्ग में हो या पृथ्वी पर। मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर अपनी महिमामयी निधि से तुम्हें सामर्थ्य प्रदान करे, जिससे पवित्र आत्मा द्वारा तुम्हारा अन्तर्मन बलिष्ठ हो जाए, और तुम्हारे हृदय में विश्वास द्वारा मसीह निवास करे। प्रेम में तुम्हारी जड़ें गहरी और नींव दृढ़ हो जाए जिससे तुम्हें ऐसी शक्ति मिले कि सब सन्तों के साथ अनुभव कर सको कि मसीह के प्रेम की चौड़ाई, लम्बाई, ऊंचाई और गहराई कितनी है और मसीह के प्रेम का ज्ञान

*अथवा 'कोने की शिला' **अथवा, 'पितृत्व'

प्राप्त कर सको जो ज्ञान से परे है। इस प्रकार तुम परमेश्वर की समस्त परिपूर्णता से पूर्ण हो जाओ।

सामर्थ्यवान् परमेश्वर अपनी सामर्थ्य के द्वारा, जो हममें कार्यरत है, हमारी प्रार्थना और कल्पना से कहीं अधिक कार्य कर सकता है। उसी परमेश्वर की महिमा कलीसिया में तथा मसीह यीशु में, पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमेन।

एक देह किन्तु विभिन्न वरदान

मैं, जो प्रभु के कारण बन्दी हूँ, तुमसे अनुरोध करता हूँ कि परमेश्वर के उच्च आह्वान के अनुरूप आचरण करो। पूर्ण दीनता, नम्रता एवं धीरता के साथ, एक-दूसरे के प्रति प्रेमपूर्ण और सहिष्णुता का व्यवहार रखो, एवं शान्ति के बन्धन में बंधकर उस एकता को बनाए रखने का प्रयत्न करो जो पवित्र आत्मा देता है।

एक ही देह है और एक ही आत्मा—जैसे वह आशा एक है जिसमें तुम्हें परमेश्वर ने बुलाया था। एक ही प्रभु, एक ही विश्वास और एक ही बपतिस्मा है, सबका परमेश्वर और पिता भी एक ही है, जो सबके ऊपर है, सबमें व्याप्त है और सबमें स्थित है।

मसीह ने जिस मात्रा में दिया है, उसी के अनुसार हममें से प्रत्येक को अनुग्रह मिला है। इसीलिए धर्मशास्त्र का यह कथन है

'वह ऊपर चढ़ा तो बन्दी-दल को साथ ले गया
उसने मनुष्यों को वरदान दिए।'

'वह ऊपर चढ़ा' इसका क्या अर्थ है? यही न कि वह पहले भूमि के निचले भागों में उतरा। और नीचे उतरनेवाला वही है जो समस्त आकाश लोकों से भी ऊपर चढ़ा कि सबको परिपूर्ण कर दे। उसने कुछ को प्रेरित, कुछ को नबी, कुछ को शुभ-सन्देश सुनानेवाले, कुछ को कलीसिया के चरवाहे और कुछ को शिक्षक नियुक्त किया, कि सन्त जन सेवा-कार्य के योग्य बनें, जिससे मसीह की देह का निर्माण होता रहे, यहाँ तक कि हम सब विश्वास में और परमेश्वर-पुत्र के ज्ञान में एक हो जाएं, पूर्ण मनुष्यत्व प्राप्त करें और विकास की उस चरम सीमा तक पहुँचें जो मसीह की परिपूर्णता में प्राप्त होती है। इस प्रकार हम बालक नहीं रहेंगे और न प्रत्येक शिक्षा के झोंके से, मनुष्यों की ठग-विद्या से और भूठ गढ़नेवालों की धूर्तता से इधर-उधर उछलते और चक्कर काटते फिरेंगे। हम प्रेमपूर्वक सत्य का अनुसरण करें और मसीह में सब प्रकार की उन्नति करते जाएं। मसीह ही कलीसिया का सिर है। उन्हीं से समस्त देह अपनी सब सन्धियों द्वारा संयुक्त और सुगठित रहती है, तथा प्रत्येक अंग की उचित क्रियाशीलता द्वारा अपनी वृद्धि करती, एवं प्रेम से अपनी उन्नति करती है।

पुराना और नया जीवन

मेरा यह कथन है मैं प्रभु में तुमसे आग्रह करता हूँ कि अब से अन्य धर्मियों के समान आचरण न करो। वे निस्सार बातों में मन लगाते हैं। उनकी बुद्धि अन्धकारमय हो गई है। वे अपने बीच में फैले हुए अज्ञान और मन की जड़ता के कारण ईश्वरीय जीवन से विमुख हो गए हैं। वे कठोर हृदय हैं। वे लम्पटता के दास बन गए हैं, और सब प्रकार के अशुद्ध कर्म करने को लालायित रहते हैं। पर तुम्हें मसीह में ऐसी शिक्षा नहीं मिली है। यदि वास्तव में तुमने उनके सम्बन्ध में सुना और उनकी शिक्षा को ग्रहण किया है, अर्थात् उस सत्य को जो यीशु में है, तो तुम्हें अपना पुराना स्वभाव जो पुराने आचरण के अनुरूप है, छोड़ देना चाहिए, क्योंकि वह भ्रम में डालनेवाली दुर्वासनाओं में पड़कर बिगड़ता जा रहा है। आत्मिक भावना से अपने मन को नया बनाओ, एवं वह नवीन स्वभाव धारण करो जिसकी रचना सच्ची धार्मिकता और पवित्रता के साथ, परमेश्वर के अनुरूप हुई है।

नये जीवन के नियम

प्रत्येक मनुष्य झूठ बोलना छोड़ दे और अपने पड़ोसी से सत्य बोले, क्योंकि हम एक-दूसरे

के अंग है। क्रोध करो, परन्तु पाप न करो। सूर्यास्त से पहले ही अपना क्रोध समाप्त कर दो, शैतान को अवसर न दो।

चोरी करनेवाला अब से चोरी न करे, वरन् किसी अच्छे व्यवसाय में अपने हाथों से परिश्रम करे जिससे उन लोगों की कुछ सहायता कर सके जिन्हें आवश्यकता है।

तुम्हारे मुंह से अश्लील शब्द न निकले, वरन् ऐसे शब्द निकलें जो शिक्षाप्रद हों, अवसर के अनुरूप हों और सुननेवालों के लिए कल्याणकारी हों।

परमेश्वर के पवित्र आत्मा को, जिसने विमोचन-दिवस के लिए तुम पर अपनी मुहर लगाई है, दुःखी न करो। समस्त कटुता, रोष, क्रोध, कलह, निन्दा एवं सब प्रकार का द्वेष अपने से दूर कर दो। एक दूसरे के प्रति कृपालु और सहृदय बनो, तथा जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हें क्षमा किया है, वैसे ही तुम भी एक-दूसरे को क्षमा करो।

परमेश्वर का, उसके प्रिय बालकों के समान अनुसरण करो। तुम्हारा आचरण प्रेमपूर्ण हो, जैसे कि मसीह ने तुम्हें प्रेम किया और हमारे लिए अपने आपको सुगन्धित भेंट और बलि के रूप में परमेश्वर को अर्पित कर दिया।

जैसा मसीह के सन्तों के लिए शोभनीय है तुम्हारे बीच व्यभिचार, किसी प्रकार की अशुद्धता और लोभ की चर्चा तक न हो, और न निर्लज्जता, न मूर्खतापूर्ण बातें, न अश्लील मजाक हों, क्योंकि ये तुम्हें शोभा नहीं देते। इनके स्थान में कृतज्ञता की भावना हो। यह निश्चय जानो कि कोई व्यभिचारी, अशुद्धाचारी अथवा लोभी, जो मूर्तिपूजक के समान है, मसीह और परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकारी नहीं होगा।

किसी के निरर्थक तर्कों के जाल में न पड़ो, क्योंकि ऐसे ही कर्मों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न माननेवालों पर भड़कता है। ऐसे लोगों की संगति से दूर रहो।

पहले तुम अन्धकार थे, परन्तु अब प्रभु में ज्योति बन गए हो। अतः ज्योति की सन्तान के सदृश आचरण करो—क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, धार्मिकता और सच्चाई है।

यह सीखने का प्रयत्न करते रहो कि प्रभु किन बातों से प्रसन्न होता है। अन्धकार के व्यर्थ कार्यों में भाग न लो, वरन् उनके दोषों को प्रकट करो। इन गुप्त कार्यों की चर्चा करने में भी लज्जा आती है। किन्तु ज्योति द्वारा प्रदर्शित होने पर सब बातें प्रत्यक्ष हो जाती हैं, और जो प्रत्यक्ष हो जाता है, वह स्वयं ज्योति बन जाता है। इसी कारण एक गीत में यह कहा गया है,

'हे सोनेवाले, जाग और मृतकों में से जी उठ,
और मसीह तुझे ज्योतिर्मय कर देंगे।'

अपने आचरण का पूरा-पूरा ध्यान रखो। मूर्खों के समान नहीं, बुद्धिमानों के समान आचरण करो। अवसर को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं। ऐसे समय में नासमझ मत बनो, वरन् यह समझने का प्रयत्न करो कि प्रभु की इच्छा क्या है। मदिरा पीकर मतवाले न हो, क्योंकि मदिरा विषय-वासना की जननी है।

आत्मा से परिपूर्ण होकर भजन, स्तोत्र एवं आध्यात्मिक गीतों द्वारा अपने भाव प्रकट करो। हृदय से प्रभु का भजन-कीर्तन करो, और सदा सब बातों के लिए अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से पिता परमेश्वर को धन्यवाद देते रहो।

मसीही पारिवारिक जीवन: पति और पत्नी

मसीह के प्रति श्रद्धा-भय के कारण एक-दूसरे के अधीन रहो।

पत्नियो, जैसे प्रभु के अधीन वैसे ही अपने-अपने पति के अधीन रहो, क्योंकि पति पत्नी के ऊपर है अर्थात् पत्नी का सिर है, जिस प्रकार मसीह कलीसिया का सिर है और स्वयं उस शरीर के उद्धारकर्ता हैं। फलतः जैसे कलीसिया मसीह के अधीन रहती है, वैसे ही

लिए भी प्रार्थना करो कि जब मैं बोलने के लिए मुह खोलू तो मुझे ऐसे शब्द मिले कि मैं निडर होकर प्रभु यीशु के शुभ-सन्देश का रहस्य प्रकट कर सकू, जिसके लिए मै जन्जीरों मे जकड़ा हुआ राजदूत हू। प्रार्थना करो कि इस विषय मे, जैसा उचित है, मै निर्भयता से बोलू।

अन्तिम अभिवादन

प्रिय भाई और प्रभु मे विश्वासी सेवक तुखिकुस तुमको सब समाचार बताएगा जिससे तुम्हें ज्ञान हो जाए कि मै कैसा हू और क्या कर रहा हू। इसको तुम्हारे पास भेजने मे मेरा अभिप्राय यही है कि यह हमारा कुशल समाचार सुनाकर तुम्हारे हृदय को शान्ति दे।

परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह की ओर से भाइयों को शान्ति और विश्वास के साथ प्रेम भी मिले। उन सब पर, जो हमारे प्रभु यीशु से अक्षय प्रेम करते है, अनुग्रह बना रहे।

१. उपरोक्त पत्र के अनुसार मसीही कलीसिया क्या है ? कलीसिया का सदस्य बनना क्यों आवश्यक है ?

२. पत्र के अन्तिम भाग मे प्रेरित पौलुस ने हमारे परिवारो को कौन-कौन सी सलाह दी है ?

१०. प्रेम और मसीही सत्संग से परिपूर्ण पत्र

(फिलिप्पियो १–४)

प्रेरित पौलुस के द्वारा लिखा गया यह पत्र अपने प्रेम के कारण बहुत प्रसिद्ध है। उस समय प्रेरित पौलुस बन्दी थे, और फिलिप्पी नगर की कलीसिया ने उनको प्रेमस्वरूप उपहार भेजे थे। इस कलीसिया और प्रेरित पौलुस के मध्य प्रेम का सम्बन्ध था। कलीसिया मे किसी प्रकार की समस्या नही थी।

जब आप प्रस्तुत पत्र को पढ़ेंगे तब आपको मालूम होगा कि पहले अध्याय में प्रेरित पौलुस फिलिप्पी नगर की कलीसिया की भेंट-उपहार के लिए उन्हें धन्यवाद देते है; और उनके कल्याण के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते है।

फिलिप्पी नगर की कलीसिया के सदृश यदि हमारी भी कलीसिया हो, उनके सदस्यो के मध्य अगर ऐसा ही प्रेम हो, तो हमारा आत्मिक और भौतिक जीवन भी सुखमय होगा।

अध्याय २ : १–११ मे प्रेरित पौलुस ने यीशु मसीह के पृथ्वी पर जन्म लेने के अभिप्राय पर प्रकाश डाला है। यीशु का देहधारण या अवतार विशेष अभिप्राय से हुआ था। इन पदो पर ध्यान दीजिए। ये बहुत महत्वपूर्ण है।

अभिवादन

मसीह यीशु के सेवक पौलुस और तिमुथियुस की ओर से, मसीह यीशु मे धर्म-अध्यक्षो और उनके सहायको* सहित उन सब सन्तो के नाम पत्र जो फिलिप्पी नगर मे रहते है।

हमारा पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह तुम्हें अनुग्रह और शान्ति दे।

पौलुस की कृतज्ञता और आनन्द

जब-जब मै तुम्हारा स्मरण करता हू, अपने परमेश्वर को धन्यवाद देता हू; और जब

*मूल मे, 'निरीक्षक (बिशप) और उपपुरोहित (डीकन)

मै तुम सब के लिए प्रार्थना करता हू तो मेरी प्रार्थना मे सदा आनन्द रहता है, क्योंकि आरम्भ मे लेकर अब तक तुम शुभ-सन्देश सुनाने मे मेरे सहयोगी रहे हो। एक बात का मुझे निश्चय है जिस परमेश्वर ने तुममे शुभ-कार्य आरम्भ किया है, वह मसीह यीशु के दिन तक उसे पूर्ण भी करेगा। इसलिए तुम सबके सम्बन्ध मे मेरी यह भावना ठीक है। मै हृदय मे मानता हू कि अनुग्रह मे तुम सबका मेरे साथ साझा है—चाहे मै बन्दी हू अथवा मसीह यीशु के शुभ-सन्देश की रक्षा और पुष्टि कर रहा हू। परमेश्वर मेरा साक्षी है कि मेरे हृदय मे तुम्हारे लिए मसीह का-सा प्रेम है, और मै तुम सब के लिए विकल रहता हू।

पाठको के लिए प्रार्थना

मेरी यह प्रार्थना है कि तुम्हारा प्रेम, ज्ञान मे और सब प्रकार की अन्तर्दृष्टि मे उत्तरोत्तर बढ़ता जाए कि तुम धर्म का मर्म जानो, * मसीह के दिन के लिए निर्मल रहो, ठोकर न खाओ, और उस धार्मिकता के फल से परिपूर्ण हो जो यीशु मसीह से प्राप्त होती है, जिससे परमेश्वर की महिमा और स्तुति हो।

बन्दी होने के सुपरिणाम

भाइयो, मै तुम्हे बताना चाहता हू कि जो कुछ मुझपर बीता है, उससे मसीह यीशु के शुभ-सन्देश की उन्नति ही हुई है। यहा राजभवन मे और बाहर जनता मे भी यह बात फैल गई है कि मसीह के लिए मै बन्दी हू। इससे मेरे बन्धन के कारण प्रभु मे अधिकांश भाइयो का आत्मविश्वास बढ़ा है और वे अत्यन्त साहस और निर्भयता से परमेश्वर का सन्देश सुना रहे है।

कुछ लोग तो ईर्ष्या और विरोध वश मसीह का प्रचार कर रहे है, पर कुछ सद्भाव से। ये प्रेम के कारण प्रचार करते है, क्योंकि जानते है कि मै मसीह यीशु के शुभ-सन्देश की रक्षा के लिए यहा रखा गया हू, परन्तु दूसरे लोग दलबन्दी के कारण अपवित्र उद्देश्य से मसीह का सन्देश सुनाते है, क्योंकि उनका विचार है कि इस प्रकार वे मेरे लिए कारावास मे क्लेश बढ़ा रहे है।

शुभ-सन्देश सुनाने का आनन्द

तो क्या हुआ ! बहाने से अथवा सद्भाव से—सब प्रकार मसीह का सन्देश फैल रहा है, इस कारण मै आनन्दित हू। और मै आनन्दित रहूगा, क्योंकि मै जानता हू कि तुम्हारी प्रार्थना द्वारा और यीशु मसीह के आत्मा की सहायता से मै मुक्त हो जाऊगा। मेरी हार्दिक अभिलाषा और आशा तो यह है कि किसी बात के लिए मुझे लज्जित न होना पड़े, वरन् सदा की भाति अब भी पूर्ण निर्भयता मे—चाहे जीवित रहू अथवा मरू—मेरे शरीर द्वारा मसीह की महानता प्रकट हो।

जीवित रहना अच्छा या मरना

जीवित रहना मेरे लिए मसीह है और मरना लाभ, परन्तु यदि सशरीर जीवित रहू तो इसका अर्थ है सफल श्रम। तब मै किसे चुनू ! मै कह नही सकता। मै बड़ी दुविधा मे हू। जी तो चाहता है कि इस ससार से कूच कर मसीह के पास जा रहू, क्योंकि यह अत्यन्त उत्तम होगा। पर तुम्हारे कारण इस शरीर मे रहना अधिक आवश्यक है। इस निश्चय के कारण मै जानता हू कि मै जीवित रहूगा, और तुम सबके साथ रहूगा कि विश्वास मे तुम्हारी प्रगति हो, उसमे आनन्द का योग हो। इस प्रकार जब मै तुम्हारे पास लौटू तो मसीह यीशु मे तुम्हारा मुझपर असीम अभिमान हो।

*अथवा 'तुम विभिन्न वस्तुओ का विवेचन कर सको'

धैर्य धारण करने के लिए उपदेश

केवल एक बात का ध्यान रखो कि तुम्हारा आचरण मसीह के शुभ-सन्देश के योग्य हो जिसे चाहे मैं आकर तुम्हें देखूं अथवा दूर रहूं, मैं तुम्हारे सम्बन्ध में यही सुनूं कि तुम एक आत्मा में स्थिर हो, एक मन होकर शुभ-सन्देश के विश्वास के लिए प्रयत्नशील हो और विरोधियों से किसी बात में भयभीत नहीं होते—यह उनके लिए विनाश का, पर तुम्हारे उद्धार का स्पष्ट प्रमाण है, और यह परमेश्वर की ओर से है। मसीह के कारण तुमको यह गौरव प्राप्त हुआ है कि तुम मसीह पर केवल विश्वास ही न करो, वरन् उनके लिए कष्ट भी सहो। तुम भी वैसे ही संघर्ष में लगे रहो जिसे तुमने मुझे करते देखा था, और सुनते हो कि अब भी कर रहा हूं।

एकता और प्रेम रखने के लिए निवेदन

इसलिए यदि मसीह से तुम्हें प्रोत्साहन मिले, प्रेम की प्रेरणा प्राप्त हो, यदि मसीह में आत्मा की संगति है, प्रीति और सहानुभूति है, तो मेरे आनन्द को ऐसा पूर्ण करो कि तुम एक-सी भावना, एक-सा प्रेम, एक मन और एक दृष्टिकोण रखो।

दलबन्दी और मिथ्या अभिमान से कोई काम न करो। परन्तु नम्रतापूर्वक अपनी अपेक्षा दूसरों को श्रेष्ठ मानो। तुममें से प्रत्येक व्यक्ति अपना ही नहीं, वरन् दूसरों के हित का भी ध्यान रखे।

विनम्रता और स्वार्थ-त्याग का उदाहरण

एक-दूसरे के प्रति वही भावना रखो जो मसीह यीशु में थी।* यद्यपि मसीह परमेश्वर स्वरूप थे, फिर भी परमेश्वर के तुल्य होने को उन्होंने अपने अधिकार में करने की वस्तु नहीं समझा, वरन् दास का स्वरूप ग्रहण कर अपने आप को अत्यन्त दीन कर दिया और मनुष्यों के समान हो गए। मनुष्य के रूप में प्रकट होकर मसीह ने अपने आपको विनम्र किया और यहां तक आज्ञाकारी रहे कि मृत्यु, क्रूस की मृत्यु भी स्वीकार की। इस कारण परमेश्वर ने भी मसीह को अत्यन्त उन्नत किया और उन्हें सब नामों से श्रेष्ठ नाम प्रदान किया कि यीशु के नाम पर प्रत्येक व्यक्ति घुटना टेके, चाहे वह स्वर्ग में हो या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के नीचे—और प्रत्येक मनुष्य यह स्वीकार करे कि यीशु मसीह प्रभु है, जिससे पिता परमेश्वर की महिमा हो।

उद्धार और सद् आचरण

इसलिए मेरे प्रिय भाइयो, जिस प्रकार तुम सदैव आज्ञा-पालन करते आए हो, उसी प्रकार अब भी—मेरी उपस्थिति से अधिक मेरी अनुपस्थिति में—डरते कांपते अपने उद्धार [illegible]
की निष्कलंक सन्तान बन कर संसार में तारों के सदृश चमको और जीवन के शुभ-सन्देश पर अटल रहो। इससे मसीह के दिन मुझे गर्व होगा कि तुम्हारे लिए मेरा भागना-दौड़ना और परिश्रम करना व्यर्थ नहीं गया। सम्भवतः मुझे तुम्हारे विश्वास रूपी बलि और उपासना में अपने प्राण की आहुति देनी पड़े। यदि ऐसा हुआ तो मैं आनन्दित हूं, और तुम सबके साथ आनन्द मनाता हूं। इसी प्रकार तुम भी आनन्दित रहो और मेरे साथ आनन्द मनाओ।

तिमुथियुस

प्रभु यीशु में मुझे आशा है कि मैं शीघ्र ही तिमुथियुस को तुम्हारे पास भेजूंगा जिससे तुम्हारे सम्बन्ध में समाचार सुनकर मुझे प्रसन्नता हो। मेरे पास उसके समान कोई अन्य

*अथवा, 'जिस भावना का मसीह यीशु में अनुभव करते हो, वही भावना एक दूसरे के प्रति रखो।'

ऐसा व्यक्ति नही जिसे तुम्हारे सम्बन्ध मे चिन्ता हो। सब अपने-अपने स्वार्थ मे लिप्त है, यीशु मसीह के कार्य मे नहीं। पर तिमुथियुस की सच्चरित्रता तुम जानते हो। जैसे पुत्र पिता के साथ रहता है वैसे ही उसने यीशु मसीह का शुभ-सन्देश सुनाने मे मेरे साथ सेवा की है। मुझे आशा है कि ज्योंही अपने सम्बन्ध मे मुझे कुछ मालूम हो जाएगा, मै उसको तुम्हारे पास भेजूगा। प्रभु मे मुझे निश्चय है कि मै स्वय भी शीघ्र आऊगा।

इपफ्रुदीतुस

मै इपफ्रुदीतुस को तुम्हारे पास भेजना आवश्यक समझता हू। वह मेरा बन्धु, सहयोगी और साथी सैनिक है। वह तुम्हारा मेरी आवश्यकता-पूर्ति के लिए दूत और सेवक है। वह तुम सबके लिए उत्कण्ठित है, और इसलिए और भी व्याकुल है कि तुम्हे उसकी बीमारी का समाचार मालूम हो गया है। बीमारी ! सच तो यह है कि वह मृत्यु के समीप पहुच चुका था, परन्तु उस पर परमेश्वर की दया हुई, और न केवल उसपर वरन् मुझपर भी कि मुझे उसकी मृत्यु के कारण दु ख पर दु ख न सहने पडे। मै उसे भेजने को इस कारण और भी उत्सुक हू कि तुम उससे पुन मिलकर प्रसन्न हो और मेरी व्यथा भी कम हो जाए। अत प्रभु मे बडे आनन्द से उसका स्वागत करो, और ऐसे लोगो का सम्मान करो। मसीह के कार्य के लिए उसने अपने प्राण को दाव पर लगा दिया और मृत्यु के मुह तक पहुच गया मानो मेरे प्रति तुम्हारी सेवा मे जो अपूर्णता रह गई हो, उसे पूर्ण करे।

जाति-कुल आदि बाह्य अधिकारों का कुछ मूल्य नहीं

मेरे भाइयो, प्रभु यीशु मसीह मे आनन्दित रहो।*

बारम्बार वही बात लिखने मे मुझे कोई कष्ट नही पर इसमे तुम्हारा कल्याण है।

कुत्तो से सावधान, कुकर्मियो से सावधान, अग-भग करनेवालो से सावधान। वास्तविक खतनेवाले तो हम है, क्योंकि हम परमेश्वर के आत्मा मे आराधना करते है,** मसीह यीशु पर गर्व करते है और बाह्य प्रथाओ पर भरोसा नही रखते। मै तो बाह्य प्रथाओ पर भी भरोसा रख सकता हू। यदि किसी को बाह्य प्रथाओ पर भरोसा है तो मुझे उससे भी अधिक हो सकता है आठवे दिन मेरा खतना हुआ, इस्राएली जाति के बिन्यामिन कुल का हू, इब्रानियो का इब्रानी, व्यवस्था-पालन की दृष्टि से फरीसी, [illegible] दृष्टि से [illegible] का उत्पीडक, व्यवस्था पर आधारित धार्मिकता की दृ[illegible] इन[illegible] मैने मसीह के लिए हानि समझा।

मसीह यीशु ने मुझे अपनाया है। भाइयो, मैं नहीं मानता कि मैं उस लक्ष्य तक पहुंच चुका हू, केवल इतना कह सकता [redacted] कि बीती को भूलकर, जो आगे है उसके लिए प्रयत्नशील हू। मैं लक्ष्य की ओर बढ़ता [redacted] कि पुरस्कार अर्थात् मसीह यीशु में परमेश्वर के स्वर्गिक आवाहन के योग्य बन सकू। हममें जो अनुभवी व्यक्ति है उनकी ऐसी भावना होनी चाहिए, परन्तु यदि किसी विषय में तुम्हारे विचार भिन्न है तो परमेश्वर उसे भी तुम पर प्रकाशित करेगा। किन्तु जहा तक हम पहुच चुके है, उसके अनुरूप हम आचरण करे।

पौलुस का अनुकरणीय उदाहरण

भाइयो, सब मिलकर मेरा अनुकरण करो। हमारे जीवन में तुम्हें एक आदर्श प्राप्त है, उसके अनुसार जो चलते है उनपर ध्यान दो। क्योंकि मैं तुमसे पहले अनेक बार कह चुका हू और अब भी रो-रोकर कहता हू कि ऐसे बहुत है जो उस व्यक्ति के समान आचरण करते है जो मसीह के क्रूस का बैरी है। उनका अन्त सर्वनाश है, उनका ईश्वर पेट है। वे अपनी निर्लज्जता को अपना गौरव समझते है। उनकी भावना सासारिक है।

मसीही नागरिकता स्वर्ग में है

हमारी नागरिकता स्वर्ग में है जहा से हम अपने उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के आने की प्रतीक्षा करते है। वह अपनी सामर्थ्य से सब वस्तुओं को अपने अधीन करेंगे, और उसी सामर्थ्य से हमारे अधम शरीर का ऐसा रूपान्तर करेंगे कि वह उनके महिमामय शरीर के सदृश तेजोमय हो जाएगा।

उपदेश

मेरे प्रिय भाइयो, मेरी उत्कंठा के पात्र, मेरे आनन्द, मेरे मुकुट, प्रभु में इसी प्रकार स्थित रहो, मेरे प्यारो!

मैं यूओदिया से अनुरोध करता हू और सन्तुखे से भी कि वे प्रभु में एक भावना से रहे। हे मेरे सच्चे सहयोगी, मैं तुमसे निवेदन करता हू कि तुम इन दोनो बहनो की सहायता करो, क्योंकि उन्होने मेरे साथ-साथ मसीह यीशु के शुभ-सन्देश के लिए, क्लेमेंस और मेरे अन्य सहयोगियों सहित, जिनके नाम जीवन की पुस्तक में है, परिश्रम किया है।

प्रभु में सदा आनन्दित रहो। मैं फिर कहता हू, आनन्दित रहो। तुम्हारी शालीनता सब मनुष्यों पर प्रकट हो। प्रभु समीप है। किसी बात की चिन्ता न करो वरन् हर समय प्रार्थना, याचना और निवेदन, कृतज्ञता के साथ परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत करो। तब परमेश्वर की शान्ति, जो बुद्धि से नितान्त परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारो को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।

भाइयो, जो कुछ सत्य है, जो कुछ आदरणीय है, जो कुछ न्यायसंगत है, जो कुछ शुद्ध है, जो कुछ प्रेममय है, जो कुछ मनोहर है—यदि कहीं भी कुछ उत्तमता अथवा सराहनीय गुण है—तो इन पर मनन किया करो। जो कुछ तुमने मुझसे सीखा, ग्रहण किया, सुना और मुझमें देखा है, उसके अनुसार आचरण करो, और परमेश्वर, जो शान्ति का स्रोत है, तुम्हारे साथ रहेगा।

फिलिप्पी निवासियों की ममता और सहायता के लिए पौलुस की कृतज्ञता

प्रभु में मुझे बड़ा आनन्द है कि इतने समय पश्चात् अब तुम्हें मेरा ध्यान आया। तुम्हें मेरा ध्यान तो था किन्तु तुम्हें अवसर नही मिला था। मैं अपने अभाव के सम्बन्ध में नहीं कह रहा, क्योंकि चाहे मेरी परिस्थिति कैसी ही क्यो न हो, मैंने आत्म-सन्तोष करना सीख लिया है। मैं जानता हू कि दीन होना क्या है, और मैं यह भी जानता [redacted] कि सम्पन्न होना क्या है। प्रत्येक दशा और सब परिस्थितियो में, तृप्त होने का और भूखा रहने का, सम्पन्न रहने का और

अभाव सहने का रहस्य मैंने जान लिया है। जो मुझे शक्ति प्रदान करता है, [illegible]
कर सकता हूं। फिर भी तुमने अच्छा किया कि संकट के समय मेरा साथ दि[illegible]

फिलिप्पी निवासियो, जैसा तुम स्वयं जानते हो कि जब मैंने प्रभु यीशु [illegible]

[illegible]

के द्वारा तुम्हारी भेजी हुई वस्तुएं पाकर मैं सन्तुष्ट हूं। यह भेंट मधुर सुगन्ध है, [illegible] है जो परमेश्वर को प्रिय है। मेरा परमेश्वर मसीह यीशु में स्थित अपने महान कोष से [illegible] प्रत्येक आवश्यकता पूरी करेगा। हमारे पिता परमेश्वर की महिमा युगानुयुग हो।

नमस्कार

प्रत्येक सन्त को जो मसीह यीशु में हैं, मेरा नमस्कार। जो भाई मेरे साथ हैं [illegible] नमस्कार कहते हैं। सब सन्तों का, विशेषकर सम्राट के राजभवन में सेवा करनेवाले [illegible] का, तुम्हें नमस्कार मिले।

प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ हो।

१ फिलिप्पी नगर के मसीहियों के लिए प्रेरित पौलुस ने कौन-सी प्र[illegible] की? (१. ३–११)

२ प्रेरित पौलुस ने २ १–११ में यीशु के जन्म की किस प्रकार व्य[illegible] की है? पद २ ५ से उसका क्या अर्थ है?

११. धर्मगुरुओं के नाम प्रेरित पौलुस का पत्र

(१, २ तीमुथियुस, तीतुस)

प्रेरित पौलुस के अन्तिम तीन पत्र कारागार से लिखे गए थे। उन[illegible] ये पत्र कलीसिया के नेताओं—तीमुथियुस (तिमोथी) और तीतुस (टाइट[illegible]) को लिखे थे। तीमुथियुस को उन्होंने अपना पुत्र माना था।

अभिवादन

हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर और हमारी आशा के आधार मसीह यीशु की आ[illegible] अनुसार, प्रेरित पौलुस की ओर से,

विश्वास की दृष्टि से मेरे सच्चे पुत्र तिमुथियुस के नाम पत्र।

पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुम्हें अनुग्रह, दया और शान्ति प्राप्त हो।

व्यर्थ वाद-विवाद से सावधान

मैंने मकिदुनिया प्रदेश जाते समय तुमसे अनुरोध [illegible] इफिसुस नगर में [illegible] रहो, क्योंकि वहां कुछ ऐसे लोग [illegible] शिक्ष[illegible] थे। अतः मैंने तुमसे कहा कि तुम उन लोगों को आ[illegible] [illegible] और अन्तहीन वंशावलियों में मन न लगाएं [illegible] [illegible]ता है [illegible] प्रकट नहीं होती, केवल [illegible]

प्रेम, शुद्ध अन्त:करण और निष्कपट विश्वास से उत्पन्न होता है। कुछ लोग इस लक्ष्य से भटककर व्यर्थ वाद-विवाद मे उलझ गए है। वे व्यवस्था-आचार्य होना चाहते है, किन्तु जो कहते है और जिन विषयो पर वे बल देते है, उन्हे समझते नही।

हम सब जानते है कि यदि व्यवस्था का उचित उपयोग किया जाए तो वह अच्छी वस्तु है। यह जानते हुए कि व्यवस्था की रचना धर्मात्माओ के लिए नही, वरन् व्यवस्था और अनुशासन से रहित मनुष्यो, भक्तिहीन और पापियो, अपवित्र और सासारिक मनुष्यो, माता-पिता के हत्यारो, व्यभिचारियो, पुरुषगामियो, मनुष्यो के हरण करनेवालो, असत्य-प्रिय मनुष्यो, झूठी शपथ लेनेवालो तथा ऐसे मनुष्यो के लिए है जो सत्य-सिद्धान्त एव मसीह के शुभ-सन्देश के विरोधी है। यह शुभ-सन्देश धन्य परमेश्वर की महिमा का सन्देश देता है और मुझे सौपा गया है।

परमेश्वर के अनुग्रह के कारण प्रेरित बने

मैं अपने प्रभु मसीह यीशु को धन्यवाद देता हू जिन्होने मुझे सामर्थ्य प्रदान की है। उन्होने मुझे, जो पहले ईश-निन्दक, अत्याचारी एव उद्दण्ड मनुष्य था, विश्वास के योग्य समझा और सेवा पर नियुक्त किया। उनकी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मुझसे ये सब काम अज्ञान और अविश्वास की दशा मे हुए थे। हमारे प्रभु का अनुग्रह मुझे प्रचुर मात्रा मे मिला, साथ ही विश्वास एव प्रेम भी प्राप्त हुआ जो मसीह यीशु मे है। यह बात सच और सर्वथा मानने योग्य है कि मसीह यीशु ससार मे पापियो के उद्धार के लिए आए, जिनमे सबसे बड़ा पापी मैं हू। मुझपर दया इस कारण हुई कि मसीह यीशु सबसे पहले मुझमे अपनी सम्पूर्ण सहिष्णुता प्रकट करे, और उन लोगो के सम्मुख एक उदाहरण उपस्थित करे जो शाश्वत जीवन प्राप्त करने के लिए मसीह पर विश्वास करेगे। युगो के अधिपति, अविनाशी, अदृश्य एव एकमात्र परमेश्वर का सम्मान एव महिमा युगानुयुग होती रहे। आमेन।

पुत्र तिमुथियुस, जो नबूवतें तुम्हारे विषय मे हुई उनके अनुसार मैं तुम्हे यह उत्तरदायित्व सौपता हू कि उन नबूवतो से प्रेरणा प्राप्त कर शुभ सग्राम मे लगे रहो और विश्वास एव शुद्ध अन्त:करण को सुरक्षित रखो। अन्त:करण का हनन करने के कारण कुछ लोगों की विश्वास रूपी नौका डूब गई। उन्ही मे से हुमिनयुस और सिकन्दर, जिन्हे मैने शैतान को सौप दिया है कि वे सीख ले कि परमेश्वर की निन्दा नही करनी चाहिए।

सार्वजनिक उपासना कैसे करें

मेरा पहला अनुरोध यह है सब मनुष्यो के लिए, विशेषकर राजाओ और उच्च अधिकारियों के लिए, याचना, प्रार्थना, निवेदन और धन्यवाद अर्पित किए जाए, जिससे हम भक्ति और गम्भीरता के साथ निर्विघ्न शान्त जीवन बिता सके। यह उत्तम बात है और हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को प्रिय है। उनकी इच्छा है कि सब लोग उद्धार प्राप्त करे और सत्य को जानें।

परमेश्वर एक है, और मानव एव परमेश्वर के बीच मध्यस्थ भी एक ही है, अर्थात् मसीह यीशु, जो स्वय मानव है। उन्होने अपने आपको सबके विमोचन के लिए अर्पित कर दिया, इसकी साक्षी यथासमय दी गई। मैं सच कहता हू, झूठ नही बोलता कि इसी उद्देश्य से मैं प्रचारक, प्रेरित एव गैर-यहूदियो के लिए विश्वास और सत्य का शिक्षक नियुक्त हुआ हू।

अतएव मै चाहता हू कि प्रत्येक स्थान मे पुरुष क्रोध एव विवाद मे न पड़े पर पवित्र हाथो को उठाकर प्रार्थना करे। इसी प्रकार स्त्रियां भी शील और सयम के साथ शिष्ट वेशभूषा मे अपना श्रृगार करे। वे केशविन्यास तथा स्वर्ण आभूषणो से नही, मोतियो और बहुमूल्य वस्त्रो से नही वरन् अच्छे कामो से अपने को सजाया-सवारा करे, जैसा उन स्त्रियो

को शोभा देता है जो अपने को परमेश्वर की भक्त कहती है।

यह उचित है कि वे शान्ति और पूर्ण अधीनता से शिक्षा ग्रहण करें। मेरी अनुमति नहीं है कि स्त्री उपदेश दे अथवा पुरुष पर प्रभुता जताए। वह चुप रहे, क्योंकि पहले आदम की रचना हुई तब हव्वा की, इसके अतिरिक्त आदम बहकावे में नहीं आया किन्तु स्त्री भ्रम में पड़कर पतित हुई। फिर भी यदि स्त्री विश्वास, प्रेम, पवित्रता और संयम में स्थिर रहे तो मातृत्व द्वारा उसका उद्धार होगा।

धर्माध्यक्ष के गुण

यह कथन सच है कि यदि कोई धर्माध्यक्ष होने की आकांक्षा करता है तो वह एक उत्तम कार्य करने का अभिलाषी है। पर यह आवश्यक है कि धर्माध्यक्ष निष्कलंक हो, पत्नीव्रती* हो, संयमी, विचारवान्, सुशील, आतिथ्यप्रेमी एवं निपुण शिक्षक हो, शराबी और मार-पीट करनेवाला न हो, किन्तु क्षमाशील हो। वह झगड़ालू और लोभी भी न हो। वह अपने घर का अच्छा संचालक हो, और अपने बाल-बच्चों को वश में रखता हो, और वे उसका सम्मान करते हों। क्योंकि यदि कोई अपने घर का ही प्रबन्ध करना नहीं जानता है तो वह परमेश्वर की कलीसिया की क्या देखभाल करेगा?

वह नवदीक्षित न हो कि, अहंकार से फूलकर शैतान के सदृश* दण्ड पाए।

यह भी आवश्यक है कि वह बाहर जनता में प्रतिष्ठित हो, कहीं ऐसा न हो कि वह अपयश का पात्र बने और शैतान के फन्दे में पड़ जाए।

उप-पुरोहित के गुण

इसी प्रकार धर्माध्यक्ष के सहायक** अच्छे आचरणवाले हों। उनकी बातों में कथनी और करनी का अन्तर न हो। वे शराबी न हों, और अनुचित लाभ के इच्छुक न हों। उन्हें विश्वास के रहस्य का ज्ञान हो और उनका अन्तःकरण निर्मल हो। पहले उनकी परीक्षा होनी चाहिए, फिर यदि निष्कलंक प्रमाणित हों तो सेवक बनें।

इसी प्रकार स्त्रियां अच्छे आचरणवाली हों, परनिन्दक न हों। वे संयमी और प्रत्येक बात में विश्वास-योग्य हों।

धर्माध्यक्ष के सहायक पत्नीव्रती हों, अपनी सन्तान तथा परिवार का अच्छा प्रबन्ध करते हों। जिन्होंने धर्माध्यक्ष के सहायक के पद पर अच्छे ढंग से कार्य किया है, वे उत्तम पद प्राप्त कर सकते हैं और मसीह यीशु के प्रति विश्वास के विषय में निर्भीकता से बोल सकते हैं।

मसीही धर्म का रहस्य

मुझे आशा है कि मैं तुम्हारे पास शीघ्र आऊंगा तो भी मैं तुम्हें ये बातें लिख रहा हूं। यदि मेरे आने में विलम्ब हो जाए, तो तुम्हें ज्ञात रहे कि परमेश्वर के परिवार में, जो जीवन्त परमेश्वर की कलीसिया है और सत्य का स्तम्भ एवं आधार है, कैसा व्यवहार होना चाहिए। इसमें सन्देह नहीं कि हमारे धर्म का रहस्य महान है—

वह मानव-रूप में प्रकट हुए,
पवित्र आत्मा द्वारा निर्दोष प्रमाणित हुए,
और स्वर्गदूतों को दिखाई दिए।
अन्य-जातियों में उनका प्रचार हुआ,
पृथ्वी पर लोगों ने उन पर विश्वास किया,
और महिमा में वह स्वर्ग उठा लिए गए।

*अथवा 'केवल एक बार विवाहित'
**अथवा, 'दास,' अथवा 'डीकन' अथवा उप-पुरोहित

झूठी शिक्षा के विरोध में

पवित्र आत्मा का स्पष्ट कथन है कि अन्त समय में अनेक लोग विश्वास से भटक जाएंगे और धूर्तों की एवं दुष्टात्माओं की शिक्षा मानने लगेंगे। यह उन झूठे लोगों की पाखण्डपूर्ण शिक्षा के कारण होगा जिनके अन्तःकरण कलुषित हो चुके हैं। ये लोग विवाह का निषेध करते हैं, ये भोजन की कुछ वस्तुओं को त्याज्य बताते हैं, यद्यपि परमेश्वर ने इन वस्तुओं की रचना इसलिए की है कि विश्वासी और सत्य जाननेवाले विवेकी मनुष्य इन्हें कृतज्ञतापूर्वक ग्रहण करें। परमेश्वर की बनाई प्रत्येक वस्तु अच्छी है। जो कुछ धन्यवादपूर्वक ग्रहण किया जाता है वह त्याज्य नहीं है, क्योंकि वह परमेश्वर के वचन एवं प्रार्थना द्वारा शुद्ध हो जाता है।

मसीह का आदर्श सेवक

यदि भाइयों को ऐसा परामर्श दोगे तो तुम मसीह यीशु के आदर्श सेवक प्रमाणित होगे—ऐसा सेवक जिसकी विश्वास के सिद्धान्तों में शिक्षा-दीक्षा हुई है और जो इन सिद्धान्तों को कार्यरूप में परिणत करता है। बुढ़ियों की निस्सार कथा-कहानियों से दूर रहो और धर्म की साधना में मन लगाओ। शारीरिक व्यायाम से थोड़ा लाभ होता है, किन्तु धर्म की साधना से प्रचुर लाभ है, क्योंकि इसपर वर्तमान और भावी जीवन की प्रतिज्ञा निर्भर है। यह कथन विश्वसनीय और सब प्रकार से माननेयोग्य है। इसलिए हम परिश्रम और प्रयत्न करते हैं, क्योंकि जीवन्त परमेश्वर हमारी आशा का आधार है और वह सब मनुष्यों का विशेषकर विश्वासियों का उद्धारकर्ता है।

तिमुथियुस का व्यक्तिगत जीवन

इन बातों का आदेश और उपदेश दो। तुम्हारी युवावस्था के कारण कोई तुम्हें तुच्छ न समझे। बातचीत में, व्यवहार में, प्रेम में, विश्वास में और शुद्धता में विश्वासियों का आदर्श बनो। मेरे आने तक धर्मशास्त्र-पाठ, उपदेश एवं धर्मशिक्षा देने में तत्पर रहो। अपने हृदय में स्थित आध्यात्मिक वरदान की उपेक्षा मत करो जो तुम्हें नबूवत द्वारा धर्मवृद्धों के हाथ रखते समय प्राप्त हुआ था। मन लगाकर इन बातों का अभ्यास करो जिससे तुम्हारी प्रगति सब पर प्रकट हो। अपने विषय में एवं शिक्षा के विषय में जागरूक रहो और उसपर स्थिर रहो। ऐसा करने से तुम अपना और अपने श्रोताओं का उद्धार करोगे।

लोगों के प्रति व्यवहार

किसी भी वृद्ध को न डाटो, उससे ऐसे अनुरोध करो मानो वह तुम्हारा पिता है। युवकों से भाई, वृद्धाओं से माता और युवतियों से बहिन के समान पवित्र भाव से व्यवहार करो।

जो विधवाएं सचमुच निस्सहाय हैं, उनका सम्मान करो। किन्तु यदि किसी विधवा के पुत्र-पौत्र हों तो पुत्र-पौत्रों को चाहिए कि वे सर्वप्रथम अपने परिवार के प्रति धर्म निभाएं एवं अपने पूर्वजों के प्रति उपकार करना सीखें, क्योंकि यह परमेश्वर को प्रिय है।

जो यथार्थ में विधवा है, जिसका कोई नहीं है, वह केवल परमेश्वर पर आशा रखती है और दिन-रात प्रार्थना एवं उपासना में लवलीन रहती है, परन्तु जो भोग-विलास में पड़ गई है, वह जीवित होते हुए भी मृत है।

अतः तुम उन्हें उपर्युक्त आदेश दो जिससे वे निन्दा से बची रहें। यदि कोई व्यक्ति अपने सम्बन्धियों की और विशेषकर अपने परिवार की, चिन्ता नहीं करता तो वह अपने विश्वास को त्याग चुका है और अविश्वासी से भी गया-बीता है।

उसी विधवा का नाम सूची में लिखा जाए जो साठ वर्ष से कम न हो, पतिव्रता रही हो, और जिसके अच्छे कामों के विषय में लोग साक्षी देते हों कि उसने अपने बच्चों का अच्छा पालन-पोषण किया है, अतिथि-सेवा की है, भक्तों के चरण धोए हैं, दीन-दुखियों की सहायता की है

और सदा अच्छे कामों में लगी रही है।

तरुण विधवाओं को मान्यता न दी जाए, क्योंकि जब वे वासनाओं के प्रवाह में मसीह से दूर हो जाती है तो विवाह की कामना करने लगती है और अपनी पहली प्रतिज्ञा भंग कर अपराधिनी बनती है। इसके अतिरिक्त वे घर-घर घूमकर आलसी रहना सीखती है, और न केवल आलसी रहना, किन्तु बातूनी बनना, दूसरों के कामों में व्यर्थ हाथ डालना और ऐसी बाते कहना जो कहना नही चाहिए। मेरी इच्छा है कि तरुण विधवाएं विवाह करें, सन्तान उत्पन्न करें, अपने घरों का प्रबन्ध करें और विरोधियों को आलोचना करने का अवसर न दें, क्योंकि कुछ सन्मार्ग से विचलित हो शैतान का अनुसरण करने लगी है।

यदि किसी विश्वासी स्त्री के परिवार में विधवाएं है तो वह स्वयं उनकी सहायता करे। उनका भार कलीसिया पर नहीं डालना चाहिए, जिससे कलीसिया सचमुच निराश्रित विधवाओं की सहायता कर सके।

धर्मवृद्ध

जो धर्मवृद्ध सुयोग्य नेता है, वे दूने आदर-सम्मान के योग्य समझे जाएं, विशेषकर वे जो प्रचार और धर्मशिक्षा-कार्य में परिश्रम करते है। क्योंकि धर्मशास्त्र का कथन है, 'दाय करते बैल का मुंह न बांधना' और फिर 'मजदूर उचित मजदूरी का अधिकारी है।'

किसी धर्मवृद्ध के विरुद्ध कोई दोषारोपण स्वीकार न करना, जब तक दो या तीन गवाह उसकी पुष्टि न करें।

पाप करनेवालों की सबके सम्मुख भर्त्सना करो जिससे दूसरों को भी डर हो जाए। मैं तुमको परमेश्वर, मसीह यीशु और उनके चुने हुए स्वर्गदूतों की उपस्थिति में चेतावनी देता हूं कि पूर्वाग्रह से रहित हो इन आदेशों का पालन करो और पक्षपातवश कुछ न करो। किसी का शीघ्रता से सेवा-कार्य के लिए अभिषेक न करो* दूसरे के पापों में सहयोगी न हो। अपने आपको पवित्र बनाए रखो।

अब से केवल जल ही न पियो, किन्तु पेट के लिए और बार-बार होनेवाले रोग के कारण थोड़े अंगूर-रस का भी उपयोग कर लिया करो।

कुछ लोगों के पाप प्रत्यक्ष है और वे पाप उनके लिए दण्ड का कारण बन जाते हैं। परन्तु दूसरों के पाप विलम्ब से प्रकट होते है। इसी प्रकार शुभ-कार्य सब पर प्रकट हो जाते है, और यदि वे प्रकट नहीं होते तो भी अधिक समय तक गुप्त नहीं रह सकते।

दास

जो दासता के बन्धन में है,** वे अपने स्वामियों को पूर्ण सम्मान का पात्र समझें, जिससे परमेश्वर के नाम की तथा उनकी धर्मशिक्षा की निन्दा न हो। दास अपने सहविश्वासी-स्वामियों का, बन्धु होने के कारण अनादर न करें वरन् और भी उत्तमता से उनकी सेवा करें, क्योंकि जो स्वामी उनकी सेवा का लाभ उठाते है, वे उनके अपने ही बन्धु एवं प्रियजन हैं।

असत्य शिक्षा

इन बातों की शिक्षा दो और इनके लिए लोगों को प्रोत्साहित करो। यदि कोई इससे भिन्न शिक्षा देता है, और हमारे प्रभु यीशु मसीह के कल्याणकारी वचनों को एवं धर्म-सम्मत उपदेशों को नहीं मानता, वह अहंकारी और अज्ञानी है, उसे वाद-विवाद और शब्द-कलह करने का रोग है। इस प्रकार के वाद-विवाद से ईर्ष्या, द्वेष, निन्दा एवं कुशंकाएं उठ खड़ी होती है, और उन मनुष्यों के बीच व्यर्थ झगड़े बढ़ते है, जिनके मन मलिन हैं, जो सत्य से दूर हैं और जो धर्म को लाभ का साधन मानते हैं।

*अक्षरश: 'किसी पर हाथ न रखो'

**अक्षरश: 'जो दास जुए के नीचे हैं'

सच्ची सम्पत्ति

सच पूछो तो सन्तोषी व्यक्ति के लिए धर्म है भी महान लाभ का साधन। हम संसार में न तो कुछ साथ लाए हैं और न यहां से कुछ साथ ले जाएंगे, यदि हमारे पास भोजन और वस्त्र है तो इसीसे हमें सन्तुष्ट रहना चाहिए। जो लोग धनवान् होना चाहते हैं, वे प्रलोभन के फन्दे में और अनेक मूर्खतापूर्ण एवं हानिकारक लालसाओं में पड़ जाते हैं। ये मनुष्य को पतन और विनाश के गर्त में गिरा देती हैं। पैसे का लोभ सभी बुराइयों की जड़ है। इसके प्राप्त करने के प्रयत्न में अनेक लोग विश्वास में विचलित हो गए हैं, और उन्होंने अपने हृदय को अनेक दु:खों से छलनी बना दिया है।

विश्वास का संघर्ष

परन्तु ओ परमेश्वर के भक्त, तुम इन बातों से दूर भागो और न्याय, धर्म, विश्वास, प्रेम, धैर्य एवं विनम्रता के लिए प्रयत्न करो। विश्वास का श्रेष्ठ युद्ध लड़ते रहो और शाश्वत जीवन पर अधिकार कर लो, जिसके लिए परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया है और जिसकी उत्तम गवाही तुमने अनेक गवाहों के सम्मुख दी है।

मैं सबके जीवन-दाता परमेश्वर की उपस्थिति में, और पुन्तियुस पिलातुस के सम्मुख उत्तम साक्षी देनेवाले मसीह यीशु की उपस्थिति में, तुमको यह आदेश देता हूं: हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने तक निष्कलंक और निर्दोष रूप से अपने उत्तरदायित्व का पालन करो। प्रभु यीशु, परम धन्य एवं एकमात्र अधीश्वर द्वारा निर्धारित समय पर प्रकट होंगे। यह अधीश्वर सम्राटों का सम्राट है, प्रभुओं का प्रभु है, और अमरता का एकमात्र अधिकारी है। वह अगम्य ज्योति में निवास करता है। उसे न किसी मनुष्य ने कभी देखा है और न देख सकता है। उसका सम्मान एवं प्रभुत्व युगानुयुग हो।

धनवानों को आदेश

जो इस वर्तमान संसार में धनवान् हैं, उन्हें आदेश दो कि वे अहंकार न करें, वे चंचल धन पर नहीं, वरन् परमेश्वर पर आशा रखें, जो हमें उपभोग की सभी वस्तुएं पर्याप्त मात्रा में देता है। वे अच्छा काम करें। शुभ-कर्मों से धनी बनें, दानशील हों, उदार हों और अपने लिए ऐसी निधि संचय करें जो भविष्य के लिए उत्तम आधार हो। इस प्रकार वे उस जीवन को प्राप्त कर सकेंगे जो वास्तव में जीवन है।

अन्तिम अभिवादन

तिमुथियुस, जो सत्य शिक्षा की धरोहर तुम्हें सौंपी गई है, उसकी रक्षा करो। अधार्मिक शब्द-आडम्बर और तथा-कथित 'ज्ञान' के विवादों से दूर रहो, क्योंकि ऐसा ही 'ज्ञान' स्वीकार करने से कितने ही मनुष्य विश्वास से भटक गए हैं।

तुम पर अनुग्रह हो।

२. तिमुथियुस

अभिवादन और धन्यवाद

पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, और जो उस जीवन का सन्देश सुनाता है, जो प्रभु यीशु मसीह में है और जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की है।

प्रिय पुत्र तिमुथियुस के नाम पत्र:

पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुम्हें अनुग्रह, दया और शान्ति प्राप्त हो।

मैं रात-दिन निरन्तर तुम्हें अपनी प्रार्थनाओं में स्मरण करता हूं और उस परमेश्वर

को धन्यवाद देता हू, जिसकी आराधना मै अपने पूर्वजो के सदृश शुद्ध अन्त करण से करता हू। जब मुझे तुम्हारे आसुओ का स्मरण होता है तो मुझे बडी इच्छा होती है कि तुमसे मिलू और आनन्द प्राप्त करू। मै तुम्हारा निष्कपट विश्वास नही भूलता—यह विश्वास तुम्हारी नानी लोइस तथा तुम्हारी माता यूनिके मे विद्यमान था और मुझे निश्चय है कि यह तुममे भी है।

शुभ-सन्देश के प्रति उत्साही बने रहो

अत मै तुम्हे स्मरण दिलाता हू कि परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने से तुम्हे प्राप्त हुआ है, क्रियाशील बनाए रखो। परमेश्वर ने हमे कायरता का नही, किन्तु शक्ति, प्रेम और सयम का आत्मा दिया है। इसलिए हमारे प्रभु के सम्बन्ध मे साक्षी देने से, और मुझसे जो उनके लिए बन्दी हू, लज्जित न हो, वरन् मेरे साथ प्रभु यीशु मसीह के सन्देश के लिए परमेश्वर की दी हुई सामर्थ्य से कष्ट सहन करो। परमेश्वर ने हमारा उद्धार किया है और हमे समर्पित जीवन के लिए* बुलाया है। यह हमारे कर्मों के कारण नही, वरन् परमेश्वर के उद्देश्य एव अनुग्रह के कारण हुआ जो मसीह यीशु मे युगो से पूर्व ही हमारे लिए तैयार किया गया था, परन्तु अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रकट होने से स्पष्ट प्रकाशित हुआ है; क्योकि उन्होने मृत्यु की शक्ति को नष्ट कर अपने शुभ-सन्देश द्वारा जीवन एव अमरत्व को प्रकाशवान कर दिया है।

मै इस शुभ-सन्देश का प्रचारक, प्रेरित और शिक्षक नियुक्त हुआ हू। इसी कारण मुझे यह सब कष्ट सहना पडता है। किन्तु इससे मै लज्जित नही, क्योकि मै जानता हू कि मैने किस पर विश्वास किया है, और मुझे निश्चय है कि प्रभु मे मेरी धरोहर को उस दिन तक सुरक्षित रखने की सामर्थ्य है। मसीह यीशु मे विश्वास और प्रेम के साथ जो सत्य शिक्षा तुमने मुझसे प्राप्त की है, उसे अपना आदर्श बनाओ और पवित्र आत्मा द्वारा, जो हममे निवास करता है, इस उत्तम धरोहर की रक्षा करो।

सच्ची मित्रता का उदाहरण

तुम जानते हो कि आसिया क्षेत्र मे सबने मेरा साथ छोड दिया है। इनमे फूगिलुस और हिरमुगिनेस भी है। उनेसिफुरुस के परिवार पर प्रभु दया करे क्योकि उनेसिफुरुस ने अनेक बार मेरा हृदय शीतल किया है। वह मेरी जजीरो से लज्जित नही हुआ। किन्तु जब वह रोम आया तो बडे यत्न से मुझे ढूढकर मुझसे भेट की। प्रभु वर दे कि उस दिन उस पर प्रभु की दया हो। उसने इफिसुस नगर मे जो सेवाए की, उनमे तुम भलीभाति परिचित हो।

यीशु का उत्तम सैनिक

इसलिए मेरे पुत्र, मसीह यीशु के अनुग्रह द्वारा बलिष्ठ बनो। तुमने जो बाते प्रभु के अनेक गवाहो की उपस्थिति मे मुझसे सुनी है, उन्हे ऐसे विश्वस्त मनुष्यो को सिखा दो जो दूसरो को भी शिक्षा देने योग्य है। मसीह यीशु के उत्तम सैनिक के समान मेरे साथ कठिनाइयो का सामना करो। जो सैनिक युद्ध मे जाता है, वह ससार की झझटो मे नहीं फसता कि इस प्रकार अपने भर्ती करनेवाले को प्रसन्न कर सके। इसी प्रकार अखाडे मे लडनेवाला पहलवान यदि अखाडे की विधि के अनुसार न लडे तो विजय-मुकुट नही पा सकता। परिश्रमी किसान को ही सर्वप्रथम उपज का भाग मिलना चाहिए। मेरे कथन पर ध्यान दो, प्रभु यीशु तुम्हे सब बातो की समझ देगे।

दाऊद के वशज यीशु मसीह को स्मरण रखो जो मृतको मे से जी उठे है। यही मेरा शुभ-सन्देश है जिसके कारण मै दुख उठाता हू, यहा तक कि कुकर्मी के समान बन्दीगृह मे डाला गया हू। परन्तु परमेश्वर का वचन बन्दी नही है। मै इस वचन के कारण परमेश्वर के मनोनीत लोगो के लिए सब कुछ सह रहा हू, जिसस उन्हे वह उद्धार एव शाश्वत महिमा प्राप्त हो जो

* 'पवित्र आह्वान द्वारा'

मसीह यीशु में है।

यह कथन विश्वसनीय है कि—

'यदि हम मसीह यीशु के साथ मर चुके हैं,
तो उनके साथ जीवन भी प्राप्त करेंगे,
यदि हम कष्ट सहन करें, तो उनके साथ राज्य भी करेंगे,
यदि हम उन्हें अस्वीकार करें, तो वह भी हमें अस्वीकार करेंगे।
यदि हम अविश्वास करें, तो भी वह विश्वास योग्य बने रहते हैं,
क्योंकि वह अपने स्वभाव के विरुद्ध कार्य नहीं करते*।'

व्यर्थ वाद-विवाद मत करो

लोगों को इन बातों का स्मरण कराते रहो। उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में चेतावनी दो कि वे निरे शब्दों पर वाद-विवाद न करें। इसमें लाभ नहीं, वरन् श्रोताओं की हानि ही होती है।

पूरा प्रयत्न करो कि परमेश्वर की सराहना के योग्य बन सको, ऐसे कार्यकर्ता बनो जिसे लज्जित होने की आवश्यकता नहीं और जो सत्य के वचन को उपयुक्त रीति से प्रस्तुत करता है।

व्यर्थ वाद-विवाद से बचो, क्योंकि इससे लोग अधार्मिक बनते हैं, और उनकी बातें सड़े घाव के समान फैलती हैं। हुमिनयुस और फिलेतुस इन्हीं में से हैं। वे कहते हैं कि पुनरुत्थान हो चुका है। इस प्रकार वे सत्य-मार्ग से भटक गए हैं, और अन्य लोगों के विश्वास को भी उलट-पलट कर रहे हैं। किन्तु परमेश्वर की डाली हुई पक्की नींव अटल है, जिस पर लिखा है, 'प्रभु अपनों को जानता है', तथा 'जो प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचे।'

किसी भी बड़े घर में केवल सोने और चाँदी के ही बर्तन नहीं होते किन्तु लकड़ी और मिट्टी के भी बर्तन होते हैं। इनमें से कुछ मूल्यवान समझे जाते हैं और कुछ साधारण। अतः यदि कोई अपने को बुरे कर्मों से शुद्ध रखे तो वह सम्मान का पात्र होगा, स्वामी के लिए पवित्र एवं उपयोगी समझा जाएगा और किसी भी श्रेष्ठ कार्य के लिए तैयार रहेगा।

युवावस्था की लालसाओं से दूर रहो।

जो लोग शुद्ध हृदय से प्रभु का नाम लेते हैं उनकी संगति में धर्म, विश्वास, प्रेम एवं शान्ति का अभ्यास करो।

मूर्खता और अज्ञानपूर्ण विवादों से दूर रहो। तुम जानते हो कि इनसे लड़ाई-झगड़े होते हैं, और प्रभु के सेवक को झगड़ना नहीं चाहिए। वह सब पर दयालु हो, निपुण शिक्षक हो, क्षमाशील हो और अपने विरोधियों को विनम्रता से समझाए। सम्भव है, परमेश्वर उन लोगों को हृदय परिवर्तन करने की एवं सत्य को पहचानने की बुद्धि दे कि वे शैतान के फन्दे से निकल सकें, जिसने उन्हें अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिए बन्दी बना लिया है।

अन्तिम दिनों में धार्मिक पतन

निश्चय जानो कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएगा, क्योंकि मनुष्य स्वार्थी, लोभी, अहंकारी, उद्दण्ड, परमेश्वर की निन्दा करनेवाले, माता-पिता की आज्ञा न माननेवाले, कृतघ्न और दुष्ट हो जाएंगे। वे स्नेहहीन, क्षमा-रहित, पर-निन्दक, असंयमी, क्रूर, भलाई के बैरी, विश्वासघाती, दुस्साहसी एवं मिथ्या अभिमानी होंगे और परमेश्वर से प्रेम न कर भोग-विलास से प्रेम करने लगेंगे। उनमें धर्म का बाह्य रूप तो मिलेगा किन्तु धर्म की शक्ति का अभाव होगा। ऐसे लोगों से दूर रहो। ये लोग घरों में दबे पाँव घुस आते हैं और उन मूर्ख स्त्रियों को भ्रम में डाल देते हैं जो पापों से दबी हैं, अनेक प्रकार की दुर्वासनाओं में फँसी हैं,

*अक्षरश: 'अपने को अस्वीकार नहीं कर सकते'

और जो सदा सीखती रहती है परन्तु सत्यज्ञान प्राप्त नहीं कर पातीं। जिस प्रकार यन्नेस और यम्ब्रेस ने मूसा का विरोध किया, उसी प्रकार ये लोग भी सत्य का विरोध करते है, इनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है और ये प्रभु के विश्वास के योग्य नहीं रहे। अब ये आगे नहीं बढ़ सकेंगे, क्योंकि मूसा के विरोधियों के समान इनकी मूर्खता भी सब पर प्रकट हो जाएगी।

अन्तिम उपदेश

तुमने मेरी शिक्षा, मेरे आचरण, मेरे उद्देश्य, मेरे विश्वास, सहिष्णुता, प्रेम-भावना, और परिश्रम का अनुकरण किया है। तुम उन अत्याचारों एवं कष्टों से परिचित हो जो मुझे अन्ताकिया, इकुनियुम और लुस्त्रा में उठाने पड़े। किन्तु प्रभु ने उन सब में मेरी रक्षा की। इसमें सन्देह नहीं कि जो मसीह यीशु में धार्मिक जीवन बिताना चाहते है, उन सबको अत्याचार सहने पड़ेंगे, पर दुराचारी और धूर्त लोग दूसरों को धोखा देते और स्वयं धोखा खाते हुए बिगड़ते चले जाएंगे। किन्तु जहां तक तुम्हारा सम्बन्ध है, उन सब बातों पर अटल रहो जिन्हें तुमने सीखा है और जिनपर तुमने विश्वास किया है। स्मरण रखो कि किनसे तुमने यह सब सीखा। बचपन से ही तुम पवित्र धर्मशास्त्र से परिचित हो। धर्मशास्त्र तुम्हें उद्धार पाने की बुद्धि दे सकता है, और यह उद्धार मसीह यीशु में विश्वास करने से प्राप्त होता है। समस्त धर्मशास्त्र की रचना परमेश्वर की प्रेरणा से हुई है और वह धार्मिक जीवन की शिक्षा के लिए, ताड़ना के लिए, सुधार तथा उपदेश के लिए उपयोगी है, जिससे परमेश्वर का भक्त योग्य बने और प्रत्येक शुभ-कार्य को पूरा कर सके।

परमेश्वर की उपस्थिति में और मसीह यीशु की उपस्थिति में, जो जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए आनेवाले है, उनके प्रकटीकरण एवं उनके राज्य की दुहाई देकर मैं तुम्हें यह चेतावनी देता हू, कि शुभ-सन्देश का प्रचार करो और समय-असमय इसी प्रयत्न में लगे रहो। पूरी सहनशीलता और उपदेश द्वारा मनुष्यों को समझाओ, डांटो और प्रोत्साहित करो।

ऐसा समय आएगा जब लोगों को कल्याणकारी शिक्षा पसन्द नहीं आएगी। वे अपनी इच्छाओं का अनुसरण कर अपने कानों को तृप्त करने के लिए बहुत-से उपदेशकों को बटोरेंगे, सत्य की ओर से कान फेर लेंगे और मनगढ़न्त कथा-कहानियों में मन लगाएंगे। किन्तु तुम प्रत्येक दशा में सन्तुलित रहना, कठिनाइयां सहन करना, प्रभु यीशु मसीह के सन्देश का प्रचार करना और अपना सेवाकार्य भलीभांति पूरा करना।

मैं अब अपनी पूर्ण आहुति दे रहा हू। मेरे विदा होने का समय आ गया है। मैं श्रेष्ठ युद्ध लड़ चुका हू। मैंने दौड़ पूरी कर ली है, मैंने अब तक विश्वास को सुरक्षित रखा है। भविष्य में मेरे लिए धर्म का मुकुट सुरक्षित है जिसे धर्म-निष्ठ एवं न्यायकर्ता प्रभु यीशु मुझे प्रदान करेंगे, और न केवल मुझे ही वरन् उन सबको भी जो उनके प्रकटीकरण की प्रेमपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे है।

व्यक्तिगत सन्देश

शीघ्र मेरे पास आने का प्रयत्न करो, क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है और थिस्सलुनीके नगर चला गया है। इसी प्रकार केसकेस गलातिया को और तीतुस दलमतिया प्रदेशों को चले गए। केवल लूका मेरे साथ है।

मरकुस को साथ लेते आना; क्योंकि सेवाकार्य में उससे मुझे बहुत सहायता मिलती है।

तुखिकुस को मैंने इफिसुस नगर भेजा है।

आते समय मेरा अंगरखा, जो मैं त्रोआस बन्दरगाह में करपुस के यहां छोड़ आया था, मेरी पुस्तकें और विशेषकर मेरे चर्मपत्र लेते आना।

ठठेरा सिकन्दर ने मुझे बहुत हानि पहुंचाई है। प्रभु यीशु उसे उसके कर्मों का प्रतिफल

देंगे। उससे तुम भी सावधान रहना, क्योंकि उसने हमारे उपदेशों का घोर विरोध किया है।

जब मुझे न्यायालय में पहले-पहल अपना पक्ष-समर्थन करना पड़ा तो किसी ने मेरा साथ नहीं दिया, सब साथ छोड़ गए। प्रभु करे कि इसका लेखा उन्हें न देना पड़े। परन्तु प्रभु ने मेरी सहायता की और मुझे सामर्थ्य दी जिससे मैं विश्व की सब जातियों को प्रभु का सन्देश पूर्ण रूप से सुना सकूं। मैं सिंह के मुंह से बच निकला। प्रभु यीशु मुझे सब विपत्तियों से बचाएंगे और अपने स्वर्ग-राज्य में सुरक्षित पहुंचाएंगे। उनकी महिमा युगानुयुग हो। आमेन।

अन्तिम अभिवादन

प्रिसका, अक्विला और उनेसिफुरुस के परिवार को नमस्कार। इरास्तुस कुरिन्थुस नगर में रह गया और त्रुफिमुस को मैं भी मीलेतुस बन्दरगाह में बीमार छोड़ आया हूं। शीत ऋतु से पहले चले आने का प्रयत्न करना। यूबूलुस, पूदेंस, लीनुस और क्लौदिया की ओर से और सब भाइयों की ओर से तुम्हें नमस्कार।

प्रभु तुम्हारी आत्मा के साथ हों। तुम पर अनुग्रह बना रहे।

तीतुस को प्रेरित पौलुस का पत्र

अभिवादन

परमेश्वर के सेवक तथा यीशु मसीह के प्रेरित पौलुस की ओर से तीतुस के नाम पत्र : जो विश्वास में सहभागिता की दृष्टि से मेरा सच्चा पुत्र है।

पिता परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

मैं प्रेरित-पद पर इसलिए नियुक्त किया गया हूं कि परमेश्वर के चुने हुए लोगों में विश्वास दृढ़ करूं तथा सत्य का ज्ञान सिखाऊं, जो भक्ति के अनुकूल है, और जो शाश्वत जीवन की आशा का आधार है। इस शाश्वत जीवन की प्रतिज्ञा सत्य-निष्ठ परमेश्वर ने अनादि काल से की, और अब यथा समय उसने अपने वचन को उस सन्देश द्वारा प्रकट किया जो हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर के आदेश-अनुसार मुझे सौंपा गया है।

धर्मवृद्धों की नियुक्ति

मैंने तुम्हें क्रेते द्वीप में इस उद्देश्य से छोड़ा है कि जो कार्य अपूर्ण रह गया है उसकी उचित व्यवस्था करो और नगर-नगर में मेरे आदेश के अनुसार धर्मवृद्ध नियुक्त करो। वे व्यक्ति निष्कलंक तथा पत्नीव्रती होने चाहिए। उनकी सन्तान विश्वासी हो तथा स्वच्छंदता एवं अनुशासनहीनता के दोष से मुक्त हो। परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण धर्माध्यक्ष का निष्कलंक होना अनिवार्य है। वह न स्वेच्छाचारी हो, न क्रोधी, न शराबी, न मारपीट करनेवाला और न अनुचित लाभ का इच्छुक। उसे आतिथ्य-प्रेमी, हितैषी, संयमी, न्यायप्रिय, शुद्धाचारी और जितेन्द्रिय होना चाहिए। वह धर्मसम्मत विश्वसनीय वचन पर दृढ़ रहे जिससे वह सत्य-सिद्धान्त की शिक्षा दे सके एवं विरोधियों को निरुत्तर कर सके।

पाखण्डी शिक्षक

बहुत-से लोग अनुशासनहीन, बातूनी और कपटी हैं, विशेषकर खतनावाले यहूदियों में। इनका मुंह बन्द करना आवश्यक है। ये लोग तुच्छ लाभ के लिए अनुचित बातें सिखाकर घर के घर बिगाड़ देते हैं। उन्हीं में से एक ने, जिसे वे अपना नबी मानते हैं, कहा है, 'क्रेते निवासी सदा से झूठे, हिंसक पशु और आलसी पेटू हैं।' यह कथन सत्य है, इसलिए उन्हें कड़ी चेतावनी देते रहो जिससे वे विश्वास में पक्के हो जाएं और यहूदियों की मनगढ़न्त कथा-कहानियों की ओर एवं सत्य से विमुख मनुष्यों के आदेशों की ओर ध्यान न दें।

शुद्ध मन के लिए सब कुछ शुद्ध है, किन्तु अशुद्ध और अविश्वासियों के लिए कुछ भी शुद्ध नहीं। इनके मन और अन्तःकरण दोनों ही अशुद्ध हो गए हैं। वे अधिकारपूर्वक कहते हैं

कि वे परमेश्वर को जानते है, किन्तु अपने कर्मों मे परमेश्वर को अस्वीकार करते है। वे घृणित है, आज्ञा-उल्लंघनकारी है और किसी भी शुभ-कर्म के योग्य नही।

वृद्ध और युवक का आचरण

जहां तक तुम्हारा सम्बन्ध है, तुम्हारी बाते सत्य-सिद्धान्त के अनुसार हो। बूढ़े लोगों को समझाओ कि वे संयमी, गम्भीर एव विचारशील हो और विश्वास, प्रेम एव सहिष्णुता मे अनुभवी बनें। इसी प्रकार बड़ी स्त्रियों से कहो कि अपना आचार-व्यवहार पवित्र लोगों के अनुरूप रखे। वे परनिन्दक और शराबी नही वरन् सुशिक्षा देनेवाली हो, जिससे नवयुवतियो को सिखा सके कि उन्हे अपने पति से प्रेम तथा अपनी सन्तान से स्नेह करना चाहिए। वे विचारशील, साध्वी, गृहिणी और सुशील बने एव अपने-अपने पति के अधीन रहे, जिससे परमेश्वर के शुभ-सन्देश की निन्दा न हो।

इसी प्रकार युवको को प्रोत्साहित करो कि वे संयमी बने। तुम स्वय प्रत्येक बात मे उनके सम्मुख उच्च आदर्श उपस्थित करो। तुम्हारी शिक्षा शुद्ध एव गम्भीर हो, तुम्हारे प्रवचन कल्याणकारी एव निर्दोष हो, जिससे विपक्षी हममें दोष ढूढने का कोई बहाना न पाकर लज्जित हो।

दासों से कहो कि वे सब प्रकार से अपने स्वामियों के अधीन रहे, उनको सन्तुष्ट रखे, उलट कर उत्तर न दे और चोरी-चालाकी न करे वरन् अपने को पूर्णतया विश्वसनीय प्रमाणित करे, जिससे सब बातों मे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की शिक्षा की शोभा बढ़े।

मसीही प्रेरणा का स्रोत

परमेश्वर का अनुग्रह समस्त मानव-जाति के उद्धार के लिए प्रकट हुआ है। परमेश्वर का अनुग्रह हमे यह सिखाता है कि हम दुष्कर्मों और सासारिक वासनाओं को छोड़े, इस युग मे सयम, न्याय एव धर्मयुक्त जीवन बिताए, और परमधन्य आशा की—अर्थात् महान परमेश्वर एव अपने उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रकट होने की—प्रतीक्षा करे। मसीह यीशु ने हमे बुराई से मुक्त करने के लिए अपने आपको दे दिया और हमे पवित्र कर अपने निज लोग बना लिया जो सत्कर्म करने के लिए उत्सुक रहते है।

इन सब बातों की शिक्षा दो, पूरे अधिकार के साथ लोगों का उत्साह बढ़ाओ एव उनका सुधार करो। कोई तुम्हे तुच्छ न समझे।

मसीही आचरण का आधार

लोगों को सचेत करते रहो कि वे शासकों एव अधिकारियों के अधीन रहे, आज्ञाकारी बने और प्रत्येक शुभ-कार्य के लिए तत्पर रहे, किसी की निन्दा न करे, झगड़ा न करे, विनम्र बने और सबके साथ सभ्य व्यवहार करे। एक समय हम भी निर्बुद्धि थे, आज्ञा-उल्लंघन करते थे, भ्रम मे पड़े हुए थे। वासनाओं और विविध विलासों के दास थे। हम ईर्ष्या-द्वेष मे जीवन बिताते थे, घृणित थे और एक-दूसरे से शत्रुता रखते थे। परन्तु जब हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की मनुष्यों के प्रति भलाई एव उसका प्रेम प्रकट हुआ तब उसने हमारे धर्म-कर्म के कारण नही किन्तु अपनी दया के कारण हमारा उद्धार किया। यह उद्धार नये जन्म के स्नान एव पवित्र आत्मा द्वारा नवीन बनने से हुआ। उसने हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह द्वारा यह पवित्र आत्मा हमारे ऊपर प्रचुरता से उण्डेल दिया है कि हम मसीह के अनुग्रह से धार्मिक ठहराए जाए और उस शाश्वत जीवन के उत्तराधिकारी हो जिसकी हमे आशा है। यह कथन विश्वास के योग्य है।

मैं चाहता हू कि तुम इस सम्बन्ध मे दृढतापूर्वक बोलो जिससे परमेश्वर के विश्वासी लोग सत्कर्मों मे मन लगाए। ऐसा करना उत्तम है और मनुष्यों के लिए कल्याणकारी है। पर मूर्खतापूर्ण विवादों, वंशावलियों, दलबन्दियों और व्यवस्था-विषयक झगड़ों से दूर रहो,

क्योंकि वे निष्फल और निरर्थक है।

भ्रान्त-विश्वासी को एक-दो बार समझा दो, फिर उससे दूर रहो, क्योंकि तुम जानते हो कि ऐसा मनुष्य पथ-भ्रष्ट हो चुका है। वह पाप करता ही रहेगा। वह अपने आपको दोषी ठहरा चुका है।

व्यक्तिगत आदेश

मैं तुम्हारे पास अरतिमास अथवा तुखिकुस को भेजू तो मेरे पास नीकुपुलिस नगर आने का प्रयत्न करना, क्योंकि मैने वही शीत-ऋतु बिताने का निश्चय किया है। वकील* जेनास और अपुल्लोस को यात्रा के सम्बन्ध मे सहायता देना जिससे उन्हे किसी बात का अभाव न हो। हमारे लोग भी अच्छे व्यवसायो मे लगना सीखे जिसमे वे अपनी आवश्यकताओ को पूरा कर सके और वे आलसी न बने।

मेरे सब साथियो का तुम्हे नमस्कार मिले। जो लोग विश्वास के नाते हमे प्रेम करते है, उनको नमस्कार।

शुभ सबपर अनुग्रह बना रहे।

१. तीमुथियुस के नाम प्रथम पत्र, अध्याय ३ में प्रेरित पौलुस बिशप (धर्माध्यक्ष), और उपपुरोहित (डीकन) के पदो के लिए विशेष योग्यताओ का उल्लेख करते है। वे योग्यताए कौन-कौन-सी है ?

२ तीमुथियुस के नाम द्वितीय पत्र २ १४–२६ मे प्रेरित पौलुस कौन-सा निजी परामर्श तीमुथियुस को देते है ?

*अथवा सम्भवत 'रोमी कानूनो के विशेषज्ञ'

१२. प्रकाशन ग्रन्थ
(१, २, ३, २१, २२)

पवित्र बाइबिल की अन्तिम-पुस्तक 'यूहन्ना का प्रकाशन ग्रन्थ' कहलाती है। कहा जाता है कि यह पुस्तक यीशु के शिष्य प्रेरित यूहन्ना ने लिखी है। उस समय वह अत्यन्त बूढे हो चुके थे, और मृत्यु के निकट थे। वह स्वदेश से निष्कासित हो चुके थे। उन दिनों में कलीसियाओं पर बहुत अत्याचार हो रहा था तब स्वयं प्रभु यीशु ने यूहन्ना के द्वारा यह सन्देश कलीसियाओं को दिया।

आरम्भ के तीन अध्यायों में कलीसियाओं को चेतावनी के साथ-साथ उत्साह वर्धन भी है। अन्तिम दो अध्याय में दिव्य दर्शन है जब परमेश्वर युगान्त में नई पृथ्वी और नए स्वर्ग की रचना करेगा।

भूमिका और अभिवादन

यह यीशु मसीह का प्रकाशन है। यह परमेश्वर ने यीशु मसीह को प्रदान किया कि वह अपने सेवकों पर सब बातें प्रकट करे जो शीघ्र होनेवाली है। यीशु मसीह ने अपना स्वर्गदूत भेजकर, अपने सेवक यूहन्ना को सब कुछ बताया, और यूहन्ना ने परमेश्वर के सन्देश के विषय में और यीशु मसीह की साक्षी के विषय में जो कुछ देखा, उसकी यही साक्षी दी।

धन्य है वह जो इस नबूवत के वचनों को पढ़ता है, और धन्य है वे जो इसको सुनते, तथा इसमें लिखी हुई बातों का पालन करते है, क्योंकि समय निकट है।

यूहन्ना की ओर से आसिया की सात कलीसियाओं के नाम पत्र

उसकी ओर से जो है, जो सृष्टि के आरम्भ से था, और जो आनेवाला है, तथा सात आत्माओं की ओर से जो उसके सिंहासन के सम्मुख सदा उपस्थित रहती है, एवं यीशु मसीह की ओर से जो विश्वस्त साक्षी, मृतकों में से प्रथम जीवित और पृथ्वी के राजाओं के अधिराज है—तुमको अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

यीशु मसीह ने हमसे सदा प्रेम किया है। उन्होंने अपने रक्त द्वारा हमें हमारे पापों से मुक्त कर दिया है। उन्होंने हमें एक राज्य, अर्थात् अपने पिता परमेश्वर के लिए पुरोहित बना लिया है—उसकी स्तुति और पराक्रम युगानुयुग होते रहे। आमेन।

देखो, यीशु मेघों के साथ आ रहे है। उनको सब लोग अपनी आखों से देखेंगे—वे भी देखेंगे जिन्होंने उन्हें बेधा था। पृथ्वी की सब जातियां उनके कारण पश्चात्ताप में विलाप करेंगी। तथास्तु। आमेन।

प्रभु परमेश्वर जो है, जो सृष्टि के आरम्भ से था, और जो आनेवाला है, उसी सर्वशक्ति-मान प्रभु का यह कथन है, 'अल्फा और ओमेगा मै हूं।'*

मानव-पुत्र यीशु का दर्शन

मै यूहन्ना, जो तुम्हारा भाई हूं एवं यीशु के कष्ट, राज्य और धैर्य में तुम्हारा साथी हूं—मै परमेश्वर का सन्देश सुनाने के कारण एवं यीशु की साक्षी देने के कारण पतमुस नामक द्वीप में था। प्रभु-दिवस पर मुझपर आत्मा उतरा और मैंने अपने पीछे तुरही की आवाज के समान एक बडी आवाज सुनी। कोई व्यक्ति मुझसे कह रहा था, 'जो कुछ देख रहे हो उसे पुस्तक में लिखो और इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन, थुआतीरा, सरदीस, फिलदिलफिया, और लौदीकिया नगरों की सात कलीसियाओं को भेज दो।'

मै घूम पडा कि जो मुझसे सम्भाषण कर रहे है, उन्हें देखूं। घूमने पर मुझे स्वर्ण के सात दीपाधार दिखाई दिए और दीपाधारों के मध्य *मानव-पुत्र जैसे एक पुरुष दिखाई दिए जो*

*अथवा, 'मै आदि और अन्त हूं।'

चरणों तक लम्बा वस्त्र पहिने हुए थे। वह अपनी छाती पर सोने की चौड़ी पट्टियां धारण किए थे। उनके सिर के केश सफेद ऊन एवं हिम-जैसे उज्ज्वल थे। उनकी आंखें अग्नि-ज्वाला के समान धधक रही थीं। उनके चरण भट्टी में तप्त चमचमाती धातु के सदृश, एवं उनकी आवाज प्रचुर जल की गर्जन की भांति थी। उनके दाहिने हाथ में सात तारे थे, उनके मुंह से दुधारी और तेज तलवार निकल रही थी एवं उनका मुखमण्डल दोपहर के सूर्य के समान चमक रहा था।

उन्हें देखते ही मैं मृतक की भांति उनके चरणों में गिर पड़ा। उन्होंने अपना दाहिना हाथ मुझपर रखा और कहा, 'भयभीत न हो, प्रथम एवं अन्तिम मैं हूं। मैं जीवित हूं—मैं [illegible] जया मेरे पास [illegible] त्यात्मा है, उसे [illegible] न स्वर्ण-दीपा- [illegible] दीपाधार सात कलीसियाएं हैं।

इफिसुस की कलीसिया को पत्र

'इफिसुस की कलीसिया के दूत को लिखो :

"जो अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिए हुए है, जो सोने के सात दीपाधारों के मध्य भ्रमण करता है, उसका यह कथन है : मैं तुम्हारे कार्यों से, तुम्हारे श्रम से और तुम्हारे धैर्य से परिचित हूं। मैं जानता हूं कि तुम दुष्टों को देख तक नहीं सकते। जो लोग अपने आपको प्रेरित कहते हैं, और हैं नहीं, उनको तुमने परखा है और उन्हें झूठा पाया है। तुम धैर्यवान हो, तुमने मेरे नाम के कारण दुःख उठाया है और निराश नहीं हुए। इस पर भी मुझे तुम्हारे विरुद्ध यह कहना है कि तुमने मेरे प्रति अपना पूर्व प्रेम छोड़ दिया। स्मरण करो कि किस स्थिति से तुम्हारा पतन हुआ है। अब तुम हृदय-परिवर्तन करो और पहले जैसा आचरण करो। यदि नहीं करोगे, तो मैं आकर नियत स्थान से तुम्हारा दीपाधार हटा दूंगा। फिर भी तुममें इतना तो है ही कि मेरे समान तुम भी निकोलस के अनुयायियों के कुकर्मों से घृणा करते हो। जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। जो विजय प्राप्त करे, उसे मैं परमेश्वर की स्वर्ग-वाटिका में स्थित जीवन-वृक्ष का फल खाने को दूंगा।"

स्मुरना की कलीसिया को पत्र

स्मुरना की कलीसिया के दूत को लिखो

"जो प्रथम एवं अन्तिम है, जो मर गया था परन्तु अब जीवित है, उसका यह कथन है : मैं तुम्हारे कष्ट और गरीबी से परिचित हूं। फिर भी तुम धनवान हो। मैं उन लोगों से [illegible] प्रकार तुमको दस दिन कष्ट सहन करने पड़ेंगे। मृत्यु के समय तक विश्वास में बने रहो, तब मैं तुम्हें जीवन-मुकुट प्रदान करूंगा। जिसके कान हों वह सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। जो विजय प्राप्त करे, उसे द्वितीय मृत्यु से कोई हानि नहीं होगी।"

पिरगमुन की कलीसिया को पत्र

'पिरगमुन की कलीसिया के दूत को लिखो

"जिसके हाथ में तेज और दुधारी तलवार है, उसका यह कथन है : मैं जानता हूं कि तुम कहां रहते हो—उस स्थान पर जहां शैतान की गद्दी है। तुम मेरे नाम पर अटल रहे हो और उन दिनों भी मुझपर विश्वास करने से विचलित नहीं हुए, जब मेरा विश्वस्त गवाह अन्तिपास

तुम्हारे बीच, जहां शैतान का निवास है, मारा गया। फिर भी मुझे तुम्हारे विरुद्ध कुछ कहना है तुम्हारे यहां कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जो बिलाम की शिक्षा को मानते हैं, जिसने राजा बालाक को सिखाया था इस्राएलियों को पथभ्रष्ट करे कि वे मूर्तियों का प्रसाद खाया करें और मूर्ति-पूजा* करें। इसी प्रकार तुम्हारे बीच कुछ लोग ऐसे भी हैं जो निकोलस के अनुयायियों की शिक्षा को मानते हैं। अत हृदय-परिवर्तन करो, नहीं तो मैं अविलम्ब तुम्हारे पास आऊंगा और अपने मुंह की तलवार द्वारा उनसे युद्ध करूंगा। जिसके कान हों वह सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। जो विजय प्राप्त करे, उसे मैं गुप्त मन्ना का कुछ अंश दूंगा और श्वेत पत्थर भी दूंगा। उस पत्थर पर एक नया नाम लिखा होगा जिसको पानेवाले के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता।"

थुआतीरा की कलीसिया को पत्र

'थुआतीरा की कलीसिया के दूत को लिखो

"परमेश्वर-पुत्र जिसके नेत्र अग्नि-ज्वाला के सदृश हैं, और जिसके चरण चमचमाती धातु के सदृश हैं, उसका यह कथन है मैं तुम्हारे कार्य, प्रेम, विश्वास, सेवा और धैर्य से परिचित हूं। तुम्हारे पिछले कार्य तुम्हारे पहले के कामों से बढ़कर हैं। किन्तु मुझे तुम्हारे विरुद्ध यह कहना है कि तुम उस स्त्री, इज़ेबेल, की शिक्षा सह लेते हो जो अपने आपको नबिया कहती है और मेरे सेवकों को मूर्ति-पूजा* करना तथा मूर्तियों को अर्पित प्रसाद खाना सिखाकर भ्रम में डालती है। मैंने उसे अवसर दिया कि वह पश्चात्ताप करे किन्तु वह मूर्तिपूजा से पश्चात्ताप करने को तैयार नहीं है। मैं उसे रोग-शैय्या पर पटक दूंगा और उसके साथ व्यभिचार करनेवालों को, यदि वे उसके कुकर्मों से पश्चात्ताप नहीं करते, घोर कष्ट में डालूंगा, मैं उनकी सन्तान का संहार करूंगा। इस प्रकार सब कलीसियाओं को मालूम हो जाएगा कि मैं हृदय और मन को परखता हूं और तुममें से प्रत्येक को उसके कामों के अनुसार फल दूंगा। परन्तु तुम थुआतीरा के शेष लोगों से, जो इस शिक्षा को नहीं मानते और शैतान के तथाकथित गहरे भेदों को नहीं जानते, मेरा कथन है कि तुम पर मैं अधिक भार नहीं डालूंगा—हां, जो कुछ तुम्हारे पास है उसे मेरे आगमन तक सुरक्षित रखो। जो विजय प्राप्त करे और अन्त तक मेरे कार्यों की पूर्ति करता रहे, उसे मैं राष्ट्रों पर अधिकार दूंगा। वही अधिकार जो मुझे अपने पिता से मिला है। वह लौह-दण्ड से उन पर शासन करेगा, और वे मिट्टी के बर्तनों के समान टूट जाएंगे। मैं उसे प्रभात का तारा प्रदान करूंगा। जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।"

सरदीस की कलीसिया को पत्र

'सरदीस की कलीसिया के दूत को लिखो

"जिसके अधिकार में परमेश्वर की सात आत्माएं और सात तारे हैं, उसका यह कथन है मैं तुम्हारे कार्यों से परिचित हूं। तुम नाम मात्र को जीवित हो, पर हो वास्तव में मरे हुए। जागो! जो कुछ तुम्हारे पास बचा है, वह भी मृतप्राय है, उसे सुदृढ़ बनाओ। मैंने अपने परमेश्वर की दृष्टि में तुम्हारे किसी कार्य को पूर्ण नहीं पाया। स्मरण करो कि तुमने क्या उपदेश सुना और स्वीकार किया था, उसका पालन करो एवं हृदय-परिवर्तन करो। यदि तुम न जागोगे तो मैं चोर के समान आऊंगा, और तुमको पता भी न चलेगा कि मैं कब तुम्हारे पास पहुंच रहा हूं। फिर भी सरदीस में तुम्हारे यहां कुछ ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने अपने वस्त्र कलुषित नहीं किए। वे सफेद वस्त्र पहनकर मेरे साथ विचरण करेंगे, क्योंकि वे इस योग्य हैं। जो विजय प्राप्त करे, वह इसी प्रकार सफेद वस्त्रों में सुसज्जित होगा। उसका नाम मैं जीवन की पुस्तक में कदापि नहीं मिटाऊंगा और अपने पिता के सम्मुख एवं उसके स्वर्गदूतों के सामने

*अथवा, 'व्यभिचार'.

उसका नाम स्वीकार करूंगा। जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।'

फिलदिलफिया की कलीसिया को पत्र

'फिलदिलफिया की कलीसिया के दूत को लिखो :

"जो पवित्र और सच्चा है, जिसके अधिकार में दाऊद की कुञ्जी है, जिसके खोलने पर कोई बन्द नहीं कर सकता और जिसके बन्द करने पर कोई खोल नहीं सकता, उसका यह कथन है : मैं तुम्हारे कार्यों से परिचित हूं। मैंने तुम्हारे लिए द्वार खोलकर रखा है, जिसे कोई बन्द न कर सकेगा। मैं जानता हूं कि तुममें थोड़ा बल है, अधिक नहीं, परन्तु तो भी तुमने मेरी शिक्षा का पालन किया है और मेरे नाम को अस्वीकार नहीं किया। देखो, जो शैतान के सभागृह के सदस्य हैं, जो अपने आप को यहूदी कहते हैं, पर हैं नहीं, वे जो झूठ बोलते हैं, मैं उन्हें बाध्य करूंगा कि वे आकर तुम्हारे पैरों पर गिरें और जानें कि मैं तुमसे प्रेम करता हूं। तुमने मेरी धैर्य की शिक्षा का पालन किया है, इसलिए मैं भी आगामी परीक्षाकाल में, जबकि पृथ्वी के सब निवासी परखे जाएंगे, तुम्हारी रक्षा करूंगा। मैं शीघ्र आ रहा हूं, जो कुछ तुम्हारे पास है उसे सुरक्षित रखो। ऐसा न हो कि कोई तुम्हारा मुकुट तुमसे छीन ले। जो विजय प्राप्त करे, उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर का स्तम्भ बनाऊंगा और वह फिर कभी बाहर न जाएगा। मैं उसपर अपने परमेश्वर का नाम और अपने परमेश्वर के नगर का नाम लिखूंगा, अर्थात् उस नवीन यरूशलेम का नाम जो मेरे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से नीचे उतरेगा, और अपना भी नया नाम लिखूंगा। जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।"

लौदीकिया की कलीसिया को पत्र

'लौदीकिया की कलीसिया के दूत को लिखो :

"जो आमेन है, जो विश्वस्त, सच्चा साक्षी, एवं परमेश्वर की सृष्टि का आदि कारण है, उसका यह कथन है : मैं तुम्हारे कार्यों से परिचित हूं। तुम न ठण्डे हो, न गर्म। अच्छा होता कि तुम ठण्डे होते या गर्म। मैं तुम्हें अपने मुंह से उगल दूंगा क्योंकि तुम न गर्म हो न ठण्डे वरन् गुनगुने हो। तुम कहते हो कि तुम धनी हो, समृद्ध हो और तुम्हें किसी वस्तु का अभाव नहीं है; परन्तु तुम नहीं जानते कि तुम अभागे, दयनीय, दरिद्र, अन्धे और नग्न हो। मेरी सम्मति है कि तुम सोना मोल लो, जो आग में शुद्ध किया गया है। तब तुम धनी बन जाओगे। सफेद वस्त्र लेकर पहनो कि तुम्हारी नग्न लज्जा प्रकट न हो, औरकाजल लेकर अपनी आंखों में लगाओ कि देख सको। मैं जिनसे प्रेम करता [illegible] उनको डांटता और ताड़ना देता हूं। अतः उत्साही बनो और हृदय-परिवर्तन करो। देखो, मैं द्वार पर खड़ा खटखटा रहा हूं। यदि कोई मनुष्य मेरी आवाज सुनकर द्वार खोलेगा तो मैं भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा और वह मेरे साथ। मैंने विजय प्राप्त की और अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठा हूं। इसी प्रकार जो विजय प्राप्त करे उसे मैं अपने साथ सिंहासन पर बैठाऊंगा। जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।"'

नया आकाश और नई पृथ्वी

तब मैंने नये आकाश और नई पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी का लोप हो चुका था और समुद्र का भी पता नहीं था। मैंने देखा कि पवित्र नगरी, नूतन यरूशलेम, परमेश्वर की ओर से एवं स्वर्ग से उतर रही है। वह अपने दूल्हे के लिए शृंगार की हुई दुलहिन के समान सजी-संवरी है।

फिर मैंने सिंहासन से गम्भीर वाणी सुनी, 'देखो, मनुष्यों के बीच परमेश्वर का शिविर।

मेमने की जीवन-पुस्तक मे लिखे है।

अब उसने मुझे स्फटिक-सी स्वच्छ जीवन-जल की सरिता दिखाई जो परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से निकल रही थी। नगर-चौक के बीच मे बहती हुई इस सरिता के दोनों तटों पर जीवन-वृक्ष है, जो बारह प्रकार के फल देता है और प्रति मास फल देता है; इस वृक्ष की पत्तियां राष्ट्रों को स्वास्थ्य प्रदान करती है। अब से कुछ भी शापित नहीं होगा। इस नगर मे परमेश्वर और मेमने का सिंहासन होगा और मेमने के सेवक उसकी सेवा करेंगे, वे उसके मुखमण्डल के दर्शन करेंगे और उनके ललाट पर उसका नाम अंकित होगा। फिर कभी रात नही होगी। उन्हें दीपक की ज्योति और सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता नही होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन पर प्रकाश करेगा और वे लोग युगानुयुग राज्य करेंगे।

मसीह का पुनरागमन

तब स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, 'ये बाते विश्वसनीय और सत्य है। नबियो के प्रेरक प्रभु परमेश्वर ने अपना स्वर्गदूत भेजा है कि अपने सेवको को वे बाते बता दे जो शीघ्र होनेवाली है।'

'देखो, मैं शीघ्र आ रहा हू।'

धन्य है वह जो इस पुस्तक की नबूवत की वाणी को मानता है।

मुझ यूहन्ना ने स्वयं यह देखा और सुना। यह देख और सुनकर मैं इन बातो को दिखानेवाले स्वर्गदूत की वन्दना करने के लिए उसके चरणो में गिर पड़ा। पर उसने मुझसे कहा, 'ऐसा मत करो! मैं तुम्हारा, तुम्हारे भाई नबियों का और इस पुस्तक की बातो को माननेवालों का साथी, सेवक मात्र हू। परमेश्वर की वन्दना करो।'

उसने मुझसे पुन: कहा, 'इस पुस्तक की नबूवत की वाणी को गुप्त मत रखो।* क्योंकि समय निकट है। अधर्मी अब अधर्म करता रहे, कलुषित व्यक्ति कलुषित ही बना रहे, धर्मात्मा धर्म पर ही चलता रहे, और भक्त, भक्ति करता रहे।'

"देखो, मैं शीघ्र आ रहा हू। प्रत्येक मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार प्रदान करने के लिए प्रतिफल मेरे पास है। अलफा और ओमेगा, प्रथम और अन्तिम, आदि और अन्त मैं हू।"

धन्य है वे जो अपने आचरण रूपी वस्त्रो को स्वच्छ करते है। वे जीवन-वृक्ष के अधिकारी होंगे और फाटको से नगर मे प्रवेश करेंगे। किन्तु कुत्ते, जादूगर, व्यभिचारी, हत्यारे, मूर्ति-पूजक और झूठ से प्रेम करनेवाले तथा मिथ्याचारी बाहर ही रहेंगे।

"मुझ-यीशु ने स्वयं अपना स्वर्गदूत भेजा है कि कलीसियाओं के सम्बन्ध मे तुम्हारे सामने यह साक्षी दे। मैं दाऊद का मूल पुरुष हू, उसका वंशज हू और प्रभात का उज्ज्वल तारा हू।"

आत्मा और दुलहिन कहती है, 'आओ।' सुननेवाला भी कहे, 'आओ।' जो प्यासा है वह आए, और जो चाहता है वह बिना मूल्य दिए जीवन-जल ग्रहण करे।

उपसंहार

जो इस पुस्तक मे लिखी नबूवत की वाणी को सुनते है, उन सबको मैं चेतावनी देता हू कि यदि कोई इनमे कुछ जोड़ेगा तो परमेश्वर इस पुस्तक मे लिखी विपत्तियां उस पर डालेगा, और यदि कोई इस नबूवत की पुस्तक के शब्दो मे से कुछ मिटाएगा तो परमेश्वर भी इस पुस्तक मे उल्लिखित जीवन-वृक्ष एवं पवित्र नगर मे उसका भाग मिटा देगा।

इन बातो की साक्षी देनेवाले का कथन है, "निश्चय, मैं शीघ्र आ रहा हू।" आमेन, आइए, प्रभु यीशु।